डा० एल० राय, नेशनल
होमियोपैथिक फारमेसी,
मुरादपुर, पटना।

इस फारमेसीमें हमेशा असल वो ताजी दवाएं मिलती हैं। और दवा रखनेका बक्स, थारमोमेटर, स्टेथोस्कोप, सुगर ऑफ मिल्क, ग्लोबिवुल्स इत्यादि भी मिलता है।

दवाई का दर।

शक्ति	एक ड्रा०	दो ड्राम
साधारण मदर-टींकचर	॥)	॥।)
१x	।)	।≡)
१ से १२ डाइलुशन	≡)	।-)
३० ,,	।)	।≈)
२०० ,,	।≈)	॥≈)
५०० ,,	॥।)	आधा ड्रा० ॥)
१००० ,,	१॥)	,, ॥।)
सी० एम० ,,	२)	,, १=)
बढ़ियां थारमोमेटर आधा मिन्टका		१।)
स्टेथोसकोप दोनली		३)

नेत्र बिन्दु ।

इस दवा को सिर्फ २-३ बूंद दिन में २-३ मर्तबे आंख में डालने से आंख आना, आंख की लाली, धुन्ध, जाला, फोला वगैरह करीब २ हर प्रकार की तकलीफ निहायत जल्द आराम होगी। कीमत फी शीशी ।≈), इकट्ठा तीन शीशी १), डाक म० ।≡) ।

डायरो-कलेरिन ।

यह दवा, हैजा, दस्त, कै, उदरशूल, पेट फूलना वगैरह पेट की तमाम तकलीफों के लिये अमृत है । सिर्फ दो या तीन ही खूराक से तकलीफ दूर हो जाती है। दाम फी शीशी ॥), इकट्ठा ३ शीशी १।), डाक महसूल ।≡)

तीहाल की दवा ।

बहुत दिन का पुराना तीहाल भी इस दवे से जरूर आराम होता है। १५ रोज के व्यवहार को फी शीशी ॥) ।

सूचीपत्र

उपक्रमणिका ।

ज्वर ।

उदर रोग समूह ।

—:०:—

यकृत की बिमारियां।

:—:०:—:

मूत्र यंत्रों का रोग समूह।

—:०:—

व्यभिचार जनित रोग।

अंडकोष का रोग।

प्रोष्टेट का बिमारियां

जननेन्द्रिय का रोग।

स्त्री-रोग समूह।

शिशुरोग ।

वात रोग ।

अस्थि-रोग ।

स्नायु विधान का पीड़ा समूह ।

गला, गलमध्य व मुखमध्य का रोग ।

स्वांस यंत्रों की पीड़ा समूह ।

हृद्रोग ।

शोणित-रोगें ।

कर्णरोग समूह ।

चक्षुरोगें ।

चर्म्म रोग ।

अभिघातिक चिकित्सा ।

होमियोपैथिक

चिकित्सा-सार।

उपक्रमणिका।

महात्मा हेनिमन साहब की जीवनी और होमियोपैथिक का मूल-मंत्र।

१७५५ ई० में जर्म्मनी के अन्तर्गत मिसनिया शहर में स्यामूएल हेनिमन का जन्म हुआ था। उनके पिता की दरिद्रावस्था के कारण उनको बहुत कष्ट से शिक्षा प्राप्ति हुई थी। किन्तु, फिर भी जर्म्मनी भाषा के अतिरिक्त फ्रान्सीसी, लैटीन इत्यादि बहुत भाषाओं में पंडित हुए। इसके उपरान्त वे चिकित्सा-शास्त्र अध्ययन करके उसमें भी विशेष विज्ञ हुए, और चिकित्सा अभ्यास करना आरम्भ किये। चिकित्सा के विषय में बहुत प्रकार के अनुसंधान और परीक्षा करने में रत हुए, किन्तु उनको तत्कालिक चिकित्सा शास्त्र नितान्त वेबुनियाद का मालूम हुआ, इस कारण से उनको उसमें पूर्ण संतोष प्राप्ति नहीं हुई। अन्तमें वे विरक्त होकर एलोपैथिक का अभ्यास करना छोड़ दिये, और अपने जीवन-यात्राकी निर्वाह के हेतु वे फ्रान्सीसी और

अङ्गरेजी रसायन-शास्त्र विषयक पुस्तक को निज मातृ भाषा मे अनुवाद करने मे प्रवृत्त हुए। १७९० ई० में कालेन साहेब के मेटिरिआ मेडिका मे कुनाइन का अनुवाद करते समय देखा कि इसमें ज्वर-नाशक तथा ज्वरोत्पादक दोनों शक्तियां हैं और अचानक उनको ज्ञान हुआ कि इसको आजमाकर देखना चाहिये कि यह किस तरीके पर असर करता है। हेनिमन साहेब ने इसके गुण की परीक्षा करने के वास्ते अपने स्वस्थ शरीर में प्रति दिन थोड़ा २ कुनाइन खाना आरम्भ किये। थोड़े ही दिनों में उनको सख्त मलेरिया-ज्वर हो गया। इस ज्वर का लक्षण बिल्कुल उसी तरह का था जिस तरह का ज्वर कुनाइन द्वारा आरोग्य होता है। इसीसे हेनिमन साहेब ने ख्याल किया कि कुनाइन मे ज्वर उत्पन्न करने की शक्ति है और यह ज्वर नाशक भी है। इस साधारण विषय से ही होमियोपैथिक का मूल-मंत्र "समः समं शमयति" (Similia Similibus Curantur) की उत्पत्ति है। हेनिमन साहेब केवल कुनाइन को आजमा कर ही नही रहे बल्कि वह अपने निरोग शरीर में एकोनाइट, आरसेनिक इत्यादि तेज विष खाकर सबके लक्षणों की परीक्षा करते रहे। और जिस औषधि के सेवन करने से जो लक्षण देख पाया ठीक वैसाही लक्षण किसी दूसरे रोगी के शरीर में देखकर उस रोग में वही औषधि खिला कर के सहज में रोगी को नीरोग करते रहे।

इसी प्रकार परीक्षा करके हेनिमन साहब की धारणा निश्चय हुई कि नीरोग शरीर में कोई औषधि सेवन करने के कारण शरीर में जो लक्षण समूह उत्पन्न होते हैं यदि वही लक्षण-युक्त कोई पीड़ा किसी को होय तो वह पीड़ा उसी औषधि द्वारा अवश्य दूर होगी; और यही होमियोपैथिक तरीका इलाज का खास वसूल है।

अब "सम समं शमयति"—इस मूल-मंत्र के ऊपर निर्भर होकर हेनिमन साहेब ने फिर इलाज करना आरम्भ कर दिये और उसमें उनको बहुत साफल्यता भी प्राप्त हुई। १७९९ ई० में वे एक होमियोपैथिक पत्रिका निकाले; १८१० ई० में होमियोपैथिक अरगेनन (Organon) वा वसूल होमियोपैथिक नामक पुस्तक लिखे, १८११ ई० में विशुद्ध होमियोपैथिक-भेषज-विधान (Materia Medica Pura) बनाया।

होमियोपैथिक का अमोघ गुण देख कर बहुत से एलोपैथिक चिकित्सक हेनिमन साहेब के शिष्य हुए, परन्तु बहुत से चिकित्सक उनके बैरी भी हो गये। उन बैरियों की दुष्ट कार्रवाइयोंसे हेनिमन साहबको अपना देशभी परित्याग करना पड़ा। १८२१ ई० मे वे फ्रान्स चले गये और वहां पर अपना कार्य्य आरम्भ किये। थोड़े ही दिनों मे उनकी कीर्त्ति फैल गई और समस्त सभ्य देशों में उनका नाम विख्यात हो गया।

१८४३ ई० मे उनका स्वर्गवास हुआ। १८५१ ई० मे उक्त महापुरुष के देश के लोगो ने उनकी लीला-भूमि लिपजिग शहर मे उनकी पीतल की मूर्त्ति स्थापन करके अपने पूर्व्व-कृत अपराध का यत्किञ्चित प्रायश्चित्त कर डाला।

होमियोपैथिक औषधि आबालवृद्ध-वनिता सर्व्वजन और सर्व्व रोगों में फलदायक है:—हम ने बहुत से मनुष्यो के मुंह मे यह निकलते हुए सुना है कि होमियोपैथिक औषधि से कुछ लाभ नहीं होता है। यह औषधि एकदम पानी-ही-पानी है। बहुत से पक्षपाती एलोपैथिक डाक्टर यह कहते है कि होमियोपैथिक औषधि बिल्कुल फलदायक नहीं है, इसमे कोई विशेष गुण नहीं है। कोई यह भी कहते है कि यह सिर्फ हैजा वगैरह दो चार खास २ रोगो मे ही काम करती है और बहुत से लोग यह भी कहते है कि यह केवल बच्चो और स्त्रियो ही के लिये लाभ-दायक है। लेकिन जहांतक मैने आज़माया है उससे यह बात बिल्कुल झूठी मालूम होती है। होमियोपैथिक औषधि बच्चा, बुढ़ा, स्त्री, पुरुष सबो के लिये हर प्रकार के रोग मे समान लाभदायक होता है। मनुष्यों को बुरा ख्याल करने का कारण यह है कि वे बिना कोई होमियोपैथिक किताब पढ़े और बिना किसी औषधिको आजमाये झूठी २ बातें कहने लगते हैं।

अगर ये लोग ध्यान देकर होमियोपैथिक किताब पढ़ते और उसके अनुसार रोगियों को औषधि खिलाते तो उन्हें ऐसी झूठी बातों के कहने का अवसर ही नहीं मिलता और इस प्रकार होमियोपैथिक दवाओं पर—जो बहुत ही स्पष्ट नियमों पर निर्भर है, दाग लगाने से विरत रहते. बिना सोचे समझे अथवा बिना परीक्षा किये भ्रमवश किसी विषय में कुछ कहना महाभ्रम है। इस कारण मैं उन मनुष्यों से—जो होमियोपैथिक को बदनाम करते हैं बहुत विनय के साथ प्रार्थना करता हूं कि पहले वे होमियोपैथिक किताब को ध्यान देकर पढ़ें और किसी रोगी को होमियोपैथिक रीति से होमियोपैथिक औषधि खिला कर परीक्षा करें तो उनको यह मालूम हो जायगा कि होमियोपैथी एक अमूल्य चिकित्सा है।

होमियोपैथिक मेटिरिआ मेडिका क्या है।

जिस पुस्तक में होमियोपैथिक औषधियों का प्राकृतिक लक्षण वर्णित है उस पुस्तक को होमियोपैथिक मेटिरिया मेडिका कहते हैं। किसी औषधिका गुण निर्णय करने के लिये उस औषधिका अनेक स्वस्थ पुरुषों और स्त्रियों पर इस्तेमाल किया जाता है। और इस्तेमाल से जो २ लक्षण उन सब आदमियोंमे या उनलोगों में से ज्यादे तर आदमियों में दिखाई देता है उन सबको नोट किया जाता है। इसी तरीके से औषधि का गुण प्रमाणित (Proving) किया जाता है। प्रमाणित करने के बाद जिस रोगो में जिस दवेका लक्षण

मिलता है उसको वही औषधि दी जाती है। उस औषधि के देनेसे उस बीमारीका लक्षण दूर हो जाने पर उक्त दवेकी पुरी तसदीक हो जाती है और इसी तरीकेको भेरीफीकेशन (Verification) वा जंचाई करना कहते है। इसके बाद दवाई का गुण मेटिरिया मेडिका में लिखा जाता है।

॥ औषधि प्रस्तुत प्रकरण ॥

होमियोपैथिक चिकित्सा में इस विषय का ध्यान रखना बहुत आवश्यक है, कि औषधि का परिमाण घटाने से दवाई का असर कुछ भी कम नहीं होता है। डाक्टर हेनिमन ने इसकी जांच करने के लिये औषधि का परिमाण घटाना आरम्भ किये लेकिन कुछ भेद नहीं पाये बल्कि और अधिक लाभप्रद पाये। दवाका परिमाण घटाने के लिये वे दवाको किसी ऐसी चिज के साथ मिला दिया करते थे कि जिसमे पहले से किसी दवा का असर नहीं रहता था। दवा से मिलानेवाला उस चिज को मेन्स्ट्रुअम (Menstrunm) कहते हैं। मेन्स्ट्रुअम तीन प्रकार के हैं। १—अलकोहल (सुरा), २—सुगर औफ मिल्क (दुध की चीनी) ३—डिसटील्ड वाटर वा परिश्रुत जल। इस तरह से डाक्टर हेनिमन ने जान लिया कि दवा की मात्रा जीतनी ही कम की जावे दवा की ताकत कम न हो कर उतनी ही बढ़ जाती है। इस लिये इस तरीके से दवाका परिमाण घटाने को शक्ति-करण (Potentization) कहते है। आज तक

शक्तिकरण दो प्रकार से किया जाता है, पहला अर्क, दूसरा चूर्ण। अर्क बनाने के लिये औषधिको अलकोहल अथवा पानी में मिला देते हैं, इसीको डाइल्यूशन (Dilution) कहते हैं। जब चूर्ण बनाना होता है तो औषधिको दूधकी चीनी के साथ मिला देते हैं। इसको ट्राइटुरेशन (Trituion) कहते हैं। डाइल्यूशन का बनाना मूल अर्क से शुरू होता है। डाइल्यूशन, दो प्रकार से बनाया जाता है—पहला दशमिक (Decimal), दूसरा शतमिक (Centesimal) प्रणाली में। दशमिक इस प्रकार से बनाया जाता है कि एक भाग मूल औषधिको लेकर ९ भाग मेन्स्ट्रुअम (Menstruum) में मिलावे तो प्रथम दशमिक बन जायगा। इस प्रकार द्वितीय डिसीमल प्रथम दशमिक से बनता है। एक भाग प्रथम दशमिक को नौ भाग मेन्स्ट्रुअम में मिला देने से द्वितीय दशमिक बन जायगा। फिर शतमिक डाइल्यूशन बनाने की रीति भी वैसे ही है। भेद इतना ही है कि नौ भाग मेन्स्ट्रुअम की जगह पर ९९ भाग मेन्स्ट्रुअम में एक भाग औषधि मिलाते हैं मदर-टिञ्चर या मूल-अर्क का चिन्ह अङ्गरेजी में "Q" है और दशमिक का चिन्ह "X" है। जिस नम्बर का दशमिक बनाया जाय उसके साथ "X" लिखेंगे और शतमिक की खाली संख्या लिखी जाती है। जैसे, एकोनाइट Q = एकोनाइट मदर-टिञ्चर, एकोनाइट १ X = एकोनाइट १ दशमिक डा०, एकोनाइट १ = एकोनाइट १ शतमिक डा०। पाठक अब

मिलता है उसको वही औषधि दी जाती है। उस औषधि के देनेसे उस बीमारीका लक्षण दूर हो जाने पर उक्त दवेकी पुरी नसदीक हो जाती है और इसी तरीकेको भेरीफीकेशन (Verification) वा जंचाई करना कहते है। इसके वाद दवाई का गुण मेटिरिया मेडिका में लिखा जाता है।

॥ औषधि प्रस्तुत प्रकरण ॥

हामियोपैथिक चिकित्सा मे इस विषय का ध्यान रखना वहुत आवश्यक है, कि औषधि का परिमाण घटाने से दवाई का असर कुछ भी कम नहीं होता है। डाक्टर हेनिमन ने इसकी जांच करने के लिये औषधि का परिमाण घटाना आरम्भ किये लेकिन कुछ भेद नहीं पाये वल्कि और अधिक लाभप्रद पाये। दवाका परिमाण घटाने के लिये वे दवाको किसी ऐसी चिज के साथ मिला दिया करते थे कि जिसमे पहले से किसी दवा का असर नहीं रहता था। दवा मे मिलानेवाला उस चिज को मेन्स्ट्रूअम (Mens-trunm) कहते हैं। मेन्स्ट्रूअम तीन प्रकार के हैं। १—अलकोहल (सुरा), २—सुगर औफ मिल्क (दुध की चीनी) ३—डिसटील्ड वाटर वा परिश्रुत जल। इस तरह से डाक्टर हेनिमन ने जान लिया कि दवा की मात्रा जीतनी ही कम की जावे दवा की ताकत कम न हो कर उतनी ही वढ़ जाती है। इस लिये इस तरीके से दवाका परिमाण घटाने को शक्ति-करण (Potentization) कहते हैं। आज तक

शक्ति-करण दो प्रकार से किया जाता है, पहला अर्क, दूसरा चूर्ण । अर्क बनाने के लिये औषधिको अलकोहल अथवा पानी में मिला देते हैं, इसीको डाइलूशन (Dilution) कहते हैं। जब चूर्ण बनाना होता है तो औषधिको दूधकी चीनी-के साथ मिला देते हैं। इसको ट्राइटुरेशन (Tritution) कहते हैं। डाइलूशन का बनाना मूल अर्क से शुरू होता है। डाइलूशन, दो प्रकार से बनाया जाता है—पहला दशमिक (Decimal), दूसरा शतमिक (Centesimal) प्रणाली-से। दशमिक इस प्रकार से बनाया जाता है कि एक भाग मूल औषधिको लेकर ९ भाग मेन्स्ट्रुअम (Menstruum) में मिलावे तो प्रथम दशमिक बन जायगा। इस प्रकार द्वितीय डिसीमल प्रथम दशमिक से बनता है। एक भाग प्रथम दशमिक को नौ भाग मेन्स्ट्रुअम मे मिला देने से द्वितीय दश-मिक बन जायगा। फिर शतमिक डाइलूशन बनाने की रीति भी वैसे ही है। भेद इतना ही है कि नौ भाग मेन्स्ट्रुअम की जगह पर ९९ भाग मेन्स्ट्रुअम मे एक भाग औषधि मिलाते हैं मदर-टिञ्चर वा मूल-अर्क का चिन्ह अङ्गरेजी में "Q" है और दशमिक का चिन्ह "X" है। जिस नम्बर का दशमिक बनाया जाय उसके साथ "X" लिखेंगे और शतमिक की खाली संख्या लिखी जाती है। जैसे, एकोनाइट Q=एकोनाइट मदर-टिञ्चर, एकोनाइट १ X=एकोनाइट १ दशमिक डा०, एकोनाइट १=एकोनाइट १ शतमिक डा०। पाठक अब

समझ जायेंगे कि यथार्थ मे दशमिक और शतमिक की रीति में कुछ भेद नहीं है। एक शतमिक दो दशमिक के बराबर है। अक्सर लोगों के समझ मे यह बात नहीं आती है कि एक शतमिक दो दशमिक के बराबर कैसे है। इसको मैं संक्षेप मे नीचे वर्णन करता हूं ध्यान दीजिये कि दश बुन्द मदर-टिंचर के साथ ९० बुन्द अलकोहल मिलाया जाय तो एक सौ बुन्द प्रथम डिसीमल डा० बना। इस बनाई हुई औषधि मे दशम भाग मदर-टिंचर रहा। अब इस प्रथम डिसीमल से दश बुन्द लेकर उस मे ९० बुन्द अलकोहल मिलाया तो द्वितीय डिसीमल का एक सौ बुन्द बन गया। अब ध्यान दीजिये कि इस द्वितीय डिसीमल मे मदर-टिञ्चर का कितनी भाग रहा। अवश्य १०० बुन्द में एक ही बुन्द मदर-टिञ्चर रहा। इसी प्रकार यदि उसी मदर-टिञ्चर से एक सेन-टिसिमल बनाया जाय तो ९९ भाग अलकोहल मे एक ही बुन्द मदर-टिञ्चर रहता है। अब इससे यह मालूम हो गया कि २ डिसिमल एक सेनटिसिमल के बराबर है। इससे यह बात भी समझ मे आ गई कि दशमिक से शतमिक और शतमिक से दशमिक डाइल्यूशन बन सकता है। इसी तरह दशमिक और शतमिक को हजार और लाख डाइल्यूशन तक पहुंचा सकते हैं। जब औषधि और मेन्स्ट्रुअम को मिलाते हैं तो किसी शीशी में दोनों को रखकर १० दफे हिलाना पड़ता है। जब चूर्ण बनाना हो तो दशमिक रीति में १ भाग मूल

दवामें ९ भाग मेन्स्ट्रुअम और शतमिक रीति मे १ भाग मूल दवा में ९९ भाग मेन्स्ट्रुअम मिलाना होता है। इस प्रकार दोनों मिली हुई औषधियां को खलमें रखकर अच्छी तरह से एक घन्टा तक रगड़ना पड़ता है। जितनाही रगड़ा जायगा उतना ही औषधिका गुण बढ़ेगा। ३ X से ऊपर सब डा० बनाने में पूर्व्वोक्त नियमानुसार सिर्फ दवा और अलकोहल मिलाना होता है। लेकिन १X से ३X तक डा० बनाने में भिन्न-भिन्न दवाके भिन्न २ डा० में भिन्न २ किस्म के मेन्स्ट्रुअम की जरूरत होती है। जैसे-एकोनाइट १X व २X डाइलूट अलकोहल से और ३X अलकोहल से बनता है लेकिन ब्राइओनिया का १X से ही अलकोहल से बनता है। औषधि तैयार करने के लिये सब से अधिक आवश्यकता अलकोहलकी पड़ती है। यह भिन्न भिन्न तरह का होता है—जो नीचे के उदाहरण मे अच्छी तरह ध्यान मे आ सकता है।

१—रेक्टीफाइड स्पीरीट ६० डिग्री (O P), यह अलकोहल सबसे अधिक काम मे लाया जाता है और सबमें अच्छा होता भी है। मगर यह बात भी ध्यान मे रखनी चाहिये कि यह आम बाजार की दुकान मे न लिया जाय बल्कि किसी विश्वासी होमियोपैथिक दुकान मे खरीदा जाय। कारण यह है कि बाजार के स्पीरीट मे कई प्रकार का तेल इत्यादि मिला रहता है, जो दवाके कामका नहीं होता है।

२—डाइल्यूट अलकोहल, सात भाग रेक्टीफाइड स्पीरीट और तीन भाग शुद्ध जल मिलाने से बनता है। इसके अलावे इस बातपर भी ध्यान रखना बहुत आवश्यक है कि औषधि बनाने या रखनेका पात्र बहुत शुद्ध और साफ हो। इसके लिये जिन २ वस्तुओंकी आवश्यकता होती है यहां लिखता हूं। कार्क और शीशी—हमेशा नया होना चाहिये और किसी होमियोपैथिक दवाखाना से लेनी चाहिये। फिर उसको साफ जलसे धोकर डाइलूट अलकोहल मे भिगाकर सुखा लेना चाहिये। गर्म पानी से धोने से कार्क एक दम खराब हो जाता है। खल—इसको खूब गरम पानी कुची और बालू से मलकर धोना चाहिये और तब धूप में खूब सूखना चाहिये और खल ऐसा होना चाहिये कि किसी तरह से नहीं घिसे। शीशी और ग्लास को खूब अच्छी तरह से कई दफे गरम पानी से धोना चाहिये। बाद उसको शुद्ध जल से धोकर सुखा लेना चाहिये। कभी भूल से भी ऐसी शीशी अथवा ग्लास में औषधि नहीं रखनी चाहिये जिसमें पहले कोई दवा रक्खी जा चुकी हो।

रोगी परीक्षा प्रणाली।

१—रोगी के निकट स्थिर चित्त से बैठ कर रोगी को उसकी अवस्था के विषय में प्रश्न करो। अगर रोगी कुछ बता नहीं सके तो उसके पास जो आदमी हमेशा रहता है उससे प्रश्न करो। जब वे लोग रोगीका सब हाल बता लें तब तुम स्वयं रोगी की अच्छी तरह से परीक्षा करो। क्योंकि इसी के

ऊपर तुम्हारी चिकित्सा की सफलता निर्भर है। प्रधानतः लक्षण दो प्रकार के होते हैं। जो लक्षण सिर्फ रोगी ही अनुभव कर सकता है, किन्तु चिकित्सक नहीं और देख भी नहीं सकता है. उस लक्षण को प्रश्नगत (Subjective) लक्षण कहते हैं। यथा-दर्द, जी मिचलाना, मानसिक अवस्था इत्यादि। जो लक्षण चिकित्सक स्वयं परीक्षा करके मालूम कर सकता है उस लक्षण को प्रत्यक्ष (Objective) लक्षण कहते है।

२—जहां तक सम्भव हो अच्छी तरह से रोगका कारण और उसके हालकी जांच करनी चाहिये, क्योंकि अनेक समय सिर्फ कारण ही के ऊपर औषधि दी जाती हैं।

३—पीड़ा के घटने वो बढ़ने का क्या वजह है। रोगी किस हालत मे सोता या जागता है। यह सब भी देखना चाहिये।

४—रोगी के मनकी हालत शारीरिक धर्म, स्वभाव उम्र इत्यादि पर ध्यान रखना चाहिये। रोगी पुरुष अथवा स्त्री है इस विषय मे भी जांच करनी चाहिये।

५—रोग आरम्भ होने के वा वृद्धि होने के समय के ऊपर ज्यादे नजर रखनी चाहिये। क्योंकि अनेक समय एक मात्र समय ही के ऊपर ख्याल करके दवाई निर्णय की जाती है।

६—पीड़ा अथवा कोई तकलीफ रोगी की दहिनी या बायीं तरफ है इस पर भी विशेष ध्यान रखें।

७—दर्द, पैखाना, कै ज्वर, पेशाव इत्यादिका स्वभाव और मल, वमन इत्यादिका रंग, गन्ध इत्यादि और इन सबके निकलने का तरीका भी जानना चाहिये।

८—शिर दर्द पेट दर्द वगैरह किस तरह से कम और बेशी होता है उसके ऊपर ध्यान रखना चाहिये ।

॥ प्रथम शिक्षार्थियोंके प्रति उपदेश ॥

गात्रताप—स्वभाविक शरीरका उत्ताप ९७ या ९८ डिग्रीका होना है। यदि शरीर का ताप उससे ज्यादा हो जावे तो ज्वर समझना चाहिये। यदि शरीर का ताप ९६ डिग्री वो उससे भी कम हो जावे तो समझना चाहिये कि मामूली ताप से शरीर का ताप कम है। कोलेप्स (Collapse) वा पतन अवस्था में ताप ७८ या ७७ डिग्री तक कम होते हुए देखा गया है। पतन अवस्था में शरीर अतिशय शीतल हो जाता है।

नाड़ी—स्वस्थ युवक मे स्वभाविक नाड़ी की गति प्रति मिन्ट मे ७५ से ८० वार होती है। बच्चे के जन्म से एक वर्ष तक १४० वार, दो से तीन वर्ष के बच्चे मे १२० वार चार से छः वर्ष के बच्चे मे १०० वार सात से दस वर्ष के बच्चे मे ९० वार और १८ से ५० वर्ष तक की उम्रमें ७५ से ८० वार तक, वृद्धावस्था मे ७० वार तक नाड़ी की चाल होती है। अगर पूरी उम्रके आदमी मे नाड़ी की गति १५० वार से अधिक हो जावे तो मृत्यु हो सकती है। पतनावस्था मे नाड़ी क्षीण और विलुप्त देखी जाती है। हैजा में नाड़ी विलुप्त होने से कलाई में नाड़ी नहीं मिलती है। किसी २ समय नाड़ी का फड़कना आदमुक्त मे पाया जाता है।

श्वांस-प्रश्वांस—साधारणतः प्रति मिन्ट में स्वांस १६ वार चलता है, श्वास-प्रश्वांस का शीतल होना मृत्यु का लक्षण है। इस का धीर गति से चलना सुलक्षण है। वो तेजगति वो कष्ट से खैच कर चलना दुर्लक्षण है।

नाड़ी गात्रताप और श्वांस-प्रश्वांस का परस्पर सम्बन्ध—शरीर का ताप एक डिग्री बढ़ जाने से नाड़ी की गति दश वार और श्वांस की गति दो या तीन वार बढ़ जाती है। यथा—यदि ताप १०० डिग्री का हो जाय तो नाड़ी की गति ९० या ९५ वार और श्वांस की गति प्रति मिएट २३ वार होगी। साधारणतः एक-एक वार श्वांस के साथ ५ वार नाड़ी फड़कती है।

औषधि की मात्रा—साधारणत पूरी उम्र के आदमी को टिञ्चर (Tincture) एक बुन्द और ट्राइटुरेशन दो ग्रेन बड़ी गोली दो और छोटी गोली ४ एक खोराक में दी जाती है। बच्चों को इसका आधा खोराक और बहुत छोटे बच्चे को चौथाई खोराक दी जाती है। पूरी उम्र के आदमियों को एक तोला परिमाण पानी मे एक खोराक दवा दी जाती है। औषधि रखने के लिये कांच, चीनी या पत्थर का बर्तन सबसे अच्छा है।

औषधि पुनः प्रयोगका नियम—रोग के बढ़ने या घटने के अनुसार औषधि के खाने का समय भी

दूसरा २ होता है। रोग जितना ही बढ़ता है, दवा भी उतना ही जल्द २ देना पड़ता है रोग जैसे २ कम और पुराना होगा दवाई भी उसी हिसाब से देर २ में देनी पड़ेगी अवस्था देख कर १५ ३० मिनटके अन्तर से लेकर २, ४ १२ २४ घन्टे के अन्तर या और भी अधिक अन्तर के बाद औषधि दी जा सकती है। औषधिके खानेसे जैसे २ फायदा होता जायगा दवाइ देनेका अन्तर भी उतना ही बढ़ाना पड़ेगा। जब देखोगे कि पीड़ाका लक्षण दूर हो गया तो औषधि का देना भी उस समय बन्द कर देना चाहिये। पीड़ा जितनी ही तेज होगी दवाई उतनी ही जल्द २ उसको आराम कर सकती है। रोग के बढ़तीमे यदि ३, ४ खुराक दवा खिलानेसे कोई फायदा नहीं दिखाइ दे तो समझना चाहिये कि यह दवा कोइ फायदा नहीं करेगी, तब यह दवाई बदल के दूसरी दवा देनी चाहिये। साधारण रोग में ३० शक्ति का औषधि दिन में दो बार देनाही मोनासिब है। २०० शक्ति की दवा आवश्यकतानुसार २, ३, ४ ७, या इससे ज्यादे दिन के अन्तर पर दी जा सकती है। उच्च शक्तिकी दवाइ एक खोराक खिलाने पर यदि फायदा न देख पड़े तो फिर उस दवेको नहीं खिलाना चाहिये। एक खोराक दवा देनेसे जब तक फायदा होता जावे तब तक दूसरी खुराक नहीं देनी चाहीये। अनेक समय एक ही खुराक दवाईसे बिमारी दूर हो जाती है। फिर खाने की जरूरत नहीं होती है। पहले रोगी के लक्षणों को जान-करके

इकट्ठा कर लो और फिर देखो की ये सब लक्षण जिस दवाई में हों वह औषधि प्रयोग करो। एलोपैथिक, कविराजी या युनानी तरीका से इलाज होने के बाद रोगीके होमियोपैथिक इलाज में आनेपर उसको अवस्थानुसार पहले सल्फर, नक्स या कैम्फर खिलाना चाहिये। औषधि सेवन के समय कोफी, चाय, कपूर, प्याज, लहसुन अथवा गरम मसाला अथवा कोई दवेकी गुणवाली चीजोंका नहीं खाना चाहिये।

कोई दवा खानेसे कोई नोकसानी मालूम हो तो कैम्फर खानेस उसका प्रतिकार हो जाता है। पान अथवा तम्बाकू यदि खाना होतो दवा खाने के एक घण्टा पहले या पीछे खाना चाहिये। पान वो तम्बाकु खाने के बाद मुंह अच्छी तरह से साफ करके दवा खानी चाहिये। पथ्य खाने के आधा घण्टा पहले या पीछे दवा खाई जा सकती है। होमियोपैथिक दवा किसी किस्मकी तेज गन्धवाली चीजके नजदीक नहीं रखना चाहिये किसी होमियोपैथिक दवा के खानेसे, जिन-जिन लक्षणोंपर यह दवा खिलाई गई थी यदि वेही-वेही लक्षन बढ़ जांय तो अच्छा लक्षन समझना चाहिये। और दवा खिलाना बन्द करके उसकी जांच करनी चाहिये। यदि असल मे दवेके खाने के वजहसे रोग बढ़ गया हो तो समझना चाहिये कि रोग बहुत जल्द आराम हो जायगा। अफीम खाने वाले लोगोंको अफीम खाना बन्द कर देना ही अच्छा है। लेकिन इन लोगोंको अफीम खाना बन्द कर देना बहुत मुश्किल है।

इस लिये उन लोगोंको अफीम खानेके ठीक समय में अफीम देना चाहिये लेकिन यह ख्याल रखना चाहिये कि अफीमका परिमाण रोज-रोज घटता जावे । छोटी २ बिमारी में जिस समय स्नान करना या न करना, खाना या न खाना, ठीक नहीं कर सकते हो उस समय न खाना और न स्नान करना ही ठीक है ।

हर एक दवे का एक, दो या इससे ज्यादे स्वभाविक लक्षण होता है । जैसे—आरसेनिकमें बहुत जल्द २ प्यास लगना लेकिन पानी बहुत थोड़ा-थोड़ा पीना, बहुत चंचलता और कमजोरी ; रसटक्समें जीभ गो-मांसकी नाईं लाल रंग या जीभ का अगला हिस्सा लाल रंग, एन्टीम क्रुडमें जीभ के ऊपर बहुत सफेदी आ जाना । दवेके ठीक करनेके समय रोगीमें इस किस्मके स्वभाविक लक्षणों के ऊपर ज्यादे ख्याल रखना चाहिये । अगर तुम यह सब स्वभाविक लक्षणों को ठीक कर सकोगे तो बिमारी समझ सको या नहीं, लेकिन रोग जरूर आराम कर सकोगे ।

संक्रामक (Epidemic) या छूत की बिमारी में ज्यादे तर रोगियोंमें अक्सर एकही किस्मका लक्षण दिखाई देता है । इस लिये पहले गौर करके, दवा ठीक करके, दो चार बिमारों-को आराम करने से तुमको मालुम हो जायगा कि उस संक्रामक रोगके ज्यादेतर रोगीको तुम्हारी ठीक की हुई दवा आराम करेगी । बहुतसे आदमीयोंका यह ख्याल है कि दस्त होनेसे

ज्वर उतर जाता है, यह ख्याल एकदम गलत है। क्योंकि होमियोपैथिक दवा खानेसे दस्त न होने पर भी रोगी आराम होता है। परन्तु ज्वरके शुरूमें जुलाब देनेसे किसी-किसी समय उलटा फल दिखाई देता है। ज्वरके शुरूमे यह ज्वर (टाइफाइड, रेमीटेन्ट, इनटरमीटेन्ट या इरापटिम) किस किस्मका है, नहीं समझमें आता है। टाइफाइड ज्वरकी दूसरी हालतमें अक्सर दस्त होती है। जुलाव देनेसे दस्त शुरू होकर बहुत नोकसानी पहुंचाती है। जुलाब देनेसे चेचक (Pox), हाम (Measles) इत्यादिका दाने जिल्द पर नहीं आ सकता है और जो आता है वह भी दब कर नोकसानी पहुचाता है।

दवेकी शक्ति ठीक करनेमे भिन्न २ डाक्टरोंका भिन्न २ मत है। साधारण तौरसे नई बिमारीमें नीच शक्ति वाली और पुरानी बिमारीमें उच्च शक्ति वाली दवा दी जाती है। एकसे तीस तक नीच शक्ति और इससे ज्यादा उच्च शक्ति समझी जाती है। नई विमारीमें हम एकोनाइट, बेलाडोना इत्यादि कई एक दवाके सिवा ३० शक्तिके नीचे काम में नहीं लाते हैं। परन्तु नयी बिमारीमें भी उच्च शक्तिको काममें लाकर ज्यादा फल पाते हैं इस लिये शक्तिके ठीक करनेके बारेमें कोई खास कायदा नहीं है। यदि तुम्हारी दवा गौरसे ठीक की गई हो तो तुम जिस शक्तिकी दवा काममें लाओगे फायदा जरूरही मिलेगी। तुम लाग नयी बिमारीमें पहले

नीच शक्तिकी हो दवा काममें लाओ अगर इससे फायदा न हो तो वही दवा उच्च शक्तिकी दे सकते हो। यदि तुम्हें मालूम हो कि तुम्हारी सोची हुई दवा बिल्कुल ठीक है तो उच्च शक्तिकी उसी दवाको बिला शक दे सकते हो।

ज्वर (Fever)

गात्रतापके बढ़ जानेके साथ शरीरमें आये हुए दूसरे २ लक्षणोंका एक साथ नाम ज्वर कहा जाता है।

साधारण तौरसे ज्वर दो तरह से पैदा होता है।

१—प्रदाह-जनित ज्वर (Inflammatory Fever):—यह ज्वर शरीरकी किसी खास जगह या यन्त्रके जलनसे उत्पन्न होता है। कोई स्थान टुट जानेसे कट जानेसे, जल जानेसे या फोड़ा होनेसे यह ज्वर दिखाई देता है। फेफड़ा, यकृत वगैरह के जलनेसे जो ज्वर उत्पन्न होता है वह भी इसी जातिका है।

२—विशेष विषजनित ज्वर (Specific Fever :—यह ज्वर किसी खास किस्मका विष शरीर के खूनके साथ मिल जानेसे उत्पन्न होता है।

ज्वरका साधारण लक्षण।

(१) शरीरके तापका बढ़ना ही ज्वरका खास लक्षण है।

शरीरका स्वाभाविक ताप ९७ या ९८ डिग्री का होता है। इस लिये शरीरका ताप इससे ज्यादा होनेसे ज्वर समझना चाहिये शरीरका ताप ९९ डिग्री होनेसे ज्वर भाव, १०० से १०२ डिग्री तक का सामान्य ज्वर और इससे अधिक होने से तेज ज्वर (High-fever) कहा जाता है। वहुत तेज ज्वर में ताप १०६ से ११२ डिग्री तकका देखा जाता है अङ्गरेजी में इसको हाइपरपाइरेक्सिया (Hyper pyrexia) कहते है। ज्वर ऐसा तापका होना भयदायक होता है ।

(२) शरीर का निःसृत पदार्थ (Secretion) समूहका वहुत अदल-बदल होता है। इस लिए चर्म सूखा और कड़ा मालुम होता है । किसी २ समय तापके साथ लगातार पसीना होता है। किसी पचाने वाले यन्त्रका कार्य्य ठीक नहीं होता है । मेदा और आंतसे स्वभाविक रस बहुत कम निकलता है। लार निकलना भी कम हो जाता है । जीभ सुख जाती है। प्यास ज्यादा हो जाती है। भूख कम लगती है। कब्ज, कै और मिचलाहट होती है। मुत्र थोड़ा गाढ़ा रंग और बदबूदार होता है, कभी कभी दस्त भी होता है

(३) नाड़ी की गती तेज होती है। प्रति मिन्ट में १२० से १४० बार तक हो सकती है। ज्वर वहुत दिनका हो जाने से नाड़ी वहुत दुर्बल और कम वा बेशी चालवाली हो जाती है ।

(४) श्वांस-प्रश्वास की क्रिया बेकायदा हो जाती है । साधारणतः श्वांस वहुत जल्द २ चलता है।

(५) शिरकी पीड़ा, शीत, कम्पन, दर्द चंचलता वा दुर्बलता होती है और कार्य्य करनेकी इच्छा नहीं होती है। ज्वर कठिन होने से रोगी अटपट बोलता है, नींद नहीं आती है और बेहोशी छा जाती है वो बहुत किसीमके विकार के लक्षण दिखाई देते हैं। बहुत रोगियोंमें, खास कर बच्चों में मूर्च्छा होती है।

(६) कमी २ थोड़े-थोड़े पसीनेके साथ ज्वर कम होकर उतर जाता है। इस तरहसे ज्वर उतर जानेको लाइसिस (Lysis) कहते हैं। और यदि बहुत पसीना होकर एकाएक ज्वर कम होकर शरीर ठंढा हो जाता है तो इसको क्राइसिस (Crysis) कहते है। यह हालत खतरेनाक है।

ज्वरका प्रकृति चार प्रकारसे देखी जाती है।

१—अविराम ज्वर वा कंटिनीउड फीवर (Continued fever).—यह ज्वर शुरुसे रात दिन एकसा बना रहता है। किसी प्रकारकी कमी वेशी नहीं होती है। माता हामज्वर इत्यादिमे या किसी अंगके जलनसे पैदा हुए ज्वरमें इसी प्रकारका लक्षण दिखाई देता है।

२—स्वल्प विराम ज्वर वा रेमिटेन्ट फीवर (Remittent fever):—यह ज्वर ऊपरके ज्वरके ऐसा दिन रात बराबर एकसा नहीं रहता है, इस ज्वरकी कमी वेशी होती है लेकिन यह एक दम उतरता नहीं।

३—सविराम ज्वर या इन्टरमिटेन्ट फीवर (Intermitent fever)—यह ज्वर २-४ से लेकर २४ घन्टा तक रह कर

एकदम उतर जाता है। दो चार घन्टा या दो दिन के बाद फिर ज्वर आ जाता है और कुछ देरतक रह कर उतर जाता है और बार २ ऐसा ही होता है।

४ - पुनः पुनिक ज्वर वा रिलैपसिंग फीवर (Relapsing fever):—यह ज्वर २-४ दिन लगातार रह कर उतर जाता है। और फिर २-४ दिनके बाद आ जाता है और बार २ ऐसा ही होता है।

ज्वर की कमी और वेशी के अनुसार इसका भिन्न २ नाम होता है। यथाः—

१ — सामान्य ज्वर (Simple fever) — यह ज्वर दो तीन दिन रह कर अपने से ही आराम हो जाता है।

२—बहुत तेज ज्वर (Hyperpyrexia) —इसमे ताप १०७ से ११२ डिग्रीतकको देखा जाता है। सूर्यसे पीड़ित (Sun-stroke) और नई वात रोग मे इस प्रकारका ज्वर देखा जाता है।

३—निस्तेजक सन्निपात-ज्वर (Low fever) —इस ज्वरकी अवस्था दो प्रकारकी होती है। यथा :—

(क) निर्जीव या असाध्य अवस्था (Adynamic fever) :—इस ज्वर से रोगी सहजमें दुर्बल और निस्तेज हो जाता है। ताप बहुत नहीं रहता है लेकिन- नाड़ी बहुत तेज चालसे चलती है। रात में रोगी अटपट बलोने लगता है।

(ख) बिकार अवस्था या (Typhoid state).—

टाइफाइड वो दूसरे २ विगड़े हुए ज्वरके आखीर मे यह अवस्था देखी जाती है। इस अवस्थामे जीभ सूखी, काली या मिट्टी के रङ्गकी होती है। दांतमे सूखा सोरडिस (Sordes) वा खोंडी पड़ता है। नाड़ी वहुत दुर्वल और इसकी चाल खराव होती है। रोगी अटपट वोलता है या वेहोश हो जाता है।

४—पीव ज्वर या हेकटिक अवस्था (Hectic state) शरीर से वहुत पीव नीकलने से यह अवस्था देखी जाती है। तपेदिक वगैरह विमारी मे फेफड़े मे जखम होने से इस प्रकार का ज्वर होता है।

सामान्य अविराम ज्वर। Febricula.

इस ज्वरमे ताप १०० से १०४ डिग्रीतक का हो सकता है। ज्वर दो चार घन्टा या दो तीन रोज रह कर आराम होता है।

कारण—इस ज्वरका कोई विशेष कारण नहीं पाया जाता है। सर्दी, वहुत ठण्ढी या गर्मी लगना, वहुत परिश्रम, अति आहार या पान करना इत्यादि इस ज्वर का कारण हो सकता है।

चिकित्सा :—

एकोनाइट ३-६—वहुत तेज ज्वर; चर्म वहुत सूखा और वहुत गरम होता है। मुखमण्डल वहुत लाल या पहले से फीका और लालरंग; ज्वाला-युक्त तृष्णा, वहुपरिमाण

शीतल जल पान करता है, बहुत चंचलता और छटपटाना, शरीर में बहुत ज्वाला।

बेलेडोना ६-३०—ज्वर बहुत, प्यास थोड़ी, हाथ पांव शीतल शरीरमे ज्वाला-युक्त गरमी, आंखकी पुतली फैली हुई, मुखमण्डल लालरंग, विकार, पुटपुरीमे धक २ के साथ दर्द, अत्यन्त सिर दर्द, शिरको नीचा करने से या जरासा हिलाने से ऐसा दर्द मालुम होता है कि सिर फट जायगा। वदनमे थोड़ा २ पसीना होता है।

ब्राइयोनिया ६-३०-२००—पसीना या और किसी प्रकार का स्वभाविक निकलना बन्द होकर ज्वर होनेसे; बदन और हाथ पैरमे बात ऐसा दर्द. हिलनेसे तकलीफका ज्यादा होना; पसलीमे दर्द, दबानेसे या लेटने से आराम मालुम होता है, अत्यन्त शिर पीड़ा, मस्तक के सामनेसे दर्द पीछे की तरफ जाता है और ऐसा दर्द होता है कि शिर फट जायेगा, शिर चकराना, अत्यन्त प्यास वहुत देर के बाद बहुत पानी पीता है। छातीमे और प्लीहा स्थान मे सूई चूभनेके समान पीड़ाके साथ खांसी, रोगी सर्व्वदा स्थिर रहना पसन्द करता है, बहुत पसीना, कब्ज, जीभ बहुत सूखी और उसपर सफेद मैल।

एनटीम-क्रूड ६-३०—ठंढा जलमे स्नान करने से या भारी भोजन करने से बुखारका होना, प्यासका न होना, तापके साथ पसीनाका होना, रोगी बहुत दुखी रहता है और बहुत

चिरचिराह और रोनेवाला, उसकी तरफ देखने से या उसको छूनेसे बहुत रंज होता है।

आर्निका ६-३०—चोट लग कर पीड़ा हो जाय तो यह दिया जाता है।

आर्सेनिक ३०-२००—रोगी एकाएक बहुत दुवला हो जाता है। बहुत जल्दी २ प्यास लगती है लेकिन पानी बहुत थोड़ा थोड़ा पीता है। रोगी बहुत सुस्त. मनकी बहुत उदासी, शरीरमे बहुत ज्वाला, गरम इस्तेमाल से अराम मालुम होता है। दो पहर दिनमें या आधीरात को पीड़ा का बढ़ाना, चिपचिपा पसीना और जीभ साफ।

इपीकाक ६-३०—लगातार जी मिचलाना, पित्तका गिरना पेट में दर्द, कुटे हुए घासकी तरह फेददार दस्त, प्यास, चेहरा फीका और ठन्ढा।

नक्सभोमिका ३०-२००—देरसे पचने वाली चीजको ज्यादे खाने या मदिरा पीने से विमारी का होना, जी मिचलाना कै होना, हमेशा ठंढ मालूम होना, ठंढ मालूम होने से बदनसे बिल्कुल कपड़ा न उतारना, प्यास, ज्यादे चिड़-चिड़ाहट रोगी को सुवह में सब तकलीफों का बढ़ जाना।

पल्सेटिला ६-३०-२००—ज्यादे चर्वीदार चीज खाने से पीड़ा, पेटमें दर्द और दर्द के साथ ज्यादे जाड़ा और कांपना, दर्द धीरे २ वढ़ कर फिर कम होना, प्यास विल्कुल

न लगना, जीभ बहुत सूखी, बहुत रोने का स्वभाव, जीभ में सफेदी या पीलापन, सिरका ज्यादा दर्द कस कर बांधने से दर्द का घटना, ठढी खुली हवा में आराम मालूम होना।

रस-टक्स ६-३०-२००—वर्षातके पानी में भीगने से या वर्षातकी ठढी हवा लगने से पीड़ा, कमर और हाथ पैर मे बातः सी दर्द, बहुत चंचलता हमेसा करवट बदलने की इच्छा, और उससे आराम मालूम होना, बहुत सिर दर्द, जम्हाई लेना, कब्ज, जीभका अगला हिस्सा बहुत लाल, चमड़े के ऊपर जुर-पित्तीकी तरह दानें और खुजलाहट।

टाईफाइड फीवर वो सान्निपातिक ज्वरातिसार।

Typhoid Fever.

रोग परिचय—एक खास विषसे इस ज्वर की उत्पत्ति होती है और यह संक्रामक है। पैखाना का गला पचा मल और मोरियों का सड़ा मैला या कोई सड़ा हुआ जन्तु इत्यादि से यह विष उत्पन्न होता है। बहुत बच्चा और ५ वर्षसे कम उम्रमें साधारणतः यह ज्वर नहीं होता है। गर्भावस्था मे ज्वर के सिवा और कोई पीड़ा होनेसे वह पीड़ा नहीं होती है।

लक्षन—पहला हफ्ता—पीड़ा का आक्रमण अति धीरे २ प्रकाश होता है। रोग आक्रमणके पहले सप्ताह मे रोगी के शरीरका

सिथिल होना, कमर में दर्द, देहका भहराना, उत्साहका कम होना और शिर दर्द मालुम होता है और इसके बाद ज्वर हो जाता है। पहले चार पांच रोज तक यह ज्वर एकही रूपसे बढ़ता है। प्रतिदिन सामके समय २—डिग्री ज्वर बढ़ जाता है किन्तु प्रातःकालमें ज्वर सन्ध्याके ताप से १ डिग्री परिमाण कम होता है अर्थात् रोज कुल एक डिग्री ज्वर बढ़ता है। टाईफाइड रोग में पहलेसे पेटका रोग और कब्जियत, दोनोंही हो सकता है। पेटका रोग होकर पीड़ा आरम्भ होनेसे बहुत खतरनाक होता है। पेटकी दाहिनी तरफ नीचेकी ओर दबानेसे गुड़गुड़ाहट मालूम होती है। मल साधारणत: दाल के पानीके समान होता है।

दूसरे हफ्ते में छाती और पेट के ऊपर मच्छड़ काटनेसे जैसा दाना होता है, वैसा ही लाल २ दाना दिखाई देता है। अंगुली द्वारा दबानेसे वह दाना छिप जाता है। और अंगुली हटाने से फिर पहलेकी तरह हो जाता है। खास २ रोगोंमे चमड़ेके ऊपर इस दानेका निकलना कम वेश या बिलकुल ही नही हो सकता है। इसी समयमें पेट ज्यादे अफर जाता है। ज्वर बढ़ते बढ़ते १०३ से १०५ डिग्री तक हो कर एक चालसे रहता है। जो रोगी मे बेहोशी या खांसी इत्यादि फेफड़े की बीमारी अधिक देखी जाती है या अतरी मे जखम, हो जाता है, खून बहता है ऐसे रोगी का प्राय.दूसरे हफ्तेमें मृत्यु हो जाती है।

तीसरे हफ्ते मे रफ्ते-रफ्ते ज्वर सविराम ज्वर के समान

होता है। रोगी अत्यन्त दुर्बल और सुस्त होता है। जीभ सूखी, कुछ छोटी, फटी २ और लाल होती है। नाड़ी वहुत कमजोर हो कुछ २ विकार भी होता है। इस हफ्तेका आखिरी हिस्सा बहुत खतरनाक होता है इस समय मे न्युमोनिया, खून निकलना, पेटको ढांकनेवाली झिल्लीका जलन इत्यादि होता है।

चौथे हफ्ते या २१ दिन के वाद ज्वर और दूसरा-दूसरा लक्षण रफ्ते २ कम होता है। नाड़ी की गति गम्भीर और तेज होती है, भूख वढ़ती है और रोगी धीरे धीरे चंगा होता रहता है किन्तु कोई कोई रोगी इस हफ्ते में बल्कि पांचवे या छठे हफ्ते तक पूर्ण रोग भोग कर के चगा होने लगता है या मर जाता है। टाईफाइड मे नाड़ी की गति ज्वर के अनुसार तेज नहीं होती है, प्रतिमिन्ट मे ९० वार से ११० वार तक फड़कती हुई देखी जाती है। प्रति मिन्ट में नाड़ीकी गति १२० से अधिक होना खतरनाक है। इस ज्वरको प्रथम अवस्थामे पहचानना कठिन है। प्रतिदिन थोड़ा २ करके ज्वर का वढ़ना, पेटकी दहिनी ओर नीचे के भागमे, दबाने से दर्द और गड़गड़ाहट मालूम होना टाइफाइडके स्वभाविक दाने और मटर के दालके पानीके समान मल, प्लीहाका वढ़ना, खून निकलना इत्यादि लक्षणोसे पहचाना जाता है।

टाई फाइड ज्वरका रोगभेद और भावीफल:—न्युमोनिया, प्लुरिसी, यक्ष्मा, अंतरी मे छेद होना

पेटकी ढंकनेवाली झिल्लीका जलन, बिछावन का जखम वोगैरह ज्यादे खतरनाक लक्षण है । अक्सरहां समूचे शरीर या किसी अंगमें शून्य मालूम होना, स्नायु मे पीड़ा, कानका पकना, खूनकी कमी और शरीरका वहुत निकम्मा हो जाना ।

टाईफाइड और टाइफस ज्वर का भेद निर्णय ।

टाईफाइड ।	टाइफस ।
(१) १८ से ३५ वर्षतक के उम्रवाले मनुष्योंको ज्यादा होता है।	(१) सव किस्म के उम्र मे और ज्यादेतर जवानी के वाद में वेशी होता है।
(२) पीड़ा वहुत धीरे २ बढ़ती है।	(२) पीड़ा एकाएक बढ़ जाती है।
(३) पीड़ा तीन हफ्ते से कम नहीं रहती है।	(३) पीड़ा दो हफ्ते से ज्यादे रहती हुई नहीं देखी जाती है।
(४) दो हफ्तेसे पहले कभी मृत्यु नहीं होती है।	(४) अक्सरहां पहले ही हफ्तेमे मृत्यु होती है।
(५) वेहोशी और विकार धीरे २ बढ़ने लगता है।	(५) पीड़ाके शुरूसे ही वेहोशी और विकार वनी रहती है।
(६) चमड़े के ऊपर निकले	

टाईफाइड ।	टाइफस ।
हुए सब दाने लाल होते हैं किन्तु यह दाना हाथ पैर मे नहीं होता है।	(६) सारे शरीरमे चमड़ेके ऊपर काले २ दानें निकलते हैं।
(७) अक्सरहां पेटका रोग देखा जाता है।	(७) पेटका कोई लक्षण ज्यादे नहीं देखा जाता है।
(८) प्लीहा बढ़ती है।	(८) प्लीहा बहुत नरम होती है।

टाईफस वो बिकार प्रमुख सान्निपातिक ज्वर

Typhus Fever.

रोग-परिचय :—यह ज्वर भारतवर्षमें हमेशा नहीं देखा जाता है। यह ज्वर एकाएक हो जाता है। यह स्पर्शाक्रामक और संक्रामक दोनों स्वभावका है। अकालके समय यह संक्रामक भावसे देखा जाता है। जिस जगह में बहुत ज्यादे आदमी एक साथ रहते हैं या जिसकी हवा बहुत गंदी होती है उसी जगह यह रोग पैदा होता है। रोगीके शरीर से निकली हुई भाफ और स्वांस-प्रस्वांससे छोड़ी हुई हवा बहुत विपैली होती है। यह विष शरीरमे लगनेसे पीड़ा पैदा होती है। ऊनी और काले रंगवाले कपड़े के जरिये यह विष एक जगह से

दूसरी जगह जाता है। यह ज्वर ज्यादतर किसी को दूसरी-बार नहीं होता है। यह १४ से २१ दिन तक रहती है। शरीर मे ताप १०० से १०५ डिग्री तक या इससे अधिक हो सकता है।

लक्षण—टाइफस ज्वर मे चौथे दिनसे एक हफ्ते तक चमड़े के ऊपर दाने निकलते रहते हैं। दाने पहले लाल रंगके होते हैं और दबानेसे छिप जाते हैं और छोड़ देने से फिर दिखाई देते हैं। पीछे दाने का रंग बैंगनी होता है। कभी २ इन दानोसे भरा हुआ चमड़ा काला जामुन के ऐसा दिखाई देता है।

पहले हफ्तेमे सुनने की शक्ति कम होती है और तरह-तरहकी आवाज कानमें सुनाई देती है। आंख लाल, जीभ सूखी, नींद नही आती है या नींद आने पर भी रोगी नहीं सो सकता है। पेशाव थोड़ी होती है या पेशावकी कमी के साथ-साथ इउरिमिया (Urimaea) वा मूत्र विकार होता है।

दूसरे हफ्तेमे रोगी बिछावन पकड़ लेता है। मांसपेशीका ऐंठन, विकार, न्युमोनिया अथवा प्लुरिसी होकर रोगीकी हालत खतरनाक हो सकती है। कभी-कभी ज्यादे थकावट, पसीना, पेटका रोग अथवा पेशाव ज्यादा होकर रोगीके मरने का शक हो जाता है। रोगी आराम होने की हालत में १३, १४ दिनमे निरोग होने लगता है। इस ज्वरसे मृत्यु १२ से २० दिनके बीच मे ही होती है। ज्यादे उम्रमे इस ज्वरसे खतरेका

ज्यादे डर होता है। ज्वर करीब २ क्राइसिस भावसे छूट जाता है ।

टाइफाइड और टाइफसकी चिकित्सा ।

एपीसमेल—६-३०—२००—पित्त-प्रधान धातु, जीनेकी निराशासे रोगीका रोना, आंखके नीचे के हिस्सेमें सूजन डक मारनेके ऐसा लहरके साथ दर्द सोये या जागे हालत मे एकाएक चिहुक कर उठना, भूखकी कमी, सूजन, पेशावको रोकनेसे लाचार, पेशाब करनेके समय ज्यादे जलन, बारबार पेशाब करना, उदास भाव, बेहोशी और बक २ करना, बर-राना, सुननेकी शक्तिका कम होना, जीभका सून्य होना, फटें २ दाने या फफोलेसे भरी हुई, इसका सूखना, पेट अफड़ा हुआ, दर्द के साथ पैखाना, कब्ज या बदबूदार खून मिला हुआ पैखाना, नाक से खून निकलना, चमड़ा सूखा और जलनके साथ, छाती और पेट मे उजला २ दाना दिखाई देता है ।

आरनिका मौन्ट ३०-२०० हमेशा करवट या बिछावन बदलनेकी इच्छा, शरीरमे ज्यादे वेदना, बिछावन बहुत शख्त मालूम होता है । शरीरका नीचला हिस्सा ठंढा और ऊपरी हिस्सा गरम, चेहरा गरम और शरीर ठंढा, वेहोशीमे पेशाव और पैखाना होना ; सवालका जल्द जवाब देकर तुरन्त ही बेहोश होना, श्वांस बदबूदार, ज्यादे प्यास, बेहोशी की हालतमे सिरमे किसी किस्मका तकलीफ न होना ।

आरसेनिक ३०-२००—यह टाईफायड ज्वर के लिये एक खास दवा है। रोगी एकाएक सुस्त हो जाता है। बहुत चंचलता और व्याकुलता, किन्तु कमजोरीके वजह से करवट नही ले सकता है। आगके समान अंगमे जलन, ज्यादे प्यास किन्तु बहुत थोड़ा २ जल पीना, जल पीने से पेट में दर्द या कै होना, होंठ और जीभ बहुत सूखी और फटी-फटी जीभ काली, तरल चीज पीने के समय घड़बड़ाहट के साथ नीचे उतरता है। बेहोशीमे पेशाब हो जाना, भूरे रंगका बदबूदार पैखाना या पैखाने में खून, अलकतराके ऐसा काला पैखाना, काला कै, स्वांस-प्रस्वांस तेज, दाने सफेद अथवा काला, मुंहमे जखम, दांतके जड़में काला मल, नाड़ी बहुत कमजोर और पसीना ठंढ।

बैपटिसिया ६-३०-२००—बहुत चिकित्सकों का ख्याल है कि टाईफायडकी पहली हालत में इस दवेको देनेसे रोग नहीं बढ़ सकता है। शरीरका सब निकलना वगैरह (पखाना, पेशाब, पसीना, स्वांस प्रस्वांस) बहुत बदबूदार, विकारकी हालत मे घबड़ाना, ऐसा भाव दिखलाता है कि अपने शरीरके अलग-अलग टुकड़ेको एक साथ कर रहा है। सवाल करनेसे जवाब देते-देते सो जाता है बहुत गहरी नींद, शरीरमें बहुत दर्द, जिस करवट से सोता है वहीं दर्द करने लगता है। जीभका बीचला हिस्सा उजला या भूरे

और दोनों बगले लाल, स्वाद कडुआ, तरल चीज पी सकता है। लेकिन शख्त चोजों के खाने के समय जी मिचलाता है, निढाल हालत।

बेलेडोना ६-३०—पहली हालत में बुखार बहुत तेज होने से दिया जाना है। मांथेमे ज्यादे खून, आंख और चेहरा लाल, पुरपुरीकी नाड़ी बहुत तेजीसे फड़कती है, बहुत सिर दर्द, सामान्य करवटसे सिर फटते हुए मालूम होना, मुंह सूखा, पेशाबकी कमी बहुत कड़ा ज्वर, थोड़ा चिपचिपा पसीना, हाथ पैर ठढ, दिनमे नोंद, रात मे नोंद न आना या बहुत तन्द्रा लेकिन नींद नही आती है, तेज विकार, बिछावन से उठकर भागना चाहता है। आंखाकी पुतलियां फैली हुई, रोशनी देखकर डर जाता है, जीभ लाल वो सूखी।

ब्राइयोनिया ३०-२००—बात-प्रधान धातु, स्वभाव चिढ़चिढ़ाह, करवट लेनेसे ज्यादा तकलीफ होना, आरामीकी हालत मे अच्छा लगना, विकारकी हालत, हमेसा विषय कर्म्मका बातचित करना, बिछावन से उठकर भागना चाहता है। रोगी कहता है कि हम घरमे जायंगे। बहुत सिर दर्द, करवट बदलनेसे बढ़ना, पैखाना न होना, मूर्छा, सिरका चकराना, जी मिचलाना, बहुत प्यास लगना और बहुत समयके बाद ज्यादे पानी पीना, ग्रीष्म कालमे ठंढ पानी पीने के वजह से पीड़ा या अचानक पसीना रुक जानेसे पीड़ा, जीभ

सूखी और भूरी रंगकी, छाती मे सूई चूभनेके ऐसा दर्द, और खांसीसे दर्द का बढ़ना, छातीपर दवानेसे आराम मालूम होना, सूखी खांसी ।

कैलकेरिया-कार्व ३०-२००—यह दवा ढिला मोटा वलगमी तवीअत वाले मनुष्योंको पीड़ाकी पहली हालतमे दी जाती है। लक्षण—घबड़ाहट, बहुत किस्म के मनकी सोचके वजह से नीद न आना, अथवा नींद आते-आते जाग उठना, गलेमे खसखसाहट के साथ खांसी होना ।

खांसीके साथ सिर मे दर्द, माथेका गरम मालूम होना, पीड़ाकी दूसरी या तीसरी हालतमे पेटका रोग, अंतरीमें जखम, चेहरा लाल, बिकार, चौंक उठना बच्चो के सिरमे बहुत ठंढ पसीना, सोनेपर पसीनासे तकिया भिग जाता है। तालु खुला हुआ, दांत निकलनेके समयकी विमारी ।

कैम्फर ३०-२००—एकाएक जीनेकी शक्तिकी कमी, सब शरीर वर्फके ऐसा ठंढा, चेहरा मुर्दे के ऐसा पीला, सारे शरीरमे ठंढ, पसीना, लेकिन ज्यादे गरमीके वजह से शरीरका कपड़ा फेंक देता है।

कार्बो-भेज ३०-२००—रोगी ज्यादे सुस्त, स्वांस-प्रस्वांसमे घड़घड़ाहट, ठंढ पसीना, ठंढ शरीर, चेहरा मुर्दे के ऐसा, हृत-पिण्ड बहुत जल्दी कमजोर हो जाता है। नाड़ी

ज्यादे कमजोर, शरीरकी किसी २ जगहपर नीलेरंगका दाग, बेहोशी मे पैखाना होना, पैखाना खून मिला हुआ बदबूदार और मुंहसे खून निकलना, खून काला और सड़ा हुआ, जोभ पर लसदार मैल, पेट अफड़ा हुआ, और बहुत हवा छुटना, मूत्र बदबूदार और कडुआ, जोभ और चेहरा नीला हो जाता है। रोगी हमेशा हवाके लिये घबड़ाया रहता है। पूरी तरह से बेहोशी।

चायना ३० २००—पीड़ाकी पहली हालतमे बहुत कम ज्वर, चेहरा फीका, देखने की शक्तिकी कमी, कानमे बहुत किस्मकी आवाज सुनाई देती है। सुनने की शक्तिकी कमी, जीभपर मैल, जी मिचलाना पेट अफड़ा हुआ, हवा छुटने पर भी आराम नहीं मालूम होता है। पेटपर धीरेसे दबाने से दर्द जोरसे दबानेसे आराम मालूम होना, बिना दर्द के पतला दस्त, ज्यादे पैखाना, प्लीहाका शख्त होना और बढ़ना, पीड़ाके बाद रातमे ज्यादे पसीना होना, और बहुत जल्दी ताकतका कम होना।

इउपेटोरियम पर्फ ३०-२००—पैत्तिक या मेलेरिया ज्वर टाईफाईडकी हालत हो जानेपर दिया जाता है। बहुत जी मिचलाना, कै से पित्त गिरना, दस्तसे पित्त गिरना, बहुत पसीना, गरमी और ठंढी बारीबारीसे होती है। सब शरीरकी हड्डियोंमे ज्यादे दर्द।

जेलसिमिअम ६-३०-२००—बहुत कमजोरी, आंख बन्दकर चुपचाप पड़ा रहना चाहता है; आंख खोलना या किसी से बातचित करना नही चाहता है, सब शरीर का कांपना, नींदसे उंघता हुआ और सिरमें चक्कर आना, देखने की शक्तिकी कमी नाड़ी बहुत धीमी, थोड़ी मेहनत से नाड़ी तेज हो जाती है । सिर, पीठ और हाथ पांवमे दर्द, बहुत तेज ज्वरके साथ ठंढ, मुंह बेस्वाद, जीभ साधारण तौर से कच्चे मासके समान मैलापन और दर्द के साथ, मुंहसे बाहर निकालनेके समय कांपना, पेटकी घड़बड़ाहट, जी मिचलाना, माम पेशियोंका फड़कना ।

हेलिबोरस ३०-२००—रोगी पूरा बेहोश, हृदय का फड़कना, नाडीका चाल धीमी, ज्वर बहुत साधारण, अन्तःग्रिया बहुत शून्य, बेहोशीमे पेशाब होना, हमेशा होठ और कपडा वगैरह खोंटता है। हमेशा सिर हिलाना या जोर से चिल्लाना, एक हाथ-पैर पूरा शून्य और एक हाथ पैरका हमेशा हिलाना-डोलाना ।

हाइड्रोसायनिक-एसिड ६-३०-२००—तरल चीज पीनेसे गलगलाहटके साथ नीचे उतरता है। सब शरीर ठंढा या हाथ-पांव ठंढा; शिर गरम या सब शरीर गरम और पसीना गरम ।

हायोसायेमस ३०-२००—बेहोशीके साथ डिलिरियम, सब ज्ञान से रहित ; बिछावन खोंटना ; हमेशा आंख फैलाकर चारों ओर देखता रहता है। बहुत किसीम के बे-तमीजकी बात करना और नंगा होना, आंख लाल रंग चमकील और फैली हुई ; बहिरा रहना ; पुतली घुमता रहता है। जीभ लाल या भुरे रंगकी, सूखी और फटी-फटी ; जीभ शून्य, बोली लरखराई हुई या न बोला जाना, बेहोशी में पेशाब व पैखाना होना ; पेशाब बन्द होना, सोनेपर बरबराना ।

इपीकाक ३०-२००—कुटे हुए घास के ऐसा पैखाना, शरीरमें बहूत जगहसे खूनका निकलना, खून उजला व लाल ; हमेशा जी मिचलाना और कै होना, गलामे घड़घड़ाहट, किन्तु कफ नहीं निकलता है ।

लैकसिस २०-३००—पुरी बेहोशीकी हालत और बर-बराना, हमेशा बकवाद करना, सवालका जबाब देते देते सोजाना, जीभ निकालनेके समय दांतमे अंटक जाना और कांपते रहना, नाक और मुंह काला ; पतला काला खून निक-लना, आंख तेजीसे हीन कंठनली में जखम ; पेटका रोग, पैखाना के पहले पेटका अकड़ना, काला खूनके साथ पैखाना, खांसी, कफ लसीला, खून मिला हुआ सोने के बाद पीड़ाका बढ़ना ।

लाइकोपोडियम ३०-२००—बेहोशी मे बरबराना पेटका ज्यादे हडहड़ाना, पेट फुगना, पैखाना न होना, चमड़े पर धीरे धीरे टाइफाइडका दाना निकलता है। चेहरा जरद, निचले चहुका गिर जाना, नासिकाका बन्द रहना, मुंह खोलके स्वांस लेना, नाकका पच्च पंखा के ऐसा चलता है, पेट मे गड़गड़ाहट होती हैं। पेशाब काला या पेशावमे खरी-मिट्टीके चूर्णके ऐसा दिखाई देता है। खांसी के साथ घड़-घड़ाहट आवाज, ठीक नींद का न आना। नींद में चौंक उठना बहुत कमजोरी, जीभका मैल लसेदार।

मारक्युरियस-सल ६-३०—पीड़ाकी पहली हालत मे और कंठमाला धातुका लोगो के लिये यह अति उत्तम दवा है। शरीरकी ताकतका कम होना, चेहरेका रंग बदला हुआ, स्वाद सडा हुआ, बहुत ज्यादे पतला दस्त और दस्तमे रुईके ऐसा दिखाइ देता है। वार वार पेशाव होना, चंचलता, नींद न आना, किन्तु डिलिरियम प्रायः नहीं होता है। बहुत ज्यादे बदबुदार पसीना, किन्तु उससे आराम नहीं मालुम होता है। शरीर का चमडा पीला, मुहसे ज्यादे लार गिरता है तौभी बहुत ज्यादे प्यास।

म्युरियाटिक एसिड... **मस्कस** ६-३०—पेफड़ाके हालत के शुरु होने पर यह दवाई दी जाती है। नाडी धीरे धीरे कम होती जाती है। खांसी न होनेसे कफ नही निकल रुकना है। पानी के ऐसा

चीज पीने से आवाज के साथ नीचे उतरता है। वेहोशी मे पेशाव वो पैखाना होना; हमेशा नींद से झुकते रहना।

म्युरियेटिक-एसीड ३०-२००—खतरनाक टाइफएडकी हालत, मुंहमे जखम, मुह बदबूदार; जीभ शून्य और सूखी हूई; रोगी पूरी तरह से वेहोश हमेशा तकियासे नीचे खसकना, वेहोश मे पेशाव और पैखाना होना, निचला चहूका गिर जाना; पैखाना खूनके साथ और पेचिशकी तरह।

नकसभोमिका ३०-२००—पीड़ाकी पहली हालत पखाना और कै से पित्त गिरना। जीभ जर्द रंगकी स्वाद तीता, पेट मे दर्द, पेशाव लाल वा वार-वार थोड़ा-थोड़ा पेशाव होना, वार-वार पखाना जानेकी इच्छा, स्वभाव बहूत चिरचिराहा, हमेशा ठंढ मालूम होना खुली हवा बर्दास्त नही कर सकना।

नक्स-मस्केटा ६-३०—चमड़े पर नीले रंगका दाग, शिर घुमना; वेचैन; बहूत नींद, थोड़ी नींद में भी स्वप्न देखना; वेहोशी में चुप रहना, मुंह, जीभ वो गला सूखा, लेकिन प्यास नहीं मालूम होती है। वहूत बदबूदार दस्त; पेशाव थोड़ा वो गाढ़ा रंग या साफ।

ओपियम ३०-२००—पूरी वेहोशी, किसी तरह का दर्द या तकलीफ नही मालूम करता है। ज्यादे वेहोशी, किसी तरह रोगी को जागाया नहीं जाता है। वोली बन्द हो जाना आंख आधी खुली हुइ; सिरमें लालीपन, चेहरा कालापन लाल

और फूला-फूला; तेज विकार, ज्यादे खिंच-खिंच कर स्वांस लेना ; स्वांस-प्रस्वांसमे खड़खड़ाहट; वेहोशकी तरह चेहरा; नीचला चहूका गिर जाना, पेट फूला हुआ; नींद से झुकते रहना; जीभ सूखी और काली रग; लेकिन प्यास न मालूम होना; पेशाव वन्द होना. वेहोश में पैखाना होना।

फसफोरस ६-३० २००—टाइफाइड और टाइफस मे निउमोनिया होनेसे यह दवा वहुत अच्छी है। स्वांस प्रस्वांस में तकलीफ, व्याकुलता; खांसी सूखो वो कठिन; छाती कसा हुआ; गलेमे कफका घड़घड़ाहट आवाज; कफ कठि और साफ, गोढ़ा पीवके ऐसा या लाल रंगका, सामसे दो पहर रात तक खांसीकी वढ़ती; वहूत सुरती और शरीरमे पसीना, स्वांस-प्रस्वांस के साथ दोनों नाक का ज्यादे चलना; जीभ काली और सूखी। पानीके ऐसा पतला ज्यादे दस्त, पैखानामे सावुदाना के ऐसा दीख पड़ता है। पेट वहूत वोलता है; दस्त के वाद वहुत कमजोरी मालूम होती हैं। पेशावमे चूना घोला हुआ पानीकी तरह दिखाई देता है। वेहोशी; विकार में शून्यमें थहराना, घरको चारो और आदमीका सिर दिखाई देता है, आंख अन्दर घुस जाता है आंख की चारो ओर नीले रंगका दाग पड़ता है। वहुत प्यास; पानी पेटमे गरम होनेही से के होना। खाने के वाद दस्त होना।

फसफोरिक एसीड ३०-२००—शरीर और मनकी ताकतका एकाएक घट जाना; वहूत वेहोशी सव विषय में

उदास भाव, ज्ञान न रहना, बरबराना, आंख मूंदकर रहना, आंखकी रौशनी कम, जीभ और होठ सफेद और फीका, कानसे कम सुनाई देना, पेट बोलनेके साथ पतला दस्त, पेशाब चूनाके पानेकी तरह, चमड़ेके किसो २ जगहमे खूनका जमा होना, जिस करसे सोता है उस करमे काला दाग पड़ता है, बहूत पसीना।

रसटक्स ३०, २००—तेज टाइफाइड ज्वरमे वहुत लाभदायक है, ठंढके साथ ज्वर होनेके साथ २ शरीरमें गरमी होती हैं। वर्षाके पानोमे भींगनेसे पीड़ा, सब सरीरमें ज्यादेतर कमरमे दर्द, हमेशा बेचैनी और इधर-उधर करनेसे आराम मालूम होना, जीभका अगला हिस्सा लाल और सूखा, ब्रोंकाइटिस व न्युमोनिया. वहुत खांसी, कफ का रंग लाहाके जंगके ऐसा, पैखाना मांस धोए हूये पानीकी तरह। विकारमे किसोम २ के काम करने का भाव होना, वेहोशी की हालत।

स्ट्रमोनियम ३००-२००—हमेशा रौशनीमे और साथियोंके साथ रहना चाहता है, वेहोशोमे हरएक इन्द्रीका सुस्त होना, विकार मे छटपटाना और किसिम २ की चीजका देखना, नाचना, रोना, कूदना, और भागनेका कोशिश करना। बिना इच्छाके हांथ-पांवका जोरसे पटकना, अपने लिङ्ग पर हाथ डालना, और नङ्गा होनेका कोशिश करना, आक्षेपके साथ चेहरेका विकार, आंख आधी खुली, देखना, सुनना, और बोली का बन्द होना, स्वांस प्रस्वांस खर्राटेदार, सोनेसे

उठकर चिल्लाना, मूंह खोलकर और पांवको सिकुड़ाकर रहना। पेशाव, पैखाना न होना या पैखाना काला रंग वो मड़े हुये मांसकी तरह बदबूदार।

एन्टिमटार्ट ६-३०-२००—न्युमोनिया, तरल कफ, गलेमें घड़घडाहट होता है किन्तु कफ नहीं निकलता है। स्वांस लेनेसे तकलीफ, बहूत ज्यादा पसीना, जीभके ऊपर लाल रंगका रेघारी पड़ना या जीभका ऊपर सफेद वो चिपचिपा मैल, हमेशा उङ्घते रहना और बहूत सुस्त।

सल्फ़र ३०-२०० ज्वरका बढ़ना या घटना कुछ भी न मालूम होनेसे यह दवा दी जाती है। सवाल पूछने पर बहूत देरके बाद धीरे २ जवाब देता है। सिर गरम, रातमे नींद न आना, जीभका अगला हिस्सा लाल, बार २ दस्त होना, मनकी हालतका बदलना, पैखानाके बाद सो जाना।

पुनः पुनिक ज्वर या दुर्भिक्ष ज्वर।
Relapsing Fever.

रोग परिचय—यह ज्वर एक खास विषसे पैदा हुआ और संक्रामक है। यह एक प्रकारका बार २ आनेवाला ज्वर है। यह ज्वर एकाएक पैदा होकर बहूत जल्दी २ बढता है। ताप १०४ या १०५ डिग्री तकका होता है। ज्वर के साथ शिर दर्द, कमर और हाथ पैर में दर्द, जी मिचलाना और के होता है, कै से खून का गिरना और अल्प विकार भी

हो सकता है। चमड़ा सूखा और एक किसीमका जर्द होता है। प्लीहा और यकृत बढ़ती है और उनकी जगहोंमे दर्द रहता है। किसी किसी रोगी मे हामके ऐसा एक किसिमका लाल दाना देखा जाता है। प्राय एक हफ्ते या १० दिन तक रोग रह कर एकाएक पसीना होनेपर ज्वर कम हो जाता है। इस समय कोई २ रोगी दस्त और खून के गिरने से बहुत कमजोर और सुस्त हो जाता है।

इस ज्वर मे लड़कोंको आक्षेप हो सकता है। गर्भिनीको यह रोग होनेसे गर्भके गिरजाने का ज्याद शक रहता है। ज्वर उतर जाने के प्राय एक हफ्ते के बाद फिरसे यह हो जाता है। लेकिन ताप पहलेसे कम होता है। इसी तरह २-३ या इससे ज्यादे वार यह होता रहता है।

चिकित्सा—इसज्वरमें एकोनाइट, आर्सेनिक, ब्रायोनिया वेपटिसिया खास दवा है। कभी कभी जेलसिमियम, चायना, पोडोफाइलम भी व्यवहार होता है। इसके चंगे होनेकी हालतमें फसफोरस या एसिड फस दिया जाता है। रोगको रोकनेके लिये कैम्फर और नक्सभोमिका दिया जाता है। रोगीका स्वांस प्रस्वांस दूसरे आदमीके शरीरमे न घुसे या न लगे इस विषयमे सचेत रहना चाहिये।

विशेष चिकित्सा मलेरिया चिकित्सामे देखो।

पीत ज्वर वा यलो फीवर।
Yellow Fever.

रोग परिचय—यह ज्वर संक्रामक है। इसके साथ पाण्डुरोग, सिर दर्द और काले रंग का कै होता है। यह ज्वर भारतवर्ष में प्रायः नहीं देखा जाता है।

लक्षण—एकाएक शरीर और मन कमजोर, भूख न लगना, सिरदर्द, जाड़ा और कंपाहटके साथ ज्वर आता है। किसी २ रोगी में बेहोशी, थकावट और आक्षेप भी देखा जाता है। रात मे ज्वर बढ़ता है। आंख लाल रंग और दर्द के साथ, ललाट के एक बगलमे दर्द, हाथ, पैर, पीठ और बड़े बड़े जोड़ों मे दर्द, जी मिचलाना कै, प्यास, पेशाब थोड़ा वा कब्ज़ होता है। पैखाना से पित्त नहीं गिरता है, धीरे २ विकार होता है। दूसरे या तीसरे दिन के आखिर भाग मे चेहरे में पाण्डुरोग दिखाई देता है। बदन मे पसीना और पेशाब बहुत पीला होता है; इसके बाद पेट मे दर्द सब शरीर पीलापन और बेहोशी हो जाती है; आखिरी हालत मे काला रंग का कै होता है। चमड़े का रंग मटीला होता है। नासिका, दन्तमूल, मलद्वार, योनिद्वार वोगैरह से खून निकलता है। पैखाना अलकतरा (Tar) के ऐसा दिखाई देता है, नाड़ी प्रायः छिप जाती है। ज्वर तीन दिन से नौ दिन तक रहता है।

चिकित्सा—(१) जाड़ा और कंपाहटके लिये—कैम्फर, (२) तेज बुखार और सिर पीड़ाके लिये—एकोनाइट या बेले-डोना, दो या तीन घंटेका बीच देकर देना चाहिये। यदि २४ घटे के अन्दर ज्वर दूर न हो तो जेलसिमियम या ब्रायोनिया ऊपर के लिखे मुताबिक देना चाहिये। (३) सिर, हाथ, पैर और पीठ मे गठिया ऐसा दर्द रहने से—सिमिसिफिउगा। (४) मतली वो कै होते रहनेसे—इपीकाक, एन्टिमटार्ट। (५) खून निकलनेके साथ कमजोरी—चायना। (६) स्नायवीय और रातमे बेचैनीके लिये—कफिया। (७) आर्सेनिक और मारक्युरिअस अथवा आर्सेनिक वा क्रोटेलस हर एक दो तीन घंटेके अन्तर पर देनेसे इस बुखारकी खतरनाक हालत मे बहुत फायदा होता है। (८) पेशाब पीला और खून मिले हुए—कैनथारिस। (९) पैखानाके साथ खून और मल द्वारमे दर्द—मारक्युरिअस। (१०) बहुत ज्यादे पतला दस्त और पेटमे दर्द—भेराट्रम ऐल्ब (११) काला, पतला वो बहुत ज्यादे दस्त—पडोफाइलम। (१२) स्वांस प्रस्वांस, दस्त, कै सब बदबूदार—कार्वोभेज। (१३) पतला व सफेद दस्त—एसिड-फस। (१४) गर्भ गिर जानेके खौफ या जरायुसे खून निकलनेके लिये—सैवाइना, सिकेली, हेमामैलिस। (१५) डिलिरियमके लिये—हायोसायेमस, स्ट्रामोनियम, ओपियम। (१६) आवश्यक होनेसे टाइफाइडकी दवा देखो।

मैलेरिया ज्वर ।

Malaria Fever.

मैलेरिया नामके खास विषसे जो ज्वर पैदा होता है उसको मैलेरिया ज्वर कहते हैं । सड़ेगले हरियालीसे जो भाफ पैदा होता है वही भाफ इस ज्वर का कारण गिना जाता है। ग्रीष्मकालके आखिर मे और शरत कालमे मलेरिया बहुत होते हुए देखा जाता है। शख्त गरमीके बाद वर्षा होने से मलेरिया शुरू होता है और बहुत ज्यादे वर्षा और बाढ़ होने से मलेरिया विषका कुछ भाग नष्ट हो जाता है, किन्तु यह जल जब सूखने लगता है उस समय उसके अन्दर के सड़े हुए उद्भिद और जन्तुओं मे भाफ निकलता है तब मलेरिया पैदा होते देखा जाता है।

मलेरिया विष श्वांस के साथ या खाने और पीनेकी चीजोंके साथ शरीरमे प्रवेश करता है। मैलेरिया विषका काम स्नायु-विधानके ऊपर पड़नेसे मैलेरिया ज्वर होता है और इसके साथ प्लीहा और यकृत भी बढ़ती है। नीचे वो मर्त्तव जगहमें मैलेरिया विष ज्यादे पैदा होता है और वायुके जरिए एक जगह से दूसरी जगह जाता है। दिनके समय सोये हुए मनुष्यों पर इसका असर ज्यादे पड़ता है । मैलेरिया पैदा होने के समय मे अधिक शराब पीना, बहुत मेहनत करना, बहुत भोजन करना या भूखकी हालतमे मेहनत करना नहीं चाहिये ।

जहां मैलेरिया ज्वर फैला हो वहां पानी जरूर साफ करके पीना चाहिये और जमीनमे न सोना चाहिये।

मैलेरिया ज्वर का विभाग।

मैलेरिया ज्वर नया और पुरानाके हिसाबसे दो प्रकारका होता है।

नया मैलेरिया ज्वर दो तरह का देखा जाता है। (१, सविरामज्वर वो इन्टरमिटेन्ट फीवर (Intermittent Fever), यह बहुत आसानी से पहचाना जाता है। यह ज्वर कई वार उतरता और कईवार चढ़ता है। प्राय हर एक रोगी को जाड़ा और कंपाहटके साथ ज्वर आता है। सब शरीर जाड़ा से कांपता रहता है। पहले सब शरीर या हाथ पांव ठंढ हो जाता है। फिर कुछ देरके वाद धीरे-धीरे ताप वढ़ने लगता है। वाद पसीना होकर वोखार उतर जाता है। इस वोखारके साथ पित्त कै से गिरता है, सिर दर्द, और हाथ पांवमे दर्द वगैरह लक्षण देखा जाता है।

(२) स्वल्प विरामज्वर वा रेमिटेन्ट फीवर (Remittent Fever) सब किसीमका ज्वर मामूली जाड़ा होकर अचानक हो जाया करता है; ज्वर सुवहमें कुछ कम रहता है और स्वभाविक दोपहर मे वेशी रहता है। इसके साथ कै, प्यास, विकार, प्लीहा और यकृत वढ़ती है। इस समय में अच्छा इलाज न होनेसे यह ज्वर टाइफाइड मे वदल जा सकता है। स्वल्प विराम ज्वरमे टाइफाइड से ज्वरका विराम काल ज्यादे देखा

जाता है और टाइफाइडका स्वभाविक चमड़े पर दानेका निकलना नहीं देखा जाता है। साधारण स्वल्प विराम ज्वर सहजसे ही आराम होता है। लगातार तेज ज्वर, बहुत थोड़े समयके लिये सामान्य विराम, पान्डु रोग वो पेशाब मैला होना खतरनाक है।

रेमिटेन्ट फीवरका अन्यान्य उपसर्ग।

क—गैस्ट्रिक और विलिअस फीवर।

Gastric and Bilious fever.

जिस स्वल्पविराम ज्वरसे मेदा में तकलीफ मालूम करना, मेदापर छुनेसे बर्दास्त न कर सकना, कै और जीभके आगेका हिस्सा अथवा बगलमे लाल होता है, उसको गैस्ट्रिक रेमिटेन्ट ज्वर कहते हैं। जो स्वल्प विराम ज्वरमें बार-बर पित्त मिला हुआ कै होता है और जीभमे पीले रंगका मैल जमता है उसको विलिअस रेमिटेन्ट या पैतिक ज्वर कहते हैं।

ख—पाण्डु रोगकी तरह लक्षण (Jaundiced Condition) —इसमें आंख, चाम और पेशाव पीला होता है। दस्त फीका और सफेद रंगका होता है। यकृतके स्थानसे दर्द होता है।

ग—प्लीहा और यकृतका बढ़ना और दर्द।

घ—निउमोनिया और ब्रोंकाइटिस स्वल्पविराम ज्वरका बहुत कठिन लक्षण।

ङ—स्वल्प विराम ज्वर मे कभी-कभी टाइफाइडका लक्षण देखा जाता है। इसीको टाइफो—मैलेरिया कहा जाता है।

च—कभी-कभी खूनका निकलना वगैरह बहुत किसीमका लक्षण देखा जाता है और उसको मैलिगनेन्ट—रेमिटेन्ट (Malignant Remittent) कहते हैं।

प्राचीन मैलेरिया ज्वर।

Chronic Malaria.

यह नीचे लिखे तीन किसीम का देखा जाता है।

१। प्राचीन सविराम ज्वर—यह तेज सविरामज्वर के ऐसा बीच-बीचमे नागा करके बारबार होता है। यह ज्वर स्नान या भोजनसे कमी बेशी नहीं होता है।

२। प्राचीन लग्न ज्वर वा पुराना धीमा ज्वर।—इस बोखारमे रोगी बहुत कमजोर, बे खूनका, और दुबला-पतला होता है। ज्वर प्राय १०३ डिग्रीसे बेशी नही होता है। प्लीहा और यकृतका बहुत बढ़ना, कब्ज और रोगीका शरीर जर्द होता है। इस प्रकारके रोगीको मैलेरिया होनेवाली जगह में न रख कर दूसरी जगह रखना चाहिये। यह पीड़ा जल्दी न आराम होनेसे प्लीहा और यकृत बहुत बढ़ती है वो शरीरका फूलना, दस्त, पेचिस,

खांसी वोगैरह लक्षण दिखाई देता है; कैंक्रम ओरिस (Cancrum oris) या मुंहमें श्लेहात पैदा हुआ जखम हो जाता है। यह वहुत खराव लक्षण है।

३। जीर्ण ज्वर—यह ज्वर रोज-रोज ज्यादेतर रातमे और कभी-कभी दिनमें भी होता है। ताप वहुत मामूली होता है। किसी-किसी समय गरमी मालूम ही नही होता है, सिर्फ नाड़ी कुछ तेज मालूम होती है। मुंह वेस्वाद हो जाता है। भूख नही लगती है। शरीर दुवला-पतला होता है। नहाने वो खानेसे तकलीफ कमी वेशी नहीं होती है।

मैलेरिया ज्वर में पथ्य।

साधारण तरहसे सावू, वार्ली, आरारोट वगैरहको पानीमें पका करके, रोगीकी हालतके मुताविक किसी को नमक और निवूके साथ, किसीको मिश्री के साथ, किसीको गरम दूधके साथ दिया जाता है। लेकिन दूधको थोड़ा उवाल लेना चाहिये। अगर पेटमे कोई शिकायत हो तो दूध न देना चाहिये। सामान्य ज्वरमें यदि कोई खास लक्षण न हो तो चुरमूरा (मूढ़ी) और भुना हुआ चिउड़ा, लावा (खील) इत्यादि नमक और काली मिरच या मिश्रीके साथ दिया जाता है। यदि अच्छी भूख रहे तो पावरोटी टुकड़ा-टुकड़ा कर काटके सेंक कर दिया जाता है। रोगी दुवले होने पर मुंगकी दाल या मसूरकी दालका जूश (शुरुवा) दिया जाता है।

ज्वरकी चढ़ी हालतमे कभी भात और रोटी नहीं देना चाहिये। ज्वरके उतर जानेपर हालत के मुताबिक थोड़ा थोड़ा भारी पथ्य दिया जाता है। खास-खास आदमी को सुज्जी की रोटी या सुज्जीको पानी मे पका करके गरम दूध के साथ दिया जाता है। सुज्जीको भुन लेनेसे और भी हलका हो जाता है।

मैलेरिया ज्वर चिकित्सा :—

(१) रेमिटेन्ट ज्वरमे दवाईके लिये टाइफाइड चिकित्सामे जो जो दवाइयां लिखी गई हैं उनको देखो, क्योंकि टाइफाइड और रेमिटेन्ट फीवरका लक्षण करीब-करीब एकसा है। इन्टर-मिटेन्टमे जो जो दवाइयां काममें लाई जाती हैं खास हालतमें वे भी रेमिटेन्ट फीवरमे व्यवहार हो सकती हैं।

(२) गैस्ट्रीक और विलिअस ज्वर चिकित्सा।

एकोनाइट—६-३०—जीभ पीली पानीके अलावे खाने पीनेकी और सब चीजोंका स्वाद तीता, गरमीके साथ ज्यादा प्यास, तीता ढेकार, तीता कै, यकृत-स्थानमे दर्द, पैखाना रुक जाना, या थोड़ा २ करके पैखाना का होना, पेशाब थोड़ा और लाल, तेज बुखार, चमड़ा सूखा, नाड़ी पूरी वो तेज चंचलता।

बेलेडोना—६-३०—जीभ पीली या सफेद मैल से, मोटी, भोजन करने की इच्छा न होना, खट्टा या कडुआ कै, तेज बुखार, थोड़ा २ पसीना बहुत सिर दर्द, मुंह सूखा, दिनमें उंघते रहना, रातमें नींद न आना।

ब्राइयोनिया—१२-३०-२००—जीभ सूखी और पीली, मुंह बदबूदार, कडुआ स्वाद, जी मिचलाना, पित्त का कै, होना, मांथ और पेटमें सुई चुभने के ऐसा दर्द, ज्यादेतर खांसी के साथ; पेशाब पानी के ऐसा या पीला, पेशाबमें पीला सेडिमेन्ट वो गदला; तेज बुखार, गरमी के साथ प्यास या सब शरीरमे ठंढ मालूम होना और कांपना; चेहरा लाल रंग, दुबलापन, सिर चकराना; कब्ज; स्वभाव चिरचिराहा।

कैमोमिला—१२-३०-लालरङ्ग फटी २ या पीली मैल के साथ जीभ, कडुआ स्वाद; भूख न लगना, जी मिचलाना, कडुआ ढेकार और कै होना, पेट फूलना, पेटमें दर्द कब्ज या दस्त, दस्त हरा, पेशाब कडुआ, आधेसिर में दर्द; रोगी बहुत चचल और चिरचिराहा, एक गाल लाल और गरम, दूसरा गाल जर्द और ठढा।

ककिउलस—६-३० जीभ पीली मैल के साथ, खाने की इच्छा न होना, मुंह सूखा वो बदबूदार, ढेकार, जी मिचलाना पेट फूला वो दर्द के साथ, स्वास लेनेमे तकलीफ, कब्ज या नरम पैखाना के साथ मलद्वार मे ज्वाला; बहुत कमजोरी के साथ, साधारण मेहनत से पसीना आना; सिरमें पीड़ा, खासकर ललाट मे, सिर मे चक्कर आना।

इपिकाक—६-३० २००—जर्द मैल के साथ जीभ, मुंह सूखा, हमेशा कै की इच्छा, बदबूदार मुंह, स्वाद कडुआ,

खानेकी चीज का कड़ुआ स्वाद और खाई हुई चीज का कै, पेटमे दर्द वा फूला हुआ, शूलदर्द, मल जर्द या हरा वो बदबूदार, चमड़ा फीका (जर्द), सिरमे दर्द, जाड़ा और प्यासके साथ ज्वर।

मारक्युरिअस—६-३०-२००—जीभ सफेद व पीली मैलदार; होठसूखा और ज्वाला के साथ, खराब या कड़ुआ स्वाद; जी मिचलाना या कड़ुआ कै होना, पेटमें ज्यादेतर, नाभी की चारो ओर मे दर्द; रातमे घबड़ाहट और बेचैनी, दिनमें उंघते रहना और रातमे नींद न आना।

नक्सभोमिका—३०-२००—जीभ सूखी, सफेद या पीली मैलदार; बहुत प्यासके साथ गले मे गरमी; खराब स्वाद, कड़ुआ ढेकार, हमेशा जी मिचलाना या कै होना, खासकर खुली हवामे; समूचे पेटमे दर्द, आक्षेप के साथ शूल व दर्द, कब्ज, बारबार पैखाना जाना लेकिन पैखाना न उतरना; सिर दर्द, सिर चकराना, सुबह को हमेशा ठंढ मालूम होना व हरएक तकलीफ का ज्यादा होना।

पलसाटिला—६-३०-२००—सफेद लोआबदार जीभ, मुंह बेस्वाद या कड़ुआ स्वाद, कड़ुआ ढेकार या ढेकार मे खाई हुई चीज की बू, खानेकी इच्छा न होना, जी पचपचाना खायी हुई चीज का कै होना, जी मिचलाना, कड़ुआ कै होना, पेटमें बोझ और दर्द, सफेद लसदार अथवा सब्ज या घोला हुआ अण्डा की तरह दस्त, आधे सिर में दर्द, हमेशा ठंढ मालूम होना; बिल्कुल प्यास नहीं होना।

एन्टिमोनियम-क्रुडम—६-३०—पेट की गड़बड़ी, दूध के ऐसा सफेद वो मोटा मैलदार जीभ, ज्यादे खाने के कारण अनपच, भूख न लगना, खाने की इच्छा न होना, जी मिचलाना या कै होना।

कलोसिन्थ—६-३०-२००—पैत्तिक ज्वर के साथ हृतपिण्ड मे शूल दर्द; मूर्छा के साथ शूलदर्द, और दस्त।

डिजिटेलिस—६-३०—सुवह मे उठतेही जी मिचलाना, मुंहका कडुआ स्वाद, प्यास, चिकना कै होना दस्त, वहुत कमजोरी।

इउपटोरियम पार्फ—३०-२००—ठंढ और कम्पन के साथ हड्डियो में और शरीर मे दर्द, जी मिचलाना और कै होना, चेहरा जर्द, जीभ मोटी वो पीली और रोयेंदार, वहुत सिर दर्द, खासकर सिर के पिछले हिस्से मे।

आइरिस—६-३०—सब शरीर ढाके रहने पर भी वहुत ठंढी; पित्त के साथ दस्त।

भेरेट्रम—६-३०-२००—दस्त के वाद वहुत सुस्ती; वहुत ज्यादे पतला दस्त, शूल दर्द, ललाट मे या सिर मे ठंढी पसीना, जीभ सूखी वो पीली।

सविराम वो इन्टरमिटेन्ट ज्वर चिकित्सा।

एकोनाइट—६-३०—वहुत तेज ज्वर, देह का चमड़ा सूखा, हमेशा के वनिस्वत चेहरा फीका और लालरंग, गरमी

के साथ ज्यादे प्यास, वहुत ज्यादे ठण्ढा जल पीना; बहुत चञ्चलता और घवराहट; सव शरीर में दाह के साथ गरमी, चेहरा लाल, पीड़ा की पहली हालत मे ऊपर के लक्षणों के मिलने से एकोनाइट दिया जाता है; नहीं तो इन्टरमिटेन्ट ज्वर मे एकोनाइट नहीं इस्तमाल होता है ।

एन्टिम-क्रूड ६-३०-२००—रोगी दुखित वो गमगीन जीभ दूध के ऐसा सफेद मोटा मैलदार; बहुत ज्यादे खाने से अनपच, खाने पीने की इच्छा न होना, खट्टी चीज और आंचार खाने की इच्छा, ठंढी मालूम होकर पसीना के साथ वुखार होता है, ठंढी, गरमी और पसीना तीनो हालत मे प्यास न लगना, एक रोज बाद एक रोज, ज्वर होनेसे सिर्फ पसीना होता है ।

एन्टिम-टार्ट ६-३०-२००—ज्वर धीरे २ स्वल्प विराम से टाइफाइड रूप मे हो जाता है । ज्वर सामको तीन बजे अथवा सब समय हो जाता है । थोड़ी देर तक ठंढी और बहुत देर तक ज्वाला के साथ निद्रा का भाव और सिर में ज्यादे पसीना ; ठंढी की हालत मे प्यास नही मालूम होती है । ज्वाला के समय हमेशा प्यास नहीं मालूम होती है, लेकिन ज्वाला और पसीना के वीच मे प्यास लगती है । पसीना ठंढी ; खांसने के समय छाती तरल कफ से भरा हुआ मालूम होता है लेकिन गिरता नहीं है । गले मे घड़घड़ाहट ।

ऐपिस मेलिफिका—६-३०-२००—ज्वर का समय दिन दो पहर के वाद, तीन वजे, ज्वर के पहले कै होता है। ठंढी पेट या छाती मे शुरू होती है और तव पीठ में जाती है। जाड़ा के समय प्यास लगती है किन्तु गरमी या पसीना के समय नहीं; छाती में इस तरह वोझ मालूम होता है कि दम वन्द हो जायगा। शरीर मे आमवात के ऐसा चमडे का उभड़ना, फूल जाना; आंख का नीचला पपुटा फूला, पानी भरा हुआ वटुएके ऐसा दिखाई देता है। ज्वाला के साथ ठण्ढ मारने के ऐसा दर्द, सूजन मे प्यास नही लगना; पेशाव वहुत कम होना ऐपिस का स्वभाविक लक्षण है।

एरानिया-डायडेमा ३०-२००—समय एक खास ठीक उसी समय ज्वर आता है। वहुत देर तक जाड़ा रहती है। सिर्फ जाड़ा ही जाड़ा मालूम होती है। ज्वाला, पसीना या प्यास नहीं होता है।

आरनिका-मोन्ट ३०-२००—आरनिका के रोगी मे जाड़ा, गरमी और पसीना तीन ही हालत देखी जाती है। ज्वर के पहले ज्यादे प्यास लगती है। जम्हाई लेना, शरीरका चाम नीला रंग; जलपान करने से आराम मालूम होता है। जाड़े की हालत मे प्यास; जाड़ा के समय हांथ, पांव शरीर वा हड्डियों मे वहूत दर्द। पेट के ऊपर वहुत ठण्ढ मालूम होना; सोने के वाद ठंढ मालूम होना; जाड़ा के समय गाल की एक और लाल रंग और गरम; सव शरीर और मांथेके कपनके

साथ सिर गरम और चेहरा लाल ; गरमी की हालत मे प्यास कम; बहुत कमजोरी और बेचैनी की हालत ; शरीर का ओढ़ना फेंक देता है। पसीना खट्टा या बदबूदार, स्वास-प्रस्वांस खट्टा और बदबूदार, बार बार करवट बदलता है।

आर्सेनिक ३०-२००—बहुत सुस्ती, बहुत मन की बेचैनी, लेकिन कमजोरी के वजह से करवट नहीं बदल सकता है। शरीर मे ज्वाला, गरम चीजके इस्तेमाल से आराम मालूम होना, ज्वाला के साथ प्यास, बार बार बहुत थोड़ा थोड़ा जल पीता है। दिन मे बारह बजे से दो बजे और रात्रि मे बारह बजे से तीन बजे तक ज्वर शुरू होता है या बढ़ता है। बार २ सरदी और गरमी की अदल बदल होती है, ठंढ या चटचटा पसीना। आर्सेनिक सब प्रकार के मैलेरिया ही की अचूक दवा है। जैसे रोज एक बार, दो रोज बाद, तीन रोज बाद, पन्द्रह रोज़ बाद, एक वर्ष बाद ज्वर का होना। कुनाइन के ज्यादे इस्तमाल से सविराम ज्वर, धीरे धीरे स्वल्प विराम ज्वर या बार बार हो जाने से आर्सेनिक बहुत फायदा पहुंचाता है। यह दवा बार बार न देना चाहिये। ज्वर के विराम की हालत में यह दवा देनी चाहिये।

वैपटिसिया ३०-२००—सब दिन ठंढ मालूम होना, सब शरीर मे चोट लगने के ऐसा दर्द, पीठ से ठंढी शुरू होकर ऊपर वो नीचे की ओर जाती वो आती है। पैखाना, पेशाब, पसीना वगैरह बहुत बदबूदार, बहुत चंचलता, हमेसा जगह

बदलना चाहता है। अगर ज्वर धीरे धीरे टाइफाइड के रूप मे होता जाय तो इस दवा से बहूत भलाई होती है।

बेलेडोना ६-३०—ठंढी की हालत में प्यास नहीं लगती है। हाथ से शुरू होकर समूचे शरीर मे जाती है। ललाट वो पुरपुरी मे बहूत दर्द, चेहरा लाल रंग, शरीर के बाहर वो भीतर मे ज्वाला के साथ गरमी, पुतली फैली हुई, हाथ पैर ठंढ। तेज विकार, बहूत थोड़ा पसीना।

ब्रायोनिया १२-३०-२००—ज्वर आनेका समय कोई खास नही रहता है। बहुत ठंढी वा प्यास, बहुत ज्यादे पानी पीना। सिर दर्द, सिरके सामने से दर्द शुरू होकर पीछेकी ओर इतना धक-धक करके उठता है जिससे मालूम होता है कि सिर फट जायगा, ठंढी और गरमी दोनों हालत ही मे बहुत तेज प्यास, छाती मे और प्लीहाकी जगह मे सूई भोकने की तरह दर्द के साथ शख्त सूखी खांसी, दर्द के पांजर को दवा कर लेटनेसे शांति मालूम होना, रोगी हमेशा स्थिर रहना चाहता है। हरकत से तकलीफ बढ़ जाती है। बहूत खट्टा और तेल की तरह पसीना, पसीना से आराम मालूम होना, बहुत कब्ज, मल कठिन, सूखी और काली।

कैल्केरिया-कार्ब ३०-२००—यह पुराना सविराम वा स्वल्प विरामज्वर की अचूक दवा है। ठंढी गिली हवा में या जलमे भींगने से या ऊंचा चढ़ने से तकलीफ बढ़ती है। मानसिक या शारीरिक मेहनत से बढ़ती है, सूखे और गरम

ऋतुके समय आराम, जाड़ाकी हालत मे प्यास लगती है। शरीरकी किसी जगह मे वा शरीरके बीचले भागकी हड्डियों मे ठंढ मालूम होना, गरमीकी हालत मे प्यास नहीं लगती है। बार बार शरीरके भीतर से गरमीका निकलना। शरीर परका ओढ़ना फेंक देना चाहता है। रातको ग्यारह बजे बिना ठंढी वो प्यास के ज्वर आना और चेहरा लाल होना। सुबहमे साधारण मेहनतसे पसीना होना।

इस दवेका धातुगत लक्षण ही मुख्य है। इन लक्षणों पर ध्यान रख कर इसको इस्तमाल करने से इसकी ताजुब भरी शक्ति देख पायेंगे। धातुगत लक्षण नीचे है।

मोटा, ढीला और बलगमी शरीर के बच्चोंको खास कर सिरमे बहुत पसीना होना और ठंढ लगनेकी आदत, बच्चेका ब्राह्मतालू खुला रहना, मस्तकके हड्डियोंका जोड़ नहीं लगना। शरीरकी हड्डियों का कमजोर रहना और टेढ़ा हो जाना। मस्तकमे इतना पसीना होता है कि तकिया भींग जाता है। पेट और सिर भारी। दांत निकलनेके समयकी बिमारी।

लड़कीके ठीक समयके पहले बहुत ज्यादे और ज्यादे दिन रहने वाला ऋतुस्राव और इसके बाद ऋतुलोप हो जाना और इसके साथ शरीरका चमड़ा बिना खून के और जर्द (Chlorosis) हो जाना। पैर ठंढा रहना, ठंढी हवा बर्दास्त नहीं कर सकता है। पेट फूला।

ठंढे जलमे बहुत समय तक पैरों के भींगने से या सर्द

जमीन पर रहने से कोई पीड़ा हो जाय तो उसके लिये यह दवा बहूत लाभदायक है।

कैम्फर ३० २००—बहूत देर तक ठहरने वाली खतरनाक ठंढी, सब अंग वर्फके ऐसा ठंढ, चेहरा मूर्दे के ऐसा और नीला रंग। हाथ, पैर नीला रंग। ठंढी हवा वर्दास्त नहीं कर सकता है। ठंढसे दांत ठक-ठक कर कांपता है। प्यास नहीं लगती है। गरमी की हालतमें भी प्यास नहीं लगती है। सब शरीरमे गरमी, घूमनेसे वढ़ती है। पसीना की हालत मे पसीनाके साथ सब अंग ठंढ हो जाता है। लेकिन शरीरके भीतर बहूत ज्वाला मालूम होता है वो शरीर का कपड़ा फेंक देता है। अचानक रोगी बहूत सुस्त हो जाता है।

कैप्सिकम ३०-२००—दोनों कन्धों के बीचकी जगह से ठंढी शुरू होती है। ठंढीके समय बहूत प्यास लेकिन हर वार जल पीनेसे कम्प वो जाड़ा बढ़ती है। जाड़े के साथ कमरमे दर्द, गरम चीज के इस्तेमाल से शांति मालूम होना, जाड़ा के बाद पसीना वो गरमी इकट्ठा होती है। प्यास नहीं लगती है। पसीनासे छाला होती है। ज्वर के बाद नीन्द।

कार्बो-भेज ३०-२००—ज्वर के आनेका कोई खास समय नहीं है। ज्वर आने के समय पहले पैर ठंढा, दांत और हांथ पांवमे दर्द, ठंढी बांये हांथसे शुरू होकर समूचा शरीर

ठंढ हो जाता है। ठंढ स्वांस, बिछावन पर भी ठेहुना ठंढा रहता है। वायां हाथ और वायां पैर ठंढ। कभी २ पहले पसीना होकर जाड़ा होती है। हाथका नाखून नीला रंग। जाड़ेके समय प्यास। गरमीके समय प्यास नहीं लगना और ज्यादे पसीना होना, पसीना खट्टा और वदबूदार, पेटमे वायुका घुमना, पेट फूला हुआ।

पारा, कुनाइन, जुलाब इत्यादि के ज्यादे इस्तमालसे रोगकी पुरानी हालतमे यह उमदा है, सिर्फ जाड़ेकी हालतमें खट्टी बू वाला पसीना, तीसरे पहरमे शरीरके एक बगलमे ठंढ मालूम होना, ज्यादे कमजोरी, चेहरा मूर्दे से ऐसा, जीभ ठंढी और सिकुड़ी हुई, तर खांसी, नाड़ी कमजोर, सब शरीर ठंढा, पेटमे वायु की फसाद।

कास्टिकम ३०-२००--इस दवेकी ठंढीको हालतही सब लक्षणोंसे मुख्य है। ठंढ जल पीने से या लेटे रहनेसे ठंढीकी शांति, जाड़ाके वाद पसीना और पसीनाके वाद गरमी, वायें बगलका दुख, शामके समय रोगका बढ़ना, ये सब लक्षण इस दवेका विशेष गुण है। केवल शरीरके वांये भागमे ठंढी मोलूम होना इस दवेकी रास्ता दिखाने वाली है।

कैमोमिला ३०-२००—कैमोमिला का मानसिक लक्षण सबोंमे मशहूर है। इसलिये इसके ऊपर ज्यादे नजर रखने से कैमोमिलाके चुननेमे भूल नहीं होगी। रोगी चिरचिराहा

और बदमिजाज, बहुत जल्दी गुस्सा होती है। बच्चा हमेशा रोने वाला, हमेशा गोदीमें रह कर चलना फिरना चाहता है। ज्वरमे एक गाल लाल वो गरम, दूसरा गाल फीका वो ठंढा; सब शरीरमें ठंढी मालूम होती है और चेहरे से आगकी ऐसी ज्वाला निकलती हुई मालूम होती है। शरीर के घेरेके स्थानमें बहुत पसीना।

सिड्रन ३०-२००—हरदिन घड़ीकी तरह ठीक एक ही समय ज्वर का आना ही इसका खास लक्षण है।

चेलिडोनियम ज्वरके साथ साथ यकृतका फसाद इस दवेका खास लक्षण है। यकृतकी जगहमे सूई भोंकनेके ऐसा दर्द सामनेसे पीछेकी ओर जाता है। यकृतमे वो पीठके दहिने भागके ऊपरी भागमे यानी स्कैपुला हड्डी के नीचे के भागमें दर्द इसका स्वभाविक लक्षण है। जाड़े की हालतमे इतनी ज्यादे ठंढी होती है कि मालूम पड़ती है कि बर्फ के पानीसे स्नान किया गया है, जाड़के साथ जी मिचलाना, दहिने पांवके ठेहुने तक बर्फकी ऐसी ठंढी, गरमीकी हालतमे शरीरके एक अंशमें ज्वाला मालूम होती है। सोनेकी हालतमें पसीना निकलती है। चमड़ा पीला।

चायना ६-३०-२००—यह मैलेरिया ज्वरके सब दवाइयोंमें मशहूर दवा है और सब किसीमके मैलेरिया ज्वरमें यह दवा दी जाती है। ज्वर होनेका कोई खास समय नहीं है। ज्वर दिनमे किसी समय हो सकता है लेकिन रातमें

कभी नही होता है। एक रोज बाद एक रोज ज्वरका होना या ज्वर का बढ़ना इसका खास लक्षण है। ज्वरकी पहली हालतमे बहुत प्यास लगती है बहूत भूख बढ़ती है। जी मिचलाता है, दिल धड़कता है। जाड़े की हालतमे समूचा शरीर कांपता है। पानी पीनेसे जाड़ा बढ़ती है, प्यास नही रहती है। गरमी की हालत मे बहुत भूख, माथे मे ज्यादा खून चढ़ाना, प्यास नहीं रहती है। पसीनेकी हालत मे ज्यादे प्यास, नीन्दकी हालत मे पसीना, शरीर को ओढ़ने से ढाक लेनेसे सब अङ्गमें ज्यादे पसीना होती है, कमजोरी और नींदसे माते रहना।

चिनिनम-सल्फ २x-३० २०० —ठीक समय पर ज्वर का आना, ठीक समय पर जाड़ा, गरमी वो पसीनाका होना, ज्वरका विराम साफ मालूम होता है, हर वार ज्वर एक घंटासे तीन घंटे तक देर होता है। जीभ साफ, ज्वरकी सब हालतमें रीढ़की हड्डी मे दर्द और प्यास, कम-जोरीसे पसीना, ये सब लक्षण इस दवेका खास गुण है। इस दवेका ज्वर कभी कभी रोज ही हो जाता है। लेकिन दो दिन, और चौदह दिन वाद ज्वरका होना वो तीन बजे के बाद कम्पन के साथ जाड़ा का होना इसका खास लक्षण है। कई घन्टे तक जाड़ाके बाद गरमी शुरू होती है। गरमी के बाद पसीना शुरू होनेसे रोगीको आराम मालूम होता है।

सिना ३०-२००—इस दवा का मानसिक लक्षण सब मे

मशहूर है। बच्चा हमेशा रोता है, बच्चा बहुत चिरचिराहा, हमेशा बहुत चिजोंकी इच्छा करता है लेकिन वह चीज देनेसे फेक देता है, किसी तरहसे वह खुसी नहीं होता है। बदनमें हाथ लग जाने से ही चिल्लाता है। जीभ साफ, कभी कभी ज्वरके पहले, कभी ज्वर के समय वो कभी ज्वर के बाद कै होना, राक्षस के ऐसा भूख लगना वोगैरह भी सिना का खास लक्षण है। रोज रोज ठीक एक ही समय ज्वर आता है, ज्वर के पहले बहुत भूख लगता है। जाड़ेकी हालत मे प्यास नही लगती है। गाल गरम रहता है। सब शरीरमे कम्पन होता है, आगके पास बैठनेसे कम्पन नहीं हटता है, गरमी के समय कुछ प्यास लगती है। सोनेके बाद गरमी बढ़ती है और गालका रंग लाल होता है वो प्यास नहीं रहती है, सब अङ्गमे थोड़ा २ पसीना, कीड़े का लक्षण, सफेद हो गदला और कुछ समय रहनेसे दूधके ऐसा गाढ़ा वो सफेद हो जाता है। नाक खोंटता रहता है, नीदकी हालत मे दांत किड़किड़ाता है।

इउपेटोरियम-पार्फ ३०-२००—ज्वर दो दिन बीच देकर होना इसका खास लक्षण है। सुबह में, सात बजेसे नौ बजेके बीचमें ज्वर आता है, ज्वरकी पहली हालत में बहुत प्यास लेकिन जलपान करने से जी मिचलाता है, कै होता है, जाड़ा बढ़ती है। कभी-कभी गरम पानी की प्यास ज्वर आनेके दो तीन घन्टे पहले ही रोगी जान सकता है कि ज्वर आवेगा,

जम्हाई लेना, सर्व शरीरमे और खास कर हड्डियोमे इतना दर्द होता है कि मालूम पड़ता है कि हड्डियां पीस गई हैं। जाड़ेकी हालत में बहुत प्यासके साथ जाड़ा, जलपान करनेसे जी मिचलाता है और कडुआ कै होता है, शिर दर्द, गरमीके समय प्यास, जलपान करनेसे कांपना, बहूत मामूली पसीना या पसीना बिल्कुल नहीं होता है। यदि अच्छा पसीना होता है तो शिर दर्दकी शांति होती है।

फेरम-मेट ३०-२०० - बहूत ज्यादे कुनाइन खानेसे रोग का पुराना होना, बदन जर्द लेकिन चेहरे और सांथमे खूनका ज्यादा होना, नस फूला-फूला, खाई हूई चीजका कै होना, प्लीहा बढ़ना, खून की कमी, कमजोरी, चेहरा और शरीरके चमड़का रङ्ग फीका, चेहरा और पैर में सूजन, इस किसीम का शरीर और इसके साथ ठण्ढो वो गरमीके साथ चेहरेका रङ्ग लाल, पैर बरफ के ऐसा ठण्ढ, बहुत देर तक रहने वाला और बहुत ज्यादे कमजोरी लानेवाला पसीना, रात में ठण्ढा पसीना, वगैरह लक्षण रहने से फेरमके इस्तमाल से जरूर रोग आराम हो सकता है।

जेलसिमियम ६-३०-२००—जाड़ा वो कम्पन इतना ज्यादा होता है कि रोगीके शरीरको दबा रखना पड़ता है, रीढ़की हड्डियोके ऊपर जाड़ा चलती है। गरमीके समय नींद, पसीनाके साथ प्यास, आधे जगे हालतमें बर्राना, पेट या यकृतका कोई तकलीफ नहीं है।

ज्वर धीरे-धीरे टाइफाइड वा स्वल्प विराम ज्वरमें वदल जाता है। या टाइफाएड वा स्वल्प विराम ज्वर सविराम ज्वर हो जाता है। रोगी वहुत कमजोर और मांसपेशियां वहुत सुस्त हो जाती है, रोगी हाथ पावको चलाना, घुमाना, आंख खोलना या किसीके साथ वातचित करना नहीं चाहता है। वचा हमेशा डरता है कि गिर जावेगा वोगैरह लक्षणसे जेलसिमियम को पहचाना जाता है।

हिपर-सल्फ ३०-२००—ज्वर साम को छः से सात वजे तक होता है, पहले जाड़के वाद प्यास। और उसके एक घन्टेके वाद गरमी और उसके साथ नींद का आना, गरमोके साथ वहुत ज्यादे वदवूदार वा खट्टा पसीना, वहुत सहजमें पसीना, हवा वर्दास्त नहीं कर सकता है, खुली हवामें वहुत जाड़ा मालूम होना, जाड़ाके साथ वहूत खुजली और डंक मारनेके ऐसा दर्दके साथ आमवातके ऐसा, इरपशन, मुंहकी चारों ओर ज्वरसे छाले पड़ना वोगैरह हिपरका प्रिय लक्षण है।

हायोसायमस ३०-२००—मुंह ज्वाला के साथ वो लाल रक्त, सव शरीर ठण्ढा, किसी के साथ वात करना या मामूली शोरगुल वर्दास्त नहीं कर सकता है। गरमी के समय मृगी रोग के ऐसा फीट वो मूर्छा, नींद न आना, पसीना ज्यादेतर पांव में होता है। रात में ऐंठनदार सूखी, खांसी।

इगनेशिया ३०-२००—ज्वर रोज रोज आने वाले

समय से पीछे हटता है ज्वर आने का कोई खास समय नहीं रहता है। सिर्फ जाड़े के समय बहुत ज्यादे प्यास, कांपते हुए जाड़ों के साथ चेहरा लाल रङ्ग, गरम कमरा वा चुल्हाके नजदीक जाने से जाड़ा की शांति होती है। जाड़ा के समय शरीर का चाम सुखा होता है, प्यास नहीं लगती है। गरमी के समय चेहरे के एक बगल का भाग गरम और लाल रङ्ग और खरांटा के साथ गाढ़ी नींद; बार बार लम्बी स्वांस छोड़ना।

इपीकाक ६-३०-२००—हमेशा जी मिचलाना; पित्त का कै से गिरना।; जाड़े के समय गरम स्थान में रहने से या गरम इस्तेमाल से जाड़े का बढ़ना; गरमी के समय बहुत प्यास; चेहरा अदल-बदल के फीका और ठण्ढा होता है। स्वांस दवा हुआ; पसीना बहुत कम, शरीर के किसी खास अङ्ग मे पसीना। जिन रोगियोंमे कुनाइन का जयादे इस्तेमाल हुआ है उन मे बहुत ज्यादे और खट्टा गन्ध वाला पसीना देखा जाता है। कुनाइन ज्यादे खाने के वजह से ज्वर दब जाना व ज्वर की खराब हालत होनेसे, और बे नियम खाने के वजह से बार बार ज्वर के हो जाने से इपिकाक के इस्तेमाल से बहुत फायदा होती है।

लैकेसिस ३०-२००—मैलेरिया मे कुनाइन के जरिये ज्वर रुक कर फिर बार बार हो जाने से वा खट्टा खाने के वजह से ही ज्वर फिर आ जाने से लैकेसिस से ज्यादा फायदा

देखी जाती है। जिस रोगी को हर साल वसन्त कालमें मैलेरिया ज्वर होता है। उस के लिये यह दवा बहुत फायदे की है

जाड़ा कमर मे से शुरू होकर पीठ के ऊपर होकर सिर और शरीर मे जाती है। बहुत जाड़ा और कम्पन, आग के नजदीक लेटना चाहता है। रोगी को खूब दवा कर रखने से आराम मालूम होना। गरमी के समय चेहरा नीले रङ्ग का रोगी बहुत बकवाद करता है। पसीना होने से आराम मालूम होना, पसीना ठन्ढ वो पीला या लाल।

लाइकोपोडियम ३०-२००—साम ४ बजे से ८ बजे के बीच में जाड़ा शुरू होता है। जाड़ा पीठ से शुरू होकर समूचे शरीर में फैल जाती है। जम्हाई लेना, जी मिचलाना, कै होना, प्यास नहीं लगती है ७ बजे रात को नींद आकर उस में स्वप्न देखना, नींद टुटने के बाद पसीना से सब शरीर बर्फ के ऐसा ठण्ढ हो जाना। पसीना होने के बाद प्यास लगना। पहले जी मिचलाना वो खट्टा कै होना, उसके बाद जाड़ा होना और उसके बाद गरमी होकर पसीना होना। सिर्फ शरीर के बांये भाग में पसीना होना। गरमीके समय सब शरीर में गरमी; शरीर को कपड़े से ढकना नहीं चाहता है। पसीना होने के बाद बहुत प्यास लगती है। पेट में वायु का बिगार, बहुत भूख होना किन्तु एक या दो कवर खाने से ही पेट भरजाना पेशाब के नीचे लाल रङ्ग का रेत जमना वगैरह लाइकोपोडियम का स्वभाविक लक्षण है।

मैलरिया-आफिसिनेलिस २००—मलेरिया वाले स्थान मे रहने से पीड़ा होने से और कुनाइन खाने के वजह से ज्वर की खराबी होने से या दब जाने से ज्वर का स्वभाविक रूप नहीं समझा जाता है ऐसी हालत में यह दवा बहुत फायदेमन्द है।

मारक्युरियस ३० २००—साम के समय या रात मे जाड़ा का शुरू होना, बिछावन पर जाने से ठण्ढी ज्यादे मालूम होना; खुली हवा नहीं बर्दास्त कर सकता है। गरमी के हालत में ठण्ढी और गरमी अदल बदल के होती है; इस दवे का खास लक्षण पसीना होता है। मामूली मेहनत से रात मे और सुबह में पसीना होता है। पसीना तेल के ऐसा और बदबूदार, उससे कपड़े मे पीला दाग लग जाता है। जीभ मोटी, फूली लाल और दांत के छापदार; बहुत प्यास कसरत से पसीना होते रहने पर भी आराम न मालूम होना।

नेट्रम-म्युर ३० २००—यह मैलेरिया की एक अचूक दवा है; नया या पुराना सब किसीम के मैलेरिया में ठीक तरह से इस दवे को देखकर देने से बहुत अच्छा फल मिलता है। ज्वर के जरिये होंठ में छाले पड़ना इसका स्वभाविक लक्षण है। जाड़ा आने के पहले रोगी डर जाता है। दो पहर दिन के पहले १० या ११ बजे ज्वर होता है। बहुत प्यास; हाथ पांव की अगुलियां वा कमर से जाड़ा शुरू होती है और पीछे नाखून और होंठ नीला रङ्ग का होता है।

बहुत सिरदर्द ; जी मिचलाना और कै ; ज्वाला के समय बहुत प्यास, बहुत देरतक ठहरनेवाली बहुत तेज गरमी, सिर दर्द के वजह से रोगी बेहोश रहता है पसीना के साथ २ सब अङ्गों को आराम मालूम होना, दिल के फड़कने के साथ सब शरीर का कांपना।

नक्स-भोमिका ३०-२००—ज्वर होनेका समय रात या बहुत सुबह ; और ६ से ९ बजे ; दोपहर के पहले ११ बजे। जाड़ा के समय प्यास ; चेहरा और हाथ नीला और ठण्ढा ; बहुत कम्पन के साथ जाड़ा ; ज्वाला के समय बहुत गरमी तौभी रोगी सब शरीर को ढंक कर रखता है। पसीना बहुत कम ; प्यास नहीं लगती है। जीभ सफेद या पीले गाढ़ा मैलदार ; स्वाद कडुआ ; जी मिचलाना ; कै ; कब्ज ; बार बार बेकार पैखाना जाने का कोशिस करना ; जाड़ा, गरमी और पसीना सब हालत में ही बहुत ठण्ढ मालूम होना नक्स-भोमिका का खास लक्षण है। ज्यादे मन से मेहनत करना, ज्यादे और ज्यादे देर तक पचने वाली चीज का खाना नसैली चीज का खाना वोगैरह से पीड़ा। ऐलोपैथिक इलाज से होमियोपैथिक इलाज में आने से पहले नक्स-भोमिका देने की जरूरत हो सकता है।

पल्सेटिला ३०-२००—ज्वर होने का समय दोपहर के बाद चार बजे, खूब जाड़ा होती है। जाड़ा के समय-कफ का कै से गिरना, घबड़ाहट, सब शरीर ठण्ढ अथवा शरीर

के एक बगलमे ठण्ढी, ज्वालाकी हालतमें बेचैनी के साथ बहुत ज्यादे गरम इस्तेमाल से रोग का बढ़ना, ठण्ढी खुली हवा मे आराम, शरीर के एक बगल में पसीना; ज्यादेतर बायों बगल मे रोगी। रात भर पसीना के साथ बकता है और नींदसे ऊंघता रहता है। जीभ सफेद वा पीली मैल के साथ और सूखी। मुंह का स्वाद सड़ा हुआ और कड़ुआ। हमेशा लक्षणों का बदल जाना पलसेटिला का खास लक्षण है। यदि देखो कि ज्वर की हालत दिन दिन तेज होती जाती है- और किसी दो रोज के ज्वर का लक्षण एक किसिम का नहीं है तो बिना शक के पलसेटिला दे सकते हो; प्यास का नहीं होना भी पलसेटिला का प्रिय लक्षण है।

रसटक्स ६-३०-२००—सामको सात बजे इस तरह जाड़ा शुरू होतो है कि मालूम होता है शरीर के भीतर से बरफ का पानी चल रहा है। जाड़ा के साथ खांसी, बहुत चञ्चलता, बार बार करवट बदलने से रोगी को आराम मालूम होता है, आराम से बहुत तकलीफ होता है, ज्वाला के समय बहुत गरमी, बहुत खुजली के साथ जुरपित्त के ऐसा इरपशन, पसीना के साथ नींद और ढके हुए चमड़े का छिपजाना, जीभ के अगले भाग मे त्रिकोण के ऐसा लालरङ्ग और सब शरीर में खास कर कमर में दर्द, आराम से तकलीफ का ज्यादा होना वो हरकत से आराम मालूम होना वगैरह २ रसटक्स का स्वभाविक लक्षण है।

सलफर ३०-२००—यह एक अचूक ऐन्टीसोरिक दवा है, जिस समय ठीक तरह से देख भाल कर दवा के देनेसे फल नहीं होता है वा रोग कुछ आराम होकर फिर बढ जाता है, इस किसिम की हालत में सलफर के देने से ज्यादे लाभ होता है। जब रोग का सब लक्षण साफ नहीं मालूम हो और उसके साथ सलफर का भी दो एक लक्षण पाया जाय तो सलफर दिया जा सकता है। ऐसी हालत में सलफर देनेसे कभी कभी रोगी बहुत जल्द आराम हो जाता है और किसी किसी रोगी की हालत ऐसी बदल जाती है कि बहुत आसानी से दुसरी दवा ठीक करली जाती है। ३० वा २०० शक्ति का दो एक खोराक सलफर देनेसे ही फल मिलता है, इस लिये सलफर देकर शांति भाव से इस के फायदे या गैर फायदे के विचार करने की जरूरत होती है। सलफर के बाद कलकेरिया खिलाना मोनासिब नहीं है।

भेरेट्रम-अलबम ३०-२००—ज्वर के आने का समय सुबह ६ बजे, माथे से शरीर के भीतर होकर पैर के अंगुली तक जाड़ा फैल जाती है, चेहरा और हाथ पाव ठण्ढ ज्वाला के समय प्यास, ललाट में हमेशा ठण्ड पसीना, पसीना के साथ रोगी का चेहरा मूर्दे के ऐसा फीका। बहुत तेजी से बल का घट जाना और सुस्ती।

—:०:—

मैलेरिया ज्वर से पैदा हुई क़िसिम २ की दुखदाई पीड़ा।

प्लीहा का बढ़ना और दर्द वोगैरह तकलीफ, यकृत का बढ़ना वो दर्द वोगैरह, पाण्डु रोग, सुजन, कैंक्रम ओरिस (Cancrum Oris) वा प्लीहा के वजह से मुंह में जखम वोगैरह। प्लीहा और कैंक्रम ओरिस की दवा यहां दी जाती है और दूसरे लक्षण वोगैरह के ब्यान यथास्थान मे किया गया है।

प्लीहा Spleen.

प्लीहा का बढ़ना अर्थात् प्लीहा के आकार के बढ़ने से— ऐरानिया, आर्स, कार्बोभेज, सियानोथस, फेरम, आइयोड, लैकेसिस, नेट्रम-म्युर, रूटा, मार्किउरियस, चायना, वेल, चिन-सल्फ, इउपेटो-पार्फ, पल्स।

प्लीहा की जगह में दबाने से दर्द मालम होना—एपिस, आर्स चायना, चिन-सल्फ, फेरम आइयोड, नक्स पडो पल्स।

प्लीहा की जगह अपने से दर्द—एपिस, आर्स; चेलिड, चायना, फेरम, नेट्रम, नक्स, पडो।

प्लीहा मे नोकदार चीज से गाड़ने के ऐसा दर्द—सियानोथस, चायना, चिन-सल्फ, रूटा।

तीहाल के साथ पुराना दस्त - एनाकार्ड, एसाफिट, आर्स, चायना, हाल्का, इग्नेसिया, पल्स, ऐसिड सल्फ।

प्लीहा रोग की पूरी तरह से दवा।

एकोनाइट ६-३०—जलन के साथ ज्वर और नोकदार चीज से गाड़ने के ऐसा दर्द।

एगारिकस-मस ६-३०—प्लीहा बहुत बडी, प्लीहा में दर्द, बांयी करसे लेटने से दर्द लेकिन दहीने मे दर्द नहीं रहता है स्वांस लेनेसे, खास कर पेट के ऊपर लेटनेसे दर्द।

आर्निका ६-३०—प्लीहा की जगहसे चोट लगनेसे दर्द।

आर्सेनिक ३०-२००—बार बार खून के साथ पतला दस्त उसके साथ बहुत ज्वाला और कमजोरी, प्लीहा मे बहुत दर्द पीड़ा का बढ़ना।

एसाफिटिडा ६ ३०—प्लीहा और अन्तरी मे गरमी मालम होना, दस्त बहुत बदबूदार, पेट मे बहुत वायु का विकार।

बोविस्टा-भल्मा ३-६—प्लीहा में बहुत दर्द, ऐसा मालूम हो कि प्लीहा टूट जायगा।

कार्बो-भेज ३०-२००—प्लीहा की जगह में दबाव मालम होना और चींटी काटने के ऐसा दर्द। बिजली चलन के ऐसी दर्द, पेट में वायु का विकार।

सियानोथस:-प्लीहा का बढ़ना और पुरानी जलन के साथ दर्द, ठण्डा या वर्षा बरसने के दिन में पीड़ा का बढ़ना, हमेशा ठण्डा मालुम होना। इस दवे का मादर-टिन्चर का

१५ ३० बुन्द १ औंस पानी के साथ मिलाकर बाहर लगाने से अच्छा फल होता है। और मादर-टिञ्चर का १, २ या ३ बुन्द हर खोराक, दिन मे ३ वार सेवन करने से अचूक फल मिलता है।

चायना और चिन-सल्फ ३०-२००—धीरे २ घुमने के समय प्लीहा में दर्द, दर्द प्लीहा के एक बगल से शुरू होकर दूसरी ओर जाता है। सिने से तकलीफ मालूम होना और सूजन। प्लीहा का बढ़ना। इन्टरमिटेन्ट ज्वर के वजह से प्लीहा मे ज्यादे खून का होना और प्लीहा में जलन होने से चीन-सल्फ बहुत फायदेमन्द है।

एरानिया ३-६—घड़ी के ऐसा ठीक एकही समय रोज ज्वर आता है। प्लीहा का बढ़ना, खून निकलना।

फेरम ६-३०—इन्टरमिटेन्ट ज्वर के साथ प्लीहा का बढ़ना प्लीहा मे तीर भोंकने के ऐसा दर्द, सूजन, बहुत कुनाइन के खाने से खराबी।

इग्नेसिया ६-३०—प्लीहा बहुत बड़ा वो कठिन।

आयोडियम ३-६-३०—इन्टरमिटेन्ट ज्वर के बाद प्लीहा की बढ़ना, रोगी बहुत खाता है लेकिन तोभी सूखता जाता है।

नट्रम-म्यूर ३०-२००—प्लीहा का बढ़ना वो दर्द।

नक्स-भौम ३०-२००—पेट के बायें बगल मे दर्द, पेट भारी।

ग्रिंड-सल्फ ६ ३०—प्लीहा का बढ़ना, फफ़ापन और खांसी के साथ दर्द। उदरामय के साथ बहुत कमजोरी, काला रङ्ग का खून का निकलना।

कैंक्रम ओरिस। Cancrum Oris.

समसंज्ञा—मुहमें प्लीहासे पैदा हुआ घाव, मुंहमें खराब घाव।

रोग परिचय—यह एक किसीम का मुंह का खराब घाव है, यह दांत के मसूढ़े या तालू में या गाल में होता है। पहले इस जखम के चारो ओर फूल जाता है और कठिन हो जाता है बाद वह जगह काली होकर सड़ जाती है और साथ ही ज्वर बढ़ने लगता है, मुंह से बहुत बदबूदार ला। निकलता है। घाव की जगह सड़कर गल जाती है, वह जगह नरम होना और उससे ज्यादे पीब निकलना अच्छा लक्षण है, जो जखम रोज रोज ज्यादा काला होता जाता है वह प्राण नाशक होता है।

कारण—कैंक्रम औरिस ज्यादे तर प्लीहा और ज्वर वाले बच्चे और बुढ़ों में देखा जाता है। पांच बरस से बारह बरस के उम्रवाले बच्चों में ज्यादे देखा जाता है। बहुत खून की कमी, स्वाभाविक खाने की चीजों की कमी, खराब हवा वाले घर में रहना, स्कर्भी नाम के रोगसे ग्रसित धातु वोगैरह से भी कभी कभी यह रोग पैदा होता है।

चिकित्सा:—

आर्सेनिक ३०-२००—मुंह में बैंगनी रंग, प्रदाह और ज्वाला, मुंह सूखा; बहुत प्यास, बहुत ज्यादे कमजोरी, बहूत कमजोरी पैदा करने वाला उदरामय। जख्म बदबूदार, व काला रङ्ग।

अराम-मेट ३०-२००—चेहरा फूला फूला और बिमारी की जगह चमकिली, जलपान करने से नाक के राह से जल निकल आता है। घाव दर्द से भरा हुआ, गहरा कठिन और कालापान। जखम गहरा होता है वो चारो ओर ज्यादे नहीं फैलता है। सख्त कमजोरी, मन सुस्त, अपनी जान मार देनेकी ज्यादे इच्छा। ज्यादे पारा खाने पर यह दवा बहुत फायदे वाली होती है।

बोरादस ६-३०—जखम वाली जगह छूने से बहूत दर्द, चिबाने के शुरू में दर्द होता है लेकिन थोड़ा देर चिबाने के बाद दर्द कम हो जाता है। सफेद, चिपचिपा कफ गला मे जमा रहता है।

कैपसिकम ६-३०—मुंहमें छाले पड़जाना, बहूत गरमी, जखम बैंगनी रङ्ग का।

कार्बो-भेज ३०-२००—मुंह मे और मसूढ़े में छोटे २ जखम, जखम सफेद और आग के ऐसा गरमी के साथ लार का स्वाद कडुआ, लेकिन बू सड़ा हुआ।

लैकेसिस ३०-२००—लार चिपचिपा, मालूम होता है कि गला में कफ गोली, वने कर अटका रहना और उसको निकालने की वार वार कोशिस करना, गला में और टनसिल (Tonsil) में जखम, तरल चीज सहज में निगल सकता है। थुक निगलने में बहुत तकलीफ नहीं होती है। वांयो ओर से जखम शुरू होकर दहिनी ओर फैल जाती है। जखम काला रङ्ग और बदबूदार।

मार्किउरियस ६-३०-२००—बहुत दर्द, इस दवे का खास लक्षण है। बहुत पसीना और उस से शरीर के कपड़े मे हल्दी के ऐसा दाग लगता हैं।

नेट्रम-म्यूर ३०-२००—दांत के मसूढ़े में गरमी या ठण्ढी वर्दास्त नही होती है। मसूढ़ा में दर्द के साथ जखम, जीभ मे गरमी के साथ फुन्सियां हमेशा मालूम होता है कि जीभ के ऊपर बाल अंटका हुआ है। हमेशा प्यास।

नाइट्रिक एसिड ३०-२०० -ज्यादे पारा सम्बन्धी दवा खानेका कुफल, जखम गहरा नहीं होता है। जखम में मालूम होता है बहुत सा कांच का टुकड़ा भरा हुआ है।

स्टेफिसेग्रिया ६-३०—दांत की मसूढ़ा फूला, गरमी के साथ दर्द, मुंह में और मसूढ़े में फुन्सियां और जखम।

सल्फर ३०-२००—जखम जर्द, मसूढ़ा फूला हुआ और कठिन, उसमें से पीब निकलता है। जखम खा जाता है और सड़ जाता है॥

नक्स-भोमिका ३०-२००—मुह में खट्टा या कडुआ स्वाद, मसूढ़ा फैला हुआ वो दर्द के, साथ, जीभ सफेद या पीला मैल के साथ, भूख लगती है लेकिन खाने की इच्छा नहीं होती है।

सलफिउरिक एसिड ६-१२-३०—जखम खा जाता है, लेकिन गलता नहीं है। जखम का किनारा पतला और टेढ़ामेढ़ा होता है। जखम से खून निकलता है।

ऐन्टिम-टार्ट, एपिस, क्रियोजोट. एसिड-म्युरियेटिक, रस-टक्स, साइलिसिया, हेलोनियस वोगैरह दवा भी हालत के मुताविक दी जा सकती है।

चर्म्मोत्पात जनित ज्वर ।
Specific Eruptive Fever.
डेंगुज्वर ।
Dengue Fever.

यह एक किसीम के खास विष से पैदा हुआ संक्रामक रोग है। यह एकही समय एक जगह में बहुत आदमियों का होता है। मामूली जाड़ा होकर ज्वर शुरू होता है, गरमी बहुत जलदी बढ़ती है। रोग की तेजी के मुताविक शरीर की गरमी १०२ डिग्री से १०६ डिग्री तक हो सकती है, ज्वर के साथ न सहने के लायक सिर दर्द, कमर में, हाथ

पैर में और हड्डियों में बहुत दर्द, दर्द इतना तेज होता है कि मालूम होता है हड्डियां टूट गईं, इसलिये इस को हड्डी तोड़ने वाला बोखार कहते हैं। शरीर की जोड़े फूले लाल और बहुत दर्द के साथ, इसके साथ बहुत प्यास, कै करने की इच्छा, कब्ज, पेशाब की कमी, भूख न लगना, जीभ मैला देखा जाता है। तीसरे से पांचवें दिन के भीतर बहुत पसीना वा उदरामय होकर ज्वर उतर जाता है। ज्वर के उतर जाने के बाद भी सब अङ्ग में दर्द और हाथपेर अकड़ा हुआ रहता है। दो तीन दिन बाद फिर से ज्वर आ जाता है लेकिन इस बार ज्वर पहले से कम होता है। इसबार कोदवा की तरह बहुत से छोटी छोटी दाने निकलती हैं। ये दाने कोदवा की तरह उतनी लाल नहीं होती हैं. कुछ सफेद होती हैं, शरीर में बहुत खुजली होती है, और दो या तीन दिन में ज्वर उतर जाता है और दाने भी सूख कर खुरंट उतरता है। यह ज्वर सब मिलाकर अक्सर एक हफ्ते तक रहता है। इस ज्वर का रोगी अक्सर आराम हो जाता है।

चिकित्सा—पहली हालत में एकोनाइट, बेलाडोना या ब्रायोनिया देने से अच्छा फायदा होता है। आर्स, रस, नक्स, सलफ, पल्स भी खास २ लक्षण में दिया जाता है। जेलसिमिअम इस रोग की खास दवा है। आराम होने के समय चायना या नक्स भी दिया जा सकता है। गरम जल में "फूटबाथ" बहुत फायदा करता है। यदि खुरंट गिर

जाने के समय शरीर मे खुजली हो तो सौ भाग जल में एक भाग कारबोलिक-एसिड मिला कर शरीर पोंछ देने से ज्यादे आराम होता है।

एकोनाइट ३-६—बहुत तेज ज्वर, चंचलता, घबराहट बहुत तेज और कठिन नाड़ी। ललाट मे बहुत दर्द, हड्डियों के जोड़ो पर फूला और गरम। एकोनाइट के बाद बेलाडोना खिलाने से ज्यादे फायदा होती है।

बेलाडोना ३-६-३०—बच्चों के डेंगु मे ज्यादे फायदे मन्द है खास कर गला मे जलन और माथे मे खून का ज्यादे होना, आंख लाल रंग, पुतली फैली हुई, गांठे चमकीला, फूला और लाल। फले हुए जोड़ों की जगह मे से दर्द बिजली की तरह सब अङ्गो मे दौड़ती है।

ब्राइयोनिया ६-१२-३०—स्नायवीय या बात से पैदा हुआ दर्द, शरीर के हिलने डोलने से बढ़ना, जोड़ों की जगह का ऊपरी भाग मामूली लाल, आंख के गोला मे दर्द, भूख न लगना, सफेद मैल के साथ जीभ, पेट और अंतड़ीं में भारीपन और दर्द मालूम होना बहुत प्यास।

ईउपेटोरियम-पर्फ ६-३०-२००—पहली हालत में ज्यादे फायदा मन्द है, हाथ में और कलाई में हड्डी तोडने वाला दर्द, जीभ पर पीला मैल, प्यास, जलपीने के बाद कै, यकृत को जगह मे और मेदा के ऊपर दबानेसे दर्द।

जेलसिमियम ६-१२—बहुत सुस्ती की हालत, शरीर

का हिलाना-डोलाना या बातचित करना नहीं चाहता है, बहुत उंघते रहना, आंख मे जल भरा हुआ और भारी, कोढ़ा के ऐसा शरीर पर दाने निकलना, मांस पेशी मे वात के ऐसा दर्द, जीभ सफेद या पीला मैलके साथ, मुंह लस्सादार।

मारकिउरियस ६-३०—गर्दन की गिल्टियां बढ़जाने पर यह दवा दी जाती है, जोड़ों मे दर्द, रात में और बिछोवन की गरमी से बढ़ना, उदरामय, खास कर शाम के समय में।

पलसेटिला ६-३०—ज्वर के विराम की हालत मे दर्द कुछ कम पड़नेमे यह दवा ज्यादा फायदा पहुंचाती है। दर्द हमेशा जगह बदलता है, सामके समय, रात मे वो गरम घरमे दर्द का बढ़ना, खुली हवामे आराम, जीभ सूखी और मैलके साथ, मुंहका स्वाद कडुआ; रात में उदरामय, ज्वरपित्त। प्यास न होना।

रस-भेनानेटा ६-३०—एकोनाइट इस्तमाल करने के बाद यह दवा इस्तमाल करने से ज्यादा फायदा होती है। कानके जड़ में बहुत जलन, खास कर बायीं कान में, बगलके गिल्टियों का बढ़ना और जलन, चमड़े पर काला काला दाना निकलना, जोड़ों की जगह मे दर्द, आराम लेनेकी हालत में दर्द का ज्यादा मालूम होना, शरीर हिलाने-डोलाने से और गरम के इस्तमाल से आराम।

इनफ्लुयेन्जा ।

Influenza or La-grippe

यह भी एक खास विषसे पैदा हुआ छूत का और फैलने वाला रोग है। यह एक जगह शुरू होकर चारो ओर देशों मे फैलता जाता है। यह रोग बड़े २ शहरों मे ज्यादा होता हैं। किसी को कम और किसी को ज्यादे जाड़ा और कम्पन होकर ज्वर शुरू होता है। रोगके बढ़ने के मुताबिक १०१ से १०५ डिग्री तक ज्वर हो सकता है। ज्वर के साथ बहुत सिर दर्द, मांस पेशियो मे बहूत दर्द और बहूत सुस्ती, आंख और नाकसे पानी चलना, छीक आना; गलामे दर्द, खांसी स्वांस-कष्ट वगैरह इनफ्लुयेन्जा का लक्षण दिखाई देते है। नाड़ी मोटी और तेज। बुढ़े और कमजोर रोगी की नाड़ी बहुत कमजोर और सविराम हो सकती है। ऐसा रोगीके हृत्पिण्ड का क्रियो बन्द होकर मृत्यु हो सकता है। ज्वरके साथ विकार और अट पट बोलना भी देखा जाता है। सर्दी, खांसी वगैरह और बहुत दर्द इस रोगका खास लक्षण है। बहुत रोगियों को ज्वर छूट जाने के बाद भी बहुत दिन तक खांसी रहती है। यदि किसी किसीम का खराब लक्षण वाली पीड़ा न हो तो रोगी अक्सर चंगा हो जाता है। लेकिन ब्रोंकाइटिश निउमोनिया अथवा टाइफाइड का लक्षण दिखाई देनेसे रोगीकी हालत खतरनाक होती है और रोगी अक्सर चङ्गा नहीं होता है। यह रोग

आमतौर से ३ दिन से १० दिन तक रहता है। जिसका यह रोग एक वार हो जाता है उसको हमेसा वार वार होने की आशा वनी रहती है। इनफ्लुयेन्जा का रोगी जव तक अच्छी तरह आराम न हो जावे तव तक रोगीको गरम जगहमे रखना चाहिये। इसका वजह यह है कि चेतन्दुरुस्ती की हालतमे वा रोग आराम होने के वादही ठंढ लगनेसे ब्रोंकाइटिस, निउमोनिया वगरह पीड़ा हो सकती है।

रोकनेवाली दवा—इनफ्लुयेन्जीन २०० शक्ति का एक खोराक ३, ४ रोज वीच देकर इस रोग के फैलने के समय खाने से यह रोग नहीं होता है। आर्सेनिक आयोड ६x ट्रिटुरेशन रोज सुवह और साम के समय खाने से अच्छा फायदा होती है। इउका-लिपटस ओएल (तेल) वा कपुर रूमाल मे रख कर वार वार सुंघने से भी इस विमारी का डर कम रहता है।

एकोनाइट ३-६—तेज वुखार, चञ्चलता, घवराहट, वहुत प्यास, सूखी खांसी।

आर्सेनिक-आयोड ६—अदल वदल कर गरमी और ठंढी मालूम होना; नाकसे पानी के ऐसा और दाहक सर्दी गिरती है।

आर्सेनिक ३०-२००—खांसी और दूसरे २ लक्षण का आधी रातको वढ़ना, प्यास, चञ्चलता, वहुत कमजोरी, नाकसे पानीके ऐसा सर्दी निकलती है। सर्दीसे नाकमें छाले पड़ जाते है।

एण्टिम-टार्ट ६-३० २००—तर खांसी, छाती और गलेमे घड़घड़ाता है। कफ नहीं निकलता, है, कफ निकलने से आराम मालूम होता है।

बेलाडोना ६-३०—नासिका सूखी, ललाटमे बहुत दर्द, बार बार छींक आना, गलेमे दर्द, आवाज ठीक न निकलना, सिर दर्द का ज्यादे बढ़ना, तेज ज्वरके साथ थोड़ा थोड़ा पसीना, हमेशा उंघते रहना; उंघते समयमे चौक उठना; नींद न आना, ऐठन के साथ सूखी खांसी।

ब्राइयोनिया १२-३०-२००—सब अङ्गो और शरीरमे दर्द, हिलने-डोलने से दर्दका बढ़ना, सूखी खांसीके साथ मेदा, छाती और पसली मे दर्द। यकृत का दोष, ललाटमे बहुत दर्द, बहुत प्यास, स्वाद कडुआ, पसीना।

इउपेटोरियम ६-३०-२००—पीठसे और सब शरीर को हड्डियोंमे ज्यादे दर्द, जी मिचलाना, कैसे पित्त का गिरना, खांसी।

इउफ्रासियम ६—ललाट मे दर्द, आंख और नाक से जल के ऐसा सर्दी का निकलना; पीठ वो पैर मे दर्द।

इउफ्रेशिया ३-६—नाक और आंख से ज्यादे पानी निकलना, आख के पानी से छाला पड़ना।

एलियम-सिपा ३—बहुत छींक के साथ नाक और आंख से पानी निकलना, नाक के पानी से छाले पड़जाते है।

जेलसिमियम ६-१२-३०—ज्वर रेमिटेन्ट होने से यह दवा

ज्यादा फायदेमन्द होती है। पीठ के ऊपरी भाग से ठंढी शुरू होती है। चेहरा लाल रङ्ग, आंख और नाक से पानी निकलता है। ज्यादा ठंढी मालूम होना, नाक मे खुरखुराहट होती है, छींक आता है, दहिना नाक बन्द मालूम होता है, सिर को खब कस कर बांधने के ऐसा मालूम होता है। निगलने के समय गले मे दर्द, तकलीफ देनेवाली खांसी छाती मे दर्द मालम होना, वात के ऐसा या स्नायुशूल के ऐसा दर्द, बहुत ज्यादा पेशाव करने से सिर दर्द कम हो जाता है।

लैकेसिस ३०-२००—सोने के बाद सब तकलीफ का ज्यादा मालूम होना, गलेमे बहुत दर्द, खास कर कड़ी चीज निगलने मे, तरल चीज आसानी से निगला जा सकता है।

मार्क्युरियस ३ ६-३०— जीभ तर, जीभ के ऊपर दांत का निशान पड़ जाता है। बहुत प्यास; बहुत पसीना पसीना से कुछ भी आराम नहीं होता है। बिमारीके शुरु मे ज्यादे छींक और पतला सरदी गरमी के साथ निकलती है। खासी सूखी रात मे बढ़ना; कफ थूक के ऐसा।

नक्स-भोमिका ३०—हमेशा ठंढ मालूम होना; बदन से कपड़ा नहीं उतार सकता है। खट्टा स्वाद, जी मिचलाना, कै होना, खट्टा ढेकार, पैखाना न होना, सुबह और दिन में तरल सर्दी, किन्तु रातमे सूखी खासी, खानेके बाद ज्यादे सर्दी के साथ छींक आना।

फसफोरस ३-६-३० सुरसुराहट के साथ तेज सूखी खांसी, स्वर भंग, साम के समय बढ़ना, निउमोनिया वा ब्रोंकाइटिस होने का लक्षन दिखाई देना, साम से आधी रात के पहले तक पीड़ा का बढ़ना, ज्यादे कमजोरी ।

पल्सेटिल्ला ३-६-३०—साम के समय रोग का वेशी होना, प्यास नहीं लगती है, भुख नहीं लगती है, स्वाद कड़ुआ, दस्त, ठढ मालूम होना, ज्यादे सिर दर्द, सिरको कस कर बांधने से आराम मालूम होना, पतली वा सुखी सर्दी, स्वाद या गंध नही मालूम होता है। गरम घर मे रहने से नाक वन्द रहता है। सूखी खांसी ।

रस-टक्स ६-३०—सब अंगों और शरीर में दर्द, शांत भाव मे रहने से दर्द का बढ़ना, वहुत चंचलता. वार वार करवट बदलने से आराम मालूम होना, जीभ का आगे का हिस्सा लाल ।

सैवाडिल्ला ३-६—वहुत छींक आना, खांसने से जम्हाईलेने से. रोशनी की ओर देखने से, वो खुली हवा मे आंख से पानी गिरता है।

सैंगुनेरिया ६-३०—भुने हुए प्याज के ऐसा मंहक मालूम होना, खांसी के साथ गले मे साईं साईं आवाज होना ।

स्टिक्टा ६-३०—वहुत छींक और सिर-दर्द, नाक

बहुत सूखा और उस मे दर्द, सुखी खांसी और गले में सुरसुराहट, रात मे लगातार सूखी खांसी ।

मनतव्य—यदि जरुरत हो तो सर्दी खांसी की दवा देखो ।

यह पीड़ा होने पर जिससे ठंढी न लगे ऐसा उपाय करना चाहियें । पथ्य मे मांस नहीं देना चाहिये । ऐसा पथ्य देना चाहिये जो असानी से पच जाय ।

इनफ्लुयेन्जीन रोग के शुरु मे इसकी २०० शक्ति का एक खोराक देने से रोग न बढ़ कर घट जाती है। यह दवा वार वार देना चाहिये । यदि २४ घंटे में इस से कोई फायदा न दिखलाई दे तो दूसरी दवा देना चाहिये ।

—०—

स्कारलेटिना वा लाल ज्वर ।

Scarletina.

इस ज्वर मे एक किसिम के दाने चमड़े पर निकल कर लाल हो जाता है, इस लिये इसको लाल ज्वर कहते है । यह बहुत कड़ा दुख है । भारतवर्ष में यह दुख बहुत कम देखा जाता है। यह दुख खास विष से पैदा हुआ और संक्रामक वा छूत से होने वाला दुख है। बच्चो को यह दुख ज्यादा होता है और सेआने आदमियों को कम होता है इसका

विष शरीर में घुसने के पांच सात रोज बाद ज्वर हो कर यह प्रकाश होता है। दुखके शुरू मे जाड़ा, कम्पन, कै वा दस्त और कभी २ कनभञ्रसन और डिलिरियम (Delirium) हो जाता है, शरीर की गरमी १०४ वा १०६ डिग्री वा इससे भी ज्यादा हो सकती है, जबतक चमड़े पर के दाने सूखते नहीं हैं तबतक ज्वर कम नहीं होता है। जीभ साफ नहीं, लेकिन उस पर के दानें लाल रंग के देखे जाते हैं, हाथ-पांव और ललाट में बहुत दर्द और चञ्चलता इसका खास चिह्न है। नाड़ो की गति १२० से १६० वार तक होती है। मामूली तौर से ज्वर होने के दूसरे दिन चमड़े पर दाने पहले छाती में और गले मे निकल कर तब सब शरीर मे निकलते हैं। ये सब दाने शरीर के किसी खास जगह मे या सब शरीर मे एक साथ बहुत निकल कर लाल रङ्ग के हो जाते हैं। चार पांच दिन तक ये सब दानें अच्छी तरह से निकलकर आपस मे मिलना शुरू होते हैं और नौ दश दिन के भीतर सब आपसमे एक दूसरे से मिल जाते हैं। तब चुइयां निकलने लगते हैं। इस रोग मे अक्सर आंख के पपुटे, चेहरे, हाथ और पैर में सूजन होता है। शरीर मे बहुत गरमी और खुजली होती है। नींद न आना, चञ्चलता और डिलिरियम अक्सर देखा जाता है। गले मे दर्द, जीभ मे सूजन और जलन इस रोग का खास पहचान है, टन्सिल भी बढ़ता हुआ पाया जाता है। मामूली स्कारलेटिना मे ज्वर और चमड़े पर दानें कम होते हैं। रोगी भी जल्दी चङ्गा हो

जाता है। रोग कठिन होने से गले मे भयानक जलन होती है। गला के भीतर बैंगनी रङ्ग के हो जाता है रोगी बहुत सुस्त हो जाता है। नाड़ी बहुत कमजोर हो जाती है, खून का निकलना भी हो सकता है, निहायत खतरनाक दु:ख मे बच्चे को बेहोशी और कोलैप्स की हालत होती है और चमड़े पर दाने निकलने के पहले ही मर जाता है।

बेलाडोना ६ ३०—इस रोग की अचूक दवा है। गला मे दर्द, मांथा में दर्द, आंख और चेहरा लाल, मांथा बहुत गरम सोते मे चौंक उठना, तेज विकार, टन्सिल का जलन, यदि चमड़े के दाने चमकीले हो तो बेलेडोना जरूर फायदामंद होता है।

ब्राइयोनिया ३०-२००—अगर चमड़े पर दाने पूरी तरह से न निकलें या निकल कर फिर दब जावें तो यह दवा देने मे ज्यादा फायदा होता है। सूखी खांसी के साथ छाती मे सूई भोंकने के ऐसा दर्द। बहुत पसीना; जीभ सूखी; कब्ज, सिर दर्द, हिलने डोलने से बढ़ना, रोगी चुपचाप पड़ा रहता है।

एपिस ६-३०—चमड़े के दाने का दब जाना और उसके साथ पेशाब की कमी: सब के पहले जननेंद्रियों से सूजन शुरू होना जीभ लाल रङ्ग; जीभ के ऊपर फुन्सियां, नाक से सफेद या खून मिला हुआ बदबूदार नेटा निकलता है। गला के भीतर जखम।

एइलान्थस ६-२२—बहुत तेज ज्वर, नाक से बदबूदार कफ बाहर निकलता है, होंठ का कोना फट जाता है। चमड़े पर के उभड़े हुए दाने बहुत लाल, खराब किस्म का दुख, हमेशा बेहोशी बरबराना वोगैरह में यह दवा दी जाती है।

एराम-ट्राइ ६ १२—यह दवा खतरनाक हालत के लिये बहुत फायदेमन्द है। नाक गला और मुंह के भीतर बहुत जखम और दर्द, नाक के नेटा से जखम पैदा होता है. या नाक हमेशा बन्द रहता है। रोगी नाक और हाठ को खोंट २ कर खून निकालता है। जीभ लाल और जीभ के सब दानें उभड़े उभड़े।

आर्सेनिक ३०-२००—दुष्ट स्कारलेटिना मे रोगी बहुत जल्दी २ बहुत सुस्त हो जाता है। यदि चमड़े के उभड़े हुए दानें देरसे निकले या निकल कर फिर दब जांय व काला या नीला रङ्ग के हो जांय तो आर्सेनिक जरूर देना चाहिये। गले मे सड़ा हुआ जखम, मर जाने का डर, चञ्चलता, घबड़ाहट, बहुत प्यास लेकिन बहुत थोड़ा जल पीता है। शरीर में बहुत गरमी बदबूदार दस्त।

एमन-कार्ब ६-३०—यदि चमड़े पर के दाने अच्छी तरह से नही निकलें, टन्सिल लाल रङ्ग हो और बढ़ जावे और कान के जड़ मे जलन हो तो यह दवा देना चाहिये। नाक बन्द रहना इस दवे का खास लक्षण है।

रस-टक्स ६-३०—शरीर के जगह जगह मे चमड़े

के नीचे खून का जम जाना, दाँतें बैगनी और उसमें खुजली होना, जीभ का अगला हिस्सा लाल रङ्ग, चञ्चलता, खास कर आधी रात के बाद। तमाम बदन में दर्द, नाक से पीला या पित्त की तरह नेटा निकलना, बार बार करवट बदलना।

लैकेसिस ३०-२००—गले का खराब जखम अथवा टाइफाइड का लक्षण होने से यह सब से अच्छी दवा है। गले की गिल्टियां फूली हुई। निगलने में बहुत दर्द, गले में डिफथिरिया के ऐसा जखम, गले के ऊपर हाथ फेरने से तकलीफ ज्यादा होना। सोने के बाद तकलीफ का बढ़ना।

इरिसिपेलस वा विसर्प

(जहर बाद)

Erysipelas.

प्रकार भेद—यह खास कर दो किसीम का होता है (१) ट्रमेटिक वा आघातादि के वजह से इरिसिपेलस। (२) इडियोपैथिक वा जो इरिसिपेलस अपने आप ही होता है। यह आठ किस्मीम का होता है। (१) मामूली (Simple)—इस का असर सिर्फ चमड़े पर होता है। (२) मिलियारी (Miliary) वा छोटे २ छालेदार इरिसिपेलस। (३)

फ्लिक्टेनस (Phlyctenous) वा बड़े २ छालेदार इरिसिपेलस। (४) इडिमेटस (Oedematous) वा शोथयुक्त इरिसिपेलस। (५) फलेग्मोनस (Phlegmonous) इरिसिपेलस—यह चमड़े के नीचे गहरी जगह मे होती है और उसमे से पीव निकलता है। (६) गैंग्रीनस (Gangrenous) वा सड़ा ज़खम वाला इरिसिपेलस। (७) एराटिक (Eratic) वा जगह २ मे घुमने वाला इरिसिपेलस। (८) मैटास्टेटिक (Metastatic) इरिसिपेलस, यह एक जगह मे छिप कर किसी दूसरी जगह मे दिखाई देती है। इस किसीम का दुख कम होता है और इसमे बिमारी की जगह ज्यादा नीला या लाल नहीं होता है, इस मे ज्वर भी बहुत कम होता है लेकिन यह ज्यादे दिन तक रहता है। यह वृद्ध और वात गठिया या मूत्रयन्त्र के पीड़ा वाले मनुष्यों मे अक्सर देखी जाती है।

कारण-तत्व-स्ट्रेपटोकक्काई (Streptococi) नाम के कीड़े (Germ) शरीर मे प्रवेश करने से यह बिमारी होती है। यह बिमारी एक खास विष से पैदा हुई और संक्रामक है। यह हवा वा बस्त्रादि के साथ छूआछूत होने से शरीर में प्रवेश कर सकता है।

प्रत्यक्ष कारण—ठंढी या गरमी लगना, जखम का सड़ना या दांत की उत्तेजना; पथ्य की खराबी या ज्यादे मद्य की उत्तेजना।

गौण कारण—ज्यादे तर नये जन्मे हुए बच्चों और स्त्रियों को, खास कर हैजा के समय यह बिमारी होती है। बाप दादा से यह सन्तानों मे पहुंच सकती है। किसी को एक बार यह बिमारी होने से फिर से बार बार होने का डर रहता है। अमिताचार या कठिन पीड़ादि से कमजोरी मे यह हो सकती है। किसी जख्म या शोथ रोग मे इरिसिपेलस हो सकती है। गरमी के दिनों में यह ज्यादा हो सकती है।

लक्षण—पहले पीड़ा की जगह में जलन पैदा होती है और वह जगह फूल जाती है और लाल व गरम हो जाती है, इसके बाद धीरे २ उसके ऊपर छोटे २ वा बड़े २ छाले दिखाई देते है। रोग कठीन होनेसे चमड़े के नीचे पीव पैदा होती है किन्तु यह पीव बहुत अपुष्ट होती है।

यह प्रदाह एक स्थान मे हदबन्द होकर नहीं रहता है, क्रमशः चारोंतरफ मे विस्तृत होता रहता है; कभी २ आक्रान्त स्थान मे जखम होकर सड़ जाता है। इसके साथ अत्यन्त ज्वर भी होता है; निकटवर्त्ती लिम-फैटिक (Lymphatic) गिल्टियां और खून की नसें भी पीड़ित हो जाती हैं। उस स्थान के खून के नसों में भी पीव आते देखा गया है। वर्रे इत्यादि से मुखमण्डल में जो इरिसिपेलस होता है वह अति भयानक होता है; मुंह

या नाक के मिउकस (Mucous) झिल्ली में व्रनयुक्त वर्रे से जो इरिसिपेलस होता है वह भी अत्यन्त कष्ट-दायक है, इरिसिपेलस युक्त स्थान में अत्यन्त वेदना होता है। रोग आराम होने के समय विमारी की जगह की लाली कम होती जाती है। रोग सहज होने से पांच छ रोज मे ज्वर उतर जाता है और दानें भी मूर्झा जाते हैं। अत्यन्त कठीन अवस्था मे अक्रान्त स्थान सड़ जाता है और अस्थिरता; विकार, अत्यन्त निस्तेजता इत्यादि खतरनाक लक्षण देखे जाते हैं।

चिकित्सा :—

एकोनाइट ३X-६X—प्रारम्भ मे तेज ज्वर अस्थिरता, व्याकुलता, अत्यन्त तृष्णा, चेहरा लाल ज्वाला के साथ गरम।

एइलन्थस ६-३०—टाइफाइड लक्षण युक्त इरिसिपेलस; इरपशन (दाना) धूमैलारङ्ग के अचेतन अवस्था।

एन्थरासिनम ६-३०-२००—गैंग्रिन वा सड़ा जखमदार इरिसिपेलस में टाइफाइड अवस्था, आक्रान्त स्थान अत्यन्त ज्वालायुक्त, नितान्त निस्तेज अवस्था.।

एपिस ३०-२००—मुखमण्डल में शोथ खास कर नीचले पपुटे में इरपशन काला या कुछ वैगनी रङ्ग का होता है और उस मे डंक मारने की तरह ज्वालायुक्त दर्द होता है। ज्वर के साथ प्यास नहीं लगती है।

आर्सेनिक ३०-२००—निस्तेज अवस्था, बदन मे लहर फूकना, अत्यन्त अस्थिरता, अत्यन्त प्यास किन्तु पानी बहुत थोड़ा २ पीना। इरिसिपेलस की गैंग्रिन अवस्था में यह औषधि विशेष उपकारी है।

आर्निका—इरिसिपेलस का अति धीरे २ वृद्धि होना। सड़ने वाला इरिसिपेलस, आक्रान्त स्थान मे छाले होना है, आक्रान्त स्थान फूला, कठिन, चमकीला, गरम और गाढ़ालाल, अत्यन्त दर्द।

बेलाडोना ३-६-३०—आक्रान्त स्थान फूला, चमकीला लाल वो चिकना, अत्यन्त ज्वर, शिरपोड़ा, चेहरा और आंख लाल, पोड़ित स्थान स्पर्शासहिष्णु अत्यन्त वेदना, डिलीरीयम, पीड़ा स्थान लकीर की तरह चिन्ह हो कर फैलता जाता है।

बोराक्स ३०-२००—मुख मण्डल की बायां तरफ के इरिसिपेलस, खांसने के समय वेदना, चेहरा पर मालूम होता है कि मकडा का जाल लिपटा हुआ है।

ब्राइयोनिया ३०-२००—जोड़ों मे इरिसिपेलस, अत्यन्त दर्द। हरकत से तकलीफ की ज्यादती।

कैन्थारिस ३० २००—छालेदार इरिसिपेलस, अत्यन्त ज्वालायुक्त वेदना रोगी अस्थिर, अत्यन्त तृष्णा किन्तु कोई चीज के पीने की इच्छा नही।

कम्फोरलाइया ३ ६—टाइफाइड लक्षण, चेहरा और

आंख मे ज्वाला, सन्ध्या समय वृद्धि, मुंह अत्यन्त फूला हुआ ज्वाला और खुजली युक्त. सिर में जखम करने वाली खुजली, सिर चकराना और शिर भारी मालूम होना और उस मे तीर भोकने ऐसा दर्द।

क्रोटेलस ३०-२००—शोथयुक्त इरिसिपेलस; चर्म्म बैगनी, निस्तेजक ज्वर, निस्तेज अवस्था, उदरामय, दुरगन्धी मल।

इउफरबियम ६-३०—छालेयुक्त इरिसिपेलस, मुखमन्डल और सिर का इरिसिपेलस; गैंग्रिन होने का खौफ; चीवाना के खोंड़ने को तरह दर्द।

ग्रैफाइटिस ३०-२००—इरिसिपेलस से सहद की तरह मवाद निकलना।

लैकेसिस ३०-२००—मुखमन्डल का विशेषत: बायां तर्फ का इरिसिपेलस; यह पहले लाल रहता है पीछे कालापन हो जाता है। एक ओर में सिर पीड़ा; यह सिर के पीछे से शुरु होकर आँख तक फैल जाता है। निद्रा के बाद तमाम तकलीफ बढ़ जाती है।

नक्स-भोमिका ३०-२००—अम्लपीड़ा (acidity) के हेतु इरिसिपेलस; अत्यन्त दुर्ब्बलता, स्वभाव चिरचिराहा।

पल्सेटिला ६-३०—यहां वहां घुमने वाला (Eratic) इरिसिपेलस, पीड़ा युक्त स्थान नीलापन; पीड़ा बहुत फैलती है,

खास कर चूतर और जांघ मे; चर्म्म चिकना ; सिर दर्द, लसलसा दस्त।

रस-रेडिकेन्स ३-६ - फ्लेगमोनस इरिसिपेलस, विशेषत फील्ली (Ankle) में आरम्भ हो कर ऊपर की तरफ जाता है। और गम्भीर टिसु समूह को आक्रमण करता है।

रस-टक्स ६-३०-२००—यह औषधि छाले युक्त इरिसिपेलस के लिये सर्व्वप्रधान है। आक्रान्त स्थान फूला, रक्तवर्ण. ज्वालायुक्त और उस मे वहुत खुजली होती है, रक्तमिश्रित पतला मवाद, टाइफाइड लक्षण, रोग मुखमण्डलकी वायीं ओर से शुरू होकर दहिनी ओर मे जाता है, ज्यादा अस्थिरता वार २ स्थान परिवर्तन करने से उपशम वोध।

सलफर २००—इरिसिपेलस अधिक दिन स्थायी होने से दिया जाता है।

आनुसंगिक चिकित्सा :—

जो औषधि खाने को दिया जाता है उसी को जल के साथ मिश्रित करके वाहर भी लगाया जाता है। एपिस वा रस टक्स का मदर टीन्चर पानी मे मिश्रित करके वार २ छालेदार इरिसिपेलस मे लगानेसे फायदा होती है। औषधि लगाने के वाद रुई से वांध देना चाहिये।

पथ्य – दूध, सावू, वारली, ऐरारोट, मांस का शुरुवा, मसूर या मूंग का शुरुवा दिया जाता है।

हाम ज्वर Measles (कोद्रा)।

यह पीड़ा साधारणत शिशुओं मे होती है। सेयाना आदमियों को प्रायः यह विमारी नहीं होती है, किन्तु सेयाना मनुष्य को होने से अत्यन्त कठिन होता है। यह रोग स्पर्शाक्रामक और संक्रामक है। १ से ५ साल के बच्चों मे यह विमारी अधिक होती है। यह रोग एक आदमी को एकाधिक वार हो सकता है। संस्पर्श (छूत) के द्वारा वा बस्त्रादि के साथ इस विमारी का वीष स्थानान्तर मे जाता है। इस रोग का वीष शरीर से प्रवेश करने के बाद ५ से १२ दिन तक अकुर अवस्था मे रहता है।

लक्षण—इस रोग के प्रारम्भ मे अत्यन्त सर्दी वो खांसी होती है और छींक आता रहता है, आंख लाल और सजल रहता है। नाक से बहूत पानी गिरता है, किसी २ रोगी की गला भी बैठ जाती है। ज्वर का उत्ताप जल्द जल्द बढ़ता है और १०० से १०४ डिग्री तक होजाता है। प्रायः द्वितीय दिन हाम के दाने निकल आते है और ज्वर कम हो जाता है या उतर जाता है। किन्तु खराब (malignant) हाम में ज्वर एक बार कम होकर फिर बढ़ता है। उंघई, भूख को कमी, वमनेच्छा, वमन, कब्ज, या उदरामय, गले में दर्द, खांसी, स्वांस-कष्ट इत्यादि इस रोग का लक्षण है। शय्यागत अवस्था, अत्यन्त दुर्बलता, नाड़ी सुस्त

हाथ पांव शीतल, जीभ सूखी और भूरे रंग की, दांत में मूखा मैल, विकार; अज्ञान अवस्था, इत्यादि दुष्ट हाम के प्रधान लक्षण है। दुष्ट हाम अल्प २ कर के अनियमित प्रकार से निकलता है। और आपस मे मिल जाता है। ये देखने में बैंगनी या काले रंग के होते हैं।

किसी २ रोगीमे दुष्ट हामके साथ रक्त स्राव होता है इस मे प्राय ब्रोंकाइटिक और निउमोनिया होता है। दुष्ट हाम मे दम बन्द होकर रोगी की मृत्यु होती है। साधारणतः हाम का इरपशन (दानें) लाल रंग का छोटे २ सरसों की तरह होते हैं दानें पहले मुखमण्डल और गर्दन मे निकल कर छाती पीठ और सर्व्वाङ्ग मे व्याप्त होते हैं। दाना जितना जल्द और जितना अधिक निकले उतनाही अच्छा है, दो तीन दिन मे यह दाना मुर्झा जाता है और चोंइया निकलने लगता है। हाम मे किसी प्रकार का लक्षण न होने से जल्द आराम होता है किन्तु निउमोनिया और अन्त्र के प्रदाह इत्यादि लक्षण होने से बिमारी कठिन होती है। खुरंट उतरने के समय रोगी को बहुत सावधान रखना चाहिये जिस से उसको ठंढी न लगने पावे। इसमें ठंढ लगने से निउमोनिया होने का डर है।

हाम की चिकित्सा—हाम के रोगी को पृथक शय्या पर रखना चाहिये और किसी बच्चाको रोगी के पास जाने नहीं देना चाहिये, किसी बच्चो को हाम होने से यदि उस घर के

दूसरे २ बच्चों को पलसेटिला ३० शक्ति का एक खुराक दिया जाय तो उनको हाम होने का सम्भावना कम रहता है।

एकोनाइट ३X—३—६—अत्यन्त ज्वर, नाड़ी पूर्ण, कठिन और तेज; अत्यन्त अस्थिरता घबड़ाहट व प्यास; अत्यन्त सूखी खांसी, आंख और चेहरा रक्तवर्ण शरीर मे ज्वालां, नेटा पतला और छींक आना।

एलमन-सिपा ६-३०—नाक से पतला पानी गिरता है और नाक बन्द रहता हैं गला के भीतर छीलाना सा मालूम होता है। हाम दब जाने से अगर स्वांस-कष्ट हो तो यह दवा से बहुत फायदा होता है।

एन्टीम-क्रूड ६-३० जीम के ऊपर मोटा वो सफेद मैल और पाकस्थली का गड़बड़ होना इस दवा का प्रधान लक्षण है।

एन्टीम-टार्ट ६ ३०-२०० गला मे तर कफ का घड़घड़ाहट, किन्तु खांसी के साथ कफ नहीं निकलता है।

एपिस ६-३० हाम के साथ शोथ होने से यह दवा दी जाती है। आंख का पपुटा खास कर नीचला पपुटा शोथयुक्त।

आर्सेनिक ३०-२००—अत्यन्त निस्तेज अवस्था, शारीरिक और मानसिक अस्थिरता, आंखमे ज्वाला, आंख से पानी गिरना, नाक के पानी से होट में जख्म हो जाता है। अत्यन्त तृष्णा, किन्तु अति बहुत कम पानी पीता है

दुष्ट हाम मे दाने धुमैले या काले रङ्ग के होते है। शरीर मखजाना और नितान्त अचेतन अवस्था में आर्सेनिक अति उत्कृष्ट औषध है।

बेलेडोना ६-३०—हमेशा ऊंघाई आना, किन्तु नींद न होना। चेहरा लाल, रोगी नीद मे चौंक उठता है। ललाट मे अत्यन्त दर्द के साथ नाक सूख जाना। तेज खांसी, गला बैठ जाना। गला मे अत्यन्त वेदना विकार की आदत।

ब्राइयोनिया १२-३० २००—सूखी खांसी, खांसी के साथ छातीमे और सिर मे अत्यन्त दर्द हाम अचानक दब जाने के हेतु ज्वर और नितान्त निस्तेज अवस्था, कब्ज, बैठनेसे या खड़ा होने से जी मिचलाता है अत्यन्त प्यास देर २ बाद एक मरतबे बहुत पानी पीता है।

कैलिडोनियम ३-६ ३० हाम के साथ निउमोनिया होनेसे यह औषधि दी जाती है। निश्वांस प्रश्वांस के साथ नाक के पूरे पखा की तरह चलते रहने से यह दवा अवश्य फलदायक होगा।

कुप्रम-एसेटिका ३०-२००— अचानक हाम दब जाने से मृगीरोग की तरह एंठन होने से यह दवा दी जाती है। होठ और चेहरा नीला रंग, आक्षेपयुक्त खांसी।

ड्रासेरा ६-३० हाम के बाद अत्यन्त आक्षेपयुक्त खांसी, हरिद्र कफ।

युफ्रेसिया ३-६—सिर पीड़ा, नाक से पतला नेटा गिरना वो आंख से जखम पैदा करनेवाले पानी का निकलना।

हिपर-सल्फ ६-३०—नासिका के ऊपरी भाग मे अत्यन्त दर्द, वो कान मे दर्द, नाक छिड़ने से कान के अन्दर सरसर आवाज होता है। ऐसा मालूम होता है कि आंख मे रेत (बालू) पड़ा हुआ है। गले के अन्दर दर्द, ऐसा मालूम होना कि गला छिल गया है। आवाज बैठ जानेके साथ खांसी, बदन से कपड़ा उतारने से खांसी होती है

इपिकाक ६-३०—सर्दी के साथ नाक बन्द रहता है। हाम का दाना अति धीरे २ प्रकाश पाता है, गले के अन्दर सुरसुराहट और खांसने से गला के अन्दर घड़घड़ाहट शब्द होता है हमेशा जी मिचलाना, और कै होना।

लैकेसीस ३०-२००—गला के भीतर जखम की तरह दर्द,। कोई चीज निगलने के समय वायां कान मे दर्द, रात को सूखी व आक्षेपयुक्त खांसी, नीद के बाद वृद्धि। दांत काला या नीला रंग होता है। दात मे सर्डिस (Sordes) नाम के सूखा खोड़ी, जीभ निकाल नहीं सकता है।

मारक्युरिअस ६-३०—वार २ छींक के साथ ज्यादा पानी निकलता है, और उस से नाक के भीतर और होठ मे छाले पड़ जाते हैं। आख में ज्वाला, आख से पानी गिरना टन्सिल का प्रदाह और जखम। रक्तामाशय।

फसफोरस ६-३०—बायीं आंख के ऊपर सिर दर्द, साम को वृद्धि, गला वैठ जाना, गला में सुरसुराहट के साथ सूखी खासी, साम से दोपर रात तक वृद्धि, नीन्द के बाद आराम मालूम होना, पानी के सदृश पतला दस्त, अचेतन अवस्था के साथ टाइफाइड लक्षण।

पलसेटीला ६-३०—सूखी सर्दी के साथ छींक आना और कोई स्वाद और गन्ध नहीं मालूम होना, आंख के प्रदाह के साथ आंख से पानी निकलना। रात को दहिने कान मे दर्द। रात को या सामको सूखी खांसी, खुली ठंढी हवा मे रहने से आराम बोध होता है।

रस-टक्स ६-३०—अत्यन्त अस्थिरता, बार २ करवट बदलने से आराम मालूम होता है। हाथ, पैर और कमर मे दर्द, कपड़े के अन्दर से हाथ निकालने से ही खासी शुरू होती है।

स्टिकटा ६-३०—सर्वदा छींक के साथ ललाट के दहिने भाग मे दर्द, नाक के जड तक भारी मालूम होना। और इस के साथ दहिने नाक के भीतर चूभने की तरह दर्द, सूखी ठनठनी खांसी, विशेषत. रातको और सामको, स्वांस लेनसे खांसी शुरू होती है। गले में सुरसुराहट और छाती में दर्द।

पथ्यादि—हमेशा याद रखना चाहिये कि रोगी के बदन मे किसी तरह से ठंढ न लगे। खास कर जब तक

खांसी बिलकुल आराम न हो और बदन से खुरंट उतर कर चमडा बिलकुल साफ न हो जाय। आख आने से कच्चा दूध के साथ पानी मिला कर उस से आंख धोना चाहिये।

जलबार्ली, वा जलसाबू, या उसके साथ थोड़ा सा दूध मिला कर पथ्य दिया जाता है मछली या मास नही देना चाहिये।

—:o—

चेचक, माता वा शीतला।

Small-Pox—Variola.

—·o·—

यह बड़ा संक्रामक और स्पर्शाक्रामक रोग है। यह रोग किसी को एकबार होने से प्राय द्वितीय बार नहीं होता है। किन्तु बाजों को यह द्वितीय बार वा तृतीय बार भी होते देखा गया है।

माता निम्न लिखित कई प्रकारका होता है।

(१) असंयुक्त, (Discreta)—माता इस प्रकार की माता का दाना साफ २ अलग २ रहता है इसमे ज्वर ज्यादा नहीं होता है, परन्तु तृतीय या चतुर्थ दिन से ज्वर इत्यादि का लक्षण कम होता जाता है और दाने सूखते जाते हैं।

(२) संयुक्त (Confluent) माता—इसमे गोटियां आपस मे मिले रहने से लेप के ऐसा हो जाता हैं। (३) अर्द्धसंयुक्त माता, इस मे दाने कही साफ २ और कहीं आपस में मिले रहते हैं। (४) रक्त माता, कृष्णवर्ण, मैलिगनेन्ट वा सांघातिक (Malignant and Hæmorrhagic) माता—इसमे किसी २ रोगीमे ४८ घन्टे के अन्दर चमड़े के नीचे रक्तश्राव होता है और किसी रोगी मे रक्तश्राव कुछ देर में होता है। इसके साथ दानें मे, दाने की चारों तरफ के चमड़ के नीचे म्युकस झिल्ली मे और कभी २ नाक, फेफड़े, गुर्दे, जरायू इत्यादि से भी रक्त श्राव होते देखा जाता है। रोगी की हालत पहले ही से अत्यन्त खराव होती है। (५) भेरीओलयेड Varioloid)—यह टीका देने के साथ २ यो टीका देने के वाद होता है। इस मे ज्वर और दाना बहुत कम होता है, आराम भी वहुत जल्द होता है।

माता की चार हालतें (Stage) देखी जाती है।

(१) अंकुरायमान अवस्था (Incubation stage)—इस में कोई शिशेष लक्षण प्रगट नहीं होता है। (२) प्रथम ज्वरावस्था (Primary fever)—इस मे शुरू से कमर मे या सर्व शरीर मे दर्द के साथ जाड़ा और कम्प होकर प्रबल ज्वर होता है। दाना निकलने के पहले ज्वर १०४, १०५ डिग्री तक देखा जाता है। (३) गोटी निकलनेकी वा पकने की हालत (Maturation stage) ज्वर के

तृतीय वा चतुर्थ दिन मे मुखमण्डल मे विशेषत ललाट में पहले दाना देखा जाता है, इसके बाद, दो, तीन दिन मे सर्वांग मे दानें निकलते है दाना अच्छी तरह से निकलने पर ज्वर कम हो जाता है या बिलकुल उतर जाता है। (४) दाने मे पीब होने के समय फिर ज्वर होता है, इस को द्वितीय ज्वरावस्था (Secondary fever) कहते है।

माताकी गोटी का पहचान।

शुरू मे गोटियां लाल सरसों की तरह देखी जाती हैं, इस के बाद वे कठिन और स्पष्ट, मसूड़ी के बराबर होती है। साधारणत द्वितीय दिन मे गोटियां तरल रस से भर जाती है। प्रायः पंचम दिवस मे गोटियां का नोक दव कर नाभी की तरह गहरा हो जाता है। पहले यह रस स्वच्छ रहता है और प्राय' आठ दिन के अन्दर वह रस' पीव वन जाता है। गोटी की चारो ओर के लाल चर्म को एरीओला (Ariola) कहते है। प्रायः अष्टम दिनमे जब गोटीसमूंह पीव से भर जाता है तव वह गहरा स्थान फिर ऊंचा हो कर नोकदार हो जाता है, और गोटी फट कर पीव निकलता है या गोटी अपने आप सूखती जाती है और प्राय एगारह से चौदह दिन मे सूख कर गोटियो पर से चुइआं गिर जाता है।

माताके साथ होनेवाली बीमारियां।

(१) ब्रंकाइटीस, न्युमोनिया वो अफथैलमिया वा आंख आना माता के प्रधान उपसर्ग है। (२) जीभ, मेदा इत्यादि का प्रदाह वो दस्त (३) फोड़ा, कारवङ्कल, इरिसिपेलस इत्यादि। (४) पाईमिया वा सेपटिसिमिया। (५) कानका प्रदाह कान से पीब गिरना, मूत्र यंत्र का प्रदाह। (६) शरीर के नाना स्थान से रक्तस्राव होना इत्यादि इत्यादि।

प्रतिषेधक (Preventive) चिकित्सा।

टीका देने से प्रायः माता रोग नहीं होता है। मैलान-ड्रीनम ३० शक्ति वा उच्च शक्ति के सेवन से वहुत फायदा होती है। २०० शक्ति का भेरियोलाइनम १ मात्रा माता के निकलने के समय खानेसे यह रोग नहीं होता है। इसी प्रकार भेक्सिनाइनम भी इस रोग का प्रतिषेधक है। किसी स्थान मे माता का आगमन हो तो घर के प्रत्येक व्यक्ति को २०, २५ बुन्द गधी का दूध हर रोज पीना चाहिये। गधी का दूध चेचक का अचूक प्रतिषेधक है। यदि गधी का दूध वेशी नहीं मिले तो थोड़ा सा दूध मे चावल फूला कर दो, चार दाने चावल हर रोज खाने से भी फायदा होती है।

चिकित्सा :—रोग की प्रथम अवस्थामें—एकोनाइट, बेलेडोना, वैपटिसिया फलप्रद है गोटी निकलने के समय—

मेक्रुसोनाइनम, मैलेन्ड्रीनम एन्टिसटार्ट, थुजा, पीव होने से—मारक्यूरियस, मैलान्ड्रीनम, गोटी सूख कर चुइआं उतरने के समय—सलफर उपकारी होता है।

वैप्टिसिया ३-६-३०—प्रथमावस्था ही मे रोगी नितान्त कमजोर होने से और टाइफाइड का लक्षण होने से दी जाती है।

भेगट्रेम-भीरिडी १-३—अत्यन्त ज्वर, पीठ मे दर्द, नाडी अत्यन्त तेज ।

सिमिसिफिउगा ३-६—अस्थिरता, मतली सिर दर्द, पीठ मे दर्द ।

वेलाडोना ३-६ - तेज डिलीरियम, आंख और चेहरा लाल, गले मे दर्द ।

एन्टिम-टार्ट ३-३०-२०० - गोटी निकलने के समय, प्रथम ज्वरावस्था मे कै और मतली तेज होने से अवश्य देना चाहिये । इस के साथ खांसी वो गले मे घड़घड़ाहट आवाज होना । गोटी निकलने मे देर होने से यह बहुत फायदा करता है। चेचक के दिनो मे किसी को कलेरा हो तो यही दवा देनी चाहिये ।

मारक्युरियस ६-३०—गोटी मे पीव होना, कसरत से लार निकलना, गले मे जखम, श्वांस प्रश्वांस बदबूदार, पेचीश होना।

आर्सेनिकम ३०-२०० — बहुत जल्द ही रोगी निढाल होता जाता है। शरीर मे अत्यन्त ज्वाला, अस्थिरता, छटपटाना, प्यास, जीभ सूखी । टाइफाइड का लक्षण, गोटी काला रंग, शरीर की जगह बजगह पेटीकी (Petechoe or purple spot on the skin) वा काला या नीला दाग ।

एपिस ६-३०—मुखमडल फूला हुआ और इसमे खुजलाहट, चमड़े में और गले मे इरिसिपेलस की तरह लाली, फूलन, ज्वाला और डंक मारने की तरह दर्द ।

हाइड्रास्टीस ३-६ – चमड़ा फूला हुआ वो लालरङ्ग, गले मे जखम, उस जखम मे काली २ फुन्सिया । इस दवाई के वाहरी प्रयोग से चेचक का दाग मिट जाता है । इस का मदर टीन्चर २ ड्राम, दस औन्स पानी में मिला कर जखम मे प्रयोग किया जाता है ।

लैकेसीस ३०-२००- टाइफाइड का लक्षण काला रङ्ग, के रक्तस्राव, गले मे दर्द, तरल वस्तु से कठिन वस्तु सहज से निगल सकता है। निद्रा के वाद सब लक्षणों की वृद्धि ।

मैलेन्ड्रीनम ३०—इस दवाई की ३० शक्ति की समय २ पर व्यवहार करने से रोग की तेजी कम हो जाती हैं ।

फसफोरस ६-३०—चेचक के साथ निउमोनिया में दिया जाता है।

रस-टक्स ६-३०-२०० — अस्थिरता बार २ करवट बदलने से आराम मालूम होता है; स्थिर होकर रहने से तकलीफ ज्यादे होती है; जीभ का अगला हिस्सा लाल।

मैक्सिनाइनम् और मेरिओलाइनम् २०० — इस बिमारी की हरहालत मे ही उपकारी है। कभी २ एक खुराक देने से विमारी की तेजी कम होती है और रोगी धीरे २ आराम होता है।

आनुसंगिक चिकित्सा — पीब हाने से ही नीम का पत्ता के साथ हल्दी पीस कर लेप कर देने से खुजली और दर्द आराम हो जाता है और गोटी भी बहुत जल्दी सूख जाती है। जखम के ऊपर भी यह लगाने से बहुत जल्द सूखता है।

पानी बसन्त (छोटा चेचक) Chiken Pox or Varicella.

यह चेचक के विष से स्वतंत्र बिष जनित पीड़ा है। यह भी बहुत संक्रामक है। इस में बुखार कम होता है; इस के दाने में पानी के सदृश रस होता है और चार पांच दिन मे गोटी सूखना शुरू होती है और आठ, नौ दिन मे सूख कर उस से चुइआं उड़ जाता है।

औषधावली—रस-टक्स, वेलाडोना, एकोनाइट, मारक्युरिअस, एन्टिम-टार्ट इत्यादि।

प्लेग। Plague.

प्लेग एक खास विष जनित महामारी विमारी है। किसी २ के मत में जमीन से निकला हुआ विषाक्त और स्पर्शाक्रामक भाफ ही इस विमारी का कारण है। यह भाफ श्वास के साथ शरीर में घुसने से ही प्लेग होता है। फिर किसी २ के मत में एक प्रकार की कीटाणु (Bacillus) ही इस रोग का उत्पादक है।

यह रोग साधारणतः चार प्रकार का देखा जाता है।

(१) एम्बुलेटरी (Ambulatory) प्लेग—इस में प्लेगका कोई भी लक्षण प्रकाशित न होकर ही अचानक रोगी की मृत्यु हो जाती है, (२) मृदु प्लेग (Abortive or Larval Plague) इसमे प्लेग का तमाम लक्षण ही मृदु भाव से प्रकाश पाता है और रोगी भी शीघ्र आरोग्य लाभ करता है; (३) फुलमिनेन्ट (Fulminant) वा तुरन्त प्राण नाशक प्लेग—इसमे प्लेगका तमाम लक्षण प्रकाशित न होने पाता है। रोग का हमला होते ही अचानक रोगी निढाल और अचेतन हो जाता

है और चंद ही घंटे में मर जाता है (४) असली प्लेग (Grave Plague)—इसमें प्लेग का प्रायः तमाम लक्षण प्रकाश पाता है। इस प्रकार का प्लेग ही हम लोगों के वर्णन का विषय है। यह असली प्लेग, आक्रमण की प्रकृति अनुसार **चार प्रकार** का कहा जाता है।

(१) सेप्टीसिमिक (Septicœmic) प्लेग :—इस में शरीर का समस्त यंत्र, हीं आक्रान्त होता है। टाइफायड लक्षण प्रकाश पाता है।

(२) बिउबोनिक (Bubonic) प्लेग—इससे लिमफैटिक ग्लैन्ड पर हमला होता है यानि काछा बगल, गला, वगैरह में गिलटियां दिखाई देते हैं।

(३) निउमोनिक (Pneumonic) प्लेग—इसमें फेफड़े पर खास हमला होता है यानि न्युमोनिया होता है।

(४) इनटेसटाइनेल (Intestinal) प्लेग—इस में अन्तरी पर खास हमला होता है यानी पीठ, पेट, तलपेट और कमर मे दर्द, पेटका फूलना, दस्त इत्यादि लक्षण ज्यादे होते हैं।

रोग-लक्षणः—प्लेग का विष श्वांस के साथ शरीर में प्रवेश करने पर यह रोग उत्पन्न होता है। रोग की अंकुरायमान अवस्था में याने बिमारी जाहिर होने के कब्ल शरीर और मनकी कमजोरी के सिवा और कोई लक्षण नहीं देखा जाता है। यह हालत दो तीन घन्टे से ५ या ७ दिन रह

सक्ती है। उसके बाद जाड़ा और कम्पन के साथ ज्वर होता है। शरीर की गर्मी १०३ से १०७ तक हो सकता है, बदन मे दर्द होता है। बाद काछा,, बगल या गले मे गिलटी (Bubo) निकलती है। कभी २ रोगी के ज्वर होने के चार पांच घन्टे मे ही यानी अन्यान्य लक्षणो के प्रकाश होने के कब्ल ही खून की कै, या और किसी जगह से रक्तस्राव हो कर रोगी का प्राण निकल जाता है। अक्सर रोगी को विकार व वेहोशी होती है। विउवो निकलनेपर चार पांच दिन के अन्दर यदि ज्वर उतर जाय और विउवी पक जाय तो सुलक्षण है।

प्लेगकी प्रतिषेधक चिकित्सा:—इग्नेसिया—बीन (Ignatia Bean) शरीर मे धारण करने से प्लेग की हमला से वचा जा सकता है। प्लेग फैलने के समय इग्नेसिया ३० शक्ति पांच सात दिन के अन्तर २ एक मात्रा खाने से प्लेग होनेका डर नही रहता है। एलोपैथिक चिकित्सा मे प्लेग का टीका देने की व्यवस्था है। होमियोपैथिक मत मे प्लेग की वीज (Germ) से तैयार किया हुआ लयमिन हिपो-जिनिन वा विउवोइन सेवन करने से भी टीका देने का फल मिलता है। इन दवाइयों की ऊंची ताकत इस्तमाल करना चाहिये।

प्लेग चिकित्सा:—टाइफाइड ज्वर और निउमोनिया की चिकित्सा द्वारा भी प्लेग-चिकित्सा मे वहुत फायदा मिलेगी।

डाक्टर हिउज के मत मे आर्सेनिक और लैकेसिस प्लेग की सर्व्वोत्कृष्ट औषधि है।

"डाक्टर हेरिङ्ग" लैकेसीस, आर्सेनिक, चिन-सल्फ और बैडिआगा को ही प्रधान औषधि कहते हैं।

डाक्टर रौ (Raw) केलि-फस को प्लेग का सर्व्व प्रधान औषधि कहते है।

डाक्टर उइन्टरवर्ण क्रोटेलस को उत्तम औषधि माना है। कारबंकल और गिलटी होने से क्रोटेलस अवश्य फलदायक होगी।

डाक्टर हनिगवर्जर सिर्फ इग्नेसिया द्वारा ही बहुत रोगी को आराम किया है।

प्लेग-चिकित्सा की लक्षणानुसार औषधावली।

एकोनाइट ३x-६x—शुरू हालत मे अत्यन्त तेज ज्वर, चेहरा और आंख लाल, अत्यन्त अस्थिरता, छटपटाना, घबराना मृत्यु-भय, पानी के अलावे सब चीज कडुआ मालूम पड़ती है। सर्व शरीर मे ज्वाला के साथ गर्मी।

बेलाडोना ६-३०—अत्यन्त तेज ज्वर, चेहरा और आंख बहुत लाल व तमतमा हुआ, अत्यन्त सिर दर्द, जरासा हिलने डोलने से मालूम होता है कि सिर फट जायगा। रोगी चुप-चाप पड़ा रहता है। तेज डिलिरीयम, रोगी बिछावन पर

उछलता है, भागना चाहता है, मारता है, चिल्लाता है, शरीर में थोड़ा २ पसीना होता है ।

क्रोटेलस ३x विचूर्ण—वदन में कहीं से खून निकलते रहने से क्रोटेलस अति उत्तम काम करता है। जाड़ा की हालत में बेहोशी, विकार, चेहरा मुर्दे की तरह फीका, आंख आधी खुली हुई, ज्यादे दिल धड़कना, वदन की किसी जगह से खून निकलना ।

लैकेसिस ३०·२००—इस में भी क्रोटेलस की तरह निहायत कमजोरी और सेप्टीसिमिक हालत पायी जाती है। बेहोशी से लगातार बड़बड़ाना, नींद के बाद सब लक्षणों की वृद्धि, बायीं तरफ में गिल्टी होना, आग की गर्मी से आराम मालूम होना इत्यादि लैकेसीस का खास लक्षण है। धुन्धली नजर, कान में भन भन शब्द होना, नाक से खून निकलना, कब्ज या दस्त, मल अत्यन्त बदबूदार, मल पोआल की कोयला की तरह ।

कोब्रा ३x विचूर्ण -पीड़ा के शुरू से ही दिमागी खराबी, और निढाल हालत, अचानक दिल का काम बन्द होने का खौफ मालूम होने में कोब्रा द्वारा अक्षय फल मिलेगा ।

इलोप्स-क्र ६—रक्त स्राव अधिक होने से यह औषधि फलदायक होती है। विशेषत यदि वह खून कालापन हो।

कभी २ वह रक्त जमा हुआ ढेला सा होता है। इस दवाई के साथ क्रोटेलस का विशेष सादृश्य है। इन दोनों मे कोई एक फायदा न करे तो दूसरा दिया जा सकता है।

फसफोरस ६x-३०—निउमोनिक प्लेग मे फसफोरस देने से फल होता है। स्वांस कष्ट, कफ लसदार वो पीव की तरह खून मिला हुआ, सर्वदा दहिने करवट में लेटा रहता है। फेफड़े से रक्त स्राव, टाइफायड अवस्था, हमेशा प्रलाप बकना। निस्तेजता, सर्वदा नंगा होना चाहता है आंख की चारो ओर नीला दाग पड़ जाता है और फूल जाता है। धून्धली दृष्टि, शरीर के कहीं २ से रक्तस्राव। धीरे २ प्रश्न का जवाब देता है। अत्यन्त भूख और प्यास।

बैपटिसिया ३०-२००—निर्जीवता उत्पादक ज्वर मे यह औषधि विशेष उपकारी है। हमेशा बेहोशी मे बड़बड़ाना रोगी ख्याल करता है कि उस का सिर टुकड़ा २ होकर फैल गया और उन टुकड़ों को हाथ से चुनता रहता है। प्रश्न का जवाब देते २ सो जाता है।

शरीर के सर्व प्रकार का स्राव निहायत दुर्गन्धी, घुला हुआ गोलर की तरह दस्त, ऊंघना, आंख मुन्द कर पड़ा रहना।

आर्सेनिक ३०—२००—नितान्त निस्तेज अवस्था के ज्वर मे आर्सेनिक द्वारा विशेष फल मिलता है। रोगी नितान्त कमजोर किन्तु अत्यन्त अस्थिर। अत्यन्त तृष्णा, बार २ अति अल्प परिमाण जल पीता है। मृत्यु-भय,

विशेषत अकेले रहने से, सर्व्व शरीर मे ज्वाला किन्तु देह से कपड़ा उतारना नहीं चाहता है। उदरामय, मल में अत्यन्त दुर्गन्ध, श्वांस-कष्ट, नाड़ी अत्यन्त दुर्ब्बल, आधी रात को सब लक्षणो की ज्यादती।

कार्बो-एनिमेलिस ६·३०—गिल्टियो के बढ़ने के साथ मृदु भाव के रोग मे यह औषधि उपकारी होती है।

बैडिआगा १x-३—ज्वर के साथ गिल्टियो की वृद्धि होने से यह फलदायक है। इसका मदर टीचर बिउबों के ऊपर लगा कर अनेक समय उत्कृष्ट फल लाभ किया गया है।

पाइरोजन ३०-२००—यह अति तेज ज्वर मे अति उत्तम फल देता है। खून विषैला करने वाली सर्व्व प्रकार पीडा मे यह बलवान औषधि है। शीत अस्थिरता, मांस-पेशियों की अत्यन्त दुर्ब्बलता, अत्यन्त तृष्णा, दुर्गन्धी स्वांस-प्रश्वांस, अतिशय निस्तेज अवस्था,

एन्थ्रासिनम ३०-२००—सेप्टिसिमिक लक्षण के प्रकास होने से यह दवा अति उपकार करती है। अस्थिरता शरीर वो मन की नितान्त उत्तेजना, बढ़ी हुई गिल्टियों में कतरने ऐसा दर्द वो उस मे अत्यन्त ज्वाला, अचेतन अवस्था।

रस-टक्स ६-३०-२००—यह प्लेग की एक उत्कृष्ट औषधि। हाथ, पैर और कमर में गठिया की तरह दर्द, जीभ का अग्रभाग अत्यन्त लाल, अत्यन्त अस्थिरता और लगातार करवट लेने से आराम मालूम होना इसका स्वभाविक लक्षण

है । अत्यन्त सिर दर्द, दुर्बलता, डिलीरियम, दुर्गन्धी दस्त, मल मांस धोअन के ऐसा ।

लक्षणानुसार ब्राइओनिया, एन्टिम-टार्ट हायोसायमस, ओपियम, स्ट्रामोनियम, मिउरियेटिक-एसीड इत्यादि औषधियां भी चुनी जा सकती है ।

विशेष प्रदाह जनित ज्वर

Specific Inflammatory Fever.

मस्तिष्क-मेरुमज्जीय ज्वर ।

CEREBRO-SPINAL FEVER

Or Spotted Fever

रोग परिचय—यह ज्वर एक खास विष जनित पीड़ा है। इसका प्रकृत कारण अब तक निश्चय नहीं हुआ है। ज्वर होने के पहले किसी तरह का लक्षण हीं नहीं देखा जाता है। अचानक कम्प हो कर ज्वर आता है। ऐंठन व सिर पीड़ा इतना अधिक होता है कि रोगी चिल्कार करता है।

सिर चकराना, पेट मे दर्द, और पित्त मिश्रित वमन होता है। सख्त बेचैनी, शरीर अत्यन्त गरम। आंख की पुतली फैली हुई। दो एक दिन मे, सिर-दर्द, गर्दन के पीछे तक पहुँचता है और धीरे २ दर्द रीढ़ मे पहुंचता है। रोगी अपने सिर को पीछे के तर्फ झुका कर रखता है क्योकि पठ्ठों का ऐंठन उसी तरफ को होता है। तीन चार दिन मे स्पष्ट ही धनुष्टंकार (Titanus) का लक्षण दिखाई देता है, दांत लग जाता है, दृष्टि टेढी हो जाती है, स्वांस प्रस्वांस के यन्त्रों के मांसपेशियों मे आक्षेप होने के हेतु स्वांसकष्ट होता है। बदन मे खास कर पैर मे ज्यादा दर्द होता हैं। जल्द रोगी अज्ञान हो जाता है, प्रलाप बकता है वो ऊंघता रहता है। वाज रोगी मे कन्भलशन, लकवा इत्यादि भी देखे जाते है। किसी २ रोगी मे अन्धता और वधिरता भी देखी जाती है। यह अति कठिन पीड़ा है। इस मे सैकड़े ३० से ८० तक मृत्यु संख्या देखी जाती है। रोगी का सौभाग्य होने से धीरे २ ज्वर कम हो कर होश होना शुरू होता है। रोग की प्रथम अवस्था मे रक्त-स्राव वा गात्र मे बहुत रक्तवर्ण दाग दिखाई देना विशेष खतरनाक है। प्रायः पहले चंद रोज ही मे रोगी की मृत्यु होती है। बच्चा और ३५ वर्ष से अधिक उम्र के आदमियों मे मृत्यु-संख्या अधिक देखी जाती है।

आंख का प्रदाह, ब्रोकाइटीस, न्युमोनिया, पेरिटोनाइटिस इत्यादि इस रोग का सहकारी पीड़ा है।

चिकित्सा :—

एकोनाइट ३x-६x—कम्प और शीत, तेज ज्वर, अस्थिरता, चमड़ा सूखा, अत्यन्त तृष्णा, ज्यादा बेचैनी वो घबराहट।

सिमिसिफ्युगा—सिर दर्द इतना तेज होता है कि मालूम होता है कि सिर के पिछे से लोहे का छड़ गड़ा कर चांदी तक पहुंचा दिया, और गर्दन अकड़ा हुआ रहता है, आंख के ढेले मे सख्त दर्द, बदन मे दर्द. विकार मे कुत्ता, बिल्ली इत्यादि देखता है।

आर्निका ३-३० ऊंघना, स्पर्शशक्ति की ज्यादती, तमाम शरीर मे फोड़ा सा दर्द।

आर्सेनिक ३०-२००—सख्त बेचैनी व कमजोरी, अत्यन्त तृष्णा, बार २ थोड़ा २ पानी पीता है। तमाम शरीर मे ज्वाला।

बेलाडोना ६-३०-२००—अत्यन्त सिर-दर्द, ऊंघना, और तेज विकार, पुतली फैली हुई, द्वित्व-दृष्टि अर्थात् एक वस्तु को दो देखना।

ब्राइओनिया ३०-२००—अत्यन्त सिर-दर्द थोड़ा हिलने डोलने से मालूम होता है कि सिर फट जायगा। गर्दन अकड़ा हुआ, हाथ पैर और जोड़ों मे दर्द।

सिकुटा ३-६ ३०—अचेतन अवस्था, द्वित्व-दृष्टि (Double Sight), पुतली फैली हुई; आंख का ढेला, हाथ पांव चेहरे वगैरह का चमकना, वहरापन सिर पीछे के तर्फ झुक जाता है। रीढ़ अकड़ा हुआ, तमाम वदन का फलिज (Paralysis)।

क्रोटेलस ३-६—शरीर से रक्त-स्राव होता रहने से दिया जाता है।

जेलसिमियम ३ ६-३० सिर दर्द से मालूम होता है कि सिर कस कर बांधा हुआ है। ज्यादा पेशाव होने से सिर दर्द का आराम, शरीर के पट्ठे अत्यन्त दुर्वल होने के वजह से शरीर कांपता है।

ग्लोनाइन ६-१२—सिर मे धक २ दर्द होता है। मूर्छा और मतली के साथ अन्धता, चेहरा जर्द। रीढ़ मे दर्द।

हाइयोसायमस ३०-२००—प्रलाप, कन्भलशन।

लक्षणानुसार—एपिस, आर्जेन्टम-नाइट्रस, कैम्फर कैनाविन्स इन्डिका, चिन-सल्फ, लाइकोपोडियम, ओपियम, रसटक्स, भेरट्रम-भिर प्रभृति औषधि भी दी जाती है।

पीव ज्वर। HECTIC FEVER

शरीर से अधिक पीव निकलने से यह बुखार होता है। वहुपरिमाण पीव का निकलना ही इस ज्वर का कारण

है। यक्ष्मा रोगी की शेष अवस्था मे जो ज्वर होता है वह हेकटिक जाती का ज्वर है। यह ज्वर, अवस्था के भेद से सबिराम अथवा स्वल्पविराम भी होता है। पीब अत्यन्त अधिक होने से ज्वर के साथ शीत और कम्प होता है। यह ज्वर रोजाना एक वार बढ़ता है; रोगी धीरे २ पतला-दुबला होता जाता है। साधारणतः यह ज्वर दिन को दो पहर के वाद वो सन्ध्या के समय ज्यादा होता है। रोग के अन्त अवस्था मे दस्त की विमारी होकर रोगी की मृत्यु होती है।

चिकित्सा :—

आर्सेनिक ३०-२००—शरीर निहायत पतला व कमजोर, रात को पसीना, दिनको चर्म सूखा, हमेशा प्यास व वेचैनी।

कैलकेरिया ३०-२००—हमेशा ज्वर का बना रहना, प्यास कम, वदन पतला-दुबला, भूख न होना, खांसी, थोड़ा परिश्रम करने पर ही पसीना व दुर्बलता मालूम होना, परिपाक शक्ति की कमी, रात को पसीना।

कार्बो-भेज १२-३०-२००—हेकटीक ज्वर मे खास कर पुराना ज्वर मे यह दवा अच्छी है, जखम पैदा करने वाली पीच स्राव, शीत अवस्था मे प्यास, शरीर ठन्डा विशेषत टेहुना से पांव तक किसी तरह से रोग दूर न होना चाहता है।

चायना ३०-२००—बहुत पुराना पीवज्वर, रोगी बहुत दुर्बल, दस्त और रात को पसीना होना, भूख बहुत होती है, किन्तु खाने से पचता नहीं और पेट फूल जाता है।

हिपर-सल्फर ३०-२००—सविराम हेक्टीक ज्वर। सामान्य हिलने डोलने से या मानसिक परीश्रम ही से पसीना होता है। रातको बहुत खट्टा पसीना होता है।

लाइकोपोडिअम ३०-२००—हेकटिक ज्वर के साथ फेफड़े मे पीव। एक पैर ठन्ढा, दूसरा गरम पेट मे वायु होना। साम को चार बजे से ८ बजे तक ज्वर होना।

फसफोरस ६-३०-२००—कष्टदायक खांसी, खांसी सामसे शुरू होकर रात १२ बजे तक ज्यादा रहती है। दुर्बलकारी दस्त, रात में बल नाशक पसीना होना।

फसफोरिक एसिड ३-६ ३०—दुःखित और कष्टदायक मानसिक भाव, उदास भाव, सुबह को दुर्बल करने वाली पसीना।

साइलिसिया ३०-२००—शरीर मे ज्यादा फोड़ा वगैरह होने की आदत, पीव वगैरह पतला, और दुर्गन्धी, बुढो के यक्ष्मा-रोग में यह औषध अति उपकारी है।

सल्फर ३०-२००—ज्वर खास कर सामको होता है और उसके साथ गाल लाल रंग होता है, बदन सूखा, प्यास, कब्ज या दस्त, प्रातःकाल मे पसीना।

पाईमिया (PYÆMIA)

रोग परिचय :—शरीर के अन्दर ही कोई खास विष पैदा हो कर खुन को विषैला कर देता है—इस कारण बहुत तेज बुखार होता है और साथ-साथ शरीर की जगह बजगह वर्म होकर बड़े २ फोड़े (एबसेस abscess) हो जाते हैं—यहां तक कि फेफड़े, यकृत वगैरह भितरी यंत्रों मे भी अक्सर फोड़े हो जाते है।

लक्षण—पीबके सदृश कोई विषैला पदार्थही इस पीड़ा का मूल कारण है। अचानक शीत और कम्प हो कर ज्वर होता है पीड़ा की प्रथम अवस्था ही से अस्थिरता वो निस्तेजता बनी रहती है। बहुत जल्द शरीर पीला हो जाता है। शरीर की जगह बजगह फोड़ा निकलता है। श्वाँस प्रश्वास मे मिठी २ बू मिलती है। गाँठों मे गठिया की तरह प्रदाह होकर फूल जाता है वो दर्द करता है, और पक भी जाता है। क्रमश रोगी अधिक दुर्बल हो जाता है और टाइफाइड का लक्षण आ जाता है। यह अति कठिन पीड़ा है, यदि ज्वर कम रहे तो सुलक्षण है। ज्वर ज्यादा होना खतरेनाक है, रोग अत्यन्त कठिन हो तो आराम होना कठिन है, रोग मृदु भाव के होने से और खूब यत्न व चिकित्सा करने से ५ या ६ सप्ताह मे आरोग्य हो सकता है। यदि अज्ञानता उदरामय, रक्तस्राव इत्यादि लक्षण होतो अतिशय दुर्लक्षण है।

चिकित्सा—खूब होशियारी से रोगी की सेवा करना चाहिये। उस को सूखी व अच्छी हवादार कमरा में रखना चाहिये—यदि फोड़ा अपने आप न फटे तो नस्तर कर देना चाहिये व हर रोज जखम धोना व साफ करना चाहिये।

औपधावली—वैपटिसिया, लैकेसिस, एसिडकार्बोलिक कैन्थारिस, एसिड-म्युरियेटिक, कार्बो भेज, जेलसिमियम। मार्क्युरिअस, फसफोरस, ब्राइयोनिया, साइलिसिया, भेरेट्रम भिर, रस-रैडीकेन्स इत्यादि अवस्थानुसार प्रयोग किया जाता है।

इस बिमारी मे पुष्टिकर और लघु पथ्य देना चाहिये। शीत और कम्प आरम्भ होने ही से चिनिनम आर्स, १ म शक्ति प्रति घन्टे २ देने से फायदा होता है।

सेप्टिसिमिया। SEPTICÆMIA.

रोग परिचय—कोई विषैला पदार्थ शरीर के क्षत-स्थान मे शोषित होकर इस रोग को उत्पन्न करता है। सड़ा जखम, प्लेग, पेचीश इत्यादि रोग मे अक्सर उक्त कारण से इस रोग की उत्पत्ति होती है। बदन का खून काला रङ्ग होता है। किन्तु जम कर ढेला बंध नही सकता है। इस बिमारी के सिर्फ शुरू ही मे शीत होता है, ज्वर प्रायः ज्यादा नही होता

है, रोगी का चेहरा फीका हो जाता है। रोगी का मुंह अत्यन्त दुर्गन्धी होता है। पाईमिया की तरह इस मे फोड़ा नहीं होता है। ज्वर टाइफायड का लक्षण का होता है। कभी २ ऐसा कि, दो तीन ही दिन मे रोगी की मृत्यु होती हैं। कभी २ रोगी दो तीन या चार सप्ताह मे आरोग्य लाभ करता है।

मुंह अत्यन्त दुर्गन्धी होना, अत्यन्त पसीना होना और पेशाब मिट्टी के रंग का और पतला दुर्गन्धी दस्त या खून का दस्त होना निहायत खतरनाक लक्षण है।

सेप्टिसिमिया का चिकित्सा :— सेप्टिसिमिया का जखम इत्यादि को टीञ्चर आयोडिन और गर्म पानी मिला कर धो देना चाहिये। रोगी को सूखा और साफ हवादार गृह में रखना चाहिये।

चिनिनम-आर्स १x सफूफ—जाड़ा वो कांप के साथ बुखार होने ही से देना चाहिये।

आर्सेनिक ३०-२००—यदि रोगी बहुत जल्द २ कमजोर होता जाय, तेज़ प्यास, बेचैनी ज्वाला रहे जखम सड़ने लगे, बदन की किसी जगह से खून निकलने या चमड़े के नीचे खून जमा हो कर नीला २ निशान हो जाय तो यह दवा मंत्र की तरह काम करती है।

रस-टक्स ६-३०-२००—ज्यादा बेचैनी, कमजोरी, डिलिरिअम में बरबराना, चमड़ेमें नीला २ धब्बे, मांस धोअन की तरह दस्त।

कैम्फर—अचानक शरीर ठन्डा हो जाने से वो नाड़ी बैठ जाने से और चमड़े नीला रंग हो जाने से कैम्फर की १ शक्ति देने से बहुत उपकार होता है।

आरगटीन ३-नाक से रक्त स्राव, खून का कै, खून का पेशाव और योनिद्वार से खून निकलना इत्यादि लक्षण में घन्टे २ पर दी जाती है। ज्यादा खून निकलता हो तो लक्षणानुसार सल्फ्युरिक-एसिड, नाइट्रीक एसीड वा फेरम-स्युर, जल्द २ प्रयोग करने से फायदा मिलता है।

सन्तादय—पाईमिया और सेपटीसिमिया के बहुत लक्षण टाइफस ज्वर के ऐसा होता है इस लिये टाइफस ज्वर की चिकित्सा द्वारा इन चिकित्सा मे भी बहुत सहायता मिलती है।

तरुण सूतिका ज्वर वा पिउआरपेरल फीवर।

(PUERPERAL FEVER)

रोग-परिचय :—प्रसव के बाद योनि वा जरायु मे कोई विषैली चीज घुसेड़नेसे प्रसूति को जाड़ा और कांपनी के साथ

बुखार हो जाता है और यह बुखार लगातार रहता है। अक्सर पुरैन का कोई टुकड़ा जरायु में रह जाने से या भ्रूण जरायु मे सड़ जाने से यह बुखार पैदा होता है।

कारणः—पूर्व्वोक्त प्रकार विष के संयोग से यह बिमारी होती है। अक्सर चिकित्सक का नस्तर और धाई वगैरह के हाथ के जरिए यह विष जरायु वा योनि में घुसड़ता है। यह सेप्टिक विष है।

लक्षणादि—प्राय प्रसव के तीन चार दिन बाद ही यह ज्वर होता है। ज्वर की प्रथम अवस्था मे शिर पीड़ा, शीत और कम्प होता है। पसीना नहीं होता है। मल पतला और नितान्त दुर्गन्धी. प्रथम अवस्था में जीभ अत्यन्त मैली रहती है। कुछ दिन के बाद जीभ सूखी होती है। होंठ और दांत में मैल जमती है, पेट फूलना और पेट में दर्द होता है। पेरीटोनाइटीस याने उदर के यंत्रों को झांपने वाली झिल्ली का प्रदाह होता है। तल पेट मे दबाने से फूला और दर्द के साथ जरायु मालूम पड़ता है। लोकिया वा प्रसवान्तिक स्राव बन्द हो जाता है। दुग्ध नहीं निकलता है। डिलिरियम इत्यादि हो सकता है किन्तु रोगिनी बेहोश नहीं होती है।

यह पीड़ा कभी २ इतनी कठिन हो जाती है कि सात ही रोज के अन्दर २ रोगिनी की मृत्यु हो सकती है। रोग कठिन होने से जल्द २ टाइफाइड वा पतनावस्था प्रकाश पाती है।

इस रोग में गांठों में प्रदाह और पीव भी पैदा हो सकता है। कभी २ शरीर में फोड़ा इत्यादि दूसरे २ तकलीफ भी होती है।

चिकित्सा :—एकोनाइट ३x—३—६—अत्यन्त ज्वर, चमड़ा सूखा और गरम, ज्यादे प्यास, चेहरा लाल, बेचैनी, लोकिया बन्द हो जाना, स्तन में दूध नहीं होना।

एइलन्थस ३-६—खतरनाक सूतिका ज्वर। लोकिया पतला, पीव की तरह और दुर्गन्धी। डिलिरिअम, उदरामय, समस्त शरीर मे इरपसन, सर्वदा प्यास, सब जगह पर जखमी की तरह दर्द।

एपिस ६-३०-२००—डंक मारने की तरह दर्द, जरायु मे प्रसव की तरह दर्द, प्यास न होना, मूत्र अल्प, स्वांस-कष्ट, नाड़ी तेज और कोमल, शरीर अत्यन्त गर्म, हाथ, पांव ठन्ढा, लोकिया और दूध का प्राय सूख जाना।

आर्निका ६-३० २००—सर्व्व शरीर में अत्यन्त वेदना सिर गर्म, शरीर शीतल, प्रसवान्त मे जखम की तरह दर्द।

बैप्टिसिया ३०-२००—पिउआरपेरल फीवर के साथ टाइफाइड लक्षण। दुर्गन्धी लोकिया (Lochia) (प्रसव के बाद का स्राव), निढाल हालत, पेशाब कड़ुआ वो दुर्गन्धी; पैखाना कमजोर करने वाला और बदबूदार।

बेलाडोना दूध सूख जा कर अथवा अत्यन्त मान-सिक अस्थिरता के बाद सूतिका ज्वर। पेरिटोनाइटीस, पेट फूला हुआ, पेट में झोंकने की तरह दर्द, दर्द अचानक

उपस्थित होता है और अचानक ही छूट जाता है। दर्द के साथ ऐंठन। सर्व्वदा ऊंघना किन्तु नींद नहीं होती है। सामान्य हिलने डोलने से दर्द की जगह अत्यन्त कष्ट होता है। स्तन फूला और प्रदाहयुक्त, आंख और चेहरा अत्यन्त लाल।

ब्राइयोनिया ३०-२००—सूतिका ज्वर, दोनों स्तन ज्यादा दूध से फुला हुआ, स्वांस लेने से दर्द, अधिक परिमाण से लोकिया स्राव अथवा लोकिया बन्द हो जाना, सिर फट जाने के ऐसा दर्द, सामान्य हिलने-डोलने से दर्द अधिक होना, जी मिचलाना और मूर्छा। ज्यादे प्यास, कब्ज, मल कठिन और सूखा।

सिमिसिफ्यूगा ६-१२—ठन्ढ लग कर अथवा मानसिक अस्थिरता के हेतु लोकिया बन्द हो जाता है। इस के साथ पेट मे दर्द अत्यन्त शिर पीड़ा के साथ डिलिरिअम, मुखमंडल नीला रङ्ग, अत्यन्त दूर्बलता। लोकिया पतला पानी की तरह उसके साथ छोटे २ फटके २ खून के ढेले रहते हैं। स्तन में डंक मारने के ऐसा दर्द।

काफिया ३·६—मानसिक उत्तेजना के हेतु सूतिका ज्वर, जीभ गोली, प्यास नहीं होती है, अटपट बोलना, आंख चमकीली और फली हुई, अनिद्रा, निराशा और स्पर्शा-सहिष्णुता के साथ पेट में दर्द।

कलोसिंथ ३-६—पेट में दर्द, पेट को जोर से दबाने से आराम मालूम होना।

हाइओसायमस ३०-२००—मांसपेशियों में ऐंठन, टाइफाइड के लक्षण के साथ डिलिरिअम, बिछावन खसोटना, अश्लील बात करना, और नङ्गे रहने का कोशिश करना।

मार्किउरिअस ६-३०—जीभ गीली, लेकिन प्यास ज्यादा, बहुत पसीना होता है लेकिन उससे कुछ भी आराम नहीं मालूम होता है। रात को पीडा की वृद्धि।

नक्स-भोमिका ३०-२००—बार २ मल त्याग करने की इच्छा, बार २ कष्टदायक मूत्रवेग, नितान्त दुर्गन्धी लोकिया, लोकिया का बहुत निकलना या बन्द हो जाना, जी मिचलाना और कै होना।

रस-टक्स ६x-३०—अत्यन्त अस्थिरता बार २ करवट बदलने से कुछ आराम मालूम होता है। शरीर में बात ऐसा दर्द निचला अंग की ताकत घट जाना, आधी रात को पीडा की वृद्धि।

सिकला ३x ३-६—निहायत सड़नेवाली हालत लोकिया काला, दुर्गन्धी, बदनमें ज्वाला, ज्वर और उस के साथ शीत और कम्प, शाखें शीतल, सब शरीर में शीतल पसीना।

क्रोटेलस ६-१२—सेप्टीक विष प्रवेश करने के हेतु सूतिका ज्वर और सड़ने वाली हालत, लोकिया दुर्गन्धी, शरीर और शाखें शीतल मुखमंडल नीला।

आपिअम ३०-२००—डर के हेतु रोग की उत्पत्ति, डिलिरिअम, चेहरा लाल, फुला २, आंख अधिक फुली हुई सम्पूर्ण अज्ञान अवस्था स्वांस के साथ घड़घड़ाहट।

प्राचीन सूतिका ज्वर।

PERNICIOS ANAEMIA.

यह ज्वर पिउयारपेरल फीवर (विप जनित सुतिका ज्वर) से एक दम अलग बिमारी है। यह पिउयारपेरल फीवर की पुरानी हालत नहीं है। कारण पिउयारपेरल फीवर सेप्टीक विप से उत्पन्न होता है, और उसकी पुरानी हालत कभी नहीं होती है। प्राचीन सूतिका ज्वर की प्रथम अवस्था में कभी कभी नये सूतिका ज्वर का लक्षणादि रहते हैं। लेकिन यह तरुण अवस्था में रहते २ कभी निर्दोष होकर आराम नहीं होता है। कारण पुराना होना ही इसका स्वभाव है। यह ज्वर एक वार होने से शीघ्र परित्याग नहीं होता है इस में महिनों बल्के वर्षों तक भी रोगिणी कष्ट पाती है। स्नान वो आहार के परिवर्तन से इस रोग की अवस्था के सिवा कोई परिवर्त्तन नहीं होता है। यह अति कठिन पीड़ा है। कभी २ देखा गया है कि रोग दो चार या छः महीने के अन्दर ही मर गई। इस बिमारी मे ज्वर भी बहुत सामान्य भाव मे रात दिन रहता है। कभी कभी दोपहर के बाद कुछ अधिक देखाई देता है। फिर कभी नई हालत के ऐसा तेज भी

हो जाता है। इस के साथ खांसी, दस्त, सूजन वा शोथ इत्यादि तकलीफें आजाती है। रोगिणी क्रमशः पतली-दूबली और बेखून की हो जाती है। दिल में बेचैनी होती है सिर का बाल उड जाता है। अत्यन्त अरुचि होती है, कभी तो भूख बिलकूल नहीं लगती है। और कभी २ राक्षस की तरह भूख होती है इस के साथ सिर चकराना और रतौंधी भी देखी जाती है कभी २ नाक से खून निकलता है, रोगिणी निढाल हो जाती है।

कारण—यह रोज मेहनती औरतों में कम पाया जाता है। साधारणतः भद्र परिवार में इसकी संख्या अधिक देखी जाती है। गर्भावस्था वो प्रसव के समय बद परहेजी के वजह से एक किसीम की बे खूनकी हालत पैदा होती है और इसीसे यह रोग होतो है।

प्राचीन सुतिका ज्वर का चिकित्सा:—

इस बिमारी मे आर्सेनिक, कैलकेरिया, कार्बो-भेज चायना कुप्रम, फेरम, हेलोनियस, हाइड्रस्टीस, केलि कार्ब, नेट्रम-म्युर, मे भेरेट्रम, इत्यादि औषधि फल प्रद है।

विशेष भैषज्य तत्व :—

एलुमिना ३०-२००—खून का कम होना, अल्प परिमाण वो फीका रजःस्राव, कब्ज, सोन्धा मिट्टी, खड़ी, कोयला

इत्यादि अखाद्य द्रव्य खाने की अत्यन्त इच्छा। बहुत पतला व सफेद रङ्ग का श्वेद प्रदर। शाम को ४ से ८ बजे के अन्दर ज्वर होना।

आर्सेनिक ३०-२००—रोगिणी अति शीघ्र २ कमजोर होती जाती है, शोथ, जी मिचलाना, खाई हुई चीज का अथवा काला रंग का कै होना, ज्यादा प्यास लेकिन अति अल्प २ जलपान करना, हिचकी, पेट मे ज्वाला, आधी रात को कष्ट अधिक होना, गरम सेक से दर्द का आराम मालूम होना, अत्यन्त अस्थिरता, दस्त, मल दुर्गन्धी।

चायना ६-३०-२००—दस्त, ज्यादा दूध निकलना अथवा ज्यादा रक्त-स्राव इत्यादि शरीर के ताकत रखने वाला तरल पदार्थों का नाश, अत्यन्त दुर्बलता दृष्टि शक्ति की हीनता, कान मे भन २ शब्द होना, नींद न होना।

फेरम मेटालिकम ३०-२००—बदन में खून की बहुत कमी, जरासा हिलने डोलने से चेहरा लाल हो जाना, दिल में फुस २ आवाज होना। आहार के थोड़े ही देर के बाद खाई हुई चीज का कै होना।

हेलोनियस ६-१२—मूत्र और जननेन्द्रिय की पीड़ा के हेतु कमजोरी व निढाल हालत; बिलासिता से और परिश्रम के अभाव से यन्त्र समूह की शिथिल अवस्था, दूसरे विषय में मन देने से आराम बोध, देर तक खून निकलने से ऐनिमिया और शिथिल अवस्था।

हाइड्रास्टिस ३-१२—शरीर दुर्बल और शिथिल, मूर्च्छा, निढाल हालत कैनसर, शरीर सूखा और पीला, पारा के बद इस्तेमाल का कुफल।

केलि-कार्ब ३०—प्रति बार घर से बाहर जाने से ही शीत और कम्प होता है, जल्दी गर्दन घुमाने से शिर मे चक्कर आता है अत्यन्त स्त्री-संगम के हेतु दृष्टि की कमजोरी।

नेट्रम-म्युर ३०-२००—खून की कमी, मैलेरिया के कारण शरीर सूखा व पीला, दिल धड़कना, मेदा फूला, कब्ज, गमगीन हालत।

नक्स-भोमिका ३०-२००—अत्यन्त चिरचिराहा स्वभाव अजीर्ण दोष, अम्ल वा पित्त का कै शिर पीड़ा। प्रातः काल में पीड़ा की वृद्धि, स्वाद खट्टा, कब्ज, बार २ पखाना का बेग होना, शरीर मे सर्वदा शीत बोध।

पल्सेटिला ३०-२००—ऐनिमिया और शीत बोध किन्तु ठंढी हवा में जाने से आराम, रोने वाला स्वभाव, भूख न लगना प्यास बिल्कुल न होना, ऋतु बन्द होना या अल्प परिमाण मे होना, लोहा और कुनाइन खाने का कुफल इस दवाई से दूर होता है

सिपिया ३०-२००— ऐनिमिया, चिरचिराहा स्वभाव, परिश्रम करने से बिलकुल अनिच्छा, तलपेट में खून जमा होना, जरायु और योनिद्वार का टल जाना, श्वेतप्रदर

पीला रङ्ग का, भगभा वा जरायु के बाहरी भाग का सूजन और उसमे खुजली, ज्वाला और जखम होना खाद्य द्रव्य के गन्ध ही से जी मिचलाना, ऋतु वन्द होना, तलपेट मे ऐसा बोझ मालूम होता है कि पेट का यन्त्र समूह योनिद्वार से वाहर निकल जायगा ।

फसफोरस ६-३०—यक्ष्मा रोग का कोई दोष वर्त्तमान रहना, गम, नाउमेद्दी, रक्तस्राव, उदरामय, रात को पसीना होना, हस्तमैथुन इत्यादि हेतु आंख के चारो ओर फूला २, सूखी खांसी, जननेन्द्रिय की दुर्वलता । श्वेतप्रदर सफेद पतला और चिपचिपा, ऋतु के समय मे श्वेतप्रदर का ज्यादा होना ।

इस विमारी मे फेरम आस भी अच्छा फलदायक होता है ।

पथ्यादि—मछली मांसादिका जूस (juice) वा शुरुवा इस पीड़ा मे अति उत्तम पथ्य है इस पीड़ा मे धनेप पत्त का तेल सिर और शरीर मे मालिश करने से वहुत फायदा होती है ।

उदर-रोग समूह ।

हैजा-फसली-कलेरा ।
(CHOLERA.)

प्रकार भेद—

(१) कलेरा सिक्का, (२) इनफैन्टाइल कलेरा वा शिशु-कलेरा, (३) कालेरीन वा डायरीक कलेरा, (४) इङ्गलिश कलेरा, (५) एशियाटीक कलेरा वा विसूचिका वा असली हैजा ।

कलेरा-सिक्का-सूखा कलेरा ।
CHOLERA SICCA OR DRY CHOLERA

यह अति कठिन रोग है। इसमें दस्त व कै होने के कवल ही रोगी नीला रङ्ग होकर प्राणत्याग करता है। इस बिमारी से मरे हुये आदमी को परीक्षा करके देखा गया है कि उसकी अंतड़ी में कलेरा के मल की तरह बहुत सा मल जमा

है। रोग निहायत तेज होने के कारण मल निकलने के समय नहीं मिलता है। इस रोग मे कैम्फर वा कुप्रम सब से उमदा दवा है।

कलेरीन वा डायरिक कलेरा।

CHOLERINE OR DIARRHŒAIC CHOLERA

अजीर्ण रोग से हैजा हो जाने से उसको कलेरीन कहते है। इस मे पहले पहल अनपच दस्त होता रहता है, पेशाब भी साथ २ होता जाता है। इस समय अच्छी चिकित्सा न होने से एफरे २ कलेरा की तरह याने चावल धोअन अथवा मीग। भात की पानी की तरह दस्त होने लगता है, पेशाब बन्द हो जाता है और असली हैजा का सब लक्षण प्रकाश पाता है।

इङ्गलिश कलेरा वा पैत्तिक कलेरा।

(ENGLISH OR BILIOUS CHOLERA)

यह कोई विषैला रोग नहीं है। अक्सर आधी रात को एकाएक बहुत सा पित मिला हुआ दस्त होना शुरू होता है। दस्त बहुत बदबूदार होता है, पेट में बहुत शूल होता

है। बहुत से दस्त होने के बाद मल बेरंग होने लगता है. जल्द रोग आराम न होने से असली हैजा की तरह ऐंठन कोलैप्स इत्यादि आ जाता है।

ऐसियाटिक कलेरा-विसूचिका वा असली हैजा।

(ASIATIC CHOLERA)

रोग परिचय—भिगा भात को पानी, चावल धोअन अथवा सड़ा हुआ पेठा का पानी की तरह दस्त के साथ के होना इस बिमारी का प्रथम लक्षण है। बाद पेशाब बन्द होना, हाथ-पैर मे ऐंठन होना, नाड़ी लोप होना बदन ठन्दा होना, ज्यादा प्यास होना, आवाज बैठ जाना, ज्यादा पसीना होना इत्यादि आ जाते हैं।

कारण—कलेरा-विष वा कम्मा वेसिलास (Comma Bacillus) ही इस रोग का प्रधान कारण है। इस वेसिलस वा वीजानुका शक्ल अङ्गरेजी कम्मा (Comma",") की तरह है, इस लिए इस को कम्मा वेसिलस कहते हैं. यह वेसिलस कलेरा रोगी के मल व कै में रहता है। किसी तरह से यह विष पेट में जाते ही से खून बिगड़ जाता है यान

खून गाढ़ा, काला और पानी व नमकहीन हो जाता है और बिमारी प्रकाश पाता है। पानी, दूध व दूसरे २ खाने पीने की चीज के साथ यह पेट में जाता है। कलेरा वेसिलस पेट मे, जाने के बाद ६-७ घन्टे से ५ दिन के अन्दर बिमारी प्रकाश पाता है। सड़े मांस, मछली, कच्चा या सड़ा फल खाना, अमिताचार, ज्यादा सहवास करना, रात जागना, शराब पीना, ज्यादा सोच फिक्र करना, डर इत्यादि इस बिमारी का उत्तेजक कारण है।

कलेरा की हालतें—चिकित्सा की सुभीता के लिए इस बिमारी को ४ हालतों मे विभाग की जाती है।—१ आक्रमण अवस्था, (२) विकाश अवस्था, (३) हिमांग अवस्था, (४) प्रतिक्रियावस्था।

लक्षणादि पहली हालत वा आक्रमण अवस्था

(Premonytary stage)—इस अवस्था में सामान्य दस्त होता है। दस्त रङ्गदार होता है व इस मे खाई हुई चीज अनपच हालत मे निकलती है. इस हालत में पेशाब होता है। चेहरा बेरौनक होना, भय मेदा में बहुत किस्म की तकलीफ इसमें पायी जा सक्ती है। चावल धोअन की तरह दस्त व कै होने के साथ यह अवस्था शेष होती है।

दूसरी वा पूर्ण विकाशित अवस्था

(Stage of Full development)—इस अवस्था का

शुरू से ही भिगा भात को पानी, चावल धोअन, भातका माड़ वा सड़ा पेठा के पानी की तरह दस्त व कै होने लगता है। इस हालत मे निहायत कमजोरी, नाड़ी सुस्त, प्यास, बेचैनी, बदन सर्द, पेशाब बन्द, आंख व चेहरा धस जाना, गला बठ जाना, आंखके चारो ओर नोला दाग पड़ना, ऐंठन इत्यादि होते है। कलेरा सिक्का मे यह हालत मालूम नहीं होती है, एक दम तीसरी याने हिमाग अवस्था आ जाती है।

तीसरी हालत वा हिमागावस्था (Collapse Stage)

—दूसरी हालत से किस वक्त तीसरी हालत शुरू होती है सो हमेशा रोगी के पास न रहने से मालूम नहीं होती है, लेकिन किस वक्त यह शेष होती है सो मालूम होती है कारण इस हालत के बाद ही प्रति क्रियावस्था शुरू होती है।

इस हालत में रोगी एकदम निढाल हो जाता है। सर्व्वांग शीतल हो जाता है, क्रमश. स्वांस ठन्ढा हो जाता है। दिल व फेफड़े का काम बिगड़ जाता है, दिल बेकायदे से धड़कने लगता है, नाड़ी करीब गुम हो जाती है, बाद नाड़ी एक दम ही नहीं मिलती है। स्वास सुस्त वा जल्द व कष्ट-दायक होता है, कभी २ लम्बा स्वांस लेता है। चेहरे पर मुर्दनी छा जाती है। अङ्गों और बदन के चमड़ा सिकुड़ जाता है। आंख व गला बैठ जाते हैं। पेशाब बन्द रहता है। दस्त व कै भी करीब बन्द हो जाते हैं कभी २

बेखबरी से मल चूता रहता है। प्यास व ऐंठन कम हो जाता है। जीवनीशक्ति एकदम कम हो जाती है और जल्द मृत्यु का लक्षण उपस्थित होता है।

चौथी वा प्रतिक्रिया अवस्था (Reaction Stage) —ज्वार भाटा के मध्यवर्ती समय की तरह हिमांगावस्था के समय वा उसके बाद रोगी कुछ देर तक स्थिर रहता है उसके बाद ही नाड़ी मालूम होती है और फिर से थोड़ा २ दस्त होने लगता है लेकिन यह रंगदार होता है। बिमारी सहज होने से दस्त ज्यादा देर तक न हो कर थोड़े ही देर में तन्दुरुस्ती का लक्षण प्रकाश पाता है मल क्रमशः गाढ़ा होता जाता है। कभी २ पेशाब इस हालत मे भी बन्द रहता है लेकिन अक्सर रोगी पेशाब होने से शान्ति मालूम करता हैं। इस समय जो दस्त होता है उससे घबड़ाना नही चाहिये कारण यह अच्छा ही लक्षण है। कभी २ दस्त ज्यादा होने से रोगी दुर्बल हो जाता है – इस समय इलाज की जरूरत होती है।

हमेशा प्रतिक्रिया नियमित भाव से नहीं आती है। इस अवस्था मे निम्नलिखित खतरे उपस्थित होते हैं:—

(१) मूत्र स्तम्भ वा मूत्र नाश। (२) मूत्र-बिकार वा इउरिमिया (Uraemia) याने मूत्र रुके रहने के वजह से विकार होना। (३) हिचकी। (४) मतली व कै। (५) दस्त वा पेचीश। (६) पेट फूलना। दिल में खून जम जाना

(७) स्वांस कष्ट । (८) ज्वर । (९) जीवनी शक्ति की निस्तेज अवस्था इत्यादि ।

रोग का भोग काल— इस रोग के भोग काल का कुछ ठिकाना नहीं है । कभी २ ३ घण्टे में ही मृत्यु होती है और कभो २-३ हफ्ता के बाद रोगी आराम लाभ करतो है ।

भावी फल —रोग कठिन वो सक्रामक होने से भावी फल खतरनाक होता है, अति शिशु व बुढ़ों के रोग का भावीफल सन्देह जनक होता है, मतवाला या अफीमची की बिमारी सांघातिक होती है । स्वांस कष्ट बहुत खराब लक्षण है; जितना ज्यादा दस्त होता है रोगी की हालत उतनी खतरनाक होती है । जल्द हिमागावस्था का आना भी अच्छा नही है । ऐंठन, पेशाब बन्द, मूत्रविकार, टाइफाइड लक्षण बिमारी का वापस आना, नींद न होना, विकार इत्यादि अशुभ लक्षण है ।

हिमांगावस्था में नाड़ी लोप न होना, जल्द २ नियमित पूर्ति क्रिया होना, मल मे पित्त निकलना, पेशाब होना, चेहरा अच्छा होना, स्वांस सहज होना, नींद होना शुभ लक्षण है

परिचर्य्या—रोगी का घर साफ व हवादार होना चाहिये कलेरा रोगी का मल मे ताजा चुना वा अलकतरा मिला कर गाड़ देना चाहिये अथवा मलादि लगा हुआ कपड़ादि जला देना चाहिए । कलेरा रोगी का मल-मूत्र किसी जलाशय में धोना नहीं चाहिये ।

हल्का व विशुद्ध—खाना भोजन करना चाहिए। गरम मसाला, गुरुपाक द्रव्य, सड़ा मांस वा मछली; तेल-दार मछली, कच्चा फल, तरबूज वगैरह खाना नहीं चाहिए। बाजारू चीज भी भोजन न करना चाहिए, नया चावल, नया आटा इत्यादि भी नुकसान करता है।

जहां कलेरा फैल गया हो वहां का दूध न पीना चाहिए। जहां पानी का कल नहीं है वहां के तालाब का पानी पीना ठीक न है। दूसरी जगह के तालाब का पानी लाकर गरम करके ठन्ढा होने से छान कर उसमे कपूर देकर पीना चाहिए। घर में धूमन या गन्धक जलाना चाहिए। मकान मे किसी को कलेरा होनेसे निगरानी करने वालों को जब तक कार्बोलिक साबुन से वा खल्ली से हाथ न धोवें तबतक खाने पीने की चीज न छूना चाहिए।

प्रतिषेधक चिकित्सा (PROPHYLACTICS.)

१—सर्वदा बदन में तामा को टुकड़ा या पैसा धारण करने से इस रोग के होने की सम्भावना कम रहती है।

२—जूता के अन्दर गन्धक का चूर्ण रखने से यह बिमारी नहीं होती है।

३—बिसूचिका का प्रादुर्भाव के समय कभी २ अल्प परिमाण कपूर खाना और उस का सुंघना विशेष उपकारी है।

४—किसी २ डॉक्टर का मत है कि प्रातःकाल में भेरेट्रम को एक खूराक और साम को कुप्रम-मेटालिकम का एक खुराक प्रति दिन खाने से कभी इस बिमारी का आक्रमण नहीं हो सकता है।

५—चिकित्सकों को कभी खाली पेट मे कलेरा रोगी के पास नहीं जाना चाहिये। रोगी देखने को जाने के पहले कपूर सुंघ करके जाना चाहिये।

पथ्यापथ्य—रोग का आक्रमण, पूर्णविकाश व हिमांगं ये तीन अवस्था में किसी किस्म का पथ्य नहीं देना चाहिये। सिर्फ प्यास के लिये साफ पानी अथवा बर्फ का टुकड़ा देना चाहिए। बर्फ चूस कर खाना चाहिए निगलना नहीं चाहिए। जहां साफ पानी नहीं मिले वहां पानी खूब गरम करके फिर ठन्ढा करके देना चाहिए। स्वाभाविक प्रतिक्रियावस्था आरम्भ हो कर पेशाव हो जाने के तीन चार घन्टे के बाद खूब पतला जल-अरारोट दिया जा सकता है। अरारोट के साथ कागजी नेंबू का रस देना फायदेमन्द है। एक चमच अरारोट ठन्ढी पानी में बीस मिनिट काल भिगा रख कर खूब गरम पानी में आधा घन्टा सिद्ध करने से जल अरारोट त्यार हो जाता है। पकाने पर भी अरारोट पानी को तरह पतला ही रहना चाहिए। मल में पित्त का चिह्न देखा जाने से जल-बार्ली वा इस के साथ थोड़ा सा पानी मिला हुआ दूध दिया जा सकता है। यह बर्दास्त होने से खूब पूराना व हलका चावल का भात

व्यवस्था किया जा सकता है। सब ही पथ्य रोगी का भूखके अनुसार होना चाहिए। जिद करके रोगी को ज्यादा खिलाने से फायदा न हो कर नुकसान होता है। मांस वा मांस का शुरुवा विष के समान है प्रतिक्रिया अवस्था में भी जब तक पेशाव न हो तब तक पानी, वर्फ अथवा हरा नारियल के पानी के सिवाय और कोई पथ्य नहीं देना चाहिए।

चिकित्सा :—

कलेरा की आक्रमण अवस्था की चिकित्सा व दस्त की चिकित्सा करीब एक सां है इस लिए इस के लिए जरूरत हो तो दस्त की बिमारी की चिकित्सा देख सकते हैं।

आक्रमण अवस्था की चिकित्सा :—

रुविनी का कैम्फर। यह कलेरा की शुरू हालत मे एक निहायत ही फायदेमन्द दवा है। इस के दो तीन बुन्द थोड़ा सा साफ चिनी, मिश्री या बातासा में डाल कर हरेक दस्त व कै के बाद देने से अक्सर फायदा होता है। इसके ४-५ खुराक देने से भी फायदा न मालूम हो तो लक्षणानुसार दवा तजबीज करना चाहिए। रुविनी का कैम्फर के बदले हमारी बनी हुई **"कलेरो- डायरिन"** इस बिमारी की एक अचूक दवा है। खाने की व्यवस्था रुविनी कैम्फर की तरह।

कैम्फर ३-६-३०—दस्त व कै न हो कर ही एकदम बदन ठन्ढा व नीला होकर रोगी के जीवन का खौफ होने से कैम्फर सब से अच्छा है। इस हालत में **कैम्फर मादरटींचर** बदन में मलना भी चाहिए।

निम्नलिखित लक्षणादि वर्त्तमान रहने से कैम्फर दिया जाता है।—पानी वा भिगा भात के पानी की तरह दस्त व कै। दस्त व कै शुरू होने के साथ २ ही रोगी का निढाल हो जाना, चेहरे पर चटचटा पसीना, नाक ठन्ढा व सिकुड़ा हुआ, देह ठन्ढा लेकिन भीतर बहुत ज्वाला, बदन पर कपड़ा नहीं रखना चाहता है, दस्त से कै ज्यादा होने से और जल्द हिमांगावस्था आ जाने से कैम्फर न देकर आर्सेनिक, कार्बो-भेज या हाइड्रोसायनिक एसिड लक्षणानुसार देना चाहिए।

चायना ३-६-३०—खाना हजम न होने के कारण पीला या सफेद रङ्ग का दस्त, दस्त में फेन, अथवा अनपच चीज रहना, पेट बोलना, पेट फूलना, हवा छुटना, ज्यादा फल खाने के वजह से दस्त होना।

एकोनाइट 1x-3x ३—घुला हुआ तरबुज के पानी की तरह दस्त, पेट में सख्त दर्द, पित्त मिला हुआ पानी की तरह या सब्ज - सिवार की तरह दस्त, खून का दस्त, लाल रङ्ग पेशाब, ज्यादा बेचैनी, प्यास, घबड़ाहट, मौत का डर, नाड़ी तेज, ठंढ लग कर या ज्यादा गरमी के बाद हैजा होनेसे, खून का दस्त व कै होने वाला कलेरा में और ज्वर वाला

कलेरा मे (अर्थात बदन गरम किन्तु गोर-हाथ-चेहरा ठण्ढा व नाड़ी लोप होने से) एकोनाइट फायदेमन्द है।

भेरेट्रम-एलबम ६-३०—चावल धोअन की तरह दस्त; पित्त मिला हुआ दस्त, कभी २ ज्यादा बदबूदार दस्त, दस्त व कै का बहुत ज्यादा २ होना, चेहरा व गोर-हाथ ठण्ढा, चेहरा नीला पेट मे सख्त दर्द, कपाल में ज्यादा ठण्ढा पसीना। हैजा के शुरू में सर्व्वांगं नीला होना, स्वांस कष्ट. नाड़ी सुस्त छाती मे बोझ, रोगी निढाल होने से भेरेट्रम सर्वोत्तम है।

पलसेटिला ६-३०—ज्यादा तेल, घी या चर्वीदार चीजे खाने के कारण दस्त, कोदवा होने के बाद दस्त, रात को ज्यादा दस्त; दस्त पहले सब्ज, पीछे बलगम या आंव मिला हुआ होने से, घुला हुआ अन्डे की तरह दस्त होने से, जीभ सफेद लेपदार, ठन्ढी मालूम होना लेकिन खुली हवा मे रहना चाहता है; प्यास न रहना।

नक्स-भोमिका ६-३०—ज्यादा शराब पीना, रात जागना; ज्यादा मसालेदार चीज खाना इत्यादि से दस्त शुरू होने से; पित्त मिला हुआ बदबूदार दस्त होने से।

आर्सेनिक ३०-२००—ज्यादा फलमूल वा बरफ खाने से पीड़ा; पेट में ज्वाला, ज्यादा प्यास लेकिन थोड़ा २ पानी पीना; बेचैनी घबराहट मौत की डर; आधी रात को बिमारी की बढ़ना, हैजा फैलने के समय हमेशा बिमारी की खौफ होने से आर्सेनिक देना चाहिये।

फसफोरस ६-३० वा **फसफोरिक-एसिड** ६-३० पुराने दस्त की बिमारी की हालत में हैजा होने से फायदेमन्द है। तलपेट गरम, तलपेट के अन्दर ठन्ढी मालूम होना, मलद्वार हमेशा खुला रहना; पानी पीने के थोड़ा देर वाद कै हो जाना, सफेद दस्त होना, आहार के वाद ही रोग का बढ़ना इत्यादि लक्षण में **फसफोरस** फायदेमन्द है ज्यादा सहवास के वाद बिमारी शुरू होने से **फसफोरिक-एसिड** उपयोगी है मल का रंग छांई की तरह, जीभ चटचटा मैलेदार. पेट फूलना व बोलना इत्यादि लक्षण में फसफोरिक-एसिड फायदेमन्द है।

कलोसिन्थ ६-३०- क्रोध के कारण बिमारी होने से पैखाना पतला व आंवदार, पीछे पित्त मिला हुआ व आखिरकार खून मिला हुआ होने से, दस्त फेनदार; पेट में शूल, जोर से दवाने से या दोहरा होने से शूल की कमी होने से।

कैमोमिला १२—क्रोध के कारण बिमारी होने से; दस्त पतला वा सड़े अण्डे की तरह बदबूदार, दांत निकलने के समय की पीड़ा।

बेलडोना ३-६-३०—आग या धूप की गरमी से पीड़ा, खास कर खूनी दस्त व पेट फूला रहने से दी जाती है।

कार्बो-भेज ३०-२००—यदि रक्तस्राव के साथ हैजा शुरू हो, ज्यादा लाली रंग का दस्त हो, पेट फूला हो, तब

कार्वो-भेज अच्छा काम करता है। तमाम बदन ठंढा, ऐसा कि स्वांस तक ठंढा होने से कार्वो-भेज देना चाहिये। मखन, वरफ-जल, कुल्फो, सड़ा या नमक मे रखा हुआ मछली या मांस, बासी तरकारी वगैरह खाने से बिमारी होने से कार्वो-भेज दिया जाता है।

इपिकाक ६-३०—हमेशा ज्यादा जी मिचलाना, कै होने से भी उसकी कमी न होना, पेट मे मड़ोड़, पिठा या मांस खाने से दस्त, दस्त आंवदार, खून मिला हुआ, फेनदार, सब्ज, पीसा हुआ घास की तरह।

रिसिनस ३-६—बहुत परिमाण से पानी की तरह व बिना दर्द के दस्त व कै होने से यह फायदा करता है।

कैन्थारिस ६-३०—ज्यादा दस्त के साथ मलद्वार में ज्वाला हमेशा पेशाब का वेग लेकिन पेशाब न होना।

आइरिस ३-६—ज्यादा पित्त मिला हुआ दस्त व कै; दस्त व कै में अनपच चीज निकलना, मलद्वार से मुह तक, तमाम अन्न नली मे जलजाने की तरह लहर होना, पेशाब के वक्त भी ज्वाला होना, जीभ वरफ की तरह ठंढी, ऐंठन; खट्टा या पित्त का कै से गला जल जाना, ज्यादा लार निकलना, शुरू से ही कमजोरी व बदन ठंढा

पडोफाइलम ६-३०—दूध व खट्टा फल खाने से दस्त, दस्त पतला व बिना दर्द के होता है; दस्त व कै गरम-

सूखी मतली, कांच निकलना, पेट खूब बोलना, दस्त के समय हवा छूटना, दस्त के वाद कमजोरी।

जरूरत हो तो दस्त की विमारी की चिकित्सा देखिये।

पूर्ण विकाश और कोलैप्स वा हिमांग अवस्था की चिकित्सा।—

एकोनाइट ३-६-३०—यह कलेरा का एक प्रधान औषधि है कलेरा की सर्व्व प्रथम अवस्था और कोलैप्स अवस्था दोनो में ही यह फलप्रद है। यदि यह बिमारी सूखी, ठंढी हवा लगने से, पसीना ठंढी हवा लग कर अकस्मात रुक जाने से, डर से या फल खाने से उत्पन्न हो तो एकोनाइट दिया जाता है। मल पतला, पानी की तरह, हरा या काला, पेचीश की तरह, खूनी और लसलसा, बहुत जल्दी २ थोड़ा २ मल त्याग होता है, पेट में दर्द।

तेज प्यास, वार २ अधिक परिमाण पानी पीना, शरीर में ज्वाला, अत्यन्त वेचैनी, मृत्युभय, व्याकुलता इत्यादि इसके प्रकृति-गत लक्षण हैं।

अकस्मात अत्यन्त ठंढा पसीना होकर, कोलैप्स होने से एकोनाइट, कैम्फर के सदृश ही उपकारी होता है। इस हालत में रोगी का चेहरा नीलापन, होठ फीका, हाथ पांव ठंढा और नाखुन नीला हो जाता है।

ऐन्टिमोनियम-टार्ट ६-३०—एकदम निढाल हालत, ठन्ढा पसीना, नाड़ी पतली हमेशा बमनेच्छा, बमन करने के लिये अत्यन्त जोर लगाना होता है। रोगी अत्यन्त चिरचिराहा हरा, पतला, फेनदार बलगम या खाद्य द्रव्य का बमन, कै के बाद दुर्बलता, शीत वो निद्रा उपस्थित होता है।

आहार में अनिच्छा, ठन्ढा चीज का चाहना, चेहरा जर्द और धसा हुआ, आंख धुंधली हो जाना, ज्यादा ऊंघाई आना।

आर्सेनिक ३०-२००—बहुत जल्दी २ बहुत कमजोर हो जाना, अत्यन्त बेचैनी किन्तु कमजोरी के कारण करवट बदल नही सकता है। मृत्यु भय, घबड़ाहट, बार २ किन्तु अति अल्प२ पानी पीता है, पानी पीने से पेट मे तकलीफ मालूम होती है कभी २ पानी पीते ही बमन हो जाता है। खाद्य द्रव्य खाते ही बमन हो जाना। पेट में अत्यन्त दर्द और ज्वाला, मत्र उत्पन्न नहीं होना या रुका रहना। बदन में ठंढा पसीना किन्तु शरीर मे अत्यन्त ज्वाला, नाड़ी अत्यन्त सुस्त और जल्द, पैखाना काला और पतला, अत्यन्त दुर्गन्धी अथवा सब्ज, पतला आंव मिला हुआ मलद्वार में ज्वाला।

यदि बरफ वगैरह ठण्ढी चीज खाने से पीड़ा हो तो आर्सेनिक दिया जाता है। बिमारी का आधी रात में ज्यादा होना, गरम प्रयोग से आराम मालुम होना।

कैम्फर ३०-२०० —यह औषधि कलेरा मे अति उत्कृष्ट फलदायक है, खासकर बिमारी की प्रथम अवस्था मे।

डनहम साहब कहते हैं "कैम्फर मे कोलेप्स सबसे अधिक होता है भेरेट्रम में दस्त और कै अत्यन्त अधिक होता है। और कुप्रम में ऐंठन सबसे प्रधान लक्षण है।"

अकस्मात रोगी का अत्यन्त कमजोर हो जाना, अत्यन्त व्याकुलता, सारा बदन बरफ के समान ठण्ढा किन्तु शरीर में अत्यन्त ज्वाला। बदन पर कपड़ा न रख सकना। अत्यन्त प्यास या प्यास न होना, बेहोश की तरह आंख फाड़ कर ताकना। अकस्मात दस्त और वमन बन्द हो जाना इत्यादि इसका विशेष लक्षण है।

कलेरा मे कभी २ दस्त और वमन न होकर ही कोलाप्स हो जाता है। बदन मुर्दे के समान ठन्ढा हो जाता है। यह कलेरा सिका में उत्कृष्ट औषधि है।

कार्बो-भेज ३०-२००—यह हिमागावस्था वा कोलैप्स अवस्था में सर्व्व प्रधान औषधि है।

प्रकृतिगत लक्षण :—जब दस्त, कै ऐंठन सब बन्द हो जाय, रोगी बिलकुल अचेतन अवस्था मे पड़ा रहे; पेट फूला रहे, नाड़ी बिलकुल गुम हो जाय, शरीर बिलकुल ठण्ढा, श्वांस प्रश्वांस भी ठण्ढा हो जाय तो ऐसी हालत मे कार्बो-भेज महौषधि है। नाक, और अङ्गुलियां बरफ के समान ठण्ढा, हमेशा हवा करने को कहना, पेट फुला रहना;

चेहरा बिलकुल मुर्दे के समान हो जाना, होठ भी नीला हो जाना। आर्सेनिक के बाद कार्बो भेज के प्रयोग से उत्कृष्ट फललाभ होता है।

खून निकलने वाला कलेरा में खून में जलीय भाग ज्यादा रहने से, पेट फूला, दस्त और कै के साथ श्वासकष्ट, जांघ में ऐंठन इत्यादि लक्षण होने पर कार्बो भेज दिया जाता है।

कुप्रम-मेट व कुप्रम-एसेट ६-३०-२०० – यह औषधि खासकर शाखाओं में अत्यन्त अधिक ऐंठन होने पर दी जाती है।

स्वाभाविक लक्षण—चेहरा विकृत और नीलापन, आंख धसी हुई, तेज प्यास, पानी पीने के समय गलगल आवाज होती है, वमन नहीं होता है किन्तु सर्वदा वमन करने की चेष्टा होती है। पेट में अत्यन्त दर्द और ऐंठन होता है। रोगी कष्ट से चिल्लाता है. स्वांस कष्ट इतना अधिक होता है कि रोगी के नाक के पास रुमाल तक भी रखा नहीं जाता है। मूत्र की उत्पत्ति न होना या अत्यन्त अल्प होना। वमन के बाद बेहोशी से नींद पड़ जाना, बदन ठंढा और नीलापन, ठंढा पसीना, निहायत निढाल हालत।

इउरिमिया के साथ ऐंठन और हमेशा बरबराना वा डिलिरियम; कोलैप्स। मल पानी के समान और उस में भिल्ली के टुकड़े रहते है। मल अल्प २।

हाइड्रोसायेनिक-एसिड ६-३०—यह औषधि अत्यन्त कठिन हिमांगावस्था में हमलोगों का प्रधान सहायक है। वास्तव में यह अक्सर मृतप्राय शरीर में प्राण देता है। कलेरा की आखिर हालत में जब दस्त बन्द हो जाता है, कै भी कम हो जाता है, वो छाती मे बोझ के साथ अत्यन्त व्याकुलता वर्त्तमान रहता है रोगी का शरीर ठंढा हो जाता है, नाड़ी धीरे २ लोप होती हो तो यह औषधि दी जाती है। स्वांस कष्ट, खींचकर स्वांस लेना इस दवे का प्रधान लक्षण है।

प्रकृतिगत लक्षण—बेहोशी, आंख निकल और आधी खुली, निहायत कमजोरी, प्यास अत्यन्त अधिक, या नहीं होना, पानी का गच २ शब्द करके पेट मे जाना, मृगी रोग की तरह लक्षण, काला, पतला कै होना, पेट मे अत्यन्त दर्द, पेशाब रुक जाना, इउरिमिया से दम फूल जाना, ऐंठन के साथ अत्यन्त जोर से खीचकर स्वांस लेना, छाती पर अत्यन्त बोझ मालूम होना, नाड़ी करीब गुम हो जाना। मन बेहोशी से निकल जाना, मल पानी के समान या सब्ज या जल के साथ रक्तस्राव, हिचकी।

आइरिस-भर्स ६x ६—यह दवा इङ्गलिश कलेरा या कलेरा मरबस के लिए अच्छा है। यदि एशियाटिक कलेरा में चावल के धोअन की तरह दस्त ऐंठन इत्यादि लक्षण रहे तो भी दिया जाता है।

प्रकृतिगत लक्षण-छाती में ज्वाला, जी मिचलाना, खट्टा पानी, खाद्य द्रव्य या मीठा पानी का कै होना, बच्चों से दूध खट्टा हो कर निकल जाना, पीला या पित्त का कै होना। मुंह से मलद्वार तक तमाम हाजमे की नली में ज्वाला, कै करने के लिए अत्यन्त चेष्टा, कै इतना खट्टा होता है कि उस से गले मे जखम हो जाता है। मल पानी ऐसा ; बदन ठण्ढा ।

फसफोरस ६x-६-३०—पानी के सदृश दस्त; मल में सफेद म्युकस या साबूदाने की तरह दिखाई पड़ती है। गुह्यद्वार हमेशा खुला रहता है; और उसमे से सर्वदा मल निकलता रहता है। अत्यन्त प्यास किन्तु जलपान करने के थोड़े ही समय के बाद उस का कै हो जाना ।

रिसिनस ६x-६-३० अत्यन्त निस्तेजक; चेहरे पर मुर्दनी; चर्म्म ठन्ढा और सिकुड़ा हुआ; ऊंघाई आना बेहोशी, सिर चकराना; कान मे भन २ शब्द होना, कोलैप्स; ज्वाला के साथ प्यास; जी मिचलाना, चावल धोअन सा या पित्त का कै होना, पेट मे ऐठन, मूत्र उत्पन्न न होना, अजीर्ण रोग से धीरे २ कलेरा के लक्षणों का प्रकाश पाना। मल चावल के धोअन ऐसा; पित्त मिला हुआ म्युकस या लसा-दार और खूनी ।

सिकेलि ६,३०-२००—यह हिमांगावस्था की एक उत्कृष्ट औषधि है। ऐंठनवाले कलेरा मे क्रुप्रम से फायदा न

हो तो सिकेलि देने से फायदा हो सकता है। सिकेलि के ऐंठन में अंगुलियां परस्पर अलग हो कर पीछे के तर्फ झुक जाती हैं। वदन एकदम ठण्ढा किन्तु देह मे अत्यन्त ज्वाला; वदन पर कपड़ा नही रख सकता है। अत्यन्त प्यास नाड़ी अत्यन्त दुर्वल, कठिनाई से जान पड़ता है। हाथ और पैर का चमड़ा सिकुड़ जाना। अत्यन्त भूख लगना, हिचकी। यदि कलेरा की आक्रमण अवस्था मे ऋतु जारी हो तो सिकेली अवश्य देना चाहिये।

भेरेट्रम-अल्बम ६·१२-३०-२००—भेरेट्रम कलेरा की एक मुख्य औषधि है।

प्राकृतिक लक्षण—अत्यन्त अधिक दस्त और कै होना। अत्यन्त ठन्ढा पसीना होना, खास कर ललाट मे, पेट में शूल दर्द, विना दर्द के दस्त मे भेरेट्रम कदाचित् प्रयोग होता है। मृत्युभय के ऐसा उदास भाव, शिर चकराना, पैर में ऐंठन होना; मल पानी के सदृश, गन्धहीन वो बहुत परिमाण से होना; चेहरा वेरौनक या नीलो, जीभ और स्वांस प्रस्वास ठण्ढा, आवाज बैठ जाना; स्वांसकष्ट, पेशाव रुक जाना। कोलैपस, समस्त शरीर ठण्ढा, वेहोशी।

जैट्रोफा ६x—इस दवा में दस्त कम होता है, किन्तु कै अधिक होता है। अण्डे की सफेदी की तरह कै होना इस दवे की प्रकृतिगत लक्षण है। मल पानी सदृश; अत्यन्त जोर से

निकलता है, पेट मे गड़गड़ शब्द होता है। पैर में ऐंठन पेट मे ज्वाला और दर्द। यह दवा कलरिक डायरिआ में अधिकतर प्रयोग होता है।

क्रोटन टिग ६x-६—यद्यपि यह प्रकृत कलेरी की औषधि नहीं है तथापि इस दवे के सामयिक प्रयोग से बहुत उपकार होता है। मल पीला, पतला, पिचकारी की तरह जोर से निकलता है, थोड़ा सा खाने पीने के बाद ही पीड़ा का चढ़ जाना इत्यादि इसके प्राकृतिक लक्षण हैं।

इपिकाक ६-३०—हर हालत ही मे हमेशा जी मिचलाना और कै होना इस दवे का प्रकृतिगत लक्षण है। मल हरा और फेना फेना, पेट में दर्द, पेचीश की तरह खून मिला हुआ; म्युकस मिला हुआ मल।

पोडोफाइलम ६-३०-२००—बिना दर्द के प्राणनाशक विसूचिका में बहुत परिमाण और पिचकारी के सदृश जोर से गरम दस्त होना इस दवाई का प्रकृतिगत लक्षण है। बच्चा की पीड़ा मे यह दवा नितान्त उपकारी।

टेबेकम ६-३०—दस्त बन्द हो जाय, किन्तु कै और जी मिचलाना सर्व्वदा रहे, यह इस दवे का प्रकृतिगत लक्षण है।

निकोटिन ३-६—भी उपरोक्त लक्षण पर दिया जाता है।

लैकेसिस ६-३०-२००-जो हैजा का रोगी अचानक निढाल हो कर बेहोश हो जाता है और बेखबरी से दस्त व कै होता

रहता है उसमें विशेष फलदायक है। निम्नलिखित लक्षण पर भी यह दवा इस्तमाल होती है।—पूरी वेहोशी, लगातार वरबराना, नाड़ी सुस्त या गुम हुई, स्वांसकष्ट, छाती कसी हुई मालूम होना, दिल धड़कना, ऊपर वाला पेट में ऐसा दर्द, कि उसपर कपड़ा तक वर्दास्त नहीं होता है, पेट में ज्वाला, पानी की तरह वा खून मिला हुआ वदवूदार दस्त, मलद्वार मे ज्वाला, ठन्ढी पसीना, जाड़ा के कारण गरमी मांगता है। नींद के वाद वो वायां करवट लेटने से तकलीफ का वढ़ना, शराव पीने के कारण कलेरा होना, वसन्त काल के कलेरा में यह उपयोगी है।

क्रोटेलेस ६-३०—मल के साथ पतला खून निकलने से वा दांत के मसुढ़े से खून गिरने से यह दवा फायदेमन्द है। निम्नलिखित लक्षण पर भी यह व्यवहार होती है।—वेखवरी से पतला व काला सा खून का दस्त, सख्त ऐंठन, सर्व्वांग, ठन्डा, आख व चेहरा धस जाना, चेहरा नीला हो जाना, स्वांसकष्ट, नाड़ी करीव-गुम हुई, मूत्रवन्द; उसके वाद वुखार वा मृत्युलक्षण।

मेरेट्रम-भिर १x—हिमांगावस्था में शरीर का कांपना व ऐंठना, दिल की हरकत व स्वांस वन्द होने की करीना।

सहकारी उपाय—जव अत्यन्त स्वांस-कष्ट व अचानक दिल का वन्द होनेकी करीना होती है या जव सख्त ऐंठन के कारण मौत की करीना होती है तव माष्टार्ड पुलटीश

(Mastard poltice) लगोने से फायदा हो सकता है। ज्यादा ठंढा पसीना होते रहने से इंट का सफुफ कपड़ा मे लेकर पुटरी बांध कर गरम कर सेंक देने से फ़ायदा होता है।

हैजा की प्रतिक्रियावस्था की चिकित्सा—

हिमांगावस्था दूर हो कर नाड़ी की गति स्वामाविक होना, स्वांस की तकलीफ न रहना, चेहरे पर रौनक आना, पित्तयुक्त दस्त होना, के न होना, पेशाब होना इत्यादि स्वाभाविक प्रतिक्रिया का लक्षण है; इस हालत में चिकित्सा की जरूरत नहीं है। लेकिन प्रतिक्रिया ठीक तरह से न होने से जैसी २ शिकायत होगी उसके मुताबिक चिकित्सा की जरूरत होती है। दोबारा हैजा का आक्रमण होने से हैजा की पूर्ण विकाश अवस्था की चिकित्सा देखो। दूसरी २ तकलीफों की चिकित्सा नीचे देखिये।

मूत्रस्तम्भ व मूत्रनाश।

बाज रोगी में प्रतिक्रियावस्था में भी पेशाब नहीं होता है। मूत्रस्थली में पेशाब सञ्चित होकर किसी बाधा के कारण पेशाब न निकल सकने से मूत्रस्तम्भ होता है; और मूत्रपिण्ड वा किडनी में पेशाब पैदा न होने से उसको मूत्रनाश कहते हैं। मूत्रस्तम्भ होने से तलपेट फूल जाता है, इस हालत में तलपेट में आघात करने से ढब ढब आवाज होती है। मूत्रनाश होने से तलपेट नहीं फूलता है।

हैजा की चिकित्सा होमियोपैथिक मत से हुई है तो पूर्ण-विकाश अवस्था में जिस दवे के इस्तेमाल से प्रतिक्रियावस्था आई है उसी दवे को एक दो खोराक दोबारा देने से अक्सर पेशाव हो जाता है। उससे पेशाव न हो तो निम्नलिखित दवायें लक्षणानुसार प्रयोग की जाती हैं :—

कैन्थारिस ३-३०—तलपेट में बोझ मालूम होना, बार २ पेशाव का वेग होना, लेकिन पेशाव न होना। ऐसा कि मूत्रविकार जनित खराबी में ऐंठन इत्यादि होने पर भी यह फायदेमन्द होती है।

टेरीबिन्थ ६-३०—कैन्थारिस से फायदा न हो तो, खास कर मूत्रबन्द रहने के साथ पेट फूला रहने से यह फायदा देता है।

केलि-ब्राइक्रम ६x सफूफ — टेरिबिन्थ वा कैन्थारिस के ३-४ खुराक व्यवहार से भी पेशाब न हो तो देना चाहिये।

स्पिरिट-इथर-नाइट्रेट—ऊपर लिखित किसी दवा से फायदा न हो तो इस दवे के पांच २ बुन्द पानी में मिला कर दस-पन्द्रह मिन्ट फासले पर देना चहिये।

सहकारी-चिकित्सा—बोतल में गरम पानी ले कर उससे किडनी की जगह और मुत्रस्थली की जगह पर सेंक देने से पेशाब होता है। गरम पानी के साथ फ्लानेल से

सेंक देने से भी पेशाव होता है। नौसादर को पानी में घोल कर उस से कपड़ा भिगा कर तलपेट में पट्टी देने से भी पेशाव होता है। नौसादर को जल कुम्भी के रस में घोल लेने से और भी ज्यादा फायदा होता है। एक कटोरा में बर्फ लेकर उस कटोरे को तलपेट पर रखने से भी पेशाव हो सक्ता है। ये सब व्यर्थ हो तो कैथिटर लगाना चाहिये।

मूत्रविकार वा इउरिमिया।

(URÆMIA)

यदि पूर्वोक्त दवायों के इस्तमाल से भी पेशाव न हो और उससे दिमाग में खराबी पहुँचे तो मूत्रविकार हो गया समझना चाहिए। मूत्र न होने के कारण दिमाग की खराबी को ही मूत्रविकार वा इउरिमिया कहते हैं। यह बड़ी भयानक हालत है—अच्छी चिकित्सा न होने से जीवन की आशा कम रहती है। इउरिमिया होने से बेहोशी हो जाती है—अटपट बोलना, बेहोशी से नींदमें पड़ा रहना या नींद बिलकुल न होना इत्यादि बहुत सा टाइफाइड-लक्षण आ जाता है। इस हालत में नीचे लिखी हुई दवायें फायदे मन्द हैं।

बेलेडोना ६-३०—सिर में खुन की ज्यादती; आख

व चेहरा लाल, पुरपूरी का रङ्ग धकधकाना; तेज विकार, सिर गरम, हाथ पांव ठन्ढा।

हायोसायमस ६-३०—पूरी बेहोशी, बरबराना, बिछावन खोंटना, भागने की कोशिश करना, बेहोशी से पैखाना व पेशाब होना।

ष्ट्रामोनियम ६-३०-पागल की तरह बकबकाना; तेज विकार; मारता है, भागता है।

ओपिअम ६-३०—पूरी बेहोशी किसी तरह से रोगी को होश में नहीं लाया जाता है। दिमाग में खुन की ज्यादती, चेहरा फूला २ व बैगनी रङ्ग, आंख आधी खुली हुई, खर्राटेदार स्वांस।

केनाबिस-इण्डिका ३x-६—ज्यादा ऊंघाई, बरबराना जननेन्द्रिय को खमोटना, रोगी के हाथ पांव को जिस भाव में रक्खा जाता है वे नहीं रहता है।

सिकुटा ६-३०—ऊंघाई, टक टकी लगा कर ताकना; गर्दन में वदन पीछे की ओर टेढ़ा हो जाना।

कुप्रम ६-३० सख्त ऐंठन होने से यह दवा दी जाती है।

कार्बोलिक-एसिड ६- बेचैनी कुंथना, जोर से स्वांस खींचना, गोंद की हालत में परवाने के साथ उठकर बैठना, कै, दर्द, दस्त, प्यास इत्यादि दिखायन।

एगारिकस-मस्केरिअस ६-३०—इउरिमिया जनित टाइफाइड अवस्था में जब नाड़ी गुम हो अथवा अत्यन्त सुस्त हो जाय; बदनठन्डा हो जाय और मूढ़ुविकार ।

मस्कोरिन—भी एगारिकस की तरह लक्षण पर दिया जाता है।

मूत्रविकार हैजा का भयानक लक्षण है। मूत्रत्याग होने ही से प्रायः विकार दूर हो जाता है। लेकिन पेशाब काफी हो जाने पर भी अगर विकार लक्षण दूर न हो तो समझना चाहिये कि यह पेशाब खून का जलीय भाग मात्र है—इसमें पेशाब के असली मैल नहीं हैं।

हृतपिण्ड में खून का ढेला जमा होना व निढाल हालत।

प्रतिक्रिया आरम्भ होने के बाद कभी २ दिल के दाहिने खाना में खून का ढेला जम कर स्वांस कष्ट शरीर नीला हो जाना, मूर्च्छा होना, नाड़ी गुम होना इत्यादि लक्षण देखा जाता है वह रोगी जल्द-ही मर जाता है।

नैजा वा कोब्रा ६-३०—यह इस तकलीफ के लिये उम्दा दवा है। दिल धड़कना, नाड़ी बेकैदे, दिल बन्द होने का करीना, दिल में शूल, स्वांस कष्ट।

केलकेरिया-आर्स ६—ट्रीटुरेशन—दिलकी जगह मे बिजली चमकने की तरह दर्द, उसमे ज्वाला, उस दर्द का हाथ पांव मे फैलना; दिल धड़कना, श्वांसवन्द होने से करीना।

लैकेसिस—दिल धड़कना, दिल कसा हुआ मालुम पड़ना, दम नीला, मूर्छा।

क्रोटेलस ६ दिल की चाल कमजोर, नाड़ी कापनेवाली व करीव गुम। दिल मे दर्द शिराओं का फूलना।

जीवनी शक्ति की निस्तेज अवस्था में—चायना, कार्बो भेज, लैकेसिस उपयोगी है।

अनिद्रा के लिये—वेल, कफिया, हाइयोसायमस।

आंख मे जखम केलकेरिया, हिपर, पल्स, सल्फर।

मुंह में खराव जखम-आर्स, साइलिशिया, सल्फ।

नई जवर होना—आर्स, कार्बो-भेज, लैकेसिस।

हिचकी (HICCOUGH)

कठिन या अवस्था मे हिचकी वडी सख्त तकलीफ है—हिचकी तेज होने से रोगी निढाल हो जाता है—नाड़ी गुम्म हो जाती है व मौत की करीना होती है।

वेलेडोना ६-३०—जल्द २ तेज हिचकी, हिचकी के जोर से रोगी उछल पड़ता है, कान वन्द हो जाता है; रात को

हिचकी के साथ पसीना, हिचकी के बाद ऐंठन, मतली व कमजोरी। हिचकी के कारण सिर, गर्दन, हाथ पांव टेढ़ा हो जाता है; विकार।

सिकुटा ६-३०—तेज आवाजके साथ खतरनाक हिचकी; झटके के साथ सिर व गर्दन पीछे के तरफ टेढ़ा होजाता है। ऊंघाई, आंख चढ़ जाना, कृमी के कारण हिचकी।

कार्बो-भेज ३०—जरासा हिलने से हिचकी, पंखाकी खाहीश खाने पीने से हिचकी। पेट फूलना।

हायोसायमस ६-३०-हिचकी के साथ बेखबरी से पेशाब होना, मुंह में फेन, हिचकी के साथ पेट में ऐंठन व पेट बोलना, बेहोशी बिछावन खसोटना, ऐंठन।

इग्नेशिया ३०-२००—खाने पीने से हिचकी ज्यादा होना, तमाम बदन कांपता है। मानसिक उत्तेजना से हिचकी।

पल्सेटिला ६-३०—हिचकी के साथ दम फूलना, नींद के साथ या कुछ पीने से हिचकी, प्यास न होना, तेल, घी, चर्बी की चीज खाने से हिचकी।

फसफोरस ६-३०—भोजन के बाद तेज हिचकी, बिना कारण से हिचकी, बायें करवट लेटने से हिचकी बढ़ती है।

चायना ६ ३०—हिचकी के साथ खट्टा ढेकार, पेट फूलना।

कुप्रम ऐसेट ३—जल्द २ तेज हिचकी, ज़ोर आवाज के

साथ हिचकी, ऐंठन के साथ हिजकी । यह व्यर्थ होने से हिचकी के साथ ऐंठन में **मिकोनि** देना चाहिये ।

नक्स ६-३०-भोजन के कवल हिचकी लेकिन भोजन करते ही हिचकी कम हो जाती है। पेट की खराबी से खट्टा ढेकार व हिचकी कम हो जाती है। जल पीने से हिचकी कम होना ।

लाइकोपोडियम ३०-२००—हिचकी के साथ जीभ निकल पड़ती और फिर भीतर चली जाती है, नाक के पुरे का श्वांस के साथ फड़कना ।

सिना ३०-२००—कृमी का लक्षण रहने से दिया जाता है।

एथैकसेग्रिया ३०—वार २ हिचकी के साथ जी मिचलाना उसके साथ मूर्छाभाव व जड़ता भाव ।

केलि-ब्रोमेटम १X विचूर्ण—लगातार हिचकी किसी तरह से बन्द नहीं होता है। रोगी लगातार हाथ हिलाते रहता है, अनिद्रा अथवा ऊंघाई आना ।

आनुसंगिक चिकित्सा—सिरमें बरफ व ठंढा पानी की पट्टी लगाने से कभी २ हिचकी बन्द हो जाती है। ठण्ढा पानी, हरा नारियल का पानी, खिचा, ताड़ का कोया का पानी, बरफ इत्यादि खाने से भी हिचकी बन्द हो जाना है। जीभ को खींच कर मुंह मे बाहर रख देने से भी कभी २ हिचकी बन्द हो जाता है। सूई के नोक पर गोल मिर्चा लगाकर उस को जलाकर उसके धुआं का स्वांस लेने से अथवा फली

भिंगाके उसकी पानी पीने से भी फायदा होता है। इससे भी हिचकी बन्द न हो तो मेदा पर "माष्टार्ड प्लाष्टार" लगाना अथवा बीस-तीस—मिन्ट अन्तर ५ बून्द करके क्लोरोफर्म थोड़ा सा पानी में मिला कर पीना अथवा "मरफिया का हाइपोडारमिक इजेकशन देना चाहिये।

कलेरा में पेट फूलना

पेट में हवा होने से पेट फूल जाता है और उससे स्वांस कष्ट उपस्थित होता है।

एसाफिटिडा ६-३०—पेट फूलना. पेट में दर्द, दस्त मल बदबूदार, आवाज के साथ ढेकार आना।

चायना ६-३०—पेट हवा से भरा हुआ, पेट में गड़गड़ाहट अनपच दस्त, कमजोरी, ढेकार आने से आराम बोध।

कार्बो—भेज ६-३०-२००—पेट फूलने के साथ बदबूदार दस्त रहने से कार्बो-भेज फायदेमन्द है।

लाइकोपोडिय ३०-२००—पेट फूलने के साथ कब्ज रहने से कार्बो-भेज फायदेमन्द है।

नक्स-भोमिका ६-३०—पेट फूलने के साथ कब्ज या दस्त रहने से उपकारी है।

नक्स मस्केटा ६-३०—पेट फूलना, पेट में गड़गड़ाहट, रोगी नींद मे अचेतन, स्वांसकष्ट ।

मार्कुरिअस ६-३०—यकृत से पित्त न निकलने के वजह से पेट फूलना व मुह मे बदबू ।

ओपिअम ३०-२००-पेट अफड़ने के कारण स्वांस-कष्ट उपस्थित होने से अति उत्तम है ।

टेरेविन्थ ३-६—पेट अफड़ा हुआ, पेशाव बन्द, पेशाव के समय ज्वाला ।

आनुसंगिक चिकित्सा—तलपेट पर ठण्ढा पानी की पट्टी देने से अथवा साबुन के पानी से कपड़ा भींगा कर पट्टी देने से अथवा तलपेट पर चंद कतरा तारपीन तेल मल देने से अथवा पेट में पानी व तेल मिला कर देने से पेट अफड़ना कम हो जा सकता है। पेट अफड़ा रहने से रोगी को चिनी खाने को हरगिज न देना चाहिये। यदि पेट में कठिन मल रहे तो ग्लिसारिन वा सुसुम साबुन के पानी में चन्द बून्द तारपीन मिला कर पिचकारी देने से मल निकल कर पेट फूलना कम हो जाता है ।

कलेरा में स्वांसकष्ट ।

कैल्केरिया-आर्स ३x-३०—अचानक स्वांसकष्ट उपस्थित हो कर रोगी के प्राण नाश की करीना होना ।

चायना ३x-३०—कैल्केरिया-आर्स से फायदा न होने से दिया जाता है ।

फलतः स्वांसकष्ट शुरू होने से पहले कैल्केरिया-आर्स, और यह फायदा न करने से कार्बोवेज (?) देना चाहिए—चायना मे भी फायदा न हो तो निम्नलिखित दवायें देनी चाहिए।

एण्टिम-टार्ट ३०-२००—स्वांस बहुत जल्द, स्वांस मे घड़घड़ाहट, फेफड़े का फालिज होने की करीनो, बहुत ऊंघाई।

एपिस ६-३०—दम अटक जाना, स्वांस जल्द, बेहोशी, स्वांस मे इतनी तकलीफ कि रोगी को बोध होता है यही आखरी स्वांस है।

आर्सेनिक ३०-२००—खींच २ कर स्वांस लेना, उससे सिर झुकता रहना।

फसफोरस ६x-३०—जल्द २ स्वांस, छाती में चांप मालूम होना, पंखा की खाहीश।

कार्बो-भेज ३०-२००—स्वांस मे सख्त तकलीफ, स्वांस ठंढा, रोगी सर्वदा पंखा की हवा मांगता है, पेट अफड़ने से स्वांसकष्ट।

हाइड्रोसायनिक-एसिड ६-३०—आवाज के साथ स्वांसकष्ट फेफड़े का फालिज। छाती मे धड़कन।

ओपिअम ३०-२००—खर्राटेदार स्वांसकष्ट, चेहरा नीला, आंख आधी खुली हुई।

डिजिटेलिस १x-६—स्वांसकष्ट, स्वांस बेकायदे, नाड़ी निहायत सुस्त व बेकायदे। जरा सा हरकत करने ही से दिल धड़कता है और नाड़ी तेज चलती है।

कलेरा में ज्वर व ज्वर-विकार।

किसी कारण से हो प्रतिक्रियावस्था में कमी २ सामान्य प्रकार का बुखार होता है और प्रायः विना चिकित्सा से ही आराम होता है अथवा आवश्यक होने से २-१ खुराक ऐकोनाइट ही से आराम हो जाता है। लेकिन हमेशा वैसा सामान्य बुखार नहीं होता है वल्कि ज्वर इन्टरमिन्टेट, रैमीटेन्ट वा टाइफाईड के प्रकार का हो जाता है, ऐसी हालत में समझना चाहिए कि दिमाग, फेफड़े वगैरह कोई शारीरिक यंत्र का प्रदाह हुआ है।

दिमाग आक्रान्त होने से वेलेडोना ३ वा ष्ट्रामोनियम ६ वा हायोसायमस ६ अथवा केलम्रोमेटम ३x चूर्ण, फेफड़े आक्रान्त होने से—ऐकोनाइट ३ अथवा ब्राइयोनिया ३० अथवा रसटक्स ६ अथवा फसफोरस ६x, पाकस्थली आक्रान्त होने से-रसटक्स ३० अथवा आर्सेनिक ३०, माकुरियस ३०, इपिकाक ३०, ब्लोमिन्थ ६, यकृत की खराबी से बुखार होने से—मार्क-साल ६-३०, पेशाव की खराबी से बुखार होने से—कैन्थारिस ६, कोई उपसर्ग न रहे तो रसटक्स ६ वा फसफोरिक एसिड ६ उपयोगी है।

मन्तव्य—जरूरत हो तो बुखार का इलाज देखिए।

आनुसंगिक चिकित्सा—दिमाग, छाती व तलपेट में आवश्यकतानुसार जल पट्टी देना चाहिए।

कलेरा का परवर्त्ती मतली व कै ।

इपिकाक ६ ३०—लगातार जी मिचलाना ।

नक्स-भोमिका ६ ३०—जी मिचलाने के साथ कै रहने से दिया जाता है ।

पोडोफाइलम ६-३०—उपरोक्त उभय दवा से फल न होने से हूल के साथ मतली में दिया जाता है ।

इउपेटोरियम-पार्फ ६-३०—ठन्ढा पानी पीने के बाद कै होने से उपयोगी ।

फसफोरस ६-३०—पानी पीने के कुछ देर के बाद कै होने से इससे फायदा होता है ।

कलेरा के बाद अतिसार ।

इस अवस्था में सामान्य प्रकार के अतिसार में कोई इलाज की जरूरत नहीं होती है । लेकिन जरूरत हो तो उदरामय वा दस्त के इलाज देखिए । साधारणत. निम्न-लिखित दवायें इस्तमाल होता है ।

चायना ६-३०—निहायत कमजोरी, हल्दी रङ्ग के दस्त, पेट फूलना व बोलना, आहार के बाद व रात को बिमारी की ज्यादती ।

पोडोफाइलम ६-३०—दस्त के साथ ज्यादा पित्त निकलने से वा पित्त न निकलने से दिया जाता है । दस्त पतला, बहुत जोर से होता है ।

फसफोरिक-एसिड ३० — निहायत कमजोरी, मिट्टी रङ्ग का दस्त, ज्यादा पेशाब होना, ऊंघाई।

उदरामय वा दस्त की बिमारी।

(DIARRHŒA)

बिना कांखे (कुंथे) वार २ पतला दस्त होने से उसको उदरामय कहते हैं।

उदरामय नया और पुराना दो प्रकार का होता है। एक दिन से एक सप्ताह तक दस्त होते रहने से उसको नया उदरामय कहते हैं। उससे ज्यादा दिन होने से प्राचीन उदरामय कहा जाता है। चन्द वर्षों का उदरामय बहुत रोगी में देखा जाता है। कभी २ प्राचीन उदरामय नाना कारण से तरुण अवस्था धारण करता है। उदरामय कभी २ अन्यान्य नाना प्रकार पीड़ाओं की सहकारी पीड़ा के भाव से पाया जाता है। जैसे टाइफाइड बुखार के साथ उदरामय।

कारण—साधारणतः निम्नलिखित कारणों से उदरामय की उत्पत्ति होती है (१) गुरुपाक द्रव्य भोजन से, खराब जल पीने से, गरम औषधादि सेवन से, और मद्यपान इत्यादि से। (२) गर्म्म शरीर में शीतल जल या बर्फ पीने से या

ठन्डी हवा से एकाएक पसीना रुक जाने से या शरीर का चर्म्मोद्भेद दब जाने से। (३) अतिरिक्त गर्म्म या शीत भोग करने से। (४) ज्यादा परिश्रम, मानसिक थकावट, अनाहार, शोक, भय इत्यादि से। (५) शिशुओं को दांत निकलने के वजह से। (६) मैलेरिया विषसे, दूषित हवा से इत्यादि।

उदरामय की चिकित्सा—

एब्रोटेनम ६-३०—पुराना उदरामय का अचानक बन्द होने से वात रोग उपस्थित होता है। अनपच चीज मल के साथ निकलती है। अदल बदल कर दस्त और कब्ज।

एसेटिक-एसिड ६-३०—यक्ष्मा-रोगी का उदरामय, मल पतली, अत्यन्त प्यास और अत्यन्त मूत्रातिसार, चेहरा और शरीर का चर्म्म मोम की तरह सफेद, अत्यन्त दुर्बलता पैर में शोथ।

इथुजा ३-६—बच्चों के दांत निकलने का समय उदरामय, बच्चा दूध पचा नहीं सकता है। दूध पीने से दही बनकर कै हो जाता है। मल पीला या सब्ज, पतला दही की तरह।

एकोनाइट ६-३०—पसीना रुक जाने से, भय या क्रोध के हेतु, ठन्डी सूखी हवा लगने से पीड़ा हो। मल पानी की तरह या गाढ़ा पित्त के साथ मल, मलत्याग के पहले पेट में दर्द, अस्थिरता; व्याकुलता, अत्यन्त प्यास।

एलोज ३०-२००—मल हलदी रङ्ग के पतला पानी की तरह,

बहुत परिमाण, मलद्वार के प्रति विश्वास नहीं किया जाता है. पैखाने का वेग होनें से ही दौड़ के पैखाना में जाना पड़ता है. न तो कपड़ा में ही पैखाना हो जाता है, हवा छुटने के साथ मल निकल पड़े (ओलिएण्डर), पेट में दर्द और गड़२ आवाज।

एलुमिना ३०·२००—कब्ज और दस्त अदल बदल कर आता है पतला मल होने पर भी बहुत कुंथना पड़ता है। रोगी खड़ीमिट्टी, कोयला, चूणा इत्यादि अखाद्य वस्तु खाता है।

एमन-म्युर ३०—उदर को थाइसिस पीड़ा में उदरामय, निर्लज्जता।

एण्टिम क्रूड ६·३०—मल कुछ गाढ़ा वो कुछ पतला, गाढ़ा मल पड़ा रहता है और पतला मल वह जाता है। जीभ सफेद व मोटा, मलद्वार, ज्यादा खाने पीने के कारण पीड़ा।

एपिस ६·३०—मल सब्ज या वलगमकी तरह, पीला पानी जैसा. जीभ रूख और चमकिली. प्यास सामान्य या बिलकुल नहीं होता है। पात्र शोथयुक्त, सुबह को पीड़ा की वृद्धि।

आर्जेण्टम-नाइट्रम ६·३०—मल सब्ज, दुर्गन्धी, आवदार या पीला हुआ घास की तरह ज्यादा हवा छुटने के साथ मल त्याग। जोर आवाज के साथ ढेकार आना। मिठाई खाने की अत्यन्त इच्छा. मानसिक उद्वेग जनित उदरामय। दांत उठने के समय का उदरामय।

आर्सेनिक ३०·२००—मल गाढ़ा सब्ज रङ्ग; आंवदार

अथवा भुरा रङ्ग या कालो रङ्ग के पानी ऐसा, मलद्वार में जखम हो जाना। अत्यन्त दुर्बलता, अस्थिरता। अत्यन्त प्यास किन्तु सामन्य परिमाण जलपान करना, आहार वा जलपान करने से ही बमन हो जाना। कुलफी, बरफ इत्यादि ठण्ढा बस्तु खाने से उदरामय, शरीर में ज्वाला रात एक बजे से तीन बजे तक पोड़ा को बृद्धि।

ब्राइयोनिया १२-३०-२००—गरमी के दिनों मे कै दस्त, एकाएक ठण्ढी हवा लग कर पसीना रुकने से उदरामय। हाम इत्यादि के बैठ जाने से पीड़ा होना। मल भुरा रङ्ग पतला, विटामय, दुर्गन्धी, अत्यन्त प्यास, बहुत देर के बाद बहुत परिमाण से जलपान करता है। हिलने डोलने से पीड़ा की बृद्धि।

कैलकेरिया-कार्ब ३०-२००—कण्ठमाला धातु के लोगों का उदरामय, पेट फूला, हाथ पांव सूखा, अत्यन्त भुख, मल सफेद या पतला पानी ऐसा प्राचीन उदरामय, कादों के सदृश मल। सिरमें बहुत पसीना। दाँत उठने के समय का उदरामय दूध पीने से पीड़ा की बृद्धि, खट्टा कै, खट्टा दस्त। कष्टदायक दर्द, मूत्र साफ किन्तु दुर्गन्धी वा तेज गन्धमय।

कैलकेरिया-फस ६-३०—मलत्याग के समय अत्यन्त हवा छुटना। फर २ आवाज के साथ मल चारो तरफ छिट जाता है।

कैमामिला १२-२००—मल सब्ज, पानी ऐसा, दर्द

के साथ और जख्म पैदा करने वाला। मल गर्म्म और सड़े अन्डे ऐसा बूदार, बच्चा अत्यन्त चिरचिराहा, सर्वदा गोदी में चढ़ कर टहलना चाहता है। रात को पीड़ा की वृद्धि।

चायना ३०-२००—मल हल्दीरङ्ग पानी ऐसा, फेनदार, सफेद अथवा काला रङ्ग का। पेट में ऐंठने वाला दर्द, पेट को जोर से दबाने से दर्द का कम हो जाना। बिना दर्द के अजीर्ण, दुर्गन्धी मल के साथ पेट फूला, अत्यन्त दुर्बलता के साथ पसीना, बहुत परिमाण दुर्गन्धी हवा छुटना। रात को और एक दिन बाद देकर पीड़ा की वृद्धि।

सिना ३०-२००—सफेद थसथसा मल, नाक खोंटना, मलद्वार का खुजलाना, अस्थिर नींद, बार बार इधर उधर करना, नींदसे चितकार मार कर उठना, नींदमें दांत कट-कटाना, कृमी की शिकायत।

कलोसिन्थ ६-३०—मल जाफ़ान की तरह पीला, फेनदार, पतला, लसलसा पानी ऐसा, मल त्याग के पहले पेट में दर्द। पेट दबाने से दर्द की कमी।

क्राटन ६-३०—मल हल्दी रङ्ग के पानी ऐसा अथवा पीला मैल सब्ज, मल पिचकारी की तरह वेग से निकलता है। कुछ खाने या पीने से तुरन्त दस्त हो जाता है।

फेरम ३०-२००—दर्द रहित प्राचीन उदरामय, प्रतिदिन दो पहर के बाद नियमित भाव से दस्त होता है। यक्ष्मा-रोगी का दस्त शरीर रक्तहीन किन्तु करवट लेनेसे ही चेहरा लालवर्ण हो

जाता है। ठीक अहार के बाद ही खाई हुई चीज का के होना।

जेलसिमियम ६-३०—भय, शोक या कुसंवाद से उदरामय, मल नाना प्रकार रङ्ग के या हल्दी रङ्ग।

गैम्बोज ३६—मल पीला अथवा सब्ज और आंवदार, दुर्गन्धी। एकाएक मल के वेग होकर समस्त मल एकाएक जोर से निकल पड़ता है। पेट में दर्द और गड़ २ आवाज होना।

ग्रेटिओला ३-६—हरा, फेनदार पानी ऐसा मल का अत्यन्त वेग से निकलना; ज्यादा जल पीने से उदरामय।

हिपर—सल्फ ६-३०—पारा और कुनाइन के ज्यादा व्यवहार के हेतु प्राचीन उदरामय। मल सामान्य पीला, हरा वा आंवदार; अनपच खट्टा बूदार मल।

आइयोडियम ६-३०-२००—प्राचीन उदरामय; मट्ठा की तरह दस्त। तेल या चर्बी के सदृश दस्त। अत्यन्त भूख तथापि रोगी पतला-दुबला।

इपिकाक ६-३०-२००—सर्वदा कै की इच्छा, पित्त का कै। मल घास की तरह सब्ज आंवदार, फेनदार। पेट मे अत्यन्त दर्द।

आईरिस ३-६—दर्द के साथ, सब्ज, पानी ऐसा दस्त। मल त्याग करने के बाद मल द्वार में दर्द, खट्टा के होना और उस से मुंह में ज्वाला मालूम होना या जखम होना।

लेप्टांड्रा ६-३०—मल काला, थसथसा, अलकतरा की तरह, बदबूदार।

मैगनेसिया-कार्ब ६-३०—शिशुओं का खट्टा गन्धयुक्त दस्त। मल सब्जापन, फेनयुक्त, पीसा हुआ घास की तरह आवदार और पानी ऐसा। शिशु के शरीर से खट्टा बू आती है। मल आजीर्ण, छेना के टुकड़े की तरह, फटा दूध ऐसा। बच्चों के दांत निकलने समय का उदरामय।

नक्स-भोमिका ३०-२००—बार बार पानी ऐसा व लसलसा भूरा रङ्ग का, आंवदार मल; पेट में दर्द और कूथना; मल त्याग के बाद दर्द की कमी। पेचीश के साथ उदरामय, जो मिचलाना, खट्टा कै होना, नाना प्रकार के गर्म्म, औषधि गर्म्म मसालेदार भोजन और मद्यपान, रात जागना इत्यादि के हेतु पीड़ा।

पट्रोलियम ३०-२००—दस्त सिर्फ दिन में होता है, कभी रात में नहीं होता है। भोर में दस्त। प्राचीन उदरामय।

फसफोरस ३-६ ३०—यह औषधि बुढ़ो और कण्ठमाला या यक्मा-रोगियों के लिये नितान्त उपयोगी है। सुबह का उदरामय, पतला मल और उस में सफेद आंव अथवा साबूदाने की तरह छोटे २ पदार्थ रहता है। मलद्वार हमेशा खुला रहता है। अत्यन्त प्यास किन्तु शीतल जल पीने से थोड़ा देर के बाद निकल जाता है।

फसफोरिक-एसिड ३०-२००—प्राचीन उदरामय बहुत दिन तक बहुत परिमाण से दस्त होता है, किन्तु रोगी अधिक दुर्बल नहीं होता है। मल पतला, खड़ी मिट्टी के रङ्ग का, बहुत परिमाण और दर्द रहित।

पोडोफाइलम ६-३०-२००—प्राचीन उदरामय, दस्त सुबह से दो पहर तक ज्यादा होता है, मल बहुत परिमाण और पानी ऐसा किन्तु उस के नीचे, चावल के कण या आटा की तरह चीज देखा जाता है। दांत उठने के समय का पीडा, दूध अम्ल और फलादि आहार के हेतु पीड़ा, दर्द रहित दस्त, अदल बदल कर शिर पीड़ा और उदरामय। मलत्याग के पहले पेट में गड़ २ आवाज होना। मल त्याग के समय कांच निकल आता है, रङ्ग विरङ्ग के दस्त, अति दुर्गन्धी।

पल्सेटिल्ला ६-३०—प्रत्येक वार दस्त मे मल का रङ्ग बदल जाता है। पेट में दर्द के साथ जाड़ा मालूम होना, तेल का या चर्बीदार खाद्य फल, कुलफी इत्यादि ठण्ढी चीज खाने से उदरामय, प्यास बिलकुल नही होना, मुंह मे सड़ा या कडुआ स्वाद, ठण्ढी खुली हवा मे पीड़ा की कमी।

र्‌हिउम ३x-३-६—मल हरापन भूरा, फेनदार। बच्चो के दांत उठने के समय का उदरामय, मल अत्यन्त खट्टा, बच्चे के तमाम शरीर से खट्टा बू आती है। शिशु का दस्त सफेद, छेना की तरह मल, थोड़ा देर तक कपड़ा मे रहने से

सब्ज हो जाता है। फलत मल किसी रंग का हो यदि उस की बू बहुत खट्टी हो तो इसे अवश्य देना चाहिये।

सल्फर ३०-२००—नाना प्रकार का मल, बदन से मल की बू आती है। सुबह को बिछावनसे उठने से ही पैखानाका वेग इतना जोर होता है कि एक मुहूर्त्त भी ठहर नहीं सकता है। चर्म्म रोग के बैठ जाने के हेतु उदरामय।

थुजा ३०-२००—प्रति दिन सुबह को नास्ता खाने के बाद उदरामय, टीका देनेके बाद उदरामय। मल फीका, हल्दीवर्ण या पानी ऐसा। अत्यन्त वेग से निकलता है। पेटमें अत्यन्त आवाज होती है। प्राचीन उदरामय।

भेरेट्रम ६-१२-३०—बहुत परिमाण पतला दस्त होता है। पेट में खूब दर्द और कै होता है। ललाट में बहुत परिमाण शीतल पसीना।

जिन्जीबार ६x-६—सड़ा पानी पीने से उदरामय।

नेट्रम-सल्फ ३०-२००—यह औषधि पुराना उदरामय के लिये बहुत उपकारी है। सुबह को ढीला पैखाना होना इसका प्रधान लक्षण है। प्रति दिन बिछावन से उठ कर ही जल्दी २ पैखाना में जाना पड़ता है। उदरामय के साथ सुजाक रोग भी पाया जा सकता है।

प्राचीन उदरामय (CHRONIC DIARRHŒA) की चिकित्सा—

इसमे सलफ़र और नैट्रम-सलफ़ प्रधान औषधि है। कैलकेरिया, फसफ़ोरस, पेट्रोलियम, थूजा इत्यादि औषधियां भी फलदायक होती है।

यक्ष्मा-रोगी के उदरामय मे फेरम व फसफोरस सबसे श्रेष्ट औषधि है। बिमारी के आखिरी हालत मे पीब पैदा होने से सलफर और कैलकेरिया फलदायक होते हैं।

लायेन्टेरिक (Lienteric) उदरामय अर्थात् जिसमें खाई हुई चीज न पच कर निकलता है उस में चायना ३० देना चाहिये। यदि चायना से फल न हो तो कैलकेरिया, फसफोरस, फेरम इत्यादि लक्षणानुसार देना चाहिये।

पथ्यापथ्य—पथ्य का दोष ही से ज्यादेतर यह रोग होता है। अतएव पथ्य के विषय मे विशेष सावधान होना चाहिये। गुरुपाक द्रव्य आहार या अति भोजन कभी करना नहीं चाहिये। तरुण उदरामय में अरारूट, साबू या बारली पथ्य देना चाहिये।

तरुण उदरामय मे दूध नही देना चाहिये, जब तक परिपाक शक्ति अच्छी न हो तब तक भात या रोटी नहीं देना चाहिये, भात पथ्य देने के समय ३, ४ साल का पुराना चावल का भात

मछली का शुरुवा, पर्वल और कच्चा केलाके शुरुवा वा दही या मट्ठा के साथ दिया जा सकता है। प्राचीन उदरामय में खूब पूराना चावल का भात, मसुर के दाल के शुरुवा के साथ रोज एकवार दिया जा सकता है। भात, हज़म नहीं होने से इसमे भी साबू, वार्ली ही पथ्य होना चाहिये। सिर्फ मसुर का शुरुवा भी अति उत्कृष्ट पथ्य है। पूराना रोगी को अवस्थानुसार नहाने दिया जा सकता है। पूराना रोगी को सुबह शाम टहलने से भी विशेष उपकार होता है।

पेचिश वा रक्तामाशय । DYSENTERY

इस विमारी को सिर्फ आमाशय भी कहते हैं। प्राचीन होने से इसको ग्रहणी रोग कहते हैं।

इस रोग में सरलान्त्र वा रेकटम में और वड़ी अन्तरी मे विशेष (Specific) प्रदाह उत्पन्न होता है। यह प्रदाह होने से मलद्वार से आंव और खून निकलता है। उस के साथ पेट में अत्यन्त ममोड़, अत्यन्त मल वेग और कुथन उपस्थित होता है। शुरू मे अरुचि प्यास, मतली और नाभी के चारो ओर तेज शूल होती है, शुरू मे पतला दस्त और सामान्य ज्वर होता है। क्रमश समूचे पेट

में दर्द, कांखने के साथ बार २ मल त्याग करने की इच्छा, सफेद या खुन मिला हुआ आंव निकलता है। रोग कठिन होने से मलकी अवस्था बदल कर कांदो के सदृश, भूरा अथवा काला रङ्ग हो जाता है। शुरू में मल प्राय तरल होता है। मांस के धोअन की तरह दस्त होना अति दुर्लक्षण है। कभी २ सिर्फ बहुत परिमाण से लाल रक्तस्राव होता है। कभी २ सड़े झिल्ली के टुकड़े दस्त के साथ निकलतो है। ये सड़े झिल्ली के टुकड़ों को "स्लफ" (Slough) कहते हैं, इस समय मल अत्यन्त दुर्गन्धी होता है। रक्तामाशय अति कठिन होने से रोगी नितान्त निस्तेज हो जातो है, मुखमण्डलमें व्याकुलता और अस्थिरता का चिह्न प्रकट होता है। जीभ सुखी काली या लाल रङ्ग हो जाती है। दांत में सर्डिस (Sordes) वा मैल पड़ता है, नाड़ी क्रमश पतली, जल्द व वेकायदे होती हैं। पेट फूल जाता है मूत्र अल्प या बन्द होता है, हिचकी होता है, क्रमश रोगी वेहोश हो जाता है। यह अति कठिन पीड़ा है, जल्दी आराम न होने से प्राण-नाश की आशङ्का है।

कारण—दूषित जलपान, अनियमित वा गुरुपाक द्रव्य भोजन, मद्यपान प्रभृति कारणों से यह बिमारी होती है। किसी २ के मतसे यह किसी विष से पैदा होती है। रोगका मल, मूत्र, पसीना इत्यादि इस बिष का आधार है। श्वास या खाना के साथ यह विष शरीर में प्रवेश करने से यह पीड़ा उत्पन्न होती हैं।

चिकित्सा—यदि अत्यन्त ज्वर और हाथ पैर और सिर में दर्द के साथ आमाशय आरम्भ हो तो देर न कर एकोनाइट देना चाहिये। यदि एकोनाइट से फल न मिले तो मार्क-साइफ़स दो। आंव मिला हुआ खून वा सिर्फ़ खून कुंथना और पेट में दर्द रहने से यह उत्तम है। किन्तु सिर्फ रक्तमल और इस के साथ वमन वो मतली रहने से इपिकाक देना चाहिये। पेट में अत्यन्त ऐंठने वाला दर्द के साथ रक्तमय-मल के लिये कलोसिन्थ देना चाहिये।

डाक्टर जार साहब कहते हैं "सर्व्व प्रथम में लक्षण समझ कर मार्क-साइमस वा मार्क-कर देने से रक्तमल खून रहित आंव में परिणत होगा, इस के बाद लक्षणानुसार एक डोज सल्फर वा २-४ खुराक पलसेटिला अथवा रस-टक्स देने से रोगी आरोग्य लाभ करेगा। "रक्तामाशय में मार्क-कर और मार्क-मल दोनों ही उत्तम औषधि है, जो आमाशय में आंव-रक्त के साथ विष्टा रहते हैं विशेषतः शिशुओं के आमाशय में मार्क-मल अति उपकारी होता है।

रक्तामाशय रोग के लक्षणानुसार औषधावली।

एकोनाइट ३-६-३०—दिन में गर्मी रात में ठंढ पड़ने के समय का दस्त, अल्प २ पतला मल, बार २ मलत्याग और इस के साथ मल का वृथा वेग, कुंथना और पेट में दर्द, मल

रक्तमय, अथवा आंवदार किम्वा सिर्फ रक्त, शरीर में दर्द। ज्वर, अत्यन्त प्यास और अस्थिरता।

ऐलो ३०-२००—बार २ मलत्याग, मल खून मिला हुआ व आँवदार। नाभी के चारो तर्फ मे दर्द। मलत्याग के समय अत्यन्त मलवेग, कोंखना और मलद्वार में ज्वाला। पेट दबाने से दर्द की वृद्धि। हवा छुटने के साथ मलत्याग।

आर्जेन्टम-नाइट्रम ३० २००—मल सब्ज, पीसा हुआ घास की तरह, रक्त मिश्रित आंव, सब्ज सुत की तरह। प्राचीन आमाशय।

आर्सेनिक ३०-२००—मल काला, मलिन, पतला व रक्तमिश्रित, अत्यन्त दुर्गन्धी। बे मालूम मल त्याग, मल त्याग के समय कोंखना और मलद्वार में ज्वाला। अत्यन्त अस्थिरता, व्याकुलता, मृत्युभय। अत्यन्त प्यास किन्तु अति अल्प परिमाण जल पीना, रोगी जल्द २ अत्यन्त कमजोर होता जाता है।

रस-टक्स ६-३०-२००—टाइफाइड अवस्था प्राप्त होने से, बे मालूम मलत्याग, विशेषत रात्रिकाल मे। मल रक्तमय आँव, मांस धोअन ऐसा लाल रङ्ग पानी के सदृश पेट में दर्द, छटपटाना, वर्षात के पानी से भिगने के हेतु पीड़ा।

कलचिकम ६-३०—शरत् काल मे आमाशय। पित्त

का कै, मल सफेद जेली (लसा) की तरह अथवा रक्तमय, पेट में दर्द और कुंथना। सूत्र अल्प २, अत्यन्त मतली, खाद्य द्रव्य देखने से या उस के गन्ध से ही मतली शुरू होती है।

कलोसिन्थ ६-३०—मल खून मिला हुआ आँव. मल से अन्त्रियों के छिले हुए टुकड़ों के ऐसा मालूम होता है। नाभी के चारो ओर ऐंठन या मड़ोड़, दवाने से दर्द का कमी होना, पेट फूलना मल त्याग के वाद थोड़ी देर के लिये दर्द की कमी रहना।

वेलाडोना ६-३०—मल मज्जापन, खून मिला हुआ आँव। लगातार कोखने पर थोड़ा सा मल निकलना, पेट में दर्द एकाएक होता है, एकाएक ही छुट जाता है कोखने से या स्वास बन्द कर रहने से उपशम, ज्वर, डिलिरियम भी हो सकता है। नीन्द से चौंक उठना। मूत्र बन्द रहना। जीभ सूखी उसके अग्रभाग लाल अथवा सफेद जीभ के ऊपर लाल लकीर।

कैलकेरिया-कार्व ३०-२००—हरा, सफेद या पीला मल, सिर में ठण्डा पसीना तल पेट बर्फ की तरह शीतल। यह औषधि प्राचीन आमाशय में सर्व्वोत्कृष्ट है। रक्त भी आँवदार मल।

कार्बो-भेज ३०-२००—पीड़ा की नितान्त वृद्धि होने से इस दवा का प्रयोजन होता है। मल में दुर्गन्धी रक्त और

आंव, बेखबरी में मलत्याग, मल में भयानक दुर्गन्ध। निस्तेज अवस्था और स्वांस प्रस्वांस शीतल। रोगी सर्वदा हवा करने को कहते हैं। सिर गर्म्म, हाथ पांव ठण्डा। नाड़ी सविराम, कोलेप्स, पेट फूला हुआ।

कैमोमिला १२-३०—मल बार २, अल्प २, पतला सब्जापन मल में सड़े अण्डे की बू। पेट मे दर्द, रोगी अत्यन्त चिरचिराहा, सर्व्वदा गोदी मे चढ़ कर घुमना चाहता है। रोगी का एक गाल लाल व गर्म दूसरा फीका वो ठन्डा, दांत निकलने के समय मे यह दवा उत्तम है।

फेरम-फ़स ६x—गरमी के दिनों में पसीना रुक कर आमाशय की पीड़ा। अत्यन्त ज्वर के साथ पीड़ा आरम्भ होने से इस औषधि द्वारा विशेष फल मिलेगा।

इपिकाक ६-३०-२००—यह औषधि में पेट मे शूल और कुंथने के साथ सर्व्व प्रकार आमाशय मे ही उत्तम है। जीभ सफेद या पीला। मल सब्ज, फेनदार वा रक्तमय आंव, सर्वदा मतली। आहार मे अनिच्छा। कच्चा फल खाने से पीड़ा की उत्पत्ति। मलत्याग के बाद कुंथना और पेट मे शूल।

केलि-मिउर ६x—पेट में अत्यन्त मड़ोड़, मिन्टि २ मे मलत्याग। कांखने के वेग से रोगी चितकार करता है। मल मे अल्प २ आंव, रक्तमय आंव या सिर्फ रक्त। बाइयोकेमिक मत मे यह औषधि सर्व प्रकार आमाशय मे ही फल-

प्रदक । यदि इस दवा के प्रयोग से फल नहीं हो और पीव की तरह मल हो तो कलकेरिया-सल्फ देना चाहिये ।

नक्स-भोमिका ३०-२००—मल अल्प २ रक्त के साथ विष्ठा और आंव मिला हुआ, मलत्याग के पहले और त्यागके समय पेट में अत्यन्त मडोड़ और कुंथना, मलत्याग के बाद ही सब कष्ट की कमी। गर्म्म मसालेदार वस्तु के आहार और मद्यादि पीने से पीड़ा।

फसफोरस ६x-६-३०—दर्द रहित आमाशय मे यह विशेष उपकारी है। मलद्वार खुला रहता है। तेज प्यास किन्तु जल पीने से थोडी देर में निकल जाता है।

पोडोफाइलम ३-६-३०—मल नाना प्रकार का होता है। दर्द सामान्य, या नहीं होता है। मल त्याग के समय कांच निकलता है। शिशु शिर को इधर उधर करता है।

पलसेटिला ६-३०-२००—मल रङ्ग बिरङ्ग का होता है। मल त्याग के समय शीत बोध, पेट और कमर में दर्द। प्यास न होना।

सल्फर ३०-२००—मलत्याग के बाद कुंथने की कमी। आंव में खून मिला हुआ नहीं रहता है—आंव के ऊपर खून की लकीर पड़ता है। पीड़ा कठिन होने से या और किसी औषधि से आराम न होने पर दिया जाता है।

हैमामेलिस ३x-६x—काला रक्तस्राव या आंव के साथ ढेला २ कालारक्त।

लैकेसिस ३०-२००—काला रङ्ग का मल, दुर्गन्धी काला खून मिला हुआ मल, जला हुआ पाआल की तरह दिखाता है। कांखना, प्यास, जीभ सूखी, उसका अग्रभाग फटा २ अथवा जीभ काला और रक्तमय।

मार्क-सल २x-६-३०-२००—मल खून मिला हुआ आंव, कब्ज, मल त्याग के पहले अत्यन्त मड़ोड़ कुंथना, मल त्याग के समय और बाद में अत्यन्त कांखना और पेट में मड़ोड़, बहुत देर तक पैखाना में बैठे रहने की इच्छा। अत्यन्त प्यास और पसीना। कांच निकलना, रात को पीड़ा की वृद्धि।

मार्क कर ३०-२००—बार २ अल्प २ आंव के साथ खून निकलना, पेट में अत्यन्त मड़ोड़ और कांखना। नाभी के चारो तरफ से दर्द आरम्भ हो कर नीचे जाता है। मूत्रस्थली मे तकलीफ। अल्प २ मूत्रत्याग। मल में विष्टा के भाग अधिक होनेसे मार्क सल दो और रक्त का भाग अधिक रहने से मार्ककर दो।

कैन्थारिस ३०-२००—मल खून के साथ आंव और उस मे अंतरी के छिले हुए टुकड़ो की तरह दिखाई देता है। पेट में मड़ोड़, गुह्यद्वार में ज्वाला। मल और मूत्र का वेग अधिक, अत्यन्त कांखना, मूत्र ज्वाला के साथ बुन्द २ से होता है।

पथ्यापथ्य—आमाशय रोग में कभी उपवास नहीं देना चाहिये। जल-बार्ली, जल-अरारोट, जल-साबू इत्यादि

नमक और मिश्री के साथ दिया जाता है। दूध न देना ही अच्छा है। बकरी का दूध आमाशय में बहुत फलदायक है। जौ या पूराना चावल का माड़ भी अच्छा है। अच्छा मछली का झुरुवा और मट्ठा भी उपकारी है। बुखार और सर्दी रहने से मट्ठा नहीं देना चाहिये। बेल-सोंठ को पानी में सिद्ध करके बकरी के दूध के साथ खाने से उपकार होता है। रोटी और मांस कभी नहीं देना चाहिये।

गुदभ्रंश (कांच निकलना)।
PROLAPSUS RECTI & ANI.

रेक्टम या मरलान्त्र का गुह्यद्वार से बाहर निकल पड़ने को गुदभ्रंश कहते हैं। मरलान्त्र को चारो तरफ बांधने वाले रोगा के ढीले होने या टूट जाने से यह रोग होता है। अत्यन्त कांखना ही इसका सर्व्व प्रधान कारण है।

चिकित्सा—कौशल से इसको फिर अपनी जगह में चढ़ा कर दवा के भीतरी प्रयोग से आराम हो जाता है। खाने पीने की व्यवस्था ऐसी होनी चाहिये जिस से कब्ज न हो और कुंथना न पड़े।

औषधावली—आर्निका ६-३०—सिर के ऊपरी

भाग जल जाने से पीड़ा, कुछ काल घुमने फिरने से कांच बाहर निकल आता है।

बेलाडोना ६-३०—दांत निकलने के समय की पीड़ा वह स्थान अत्यन्त लाल रंग।

कैलकेरिया-कार्व ३०—शिशुओं के हैजा के समय कांच निकलना। मलत्याग के समय ज्वाला, मलद्वार में खुजली।

इउफे्शिया ६x,६—बैठने के समय चांप लगने से कांच निकलना।

इन्डिगो— २x-६x—यह इस विमारी को एक उत्तम औषधि है।

हाइड्रास्टिस ६-३०—बच्चों की पीड़ा, मलद्वार की अस्तर झिल्ली मे रक्ताधिक्य और फुलन, कब्ज।

इग्नेसिया ६-३०—इस औषधि द्वारा विशेष फल मिलता है। रेकूटम मे छुरी चूमने की तरह दर्द। तरल मल त्याग करने मे भी अत्यन्त कष्ट।

लैकेसिस ३०-२००—कांच निकल कर गुह्यद्वार में फंस जाता है, और उस में अत्यन्त दर्द होता है।

मार्किउरियस ६-३०—अत्यन्त कांखना और वेग।

मिउरियेटिक-एसिड ३०-२००—मूत्रत्याग के समय कांच निकल आता है।

ऐलो ३०-२००—पेट में कतरने की तरह भयानक दर्द. जिगर की जगह में अत्यन्त दर्द। बोतल से पानी गिरने के समय जैसी आवाज होती है उस तरह से पेट बोलना, बवासीर का मस्सा अंगुर के गुच्छ की तरह होता है।

आर्सेनिक ३०-२००—पेट में अत्यन्त मरोड़ और ज्वाला, बहुत प्यास किन्तु बहुत थोड़ा २ पानी पीना, बहुत बेचैनी और मौत का डर, अत्यन्त कमजोरी और शरीर में ठन्डा पसीना, शरीर जल जाने से पेट में दर्द होता आर्सेनिक बहुत फायदा करता है।

बेलेडोना ६-३०—दर्द एकाएक आकर एकाएक ही छुट जाता है और बार बार ऐसा होता है।

कारबो-भेज ६-२०-पेटका अत्यन्त फूलना, खास कर ऊपरी हिस्सा का फूल जाना. पेट के अन्दर हवा चला फिरा करती है। बहुत डेकार आता है किन्तु फिर भी कुछ आराम नहीं मालूम होता है, खट्टा या बदबूदार डेकार, बहुत कमजोरी, चेहरा मुर्दे की तरह, हाथ पेर ठन्डा।

कैमोमिला १२-३०-२००—दर्द इतना तेज होता है कि रोगी पागल की तरह अस्थिर हो जाता है, पेट फूलना, मालूम होता है कि पेट की नाडिया इकट्ठा हो कर गोला बन गया। रोगी अत्यन्त चिड़चिडाहा और बदमिजाज हो जाता है। बच्चा हमेशा गोदी में रहना चाहता है।

चायना ६-३०-२००—वायु शूल के साथ प्यास, नाभी की जगह पर कतरने की तरह दर्द, वायु से तमाम पेट फूल

जाता है। पेट को जोर से दबाने से आराम मालूम होता है। फल खाने से दर्द होने से चायना दिया जाता है। पित्त पत्थरी के दर्द मे चायना बहुत फायदा करता है।

कफिया ६—पेट में प्रसव की तरह असहनीय दर्द, मालूम होता है की अन्तरियां फट कर टूकड़े २ हो जायेंगी। रोगी आशा रहित होतो है, पेट में स्पर्श बरदास्त नहीं कर सकता है। स्वभाव बहुत चिरचिराहा होता है।

डायोस्कोरित्रा ६—चलने फिरने से या हाथ पैर को सीधा कर के शरीर को पीछे की तरफ तान रखने से आराम मालूम होना। अचानक पेट का दर्द बन्द हो कर, शरीर के कोई दूरस्थान में, जैसा, अंगुली इत्यादि मे भयानक दर्द दिखाई देता है।

कलचिकम ६-३०—खाना खाने के बाद पेट मे दर्द होना और पेट फूल जाना, पेट में बर्फ की तरह ठण्ढक मालूम होना, पेट मे स्पर्श बरदास्त नहीं होना। पतला और बहुत परिमाण से पित्त का दस्त होना, खाद्य द्रव्य के गन्ध से ही जी मिचलाना।

कलोसिन्थ ६-३०-२००—भयानक कतरने की तरह दर्द, मालूम होता है कि अन्तरियां बिलकुल सिकुड़ गयी है। दर्द से रोगी दोहरा हो जाता है। क्रोध के बाद या अफीम खाने के बाद दर्द होने से कलोसिन्थ विशेष उपकार करता है।

जोर से पेट को दबाने में आराम मालूम होना इस दवा का खास लक्षण है।

कुप्रम ६-३०—दर्द के साथ हाथ पाव और पेट में ऐंठन होने पर दिया जाता है।

इग्नेशिया ६-३०—निर्दिष्ट समय में ऐंठन पैदा करने वाला शूल, खास कर रात में स्नायविक और हिस्टिरिया के रोगियों की पीडा। रात में पेट फूलने के साथ दर्द, रोगीका मिजाज हमेशा बदल जाना—जैसे कभी रोना, कभी हसना, कभी चुप रहना और कभी लम्बी श्वास लेना। पेट बिलकुल खाली मालूम होना। हमेशा जी मिचलाना या कै होना।

इपिकाक ६-३-२००—अत्यन्त दर्द के साथ लगातार जी मिचलाता है, कै के बाद रोगी सो जाता है।

लाइकोपोडिअम ३०-२००—पेट फूलने के साथ दर्द, पेट का नीचला हिस्सा अधिक फूला रहता हो तो चायना दिया जाता है। पित्त पथरी का दर्द में चायना बहुत फायदा करता है।

आनुसंगिक चिकित्सा—रोगी को सर्वदा शयन अवस्था में रहना चाहिये, चल फिर करना नहीं चाहिये। फूली हुई जगह पर तिसी (linsid) का वो गेहू का चोकर का पुलटीस लगाना विशेष फल दायक है। वार्ली, मुंग और मसूर का शुरुवा उतम पथ्य है, रोग की पहली हालत मे दूध न देनाही उत्तम है। किसी प्रकार का कठिन वस्तु खाने को नही देना चाहिये।

आंत उतरना, अन्त्र-वृद्धि वा हार्निया ।

HERNIA.

अंतरी का कोई हिस्सा पेट की दिवार के किसी स्थान से निकल जावे तो उसको हार्निया कहते है । हार्निया कई प्रकार के होते है, (१) शिशुयो के नाभी के सुराक से जो हार्निया होता है उस को अम्बालाइकल (Umbilical) हार्निया कहते है, (२) इङ्गइनल (Inguinal) हार्निया वा ऐवडोमीनल रीङ्ग से अंतरी का निकलना, (३) फिमोरल (Femoral) हार्निया वा फिमोरल रीङ्ग से अंतरी का बाहर निकलना, (४) अंतरी अण्डकोष के अन्दर आने से उस को स्कोटल (Scrotol) हार्निया कहते है । ये सब तीन किसीम के होते हैं, यथा—(क) रिडिउसिबल् (Reducible) अर्थात जिस हार्निया को फिर पेट मे घुसा दिया जा सकता है। (ख) इररिडिउसिबल (Irreducible) अर्थात् जिस हार्निया को फिर पेट मे नहीं घुसाया जा सकता है। (ग) तृतीय प्रकार के हार्निया का नाम इन्कारसारेटेड (Incarcerated) हार्निया वा स्टैंगुलेटेड (Strangulated) हार्निया है । इस प्रकार हार्निया मे अंतरी के भीतर से कोई वस्तु मलद्वार को ओर जा नहीं सकता है; कारण यह है कि अंतरी और अन्त्र-पथ व रीङ्ग की संकुचित अवस्था

हो जाती है। इस से रक्त-संचालन-क्रिया तक बन्द हो जा सकती है ।

कारण—पेट की दिवार का ढीला हो जाना; चोट लगना जन्म से ही उदर के रींङ्ग (Ring) की असम्पूर्ण अवस्था होना, दम बन्द करके किसी प्रकार भारी वस्तु उठाना, ज्यादा परिश्रम, अत्यन्त कुंथना इत्यादि से यह बिमारी हो सकती है।

हार्निया की चिकित्सा ।

कौशल कर के हार्निया वा निकली हुई अंतरी को पेट में घुसा कर पेटी बान्धना चाहिये । हार्निया के लिये खास पेटी डाक्टरी दुकान में मिलता है अक्सर होमियोपैथिक दवाई खाने से बहुत हार्निया के रोगी आराम होते हैं।

आर्सेनिक ३०-२००—पेट कठिन और कुछ फैला हुआ मानसिक अस्थिरता, ज्वाला और अंतरी मे मड़ोड़, अंतरी का सड़ना ।

बेलाडोना ६-३०—नाभी की चारो ओर संकुचित सा मालूम होता है । वह जगह गोले की तरह फूल उठती है, पेट मे कांटी चुभने की तरह तकलीफ जान पड़ती है, उस स्थान मे प्रदाह ।

कैलकेरिआ ३०-२००—शिशुओं का हार्निया; शूल की तरह दर्द; पेट फूला; पेट में गड़गड़ शब्द; निद्रित अवस्था मे सिर में पसीना ।

कारवो-भेज ३०-२०० — हवा से पेट का फूला रहना बहुत हवा निकलना, कस कर कपड़ा पहीन नहीं सकता है।

कक्युलस ६ — दहिने तर्फ का हार्निया, अन्तरी टुट जाने की तरह जान पड़ती है, पेट फूला हुआ ।

लैकेसिस ३०-२०० — स्ट्रैंगुलेटेड हार्निया से अन्तरी का सड़ना शुरू हो तो दिया जाता है।

लाइकोपोडिअम ३०-२०० — दहिने तर्फ का इङ्गइनल हार्निया, पेट फूला और भरा हुआ, पांव ठण्ढा, पेट मे गड़गड़ाहट और ऐंठन।

नाइट्रिक-एसिड ३० — बच्चों के इंगुइनल हार्निया, कांपनी के साथ पेट मे ऐंठन की तरह दर्द।

नक्स-भोमिका ३०-२०० — स्ट्रांगुलेटेड हार्निया अन्तरी को फाड़ डालने की तरह दर्द, जी मिचलाना, कै होना, कब्ज। खास कर वायो तरफ को पीड़ा।

ओपियम ३०-२०० चेहरा लाल पेट फूला, सड़ा, और दुर्गन्धी वस्तु का वमन, पेट में कतरने की तरह दर्द।

गुद-बिदीर्णता वा मलद्वार का फटना।

FISSURA ANI

मलद्वार के मुख का लसदार अस्तर झिल्ली में जखम होने से या यह झिल्ली फट जाने से उसको फिसूरा एनाई वा गुद-

विदीर्णता कहते है। मलत्याग के समय उस जगह में बहुत दर्द होता है। इस रोग में ऐसा उपाय करना चाहिये जिसे कब्ज न हो मलत्याग के पहले अंगुली से मलद्वार में घी तेल या मक्खन लगाने से पैखाना आसानी से निकल जाता है और तकलीफ भी कम होती है।

चिकित्सा—आधा ड्राम कैलेन्डुला एक औंस भैसलीन के के साथ मिला कर मलहम बना के जखम की जगह में प्रयोग करने से बहुत फायदा होती है।

एस्कुलस ६-३०-२००—मलद्वार में ज्वाला, खुजलाहट और भारी मालुम होना। मलद्वार में छुरी भोकने की तरह दर्द। मल त्याग के घण्टे भर बाद मलद्वार में दर्द।

बारबेरिस ६-३०—समस्त पीठ में दर्द कन्धे से लेकर हाड तक दर्द, परिश्रम से वृद्धि, मलत्याग के समय मलद्वार में ज्वाला।

ग्रैफाइटिस ३०-२०० मलद्वार का फट जाना, खास कर बच्चों का कठिन मल निकलने के हेतु मलद्वार का फट जाना और जखम हाना।

हाइड्रेसटिस ६-३०-प्रतिवार मल त्याग के बाद मलद्वार मे ज्वाला, ज्वाला का बहुत देर तक रहना, अन्तरी में शूल की तरह दर्द, इससे रोगी को मूर्छा होने के उपक्रम होता है, मल बड़े २ ले की तरह और सूखा।

इग्नेसिया ६-३०—बवासीर या मलद्वार के बाहर

निकलना मलद्वार मे जखम, हर रोज एकही समय दर्द का शुरू होना, चलने से या खड़ा होने से दर्द को ज्यादा होना।

नाइट्रिक-एसिड ३०-२००—मलत्याग के समय कतरने की तरह दर्द, मलद्वार सिकुड़ा हुआ मालूम होता है। ढेकार आता है किन्तु उस से कुछ भी आराम नहीं मालूम होता है, सामको ४बजे से ८ बजे के अन्दर पीड़ा का अधिक होना

मार्किउरिअस ६-३०—ठन्ढ लगने से, सन्ध्या के समय की हवा लगने से या कृमि के हेतु पीड़ा, सिर्फ लेटा रहने से दर्द मे आराम रहता है।

नक्स-भोमिका ३०-२००—पेट मे ऐंठनेवाला दर्द के साथ पत्थर से दबा रखने की तरह मालूम होना, अजीर्णता के हेतु वा गुरुपाक द्रव्य भोजन करने के हेतु दर्द, जी मिचलाना, बार २ मलत्याग की निष्फल चेष्टा, स्वभाव चिरचिराहा।

प्लम्बम ३०-२००—बहुत कब्ज किन्तु पेट नहीं फूलता है, पेट मे भयानक दर्द, पेट धस जाता है मालूम पड़े कि पेट पीठ के साथ सट गया है। मल भेड़ारी की तरह।

पलसेटिला ३०-२००—कडुआ और सड़ा स्वाद, खासः कर भोजन और पान के बाद पेट मे ऐंठन, कडुआ ढेकार, रङ्ग विरङ्ग का पतला मल, ठन्ढी खूली हवा मे आराम मालूम

होना, रात में बिमारी की वृद्धि चर्बी और रोगनदार चीज़ खाने से पीडा हो तो पलसेटिला अवश्य देना चाहिए ।

रोबिनिया ६x-६-३०—वायुशूल, पेट में चुंटी काटने के ऐसा दर्द, खट्टा ढेकार, खट्टा कै; बार २ मलत्याग की निष्फल चेष्टा, पेट का अत्यन्त फूलना ।

भेरेट्रम-अलबम १२-३०—पेट में कतरने की तरह दर्द, बहुत जी मिचलाना, कै के साथ पेट में दर्द, सारे बदन में ठन्ढा पसीना, खास कर ललाट में ।

एपन्डिक्स का प्रदाह वा ऐपेन्डिसाइटिस ।

APPENDICITIS

कठिन मल या किसी किसीम का कठिन पदार्थ ऐपेन्डिक्स मे अटंक कर उस में प्रदाह उत्पन्न करने से उसको ऐपेन्डि-साइटिस कहते हैं ।

इलियोसिकेल प्रदेश (पेट में, नाभी से आन्दाज तीन इञ्च दूर दहिने तरफ) फुल जाता है, और उस स्थान पर हाथ रखने से छोटा गोला के ऐसा मालूम पडता है और वह पहले पहल दबाने से इधर उधर छटकता है, किन्तु अन्त में वह गोला कड़ा हो जाता है और वह फूली हुई जगह गर्म और लालवर्ण होतो है, पक कर पीव निकल जाने से यह सूजन भी चला जाता है फूली हुई जगह पर बहुत दर्द होता है, दर्द के हेतु रोगी

पांव सीधा नहीं कर सकता है। कब्ज रहता है, पानी की तरह या आंव की तरह दस्त होता है। बहुत वमन होता है, वमन में मल की बू मालूम होती है और उस में छोटी अन्तरी का जीर्ण वस्तु निकलता है। पेट फूल जाता है, ढेकार और हिचकी होती है। जननेन्द्रिय में दर्द अण्डकोषका कोड़ी ऊपर चढ़ा रहता है, रोग अधिक दिन का होने से दहिने पैर में शोथ देखा जाता है, इस के साथ ज्वर भी देखा जाता है।

चिकित्सा-इस पीड़ा के शुरू मे बेलेडोना और मारकिउरिअस अति उत्कृष्ट फल देता है।

बेलाडोना ६-३०—इलियो-सिकेल (Illio Cæcal) प्रदेश मे बहुत दर्द, सामान्य स्पर्श भी बरदास्त नहीं होता है, खटिया हिलाने से भी बहुत कठिन दर्द होता है, बहुत तेज ज्वर के साथ पसीना, चेहरा लाल।

जिन्सेङ्ग ६-३०—लियोसिकेल प्रदेश मे सूई चुभने की तरह दर्द, फूलन और गलगल आवाज होना, निद्रित अवस्था से ताप और डिलिरिअम, जीभ सूखी।

मार्किउरिअस—इलियोसिकेल प्रदेश में दर्द व फूलन, वह जगह गर्म, लाल, और कड़ा, वहां स्पर्श करने से दर्द मालूम होता है। बहुत प्यास, कब्ज, बार २ कुंथने के साथ आंव की तरह मलत्याग। बहुत पसीना होता है किन्तु उस से कुछ भी आराम नहीं मालूम होता है। प्रयोजनानुसार इस दवाई की २x से २०० शक्ति तक दी जाती है।

हिपर-सल्फ ६-३०-२०० — पारे वाला औषध का अत्यन्त अपव्यवहार के लिए अति उत्कृष्ट औषध है. इलियोसिकेल प्रदेश फूला हुआ, स्पर्श बरदाश्त नहीं होता. दहिने जांघ को मोड कर पेट के ऊपर रख कर चित हो कर लेटे रहने से आराम मालूम होता है। बार २ मल और मूत्र त्याग करने की इच्छा।

लेकेसिस ३०-२०० — पेट के ऊपर स्पर्श करने से भयानक दर्द होता है, इलियो-सिकेल प्रदेश फूला कमर अकड़ा हुआ ऐसा मालुम होता है, कब्ज, मूत्र अल्प और उसमें लाल रङ्ग का गाद जमता है, मूत्रकष्ट. चित हो कर जांघ को पेट की ओर मोड कर रहने के सिवाय और किसी हालत में रह नहीं सक्ता है। साम को ३ बजे ज्वर की वृद्धि। निद्रा के बाद तकलीफ की वृद्धि।

प्लम्बम ३० — इलियो-सिकेल प्रदेश में बडा और शक्त गोला की तरह फूलन। स्पर्श करने से या करवट लेने से बहुत दर्द होता है। नाभी अन्दर के तरह घुस जाती है, खट्टा ढेकार आता है, जी मिचलाता है, कब्ज। मल भेड़ारी की तरह।

रस-टक्स ६-३०-२०० — पेट का प्रायः तमाम दहिना हिस्सा फूल जाता है और कठिन हो जाता है। इस में दर्द होता है। बैठने से या दहिना पैर को सीधा करने से बहुत दर्द होता है। बायें करवट में कभी लेट नही सक्ता है। फूली

जगह के नीचे धीरे २ दबाने से आराम मालूम होता है, बेचैनी और हाथ पैर मे ज्वाला ।

अन्यान्य औषध समूह—आर्सेनिक, कैमोमिला कलचिकम, कलोसिन्थ, साइलिसिया, नक्स, सल्फर इत्यादि।

पिओनिया १-३-६—जखम की जगह फूली हुई बदबूदार पेट मे दर्द के साथ दस्त, मलत्याग के कुछ समय बाद ज्वाला, मलद्वार के चारो ओर कठिन और उसमें से लसादार पानी निकलता रहना ।

रैटानिया ६-३०—मलद्वार मे आग की तरह ज्वाला, बवासीर के मस्से का बाहर निकलना, बार बार मलत्याग की निष्फल चेष्टा, मलत्याग के समय ज्वाला ।

साइलिसिया ३० २००—कब्ज, मल, मलद्वार से आकर फिर अन्दर चला जाता है ।

अर्श वा बवासीर वा पाइल्स ।

PILES OR HEMORRHOIDS

सरलान्त्र (Rectum) की अस्तर लसादार झिल्ली की शिरासमूह फूल कर चना या अंगुर की तरह टिउमर (Tumour) वा स्फीत उत्पन्न होता है, उस को अर्श कहते

हैं। मलद्वार के निकटकी शिरासमूह (Veins) फूलकर भी अर्श की उत्पत्ति होती है। अर्श के टिउमर को मस्सा कहते है। यह मस्सा बाहर और अन्दर दोनों प्रकार का होता है बवासीर दो प्रकार का होता है, (क) खूनी (Bleeding) (ख) बादी (Nonbleeding)

लक्षण—मध्य वयस के लोगों मे ही यह पीड़ा अधिक होती है। बाल्यावस्था मे यह पीड़ा प्रायः नहीं देखी जाती है।

वृद्ध अवस्था मे इस बिमारी को नयी उत्पत्ति नहीं होती है। माता पिता को यह रोग रहने से सन्तान को भी हो सकता है।

शिराओं में अच्छी तरह से रक्त संचालित न होने से शिर फूल जाता है, इस कारण किसी तरह से शिरा समूह में रक्त सञ्चालन का व्याघात होने से ही अर्श उत्पन्न होने की सम्भावना है। बन्द मल के चाप गर्भावस्था मे जरायु की चाप या किसी प्रकार के टिउमर के चाप इत्यादि से भी अर्श की उत्पत्ति होती है। जो लोग हमेशा बैठे रहते हैं उन लोगों मे यह पीड़ा अधिक होती है। मद्यपान, रात जागना, मिरचाई, गर्म मसाला, मांस, बहुत घी, चर्बी, कौफी इत्यादि के सेवन से भी अर्श रोग की उत्पत्ति में सहायता होती है।

पेट में ज्यादा हवा होने से या हमेशा घोड़े पर चढ़ने से भी अर्श होने की सम्भावना रहती है।

लक्षण—अर्श की उत्पत्ति की पूर्व अवस्था में पेट भारी मालूम होती है, परिपाक शक्ति का ह्रास होता है, प्राय: कब्ज रहता है, फिर किसी २ रोगी में दस्त होना भी देखा जाता है, कुछ दिन के बाद अर्श का मस्सा देखा जाता है। मल त्याग के समय बहुत दु:ख होता है, मलद्वार में हमेशा बोझ, ज्वाला या खूजलाहट मालुम होती है, अक्सर अर्श की बिमारी के साथ किसी २ के मलद्वार मे फोड़ा भी होता है और उस से अत्यन्त दु:ख होता है, कभी २ अत्यन्त रक्त-स्राव होने से रोगी अत्यन्त दुर्बल हो जाता है. किसी २ रोग को बिलकुल रक्तस्राव नहीं होता है और किसी २ रोगी मे आंव या पीव की तरह लसा निकलता रहता है।

अर्श की चिकित्सा।

जिस अर्श के रोगी मे रक्तस्रावादि दु:ख न रहता है उस मे पलसेटिला विशेष फलदायक होता है खास कर स्त्रियों मे, किन्तु पुरुष के लिये नक्स-भोमिका अच्छा होता है। किन्तु कब्ज रहने से स्त्री और पुरुष दोनों के लिये नक्स-भोमिका उपकारी होता है। अर्श का मस्सा अगर बहुत बड़ा हो और ऊपरोक्त दवायों से फायदा न हो तो बेलडोना, मिउरियेटिक एसिड वा थुज़ा द्वारा फल मिलेगा अर्श का मस्सा अगर मल-द्वार के बाहर न होता सल्फर, कैलेरिया-कार्ब, नाइट्रिक-एसिड, नक्स-भोमिका उपकारी होते हैं। अगर इन सब

दवायों से फायदा न मिले तो एसिड-म्युर में विशेष फल होगा। अर्श में खुजली होने में सल्फर, नक्स, कार्वो भेज इग्नेशिया, आरसेनिक फलप्रद है।

अर्श का मस्सा, मलद्वार मे बाहर आने मे फम जाय तो इग्नेशिया, वेलेडोना, सिपिया, लैकेसिस अच्छा होता है। अर्श से लम्सा निकलने मे फसफोरस, सिपिया, एन्टिमक्रुड पिउओनिया, कार्वो-भेज उपकारी है।

एस्कुलस ३०-२००—यह दवाई बादी बवासीर के लिये बहुत अच्छी है। मालूम होता है कि मलद्वार मे शीशाका टुकड़ा भरा हुआ है, मलद्वार अत्यन्त सूखा रहता है और उस में बहुत गर्म्मी मालूम होती है। हमेशा मलद्वार भरा रहता है, कब्ज रहता है, मलद्वार और डाड़ मे हमेशा दर्द।

एलोज ३०-२००—मलद्वार से लसा निकलना, मस्से आंगुर के गुच्छे की तरह, ठन्डा पानी लगाने से दर्द मे आराम बोध मल त्याग के समय बहुत वायु निकलना, वेखवरी से पैखाना निकलना।

एलुमिना ३०-२००—अत्यन्त कब्ज, तरल मल निकालने मे भी बहुत कुंथना पड़ता है, मलद्वार से जमा हुआ रक्त का ढेला निकलना, पहले कठिन मल निकलने के बाद पतला मल और खून निकलता है, मलद्वार में वेदना और छुरछराहट।

ऐनाकार्डिअम ३० २००—मलद्वार मे दर्द और जख्म, मलत्याग के समय मे ज्वाला और रक्तस्राव, मलत्याग करने को अत्यन्त चेष्टा किन्तु मालूम होता है कि मलद्वार बन्द हो गया है।

आर्निका ३०-२००—मल पतला फीता की तरह बहुत ज्यादा घोड़े पर चढ़ने से बिमारी।

आर्सैनिक ३०-२००—रोगी अत्यन्त निस्तेज, मलद्वार मे भयानक ज्वाला, मस्से का रङ्ग गाढ़ा लाल, मस्से गर्म वो दर्द के साथ, अत्यन्त कुंथना पड़ता है, मूत्र-कष्ट।

बेलेडोना ६-३०—अत्यन्त प्रदाह, रक्तस्राव और दर्द, मूत्र, अल्प और लाल, सिर में रक्ताधिक्य।

कार्बो-भेज ३०-२००—मलद्वार से गोंद की तरह लसा निकलता है, उस से मलद्वार मे ज्वाला होता है। अजीर्ण, पेट फूलना, नाक से रक्त-स्राव, दुर्बलता।

कस्टिकम ३०-२००—अत्यन्त कब्ज; मलत्याग के लिये निष्फल चेष्टा; मलद्वार के पास भगन्दर (Fistula); मस्सा फूला हुआ वो उस मे ज्वाला।

कोलिनसोनिया ६-३०—दिमाग और दिल की बिमारी के साथ अर्श का अदल बदल होना, गर्मी में अर्श की पीड़ा, अत्यन्त कब्ज रहे तो यह दवाई खूनी वो बादी दोनों किस्म के बवासीर में फायदा करती है मूत्रत्याग के समय मालूम होता है कि जरायु बाहर निकल जायगा।

ऐलाकार्डिअम ३० २००—मलद्वार में दर्द और जख्म, मलत्याग के समय मे ज्वाला और रक्तस्राव, मलत्याग करने की अत्यन्त चेष्टा किन्तु मालूम होता है कि मलद्वार वन्द हो गया है।

आर्निका ३०-२००—मल पतला फीता की तरह बहुत ज्यादा घोड़े पर चढ़ने से विमारी।

आर्सेनिक ३०-२००—रोगी अत्यन्त निस्तेज, मलद्वार मे भयानक ज्वाला, मस्से का रङ्ग गाढ़ा लाल, मस्से गर्म वो दर्द के साथ, अत्यन्त कुंथना पड़ता है, मूत्र-कष्ट।

बेलेडोना ६-३०—अत्यन्त प्रदाह, रक्तस्राव और दर्द, मूत्र, अल्प और लाल, सिर में रक्ताधिक्य।

कार्बो-भेज ३०-२००—मलद्वार से गोंद की तरह लसा निकलता है, उस से मलद्वार मे ज्वाला होता है। अजीर्ण, पेट फूलना, नाक से रक्त-स्राव, दुर्बलता।

कास्टिकम ३०-२००—अत्यन्त कब्ज; मलत्याग के लिये निष्फल चेष्टा, मलद्वार के पास भगन्दर (Fistula); मस्सा फूला हुआ वो उस में ज्वाला।

कोलिनसोनिया ६-३०—दिमाग और दिल की विमारी के साथ अर्श का अदल बदल होना, गर्मी मे अर्श की पीड़ा, अत्यन्त कब्ज रहे तो यह दवाई खूनी वो बादी दोनों किस्म के बवासीर में फायदा करती है मूत्रत्याग के समय मालूम होता है कि जरायु वाहर निकल जायगा।

कोऊहल-विरइया

दाणं-गंध-लुद्धा गयालिमुहलेहिं।

इरिजिरण ३x, ६x—खूनी बवासीर, मलद्वार के चारो ओर अत्यन्त ज्वाला, मल कठिन और रक्त मिश्रित।

ग्रैफाइटिस ३०-२००—मलद्वार फूल जाना मल त्याग की चेष्टा न होने पर भी कांच निकल पड़ना, मलत्याग के समय कतरने की तरह दर्द, चन्द घन्टे तक रहता है, कब्ज, मलद्वार के चारो ओर रसपूर्ण फुनसियां का होना। ऋतु के समय पानी के ऐसा श्वेतप्रदर।

हैमामेलिस ३-६-३०—अर्श से रक्तस्राव, सामान्य परिमाण रक्तस्राव होने से भी दुर्बलता अत्यन्त अधिक होती है।

चायना ३०-२००—अत्यन्त रक्तस्राव, खून का कुछ हिस्सा पतला और कुछ हिस्सा ढेला २. रोगी के चेहरा का जर्द हो जाना, कान मे मन २ शब्द होना, रोगी अत्यन्त दुर्बल।

इग्नेशिया ६-३०—मल त्याग के एक या दो घन्टे बाद मलद्वार मे ऐंठन की तरह दर्द, अत्यन्त कुथना, कांच निकलना।

लैकेसिस ३०-२०००—अर्श का मस्सा बाहर निकलकर फंस जाता है। मस्से का रङ्ग बैगनी होता है, खांसने से या छिंक आने से मलद्वार मे दर्द मालूम होता है।

लाइकोपोडियम ३०-२००—बैठने के समय अर्श के मस्से में दर्द मल नरम होने से भी रक्तस्राव होता है, मलद्वार के चारो ओर खुजलाहट, सन्ध्या के समय मलद्वार में

खुजलाहट मूत्रद्वार से रक्तस्राव, मूत्र मे लाल रेत की तरह गाद जमता है, पेट फूलना।

मार्किउरिअस ६-३०—रक्तस्राव होने वाला बड़ा मस्सा और वह अक्सर पक जाता है, मूत्रत्याग के बाद मूत्रस्थली से रक्तस्राव होना।

नक्स-भोमिका ३०-२००—खूनी या बादी बवासीर, मलद्वार में खुजली और सुई चुभने की तरह दर्द। कमर मे दर्द, कब्ज, बार २ मलत्याग की निष्फल चेष्टा।

फसफोरस ६x-६-३०—प्रत्येक बार मलत्याग के साथ धार से रक्तस्राव होता है। रेक्टम में जख्म और उसमे से पीव और खून का निकलना।

सल्फर ३०-३००—खूनी या बादी बवासीर, काला खून निकलता है, मलद्वार में ऐंठन की तरह दर्द रक्तस्राव बन्द होकर दिल धड़कना, प्राचीन अर्श रोग और उससे कभी २ धार से रक्त निकलना, मलद्वार में अत्यन्त खुजली, कभी २ बहुत लाल और बहुत परिमाण से रक्तस्राव होता है।

चिकित्सा आनुसंगिक—अर्शरोग के शुरू मे बहुत दु:ख होता है, उस समय रीठा का धूआं मलद्वार मे लगाने से दर्द आराम होता है। किसी पात्र में कोयला के आग पर सूखा रीठा देने से जो धूआं उठेगा वही धूआ कोई नल के द्वारा मलद्वार मे लगने से ही मतलब पूरा हो जाता है। इस मे भैंस के सिंघ के धूआ प्रयोग करने से भी विशेष

कोऊहल-विरइया

दाणं-गंध-लुद्धा गयालिमुहलेहिं ।

उपकार होता है । अर्श की तक्लीफ दूर करने के लिये निर्मी का पुलटीस विशेष उपकारी है । दही के साथ तिसी का चूर्ण मिला कर गर्म करने से यह पुलटीस त्यार होता है ।

पथ्यादि—

अर्श पीड़ा मे जिस से कब्ज न हो वैसा उपाय करना चाहिये । इस लिये प्रातःकाल मे भिंगा हुआ चुना या काला तील ताड़ को मिश्री के साथ खाने से उपकार होता है, ताड़ की मिश्री न मिलने से साधारण मिश्री के साथ खाया जाता है ।

मक्खन और मिश्री भी बहुत उपकारी है । पपीता और बेल खाने से पैखाना अच्छा वो साफ होता है ।

अर्श के रोगी के लिये ओल (जिमिकन्द) बहुत उपकारी चीज है, अर्श के रोगी के लिये लाल मिर्चाई और गरम मसाला विष है । मांस भी अच्छा नही है ।

—००—

कब्ज वा कन्ष्टिपेशन ।

CONSTIPATION

—:००—

यह कोई खास बिमारी नही है बल्कि दूसरे २ बिमारियों का एक लक्षण वा उपसर्ग मात्र है । होमियोपैथिक मत में इनको आराम करने के लिये ऐसा औषध कार्य्यकारी होता है

जिसके साथ शारीरिक व उपस्थित पीड़ा तथा अन्यान्य उपसर्ग के लक्षणों के सादृश्य हैं।

कब्ज की आदत पड़ जाने से ब्राइ, कैल्क कार्ब, कष्टिकम, कलिनसोनिया, कोनायम, ग्रैफा, लैके, लाइको, सिपिया, साइलि, सल्फ, उत्तम है।

जुलाब अथवा उदरामय के बाद कब्ज होने से नक्स, ओपि, लैके, रूटा।

सर्वदा बैठा रहने के अभ्यास हेतु, कब्ज—एलोज, ब्राइ, नक्स, लाइको, ओपि, सल्फ।

मतवालों के कब्ज—कैल्क, लेके, नक्स, ओपि, सल्फ।

वृद्धों का कब्ज अथवा अदल बदल कर दस्त और कब्ज—एलो, एन्टिम, ब्राइ, कैल्क, लेके, ओपि, फस, रस रूटा।

गर्भवती स्त्रियों के कब्ज—एलुम, ब्राइ, नक्स, ओपि, सिपि, फस।

नईप्रसूति का कब्ज—एन्टिम क्रूड, ब्राइ, नक्स, प्लैटिना।

माता के दूध पीनेवाले शिशुओं का कब्ज—ब्राइ, लाइको, नक्स, ओपिअम, सल्फ।

मल का वेग होता है, लेकिन मलत्याग नहीं होता है—आरनिका, वेल, कष्ट इगनेसि, लैके, लाइको, नेट्रम-म्युर, नक्स, सिपि, सल्फ।

कब्ज, मल के वेग ही नहीं होता है—एलुमि, एनाकार्ड,

आर्निका, ब्राइ, कार्बो-भेज, लाइको, नेट्रम, मेगने म्युर, नक्स, ओपि, सिपि, साइलि, ष्टैफि, सल्फ, थुजा, भेरेट्रम ।

मल अत्यन्त कठिन— ब्राइ, ओपि, मैग-म्युर, प्लम्बम, सिपि, साइलि, सल्फ, लाइको, मार्कुरियस, नक्स ।

मल भेडारी की तरह गुठली २ — एलुम, मैग म्युर ओपि, सिपि, साइलि, सल्फ, लैके, प्लम्बम, थुजा ।

मल अत्यन्त मोटा— ब्राइ, कैल्क, नक्स, भेफा, ग्रने, मैग-म्युर, थुजा ।

मल मिहिन—कष्टि, फस, आरनिका, म्युर-एसिड, नेट्रम सिपि, ष्टैफि ।

एस्कुलस ३०-२००—सर्वदा मल का वेग होता है किन्तु मल त्याग नहीं होता है। मल बहुत सूखा, कठिन, काला और कष्टदायक किन्तु शेषभाग का मल स्वभाविक होता है, मालूम होता है कि मलपथ में छोटी २ कांटी भरा है। कमर में वेदना ।

एलुमिना ३०-२०० मलपथ की अचेतन अवस्था, बहुत परिमाण से मल, मलपथ मे जमा न होने से पैखाना का वेग नही होता है। कोमल मलत्याग करने में भी बहुत कुंथना पड़ता है। मल इतना कठिन कि मलत्याग काल में मलद्वार से खून निकलता है।

ऐमन-म्युर—मल कठिन और मलत्याग काल में खन्ड २

होकर गिरता है। मल चिकना लसा से लपेटा रहता है और उसके साथ थोड़ा आंव भी गिरता है।

ऐनाकार्डियम ३८-२००—पैखाना का वेग होता है लेकिन बैठने से वेग चला जाता है। मलपथ अचेतन सा मालूम पड़ता है और ऐसा मालुम पड़ता है कि मलपथ में ठेपी लग गया।

एन्टिम-क्रुड ३०-२०० - बुढ़ों को अदल बदल कर दस्त और कब्ज। मल कठिन और बड़ा; ग्रीष्मकाल की गर्मी से कब्ज। मालूम होता है कि बहुत पैखाना होगा। लेकिन सिर्फ वायु निकलता रहता है और आखिर में थोड़ा सा कठिन मल निकलता है।

आर्निका ३-२००—पेट में चोट लगने से कब्ज।

ब्राइयोनिया ३०-२००-१०००—गर्मी के दिनों में कब्ज। पैखाना का वेग ही नहीं होता है मल बड़ा कठिन अत्यन्त सूखा। स्वभाव चिरचिराहा।

कैलकेरिया-कार्ब ३०-२००—दांत निकलने के समय की पीड़ा; बच्चों का मल खड़ी मिट्टी का ढेला सा होता है। पर्य्यायक्रम से कब्ज और खट्टा बूदार दस्त। मलद्वार से मछली की तरह बूदार एक प्रकार का रस निकलता है।

कार्बो-भेज ३०-२००—कब्ज के साथ ऐसा मालूम पढ़ता है कि पैखाना होगा लेकिन केवल वायु निकलता है।

कठिन मल, उसके शेषभाग के ऊपरी भाग में श्लेष्मा और खून देखा जाता है ।

कष्टिकम ३०-२००—बच्चो की कब्ज और उसके साथ बिछावन में पेशाब करना । मलद्वार सूखा । मलत्याग के समय बहुत दर्द होता है । मल कोमल मालूम, पड़ता है कि चर्बी मिला हुआ है । खड़ा होकर पेखाना फिरने से असानी से मल त्याग होता है ।

चेलिडोनिअम ३०-२००—भेडारी-की तरह मल, यकृत् स्थान में दर्द । पेट का अफड़ना और बोलना । बार २ वायु त्याग मलद्वार में खुजलाहट और सुरसुराहट । पेशाब लाल ।

कलिनसोनिया ६-३०-२००—कब्ज की आदत पड़जाना पेट का अफड़ना । मलद्वार में खुजलाहट और सुरसुराहट ।

ग्रैफाइटिस ३०-२००—मलद्वार सूखा और फटा २ मल, बड़ा २ गुठलो की तरह, वे गुठलियां बलगम से घिरा हुआ और इकट्ठा लगा रहता है । एक्जिमा रोग होने का स्वभाव ।

हाइड्रास्टिस ३०-२००—सिर-पीड़ा और बवासीर के साथ कब्ज । मलत्याग के बाद बहुत देर तक मलद्वार में दर्द ।

आइओडिअम ३०-२००—काला, कठिन और

गुठली की तरह मल, अदल बदल कर कब्ज और सफेद मट्ठा की तरह दस्त।

लैकेसिस ३०-२००—कब्ज और निष्फल पैखाना का वेग। अदल बदल कर कब्ज और दस्त। मलपथ संकुचित। मलद्वार में हथौड़ी का अघात की तरह दर्द। कांच का निकलना।

लाइकोपोडिअम ३०-२००—पेट वायु से भरा हुआ, बार २ पैखाने की निष्फल चेष्टा। थोड़ा और कठिन मल त्याग के बाद जननेंद्रिय के निम्नभाग मे दर्द। सन्ध्याकाल मे मलद्वार में दर्द और खुजलाहट। मलद्वार में खुजली। पेटका बोलना।

मैगनेशिया-म्युर ३x—कठिन गुठली की तरह, तकलीफदार मल निकलने के समय टुकड़ा २ होकर गिरता है। भेड़ोंरी की तरह मल, उसके ऊपर रक्त और बलगम देखा जाता है।

मार्कुरिअस ३०-२००—कब्ज, मल लसादार अथवा अत्यन्त वेग देने से खण्ड २ होकर गिरता है। पैखाना की निष्फल चेष्टा। रात मे तकलीफ की वृद्धि। पैखाना के बाद कांच का निकलना मुंह बिस्वाद किन्तु रुचि का अभाव नहीं।

नेटम म्युर ३०-२००—अत्यन्त कब्ज मलद्वार का फट जाना और उसके साथ खून का बहना और जखम सा दर्द।

नाइट्रिक एसिड ३० २००—मलत्याग की चेष्टा किन्तु

थोड़ासा मल निकलता है, मालुम होता है। कि मल मलपथमें अटका रहा, मालुम होता है कि मलपथ फट जायगा। मल सूखा, कठिन कष्टदायक और वेकायदा, मलत्याग के बाद ज्वाला मलद्वार में सिकुड़ने के ऐसा दर्द। कांचका निकलना।

नक्स-भोमिका ३०-२००—बार २ मलत्याग की निष्फल चेष्टा। मल बहुत कठिन और कष्ट से निकलता है, मल त्याग के बाद आराम बोध, अदल बदल कर दस्त और कब्ज, हमेशा बठे रहने से कब्ज।

ओपिअम ३० २००—मलद्वार एकदम सूखा, पैखाने का वेग ही नहीं होता है, मलद्वार की सम्पूर्ण अचेतन अवस्था, मल कठिन काला, गोला २, सिरपीड़ा, अनिद्रा।

फसफोरस ३०-२००—मल मिहिन, लम्बा और सूखा, कुछ कोमल, अथवा कुत्ता के मल की तरह कठिन।

प्लाटिना ३०-२००—देशभ्रमण हेतु अथवा सीसा के विषहेतु कब्ज, बार २ अत्यन्त वेग के साथ बहुत थोड़ा २ पैखाना होता है, मलत्याग के बाद पेट के भीतर शीत और दुर्बलता बोध।

प्लम्बम ३०-२००—मल कठिन भेड़ांरी की तरह। मल-द्वार वेदनायुक्त और सिकुड़ा हुआ। बार २ पेट में दर्द।

पोडोफाइलम ६-३०-२०० सिरपीड़ा और पेट के अकड़ने के साथ कब्ज। मल कठिन, सुखा, कष्ट से निकलता है। जरासा वेग देनेसे ही कांच निकल पड़ता है। उसके

बाद साफ मल और म्युकस निकलता है। प्रातःकाल मे कष्ट की वृद्धि।

पलसेटिला ३०-२००—अत्यन्त कब्ज, मतली, सुबह मुंह बिस्वाद या कडुआ। मल बहुत कठिन, पीठ मे दर्द। कुनाइन सेवन हेतु सविराम ज्वर रुक कर ऐसी हालत हो तो पलसेटिला फायदा करता है। अदल बदल कर कब्ज और दस्त।

रुटा ३०-२००—भेड़ौरी की तरह मल। बार २ मलवेग और उस के साथ काँच का निकलना।

रैटानिया १x-३-६-३०—मलद्वार सूखा, गरम और उस में छुड़ी भोंकने की तरह दर्द। निष्फल मल वेग के साथ मलद्वार मे रक्तपूर्ण शिरासमूह देखा जाता है।

रोबिनिया १x-३-६-३०--मलत्यागकी चेष्टा किन्तु सिर्फ वायुत्याग होता है। पेट वायुपूर्ण अम्लपीड़ा (acidity)।

सेलिनियम ३०-२००—मल इतना कठिन और ऐसा अटका रहता है कि अंगुली से निकालना पड़ता है, मल बाल की तरह मिहिन २ सूतसा।

सिपिया ३०-२००—निष्फल पैखाने की चेष्टा; उससे थोड़ा सा लसा निकलता है। अत्यन्त वेग देनेसे थोड़ा सा भेड़ौरी की तरह मल निकलता है। गर्भावस्था में कब्ज। कोमल मल निकलने में भी कष्ट होता है, पखाना फिरने के समय कांच निकल पड़ता है। मलद्वार में भार बोध।

कोऊहल-विरइया

मैज्जंतेरावण-दार्ण-गंध-लुद्धा गयालिमुहलेहिं।

साइलिसिया ३० २००—मल कठिन, ढेले की तरह बहुत दिन तक मलद्वार में जमा रहता है। मलद्वार में जखम सा दर्द, टीस मारना, अत्यन्त वेग के साथ मल निकलते २ अचानक फिर ऊपर चढ़ जाता है।

सलफर ३०-२००—बार २ पैखाने के वेग और उसके साथ पेट का अफड़ना और अपच चीज का बूदार वायु-त्याग। मल कठिन गुठली की तरह। कूंथने में इतना कष्ट होता है कि रोगी कूंथना त्याग करने के लिये मजबूर होता है।

भेरेट्रम ३०-२००—मलपथ की अचेतनावस्थाके हेतु खाए हुए पदार्थ अच्छी तरह से पच जाने से भी अच्छा पखाना नहीं होता है। बहुत कमजोरी, साधारण मेहनत या मानसिक उत्तेजना से ही ललाट में ठन्ढा पसीना होता है।

सहकारी उपाय—चिनी के साथ सफगोल खाने से कोष्ठ साफ होता है। सागसब्जी, बेलफल पपीता इत्यादि, चूट, तिल, इत्यादि या प्रतिदिन सूजी को पानी में उबालकर दूध के साथ खाने से फायदा होता है। अर्श रोग हेतु कब्ज में यह अति उत्तम है। नितान्त आवश्यक होने से ग्लिसारिन के पिचकारी द्वारा पखाना कराया जा सकता है।

भगन्दर।—FISTULA-IN ANO.

रेक्टम अर्थात् सरलान्त्र के चारो ओर के एरिओलर टीसु (Areolar tissue) में फोड़ा होकर वह फोड़ा

अन्यान्य औषध समूह—कैल्क-कार्ब्व, फ्लुओरिक-एसिड, कैल्क-फ्लुओरिक, क्रिओजोड्, मारकिउरिअस, हिपर-सल्फ; सल्फ इत्यादि का लक्षणानुसार प्रयोग से भी बहुत फल मिलता है।

—:o:—

कृमिरोग। (INTESTINAL WORMS.)

कृमि नाना प्रकार के होते हैं, उन मे से जो २ अकसर देखे जाते हैं ऐसे चंद प्रकार का व्यान नीचे लिखता हू।

(क)—Round worms वा चेरा जाति का कृमि। यह बहुत प्रकार का होता है, जैसो—(१) ऐसकेरीस लुम्ब्रिकइडीस (Ascaris Lumbricoidis), यह कृमि गोल और लम्बा होता है, लम्बाई मे दश वा बारह इञ्ज का होता है, देखने मे सफेद होता है। छोटी अन्त्रीं इस कृमि का बासस्थान है, यह कृमि मुंह से अथवा मलके साथ निकलता है, पेट मे दर्द, मुंह में बदबू, कभी दस्त, कभी कब्ज, भूख न लगना अथवा भूख ज्यादा होना, नाक खुजलाना, मलद्वार खूजलाना, मुंह में पानी आना, जी मिचलाना, कै होना, शिर [illegible] मूर्छा, चिरचिराहा स्वभाव, हिस्टिरिआ वा मृगी-रोग [illegible] फीट (Fit) इत्यादि इस कृमि के लक्षण।

(२ [illegible] वा पीन वर्मस (Thread worms [illegible] कृमि छोटा २ तागा के टुकड़े की

कोऊहल-विरइया

मंज्जंतेरावण-दाणं-गंध-लुद्धा गयालिमुहलेहिं ।

साइलिसिया ३०।२००—मल कठिन, ढेले की तरह बहुत दिन तक मलद्वार में जमा रहता है । मलद्वार में जखम सा दर्द, टीस मारना, अत्यन्त वेग के साथ मल निकलने २ अचानक फिर ऊपर चढ़ जाता है ।

सल्फर ३०-२००—बार २ पैखाने के वेग और उसके साथ पेट का अफड़ना और अपज चीज का बूदार वायू-त्याग। मल कठिन गुठली की तरह। कुंथने में इतना कष्ट होता है कि रोगी कुंथना त्याग करने के लिये मजबूर होता है।

भेरेट्रम ३०-२००—मलपथ की अचेतनावस्था के हेतु खाए हुए पदार्थ अच्छी तरह से पच जाने में भी अच्छा पखाना नहीं होता है । बहुत-कमजोरी, साधारण मेहनत या मानसिक उत्तेजना से ही ललाट में ठन्ढा पसीना होता है ।

सहकारी उपाय—चिनी के साथ सफगोल खाने से कोष्ठ साफ होता है। सागसब्जी, बेलफल पपीता इत्यादि, चूट, तिल, इत्यादि या प्रतिदिन सूजी को पानी में उबालकर दूध के साथ खाने से फायदा होता है। अर्श रोग हेतु कब्ज में यह अति उत्तम है। नितान्त आवश्यक होने से ग्लिसारिन के पिचकारी द्वारा पखाना कराया जा सकता है।

भगन्दर ।—FISTULA IN ANO.

रेक्टम अर्थात् सरलान्त्र के चारो ओर के एरिओलर टीसु (Areolar tissue.) में फोड़ा होकर वह फोड़ा

सरलान्त्र वा मलद्वार के निकटवर्ती किसी स्थान से फुट कर सैन (Sinus) होने से उसको भगन्दर कहा जाता है। भगन्दर तीन प्रकार का होता है। (१) जो भगन्दर का मुख चर्म्म को छेद कर वाहर निकल आता है उस को व्लाइन्ड एक्सटरनल (Blind External) वा बाहर मुंह वाला भगन्दर कहते हैं। (२) जो भगन्दर का एक मुख सरलान्त्र के लसादार झिल्लीका छेद करता है और एक मुंह चर्म्म को छेद कर वाहर निकल आता है उस को सम्पूर्ण भगन्दर (Complete Fistula) कहते हैं। (३) जो भगन्दर का मुंख बाहर नहीं होता है, सिर्फ भीतर एक मुख होता है उस को भीतरी मुख (Blind Internal) भगन्दर (फिस्चूला) कहते हैं।

फोड़ा फटने के पहले बहुत दर्द और गर्मी मालूम होती है वह जगह फूल जाती और लाल हो जाती है। फोड़ा फट जाने के बाद तकलीफ और प्रदाह कम हो जाता है और पीव निकल जाने के बाद जखम सकीर्ण हो कर नाली की तरह हो जाता है और उस में से पतला खून मिला हुआ रस निकलता है। कभी २ वह छिद्र से वायु या मल भी निकल आता है।

चिकित्सा ।

अक्सर लोग कहते हैं कि विना नस्तर के यह विमारी अच्छी नहीं होती है किन्तु यह वात ठीक नहीं है। क्योंकि होमियोपैथिक चिकित्सा द्वारा बहुत रोगी आराम हो चुके हैं।

कोऊहल-विरइया

मंज्जंतेरावण-दाणं-गंध-लुद्धा गयालिमुहलेहिं ।

तरह और सफेद रङ्ग का होता है, लम्बाई मे आधा इञ्च से ज्यादा नही होता है। बड़ी अन्त्री मे खास कर रेक्टम (Rectum) मे इस प्रकार का कृमि बहुत होता है। मलद्वार और नाक खुजलाना, बार २ मूत्र त्याग होना, कूंथना, पेट में दर्द, कांच निकलना, मलद्वार से लसादार रस निकलना इत्यादि इस प्रकार के कृमि के लक्षण है, अक्सर यह कृमि मलद्वार से निकल कर बालिकाओं के योनि मे और बालकों के लिङ्ग के अन्दर प्रवेश कर के उस मे प्रमेह की तरह पीडा पैदा करता है, इस प्रकार के कृमि के प्रभाव से बहुत रोग ऐसा कि दम्मे की बिमारी तक हो जाती है। (३) केश की तरह कृमि (Hairy worms) लम्बाई मे डेढ़ इंच वा २ इंच होता है और साधारणतः सीकम (Caecum) मे वास करता है। इस मे विशेष कोई लक्षण प्रकाश नही होता है। (४) ऐंकाईलोस्टोमम डुओडिनाली (Anchylostomum Deuodonale)—रक्तहीनता ही इस प्रकार के कृमि का प्रधान लक्षण है, मुखमण्डल और पैर में शोथ देखा जाता है, दुर्बलता, दिल धड़कना, मन्दाग्नि, अरुचि इत्यादि भी इस के लक्षण है।

(ख)—फीता जातीय कृमि। (Tape worms)—(१) टिनिया सोलियम (Taenia solium) ही फीता जातीय कृमि मे सर्व्वप्रधान है। यह देखने मे सफेद फीता की तरह होता है, लम्बाई मे १५-१६ फुट और चौड़ाई से

चौथाई इञ्च होता है। इस के लक्षण भी राउन्ड वर्म्स (Round worms) के लक्षण की तरह होता है। (२) टिनिया मेडिया कौननेटा—इस प्रकार के कृमि लम्बाई में १०, १२ फुट और चौड़ाई मे तिहाई इञ्च होता है, लक्षण टिनिया सोलिअम की तरह होता है। (३) बोथरियो केफेलस लेटस (Bothrio Chephalus Latus) यह कृमि १७ से २६ फीट तक लम्बा देखा गया है। लक्षण टिनिया सोलिअम की तरह है।

॥ कृमि चिकित्सा ॥

थ्रेड वर्मस के लिये—सिना सैन्टोनीन, मार्किउरिअस, सैवाडिला, सलफर इत्यादि उत्तम औषधियाँ है।

ऐसकेराइडीस के लिये—चायना, सिना, सैनटोनिन फेरम, कैलकेरिया, इगनेसिया, टिउक्रिअम मार्किउरिअस, सलफर इत्यादि औषधि।

टेप वर्मस के लिये—कैलकेरिया-कार्ब, ग्रैफाइटिस, प्लैटिना पलस, सैवाडिला, सलफर इग्नेसिया, नेट्रमम्युर, नक्स-मोमिका इत्यादि उत्तम औषधियां है।

विशेष भैषज्य तत्व।

ऐपोसाइनम, ३x—भयानक छींक आने के साथ नाक में खुजली, अत्यन्त वमनेच्छा और बमन, पुरषाङ्ग के अग्र-भाग मे खुजली, राउन्डस वर्मस।

आर्जेन्टम-नाइट्रिकम ३०—नाभी और यकृत की जगह पर सामयिक दर्द, दर्द के साथ जी मिचलाना और Mucus बलगम का कै होना, अनियमित ऋतु और प्रायः ही गाढ़ा काला और ढला ढेला खून निकलना है, चेहरा फीका।

ऐस्क्लिपिअस ३x-६x—जीभ सफेद, अत्यन्त शिरपीड़ा, जी मिचलाना अत्यन्त मल और मूत्र का वेग, अत्यन्त भूख, पुरुषाङ्ग के अग्रभाग में अचानक दर्द, ठहर २ कर होना राउन्ड वर्मस।

बेलेडोना ६x-६-३०—ज्यादा जंभाई, निद्रा से चौंक उठना दांत किड़-किड़ाना, बेखबरी से मलमूत्र त्याग या मूत्रकष्ट। टेढ़ी दृष्टि। मसाने मे कृमियां का चलना फिरना सा मालूम होना।

कैल्क-कार्ब ३०-२००—शिर पीड़ा, आंख के चारो ओर नील वर्ण, चेहरा फीका और फूला २ पेट फूला नाभी के चारो ओर दर्द, पेट की बिमारी. हिलने डोलने से पसीना, कन्ठमाला धातु।

चायना ३०-२००—पेट मे दर्द. रात मे और आहार के बाद वृद्धि. जी पचपचाना, पेट मे बोझ मालुम होना, जी मिचलाना, अत्यन्त दुर्वलता, पेट फुला हुआ और नाक में खुजली।

सिकूटा ६x-६-३०—बार २ हिचकी आना, गर्दन में दर्द, ऐंठन के साथ सिर पीछे के तरफ हिल जाना।

सिना ३०-२००—यह औषधि कृमि के लिये सर्व प्रधान है। आँखों के चारो ओर नीला। सर्वदा नाक के अन्दर अंगुली से खोटना, टेढ़ी दृष्टि, अत्यन्त भूख, हमेशा खाने की इच्छा होती है चेहरा फीका और ठन्ढा या लाल वर्ण वो गरम, जो मिचलाना और कै होना, नाभीस्थान में दर्द, पेट फूला हुआ और कड़ा, मलद्वार मे खुजली। मूत्र थोड़ा देर रहने से चूना के पानी की तरह सफेद हो जाना।

फेरम ३x ६x—चेहरा फीका, मलद्वार में खुजली, वेखबरी मे मूत्र त्याग।

इग्नेसिया ६x-६-३०—क्षुद्र कृमियों के हेतु मलद्वार मे खुजली, कन्भलशन के साथ अज्ञानता।

कुप्री ३x-३०—अजीर्ण, अनिद्रा, दुर्वलता के साथ मूर्च्छा, शीतल पसीना, पेट फूलना और कब्ज।

सैनटोनीन—सिना के वदले में इस दवा का प्रयोग किया जाता है, इस के प्रथम और तृतीय शक्ति का विचूर्ण के प्रयोग से विशेष फल होता है।

सैवाडिला ३x-६—इस मे बड़ा २ कृमि कै के साथ निकलता है। मालूम होता है कि कृमि गोला बाँध कर गले मे है। कै होना. जी मिचलाना या पेट मे ज्वाला और मड़ोड़ होना।

सल्फर ३०-२००—नाक और मलद्वार में सुरसुराहट

कोऊहल-विरइया

भंज्जंतेरावण-दाणं-गंध-लुद्धा गयालिमुहलेहिं।

भोजन के पहले कै होना, ११ बजे दिन को अत्यन्त भूख लगना, मलद्वार में छाले पड़ जाना।

टेरिबिन्थ २x-६-३०—मलद्वार में भोंकने की तरह दर्द और ज्वाला, मालूम होता है कि कृमि चल फिर रहा है, ठन्ढा पानी देने से ज्वाला दूर हो जाता है अत्यन्त भूख लगना, ऐंठन और कन्भलशन, डर के मारे चिल्लाता है, टकटकी लगा कर देखना अंगुली को मुट्ठी में बान्ध रखना।

टिउक्रिअम ३x-६-३०—छोटे २ कृमि के हेतु मलद्वार में खुजली।

आनुसंगिक चिकित्सा।

लहसुन के क्वाथ (काढा) से मलद्वार में पिचकारी देने से छोटे २ कृमि मर जाते हैं और बासी पानी के साथ कुछ नमक मिला कर के मलद्वार में पिचकारी देने से कृमि मर जाता है। मलद्वार में खुजली होने से और रात में अत्यन्त अस्थिरता के हेतु एकोनाइट ३x प्रयोग करने से विशेष फल होता है। १०-१५-ग्रेन फटकिरी एक ओउन्स पानी में मिला कर पिचकारी देने से भी विशेष फल होता है।

—०:—

वमन वा कै। VOMITING.

—:०:—

वमन कोई रोग अलग नहीं है। केवल अन्यान्य बिमारीयों के सहयोगी लक्षण मात्र है। इस कारण वमन की चिकित्सा

क पहले इस के प्रकृत कारण अनुसंधान करके तब चिकित्सा करना चाहिये ।

यदि कोई विषैला पदार्थ आहार करने के हेतु बमन हो तब उसी समय ष्टमाक पम्प (Stomach Pum) नामक यन्त्रद्वारा पाकस्थली को साफ कर लेना चाहिये । गोबर घुला हुआ पानी, मछली का धोअन, तेल या नमक मिश्रित गरम पानी बहुत परिमाण से पिलाने से भी कै होकर पेट साफ होता है ।

किसी औषधि द्वारा कै आराम न हो तो बरफ, कच्चा नरिअल का पानी, इत्यादि ठन्ढी चीज पीने से बमन की कमी हो सकती है ।

(१) बमन के बाद ही निद्रा होने से—इथूजा, कुप्रम ।

(२) मतली और जी मिचलाना रुक जाने पर भी लगातार बमन होना—एन्टिम क्रुड ।

(३) बमन के उपरान्त दस्त, कम्पन और मूर्च्छा—एन्टिम-टार्ट ।

(४) रक्तबमन वा हिमाटिमिसिस Haemate-mesis)—एकीन, आरनिका, आर्स फेरम, इपिकाक, वेल, कार्वो-भेज, पल्स, चायना, लैकेसिस, इरिजीरन फस-फोरस, हैमामेलिस ।

(५) विष्ठा बमन—ऐपामरफिया, वेल, नक्स, ओपिअम ।

कोऊहल-विरइया

मज्जंतेरावण-दाणं-गंध-लुद्धा गयालिमुहलेहिं ।

(६) काला रङ्ग का सड़ा वो तरल वमन—आर्स, भेरेट्रम, हेलिबोरस ।

(७) खाई हुई चीज का अपच वमन—इउपेटोरिअम इपिकाक, फेरम पल्स, कैमोमिला ऐन्टिम—क्रुड, आर्स हाइयोसायमास, नक्स, आंडरिस ब्राइओनिया, फसफोरस ।

(८) आहार के बाद ही वमन होना—आर्स, इपिकाक सिकेली ।

(९) आहार के बाद खाई हुई चीज खट्टा हो कर वमन हो जाय तो कैलकेरिया, हिपर-सल्फ, पोडोफाइलम, पल्स ।

(१०) खाई हुई चीज कई एक घन्टे के बाद वमन हो जाती हो—क्रियोजोड़ ।

(११) पी हुई चीज पेट में गरम होने से ही निकल जाता हो—फसफोरस ।

(१२) पानीय द्रव्य के पान करने से ही उसी समय निकल जाता है—आर्स, विसमथ, क्रोटन, इउपेटोरिअम ।

(१३) किस्ती, गाड़ी इत्यादि पर सवार होने से वमन—ककुलस, कलचिकम, नक्स-मसकेटा, टेवेकम ।

(१४) सी-सिकनेस (Sea sickness) वा समुद्रयात्रा करने से वमन होना—ककुलस ।

(१५) गर्भवती स्त्रियों के वमन मे कार्बोलिक एसिड, इपिकाक, नक्स, फेरम, पल्स, सिपिया, आर्स, नेट्रम-मिउर फसफोरस ।

(१६) कृमि के हेतु बमन—सिना, सैन्टोनीन, इपिकाक नक्स, सलफर, पलस्।

(१७) पित्त बमन—(१७) कैमोमिला, ऐनटिम क्रुड, नक्स (२) आर्स ब्राइओनिया. इपिकाक सिना सिपिया, इउपेटोरिअम (३) इगनेसिया, नेट्रम-मिउर. पल्स सलफर।

(१८) कडुआ बमन—ऐन्टिम क्रुड ब्राइओ, पल्स, इउपेट।

(१९) बमन के स्वाद और बू खट्टा—(१)—ऐन्टिमक्रुड, कैलकेरिआ (२) चायना, आइरिस नक्स लाइको. हिपर, मेग-कार्व, सलफ फस, ऐसिड—सलफ।

(२०) बमन में बलगम की तरह वस्तु—(१) आर्स पल्स, इउफरविया, इपिकाक (२) ड्रोसेरा, नक्स, (३) ऐन्टिमक्रुड, कैलकेरिया, केलि-वाइ, (४) कैमोमिला, चायना, सिना मार्क, आइरिस।

(२१) बमन पानी के सदृश—(१) आर्स, वेल, ब्राइ, इपिकाक, (२) विसमथ, चायना, कुप्रम, कस्टिकम, ऐन्टिम-टार्ट, नक्स, पल्स।

(२२) शरीर संचालन करने से ही बमन।—आर्स, ब्राइ, कलचिकम, भेरेट्रम।

(२३) बमन के साथ दस्त।—आर्स कुप्रम, इपिकाक, फस, पल्स, भेरेट्रम, आइरिस।

(२४) बमन फेनयुक्त।—इथुजा, ऐन्टिम टार्ट।

(२५) वमन फेनयुक्त, दूध की तरह सफेद इथुजा ।

(२६) पीला वमन होना – एन्टिमक्रुड, आर्जेन्टम-नाइट्रम, सिकेल ।

(२७ दुग्ध वमन---इथुजा, आर्जेन्टम-नाइट्रम, कैलकेरिआ फस ।

(२८) दूध दही की तरह जम कर कै होना ।—इथुजा, एन्टिम क्रुड, कैलकेरिआ ।

(२९) दूध जम कर वडे २ ढेले वन कर कै होना—इथुजा ।

(३०) दूध और मां का दूध का कै होना ।—साइलिसिया ।

(३१) दूध खट्टा हो कर वमन होना-कैलकेरिआ कार्ब ।

(३२) अन्डे की सफेदी के ऐसा के होना –जट्रोफा ।

(३३) वमनमञ्ज—इथुजा, आर्स, ब्राई, इपिकाक, पोडो, भेरेट्रम ।

(३४) वनगम का कै—इपिकाक ।

(३५) तेल की तरह वमन—इथुजा, नक्स ।

(३६) आहार के उपरान्त वमनकी वृद्धि—आर्स, फेरम, इपिकाक सल्फ नक्स, पल्स ।

(३७) प्रति दिन प्रात काल मे वमन—आर्स, नक्स, भेरेट्रम ।

बमनेच्छा वा मतली ।

NAUSEA

(१) पानी पीने के उपरान्त बमनेच्छा—आर्स, इउपेट ।

(२) पानी पीने से बमनेच्छा कम होना—लोबेलियो ।

(३) बमनेच्छा लेकिन बमन नहीं होना—विस्मथ, कलोसिन्थ, ऐसारम, आर्स, इगनेसिया, जैवोरेन्डी, इपिकाक, पोडो सिकेल, ऐन्टिम-टार्ट ।

(४) उठ कर खड़ा होने से बमनेच्छा—पिक्रिक एसिड, ब्राई ।

(५) खाद्य वस्तु देखने से ही बमन की इच्छा—आर्स, कलचिकम ।

(६) बमन और मतली का आनुसंगिक चिकित्सा :—

दिमाग में खून जमा होने से बमन में सिर में ठन्ढा पानी या वर्फ की पट्टी के प्रयोग फायदायक है, मास्टार्ड प्लास्टार (Mastard Plaster) मेदे के ऊपर प्रयोग करने से भी फल होता है, कपड़ा को तह कर के ठन्ढा पानी या वर्फ के पानी से भिगा कर पेट के ऊपर रखने से भी फायदा होता है ।

—o—

अजीर्णदोष वा डिसपेप्सिया।

DYSPEPSIA.

कारण—(१) पाकस्थली से अपरिमित बलगम निकलना, पाकस्थली के प्रदाह, वो जखम वगैरह, मिउकस झिल्ली की स्थूलता वा उस में किसी प्रकार के इरपशन इत्यादि का होना। (२) पाचक रसों का गुण अथवा परिमाण के अदल बदल, जैसा मेदा के रस अथवा यकृत किम्वा अन्त्री से जो रस निकल कर परिपाक क्रिया की सहायता करता है, उसी में किसी प्रकार के अदल बदल होने से, (३) स्नायु विधान की गड़बड़ी होने से भी अजीर्ण रोग होता है। प्राय देखा जाता है कि अत्यन्त मानसिक परिश्रम व ज्यादा चिन्ता करनेवालों को डिसपेप्सिया होता है। (४) बहुत प्रकार उत्तेजक खाद्य भी डिसपेप्सिया के कारण है यथा—बहुत शराब पीना, बहुत मसालेदार खाद्य इत्यादि।

लक्षण—(१) भूख कम या मामुली से अधिक होना। (२) पेट फूलना, दिल धड़कना, स्वांस कष्ट। (३) पेट में अम्ल होने से खट्टा ढेकार, जी पचपचाना छाती में ज्वाला इत्यादि होना है। (४) कभी २ किसी २ को खाये हुए पदार्थ बिलकुल हजम नहीं होता है। इसलिये कै और दस्त होता है। पेट के ऊपर दबाने से दर्द मालूम होता है। पेट फूला

और भारी मालूम होता है। (६) क्रमशः रोगी शारीरिक वा मानसिक कोई काम नहीं कर सकता है। नींद अच्छी नहीं होती है। स्वाभाव चिरचिराहा होता है। नींद में नाना प्रकार का स्वप्न होता है। (७) रोगी क्रमशः रक्तहीन, बिवर्ण व दुर्वल होता और सूखता जाता है।

चिकित्सा—

एनाकार्डिअम ३०—आहार काल मे अजीर्ण का लक्षण समूह दूर हो जाता है किन्तु आहार के बाद ही, फिर वे सब लक्षण देखे जाते है।

एन्टिमक्रुड ६-३०—अति भोजन हेतु पीड़ा, जीभ के ऊपर दुध की तरह सफेद और मोटा मैल, ढेकार के साथ खाद्य वस्तु निकलता है, मल के कुछ हिस्सा ढेला २ और कुछ हिस्सा बिलकुल पानी की तरह।

आर्निका ३०— आघात हेतु पीड़ा, पाकस्थली में आघात की तरह दर्द, सड़े अन्डे की तरह बूदार ढेकार उठता है। मेदा भारी मालूम होता है।

आर्सेनिक ३०-२००—वर्फ, कुलफी, फल और अम्ल वस्तु आहार हेतु पीड़ा, कोई चीज खाने या पीने से जी मिचलाना या कै होना, मेदा में गरमी और ज्वाला; बहुत प्यास किन्तु थोड़ा २ पानी पीना, बेचैनी और घबराहट।

ब्राइओनिया ३०-२००— गरमी के दिनो में या

अत्यन्त उत्तापित हो कर ठन्डा पानी पीने से पीड़ा, भूख न लगना, वार २ ढेकार उठता है ग्रास कर खाने के बाद खाद्य वस्तु कड़ुआ लगता है, कब्ज, मल कठिन और सूखा, रोगी चिरचिराहा ।

कैलकेरिय-कार्व ३०-२००— मेदा में बहुत बोझ मालूम होना, खट्टा स्वाद, खट्टा स्वादयुक्त पित्त-वमन, हाथ पैर ठन्डा और गीला, रजःस्राव बहुत जल्दी २ और बहुत परिमाण से होना है और बहुत देर तक रहता है। कभी २ खाद्य वस्तु मल के साथ देखा जाता है ।

कार्बो-भेज ३०-२००—वार २ ढेकार उठना है और उस से कुछ देर के लिये आराम मालुम होता है, मामुली चीज खाने से भी हजम नही कर सकता है, मेदा ज्वाला, खट्टा ढेकार रात्रि में जागना और ज्यादा संगम के बाद पीडा, दस्त के साथ पेट फूलना ।

कैमोमिला १२-३०-२००— मेदा मे दर्द, मेदा फूला, पित्त वमन, स्वाद कड़ुआ, रोगी अत्यन्त बदमिजाज ।

चायना ३०-२००— पेट फूला और कड़ा, ढेकार उठने से कुछ आराम नही मालूम होता है, ढेकार मे पित्त की तरह स्वाद, दुर्वलता, रोगी भोजन के बाद लेटा रहना चहता है। दुर्वल व्यक्ति, जिस के शरीर के रक्तादि जीवनी-शक्ति रक्षक तरल पदार्थ का नाश हो गया है ।

हाइड्रास्टिस ६-३०—मेदा मे दर्द और उस मे अत्यन्त दुर्बलता के साथ मूर्छा होने की तरह मलुम होना; ढेकार के साथ खट्टा तरल पदाथ निकलता है । रोविनिया, एसिड-सल्फ); मेदा मे कतरने की तरह दर्द, कुछ खाने से आराम मालूम होना ।

लाइकोपोडिअम ३०-२००—अत्यन्त भूख लगना; किन्तु सामान्य एक या दो ग्रास कर खानेसे ही, पेट भर जाता है, पेट फूलना; पेट मे गड़ २ शब्द होना, मूत्र मे लाल रेत की तरह गाद, कब्ज, बार २ पैखाना का बेग, साम को ४ बजे से ८ बजे तक पीड़ा की वृद्धि ।

नक्स-भोमिका ३०-२००—प्रोतः काल मे मुंह मे सड़ा या कडुआ स्वाद, खट्टा ढेकार, मेदा मे दर्द, भोजन के एक या दो घटे के बाद पेट मे दर्द, बहुत तकलीफ होना । कब्ज, बार २ पैखाना फिरने को निष्फल चेष्टा, कभी २ दस्त होना, इन्द्रिय-सेवन वो गुरुपाक द्रव्य भोजन हेतु पीड़ा । रोगी का स्वभाव अत्यन्त चिरचिराहा ।

पल्सेटिला ३०-२००—जीभ सफेद और पीलापन प्रातः काल मे मुंह का स्वाद खराब रहता है, प्यास बिलकुल नहीं रहता है, बार २ ठन्ढ और गरमी अदल बदल कर मालूम होती है, स्वभाव बहुत नर्म ।

सल्फर ३०-२००—खट्टा ढेकार, मालूम होता है कि मेदा अम्ल से पूर्ण है, ११ बजे दिन को पेट में इतनी दुर्बलता और

कोऊहल-विरइया

। ...गंध-लुद्धा गयालिमुहलेहिं ।

खाली २ मालूम होती है कि कुछ भोजन न करने से रोगी ठहर नहीं सकता है, वहुत भोर में नीन्द से आंख खोलने से ही पखाना के वेग होना ।

आनुसंगिक चिकित्सा । पथ्य के विषय में ख्याल रखना चाहिये, सब डिसपेप्सिया के रोगी के लिये पथ्य का कोई खास व्यवस्था नही हो सकता है । कारण सब रोगी को हालत एक सी नहीं होती है । इस विषय मे रोगी को पुछना होगा कि किस २ चीज खाने से उसे आराम जान पड़ता है और किस चीज खाने से तकलीफ होती है । उन ही सब मे से रोगी को पथ्य की व्यवस्था करनी चाहिये । शारीरिक परिश्रम, प्रातःकाल मे भ्रमण इत्यादि विशेष फलदायक है । प्रति दिवस स्नान करना अच्छा है, किसी प्रकार के भारी द्रव्य भोजन नहीं करना चाहिये । भोजन के समय पानी पीने को न दे करके वहुत रोगी मे फायदा मिला है । जिस से हमेशा दिल खुश रहता हो ऐसा उपाय करना चाहिये, इस के अलावे काफी, चाय या तम्बाकु व्यवहार नहीं करना चाहिये ।

हिमाटिमेसिस (HAEMATEMESIS), वा रक्त वमन ।

—:※:—

रोग परिचय—मेदा से बहुत परिमाण से खून मुंह के रास्ता से निकलने से उसको रक्तवमन कहते हैं। स्थानिक धमनी, शिरा वा केपिलारी टुट जाने से खून निकलता है।

कारण—यह स्वयं एक स्वाधीन रोग नहीं है, नाना प्रकार के पीड़ा से यह हो सक्ता है। साधारणतः मेदा की किसी खून बहने वाली नलि में चांप पड़ना वा वह टुट जाने से रक्त वमन होता है। इसके सिवाय गरम दवा सेवन वा शराब पीना, चोट लगना, खूनी बवासीर का खून बन्द होना, मासिक धर्म्म का रुक जाना वगैरह कारण से भी रक्तवमन हो सक्ता है।

लक्षण—थोड़ा २ खून निकलने से कोई लक्षण नहीं मालूम होता है। ज्यादा खून निकलने के कब्ल में मेदा में भारपी व पूर्णता बोध, दर्द, मुंह में नमकीन स्वाद, जी मिचलाना दुर्बलता, सिर चक्कराना, सिर झिमाना वगैरह लक्षण प्रकाश पाता है। खून की हालत व रङ्ग हमेशा एक सा नहीं होता है॥ कभी लाल, कभी काला, कभी पतला, कभी गाढ़ा, कभी ढेला

कोऊहल-विरइया

५। गंध-लुद्धा गयालिमुहलेहिं।

ढेला होता है। वमन के बाद तेज प्यास होता है, कालारङ्ग का मलत्याग होता है, वमन न होकर कभी कभी खून का दस्त होता है—इस मे अलकतरा की तरह दस्त होता है।

रोग निर्णय—रक्त खांसी अर्थात फेफड़े से खांसी के साथ खुन निकलने के साथ इस रोग का भूल हो सक्ता है। फेफड़े से खून निकलने के साथ प्रायः खांसी रहती है।

भावीफल—यह उतना खराब नहीं है लेकिन ज्यादा खून निकलने से रोगी दुर्बल व निढाल होकर मर जा सक्ता है।

आनुसंगिक चिकित्सा—रक्तवमन होता रहने से रोगी को स्थिरभाव से लेटा रखना चाहिए। प्यास के लिए ठन्ढा जल न देकर बरफ का टुकड़ा देना चाहिए। खून वन्द हो जाने से फिर से रक्तवमन न हो सके इस ख्याल से थोड़ा २ हल्का गिजा देना चाहिए। जब तक खून वन्द न हो तबतक कोई कड़ी चीज का गिजा न देना चाहिए। यदि रक्तवमन बहुत तेज हो और किसी तरह से वन्द न हो तब रोगी को बार २ गरम पानी पीलाना चाहिए।

चिकित्सा—

मेदा में चोट के कारण रक्तवमन—आर्निका, आर्सेनिक, हैमामेलिस; इपिकाक।

डर के कारण रक्तबमन—एकोनाइट, ओपिअम, नक्स।

मेदा मे ठन्ढ लगने के कारण रक्तबमन—हायोसायमस, पल्सेटिला।

गैस्ट्रोसिस (Gastrosis)—आर्सेनिक, हायोसायमस, इपिकाक, नेट्रम-म्युर, फस सेंगुनेरिया।

तिहाल के कारण रक्तबमन—आर्स, नक्स।

जीगर के कारण रक्तबमन—आर्स, हायोसायमस, नक्स।

रक्तबमन के साथ चेहरा लाल—बेलाडोना, कैक्टस, हायोसायमस।

रक्त बमन के साथ चेहरा जर्द—आर्स, कार्बो, इपिकाक, नेट्रम—म्युर, नक्स, सिकेली।

रक्त बमन के साथ काला रंग का दस्त—आर्स बेलाडोना, हायोसायमस, इपिकाक, नेट्रम-म्यूर, नक्स, स्ट्राम नियम।

रक्तबमन के साथ नाड़ी सुस्त वा पतली—आर्स, कार्बो-भेज, इपिकाक, सिकेली।

रक्तबमन के साथ पूर्ण व कड़ी नाड़ी—एकोनाइट, भेरेट्रम-भिर।

मानसिक उत्तेजना के बाद रक्तबमन—एकोनाइट हायोसायमस. नेट्रम, फस-एसिड।

हैजा बन्द होकर रक्तवमन—इपिकाक, लाइकोपोडियम, पलसेटिला। फस, ब्रायो, मिलिफोलिअम।

बवासीर का खून बन्द होकर रक्तवमन—कार्बो-भेज, मिलिफोलिअम, नक्स, सलफर।

एकोनाइट ३x-से-३०—जी मिचलाना के होना, मेदा मे अचानक दर्द, नाडी पूर्ण और द्रुत, शरीर मे ज्वाला के साथ गर्मी। अत्यन्त प्यास, घबराहट, बेचैनी।

आर्निका ६-३०—चोट लगने से पीड़ा, जी मिचलाना, कालापन व ढेला २ रक्त वमन।

आर्सेनिक ३०-२००—मेदा मे बहुत ज्वाला, बेचैनी, घबराहट अत्यन्त प्यास किन्तु थोडा २ पानी पीता है। काला रङ्ग के रक्तवमन और रक्तदस्त।

बेलेडोना ६-३०—दर्द अचानक आरम्भ हो कर अचानक बन्द हो जाता है, दिमाग मे खून को ज्यादती कन्भलशन, भयानक हिक्की।

ब्राइओनिया ३०-२००—ऋतु बन्द हो कर रक्त वमन होना, अत्यन्त प्यास, बहुत देर २ बाद बहुतसा पानी पीता है और हिलने डोलने से बिमारी की वृद्धि।

कार्बो-भेज ३०-२००—अत्यन्त रक्तस्राव के हेतु बहुत

भुयईद-फणा-मणि-किरण-जाल-विच्छुरियं-वियड-वच्छंगलो ।

निस्तेजता और पतनावस्था (Collapse) मूर्च्छा, शिर चकराना, मेदा में ज्वाला, शरीर ठन्ढा, स्वांस ठन्ढा, नाड़ी लुप्त, हमेशा हवा करने को कहता है।

चायना ३०-२००—अत्यन्त रक्तस्राव के हेतु दुर्बलता, कान में मन २ शब्द होना।

क्रोटेलस ३०—जीवनि-शक्ति की बहुत कमजोरी, अत्यन्त वेमन, शरीर पीली हो जाना।

फेरम मेट ३०—जी मिचलाना, उस के उपरान्त बहुत लाल व ढेला २ रक्त निकलना, चेहरा फीका, किन्तु सामान्य करवट लेने ही से चेहरा लाल हो जाता है।

फेरम-फस ६-३०—चमकीला लालरङ्ग का रक्तवमन, बुखार, मेदा में दर्द, जी मिचलाना, दम फूलना, बेचैनी।

हैमामेलिस ३-६—जी मिचलाना, काली रङ्ग खून का कै, मेदा मे धकधकाना, पेट मे बोझ गड़गड़ाहट और दर्द अलकतरा की तरह दस्त।

हायोसायमस ६-३०—शराब पीने वालों का रक्तवमन, उसके साथ हिचकी और कडुआ ढेकार आना. चमकीला, लाल रङ्ग का रक्तवमन अथवा रक्त मिश्रित बलगम। जीगर की शिकायत।

कोप्रोडियम,
-कार्बो-भेज,
होना, मेदा
में ज्वाला के
जी मिचलाना,
लाल, बेचैनी,
पीता है।
कम हो कर
को ज्यादती
रक्त वमन
पानी पीता
के हेतु बहुत

भोगीन्द्रफणा-
वालिखमुखरः ।
८-४-२००]
रत्नग्रीभस ।
। श्रवणावतंस-
श्कुर्मितटः ।
गटाङ्गण्डामन ॥
गामिनमही अं-
॥ २९१ ॥
स्वश्रिया गतं
अ ॥ २९२ ॥
अर्थान्नान्यान्-
ण्णाहयवीमन-

इपिकाक ३-६-२०—लगातार मतली, मेदा में धकधकाना, चमकीला लाल खूनका कै, प्यास, नाड़ी जल्द व पतली दुबली, अलकतरा की तरह दस्त व उस के बाद कमजोरी ।

इरिजिरण ३-६—रक्तवमन के साथ मेदा मे ज्वाला, जी मिचलाना ।

लैकेसिस ३०-२००—यकृत की पीड़ा, रक्तवमन, रक्तदस्त, मेदा मे जखम । वसन्त काल मे विमारी की उत्पत्ति होती है ।

लाइकोपोडिअम ३०-२००—यकृत की पीड़ा, वमनेच्छा के साथ ही साथ ढेला २ रक्त वो गाढ़ा सब्ज रङ्ग की चीज का कै होता है ।

मिलिफोलिअम १.३.६,३०—बहुत लाल रङ्ग के रक्त वमन ।

नक्स-भोमिका ६-३०-२००—अजीर्णता, चमकीला लाल रङ्ग अथवा काला खून का कै, उसके साथ मतली, मूर्च्छा, सिर चकराना, मेदा में ज्वाला व दर्द और बोझ, कब्ज अथवा अलकतरा की तरह दस्त ।

फसफोरस ६-३०—हैजा बन्द होने से रक्तबमन, कौफी के चूर्ण के ऐसा कै, उसके साथ ज्वाला व तकलीफ, ठन्ढा पानी पीने की इच्छा और उससे आराम।

पल्सेटिला ६-३०-२००—मासिक रुक जाना, ठन्ढ लग कर बिमारी होना, जी मिचलाना, चेहरा मलिन और फीका, पीत या काला खून, जल्दी जम जाता है।

सिकेल ३x-६x—बहुत परिमाण से, खाकी रङ्ग की और गोन्द की तरह चीज अथवा पित्त मिला हुआ रक्तवमन, निस्तेज अथवा पतनावस्था, ठन्ढा चिपचिपा पसीना, पतली नाड़ी, यकृत या मेदा में सड़ा जखम।

कोऊहल-विरइया [२८०–

जलोदरी। ASCITES.

उदर की आवरक झिल्ली वा पेरिटोनियम में जल संचित होने से उसको जलोदरी कहते हैं। इस रोग मे उदर समभाव से फूल जाता है, पारकशन वा अंगुली के आघात द्वारा परीक्षा करने से फूली हुई जगह में स्थूल (Dull) शब्द होता है और पानी की हिलोर (Fluctuation) मालूम पड़ता है. रोगी की अवस्थिति के अनुसार फूलने की जगह अदले बदल होती है। यथा—खड़ा होने से पेट का निम्न भाग अधिक स्फीत होता है, शयनावस्था में चित् होने से उदर के दोनों पार्श्व अधिक स्फीत होता है अधिक जल सञ्चय होने से स्वांस प्रस्वांस में अधिक कष्ट होता है। दोनों निचले शाखें और जननेन्द्रिय समूह सोथयुक्त हो जाता है। उदर में अंगुली के अग्रभाग द्वारा आघात करने से थ्रिल (Thrill) वा तरल पदार्थ का कम्पन मालूम होता है।

चिकित्सा---

एपिस---मूत्र अल्प, प्यास न रहना, उदर मे दर्द, हमेशा बैठे रहने और हर हालत में स्वांस प्रस्वांस में कष्ट होता है, शरीर के भिन्न २ स्थान में ज्वालायुक्त डंक मारने की तरह दर्द, स्कारलेट ज्वर, जरायु के फोड़ा और अंत्रप्रदाह के बाद रोग होने से अवश्य यह औषधि का प्रयोग करना चाहिये।

B पुरी रम्या.

एपोमाइनम:—३x से ३०—पाकस्थली दुर्बल, ऐसा कि एक बिन्दु जल भी निकल जाता है । उदरामय । मूत्र काढ़ी की तरह, मुखमंडल कुछ फूला । स्कारलेट फिवर के बाद इस दवाई के प्रयोग से उपकार होता है ।

आरसानक:—३०, २००—चेहरा विवर्ण मिट्टी की तरह अथवा पीला । अत्यन्त दुर्बलता, जीभ सूखी, अत्यन्त तृष्णा, बहुत जल्दी २ किन्तु बहुत थोरा २ जल पीता है; स्वांस कष्ट, व्याकुलता, अस्थिरता, शरीर में ज्वाला ।

ब्राइओनिया:— ३०, २०० दिमाग में खून की ज्यादती निद्रा के उपरान्त उठने के समय शिर चकराना, सामान्य हिलने डोलने से स्वांस कष्ट होता है । अत्यन्त प्यास, मूत्र अल्प, मूत्रत्यागकाल में ज्वाला, अत्यन्त कब्ज ।

चायना:—३० २०० शरीर की रक्तहीनता, प्लीहा यकृत की पीड़ा हेतु जलोदरी में विशेष उपयोगी है ।

डिजिटेलिस:—६-३०-२०० मूत्रत्याग में अत्यन्त कष्ट चेहरा अत्यन्त मलिन, नाड़ी अत्यन्त दुर्बल अथवा सविराम पसीना शीतल, शरीर फूला ।

हेलिबोरस:—६ से २०० तरुण रोग में, स्कारटेल ज्वर के उपरान्त यह पीड़ा होय तो, निद्रालुता कुछ पुछने से उत्तर देने में देर होता है । अंत्री में दर्द, बार २ अल्प २ मूत्रत्याग ज्वर, मुख के स्नायु में और वायां ओर के दांत में दर्द ।

लैकैसिसः—३०-२०० यकृत, प्लीहा और हृदरोग के साथ शोथ। ज्वर, मूत्र अल्प और काला रङ्ग।

लाइकोपोडिअमः—३०-२०० यकृत की पीड़ा, शराब पीने के हेतु, रक्त स्राव के वाद अथवा सविराम ज्वर के उपरान्त शोथ। निम्न शाखा का क्षत स्थान से पानी निकलता है, मूत्र थोड़ा और उस में लाल रेत की तरह गाद देखा जाता है शरीर के ऊपर के आधा भाग सूखा, किन्तु निम्नांश में शोथ। एक पांव ठन्ढा और दुसरा पांव गरम।

मार्किउरिअसः—६-३० यकृत की पीड़ा हेतु शोथ उदर फूला व शीतल।

मेदा वा पाकाशय का प्रदाह वा गैस्ट्राइटिस। (GASTRITIS.)

रोग परिचय—मेदा की वलगमी झिल्ली के प्रदाह को पाकाशय-प्रदाह कहते हैं।

कारण—ज्यादा ठण्ढ लगना अथवा जुलाव लेना वा किसी प्रकार का उत्तजक विष वा चीज मेदा मे जाने से उसका प्रदाह होता है। गरम शरीर में ठंढा पानी या वरफ इत्यादि पीने से मेदा मे प्रदाह हो जाता है। अलावे इसके, मेदा का कैन्सर

जहरबाद वा जखम के साथ यह रोग हो जाता है । अनाहार व शारीरिक और मानसिक अवशाद से भी यह हो सकता है ।

लक्षण—मेदा का नया प्रदाह में ज्वाला, कतरने की तरह दर्द, टनकना, चांप देने से वा हरकत करने से तकलीफ की ज्यादति इत्यादि लक्षण होता है । प्यास होता है लेकिन ठन्ढा पानी पीने से तुरन्त कै हो जाता है । मेदा में बोझ मालुम होता है—मेदा की जगह छुने से गरम मालूम पड़ती है । बुखार होता है, नाड़ी पूर्ण व जल्द, जीभ का दोनों बगल व अगला हिस्सा लाल रङ्ग व मध्य भाग सफेद लेपदार, रोगी चितभाव से टांग को मोड़ कर लेटा रहता है मूत्रबन्द व कब्ज होता है । रोगी की शेष अवस्था में मुंह में हार्पिज वा एक किस्म का जखम होता है, और मेदा में भी जखम हो जाता है । प्रथम हफ्ता में सान्निपात के साथ इस रोग का भूल हो सकता है ।

भावीफल—इस रोग का भावीफल उतना अच्छा न है रोग कठिन होने से नाड़ी जल्द व पतली होती है । आंख व चेहरा धस जाता है । हाथ पांव व चेहरा पर ठंढा पसीना होता है, शेष में ऐठन होकर रोगी मर जाता है ।

आनुसंगिक चिकित्सा—रोगी को थोड़ा २ ठण्ढा पानी वा बरफ का टुकड़ा पीने को दिया जाता है । गरम पानी के साथ फ्लानेल से मेदा पर सेंक देना अच्छा है । कब्ज रहे तो सुसुम पानी साबुन घोल कर उससे पिचकारी देना

चाहिये। रोग की कमी होने से सागु बारली, दूध इत्यादि तरल वस्तु का गिजा देना चाहिये। जब तक रोग की अच्छी तरह से कमी न हो तब तक कठिन खाद्य न देना चाहिये।

चिकित्सा—

एकोनाइट ३x६—तेज ज्वर के साथ सख्त दर्द मेदा मे ज्वाला व सूई भोकने की तरह दर्द, तेज प्यास, घबड़ाहट मौत की डर, ठण्ढी सूखी हवा लग कर बिमारी होना।

आर्निका ६-३०—मेदा में चांप व कतरने की तरह दर्द मतली, ढेकार, मैला लाल रङ्ग की चीज का के, स्वाद कडुआ, तमाम बदन में ज्यादा दर्द सिर गरम, देह ठण्ढा।

आर्सेनिक ६-३०—मेदा में ज्वाला के साथ तेज दर्द, तेज प्यास लेकिन जल्द २ थोड़ा २ पानी पीना, खाद्य व पानीय का वमन, वमन काल में मेदा में दर्द ज्यादा बेचैनी घबड़ाहट, मौत का डर नींद न होना।

बेलाडोना ६-३०—मेदा में चांप की तरह दर्द, वह कन्धा व छाती तक फलता है। मेदा में दर्द एकाएक आकर एकाएक ही छुट जाता है। सिर में खून का दौड़ा व धक धक दर्द, तेज विकार; सोरगुल व रोशनी बरदास्त न होना, रूलाई; बार २ चौंक उठना।

ब्राइयोनिया १२-३०-२००—मेदा में सूई चूमने की तरह

दर्द, हरकत से दर्द की ज्यादती, जीभ सूखी व सफेद लेपदार, तेज प्यास, कै, हूल आना।

कैन्थारिस:- ६-३०—कै व उसके साथ शूल की तरह दर्द मेदा में ज्वाला, बार २ पेशाव की वेग व कतरा २ पेशाव होना, कै व हूल होना।

कार्बो-भेज:- ३०-२००-मेदा में ज्वाला, खट्टा ढेकार, थोड़ा सा खाने से भी दर्द हो जाता है, पेट में ज्यादा हवाका जमा होना, खट्टी चीज खाने की इच्छा।

हायोसायमस:— ६-३० मेदा में ज्वाला, उस के साथ खून का कै होना, मेदा पर स्पर्श बर्दास्त न होना, यकृत की जगह में सूई चुभना सा दर्द।

इपिकाक:— ६-३०- मेदा में सख्त दर्द, लगातार, ज्वाला व कै, मल सब्ज, पेट में शूल दर्द।

नक्स भोमिका:— ६-३०- मेदा में ऐंठने वाला दर्द उस में ज्वाला, खट्टी, बूदार बलगम अथवा खून का कै, कब्ज, सिर दर्द, शराबखोरी की बीमारी।

पल्सेटिला:- ६-३०- २००—मेदा में छुरी भोंकने की तरह दर्द, पेट तना हुआ मालुम पड़ता है, पानाहार के बाद मतली व कै। सिर में चक्कर, शीत बोध, स्वाद कडुआ पतला दस्त, शाम को तकलीफ की ज्यादती।

सैंगुइनेरिया:- ६-३०-मतली के साथ सिर पीड़ा (शीत

व गरमी , वमन के साथ मेदा में ज्वाला , तेज प्यास . जीभ नीला रङ्ग , होठ सूखा , गला मे सुरसुराहट के साथ खासी ।

मेरेट्रम:- ६-३० – तेज प्यास , कोई चीज मेदा मे जाने से मेदा मे ज्यादा देर नहीं ठहरती है । कमजोरी , ठन्ढा पसीना , खास कर कपाल मे , नाड़ी पतली , करीव गुम हुई , ज्यादा दस्त व कै, पेट मे शूल ।

अंतरी का प्रदाह वा एन्टाराइटिस ।

(ENTERITIS)

रोग परिचय:—अन्तरी वा अन्तरी की गिलाफ झिल्ली मे प्रदाह होने से उसका अन्त्र प्रदाह वा एन्टाराइटिस कहते हैं, इस से तमाम अन्तरी वा उस के कोई हिस्से का गिलाफ का प्रदाह हो सक्ता है। साधारण प्रदाह वा सर्दी के कारण प्रदाह, दोनों प्रकार का हो सक्ता है।

कारण—ज्यादा भोजन करना, जुलाब लेना, ठन्ढ लगना इत्यादि कारण से यह रोग होता है अन्तरी में कैन्सर टिउमर, सान्निपात ज्वर , प्रसूत का ज्वर, फेफड़े का प्रदाह, दांत निकलना वगैरह के समय भी यह हो सक्ता है ।

लक्षण—इस से पेट में खास कर नाभी देश मे सख्त दर्द, पेट पर चांप देने से दर्द, मतली, कै, दस्त, अथवा सख्त कब्ज होता है। पेट में तकलीफदार शूल, पानी की तरह दस्त, मल में आंव रहता है । ज्वर कम्प व पसीना होता

है। नाड़ी जल्द व तार की तरह होती है, सिरपीड़ा, कमजोरी वगैरह रहती है, प्रदाह तेज होने से ज्वर के साथ जीभ लेपदार व सूखी रहती है।

भावीफल—यह उतना शुभ न है। ज्यादा पसीना, हिचकी, दुर्बलता इत्यादि हो कर मौत हो सक्ती है।

आनुसंगिक चिकित्सा—रोगी को स्थिरभाव से लेटा रखना चाहिए। पेट पर गरम पानी से सेंक देना, अच्छा है। शीतल जल पीने को देना चाहिए। साबू, बारली वगैरह हल्का व पतला गिजा देना चाहिए, कड़ी चीज हरगिज न देना चाहिये।

एकोनाइट ३-६—पीड़ा की शुरू में ज्वर, बेचैनी तेज प्यास, घबड़ाहट, चमड़ा सूखा, बार बार थोड़ा २ पतला दस्त, पेट गरम पेट में दर्द।

एन्टिम-क्रुड ६-३०—मेदा की खराबी, जीभ सफेद, पतला दस्त, पेट में तनाव व दर्द।

एपिस ६-३०—पेट में दर्द, स्पर्श बर्दास्त न होना, पेट में कतरने सा दर्द, ज्यादा आंव गिरना, दस्त, बरबराना।

आर्निका ६-३०—ज्यादा ऊंघाई, जीभ सूखी, पेट, फूला, बेखबरी से पैखाना व पेसाव, बदन की जगह बजगह नाला २ धब्बा।

आर्सेनिक ३१-२००—दस्त, बेचैनी, घबड़ाहट, तेज,

लुद्धा . गयालिसुहलेहिं ।

प्यास, जल्द २, थोड़ा २ पानी पीना, बदन में लहर, बदबूदार काला रङ्ग का दस्त, निहायत कमजोरी, बरफ वा सड़ा पनीर खाने से बिमारी।

बेलाडोना ६-३०—चौंप की तरह दर्द—छाती व कन्धा तक फैल जाता है, पेट फूला हुआ, श्वांसकष्ट, सिर में खून की ज्यादती, नींद न होना।

ब्रायोनिया १२-३०-२००—गरमी के दिनों में एकाएक ठंढ लगने से वा फल मूल खाने से बिमारी, पसीना के वक्त पानी पीना, दर्द व दस्त, हरकत से तकलीफ का बढ़ना।

कलोसिंथ ६-३०—पेट में शूल के कारण रोगी दोहरा हो जाता है। पेट को दबाने से आफियत, ज्यादा व पतला दस्त, पेशाव में ज्वाला।

कलचिकम ६-३०—पेट में ज्वाला व बरफ की तरह ठंढ और उसके साथ दर्द व कमजोरी, पेट में हवा होना, नाड़ी पतली, बदबूदार हवा छूटना।

हायोसायमस ६-३०-२००—सान्निपात का लक्षण, बेहोशी में बरबराना व बिछावन खोंटना, बेखबरी से पीलापन दस्त।

इपिकाक ६-३०—तमाम पेट में शूल, पेट का फूलना, लगातार मचली व कै, दस्त।

आइरिस ६-३०—कमर व यकृत की जगह में दर्द, नाभी के पास ठहर २ कर दर्द, बदबूदार दस्त, मल बलगम व खून मिला हुआ। पेट में व मलद्वार में ज्वाला।

भुयइंद-फणा-मणि-किरण-जाल-विच्छुरिये-विगय-...

लैकेसिस ३०-२००—नाभी के पास चांप की तरह दर्द, पेट पर स्पर्श बर्दास्त न होना; शूल दर्द के साथ पेट का फूलना, बदबूदार दस्त ॥

मारकुरिअस-सल वा कर ६-३०-२००—रोगी दहिने कर लेट नहीं सकता है, स्वाद कडुआ, भूख व प्यास ज्यादा २ पसीना, मुंह से ज्यादा लार गिरना, पेचिश की तरह आंव व खून के साथ मल ॥

नक्स-भोमिका ६-३०-२००—पेट मे तेज दर्द, स्वाद कडुआ मतली व कै, सिरपीड़ा ।

अक्जेलिक-एसिड ६-३०-२००—पेट पर स्पर्श बर्दास्त नही होता है नाभी के चारो ओर ममोड़, बेखबरी से दस्त, आंव व खून के साथ मल ॥

पोडोफाइलम ६-३०—पेट की दहिने ओर मे दर्द, पेट का फूलना, पेट का टटाना, पतला व बदबूदार दस्त अथवा दस्त व कब्ज का अदल बदल कर होना ।

रसटक्स ६-३०-२००—तेज ज्वर, जीभ का अगला हिस्सा लाल रङ्ग, बदबूदार दस्त, मांस धोअन ऐसा दस्त नीद की हालत मे बेखबरी से दस्त, जांघ मे दर्द, भारी वस्तु उठाने से बीमारी वर्षात की पानी में भीगने से बिमारी ।

भेरेट्रम-एल्ब ६-१८-३०— पेट में ठन्ढ मालूम होना, चेहरा का धस जाना, ज्यादे दस्त व कै, पेट मे शूल, ललाट में ठंढा पसीना, निहायत कमजोरी, ज्यादा प्यास पेट में ज्वाला । कैमोमिला, चायना कोलोफास इत्यादि औषधि भी फायदेमन्द है

[२८०—

कोऊहल-विरइया

-दार्णं-गंध-लुद्धा . गयालिमुहलेहिं ।

सिने में ज्वाला व जी पचपचाना ।
(HEART-BURN AND WATER BRASH.)

कारण—यह अम्ल वा अजीर्ण रोग का एक लक्षण है अम्ल रोग के वजह से मेदा में बहुत तकलीफ होती है। यह अम्ल मेदा से ही पैदा होता है। ज्यादा मीठा चीज वा घी की चीज खाने से अजीर्ण रोगी के सिने मे ज्वाला उपस्थित होता है। कृमि-दोष, गरम मसाले, कौफी, शराब, ज्यादा तमाकु पीना, ज्यादा तीता चीज खाना इत्यादि कारण से यह रोग पैदा होता है।

लक्षण—अजीर्ण रोगी पहले कुछ नहीं समझ सक्ता है, जब रोग बहुत बढ़ जाता है तब सिने में ज्वाला वा मेदा में ज्वाला मालूम करता है। जी मिचलाता है, मेदा मे थोड़ा २ दर्द होता है, खट्टा वा कडुआ स्वादु वाला ढेकार या पानी की तरह तरल चीज गले की रस्ता निकलना इत्यादि लक्षण प्रकाश पाता है। अक्सर छाती मे ज्वाला के साथ हिचकी होती है।

भावीफल—इस पीड़ा के शुरू से सावधानता व परहेज से रहने से सहज मे ही आराम हो जाता है, नही तो पुराना होने से याने अम्लरोग हो जाने से आराम होना मुश्किल होता है।

B °पुरी रम्या.

आनुसंगिक उपाय— आहारादि का सुबन्दोबस्त करना उचित है। घी या तेल से पकी हुई चीज आहार करना उचित नहीं है। तीता मीर्चा, मसाला, चाय, कौफी, शराब तम्बाकु, वगैरह गरम चीज नहीं खाना चाहिए।

चिकित्सा—लगातार हवा अथवा ढेकार आना—आरनिका, बेल, ब्राइयो, कार्वोभेज हिपर, इग्नेशिया लैकेसिस, मारकुरियस, नेट्रम-कार्ब, नक्स, लाइको स्टैनम।

तकलीफदार ढेकार—ककुलस, नक्स, पेट्रोलिअम, फसफोरस, सेवाडिला, सिपिया।

ढेकार उठाने की व्यर्थ चेष्टा—एम्ब्रा, आर्जेन्टम—नाइट, कार्ब-एसिड, कष्टिकम, ककूलस, कोनायम ग्रैफाईटिस, हायोस, इग्नेसिया, मैग-कार्ब, नक्स-मस्क, नक्स-मोम, फस्फ, प्लम्बम, रसटक्स, सल्फ जिंक।

खाई हुई अपच चीज की स्वाद वाला ढेकार—एम्ब्रा, एन्टिमक्रुड, कार्बोलिक-एसिड, कस्टिकम, चायना, कोनायम, लाइको, नेट्रम-म्युर, फस्फ, सल्फ।

खाई हुई चीज का गले की ओर चढ़ना—आर्निका ब्राइयो कार्वो-भेज, ग्रैफाइटिस, नक्स, फस्फ, पल्स, सल्फ, सल्फ-एसिड, एन्टिम-क्रुड, कैलक कैनाबिस, कोनायम, हिपर, इग्ने, ड्रोसेरा, मार्कुरिअस, नेट्रम म्युर, प्लम्बम, स्टैफि, भेरेट्रम, जिंक।

खट्टा ढेकार—कैल्क, कैमो, चिनिनम—सल्फ, कोनायम,

१ ।५ ५ गंध-लुद्धा गयालिमुहलेहिं ।

लाइको, नक्स, फस्फ, सल्फर, आर्स, वेल कष्टिकम, फेरम, ग्रेफाइटिस, इग्ने, इपि, नेट्रम, फस— एसिड, पल्स स्टैनम, थुजा, भेरेट्रस, हाइड्रास्टिस, रोबिनिया ।

सिने मे ज्वाला—एमन-कार्ब, केल्क, चायना, क्रोकस लाईको, नेट्रम-म्युर, नक्स, सल्फ, कैप्सि, कार्वोभेज कस्टिक, डलकामेरा, ग्रेफाई, हिपर, इग्ने, आयोड, मार्क, नाइट-एसिड, फस्फ, पल्स, सैवाडिला, सिपिया स्टैफि, पाडो, आइरिस, सल्फ-एसिड ।

मुंह मे पानी आना वा जी पचपचाना— आर्स, केल्क, कार्वोभेज, लाइको, नेट्रम, नाइट-एसिड, नक्स, फस्फ, सिपिया, सल्फर, वेल, कुप्रम, ग्रेफाइ, हिपर, इपिकाक, रसटक्स, स्टैफि, भेरेट्रम ।

कार्वो-भेज—३०-२००— सीना मे ज्वाला व जी पचपचाना रात को तकलीफ की ज्यादती, खट्टा ढेकार, मेदा में ज्वाला ।

कैप्सिकम—६-३०—मिर्चा खाने से जैसा होता है वैसा लक्षण पर दिया जाता है ।

चायना—६-३०-२००— प्रत्येक वार आहार के वाद सीने में ज्वाला, मुह मे पानी आना, हूल आना, मेदा मे वोझ, हर वार आहार के वाद मेदा मे वोझ ।

नक्स-भोमिका— ६-३०-२००— हरवार आहार के वाद रात को ढेकार आना, मुंह मे कड़ुआ या खट्टा पानी आना,

[13] B पुरी रम्या.

मेदापर चांप देने से दर्द होता है । मतवालों का मुंह मे आना, वा कब्ज, बार २ पैखाना जाने की व्यर्थ चेष्टा ।

पलसेटिला—६-३०-२००— खाई हुई चीज का स्वाद व बूदार ढेकार, भुख लगने से जैसा होता है मेदा में वैसी तकलीफ । गला से कडुआ स्वाद वाला पानी गिरना ।

सिपिया—६-३०— आहार वा पान के बाद मुंह में पानी आना । मेदा में ज्वाला, गर्भावस्था की पीड़ा में यह उपयोगी है ।

फसफोरस— ६-३०—सीने में ज्वाला, गला से अचानक कडुआ स्वाद कै व तेज बूदार चीज निकलना, आहार के बाद खाई हुई चीज खट्टा हो कर कै हो जाता है । रोगी हमेशा सोना चाहता है ।

हिचकी वा हिक्कप ।
(HICCOGH)

रोग परिचय—पेट व सीने को अगल करने वाला डाएफ्राम मस्ल का ऐंठन के साथ ग्लोटिस जोर के साथ सकुचित होने से वायुनली मे हवा जाने का व्याघात होने के कारण जो शब्द होता है उसको हिचकी कहते है ।

कारण—दिमाग की उत्तेजना वा दुर्वलता, पेट की गडबड़ी, खून की खरावी वगैरह वजह से यह रोग होता है

लक्षण—यह स्वयं अलग बिमारी नहीं है, लेकिन यह सिर्फ दूसरी २ बिमारियों के साथ होने वाली एक सख्त तकलीफ है। यह कठिन रोगों का एक कुलक्षण है।

आनुसंगिक उपाय—अगर यह अन्य रोग का लक्षणरूप से प्रकाश पावे तो वही रोग की अवस्था व लक्षणादि देख कर दवा देनी चाहिए। अगर यह अन्य रोग का लक्षण न हो कर स्वयं एक खास रोग हो तो थोड़ा २ शीतल जल पीने से फायदा हो सकता है। सूई के नोक पर गोल मिर्चा लेकर उसको जलाकर नाक के पास रख कर उस का धुआं के स्वांस लेने से अक्सर हिचकी रुक जाता है। जीभ को खींच कर बाहर निकाल कर छोड़ देने से भी हिचकी बन्द हो जाता है। अक्सर हिचकी के वक्त बात से या और किसी तरह से रोगी को चमका देने से हिचकी बन्द हो जाता है। स्वांस लेकर देर तक रख कर स्वांस फेंकने से भी फायदा होता है।

<u>अहार के बाद हिचकी</u>—एकोनाइट, ब्राइयोनिया, कार्बो-भेज, ग्रैफाइटिस, हायोसायमस, इग्नेशिया, सिपिया स्टैफिसेग्रिया।

<u>भोजन के कवल हिचकी</u>—नक्समोमिका।

<u>साम को हिचकी</u>—ग्रैफाइटिस, इग्नेशिया, नेट्रम-म्युर, निकोटिन, पल्सेटिला।

<u>मध्यरात मे हिचकी</u>—वेलाडोना, हायोसायमस।

तेज व तकलीफदार हिचकी—कलचिकम, कुप्रम, हायोसायमस, मैग्नेशिया, भेरेट्रम-एल्ब, भेरेट्रम भिर ।

ठंढा पानी पीने के बाद हिचकी — आर्स, नक्स, पल्स ।

सुबह मे हिचकी—एकोनाइट, ब्राइयोनिया, ग्रैफाइटिस ।

गरम पानी पीने से हिचकी—स्ट्रामोनियम, भेरेट्रम ।

ठन्ढा फल खाने से हिचकी—आर्स, पल्स ।

गरम भोजन से हिचकी—इग्नेशिया ।

बेलाडोना ६-३०—ढेकार की आवाज के साथ हिचकी, हिचकी के वजह से ऐंठन की तरह होता है, तेज हिचकी और उसके साथ ज्यादा पसीना। मतली व थकावट, पेट मे दर्द।

ब्राइयोनिया ६-३०—खाली पेट में ढेकार के बाद हिचकी, सामान्य हरकत से उस की ज्यादती, भोजन के बाद हिचकी, भोजन के बाद पेट मे बोझ, तेज प्यास।

कार्बो भेज ३०-२००—सामान्य भोजन के बाद हिचकी, सामान्य कारण से उसकी ज्यादती, तेज व लगातार ढेकार आना, भोजन के बाद उसकी ज्यादती, उसके पहले पेट मे खीमचाना।

सिकुटा ६ १२-२००—जोर आवाज के साथ खतरेनाक हिचकी, सुबह मे और भोजन के समय जी मिचलाना, पेट मे ज्वाला के साथ चांप मालुम होना, तेज कै के साथ सिर पीड़ा प्यास।

कुप्रम-मेट ६-३०-२००—हिचकी के कवल के और ऐंठन, दम्मा की तरह हालत, लगातार ढेकार आना, पेट में गड़गड़ाहट।

हायोसायमस ६-३०-२००—पेट में नम्नर करने के वाद हिचकी, हिचकी के साथ ऐंठन व पेट में गडगडाहट उसके साथ वे-खवरी से पेशाव करना व मुंह मे फेन, ढेकार निकलने की व्यर्थ चेष्टा, ढेकार में खराव स्वाद व मतली।

इग्नेशिया ६-३०—गम व दिली शदमा के वजह से हिचकी; शोम को व पान व भोजन के वाद हिचकी; तम्बाकु पीने के वाद हिचकी, शिशुओं का मानसिक उद्वेग व रोने के वाद हिचकी।

नेट्रम-म्युर ६-३०-२००—कुनाइन के वद इस्तेमाल के वजह से हिचकी।

निकोटिन ६-६—शाम को लगातार तेज हिचकी; अक्सर कुछ दिन तक लगातार हिचकी।

नक्स-भोमिका ६-३०-२००—शीतल जल पीने से हिचकी, भोजन के कवल विना कारण से वार २ हिचकी; भोजन के समय हिचकी नहीं रहता है। धुम पान से हिचकी, खट्टा, कडूओ व सड़ा ढेकार, गरम दवा, गरम मसालेदार चीज इत्यादि खानेसे हिचकी।

पलसेटिला ६-३०-२००—जलपान वा धुम-पान के

बाद अथवा निद्रा-काल में ऐंठने वाला हिचकी बरफ वा कोई चर्वीदार चीज खाने से हिचकी व कै।

स्टैफिसेग्रिया ६-३०—बार २ हिचकी, उसके साथ मतली; धुम-पान से ज्यादा होना।

यकृत की बिमारियां।
DISEASES OF THE LIVER.

यकृत का प्रदाह या हिपाटाइटिस।
HEPATITIS.

रोग परिचय :--यकृत का किसी हिस्से में खून की ज्यादती होकर प्रदाह होने से उसको यकृत-प्रदाह कहते हैं।

कारण:--गरम देश मे खास कर गरमी के दिनों मे यह बिमारी ज्यादा होती है और ज्यादेतर तीसरी उम्र के आदमियों को होती है। अलावे इसके प्रवल मानसिक उत्तेजना, क्रोध, शोक, शराब पीना, या गरम द्रवो वगैरह का व्यवहार, चोट लगना, पित्त की थैली मे पत्थरी होना वगैरह कारण से यकृत का नया प्रदाह पैदा होता है।

ज्यादा मछली, मांस या घी से पकी हुई चीज वगैरह खाना, पारा वगैरह का बद इस्तेमाल, हमेशा बेकार बैठा रहना वगैरह वजह से यकृत का पुराना प्रदाह पैदा होता है।

…दार्ण-गंध-लुद्धा गयालिमुहलेहिं।

लक्षण---नया प्रदाह के शुरू मे जाड़ा और कंपनी के साथ बुखार होता है, प्यास ज्यादा होती है, पेशाव कम होता है, कभी २ मतली व कै होता है, जीभ पर सफेद, पीला या भूरा रङ्ग का मैल जम जाता है, स्वाद कडुआ होता है, यकृत में कम या वेश दर्द होता है। यकृत के ऊपर दवाने से, जोर से स्वांस लेने से या खांसने से दर्द ज्यादा होता है। यकृत वढ़ जाता है। कभी २ यह दर्द जीगर से कन्धा व पंखुरा तक पहुंच जाता है। आंख, वदन व पेशाव पीला हो जाता है। इस विमारी में खांसी व स्वांस की तकलीफ भी जरूर होती है।

विमारी पुरानी होने से जीगर मे धीमा २ दर्द होता है। कन्धा व वाजू में दवाव की तरह दर्द मालूम होती है। जीभ मैली पीला रंग होती है। मुंह कडुआ, भूख की कमी, मतली खास कर सुवह को खाने के वाद मेदा मे दर्द व वोझ, शिर पीड़ा, हमेशा ऊंघना कमजोरी वदन वा आंख का पाण्डु रङ्ग इत्यादि लक्षण होते हैं। कालापन व थोड़ा २ पेशाव होना; कब्ज, फ़ीका वा खाकी रङ्ग का मल होता है, वदहजमी जरूर रहती है।

भावीफल :—कभी २ ज्वर उतर कर वहुत सा पसीना व पेशाव हो कर प्रदाह आराम हो जाता है। फिर कभी २ प्रदाह से क्रमश: यकृत मे फोड़ो हो जाता है।

B पुरी रम्या.

पथ्यादि—नया प्रदाह में यकृत-स्थान में चोकर का पुलटीस देने से फायदा होती है। मछली, मांस या किसी किस्म के घी या तेल से पकी हुई चीज नहीं खानी चाहिये। चाय, कौफी शराब वगैरह गरम चीज एकदम त्याग करनी चाहिए। पक्का फल सुपथ्य है। ज्वर रहने से सावू, वार्ली वगैरह हल्की चीज खानी चाहिये। पानी के सिवाय और कोई चीज नहीं पीना चाहिए। रोग पुराना होने से प्रतिदिन नेहाना व खुली हवा मे अंग-संचालन करना आवश्यक है। ज्यादा व्यायाम करना नहीं चाहिए। गरम देश मे रहना नही चाहिए।

नया यकृत-प्रदाह की चिकित्सा—

एकोनाइट- ६-३०— तेज ज्वर, जीगर मे सूई भोंकने की तरह दर्द, ज्यादा बेचैनी, प्यास, घवड़ाहाट, मौत का डर कडुआ पित्त का कै, पेशाव वन्द रहने से मूत्रस्थली मे सूई चुमना सा दर्द।

आर्सेनिक ३०-२००— यकृत की जगहे फूली हुई व नरम और उस मे ज्वाला के साथ दर्द, भूरा या काले रङ्ग का कै, तेज प्यास लेकिन थोड़ा २ पानी पीना, ज्यादा बेचैनी व कमजोरी। मलेरिया वा कुनाइन की खरावी मे यह ज्यादा मुफिद है।

वेलाडोना ६-३०— यकृत-स्थान मे तेज दर्द, दर्द छाती व कन्धातक फैल जाता है, सिर मे खुन चढ़ना, सिर में धक २ दर्द, नींद से चौंक उठना, तेज विकार, लाल वा पीला रंग पेशाव वगैरह।

ब्राइयोनिया ६-३०-२००—दहिना पसली में ज्वाला, सुई चूमने की तरह दर्द, दहिना कन्धा व बाजु में दर्द, जीभ पीला रंग, स्वाद कड़ुआ, पित्त का कै, होठ फटा व सूखा, बैठने से मतली वा मूर्च्छा की तरह होना; मेदा की जगह छूना बर्दास्त न होना, मिजाज चिरचिरहा, कब्ज, मल सुखा व कड़ा, हरकत से तकलीफ का बढ़ना।

चेलिडोनियम ३-६-३०—जीगर की जगह तेज या धीमा दर्द, चेहरा पीला, सिर का पीछले हिस्से में कान की ओर खिचना सा दर्द, भेड़ारी की तरह वा खूब पीला रंग के मल वगैरह।

हाइड्रास्टिस ६-३०—फीका रंग का थोड़ा २ मल त्याग, पान्डुरोग, आंव मिला हुआ मलत्याग, पेट में खाली २ मालूम होना वगैरह।

लेपटांड्रा ६-३०—जीगर में टटाना और धीमा २ दर्द, बदबूदार व अलकतरा की तरह मलत्याग, साम को दर्द की ज्यादती, स्याही-मैल भूरा रंग के पेशाव, पान्डु रोग।

लैकेसिस ६-३०—यकृत में तेज दर्द, पेट की दहिनी ओर डक मारना सा दर्द, यकृत की जगह किसी तरह का दबाव बर्दास्त नहीं होता है। जड़इया बुखार के बाद जीगर के वरम में यह मुफिद है।

मार्कुरियस-सल ६-३०-२००—यकृत मे दबाव या सुई

भोंकने की तरह दर्द; दहिने कर लेट नहीं सक्ता है; बदन पीला हो जाना; खांसने या छींकने से छाती वो पीठ मे सूई भोंकने की तरह दर्द ज्यादा पसीना होने पर भी कुछ भी आराम न मालूम होती है। वार २ तकलीफदार मल-वेग व कुंथना, सब्ज रङ्ग के ,पित्त मिला हुआ व फेनदार मल; पित्त का कै।

नक्स-भोमिका ६-३०-२००—यकृत में दर्द, छुने से दर्द की ज्यादती; स्वाद कडूआ या खट्टा; पित्त का कै, तेज सिर दर्द, कब्ज, वार २ वेफायदा मलवेग ज्यादा मानसिक परिश्रम वो शराव वगैरह गरम चीज के इस्तेमाल से विमारी का होना।

पोडोफाइलम ६-३०— यकृत में दर्द व बोझ मालूम होना, मतली वा पित्त का कै, रोगी यकृत की जगह हमेशा हाथ से रगड़ता है, जी पचपचाना, स्वाद कडुआ, सुवह का बिना दर्द के दस्त होना।

पलसेटिला ६-३०—स्वाद कडुआ, जीभ पर हल्दी रङ्ग मैल, जो मिचलाना व कै होना, रात को सब्ज रङ्ग के चटचटा दस्त, गरम कमरा मे भी जाड़ा मालूम होना, हमेशा पेशाव का वेग-उसके साथ कतरना सा दर्द, सामको सब तकलीफ बढ़ना।

पुराना यकृत-प्रदाह का चिकित्सा—

ब्राइयोनिया ३०-२००— सूई भोंकने की तरह दर्द हरकत

से ज्यादा होता है, दहिने कन्धे व बाजू मे दर्द हर किस्म का खाना पीना कडूआ लगता है; कब्ज, मलसूखा व कड़ा।

कैलकेरिया-कार्ब ३०-२००—भूख की कमी, सामने झुकने से यकृत मेसूई भोंकने की तरह दर्द, कमर मे कसकर कपड़ा नहीं बांध सक्ता हैं, मिट्टी रङ्ग के कड़ा और अनपच चीज मिला हुआ मल, पैर गौला हुआ व ठण्ढा।

चायना ३०-२००—बदहजमी व भूख कमी, कडुआ ढेकार यकृत का फूलना, यकृत की जगह छुने से दर्द; अनपच चीज मिली हुई व बिना दर्द के दस्त; कमजोरी खासकर कुनाइन के बदइस्तेमाल के बाद यह मुफीद है।

मार्कुरियस ३०-२००—मुंह मे जखम; स्वांस बदबूदार; मुंह खट्टा कडुआ, सड़ा हुआ या मीठा स्वाद, यकृत मे डंक मारने की तरह दर्द और टटाना, मैल, सब्जरङ्ग के फेनदार दस्त और कुंथना।

नक्स-भोमिका ३०-२००—सिरदर्द व सिर घुमने के साथ नजर का धुन्धला होना, यकृत मे दर्द; खाने के बाद पेट मे बोझ मालूम होना, ज्यादा कब्ज, बार बार बेफायदा मल वेग; खास कर शराब खोर व गरम चीज खाने वालो के रोग में मुफीद है।

साइलिसिया ३०-२००—यकृत्र का कडा होना, उस मे दर्द यकृत मे फोड़ा होना, कब्ज, मल का कुछ हिस्सा बाहर निकल कर फिर ऊपर चढ़ जाता है।

सलफर ३० २००—सर्व्वदा सिर मे गरमी मालूम होना जीभ सफेद और उसका अगला हिस्सा लाल, ललाट मे बोझ व भारीपन, पेट में टटाना

पान्डु रोग (जौन्डिस)।

(JAUNDICE.)

रोग-परिचय :—किसी वजह से संचित पित्त खून में मिलजाने के कारण यदि खून दूषित हो जाय और तमाम बदन, आंख की सफेद भाग वगैरह हल्दी के रंग हो जाय तो उसको पान्डु रोग कहते हैं। यह कोई अलग बिमारी नहीं है, यकृत के दूसरे २ रोग के यह एक सहकारी लक्षण मात्र है। किसी वजह से बदन में खून की कमी होने से बदन जर्द हो जाता है—उसको जौन्डिस न समझना चाहिये। आंख की सफेद हिस्सा का हल्दी रंग हो जाना ही जौन्डिस का प्रधान लक्षण है। पेशाब भी पीला हो जाता है।

कारण :—जौन्डिस दो प्रकार से होता है—(१) अवरोध जनित (२) अनवरोध जनित।

(१) अवरोध जनित जौन्डिस :—

यकृत का पित्तकोप अथवा वहां का किसी अंश का पित्तप्रणाली मे रोकाबट होने के वजह से यकृत से पित्त अंतरी मे न जा सक्ता है और उस से यह रोग हो जाता है। पित्तकोप व पित्तप्रणाली निम्नलिखित कारणों से रुक जा सक्ता है :—

(१) पित्तनली का प्रदाह हो कर उस का दिवार का फूलना अथवा उस में बलगम जम जाना।

(२) पित्त गाढ़ा हो कर पित्तनली में जम जाना।

(३) पित्तनलियों में पथरी, कृमी वा मल अटक जाना।

(४) टिउमर वगैरह किसी वजह से पित्तनली पर दवाब पड़ना वगैरह।

अनवरोध जनित जॉन्डिस निम्नलिखित वजहों से होता है:— (१) विषजनित बुखार, यथा—पित्तज्वर, मेलेरियाज्वर, टाइफाइडज्वर, न्युमोनिया वगैरह (२) दिल की बिमारी, स्नायु का विगार, गर्भावस्था। (३) शरीर मे किसी किस्म का विष प्रवेश करना, यथा—तांमा, पारा, आर्सेनिक, सांप का विष, गरमी का विष वगैरह।

लक्षण:—इस रोग का आक्रमण के केवल हाजमा का विगार, भूख की कमी, स्वाद का कडुआपन, पेट फूलना, जी मिचलाना, गोर-हाथ मे लहर वगैरह लक्षण प्रकट होता है। सर्व्व प्रथम आँख की सफेद हिस्सा व हथेली, तलवा वगैरह कुछ पीला हो जाता है और क्रमशः इसके बढ़ने के साथ २ तमाम बदन हल्दी रंग हो जाता है। पेशाव रफ्ते २ ज्यादा पीला होता जाता है लेकिन मल क्रमशः

सफ़ेद होता जाता है। मल में पित्त निकलना एकदम बन्द होने से उसके रंग कादो की तरह, और ज्यादा पित्त निकलने से हल्दी रंग के मलत्याग होता है। मल बदबूदार होता है, अकसर कब्ज रहता है, कभी २ दस्त भी होता है। बदन मे खुजली होता है। कभी २ पेशाव सब्ज व पसीना और स्तन-दूध भी पीला हो जाता है। मामूली विमोरी मे बुखार नहीं रहता है लेकिन बिमारी कठिन होने से बुखार रहता है। नाड़ी सुस्त हो जाती है। कभी २ जुरपित्त निकलता है। मामूली बिमारी आसानी ही से आराम होती है। गर्भावस्था मे यह रोग खतरनाक होता है। दस्त लगना खराब लक्षण है। रोग कठिन होने से ज्वर, हिचकी, विकार, ऐंठन, बेहोशी वगैरह लक्षण उपस्थित होकर रोगी को मार डालता है। इस हालत को अंगरेजी मे कलिमिया (Cholœmia) कहते हैं।

पथ्यादि :—पथ्यादि के नियम बहुत सावधानता के साथ पालन करना चाहिये। एक समय पतला व पुराना चावल के भात वा एक समय देशी जौ के मंड पथ्य देना चाहिये। मक्खन व मलाई निकाला हुआ दूध थोड़ा २ दिया जा सक्ता है। घी, तेल, चर्बी, मांस, गरम मसाला, चीनी, मीठा शराब वगैरह एकदम त्याग करना चाहिये। परवल, पपीता, वगैरह सब्जी अच्छा है। पका व अच्छा फल दिया जा सक्ता है।

गंध-लुद्धा गयालिमुहलेहिं ।

चिकित्सा :—चेहरा गाढ़ा पीला ।—आयोड ।

आंख का पपुटा पीला ।—सिपिया, चेलिडोन ।

जीभ पर पीला लेप ।—चायना, मैगनेशिया – म्युर, मारीका ।

जीभ पर गाढ़ा लेप ।—ब्रायोनिया, मार्कुरिअस, आयोड ।

मुंह का स्वाद कड़ुआ ।—चायना, नक्स ।

जी मिचलाना व कै ।—कार्डुअस, नक्स, प्रुम्बम ।

जीगर में टटाना ।—डिजिटेलिस, नक्स ।

पेट मे दर्द व जी पचपचाना ।—कार्डुअस ।

यकृत कड़ा ।—वेल, मैग्नेशिया-म्युर, साइलिशिया, सल्फर

कब्ज ।—औरम, ब्रायोनिया, कैल्केरिया-कार्ब, लाइकोपोडिअम, नक्स मोमिका, नाइट्रिक-एसिड, पोडोफाइलम, सल्फर ।

धूमैला कादोरंग या सफेदापन मल—एकोनाइट, कैल्केरिया-कार्ब, चायना, डिजिटेलिस, जेल्स, लेप्टान्ड्रा इत्यादि ।

कब्ज व दस्त अदल बदल कर होना ।—आयोड, पोडोफाइलम ।

गदला पेशाब ।—वार्बेरिस, मैग्नेशिया, डिजिटेलिस ।

पान्डुरोग के साथ ज्वर ।—एकोनाइट, आर्सेनिक,

[22] B पुरी रम्या.

बेलेडोना, पल्सेटिला ।

लेटने से खांसी की बृद्धि ।—कोनियम ।

रात को बदन मे खुजलाहट ।—नक्स-भोमिका, सल्फर ।

शरीर सुख जाना ।—आयोड, मैग्नेशिया – म्युर ।

नींद न होना ।—चायना, नक्स सल्फर ।

पित्त पथरी ।—बेलेडोना, कार्ड्अस, मार्कुरिअस, चायना नक्स, पोडो ।

राक्षस की तरह भूखके साथ खाने के बाद कै ।—आयोड

यकृत व पित्त की थैली मे दर्द ।—लेप्टान्ड्रा ।

प्यास न होना ।—केलिकार्ब, पल्सेटिला ।

भूख न होना ।—पल्स, मार्कुरिअस, इत्यादि ।

क्रोध जनित रोग ।—एकोन, आर्यो, कैमोमिला, चायना, इग्नेशिया, नक्स, नेट्रम-सल्फ ।

अचानक ऋतु बदलने के कारण ठण्ड लगने से रोग ।—कैमोमिला, डल्कामेरा, मार्कुरिअस, नक्स ।

अखाद्य व अपरिमित भोजन से रोग ।—एन्टिम-क्रुड, कार्बो–भेज, कमोमिया, नेट्रम-कार्ब नक्स, पल्सेटिला ।

मांस इत्यादि की खराबी से रोग ।—आर्सेनिक, एसाफिटिडा, चायना, हिपर-सल्फ, नाइट्रिक–एसिड, आयोड, सल्फर ।

कुनाइन की खराबी से रोग।—आर्सेनिक, इपिकाक, मार्कुरिअस, पल्सेटिला इत्यादि।

पेट फूलना।—कार्बो-भेज, कैमोमिला, चायना, इग्नेशिया, लाइकोपो, नक्स, प्लम्बम इत्यादि।

एकोनाइट ३x,६x:—सेदा से दर्द शुरु हो कर यकृत और नाभी तक फैल जाता है, ज्वर, अत्यन्त प्यास कब्ज, अथवा दस्त। गर्भावस्था मे अथवा नवजात शिशुओं का जौन्सि। डर जाने के हेतु पीड़ा।

आर्सेनिक ३०, २००—यकृत का नाना प्रकार के विशेषत सविराम ज्वर के बाद, शरीर मे गर्मी, अस्थिरता मानसिक उत्तेजना, नितान्त दुर्ब्बलता।

औरम ३०, २००—यकृत और पेट के ऊपर वाले हिस्से में दर्द, मल खाकी रङ्ग के अथवा हरा और भूरा रङ्ग का होता है। निम्न शाखाओं मे खास कर दोनों पैर मे दर्द और थकावट मालूम होना।

बेलाडोना ६x, ३०—पारायुक्त औषध अथवा कुनाइन के अपव्यवहार हेतु पीड़ा। उस के साथ पित्त के थैली में पथरी। यकृत कठिन और दिमाग मे खून की ज्यादती

बार्बेरिस ६-३०-२००—मल कठिन और विवर्ण अथवा बहुत परिमान पानी की तरह दस्त। मूत्र विवर्ण और उसके नीचे गाद, अत्यन्त क्षुधा, और उसके बाद आहार में बिलकुल अनिच्छा। अत्यन्त प्यास, बाद जल पीने में अनिच्छा, सर्वदा पेट फूला रहना और शब्द के साथ वायु त्याग होना।

ब्राइयोनिया ३०, २००— यकृत में सूई भोकने की तरह दर्द। मेदा में दवाने की तरह दर्द, अङ्ग प्रत्यङ्ग में दर्द, हिलने डोलने से दर्द का ज्यादा होना। अत्यन्त कब्ज मल खाकी या सफेद। जीभ के ऊपर मोटा और सफेद मैल। जी मिचलाना उठ कर बैठने से शिर चकराना।

केल्केरिया-कार्ब ३०-२००—झुकने से यकृत मे सूई भोकने की तरह दर्द। यकृत की वृद्धि, अत्यन्त कब्ज। मैल खाकी या सफेद। मेदा फूला हुआ, अजीर्ण रोग, पान्डुरोग।

कार्डुअस् १x:—पित्तपथरी के साथ पान्डू रोग; शिर मे ठन्ढ लगने से कष्ट मालुम होना। घ्राण और स्मरणशक्ति का लोप। मेदा मे शूल के साथ जी पचपचाना; कै होना।

केमोमिला १२:—रोगी अत्यन्त चिरचिराहा, बच्चो की पीड़ा। सब्ज रङ्ग का पतला दस्त; पेट मे शूल क्रोध के कारण रोग।

चेलिडोनिअम ३-६-३०—यकृत में दर्द, पीठ में खास कर दहीने पखुरे के निचले कोणे में दर्द । मल हल्दी रंग ।

चायना ६x, ३, ६, ३०, २००—जीवनीशक्ति-रक्षक तरल पदार्थ समूह का नाश हेतु पीड़ा अथवा किसी प्रकार सांघातिक पीड़ाभोग के बाद यह रोग प्रकाशित होने से फलप्रद है शिर दर्द विशेषतः रात्रिकाल में नींद अच्छी न होना, जीभ पीला मैलादार, भूख न होना अथवा अत्यन्त भूख होना। पेट फूलना उदरामय मल का रंग सफेद, सड़ा, दुर्गन्धी ढेकार आना, अत्यन्त दुर्बलता ।

डिजिटेलिस ६x ६, ३०—नाड़ी अत्यन्त दुर्बल और सविराम यकृत दर्द के साथ और कठिन । मल सफेद खड़ी मिट्टी के समान अथवा खाकी रंग का होता है, मूत्र अल्प परिमाण और बहुत पीला अथवा कुछ काला रङ्ग ।

जेलसिमियम ६, ३०—अत्यन्त दुर्बलता के हेतु हाथ पैर का कांपना, मल कादो के सदृश नर्म ।

आयोडियम ६, ३०—शरीर का चर्म मलिन व पीला, अत्यन्त दुर्बलता, चेहरा पीला, अत्यन्त क्षुधा किन्तु भोजन के उपरान्त वमन ।

लाइकोपोडिअम ३०, २००—यकृत के पुराना रोग भय हेतु पीड़ा,, अत्यन्त कब्ज, पेट में हवा होना।

मार्कुरिअस ३०, २००—यह औषधि जौन्डिस मे बहुत फलप्रद है। जीभ मोटा मैलयुक्त, उसमें दांत का छाप पड़ता है। मुंह अत्यन्त दुर्गन्धी, यकृत में दर्द, नवजात शिशु का पान्डू रोग। कुनाइन के अपव्यवहार के बाद यह औषधि अवश्य देनी चाहिये। हम मार्कुरिअस और चायना पर्य्यायक्रम से व्यवहार करके बहुत से पान्डु रोगी को आराम किया है।

नक्स-भोमिका ३०, २००— ऐलोपैथिक औषधि के सेवन के उपरान्त, कौफी अथवा मद्यपान के बाद, क्रोध अथवा सर्व्वदा निर्जन-वास हेतु पीड़ा। शिर दर्द, भूख न होना, कड़ुआ स्वाद, जी मिचलाना और कै होना। पाकस्थली मे दर्द, सर्व्वदा मलत्याग करने की निष्फल चेष्टा, कब्ज।

सल्फर ३०, २००—चमड़े की बिमारी वालों के लिये यह औषधि उत्तम है। चांदी और हाथ पैर मे ज्वाला, पित्त अथवा रक्त के वमन पाकस्थली के दहिने ओर दर्द, पेट फूला हुआ, कब्ज, अनिद्रा शाम को बुखार।

लेप्टान्ड्रा ६-३०—पित्त की थैली में दर्द, दस्त की शिकायत कादो की तरह या अलकतरा की तरह मल।

प्रोटोफाइलम ६-३० —पित्त की थैली मे दर्द व जी मिचलाना, यकृत मे टटाना सा दर्द वो वोझ मालुम होना। ज्यादा पतला व वदवूदार दस्त, पेट मे गड़गड़ाहट।

पलसेटिला ६-३०—जीभ पर हल्दी रङ्ग के मैल, स्वाद कड़ूआ, सब्ज रङ्ग का पतला दस्त, प्यास न रहना, जाड़ा मालूम होना, शाम को तकलीफ का वढ़ना।

यकृत का फोड़ा ।
(LIVER-ABSCESS)

रोग-परिचय —यकृत की किसी हिस्से से प्रदाह होकर पीव पैदा होने से उसको "लिभर-ऐवसेस" वा यकृत का फोड़ा कहा-जाता है। इस से यकृत व अन्तरी की खरावी होती है। और यकृत मे दर्द मालूम होती है।

कारण —यकृत का प्रदाह से ही यह रोग होता है। अलावे इसके गिरजाना, चोट लगना, अन्तरी वा मेदा का जखम वगैरह से भी होता है। पाईमिया ज्वर से भी यकृत में फोड़ा होता है, कभी २ पेचिश की खरावी से भी होता है।

लक्षण —शुरू मे जाड़ा व कम्पन के साथ ज्वर व यकृत मे दर्द होता है। बुखार १०० से १०५ डिगरी तक हो

सक्ता है। यकृत बढ़ जाता है, कभी २ खून का कै होता है। इसके साथ एक किस्म की सूखी खांसी होती है। रोगी क्रमशः पतला दुबला होता जाता है। बदन पीला होता जाता है। कभी २ फोड़ा फट कर पीव स्वांसनली से अथवा कै व दस्त के साथ निकल जाता है। इस रोग में यकृत स्थान पर अंगुली से अघात (Percussion) करने से स्थूल वा डल (Dull) आवाज मिलती है। स्वांस की आवाज कम सुनाई देती है।

भावीफल :—इस रोग का भावी फल बहुत अच्छा न है छोटे २ फोड़ा होने से आराम हो सक्ता है। फोड़ा फट कर पीव निकल जाने से प्रायः आराम हो जाता है पाईमिक-ज्वर के कारण यकृत में फोड़े बहुत से होते हैं, प्लीहा बढ़ जाता है और पान्डु का लक्षण देखा जाता है।

पथ्यादि—रोगी जिस से कमजोर न हो जाय वैसो उपाय करना चाहिये। इसलिये रोगी को बलकारी व हल्का गिज़ा देना चाहिये। दर्द के लिये गरम सेक देना व पुलटिश देना अच्छा है। अक्सर इस बिमारी मे नस्तर की जरूरत होती है।

चिकित्सा

आर्निका ६-३०-२००—आघात हेतु पीड़ा यकृत स्थान मे दर्द रहती है।

आर्सेनिक ३०-२००—यकृत-स्थान कड़ा और फूला हुआ, यकृत मे ज्वाला व दर्द, तेज प्यास, काला रंग का कै होना, मल काला. शरीर में ज्वाला, अस्थिरता, नाड़ी तेज किन्तु दुर्बल।

बेलाडोना ६-३०— यकृत-स्थान में सख्त दर्द, दबाने से, खासने से, जोर से श्वांस लेने से, अथवा दहिना कर लेटने से दर्द की वृद्धि होती है। दिमाग में रक्ताधिक्य।

ब्राइओनिया ३०-२००—सूई भोकने की तरह दर्द, हिलने डोलने से वृद्धि, पाकस्थली और उदर पूर्ण मालूम होना। दहिने कन्धे में दर्द, चेहरा पीला, जीभ सफेद, तेज प्यास, कब्ज।

चेलिडोनिअम ८x-६-३०—दहिने कन्धे की हड्डी का मध्यभाग में दर्द, यकृत से पीठ तक गोली चलने की तरह दर्द, यकृत से पखुडे के निचला कोने तक दर्द, स्वाद कडूआ, जी मिचलाना, कब्ज।

हिपर-सल्फ ३०-२००—पीब पैदा होने पर दिया जाता है।

लैकेसिस ३०-२००—बेलेडोना और मार्कुरिअस का अपव्यवहार के बाद प्रयोजन होने पर दिया जाता है। यकृत-स्थान को स्पर्श नहीं किया जा सकता है। पेट अत्यन्त फूला रहता है, दिल धड़कना।

[13] B °पुरी रम्या.

लेप्टान्ड्रा ३-३०-२००—जीभ पीला मैलयुक्त, हमेशा जी मिचलाना और कै होना, यकृत-स्थान में दर्द, मूत्र गाढ़ा, मांस धोअन की तरह रंगदार, मल काला, अलकातरा की तरह।

मार्क्युरिअस ६-३०-२००—यकृत में दबाने या भोंकने की तरह दर्द, चेहरा पीला, दहिने कर लेटने से कष्ट मालूम होना. पसीना बहुत होती है लेकिन उससे कोई फायदा नहीं होती है।

नक्स-वोमिका ३०-२००—कडुआ अथवा खट्टा स्वाद, जी मिचलाना, कै होना। शिर दर्द ज्यादा मद्य और कौफि पीने के कारण रोग में अथवा एलोपैथिक चिकित्सा के बाद यह औषधि फायदा करती है।

पल्सेटिला ३०-२००—प्यास न होना, सब्ज आंवदार दस्त. रात को बेचैनी।

साइलिसिया ३०-२००—यकृत-स्थान में जखम सा दर्द। यकृत-स्थान फूला हुआ व कड़ा, यकृत में पीब होना।

सल्फर ३०-२०० - जीभ के अग्रभाग और ओष्ठ बहुत लाल, अनिद्रा, ज्वाला, यह दवा बार २ न देना चाहिये।

चायना ३०-२००—यकृत-स्थान में जखम सा दर्द, छुने से दर्द की ज्यादती। यकृत का फूलना, दस्त होना, सविराम ज्वर, चेहरे और सिर की शिरायों का फूलना।

लाइकोपोडिअम ३०-२००—मृदु प्रकार की बिमारी, इसके साथ फेफड़े का प्रदाह स्वांस लेने के वक्त नाक के पुरे का फड़कना। एक पैर ठन्ढा, दूसरा गरम, कब्ज।

——:*:——

यकृत का सिरोसिस।

(CIRRHOSIS OF THE LIVER.)

यह रोग यकृत का पुराना प्रदाह से पैदा होता है। सिरोसिस शब्द से सूख जाना वा सिकुड़ना समझा जाता है।

यकृत का पुराना प्रदाह के कारण पोर्टेल शिरा के चारो ओर रेशा पैदा होता है और उसके दबाव से पहले **यकृत** कोषें फैल जाते है लेकिन बाद वे सिकुड जाते हैं इसी **को** सिरोसिस आफ दि लिभर कहते हैं।

प्रकार भेद—(१) ऐट्रोफिक (Atrophic) सिरोसिस, इससे यकृत छोटा हो जाता है, (२) हाइपरट्रोफिक (Hyper-trophic) सिरोसिस—इस से प्रथमत यकृत बढ़ जाता है। यकृत बढ़ जाने से सामान्य मात्र उदरी का लक्षण दिखा

जाता है, पान्डु रोग प्रकाश पाता है और बुखार रहता है। मामुली बिमारी में ज्वर प्रायः नहीं रहता है, पान्डु भी कम होता है। लेकिन उदरी व दस्त ज्यादा होता है, पेट फूल जाता है, यकृत कड़ा हो जाता है।

कारण—ज्यादा शराब पीना हीं इस बिमारी का प्रधान कारण है। ज्यादा मसालेदार चीज खाना, मैलेरिया विष-वाली जगह में बास, ज्यादे दिन तक गरम देश में रहना या गरमी में काम करना वगैरह से भी यह रोग होता है। गरमी का विष से भी यह रोग हो सक्ता है।

लक्षण—शुरू में हाजमे का विगार पैदा हो कर कब्ज के साथ मिट्टी रंग, सफेद या फीका हल्दी रंग का मलत्याग होता है, पेशाब कम होता है और उस में युरेट्स व ऐलबुमेन रहता है। जीभ पर मैल, यकृत मे दर्द, कम या बेश पान्डु लक्षण कै, छाती मे लहर, कभी कब्ज कभी दस्त, दिल धड़कना, मूर्छाभाव इत्यादि प्रकाश पाता है। मेदा व अंतरी की सर्दी का लक्षण जान पड़ता है। प्लीहा बढ़ जाता है। कभी २ खून का कै होता है वा मल के साथ खून निकलता है। इस बिमारी के साथ अकसर बवासिर होता है। रफ्ते २ आंख, चेहरा वगैरह तमाम बदन पीला हो जाता है, पेशाब एकदम कम हो जाता है और उसके रंग बहुत पीला होता है, पेशाब के नीचे गाद पड़ता है। क्रमशः रोगी की हालत

खराब होता जाता है, चेहरे पर नीला २ शिरायें नजर आती है। बिमारी नितान्त कठिन होने से मूत्र विकार, बेहोशी व शोथ, उदरी इत्यादि होते हैं—बुखार भी तेज होता है, चमडे के नीचे खून निकलता है, और आखिरकार मौत होता है।

पथ्यादि—चाय, कौफि, शराब, गरम मसालेदार चीज वगैरह खाना पीना एकदम त्याग करना चाहिए। घी या तेल की चीज भी न खाना चाहिए। हर रोज खुली व ताजी हवा सेवन करना चाहिए।

चिकित्सा :—

आर्जेन्टम-नाइट्रस ६-३०-२०० —मैलेरिया-विष के कारण यकृत-रोग के आखिर में यकृत का सिकुड़ जाना. अकसर यकृत में भोकना सा दर्द, यकृत-स्थान मे बोझ, दर्द व तनाव, चलने से दर्द, छाती तक फैल जाता है, शोथ की लक्षण।

आर्सेनिक ३०-२०० :—यकृत का दहिने ओर फूला हुआ, उसमें ज्वाला व दर्द, यकृत में सूई भोकने की तरह दर्द, मेदा तक फैल जाता है। बदन में लहर, बेचैनी, घबड़ाहट, तेज प्यास, कमजोरी, नाड़ी पतली व तेज।

औरम-मेट ३०-२०० – दिल की बिमारी के कारण यकृत में खून की ज्यादती, उस के साथ जीगर की जगह ज्वाला व कतरनासा दर्द, उस के बाद शोथ के साथ सिरोसिस का लक्षण, पेट में दर्द, पान्डु रोग, कब्ज, सब्ज या छाई रङ्ग के मल, गरमी बिमारी की खरावी, आत्महत्या की इच्छा।

कार्बोभेज ३०-२००—यकृत बहुत दर्दनाक ऐसा कि स्पर्श भी बर्दास्त नहीं होता है, कमर मे कपड़ा बांध नहीं सक्ता है, पेट मे हवा होना, पैखाना के वक्त हवा छुटता है।

कैल्केरिया-कार्ब ३०-२००: – कण्ठमाला धातु के लोगों के यकृत-पीड़ा मे उपयोगी है।

आयोडियम ३०-२००:—यकृत का सिकुड़ना, उसमें दर्द, भूख की कमी अथवा राक्षस की तरह भूख ज्यादा कमजोरी, बदन सूख जाना।

लैकेसिस ३०-२००—शरावखोरियों की बिमारी में उपयोगी है। यकृत-स्थान छुआ नहीं जाता है, डंक मारने की तरह दर्द होता है। गरमी पीड़ा या मैलेरिया के बाद यकृत-रोग।

लेप्टान्ड्रा ६-३० :—पेट के दहिने ओर, यकृत में और पित्त कोष में दर्द । यकृत में ज्वाला, अलकतरा की तरह दस्त के साथ पेट में शूल ।

लाइकोपोडियम ३०-२००:—शराबखोरी को उदरी के साथ यकृत का छोटा होना, सुबह को मुंह में कडुआ स्वाद, भूख लगता हैं लेकिन एक या दो ग्रास कर खाने से पेट भर जाता हैं। और फिर थोड़े ही देर में भूख लगता है। कब्ज, पेट में हवा होना व ढेकार आना ।

मैग्नेशिया-म्युर ६-३० - यकृत कठिन व बड़ा होना । छुने से या चलने फिरने से दर्द की ज्यादती, भेड़ारी की तरह मल या दस्त, सफेद या पीला मैलादार जीभ, उस पर दांत का छाप पड़ना ।

मार्कुरिअस ६-२००:—यकृत का बढ़ना, जीभ पीला या सफेद मैलदार, जीभ पर दांत का छाप पड़ना ।

नेट्रम-म्युर ३-२००:—मैलेरिया के कारण यकृत की बिमारी में निहायत उपयोगी है, यकृत मे सुई भोंकने की या खींचाव की तरह दर्द, ज्यादा कब्ज ।

नेट्रम-फस ६-३०:—मूत्र-यन्त्र के खराबी के कारण यकृत का सिरोसिस, बदन की जगह २ फोड़ा होना, अम्ल-पीड़ा ।

नाइट्रिक-एसिड ३०-२०० :—पुरानी रोग और यकृत का बहुत बढ़ जाना, कादों की तरह मल, मुंह बदबूदार खून मिला हुआ लार निकलना। गरमी रोग व पारा की खराबी रहने से यह फायदेमन्द हैं।

नक्स-भोमिका ३०-२०० :—शराब पीना व एलोपैथिक दवा ज्यादा खाने से रोग की तेजी, यकृत कठिन व फूला हुआ, पान्डु व बवासिर, अम्ल पीड़ा।

फसफोरस ३०-२००—यकृत में खून की ज्यादती, यकृत बढ़ने का शुरु, पान्डुरोग, शोथ, अर्से का हड्डी का जखम, यकृत मे छेद होना, धीमा २ बुखार, रात को पसीना, यकृत की जगह फूला हुआ, उस मे दर्द, खतरनाक पान्डुरोग, भूख की कमी, ज्यादा प्यास, बदन के किसी जगह से खून निकलना, नींद आते २ ही ज्यादा पसीना होना।

साइलिशिया ३०-२०० :—यकृत-स्थान में दर्द व धकधकाना, यकृत मे फोड़ा, मेदा मे ज्वाला व धकधकाना, गरम खाना पीना पसन्द न होना, ठंढी चीज पसन्द करना, कब्ज।

सल्फर ३०-२०० :—यकृत फूला हुआ व कड़ा उस में सूई चुभना सा दर्द, प्यास, नींद न होना या बिल्ली की तरह घड़घड़ाहट आवाज के साथ नींद, कब्ज, बवासिर

व अजीर्ण के रोगी को यकृत-पीड़ा, अचानक चमड़े का रोग लोप होकर यकृत रोग होना, गोर हाथ व चांदी में लहर ।

कैल्केरिया-आर्स ३०-२०० :—ऐलबुमेन के साथ पेशाब होना, यकृत का छोटा होना ।

मन्तव्य :—तेज विमारी मे हर रोज दो वार व मृदु विमारी में एक वार दवा देना चाहिये। वार २ दवा वदलना नहीं चाहिये । ऊंची शक्ति की दवा वार २ नही देना चाहिये ।

—:०:—

शिशुओं का पान्डुरोग वा जौन्डिस ।

.—:❀—:

इस से आंख इत्यादि सर्व्वांग पान्डुरंग याने पीला हो जाता है। नवजात शिशुओं का पान्डुरोग को अंग्रेजी में "इक्टारस निओनेटारम" (Icterus Neonatorum) कहते हैं। ज्यादा उम्र के बच्चों का पान्डुरोग को "इन्फेन्टाइल लिभर" (Infantile Liver) कहते हैं । इन दोनों का अलग २ व्यान किया जाता है ।—

:०:—:❀:—.०:

नवजात शिशुओं का पान्डुरोग वा इक्टारस नियोनेटोरम ।

(ICTERUS NEONATORUM.)

—:❀:—

कारण:—जल्द २ नवजात शिशुओं का मलत्याग न होने से यकृत की क्रिया अच्छी नहीं होती है। इस लिये पान्डुरोग

होना है। ज्यादा गरमी वा ठंढ लगना, मां का दूध की खराबी, जुल्लाव देना इत्यादि कारण से भी यह रंग होता है।

लक्षण :—शिशु के जन्म के दो तीन रोज बाद यह रोग हो सक्ता है। यह रोग शिशु के लिये निहायत कठिन नहीं है। इस से आंख इत्यादि सर्वांग और पेशाव व पसीना हल्दो रंग हो जाता है। मल का रंग कादो की तरह हो जाता है। बच्चा चिरचिराहा होता है, और खिनखिनाता है। नवजात शिशु का रोग अकसर मलत्याग होने से आराम हो जाता है।

चिकित्सा :—

नक्स-भोमिका ६-३० :—जौन्डिस के साथ कब्ज, ज्यादा खिनखिन करना, चिरचिराहट।

कोलिन्सोनिया ६-३० :—सर्व्वांग पीला, ढेला ढेला व छेना की तरह दस्त।

मार्क-सल ६ ३० —यह नवजात शिशु के जौन्डिस मे निहायत उम्मदा दवा है। जौन्डिस के साथ हांथ पैर ठंढा, पेशाव, पसीना इत्यादि स्राव पीला।

चियोन्यान्थस ६-३० :—पीला पेशाव, तमाम बदन खूब पीला।

मन्तव्य :—छोटी गोली में दवा मिला कर एक गोली करके प्रतिदिन तीन चार बार देना चाहिये।

शिशु-यकृत-पीड़ा।

(INFANTILE LIVER.)

यह पीड़ा, ५ या ६ महीना से दो या तीन साल उम्र तक के बच्चों में अधिक देखा जाता है। किसी २ के मत मे मेलेरिआ का विष ही इस रोग का कारण है। अम्ल-पीड़ा वाली माता के दूध पीना, गाय की दूपित दूध अथवा ज्यादा दूध पीना और सर्व्वदा-बन्द गृह मे वास करना पीड़ा का प्रधान कारण है। इस से बच्चे का यकृत क्रमश वढ़ता है।

यकृत के ऊपर हाथ के अंगुली से आघात करने से डल वा स्थूल शब्द मिलता है, अंगुली द्वारा दवाने से यकृत शक्त मालूम होता है, दिन रात ज्वर लगा रहना है; मूत्र क्रमशः अधिक पीला होता जाता है। यह मूत्र कपड़ा में लगने से कपडा पीला हो जाता है। शरीर, मुखमंडल आंख इत्यादि पीला हो जाता है। रोग अधिक वढ़ जाने से सर्व्वाङ्ग मे शोथ देखा जाता है, मूत्र के परिमाण कम हो जाता है कोई २ शिशु का मूत्र मृत्यु के पहले सबजापन होता है। कभी २ वमन होता है, वमन में मिट्टी के चूर्ण के सदृश पदार्थ देखा जाता है, शिशु क्रमशः निर्जीव होता है। सर्वदा आंख मुन्द कर चूपचाप पड़ा रहता है। शरीर का रक्त, दूषित पित्त से विषैला होकर दिमाग को वेकार कर देता है, इस कारण बच्चा विलकुल वेहोश हो जाता है। और इस अवस्था को कलिमिया

(Cholæmia) कहते है। रोगी के मृत्यु के पहले ज्वर और तृष्णा बृद्धि पाती है। स्वांसकष्ट उपस्थित हो कर शिशु के प्राण नष्ट हो जाता है।

शिशु के मल अस्वभाविक होता है, जैसा सफेद, खाकी. काला इत्यादि। यह पीड़ा में मृत्यु-सख्या अत्यन्त अधिक होता है।

चिकित्सा :—शिशु यकृत की चिकित्सा के निमित्त निम्न लिखित औषध समूह फलदायक होते हैं। यथा—आर्जेन्टम नाइट्रम, कैलकेरिआ-कार्ब, कैलकेरिआ-आयोड, कैमोमिला, चायना फेरम, आयोडिअम, मैगनेसिया-कार्ब, नक्स-भोमिका. आर्सेनिक, चेलिडोनिअम, क्रोटेलस, कार्डुअस इत्यादि।

आर्सेनिक ३०-२००—पित्त वा यकृत का बिगार से बिमारी, पतला व बदबूदार मल बदहजमी, बदन पीला चमड़े पर काला या नीला दाग।

ब्राइयोनिया ३०-२००:—यकृतकी बिगार, सूखी खांसी कब्ज, मल सुखा व कड़ा भूना हुआ ऐसा।

कैमोमिला १२—डर क्रोध अथवा ठण्ड लग कर रोग होना, सब्ज रङ्ग का पतला व बदबूदार मल बच्चा बहुत चिरचिराहा व जिद्दी हमेशा खिनखिनाता है व गोदी

मे चढ़ कर टहलना चाहता है। दांत निकलने के समय का रोग।

चायना ६-३०-२००—यकृत की जगह छुना वर्दास्त न होना यकृत में दर्द यकृत फूला हुआ व कड़ा, विना दर्द के अनपच दस्त, राक्षस की तरह भुख लेकिन खा नहीं सक्ता है। मैलेरिया की खरावी।

चेलिडोनियम ६-३०-२००,—यकृत स्थान में दर्द, आंख व वदन पीला, मुह मे कडुआ स्वाद, सफेद, स्याही मैल पेशाव, यकृत का वढ़ना।

कैल्केरिया-कार्ब ३०-२००:—दांत निकलने के समय का रोग, कब्ज या सफेद व खट्टा वूदार दस्त, वदन पीला सिर मे ज्यादा पसीना।

कैल्केरिया-आर्स ३०-२०० पाण्डुरोग के साथ ज्यादा कमजोरी रहने से उपकारी है।

चियोनैन्थस ३-६ :—पित्तनली का रुकावट के कारण पीड़ा, यकृत का वढ़ना।

हाइड्राष्टिस ३x, ६ —पित्तनली की सर्दी का कारण पीड़ा, मेदा मे खाली २ मालुम होना, कब्ज पैखाना के साथ आंव मिला हुआ। दिल धड़कना।

मार्क-सल वा भाइभस ६-३०-२००—यकृत का बिगार, सर्व्वांग ज्यादा पीला, जीभ पर मैला लेप, जी मिच-लाना व कै होना, पेट में मड़ोड़, यकृत में दर्द, दस्त, मल सफेद, तेज बूदार लाल रङ्ग का पेशाव; ज्यादा लार निक-लना, प्यास।

आयोडियम ३०-२००—पारा इत्यादि की खरावी से बिमारी होने में फायदेमन्द है।

नक्स-भोमिका ३०-२००—पूराना कब्ज, दाई या मां के भोजनादि के बदपरहेजी व अनियम के कारण पीड़ा में फायदे मन्द है।

नाइट्रिक-एसिड ३०-२००—पुराना रोग, यकृत बड़ी व कठिन, कब्ज, लाल रंग के बदबूदार पेशाव, मेदा में तेज दर्द।

पोडोफाइलम ६-३०—यकृत का बढ़ना, उसमें दर्द, सफेद या कादो के रङ्ग का मल, बदबूदार पतला दस्त पेटमे गुड़गुड़ाहट, मैला पीलारङ्ग का पेशाव जी मिचलाना।

सल्फर ३०-२००—पुरानी बिमारी, यकृत का यान्त्रिक

पथ्यापथ्य :—पीड़ित शिशु को किसी प्रकार का दूध नहीं देना चाहिये। माता के अम्ल पीला अथवा और किसी प्रकार की पीडा रहने से उसका दूध भी नहीं देना चाहिये। माता पीड़िता होने से हरलीकस् मिल्क, मेलीन्स फूड, साबुदाना या बारली देना चाहिये।

बकरी का दूध में दोगुणा जल मिश्रित करके आवटने पर सिर्फ दूध रह जाय तो उस दूध मे मिश्री मिला कर देने से बहुत लाभ होता है। गाय के दूध इस पीड़ा के शिशु के निमित्त अच्छा नही है, किन्तु स्वस्थ गाय के दूध में इस के दोगुणा परिमाण जल-बारली या जल-सावु के साथ मिश्री मिलो कर दिया जा सकता है। गधी का ताजा दूध बहुत अच्छा है।

माता के निमित्त स्वामी—संगम निषिद्ध है। उसका भोजन का प्रबन्ध ऐसा होना चाहिये, जिससे उसका पेट मे गर्मी या अम्ल न हो। खाद्य हलका परन्तु पुष्टिकर होना चाहिये।

शिशु और माता के निमित्त शुद्ध वायु का प्रबन्ध करना चाहिये।

जो माता के कोई सन्तान इस बिमारी मे मर चुका है उसका दूध नवजात शिशु को नहीं पीलाना चाहिये।

—:o:—

B पुग रम्या.

पित्तशिला वा गलस्टोन।

(GALLSTONE).

समसंज्ञा :—पित्तपथरी वा बिलिअरी कैलकुलाई (Billiary Colculi).

रोग परिचय :— पित्तशिला गल ब्लाडर (Gall Bladder) वा पित्त-स्थली के अन्दर उत्पन्न होता है, कभी २ यकृत के अन्दर की पित्तनली में भी होता है। पित्त कोष मे प्रायः एकाधिक वा बहुसंख्यक कैलकुलाइ वा पथरी हो सकता है। यह शिला वालू की तरह छोटा अथवा वैर के वीज की तरह बड़ा,—बहुत प्रकार का होता है। इस के रंग भी काला, सफेद सब्ज व भूरा, रंग का होता है; सर्वदा बैठे २ दिन गुजरान, अति भोजन व स्टार्च्च (शर्करा) जातीय खाद्य ज्यादा आहार के हेतु यह पीड़ा हो सकता है। प्रायः इस बिमारी मे पेट मे भयानक शूल होता है। इस दर्द को बिलिअरी कलिक वा पित्त शूल कहते हैं। पित्तशिला, पित्तकोप का मांसपेशी के सकोच अथवा पित्त के चांप से पित्तपथ का संकीर्ण भाग मे उपस्थित होने से वह सहज से निकल नहीं सकता है, इस कारण शूलदर्द उपस्थित होता है। पेट का दहिने ओर यकृत के नीचे, दहिने कन्धे मे और पीठ के दहिने तरफ में दर्द हो कर रोगी

अस्थिर होता है। यह वेदना आरम्भ होने के चन्द घण्टे वा चन्द दिन पहले से मूत्र मे पित्त का रंग देखा जाता है। रोगी का सर्व गात्र और आंख मे जौन्डिस देखा जाता है और मल में पित्त का रंग प्रायः नहीं रहता। पित्तशिला पित्त-कोष के मुंह से निकल कर अन्तरी मे पहुंचने से ही सर्व कष्ट दूर हो जाता है।

पित्तशिला की चिकित्सा—

सहकारी उपाय—पथ्यादि और औषध उभय ही इस पीड़ा के निमित्त विशेष आवश्यक है। अति भोजन स्टार्च्च (Starch) व शर्करा और चर्बीदार खाद्य जितना कम खाया जाय उतना ही अच्छा है। प्रति दिन शारीरिक परिश्रम करना अवश्य कर्त्तव्य है। पान के साथ प्रति दिन चूना खाने से यह पीड़ा हो सकती है। इस पीड़ा मे मांस और तेलदार मछली भी अच्छा नहीं है मिनरेल वाटर (Mineral water) प्रति दिन पीना फलदायक है।

शूल के समय गर्म पानी के टब (Tub) में कमर तक डुबा कर बैठना, और फ्लानेल के साथ गरम पानी से सेकना अथवा गर्म पुलटीस लगाना फलप्रद है।

भैषज्य तत्व—

बेलाडोना ६-३०—दर्द के समय यह औषधि प्रयोग किया जाता है। दर्द अचानक उपस्थित होकर अचानक चला जाता है।

बार्बेरिस ६-३०-२००—इस पीड़ा मे यह एक महौषधि है; इस के प्रयोग से दर्द मे शीघ्र और स्थायी उपकार होता है। जौन्डिस; ऐंठनेवाला दर्द बहुत थोड़ी जगह में होता है। पित्तकोष के स्थान में ज्वाला और तीर भोकने की तरह दर्द, कमर में और जांघ मे दर्द; लसदार व गाढ़ा मूत्र के नीचे गाढ़ा गाद पड़ता है।

चेलिडोनियम ६-३०-२००—दहिने पखुरे के नीचे और पीठ में दर्द; यह यकृत से शुरु होता है। पित्तकोष के स्थान से दर्द नाभी और अंतरी मे फैलता है।

चायना ६-३०-२००—गल ब्लाडार की क्रिया मे व्यघात हेतु पीड़ा; भयानक शूल; शरीर और आंख पीला; कब्ज; मल कठिन और गुठली २। सामान्य चांप देने से भयानक दर्द होता है। किन्तु जोर से चांप देने से दर्द की कमी होती है।

कलोसिंथ ६-३०—पेट मे भयानक शूल; जोर से दबाने से दर्द की कमी, जो मिचलाने के साथ निम्न शाखा का शीतल होना।

कार्डु अस—यह अति उत्कृस्ट औषध है; यकृत-स्थान में दबाने से दर्द; शूल के समय इस की १म शक्ति प्रति घन्टे २ मे प्रयोग करके बहुत रोगी मे उत्तम फल मिला है।

कैलकेरिया-कार्ब ३०-२००—शूल के समय अत्यन्त शीत, दहिने ओर से वायें ओर तक तीर भोकने की तरह दर्द और शिर मे ठंढी पसीना, पेट मे एंठन और दर्द ।

चिनोपोडिअम ६-३०—दहिने पखुरे के निम्न भाग से दर्द आरम्भ हो कर छाती के वायें ओर जाता है, पैर ठंढा होता है। निम्न शाखा दुर्बल, कब्ज, मल भेडारी की तरह ।

सियानाथस १x—दर्द से मालूम होता है कि तमाम अंत्रियां रस्सी से इकट्ठी बान्धी हुई है। दर्द अचानक शुरू हो कर धीरे २ कम हो जाता है। पेट को दबा कर लेटने से आराम मालूम होता है ।

डायोस्कोरिआ ३०-२००—दर्द एक स्थान से अन्य स्थान में जाता है। शरीर को फैला कर शरीर को तान कर रखने से दर्द में आराम मालूम होता है ।

लाइकोपोडीअम ३०-२००—तेज दर्द. यकृत स्थान मे स्पर्श बरदाश्त नहीं होता है, छाती मे ज्वाला, जी पचपचाना, कब्ज, पेट मे हवा होना, खट्टा ढेकार, मूत्र मे लाल बालू के सदृश गाद पड़ना ।

नक्स मस्केटा ६-३०—यकृत बढ़ा हुआ, खून मिला हुआ मल, यकृत भारी मालूम होना, दर्द से रोगी कुब्ज हो कर पड़ा रहता है ।

नक्स-भोमिका ३०-२००—जौन्डिस, अरुचि, मूर्छा, कब्ज।

एलुमिना, एपोमरफिया, आर्सेनिक, लैकेसिस इत्यादि औषधि भी प्रयोग किया जाता है।

सर्व प्रकार यकृत-रोग की चिकित्सा।

—:०:—

एकोनाइट ६-३०—अत्यन्त ज्वर, यकृत-स्थान में सूई भोकने की तरह दर्द, स्वांस प्रश्वांस में कष्ट। अत्यन्त घबड़ाहट मृत्युभय, अत्यन्त स्थिरता।

एस्किउलस ६-३०-२००—यकृत-स्थान को स्पर्श करने से नर्म मालूम होना, अत्यन्त शूल वेदना। लम्बा स्वांस लेने से पीठ में दर्द मालूम होना, नाभी की जगह ज्वाला और दर्द। यकृत मे रक्ताधिक्य। यकृत के नीचे और पित्त की थैली मे दर्द, कन्धे तक दर्द पहुंचता है, कब्ज।

एलोज ३०-२००—यकृत में अकड़ने वाला और दबाने सा दर्द, स्वाद कडुआ, चेहरा मलिन और बेरौनक।

आर्जेन्टम-नाइट ३०-२००—मैलेरिया के हेतु यकृत की पीड़ा। यकृत मे दर्द, कभी २ दर्द सूई भोकने की

गंध-लुद्धा गयालिमुहलेहिं।

तरह होता है। यह शिशु यकृत के लिये एक उत्कृष्ट औषध है।

आर्सेनिक ३०-२००—पेट के दहिने ओर फूला और उस में ज्वाला के साथ दर्द, दवाने से दर्द की वृद्धि होती है। काले रंग का कै, मल काला, शरीर में ज्वाला और गर्मी, नाड़ी तेज, मानसिक स्थिरता। इस औषधि का प्रयोग द्वारा शिशु यकृत में भी बहुत फललाभ होता है।

औरम-मेट ३० २००—यकृत में प्रदाह व खूनकी ज्यादती। यकृत में प्रदाह के कारण आत्महत्या करने की प्रबल इच्छा, पाण्डु रोग में यकृत और पाकस्थली में दर्द, स्क्रफूला (कण्ठमाला) धातु के मनुष्य में और पिता माता के गर्मी की पीड़ा के इतिहास मिलने से यह दवाई अवश्य देनी चाहिये।

औरम-म्युर ३०-२००—गरमी रोग के हेतु यकृत के प्रदाह और उस के साथ जलोदरी।

बेलाडोना ६-३०—यकृत में तेज दर्द, दवाने से, लम्बा स्वांस लेने से, खांसने से, और दहिने करवट लेटने से दर्द की वृद्धि होती है, दिमाग में रक्ताधिक्य, आंख का धून्धली होना, शिर चक्कराना और मूर्च्छा, अत्यन्त स्थिरता, नींद न होना।

वार्बेरिस ६-३०-२००—यकृत की जगह में चांप मालूम होना और सूई भोकने की तरह दर्द, पित्त पथरी के हेतु शूल दर्द विशेष कर नाभी के चारो ओर पेट में गड़गड़ाहट, अर्श से रक्तश्राव बन्द होना। जौन्डीस, यकृत में अचानक ऐसा दर्द शुरु होता है कि स्वाँस बन्द रखना पड़ता है। बार २ मूत्रत्याग करने की इच्छा। मलद्वार में भयानक ज्वाला, मलद्वार के चारो ओर जखम सा मालूम होना। मल अल्प वो काले रंग का।

ब्राइओनिया ३०-२००—यकृत में तेज दर्द, हिलने डोलने से दर्द की बृद्धि, स्थिर भाव से लेटने से आराम मालूम होना। दहिने पखुरे के नीचे दर्द, यकृत फूला, स्वाद कड़ुआ, जीभ पर पोला मैल, मल कठिन और सूखी या कादो की तरह, ग्रीष्मकाल मे पीड़ा की बृद्धि। पाकस्थली पूर्ण और फूला, मालूम होता है कि इस में पत्थर भरा हुआ है। कैलोमेल (Calomel) का बेजाय इस्तेमाल से खराबी होने से यह औषधि प्रयोग करना चाहिये।

कैलकेरिआ-आर्स १२-३०—यकृत-पीड़ा के साथ ऐलबुमिन्युरिया (Albuminuria), यह शिशु-यकृत पीड़ा में एक उत्तम औषध है।

कैलकेरिआ-कार्व ३०-२००—प्रत्येक वार पांव फेंकने के साथ यकृत में दर्द, शिर नीचा करने से दर्द, यकृत की वृद्धि। शिर में अत्यन्त पसीना होना।

कार्बो-भेज ३०-२००—यकृत अत्यन्त दर्द के साथ ऐसा कि कमर में कपड़ा बांधने से भी कष्ट होता है, पेट हवा से पूर्ण । मलत्याग काल में वायुत्याग होता है ।

कैमोमिला ६-१२-३०—क्रोध के अथवा ठन्ढ लगने के हेतु यकृत मे प्रदाह, पाकस्थली मे दर्द और जौन्डीस, यकृत के ऊपर दवाने से दर्द, रोगी का शरीर गरम और पसीना के साथ, शिशु-यकृत मे इस औषधि से विशेष फल मिलता है ।

चेलिडोनिअम ६-३०—यकृत में रक्ताधिक्य के हेतु प्रदाह । सूई चुभने की तरह तेज दर्द यकृत से शुरु हो कर पाकस्थली तक फैल जाता है । दहिने कन्धे की हड्डी और केहुनी मे दर्द अधिक होता है, सामको शीत बोध, प्रातःकाल में बहुत पसीना के साथ नींद टुट जाना, फिर नींद की इच्छा नही होती हैं । शिर के दहिने ओर दर्द, लम्बी श्वांस लेने से यकृत मे दर्द भोजन के बाद दर्द की वृद्धि, अदल बदल कर उदरामय और कब्ज, मल पीला या कादो के ऐसा बहुत अरुचि और थकावट । खट्टा चीज और दूध खाने की इच्छा शिशु यकृत में यह औषधि विशेष फलप्रद होता है ।

चायना ६-३०-२००—यकृत में जखम ऐसा दर्द, दबाने से अथवा स्पर्श करने से दर्द की वृद्धि होती है । पेट फुला

यकृत फूला है । ... बवासीर, ... अथवा ... न ... हिपर

कोनायम ... दर्द, अथवा ... होता है ।

क्रोटेलस ... होता है ... मैलेरिया के ... औषधि विशेष अवस्था में इस

डिजिटे... की वृद्धि ... मालूम होता है जी मिचलाना, अथवा सन्निपात ।

१ पुरा गया

यकृत फूला और कठिन, ढेकार आने से आराम मालूम होता है। स्वाद कड़ुआ, देह पीला। अत्यन्त दुर्बलता। खुनी बवासीर, उस में खुजली और ज्वाला होता है। कब्ज, नरम मल भी कष्ट से त्याग होता है। उदरामय, मल काला अथवा हरा, मलत्याग के समय पेट में दर्द नहीं होता है, मल अत्यन्त दुर्गन्धी। मैलेरिया जनित यकृत-रोग में यह औषधि विशेष फलप्रद है।

कोनायम ६-३०—यकृत की बृद्धि, पेट फूला हुआ, दूध पीने से पेट फूल जाता है, यकृत में सूई भोंकने की तरह अथवा फाड़ने की तरह दर्द रोगी को दूध हजम नहीं होता है।

कोर्टेलस ६-३०—लम्बी स्वांस लेने से यकृत में दर्द होता है, यकृत में रक्ताधिक्य विशेषतः दिलकी पीड़ा अथवा मैलेरिया के कारण जरायु की पीड़ा वर्तनमान रहने से यह औषधि विशेष फल देती है। शरीर के खून विषाक्त होने की अवस्था में इस औषधि के प्रयोग से विशेष फल होता है।

डिजिटेलिस ६-३०—दिल की पीड़ा के हेतु यकृत की वृद्धि के साथ शोथ रोग, यकृत को स्पर्श करने से दर्द मालूम होता है, चेहरा पीला, कब्ज, जल और पित्त के कै, जी मिचलाना, खाने पीने में अनिच्छा, मूत्र पीला, नाड़ी मृदु अथवा सविराम। जीभ साफ अवथा पीला, मूत्र रुक जाने से रोग।

कोऊहल-विरइया [२८०-

दार्णं-गंध-लुद्धा गयालिमुहलेहिं।

फेरम ३०—पुराना यकृत प्रदाह, यकृत स्थान फूला और कठिन।

जेलसिमिअस ६-३०-२००—यकृत से मैला खून की ज्यादती, दस्त, जौन्डिस के साथ अतिशय दुर्बलता। मल कादो की तरह।

आयोडिअम ३०—यकृत मे दर्द, भूख की कमी होना, अत्यन्त दुर्बलता अथवा ज्यादा भूख के साथ शरीर सूख जाना।

केलि-कार्ब ३०—दहिने छाती मे सूई भोकने के सदृश दर्द, दर्द पहले पीठ से आरम्भ होकर छाती तक फैल जाता है। रात को दर्द की वृद्धि, यकृत में फोड़ा।

लैकेसिस ३०-२००—शराब पीने वालों में यकृत की वृद्धि। यकृत मे प्रदाह और फोड़ा होकर धीरे २ रोगी को विकार होना। यकृत पर स्पर्श बर्दास्त न होना। गर्मी रोग और सविराम ज्वर के कारण यकृत की पीड़ा, डंक मारने की तरह दर्द, पेट फुलना, दिल धड़कना, बार २ मल त्याग करने की निष्फल चेष्टा, शिशु-यकृत में रक्त विपाक्त होने पर यह औषधि प्रयोग करने से विशेष उपकार होता है।

लेपटानड्रा ६-३०-२००—पेट के दहिने तरफ पित्त की थैली और यकृत में दर्द। यकृत में ज्वाला। उदरामय

B पुरी स्या

मल के रङ्ग काला, अलकतरा की तरह. उसके साथ नाभी के निकट शूल की तरह दर्द।

लाइकोपोडिअम ३x-२००—शराबखोरों को जलोदरी के साथ यकृत की पीड़ा, प्रातःकाल में निद्रा से उठने के बाद मुंह का स्वाद खट्टा बोध होता है। अत्यन्त भूख किन्तु एक या दो ग्रास खाने ही से पेट पूर्ण मालूम होता है। फिर थोड़े देर के बाद ही पेट मे कष्ट मालुम होता है। पेट हवा से भर जाता है और ढेकार आता है। यकृत की पुराना प्रदाह, यकृत मे फोड़ा होने की करीना।

मार्कुरिअस ६-३०-२००—यकृत की वृद्धि। जीभ पीलासा मैलदार। जीभ के ऊपर दांत का छाप पड़ता है मसुढ़ा फूला और जखम के साथ, श्वांस दुगन्धी; देह और आंख पीला, यकृत-स्थान मे स्पर्श करने से दर्द मालूम होता है, पेट फुला; दहिने कर में लेट नहीं सकता है। मल कादो की तरह; शिशु-यकृत मे यह एक उत्कृष्ट औषध है

नेट्रम-म्युर ३०-२००—मैलेरिया जनित पीड़ा, यकृत में दर्द; अत्यन्त कब्ज; यह शिशु यकृत मे भी फलप्रद है।

नक्स-भोमिका ३०-२००—ज्यादा शराब पीना व एलोपैथिक औषध सेवन करने के बाद यह औषधि प्रयोग करना चाहिये; यकृत कठिन और फूला; कसकर कपड़ा

पहनने से कष्ट मालूम होता है; पान्डु रोग, अर्श अथवा अम्ल पीड़ावालों के निमित्त यह औषध, उत्तम है।

पोडोफाइलम ६-३०—पुराना यकृत-प्रदाह; कब्ज। पान्डु रोग; हाथ से हमेशा यकृत-स्थान को रगड़ना चाहता है, यकृत में रक्ताधिक्य, और दर्द।

सिपिया ३०-२००—यकृत के काम मे वाधा के कारण पीड़ा, चेहरे मे पीला रंग के छोटे २ वररे होते हैं। श्वांस-कष्ट और दहिने कन्धे की हड्डी में दर्द; गाल लालवर्ण; आंख पीली, शिर दर्द; भूख न होना।

साइलिसिया ३०-२००—यकृत-स्थान मे दर्द; यकृत मे फोड़ा, मेदा मे ज्वाला, गर्म खाद्य मे अनिच्छा; शीतल वस्तु भोजन करने की इच्छा, विना दर्द के दस्त अथवा कब्ज।

सल्फर ३०-२००—यकृत फूला और कठिन और उस मे सूई भोकने की तरह दर्द, प्यास, अनिद्रा अथवा बिल्ली के सदृश घड़घड़ाहट के साथ निद्रा होना। कब्ज, अर्श और अजीर्ण रोग, विशेष कर शराब पीने वालो को।

—:※:—

1. पुरी रम्या

मूत्र-यंत्र की पीड़ा समूह।

—:००:—

मधुप्रमेह, सशर्कर बहुमूत्र वा डायेवेटीस मेलीटस।

(DIABETES MELLITUS.)

रोगपरिचय—इस बिमारी मे वहुत परिमाण से पेशाव होता है और यह पेशाव में शर्करा वा चीनी रहता है।

कारणतत्व—इस रोग का मूल कारण आज तक निश्चित नहीं हुआ है। पितृ-पितामह से पुत्र पौत्रादि में यह रोग पहुंच सकता है। स्नायु-विधान के साथ इस के अति निकट सम्बन्ध है। यौवन का शेष भाग और मध्य वयस मे यह पीड़ा होती है। शिशु और स्त्री में यह पीड़ा देखी नही जाती है।

उद्दीपक कारण—(१) आघातादि लगना, विशेष कर शरीर, दिमाग अथवा रीढ़ में। (२) स्नायुविधान की पीड़ा, यथा— दिमाग मे प्रदाह, टीउमर, (३) अत्यन्त मानसिक चञ्चलता यथा—भय, व्याकुलता, क्रोध, चिन्ता, अत्याधिक मानसिक परिश्रम। (४) अत्यन्त मीठा चीज, निशास्ता, शराव इत्यादि व्यवहार करना।

(५) मैलेरिया वाला स्थान मे वास। (६) ठन्ढ लगना, (७) किसी प्रकार के सख्त नयी पीड़ा। (८) गाउट (Gout) और वात रोग। (९) अत्यन्त शारीरिक परिश्रम (१०) अत्याधिक स्त्री सहवास। (११) ज्वर रोगादि से आराम होने के समय भी वाज आदमी इसरोग से आक्रान्त होता है।

लक्षण—वहुत परिमाण से पेशाव होना और अत्यन्त भुख व प्यास इस विमारी का प्रधान लक्षण है। वार २ मूत्र त्याग की इच्छा, मुंह सुख जाना, अत्यन्त दुर्वलता और दृष्टिशक्ति की कमी होना इत्यादि लक्षण द्वारा प्रथमावस्था मे इस रोग का सन्देह किया जाता है, क्रमशः रोगी का मूत्र परिमाण मे और वार में वृद्धि पाती है, मूत्र का वर्ण क्रमशः पानी के सदृश साफ होता जाता हैं और उस के नीचे किसी प्रकार के गाद नही देखा जाता है, मूत्र में मिठा २ गन्ध मालुम होता है और कभी २ उस में चुंटी लगता है मूत्र परीक्षा करने से उस मे चीनी पाया जाता है। मूत्र का स्पेसिफिक ग्रेभीटी (Specific Gravity) वा आपेक्षिक गुरुत्व की वृद्धि होती है, भूख और प्यास वृद्धि पाती है। रोगी को मिठा चीज खाने की इच्छा होती है और उस के मुंह से मिठी वू आती है। रोगी चिरचिराहा, उदास और गमगीन होता है। रोगी की दुर्वलता अत्यन्त अधिक होती है। संगमशक्ति की कमी होती है, दृष्टिशक्ति भी कम हो

जाती है। कान में भन २ शब्द होता है। स्वाद और गन्ध की भी हीनता होती है। साधारणतः पसीना नहीं देखा जाता है। कारवंक्ल, गेंग्रीन अथवा शाखादिका शोथ और रक्तहीनता देखी जाती है। साधारणतः, शरीर के उत्ताप ९३, ९५, ९७, डि० रहता है। पेशाब का स्पेसिफिक ग्रैभिटी १०३५, १०४० ऐसा कि १०६० तक भी होता है। यह बिमारी २-३ साल से लेकर १०-१२ साल तक रह सकता है। कभी २ रोगी निहायत जल्द ही मर जाता है।

भावीफल—पूर्ण आरोग्य प्रायः नहीं देखा जाता है, युवक को यह पीड़ा होने से अधिक आशंका होती है, मध्यवयस के बाद यह पीड़ा होने से जीवन की आशा अधिक दिन रहती है।

चिकित्सा—

इउरेनिअम-नाइट्रिकम—यह औषधि का प्रयाग द्वारा बहुत रोगी मे उत्तम फल लाभ हुआ है। इस औषधि की १म अथवा २म शक्ति के विचूर्ण प्रति दिन ३-४ वार बहुत दिन तक प्रयोग करने से बहुत रोगी आरोग्य लाभ किये हैं।

आर्सेनिक ३०-२००—अत्यन्त क्षुधा और तृष्णा, शरीर, शीर्ण और दुर्बल, पानी की तरह दस्त, शरीर के वर्ण पीला,

गैंग्रीन होने का स्वभाव, सामान्य हिलने डोलने से श्वासकष्ट और दिल धड़कना, शोथ।

फसफोरस १२-३०—बहुमूत्र के साथ दम्मा वा वात रोग रहने से उपयोगी है। वहुत परिमाण से पतला वा गाढ़ा मट्ठा की तरह पेशाव। दिमागी विमारीका लक्षण।

एसेटिक-एसिड ३x-६-३०—मूत्र मे शर्करा के आधिक्य, अत्यन्त प्यास किन्तु ठंढी पानी पीने से पेट में भारी मालूम होता है, मूत्र के परिमाण अत्यन्त अधिक। जलोदरी, शोथ, अत्यन्त दुर्वलता, शरीर सूखा और मोम के सदृश विवर्ण।

कैलकेरिआ-फस ६x—वहुमूत्र के साथ फेफड़े की पीड़ा रहने से यह औषध प्रयोग किया जाता है।

लैकटिक-एसिड १x-३x—अत्यन्त प्यास। मिन्ट मिन्ट में वहुत परिमाण मूत्र त्याग करता है। चर्म मैला और सूखा, अत्यन्त कब्ज, जीभ चटचटा। परिपाक शक्ति के व्याघात, अत्यन्त दुर्वलता, वात के दर्द।

लाइकोपोडिअम ३०-२००—रोगी अत्यन्त विमर्ष और खिटखिटा, सर्वदा क्षुधा और तृष्णा, उदर फूला, मल अति अल्प, मूत्र के नीचे लाल रङ्ग के रेत के सदृश गाद पड़ता है।

मस्कस ६x-३०-२००—अत्यन्त प्यास; दुर्बलता; कब्ज, ध्वजभङ्ग । सर्वदा बहुत परिमाण से मूत्रत्याग होता है। दिमाग का फलिज; दृष्टिशक्ति की कमी होना; चेहरा विवर्ण; सर्वाङ्ग शीतल ।

फसफोरिक एसिड ३-१२-३०—स्नायविक पीड़ा के हेतु बहुमूत्र रोग। जीवनरक्षक पदार्थ समूह का बिनाश हेतु दुर्बलता, शोक, दुःख, शारीरिक अथवा मानसिक क्लेश हेतु पीड़ा, जोड़ों में दर्द; वाल उड़ जाना; स्मरण शक्ति की कमी होना, दृष्टिशक्ति की धुंधली हो जाना। फोड़ा होने का स्वभाव, कब्ज, मल कठिन और कष्ट से निकलता है। मूत्र गाढ़ा, दूध के सदृश अथवा चूना की पानी वा मट्ठा के सदृश। पीठ और किडनी के स्थान मे दर्द ।

सिज्जिजिअम जेम्बोलेनम- आमेरिका और युरोप के विज्ञ डाक्टरलोग इस औषध के प्रयोग से बहुत सुफल पाये हैं। यह औषधि काला जामुन के वीजों से बनता है। इस के Q अथवा १म शक्ति का व्यवहार होता है। वीजों का चूर्ण भी अधिक फल देता है ।

पथ्य—

चर्वीदार मांस सुपथ्य है, हरा साग-सवजी, ककड़ी, खीरा, खट्टा फल और मखन के साथ चाय व मट्ठा, मलाई,

मछली, अन्डे दिया जा सकता है। मुंग का दाल, परवल, गुल्लर, सुखाद्य है। पावरोटी, आलु, चीनी मीठा फल और मिष्ट द्रव्य कुपथ्य है। मैदा, भात, आटा, साबुदानें, एरारोट, वार्ली इत्यादि निशास्तादार चीज खाना न चाहिये। चोकरदार आटा के रोटी खाना चाहिए। अतिशय स्त्री सहवास नहीं करना चाहिये। जो चीज व्यवहार करने से वमन या दस्त हो वैसी चीज़ व्यवहार नहीं करना चाहिये। रोगी सबल रहें तो रोज नेहाना अच्छा है

—:○:❀:○:—

अशर्कर बहुमूत्र रोग वा जलप्रमेह वा डायेबेटिस इन्सिपिडस।

DIABETES INSIPIDUS OR POLYURIA.

इस रोग में रोगी बहुत परिमाण से मूत्रत्याग करता है। किन्तु मूत्र में शर्करा वा चीनी नहीं रहता है। यह रोग युवक और मध्य वयस के लोगों को ही होता है, बच्चों को भी यह रोग होता है पुरुष में यह पीड़ा अधिक होती है। इस रोग का कोई निर्दिष्ट कारण नहीं मिलता है, किन्तु मस्तक में किसी प्रकार आघात लगना, मानसिक अस्थिरता, स्वाभाविक शारीरिक धर्म्म, एतादृश पैतृक पीड़ा इत्यादि इस के प्रधान कारण है। मस्तिष्क मे किसी प्रकार टिउमर

होने से अकसर मूत्र बृद्धि पाती है। किसी अवस्था से ही हों असल में स्नायुमंडल के कोई दोष हेतु ही इस पीड़ा की उत्पत्ति होती है। बहुत परिमाण से मूत्र और भयानक प्यास इसके प्रधान लक्षण है। बहुत बार और बहुत परिमान से पानी की तरह पतला व वेरंग पेशाब होता है। इस विमारी में पेशाब का स्पेसिफिक ग्रैमिटी बहुत कम हो जाता है। बदन के चमड़ा सूखा खरखरा होता है। रोगी पतला-दुबला हो जाता है। यह मधुप्रमेह की तरह खतरेनाक नहीं है लेकिन बहुत दिन का होने से खराबी पहुंच सक्ता है।

चिकित्सा—

एसेटिक-एसिड १x-३x-६—बहुत प्यास. बहुत परिमाण पानी के सदृश मूत्र होता है। मेदा और छाती में अत्यन्त दर्द और ज्वाला. अत्यन्त दुर्बलता. चर्म्म सुखा और वेरौनक, पैर में शोथ।

आरनिका ६-३०—आघात जनित पीड़ा, सर्वदा बहुत परिमाण से मुत्र त्याग होता है। रात को निद्रित अवस्था में अथवा दिनको वेखवरीसे मुत्र त्याग मुंह सुखा हुआ, अत्यन्त प्यास, अम्ल वस्तु की इच्छा, मद्यपान करने की इच्छा।

आर्सेनिक ३०-२००—मुत्राधिक्य, मूंह मे पानी आना, अत्यन्त प्यास। दुर्बलता, पानी के सदृश दस्त, चर्म वेरौनक गंग्रीन होने का उपक्रम, स्वासकष्ट।

धम्लद्धा गयालिम्रहलेहिं ।

कैनाबिस-इन्डिका १x-३-x—धार से बहुत परिमाण पानी के सदृश मुत्रत्याग होता है। मुंह और गला सूखा रहता है। बहुत प्यास होता है किन्तु ठंढा जल पीने में डरता है । पतला व वेरग अथवा गाढ़ा फेनदार और लसादार मूत्रत्याग होता है। रोगी नीन्द जाने ही से वेहोश के साथ गुंगुआता है।

रस-टक्स ६-३०—ज्यादा शारीरिक मेहनत से विमारी हो तो दिया जाता है।

कस्टिकम १x-३x—मूत्राधिक्य, मूत्रवेग को रोक नहीं सकना, खांसी या छिक के साथ मूत्र निकल जाता है, प्यास होता है किन्तु पानी पीने की इच्छा नहीं होती है। रात को और वाहर को हवा में पींडा की वृद्ध।

कलोसिन्थ ६-३०—मूत्र बहुत परिमाण और साफ होता है, प्रात:काल मे ओष्ठ और मुंह सूखा रहता है, स्वाद कड़ुआ, बिलकुल नामर्दी, पीठ में दर्द, पैर थका हुआ।

मार्कुरियस ६-३०—बहुत पसीना व प्यास रहने से दिया जाता है।

नेट्रम-मिउर ३x ६-३०—शीघ्र २ बहुत परिमाण से

[23] B पुर्ग रम्या.

पसीना रुक जाना। मानसिक दुख, रोने का स्वभाव, नमकीन चीज और मछली और दूध खाने की इच्छा।

नोट—डायेवेटिस मेलिटस के इलाज में जो २ दवायें लिखी हुई हैं वे सब भी इस में प्रयोग हो सकती हैं। पानी पीने को देना चाहिये। चाय व शराव पीना एकदम वन्द कर देना चाहिये।

रक्त-पेशाब वा हिमाचुरिआ।

(HÆMATURIA.)

पेशाब के साथ अथवा मूत्रद्वार से रक्तस्राव होने से उसको हिमाचूरिआ कहते हैं।

चिकित्सा—

एकोनाइट १-३—मूत्र यन्त्र से बहुत परिमाण रक्तस्राव, मूत्रनली में ज्वाला के साथ दर्द। ठन्ढ लगने से रक्तपेशाब होना।

आरनिक ३x-३-६—आघात के कारण खून का पेशाब होना।

अरसेनिक ३०-२००—रोगी अत्यन्त दुर्वल, मैलेरिया ज्वर भोग हेतु-यंत्र से रक्तस्राव। मूत्र विचिर्ण, पेशाव के समय ज्वाला, अस्थिरता।

–णाणे-गंध-लुद्धा गयालिम्हलेहिं।

कैल्केरिआ–कार्व ३०-२००—प्राचीन रोग मे मूत्र यत्र मे पौलिपस (Polypus) अथवा अर्श पीड़ा वर्तमान रहने से। मूत्र-कष्ट, मूत्र त्याग काल में ज्वाला और रक्तस्राव।

कैम्फर ३०-२००—मुत्र रक्त मिश्रित और लाल, उत्तेजक औषध सेवन अथवा कोदवा इत्यादि वदन में दानें होने वाला ज्वर के वाद यह प्रयोग करने से विशेष उपकार होता है।

कैन्थारिस ३०-२००—अत्यन्त कांखना और ज्वाला के साथ बुन्द २ पेशाव होना, मूत्र रक्त मिश्रित।

चिमाफिला ६-३०-२००—पेशाव में गोंद की तरह गाढ़ा व खून मिला हुआ वलगम। पेशाव के समय ज्वाला और मोकना, रक्त-पेशाव मूत्र में ढेला २ रक्त निकलना। पुराना पूमेह के वाद रक्तस्राव।

इरिजिरन ६-३०—हैजा का ज्यादत्ती के साथ खून के पेशाव, मूत्र रूक जाना या मूत्रकष्ट, मूत्र विन्दु २ होना। मूत्र त्याग के वाद ज्वाला।

हैमामेलिस ३x-६x—रक्त काला।

लैकेसिस ३०-२००—विकार ज्वरमें खून सड़ जाने के वजह से खूनी पेशाव होना।

लाइकोपोडिअम ३०-२००—अत्यन्त मूत्रवेग किन्तु देर तक बैठा न रहने से मूत्र त्याग नहीं होता है, मूत्र अल्प और लालरंग, मूत्र के नीचे लाल रेत के सदृश गाद पड़ता है।

मार्किउरिअस ३०-२००—भयानक मूत्र वेग, सहज से ही पसीना होता है।

मिलिफोलिअम ३-६—मूत्र यंत्र में दर्द के साथ शीत मालूम होना, किसी पात्र मे मूत्र रखने से उसमें जमा हुआ रंगदार चीज देखी जाती है।

नाइट्रिक-ऐसिड ३०-२००—गाढ़ा लाल रंग का खूनी पेशाब। खून जमता नहीं, सुजाक के कारण बिमारी।

फसफोरस ३०-२००—अत्यन्त स्त्री सहवास के कारण दुर्बलता के हेतु रक्त-पेशाव। जल्द २ मूत्रत्याग करने की इच्छा, मूत्रद्वार में ज्वाला।

सिकेलि ६-३०—काला और पतला रक्तस्राव, गुर्दा (Kidney) की पीड़ा के हेतु बिना दर्द के गाढ़ा व काला रंग का पेशाब, शरीर शीतल, ललाट में शीतल पसीना अत्यन्त दुर्बलता

सल्फर ३०-२००—ववासिर के खून वन्द हो जाने से अथवा चर्म-रोग दव जाने के हेतु पीड़ा होने से इस औषध का प्रयोग द्वारा फल मिलता है।

टेरिविन्थ ६-३०—पेशाव में खून अच्छी तरह से मिला हुआ रहता है, पेशाव में कौफी के चूर्ण के सदृश गाद पड़ता है, किडनी में ज्वाला और दर्द।

जिंकम ३०-२००—दूसरा किसी जगह से रक्तस्राव रुक जा कर मूत्र-नली से रक्तस्राव होता है, जैसे ऋतु वन्द होकर रक्त-पेशाव होना।

सहकारी चिकित्सा—

दूध-वारली अथवा दूध-भात सुपथ्य है, जौ के मंड भी अच्छा है। तिसी ('आलसी') पीस कर चीनी और वकड़ी के दूध के साथ खाने से वहुत फायदा होता है। तिसी अथवा सफगोल की पानी, मिश्री के शरवत भी फलप्रद है।

—:०:—

एलवुमिनिउरिआ वा मेदमूत्र।

ALBUMINURIA.

इस रोगमें पेशावके साथ एलवुमेन (Albumen) नामक माड़ की तरह वा अन्डे की सफेदी की तरह चीज निकलती है।

ब्राइट पीड़ा (Bright's Disease) का प्रधान लक्षन ही मन्डमूत्र है। यह कोई खास विमारी नहीं है। यह चन्द दूसरी विमारी और हालत के साथ होती है। मूत्र में ऐल-वुमेन अदृश्य भाव से मिला हुआ रहता है। निम्न लिखित रोग समूह के साथ पेशाब मे ऐलवुमेन पाया जाता है।

(१)—नया या पुराना किडनी-प्रदाह, (२) किडनी मे पीव उत्पन्न होना। (३) किडनी के क्षय पीड़ा, (४) स्वत-रेनाक नया स्वर, (५) फेफड़े की अथवा दिल की विमारी के हेतु, भेनस रक्त का चलाचल में बाधा, (६) किडनी मे किसी प्रकार का टिउमर होना, (७) इउरेटर में मूत्र की गति कुछ काल के लिये ठहर जाने से अथवा दिमाग और स्नाय-वीय गड़वड़ी, यथा—एपोप्लेक्सी, कनमलशन्, दिमाग मे चोट लगना वा कंकाशन (Concussion)। (८) लिउकि-मिया वा खुन मे लाल कीड़े की कमी, डायेवेटिस, एनिमिया इत्यादि प्राचीन पीड़ा। (९) हाजमे की गड़वड़ी। (१०) रक्त मे किसी प्रकार का विषाक्त पदार्थ का प्रवेश।

लक्षण—

पेशाब के साथ अधिक दिन एलवूमेन निकलते रहने से क्रमशः शरीर दुर्वल होता है और सर्व्वाङ्ग मे शोथ होता है।

चिकित्सा—यह रोग गरमी रोग वा सुजाक के बाद होने से— थूजा, सेबाइना, नाइट्रिक-एसिड, कुप्रम, एनटिम-टार्ट, नेट्रम-सल्फ, वेनजीइक-एसिड इत्यादि औषधियां व्यवहार होती है।

नाइट्रिक-एसिड ३०—रात को पीड़ा की वृद्धि, जी मिचलाना, खट्टा स्वाद, पित्त का दस्त, कब्ज, चमड़ा सूखा, ज्वर, शिर पीड़ा, दुर्गन्धी गदला पेशाव, पैर में शोथ ।

आर्सेनिक १२—इस रोग मे विशेषतः पेशाव मे शर्करा पाया जाने से उपकारी होता है।

—:⁘:❀:⁘:—

ब्राइट पीड़ा।

(BRIGHT'S DISEASE)

यह कोई अलग विमारी नहीं है—किडनी वा गुर्दा का प्रदाह को ही ब्राइट पीड़ा कहते हैं। डाक्टर ब्राइट साहबने इस पीड़ा के विषय में सर्व्व प्रथम विशेष अनुसंधान करके इस को लिपिवद्ध किये हैं इस कारण उन का नाम को चिरस्थायी करने के निमित्त इस पीड़ा को " ब्राइटस डिजीज,, कहा जाता है।

गुर्दा वा किडनी का प्रदाह वा निफ्राइटिस।

(NEPHRITIS.)

कारण—कैन्थारिस, कार्वोलिक-एसिड वगैरह की तरह दवा के बेजाय इस्तमाल से यह हो सक्ता है, स्कार्लेटीना (लाल ज्वर) डिपथिरिआ, कोदवा, जहरबाद, चेचक, कार्बंक्ल प्रभृति पीड़ा के साथ अक्सर निफ्राइटिस वा गुर्दा का प्रदाह हो जाता है और कमर में आघात लगने से भी यह पीड़ा होती है। ठंढ लगना, शरीर के ज्यादा हिस्सा आग से जल जाना, तेज ज्वर, नया बात रोग, गर्भावस्था इत्यादि कारण से भी इस रोग की उत्पत्ति होती है।

लक्षण—मूत्र अल्प और बार २ होता है, मूत्र मे ऐलबूमेन, रक्त, और कास्ट (Cast) इत्यादि वर्तमान रहता है। मूत्र मे ऐलबूमेन होना ही इस रोग का प्रधान लक्षण है। ज्वर, दुर्बलता और कमर मे दर्द रहता है, शोथ ब्राइट पीड़ा के एक प्रधान लक्षण है। यह प्राय प्रथमावस्था में ही देखा जाता है। ठन्ढ लगने से चन्द घन्टे में ही यह देखा जाता है अथवा स्कारलेटिना पीड़ा के आरोग्य काल मे यह पीड़ा आरम्भ होता है। पेशाब में दोष, कम्प के साथ ज्वर और कमर में दर्द अकसर इकट्ठा ही उपस्थित होता है।

किसी २ रोगी को मूत्र की उत्पत्ति न होने से बिलकुल पेशाव नहीं होता है और उससे इउरीमिया जनित कन्भलशन उपस्थित हो कर मृत्यु हो सकती है। फिर पेशाव के परिमाण वृद्धि हो कर रोगी को आराम भी आ सकता है। एक सप्ताह अथवा दो सप्ताह में रोगी की अवस्था अच्छी होती रहती है। शोथ कम होना शुरू होता है, मूत्र मे रक्त नही रहता है, बहुत दिन के बाद एलबुमेन भी पाया नही जाता है। पेशाव वृद्धि पाती है और रोगी धीरे २ आरोग्य होता है। फिर कभी २ रोग प्राचीन अवस्था प्राप्त होता है। अचानक शोथ होने के साथ मूत्र अल्प होना और मूत्र मे ऐलबुमेन रहने से हो इस रोग को पहचाना जाता है।

ब्राइट पीड़ा अथवा निफ्राइटिस व एलबुमिनिउरिआ की चिकित्सा—

एपिस ६-३०—पीड़ा की द्वितीय अवस्था, शोथ, विशेषतः आंख के पपुटे और शरीर के अर्द्ध भाग में, प्यास और पसीना नही होता है, जलोदरी, पेंट मे आघात सा दर्द, श्वांस कष्ट, मूत्रद्वार से दर्द।

आर्सेनिक ३०-२००—पीड़ा की प्रथमावस्था में यह दवाई [illegible] है [illegible] सर्वांग से विशेषतः आंख

के पपुटे
पसड़ा
जाना,
पेना हो
पार
मूत्र में
गले में
नींद न
दवाई
और
होजने से
फल
निकलने
उपरान्त
होता है
मी नित्र
कपड़े
के

के पपुटे और पैर मे शोथ, दिल की पीड़ा के हेतु स्वांसकष्ट, चमड़ा शीतल और चटचटा किन्तु शरीर के अन्दर अत्यन्त ज्वाला, मूत्र में चर्बी के सदृश पदार्थ देखा जाता है। पैर मे फोला हो जाता है और उस से रस निकलता है।

बारबेरीस ६-३०—बात के रोगी के पीठ में ज्वाला। मूत्र में बहुत परिमाण एलबूमेन देखा जाता है। मुंह और गले मे चटचटा बलगम जमा रहता है। जी मिचलाना, नीन्द न होना, कमर में दर्द, शराब पीने वालों के लिये यह दवाई उत्तम है।

आइओनिया ३०-२००—मूत्र गाढ़ा धुआंसा रंग के और अल्प, छाती मे दर्द, दम्मे की तरह श्वांस। हिलने डोलने से कष्ट की बृद्धि।

कैलकेरिआ-कार्ब ३०-२००—किसी प्रकार दाने निकलने वाली बिमारी के बाद विशेषत: चेचक होने के उपरान्त यह पीड़ा प्रकाशित होने से यह औषध उपकारी होता है। रोगी अत्यन्त दुर्बल, सामान्य मेहनत करने से भी दिल धड़कता है और श्वांशकष्ट होता है।

कैन्थारिस ६-३०—पीड़ा की प्रथमावस्था मे खास कर कमर में चोट लगने से अथवा अचानक हवा तबदील होने के स्वभाव से पीड़ा। मूत्र अत्यन्त अल्प और गाढ़ा लाल

रग, हमेशा अत्यन्त मूत्रवेग होना और मूत्रत्याग काल में अत्यन्त ज्वाला होना।

कलचिकम् ६-३०—मूत्र के रंग ठिक स्याही की तरह और उस के साथ रक्त के रंग मिला रहता है। रोगी सीधा हो कर खड़ा नही हो सकता है अथवा पैर को फैला कर लेट नहीं सकता है।

कुप्रम-सेट ६-३०—इउरोमिया वा मूत्र-विकार के कारण कन्मलशन।

केलि-बाइक्रम ३०—गरमी रोग के वजह से पाडु, प्रातःकाल मे दृष्टिशक्ति कम हो कर शिर दर्द होता है।

लैकेसिस ६-३०-२००—डिफथिरिया अथवा लालज्वर के बाद ब्राइट पीडा, ज्यादा शराबखोरी के कारण पीडा, मूत्र गदला या काला रंग का, गर्भावस्था मे पैर में शोथ, खास कर बाया तरफ मे।

मार्क-कर ६-३०—चेहरा फूला और फीका, जीभ फूला, अत्यन्त तृष्णा, रक्तमय मूत्र।

टेरिबिन्थ ६-३०—रोग की प्रथमावस्था मे जिस समय मूत्र के साथ रक्त और ऐलबूमेन निकलता है। कमर मे दर्द, मूत्रत्याग काल मे ज्वाला, मूत्र रुक जाना।

फ़सफोरस, डिजिटेलिस, लाइकोपोडियम, सल्फर इत्यादि भी अवस्था विशेष मे फल देते है।

आनुसंगिक उपाय—प्रदाह अवस्था में आसानी से हजम होने वाला पथ्य देना चाहिए। जिस से पसीना हो और शोथ कम हो जाय वैसा उपाय करना चाहिए। दर्द न रहे तो गरम पानी में नहाना चाहिए। यदि शरीर में खुन की कमी हो तो गरम पानी मे न नहाना ही अच्छा है। जिससे ठन्ढ न लगे ऐसा करना चाहिए और बदन गरम कपड़ा से ढंक कर रखना चाहिए। ज्यादा शारीरिक या मानसिक मेहनत, ठंढ लगाना वा वर्सात की पानी मे भींगना, शराब पीना, भोजन में अत्याचार इत्यादि से परहेज रखना चाहिए।

—:o—

किडनी के पत्थरी वा रेनल कैलकुलाइ।

(RENAL CALCUQI)

इस पीड़ा मे ज्यादेतर कमर मे भयानक दर्द होता है, यह दर्द इतना प्रवल होता है कि इस से कम्प, जी मिचलाना और कै होता है। कभी २ शरीर मे अत्यन्त पसीना होता है। नाड़ी पतली और दुवली हो जाती है। कन्भलशन भी हो सकता है। वेदनायुक्त पार्श्व के अन्डकोष

फूल जाता है, उस में दर्द होता है और वह कुछ ऊपर के ओर चढ़ जाता है, दर्द कभी कम कभी ज्यादा होता है। पत्थरी इउरेटर से ब्लडर वा मूत्रस्थली मे पहुंचने से ही दर्द आराम हो जाता है। इस दर्द के समय पेशाव मे वहुत कष्ट, पेशाव बुन्द २ से बार २ होता है, पेशाव के साथ रक्त भी निकल सक्ता है।

चिकित्सा—

ऐकोनाइट—तेज दर्द के समय इस दवाई की १म शक्ति का प्रयोग द्वारा अक्सर उपकार होता है।

वेलाडोना ६-३०-२००—अत्यन्त ऐंठनवाला दर्द। मरफिया अथवा अफीम सेवन के बाद इस दवाई द्वारा विशेष फल मिलता है।

बारबेरिस ३०-२००—मूत्र मे लाल रङ्ग का गाद और पीठ मे दर्द।

कैन्थारिस ६-३०—हमेशा मूत्रवेग होना, मूत्रनली मे अत्यन्त ज्वाला, मूत्र बुन्द २ से होना।

लाइकोपोडिअम ३०-२००—पेट के दहिने तरफ मे शूल के सदृश दर्द, बार २ पेशाव के वेग होना, पेशाव के नीचे लाल रेत की तरह गाद पड़ना।

टेवेकम ६-३०-२००—मेदा में अत्यन्त कष्ट होने के साथ जी मिचलाना और ठन्डा पसीना होना अथवा दहिने इउरेटर के स्थान मे शूल को तरह दर्द।

नक्स-भोमिका ६-३०-२००—बार २ मल और मूत्र त्याग करने की निष्फल चेष्टा।

ओपिअम, पाइपारमेथि, कैलकेरिया, इउरिनेरिआ, कैनाबिस, सारसापेरीला इत्यादि औषध भी अवस्थानुसार प्रयोग किया जाता है।

आनुसंगिक उपाय—दर्द के जगह मे गरम पानी का सेक देने से फायदा होती है। उस से उपकार न हो तो एक टब में गरम पानी डाल कर उस मे रोगी को कमर तक डुबाकर बैठा देना चाहिए। इस रोग में कसरत से पानी पीना फायदेमन्द है। आसानी से हजम होने वाला व बलकारी ग़जा देना चाहिए। शराब, चाय, कौफि वगैरह गरम चीज त्याग करना चाहिए। प्रतिदिन खुली हवा में नियमित मेहनत करना चाहिए। इस बिमारी मे पेठा का तरकारी फायदे का है।

—:o:—

मूत्रस्थली का प्रदाह वा सिस्टाइटिस।

(CYSTITIS.)

कारण—ठंढ लगना, आघात लगना, उत्तेजक (गरम) औषध सेवन, ब्लडर में पत्थरी का रुक जाना, मूत्रस्थली

के लगभग के यन्त्रादि—प्रस्टेट ग्लैंड, मूत्रनली इत्यादि का प्रदाह क्रमशः मूत्रस्थली में पहुंचना इत्यादि इस पीड़ा के कारण में गिना जाता है ।

लक्षण—तरुण प्रदाह मे मूत्रस्थली में अत्यन्त दर्द और कष्ट होता है। वार २ पेशाव के वेग होता है। कभी २ पेशाव वुन्द २ से होता है। पेशाव गरम और लाल रंग होता है। कभी २ पेशाव मे रक्त, पीव और वलगम देखा जाता है। ज्वर भी होता है। कै, अत्यन्त निस्तेज अवस्था, शीतल पसीना, हिचकी इत्यादि रोग की कठिन अवस्था मे देखे जाते है, दर्द इतना तेज नही रहता है किन्तु वार २ पेशाव के वेग होता है और पेशाव गदला होता है। पेशाव मे वदवू होती है।

चिकित्सा—

एकोनाइट ३x-६x—अत्यन्त वेचैनी, अत्यन्त ज्वर वार २ पेशाव करने की इच्छा, मूत्रस्थली मे ज्वाला।

वेलाडोना ६-३०—अत्यन्त पेशाव का वेग और दर्द, अत्यन्त ज्वर।

आर्सेनिक ३०-२००—पेशाव मे ज्वाला, अस्थिरता, ठन्ढा पसीना, चेहरा और हाथ पैर फूला हुआ।

प्राचीन रोगी मे पेशाव निकलने मे कठिनाई, मूत्रनली फूला और कड़ा। पेशाव गदला व रक्त और पीव मिश्रित।

कैन्थारिस ६-३०—मूत्रस्थली में अत्यन्त ज्वाला, लगातार पेशाव के बेग होना। पेशाव बुन्द २ से होना पेशाब करने मे अत्यन्त ज्वाला मालूम होना, पेशाब मे रक्त अथवा सिर्फ खून निकलना।

मार्क्युरिअस ६-३०—दुर्बलता के साथ पीठ में डंक मारने के सदृश दर्द, बार २ पेशाब का बेग होता है। पेशाब अल्प, गदला और बदबूदार होता है। पेशाव खून और पीव मिश्रित होता है।

नक्स- भोमिका ३०-२००—ब्लाडर और इउरेथरा मे छुरी भोकने के सदृश दर्द, पेशाब बुन्द २ से, लाल रंग, रक्त मिश्रित और ज्वाला के साथ होता है। इउरेथरा मे ऐंठन के कारण स्ट्रीक्चर और उससे पेशाब रुक जाना। कब्ज, मद्यादि अधिक पीने के हेतु पीड़ा।

फसफोरस ६-३०—पेशाव सफेद, दही की तरह होता है और थोड़े ही देर मे उसके नीचे ईंट के चूर्ण के सदृश गाद पड़ता है। कब्ज, मल के पतला व लम्बो लेढ़ो अति कष्ट से निकलता है।

पलसेटिला ६-३०—मूत्रस्थली मे ज्वाला और दर्द, पेशाव रुक जाना, खांसते और चलने फिरने के समय अपने आप पेशाब निकल जाता है। पेशाव थोड़ा लाल अथवा

रक्त मिश्रित होता है अथवा वलगम के सदृश गाद के साथ होता है।

सारसापैरिला ६-३०—व्लडर मे मरोड़, पेशाव मे सफेद पीव और वलगम निकलना। पेशाव लाल, गदला और उस मे सड़े पेठा के सदृश वस्तु देखा जाता है, पेशाव के बाद भयानक ज्वाला और कष्ट होता है।

सल्फर ३०-२००—पेशाव में खून वा वलगम रहता है। पेशाव वदवूदार। पेशाव मे ज्वाला, रोगी पेशाव के वेग सम्भाल नहीं सकता है। सर्वदा चांदी मे आग सा जलन होता है।

टैरेन्टुला ६-३०—अत्यन्त ज्वर, मूत्रस्थली मे भयानक दर्द किन्तु एक वृन्द पेशाव भी नहीं निकलता है। व्लडर कड़ा होता है और फूल जाता है। मूत्रस्थली में अत्यन्त दर्द होता है।

सहकारी चिकित्सा तल पेट मे गर्म तिसी के पुलटिस या फ्लानेल के साथ गर्म जल द्वारा सेक देने से विशेष उपकार होता है। तिसी अथवा सफगोल भिगाकर उस का पानी पीने से पेशाव की उत्तेजना कम होती है। मिर्चा वो गर्म मसालेदार वस्तु खाना नहीं चाहिये। दूध भात या वारली अच्छा है। शराब इत्यादि नहीं पीना चाहिये।

मूत्रस्थली के पक्षाघात वा फलिज।

PARALYSIS OF THE BLADDER.

मूत्रस्थली के संकोचक मांसपेशियों का पक्षाघात होने से, मूत्रस्थली से पेशाब निकल नहीं सकता है। मूत्रस्थली मे बहुत परिमाण मूत्र संचित होने पर यह स्तम्भिल और विस्तृत होता है। इसके उपरान्त और अधिक मूत्र संचित होने से मूत्र आप ही आप टपकने लगता है। रोगी पेशाब के बेग को रोक नहीं सकता है। इस प्रकार अवस्था को अङ्गरेजी मे इनकन्टिनेन्स आफ इउरिन (Incontinence of urine) कहते हैं। हमारी भाषा मे इसको बेखबरी से मूत्रत्याग कहते हैं।

दिमाग और मेरुमज्जा की पीड़ा; टाइफायेड ज्वर, अधिक समय पेशाब के वेग को रोक कर रखना, वृद्ध वयस, प्रस्टेट गिल्दी की वृद्धि, कसर, ब्लडर अथवा इउरेथ्रा मे आघात लगना इत्यादि कारण से यह बिमारी होती है।

चिकित्सा—

प्रति दिन निर्दिष्ट समय मे केथीटर द्वारा पेशाब निकाल कर मूत्रस्थली को साफ रखना चाहिये।

आरनिका ६-३०-२००—मूत्रस्थली पूर्ण मालूम होना, पेशाब का अत्यन्त वेग होता हैं किन्तु पेशाब नहीं निकलता है।

७५ -दार्णं-गंध-लुद्धा- गयालिमुहलेहिं ।

आरसेनिक ३०-२००—मल व मूत्र उभय का ही वेग होता है किन्तु वह निष्फल होता है। अत्यन्त अस्थिरता और व्याकुलता, ठण्ढ लग कर बिमारी होना। वृद्ध व्यक्तियों की पीड़ा में विशेष उपकारी है।

कैन्थारिस ३०-२००—चेष्टा कर के अधिक काल पेशाव को रोक कर रखने से पीड़ा होने पर यह औषधि दी जाती है।

कस्टिकम ३०-२००—बेखबरी में पेशाव होना, पेशाव का वेग को रोक नहीं सकना, खांसते और हंसते समय पेशाव का निकल जाना।

जेलसिमिअम ३०-२००—सर्वदा अपने आप पेशाव टपकता रहता है किन्तु वेग दे कर चेष्टा करने से थोड़ा सा भी पेशाव नहीं निकलता है।

हेलिबोरस ६-३०—संकोचक मांसपेशियों का फलिज, निम्न शाखा में शोथ, जो चीज खाता है वही कै हो जाता है। कब्ज, अनिद्रा।

प्रसवोन्त में शिशुओं का दिमाग के दोष से पीड़ा हो तो हाइयोसायमस दिया जाता है। वृद्ध लोगों का मूत्र रुक जाने से आइयोडिअम दिया जाता है। नक्स-मस्केटा, नक्स मोमिका, फसफोरस, स्टेफिसेग्रिया, वेराइटा-कार्व,

इग्नेशिया, लाइकोपोडिअम, नेट-म्युर इत्यादि औषधियां भी इस अधिकार में फलप्रद है।

—:oo:—

विछावन में मूत्रत्याग।

ENURESIS NOCTURNA.

किसी २ बच्चा को भाग्यदोष से यह कुअभ्यास होता है। अतिशय निद्रालुता के हेतु अथवा मूत्रस्थली का मुंह निद्रा के समय ढीला होने के हेतु ऐसा होता है। कोई २ शिशु स्वप्न देखता है कि उस को पेशाव का वेग हुआ है और वह ठीक पेशाब की जगह पर ही पेशाव कर रहा है। इस प्रकार स्वप्न-दोष-जनित विमारी सहज से नहीं जाती है वहुत वयस तक रहती है।

चिकित्सा—

ऐमन-कार्व ६-३०—रात में किसी समय बिछावन में पेशाव करना, पेशाव रंग रहित होता है और उस के नीचे गाद पड़ता है।

आरजेन्टम-नाइट्रिकम ६-३०—दिन और रात उभय समय ही विछावन में पेशाव करना, वेखवरी से पेशाव हो जाना, अत्यन्त अस्थिरता।

वेलाडोना ६-३०—अस्थिर निद्रा और कभी २ नींद से चौंक उठना, निद्रा मे गुंगुआना और चित्कार मारना, ज्यादा निद्रा होने पर विछावन मे पेशाव करना, खासकर रात मे और भोर के समय।

वेनजोइक—एसिड ६-३०—विछावन मे पेशाव करना, विशेषतः अधिक वयस की वालिका की विमारी, पेशाव मे घोड़े के पेशाव सा दुर्गन्ध।

कैलकेरिया-फस ६-३०—अत्यन्त दुर्व्वलता और विछावन मे पेशाव होना, शिशु निद्रा मे ही रोता है और चौंक उठता है, रात के शेष भाग में इतना अधिक नीन्द होती है कि शिशु को जगाया नहीं जाता है।

कस्टिकम ३०-२००—खांसते या हंसते वक्त पेशाव निकल जाता है, रात को निद्रा के प्रथम भाग मे ही विछावन में पेशाव करता है। जाड़ा के दिनों मे दिन रात उभय समय ही विछावन में पेशाव करता है।

क्लोरल ६-३०—रात के शेष भाग में विछावन में पेशाव।

सिना ३०-२००—दिन मे वहुत पेशाव करता है और पेशाव मे नौसादर की वू आती है। अस्थिर निद्रा, कृमि के लक्षण, भूख अत्यन्त अधिक।

इक्वुइसिटम ६-३०—दिन अथवा रात में बिछावन में पेशाब करता है। स्वप्न में बहुत लोग देखता है, अगर सिर्फ बिछावन में पेशाब करने के सिवाय और कोई लक्षण न मिले तो यह दवा प्रयोग करनी चाहिये।

फेरम-मेट ३०—रात में बहुत बार बिछावन में पेशाब करता है, पेशाब में नौसादर की बू आती है और उस में कादो सा गाद पड़ता है।

हाइयोसायेमस ३०-२००—बार २ अल्प २ पेशाब होना, रात में बार २ उठा कर पेशाब कराने से भी बिछावन में पेशाब करता है।

क्रिओजोट ६-३०—निद्रा से शिशुको जगाना कठिन होता है। स्वप्न में बिछावन में पेशाब करता है और उसके उपरान्त जाग पड़ता है।

लैक-कैनाइनम ६-३०—बार २ बहुत परिमाण से पेशाब करता है, स्वप्न में पेशाब करना।

कोआसिया ३-६—बहुत परिमाण से मूत्रत्याग, शिशु जाग पड़ने से ही बिछावन में पेशाब करता है।

सिपिया ३०-२००—कस्टिकम के प्रयोग के बाद यह औषध उत्तम है, प्रायः निद्रा के प्रथम भाग से ही बिछावन में पेशाब करता है।

थुजा ३०-२००—रात मे बिछावन में पेशाव करना और खांसते समय अपने आप पेशाव निकल जाता है। पेशाव मे अत्यन्त तेज बू होती है। कण्ठमाला धातु। शरीर में मस्से होने का स्वभाव।

निद्रित अवस्था में पेशाव होने के निमित्त वेलाडोना और क्रिओजोड़ प्रधान औषध है। निद्रा के प्रथम भाग में पेशाव होने के निमित्त कस्टिकम, सिला, फसफोरिक-एसिड, और सिपिया उत्तम हैं।

—:०:—

मूत्रावरोध।

RETENTION OF URINE.

नानाप्रकार के कारण से पेशाव रुक जा सक्ता है। मूत्र-स्थली के मुह के मांसपेशी का आक्षेप, गनोरिया पीड़ा जनित इउरेथ्रा के स्ट्रीक्चर वा सिकुड़ना, मूत्रस्थली के संकोचक मांसपेशी का फलिज होना, प्रस्टेट गिलटीकी वृद्धि, खून का ढेला, म्युकस, पत्थरी, व्लडर का प्रदाह इत्यादि कारण से मूत्रस्थली मे मूत्र अवरुद्ध हो सकता है।

मूत्रावरोध होने से पेशाव नहीं होता है, तलपेट फूल जाता है और उस मे कष्ट होता है।

प्रोस्टेट की वृद्धि होने से औषध सेवन और केथीटर लगाना दोनों की जरूरत होती है।

मूत्रानली सिकुड़ जाने के हेतु जो मूत्रावरोध होता है वह सब से कठिन है। पेशाव अति पतली धार से और कष्ट से निकलता है। अक्सर औषधि से उपकार न होने से केथीटर वा सलाई द्वारा पेशाब कराना पड़ता है। आक्षेप जनित मूत्रावरोध प्राय. औषध सेवन अथवा गर्म पानी के टब (Tub) मे. वैठने ही से आराम होता है।

चिकित्सा—

एकोनाइट ३-६—मामुली रोग में खासकर जब पेशाब कर नही सकने से शिशु चिल्ला उठता है और बार २ लिङ्ग के ऊपर हाथ फेरता है। कभी तो पेशाब बिलकुल नही होता है कभी २ बुन्द २ से होता है और कभी २ रक्त पेशोब होता है।

एपिस ६-३०— किसी प्रकार का चर्म्म - रोग दब जाने से पीड़ा हो तो एपिस उत्तम फल देता है। पेशाव की नली में ज्वाला के साथ डंक मारना सा दर्द और खुजली होती हैं, पेट पर दवाने या छुने से दर्द मालुम होता है, सन्ध्या के समय पीड़ा की वृद्धि होती है, ज्वर में प्यास नही होती है

आरनिका ६-३०—किसी प्रकार का चोट लगने से रीढ़ा हो तो उत्तम फल देता है।

बेलाडोना ३-६—मूत्रस्थली मे दर्द। व्याकुलता अस्थिरता और शूल के सदृश दर्द।

कैम्फर ३०-२००—कोदृया के वाद पेशाव रुक जाना।

कैनाविस-इन्डिका ३०—स्ट्रीकचर के हेतु पेशाव बन्द होने से दिया जाता है। कैन्थारिस भी ऐसी हालत मे प्रयोग करने से उत्तम फल मिलता है।

सिपिया ३०—तेज ज्वर हेतु पेशाव उत्पन्न न होना अथवा मूत्र रुक जाना, पेशाव करने के समय वहुत देर तक काखने पर थोड़ा सा गदला पेशाव होता है। पेशाव की वू वहुत खराव होती है।

प्रुनस-स्पाइनोसा स्ट्रीक्चर के रोगी मे इस की ३ शक्ति व्यवहार करने से विशेष फल मिलता है।

आर्सेनिक ३०-२००—बहुत कष्ट से अल्प २ पेशाव ज्वाला के साथ निकलता है, पेशाव में भयानक वेग होता है किन्तु पेशाव नहीं निकलता है।

डलकामेरा ३-६—ठन्ढ लगने के हेतु पीड़ा, गदला और रक्त मिश्रित पेशाव।

नक्स-भोमिका ३०-२००—सर्वदा पेशाव के निष्फल वेग होना। पेट फूला हुआ, कब्ज।

ओपिअम ३०-२००— मूत्रस्थली का फलिज।

रस्-टक्स ६-३०-२००—बात रोग के और ठन्ढ लगने के हेतु पीड़ा, खून के ऐसा पेशाब, मूत्रस्थली का फलिज। प्रोस्टेट ग्लैंड की बृद्धि के हेतु मूत्र रुक जाने से सैबल सेरुलेटा और इकुइसेटम अत्यन्त उपकारी होता है।

—:००:—

व्यभिचार जनित पीड़ा समूह।

सुजाक वा प्रमेह वा गनोरिया।

(GONORRHŒA)

यह छूत से होने वाली रोग है, प्राय अपवित्र संगम द्वारा यह बिष एक जननेन्द्रिय से अन्य बिपरीत जननेन्द्रिय में प्रवेश करके इस रोग को पैदा करता है। यह एक प्रकार प्रदाह बिशेष है। पुरुष की मूत्र-नली और स्त्री के योनि-द्वार से पीव सा स्राव ही इस के प्रधान लक्षण है।

कारण—कण्ठमाला धातु के लोगों में यह पीड़ा की अधिक होने की सम्भावना है। अपवित्र संगम से गनोरिया का बिष जननेन्द्रिय मे प्रवेश करने से ही यह बिमारी होती है। निम्न लिखित कारण यथा—पुनः २ अत्यधिक संगम, हस्त-मैथुन, संगम के उपरान्त पिचकारी प्रयोग कृमीरोग इत्यादि

से भी प्रमेह की तरह पीड़ा की उत्पत्ति होती है। किन्तु इस प्रकार से उत्पन्न पीड़ा को प्रकृत गनोरिया नहीं कहा जाता है। जिसको पहले एक बार गनोरिया हुआ उसको अत्यन्त मद्यपान, रात्रि जागना, गरम चीज खाना इत्यादि कारण से फिर से गनोरिया हो सकता है। एक बार गनोरिया आरोग्य होने पर फिर नया विष प्रवेश करने से नया तौर पर गनोरिआ की उत्पत्ति होती है। यह पीड़ा, स्त्री, पुरुष उभय को होती है।

पुरुष का गनोरिआ—इस रोग की प्रथम अवस्था में मूत्रनली के सम्मुख भाग आक्रान्त होता है और रोग कठिन होने से वहां से क्रमश आगे बढ़ कर मूत्रनली, इउरेटर किडनी, शुक्रनली तक पहुंच सकता है।

पहले २ मूत्रनली की लसादार झिल्ली में प्रदाह होता है। बाद में उस से पीव निकलता है। रोग अधिक दिन स्थायी होने से उस को ग्लीट (Gleet) कहते है। यह प्राचीन प्रदाह अधिक दिन स्थायी होने से मूत्रनली का स्ट्रीकचर (Stricture) वा संकीर्णावस्था कहते हैं।

लक्षण—सगम के उपरान्त १२ घन्टे से लेकर २ दिन में रोग प्रकाश पाता है। प्रथमावस्था में मूत्रनली का मुंह गीला, उस में खुजली और सुरसुराहट मालूम

पड़ता है, मूत्र नली का मुंह लाल होता है और उस में से पतला और सफेद स्राव निकलता है। यह अवस्था ३ या ४ दिन तक रहती है। द्वितीयावस्था में उस में प्रदाह उपस्थित होता है और १० या १५ दिन तक प्रतिदिन ही रोग की बृद्धि होती जाती है। इस अवस्था मे अत्यन्त ज्वाला होता है। मूत्रनली से पीव निकलता है, बार २ पेशाब का बेग होता है, मलद्वार व अन्डकोष में भी कष्ट होता है। इस अवस्था में लिङ्ग कठिन हो कर, धनुष की तरह टेढ़ा भाव धारण करना वा कर्डी (Chordi) होना एक प्रधान शिकायत है। कर्डी की हालत में लिङ्ग मे अत्यन्त सख्त तकलीफ होती है। तृतीयावस्था, इस बिमारी की पूर्ण वर्द्धित अवस्था है।

इस रोग मे कभी २ prepuce प्रिपीउस वा लिङ्ग-मुन्ड को ढकने वाला चर्म और म्युकस झिल्ली प्रदाहयुक्त हो कर फूल जाता है और उसका मुंह संकुचित हो जाता है। इस कारण पुरुषाङ्गका मुण्ड बाहर नहीं निकला सकता है। इस अवस्था को फाइमोसिस (Phymosis) कहते हैं। यदि वह प्रिपीउस मुन्ड के पश्चात् भाग मे उभर कर प्रदाहयुक्त हो और फूल जाय तव उस को पैराफाइमोसिस (Para-phymosis) कहते है। यह हालत बिमारी की द्वितीयावस्था मे होती है।

चतुर्थावस्था मे प्रदाह क्रमशः कम होता है, यन्त्रणा समुह भी कम हो जाता है, पीव क्रमश अल्प, पतला और

सफेद होता है। चिकित्सा उत्तम होने से रोग सम्पूर्ण आरोग्य होता है।

इस रोग का आराम होने का समय का कोई ठिकाना नहीं है।

चिकित्सा—

एकोनाइट—इसकी प्रथम शक्ति दिन में चार बार प्रयोग करके उत्तम फल देखा गया है। रोग की प्रथमावस्था में ज्वाला और तेज बुखार रहने पर इसका प्रयोग होता है।

मार्किउरिअस ३-६-३०—लिङ्ग फूला, पेशाव में ज्वाला, मूत्रनली में सुरसुराहट, अत्यन्त सहवास करने की इच्छा होती है, पीव पीलापन या सब्जापन पीला होता है, फाइमोसीस और बाघी।

मार्क-कर ६-३०—मूत्रनली का मुंह में प्रदाह, लिङ्ग का मुन्ड में अत्यन्त दर्द, पेशाव के धार पतला होता है और पेशाव के साथ खून निकलता है।

मेडोरिनम ३०-२००—मूत्रनली का मुंह में ज्वाला और जखम सा मालूम होना, पेशाव के बाद मालूम होता है कि कुछ पेशाब अन्दर रह गया, बहुत परिमाण से पीला पीव निकलना, बार २ पेशाव के वेग होना, नई बिमारी में ६ शक्ति और प्राचीन रोग में ३० अथवा २०० शक्ति से फल लाभ होता है।

जेलसिमिअम ६-३०—यह दवा प्रथमावस्था में फायदेमन्द होती है। बहुत तकलीफ के साथ थोड़ा २ पेशाब होना पेशाब के समय कर्डी होता है। वात रोग, गनोरिआ अचानक रुक जाने से अन्डकोष में प्रदाह होना। ग्लीट और स्ट्रीक्चर। पेशाब रुक २ कर होना।

कैनाबिस-सैटाइभा १x-३x-६—पीड़ा के शुरू में पीब पानीसा पतला और बदबूदार होता है, पेशाब में अत्यन्त ज्वाला और कुंथना। कर्डी।

कैन्थारिस ६-३०-२००—पेशाब के समय अत्यन्त कुंथना और ज्वाला, पेशाब बार २ और बुन्द २ से होता है। पेशाब में कभी २ रक्त निकलता है, पीब रक्तमिश्रित या पीला, सख्त कर्डी होता है।

कैप्सिकम ६-३०—मूत्रनली में ज्वाला व गर्मी, डंक मारना सा दर्द और पेशाब के समय बिजली सा चमकना। पीब गाढ़ा और पीला।

एगेभ-आमेरिकाना ३०—कर्डी से भयानक कष्ट, मूत्र कष्ट।

कोपेभा १२—मूत्र नली का मुंह प्रदाहयुक्त फूला हुआ और उस में डंक मारनासा दर्द। पेशाब के धार मूत्रपथ के मुंह में आने से बहुत दर्द होता है। दूधसा

व जखम पैदा करने वाला पीव अथवा पीला स्राव होना। वार २ पेशाव के वेग होना, कभी २ खून का पेशाव होता है।

क्युवेव १२—गाढ़ा और पीलापन सब्ज पीव वहुत परिमाण से निकलता है पेशाव के समय अत्यन्त ज्वाला होना। पेशाव के वाद कतरने की तरह दर्द होना, पेशाव के वाद भी मालूम होता है कि मूत्र-नली में पेशाव रह गया, खून का पेशाव।

आर्जेन्टम-नाइट्रस ३०-२००—केनाविस-सैटाइमा का प्रयोग के वाद यह औषध का प्रयोग से उत्तम फल मिलता है। स्राव पीव के सदृश, मुत्रनली फूला और उस में दर्द, पेशाव करने के वाद मालूम होता है कि कुछ पेशाव अन्दर रह गया है और ज्वाला इतना अधिक होता है कि वह ज्वाला मलद्वार तक मालुम होता है। स्राव से जखम पैदा होता है। गनोरिया दव जाने से अन्डकोष कठिन और वड़ा होने पर यह दवा का प्रयोग किया जाता है।

एगनस-कैस्टस ६-३०—स्राव, पीलापन और पीव की तरह। अन्डकोप कठिन, प्राचीन गनोरिया में लिङ्ग कड़ा और संगम की इच्छा न होना। ध्वजभग।

सिपिया ३०-२००—पतला रस की तरह स्राव होना और उस मे किसी प्रकार का कष्ट न मालूम होना, दूध सा

या पीलापन स्राव होना, पेशाव गदला और दुर्गन्धी । पुरुषाङ्ग मे अत्यन्त पसीना होना । शिर दर्द, रोगी का मिजाज दुखी रहता है, प्राचीन गनोरिया मे मूत्रनली का मुंह सुवह में जुटा हुआ रहता है । पिचकारी का प्रयोग से गनोरिया का स्राव वन्द हो कर कनडाइलोमेटा (Condylomata) वा फूलकोवी के शक्ल के मस्सा होना ।

हिपर--सल्फ ३०-२००—पीलापन सफेद व वदवूदार पीव निकलना । वार २ गनोरिया का आक्रमण होना, पेशाव के वाद चन्द वुन्द खून गिरना ।

सलफर ३०-२००—स्राव गाढ़ा पीव अथवा पतला पानी के सदृश, पेशाव करने के समय ज्वाला, मूत्रनली का मुंह वहुत लाल रहना । फाइमोसीस, प्रिपीउस सख्त और प्रदाह-युक्त, मूत्रनली में खुजलाहट ।

थूजा ३०-२००—स्राव पतला, सब्जापन और पेशाव करने के समय ज्वाला, वार २ पेशाव करने की इच्छा किन्तु मालूम होता है कि किसी से पेशाव वाधा पा रहा है । सिर्फ चन्द वुन्द खुन निकलता है । मूत्रनली में अत्यन्त ज्वाला विशेषतः चलने फिरने के समय । मूत्रनली फुला, पेशाव दो तीन धार से निकलता है । पुरुषाङ्ग के निम्न भाग मे शहद की तरह वूदार पसीना । शरीर मे मस्से (Warts) गनोरिया का स्राव वन्द होने के कारण

गठिया, विशेषत: (ठेहुना) में, ध्वजभङ्ग, सिर के बाल का उड़जाना। हाइड्रासटिस, पलसेटिला, नाइट्रकएसिड प्रभृति औषध भी अवस्था विशेष में उत्तम क्रिया करता है।

गनोरिआ के कारण होने वाली बिमारियों की चिकित्सा-

फाइमोसिस व पैरा फाइमोसिस।

फाइमोसिस और पैरा फाइमोसिस में एकोनाइट, बेलाडोना, रस-टक्स, केनाबिस कैन्थारिस, सिनबारिस, नाइट्रिक एसिड, पलसेटिला, थुजा इत्यादि द्वारा उपकार होता है।

अरकाइटिस वा अन्डकोष का प्रदाह।

(ORCHITIS.)

गनोरिआ रोग में प्राय: ठण्ढ लगना, पानी में भींगना, पिचकारी द्वारा सूत्र बन्द करना इत्यादि कारण से यह पीड़ा होती है। यदि शेषोक्त कारण से पीडा हो तो पलसेटिला और क्लिमेटिस का प्रयोग से उपकार होता है। यदि इनसे फल न होतो मारकुरिअस दिया जाता है। एगनस-कैटस, औरम, हेमामेलिस, नक्स-भोमिका, फाइटोलेक्का, रस-टक्स, थुजा इत्यादि से भी इसमें उपकार होता है।

प्रोस्टेट ग्लैन्ड का प्रदाह।

(PROSTATE GLAND.)

इस बिमरी में पेरिनियम प्रदेश (अन्डकोष के नीचे से गुह्यद्वार स्थान तक) मे दर्द और पेशाव में कष्ट होता है। माकुरिअस, नाइट्रिक-एसिड, फसफोरस, पलसेटिला, सेलिनिअम, सलफर, थुजा, इत्यादि औषध, इस अधिकार में उपकार देता है।

स्ट्रीक्चर।

(STRICTURE.)

यह दो प्रकार का होता है। (१) स्पैज्मोडिक (Spasmodic) वा आक्षेपिक, (२) अरगैनिक (Organic) वा आंगिक। इस बिमारी में पेशाब के धार बहुत पतला होता है अथवा पेशाव दो तीन धार से निकलता है। पेशाव करने के समय बहुत बेग देना पड़ता है।

(१) मूत्रनली के स्पैज्म वा ऐंठन के कारण पेशाव रुक जाय तो गरम पानी के टब (Tub) में बठने से और औषध व्यवहार करने से आराम हो जाता है। एकोनाइट, बेलाडोना, नक्स-भोमिका, ओपिअम इत्यादि इस के लिये प्रधान दवाई हैं।

(२) मूत्रनली के अरगेनिक या 'अङ्ग' के स्ट्रीक्चर होने से उसकी अस्तर झिल्ली मोटा और कड़ा होती है और मूत्रनली बहुत संकीर्ण हो जाती है ।

क्लिमेटीस, प्रुनस, पेट्रोलियम, मार्कुरिअस, सलफर, थुजा साइलिसिया इत्यादि इस विमारी में फलप्रद होता है। स्ट्रीक्चर अति कठिन होने से कैथीटर द्वारा पेशाव निकालने की आवश्यकता होती है ।

गनोरीया के कारण आंख में प्रदाह ।

GONORRHŒAL OPHTHALMIA.

गनोरिआ के पीव आंख में लगने से यह पीड़ा होती है और भयानक तकलीफ होती है । नाइट्रिक-एसिड २०० इस रोग के शुरू में व्यवहार करने से विशेष फल पाया जाता है । आख, लाल रंग और उससे ज्वाला के साथ पानी निकले तो आर्सेनिक दो । पीव और तकलीफ अधिक होने से आरजेन्टम दो । मार्क-कर, मार्क-सल, पलस, हिपर, वेलाडोना इत्यादि औषध द्वारा भी विशेष उपकार पाया जाता है।

कस्टिक-लोशन द्वारा आंख धोना विशेष उपकारी है। एक औन्स डिस्टील्ड वाटर में एक या दो ग्रेन कस्टिक मिलाने से यह लोशन प्रस्तुत होता है।

1. पुग ग्न्या

प्रमेह जनित वात रोग।

GONORRHŒAL RHEUMATISM.

पिचकारी देने के कारण गनोरिआ के पीव बन्द होकर इस रोग की उत्पत्ति होती है। दर्द एक स्थान से स्थानान्तर में चले फिरे तो—पलसेटीला, पारा इत्यादि के अपव्यवहार किया हो तो—कैलमिया, गनोरिआ के बाद वात रोग में—सारसापैरिला, रोगी के शरीर में पारा अथवा गर्मी का विष हो तो—केलि-आयोड और फाइटोलैका उत्तम औषध है। हिपर-सलफर, मार्कुरिअस, थुजा इत्यादि से भी फल मिलता है।

स्त्रीलोग का गनोरिआ का चिकित्सा

पुरुष की गनोरिआ-चिकित्सा के सदृश है।

गनोरिआ रोग में पथ्यापथ्य—इस पीड़ा मे लाल मिर्चाई, गर्म मसाला, मांस इत्यादि उत्तेजक वस्तु व्यवहार नहीं करना चाहिये। सफगोल, मिश्री इत्यादि का शरवत पीना चाहिये। ज्वर न हो तो प्रति दिवस स्नान करना चाहिये। कच्चा दूध रोगी के लिये अच्छा है। रात में जागना नहीं चाहिये।

—०:—

गर्मी पीड़ा वा उपदंश वा सिफिलिस।

(SYPHILIS.)

रोग परिचय—यह पीड़ा अपवित्र संगम के फल विशेष होकर जगत में दिखाई दी है। इसके साधारण नाम गर्मी रोग है। इस पीड़ा के विष किसी जखम के जरिए शरीर में प्रवेश कर खून को दूषित करके जखम के रूप से प्रकाश पाता है। माता मिता के शरीर में यह रोग रहने से सन्तान के शरीर में भी प्रकाश पाता है।

प्रकार भेद—यह रोग दो प्रकार का होता है। (१) कोमल उपदंश वा सफ्त शैंकार (Soft chanchre), इस से शरीर के रक्तादि सब धातु दूषित नहीं होता है। (२) कठिन उपदंश वा हार्ड शैंकार (Hard chanchre) इस पीड़ा के विष पहले शरीर में घुस कर रक्तादि सब धातु को दूषित करके प्रायः ७ से २८ दिन के अन्दर यह उपदंश जखम हो कर प्रकाश पाता है, और यही प्रकृत उपदंश पीड़ा है। यह पीड़ा एक वार किसी को होने से उसके बहुत पुरुष तक, यथा :—पुत्र, पौत्र इत्यादि के शरीर में इस विष की क्रिया देखी जाती है।

शैंकार प्रारम्भ में पुरुषाङ्ग का मुन्ड, प्रिपिउस, मूत्रनली के सन्मुख भाग, अन्डकोष के आवरक चर्म, योनिकपाट

(Labia), योनि के मुंह इत्यादि स्थान में जखम के रूप से प्रकाश पाता है। बाद इन सब स्थान से ओष्ठ, जीभ इत्यादि मे भी फैल सकता है।

सफ्ट शैंकार फुन्सी के अथवा लाल दाग के सदृश हो कर आरम्भ हो कर सफेद जखम हो जाता है और उस मे से बहुत पीव और खून निकलता है। हार्ड शैंकर फुन्सी के तौर पर आरम्भ नहीं होता है। यह मटर के सदृश कठिन अथवा फटने के सदृश होकर आरम्भ होता है। इस मे से पतला और बहुत थोड़ा पीव निकलता है। हार्ड शैंकर को हानटेरिअन शैंकर भी कहा जाता है।

कारण—उपदंश का विष वा भीरस (Virus) ही इस रोग की उत्पत्ति का कारण है। यह विष खून और लीम्फ (Lymph) के संयोग से ही शरीर के अन्दर प्रवेश करता है, प्रारम्भ मे इससे प्राइमरी शैंकर की उत्पत्ति होती है उसके बाद इससे शरीर के सब अङ्ग आक्रान्त हो सकता है। अकसर चर्म, म्युकस झिल्ली, हड्डी, मांसपेशी, धमनी इत्यादि इस विष द्वारा आक्रान्त हुआ करता है। लिम्फेटिक ग्लैन्ड आक्रान्त होने से वह फूल जाता है और उसको वाघी कहते है। उपदंश का पहला जखम वा प्राइमरी शैंकार पुरुषाङ्ग मे वा स्त्रीजननेन्द्रिय मे होने से काछा (Groin) के ग्लैन्ड फूल जाता है और इसी का साधारण नाम वाघी है।

कोऊहल-विरइया [२८०-

धलुद्धा गयालिमुहलेहिं।

प्रकृत सिफिलिस का लक्षण।

(१) प्राइमरी सिफिलिस वा उपदंश की प्रथमावस्था :— जब तक उपदंश के पहला जखम और उसके साथ बिउबो वा बाघी वर्तमान रहता है तब तक उसको प्राइमरी सिफिलिस कहा जाता है।

यदि शैंकार का जखम बहुत गहरा होय और फैल जावे तब उसको फेजिडनिक (Phagidanic) शैंकार कहते हैं। यह शैंकार देखने में सब्जापन होता है। गैंग्रनस वा श्लफीङ्ग शैंकार (Gangrenous or Slouphing Chanchre) :— यह शैंकार पहला एक काला सड़ा दाग की तरह होता है. बाद जखम हो जाता है और चारो ओर फैलता जाता है। यह जखम के चारो ओरसड़ा काला दाग पड़ता है और क्रमशः वह भी जखम बन जाता है। इस में दर्द बहुत होता है। यदि जल्दी आरोग्य न हो तो इससे जननेन्द्रिय बिलकुल सड़ जाता है।

(२) सेकेन्डारी सिफिलिस वा उपदंश की द्वितीय अवस्था प्राइमरी जखम के बाद ३ से ८ महीना तक किसी प्रकार का नया लक्षण नहीं देखा जाता है। उसके बाद रोगी के शरीर में सर्वदा एक प्रकार ज्वरबोध होता है, और चर्म के ऊपर नाना प्रकार के इरपशन देखा जाता है। किसी २ रोगी का इरपशन जुरपित्त की तरह लाल

१ पुरा ग्या.

धब्बे की तरह होता है और किसी २ का इरपशन चेचक की गोटी की तरह कड़ा और लाल होता है। किसी २ का इरपशन में रस या पीव भी देखा जाता है।

गले के भीतर, मुंह, जीभ, ओष्ट, नाक इत्यादि स्थान मे प्रदाह देखा जाता है। मलद्वार के चारों ओर, योनिद्वार इत्यादि स्थान मे कन्डाइलोमेटा (Condylomata) वा एक प्रकार फुलकोबी के सदृश (Cauly flower like) मस्से होते हैं।

मांसपेशी, हड्डी, गांठ इत्यादि में दर्द होता है। आइराइटीस और कोरोइडाइटीस नामके आंख का रोग होता है। गरदन इत्यादि नाना स्थान के लिम्फैटीक ग्लैन्ड की वृद्धि होती है। अर्काइटीस वा अन्डकोष के प्रदाह देखा जाता है और अक्सर सेकेन्डारी और टारशिआरी (Tertiary) वा तृतीय अवस्था इतनी मिली हुई होती है कि इन दोनों को फरक नहीं किया जाता है।

(३) टारशिआरी सिफिलिस वा सिफिलिस की तिसरी हालत

इस अवस्था में द्वितीय अवस्था के प्रायः लक्षण ही अधिक भाव से देखा जाता है। गमा वा गमेटा (Guma or Gumata) इस अवस्था के प्रधान लक्षण है। गमा चर्म, मांसपेशी, हड्डी, दिमाग, यकृत इत्यादि सर्वाङ्ग में हो सक्ता है। यह गमा आलु वा सुपारी के सदृश अथवा और अधिक

वड़ा हदवन्द फूलन (Swelling) विशेष होता है। इस तृतियावस्था में केरिज, निक्रोसिस (Caries, Necrosis) वा हड्डी में जखम भी हो सक्ता है।

—:⋯:❀:⋯:—

कन्जेनिटल वा पैतृक उपदंश ।
(CONGENITAL SYPHILIS)

माता अथवा पिता के उपदंश होने से बच्चा को भी यह पीड़ा हो सक्ती है, अक्सर शिशु गर्भ में ही आक्रान्त होता है। भ्रूण (गर्भस्थ बच्चा) को यह पीड़ा होने से प्रायः ७ वां या ८ वा महिना गर्भ के समय वह गिर जाता है। यदि जीवित अवस्था में बच्चा पैदा हो तब उसके शरीर मे किसी प्रकार का उपदंश के चिन्ह नहीं देखा जाता है। शिशु के शरीर में पीड़ा प्राय द्वितीयावस्था के लक्षणों के साथ देखा जाता है। शिशु के जन्म से प्रायः २ से ६ हफ्ता मे उपदंश के लक्षण देखा जाता है। उस समय शिशु को देखने से ही बिमार मालूम होता है। बच्चा सूखा वा पतला दुबला होता जाता है। उसके शरीर का रंग फीका होता है। चर्म ढीला, सूखा और सिकुड़ा हुआ होता है। शरीर में नाना प्रकार के इरपशन देखा जाता है। शरीर के नाना स्थान की हड्डी में बिमारी देखी जाती है। नाक का जड़ धस

जाता है, दांत स्वभाविक नहीं होता है, सहज से ही दांत टूट जाता है। अक्सर बच्चा बहरा हो जाता है। तालू और गले मे भी जखम हो सकता है।

चिकित्सा—

मार्कुरिअस—इस रोग का एक महौषध है। यदि उपदंश रोग में और कोई खतरा न रहे तो यही एक मात्र औषधि है। इसका २× या ३× ट्रिटुरेशन एक ग्रेन हिसाब से प्रति दिन एक डोज देने से दो तीन सप्ताह मे जखम सूख जाता है। उस के बाद भी कुछ दिन तक इस को व्यवहार करना चाहिये। इस दबाई का प्रथम ट्रिटूरेशन जखम के ऊपर छिड़क देने से विशेष उपकार होता है। यदि पैराफाइमोसिस से लिङ्ग के मुन्ड के ऊपर बहुत दबाव पड़े तो प्रिपीउस में चिड़ा लगाना चाहिये। मार्कुरिअस की ऊंची शक्ति भी इस बिमारी में उपकार करती है।

बाघी में—भी मार्क-सल विशेष फलप्रद है। यदि बाघी न दबे, न फटे और कठिन हो कर रहे तो मार्कुरिअस-प्रेसिपिटेट-रूब्रम देना चाहिये। कोमल और चिप्टा कनडाइलोमेटाके निमित्त मार्क-कर सर्वोत्कृष्ट है। इसकी १२ शक्ति का प्रयोग होता है। प्रकृत उपदंश पीड़ा कभी जल्दी आरोग्य नहीं होती है। अतएव धैर्य्य धारण करके

इसको चिकित्सा करनी चाहिये। यह रोग पारा के अपव्यवहार द्वारा चिकित्सित होने से नाइट्रिक-एसिड और हिपर सल्फर का प्रयोग करने से फल होता है। इन दोनों का ३-६ और ३० शक्ति का व्यवहार से फल मिलता है। बहुत डाक्टर हार्ड शैंकार में मार्कुरिअस-आइओड और सिनाबारिस का व्यवहार करने का उपदेश देते हैं।

फैजिडेनिक शैंकार में—मार्क-कर और मार्क-प्रेसिपिटेट्स—खूब विशेष योग्य है। किन्तु जखम गन्दा और वर्द्धित अवस्था मे रहने से नाइट्रिक-एसिड अथवा म्युरिएटिक-एसिड देना चाहिये।

गैंग्रीनस जखम में—आर्सेनिक ही एक मात्र औषध है।

नया बाघी में—मार्कुरिअस-सल देने से पीव नहीं हो सकता है। पीव होने से भी मार्कुरिअस देने से वह सूख जाता है। पीव अधिक होने से हिपर-सलफर प्रयोग करने से बाघी फट जाता है। बेडिआगा के प्रयोग द्वारा भी बाघी में फल मिलता है। इसको १ शक्ति दिन में दो तीन बार प्रयोग किया जाता है। इसको ऊपर भी लगाया जाता है। यदि बाघी न फटे या न दबे और कठिन

रहे तब मार्क-आओडेटस वा कार्बो-एनिमेलिस अवश्य फल देगा। कठिन-कन्डाइलोमेटा के निमित्त थुजा उत्तम है।

जब सेकेन्डारि लक्षण के नाना प्रकार इरपशन देखा जाय तब मार्क-कर, मार्क-प्रेसिपिटेटस-रूब्रम इत्यादि औषधि प्रयोग करने से उपकार होता है।

विशेष भैषज्य तत्त्व—

आर्सेनिक ३०-२००—अत्यन्त दुर्बलता, शरीर सूखा और पतला-दुबला। पीड़ायुक्त स्थान में ज्वाला। सड़ा और काला जखम, ओष्ठ नीला और उसमें काला २ दाग, बार २ पेशाब के वेग, वेखबरी से पेशाब होना, पेशाब में ज्वाला कान के अन्दर बदबू।

आर्सेनिक-आओडेटस ३०-२००—सेकेन्डारी वा टारशिअरी अवस्था में उतकृष्ट है।

औरम-मेट वा औरम-म्युर ३०-२००—सेकेन्डारी लक्षणयुक्त अवस्था में विशेषतः पारा के अपव्यवहार होने से यह एक उत्कृष्ट दवा है। रोगी को आत्महत्या करने की इच्छा रहती है। शिरकी हड्डी मे टिउमर। हड्डी में विशेषतः कनपट्टी की हड्डी में केरीज (Caries) वा जखम और उसमें से बदबूदार पीव निकलता है। नाक की हड्डी मे जखम, शरीर के नाना स्थान की हड्डी मे प्रदाह और जखम, मुंह में अत्यन्त

गंध-लुद्धा गयालिमुहलेहिं।

दुर्गन्ध, प्रातःकाल में ठन्ढ लगने से और शयनावस्था में पीड़ा की वृद्धि, चलने फिरने से और उत्ताप लगने से आराम मालुम होता है।

बेलाडोना ६-३०—बाघी अत्यन्त प्रदाहयुक्त और लाल बहुत बड़ा और दर्द के साथ, फाइमोसिस और पैराफाइमोसिस शयनावस्था मे बिमारी को आराम मालूम होना। दहिना तरफ की बिमारी।

बोडिआगा ६-३०—शिशुओं का उपदंश और ग्लैण्ड की वृद्धि। बायां तरफ का कठिन बाघी और उसमे ज्वाला।

कार्बो-एनिमेलिस ३०—टारशिआरी सिफिलिस, पत्थर के सदृश कठिन बाघी, जखम बहुत बड़ा और कठिन।

सिनाबारीस ३०—सिर और बाल को स्पर्श करने से दर्द मालूम होता है। दहिने आंख में प्रदाह, खुजली और दबाना सा दर्द। आंख से बहुत परिमाण पानी और नेटा निकलना, आंख लाल, चेहरा फूला हुआ, तालू जीभ के अगला हिस्सा और दहिने ओर में छोटा २ जखम, पुरुषाङ्ग फूला हुआ, प्रिपिउ फूला, लाल और खुजली के साथ, लिङ्ग-मुंड में भयानक कर्डी। अन्डकोष कठिन।

कोनायम ६-३०—रौशनी देखने से कष्ट मालुम होना,

1 पुग रम्या.

आंख पीलापन, कनपट्टी की गिलटी का प्रदाह। नाक से पीव निकलना। चेहरा पीला, रोगी की तरह, मुखमंडल में जखम। मसूढ़े का फूल जाना और उस में से रक्तस्राव होना। बहुत पुराना हार्ड शैंकार। अन्डकोष में प्रदाह।

कोरालिअम ६-३०—यह औषध सोरा-धातु [खाज खुजली] के शरीर वालो के उपदंश में बहुत उत्तम है। जखम से बहुत बदबूदार पीव निकलता है। शैंकार के रङ्ग बहुत लाल। हथेली में तामा के रङ्ग के छोटा २ दाग।

कुप्रम-सल्फ ६-३०—फैजिडेनिक शैंकार, मुंह और गले के भीतर उपदंश-जनित जख्म, संगम की इच्छा अत्यन्त प्रबल। केरीज और निक्रोसिस, ज्वाला और दर्द, पीव पतला, सेक्रम और हाथ पैर की हड्डी में दर्द, पेशाव बहुत बदबूदार।

हेकला-लाभा ३x—यह औषध हड्डियों का केरीजके निमित्त उत्कृष्ट है।

हिपर-सल्फ ६-३०-२००—पारा के अपव्यवहार होने से यह औषध उत्कृष्ट है। हड्डी में दर्द नहीं होता है किन्तु सहज ही से रक्तस्राव होता है। जखम के किनारा ऊंचा, फाइमोसिस से पीव निकलना।

केलि-बाइक्रोमिकम ३०-२००—मुंह और गले के भितर जखम। हड्डी में सूई भोंकने की तरह दर्द, कभी २ निर्दिष्ट समय में दर्द घुमता फिरता रहता है। नाक, मुंह और गले में जखम होकर सेन हो जाता है। सर्व शरीर मे माता की गोटी के समान इरपशन।

केलि-आओडेटस ३०-२००—गमेटा, हड्डी मे दर्द, नाक और गाल की हड्डी में ज्वाला के साथ दर्द, जखम के चारो ओर ऊंचा और उसमें से जमा हुआ पीव निकलता है। बहुत गहरा जखम।

लैकेसिस ३०-२००—फेजिडेनिक और गैंग्रनस जखम और फाइमोसिस मे यह औषध उत्कृष्ट है। उपदंश के हेतु वात रोग गले के भितर और जखम इत्यादि को स्पर्श करने से बहुत कष्ट होता है, वार्येअङ्ग की पीड़ा।

मर्क-कर ३०-२००—यह उपदंश रोग के निमित्त एक खास दवा है। प्रदाह, दर्द और फूलन अत्यन्त अधिक, हार्ड शेंकार। नाक फूला और लाल, रोजीना वा पुराना सर्दी। सफ्ट शैंकार के चारो ओर कालापन लाल दर्द और उसमें से सहज में ही खून निकलता है। मसूढ़े, गले और मुंह में बदबूदार फेजिडेनिक जखम, टनसिल फूला और उस में जखम। बाघी और दुसरी २ जगहों का ग्लैन्डों की वृद्धि।

मार्क्युरिअस-आओडेटस रुव्रम ३x-६x—पेराफाइ-मोसिस के हेतु लिङ्ग मुन्ड का सड़ जाने की हालत, हार्ड शैंकार, मुखमण्डल की हड्डी में जखम, लिङ्ग मुन्ड में विजली के सदृश टनकना। पुराना वाघी और उस में से पीव निकलना।

नाइट्रिक-एसिड ३०-२००—पारा के बद इस्तेमाल से कोई खरावी हो तो नाइट्रिक-एसिड उत्तम है। चर्म के ऊपर फुन्सी और काला दाग, नाक के भीतर जखम, नाक से खून और बदबूदार पीला पीब निकलना, कनडाइलोमेटा से रस निकलना, जखम चारो ओर फैल जाता है किन्तु गहरा नहीं होता है। वाल का उड़ जाना।

फाइटोलैका ३०-२००—सेकेन्डारि सिफिलिस, गले के भीतर और लिङ्ग में जखम; वात रोग का दर्द घूमता फिरता रहता है, जोड़ों फूला और लाल रंग, दीर्घ अस्थि और मांसपेशी का संयोग स्थान में दर्द, विशेषतः रात मे और गीली हवा मे, ग्लैन्ड समूह फूला और प्रदाहयुक्त।

स्टिलिंजिया ३-६—सेकेन्डारी सिफिलिस, नाक में जखम, सर्दी। कन्जेनिटल सिफिलिस।

रावण-दाणं-गंध-लुद्धा . गयालिमुहलेहिं ।

फसफोरिक-एसिड, रसटक्स, सिपिया, साइलिसिया, थुजा, मार्क-सल, स्टेफिसेग्रिया, लाइकोपोडिअम, सलफर प्रभृति औषध भी स्थान विशेष में बहुत उपकारी होते हैं ।

पथ्यापथ्य—इस बिमारी में पुष्टिकर और हलका पथ्य देना चाहिये । मांसभोजन नहीं करना चाहिये । मास का शुरुवा दुर्बल रोगी में दिया जा सक्ता है । दूध, रोटी, भात, पूरी, हलुआ इत्यादि दिया जाता है । कागजी निम्बू के सिवाय और किसी प्रकार की खट्टी चीज़ या दही नहीं खाना चाहिये ।

—०—

अन्डकोष की बिमारियां ।

DISEASES OF THE TESTES.

हाइड्रोसिल वा अवनजूल ।

(HYDROCELE.)

अन्डकोष के टीउनिका भैजाइनेलिस वा कौड़ी की गिलाफ झिल्ली में पानी आने का नाम ही हाइड्रोसिल है । स्वभावतः ही एक प्रकार जलीय पदार्थ निकल कर उस झिल्ली को तर रखता है, किसी कारन से वह जलीय पदार्थ ज्यादा निकले और न सूखे तो हाइड्रोसील होता है—यह भी एक किस्म का शोथ है ।

आघात जनित हाइड्रोसिल में क्रोनायन, आर्निका, पलसेटीला फलप्रद है। एपिस, औरम, कैलकेरिआ, डिजिटेलिस ग्राफाइटीस, आओडियम, केलि-हाइड्रो, मार्कुरिअस, सोरीनम, रोडोनेड्रन, रस-टक्स, साइलिसिया, सलफर इत्यादि औषधि द्वारा इस बिमारी में उपकार पाया जाता है। शारीरिक लक्षण के ऊपर ख्याल रख कर औषध निर्णय करना चाहिये।

इस बिमारी में अस्त्र चिकित्सा ही उत्तम है।

—:⊙:※:⊙:—

अण्डकोष का प्रदाह वा सांजर वा अर्काइटिस।

(ORCHITIS)

अण्डकोष वा कौड़ी के प्रदाह को सांजर कहते हैं। कभी २ यह अपने आप हो जाता है और कभी २ सुजाक या गर्मी रोग के विष के वजह से होता है। अलावे इस के चोट लगना, ठन्ढ लगना, वगैरह वजहों से भी यह बिमारी होती है। इस बिमारी मे अन्डकोष लाल हो जाता है और फूल जाता है। इसके साथ बुखार और कै वगैरह भी होता है। यह पुराना होने से अन्डकोष के ऊपर का चमड़ा फुल जाता है और कड़ा हो जाता है और पोथा बहुत बड़ा हो जाता है।

आनुसंगिक उपाय—जिस से ठंढ न लगे इस विषय पर ध्यान रखना चाहिये। तीन-चार रोज में अथवा तेज प्रदाहिक लक्षण कम हो जाने पर भी फूलन कम न होने से रुई से पोथा को बांध रखना चाहिये। रोगी को एकवक्त भात और एक वक्त रोटी देना चाहिये। अमावस्या और पुर्णिमा के दिनों में भात न खाना ही अच्छा है, दोनो सांम रोटी ही खानी फायदेमन्द है।

चिकित्सा—

ठंढ लगकर बिमारी—रस्टक्स, डलकामेरा।

चोट लगने से बिमारी—आर्निका।

सुजाक के वजह से सांजर—क्लिमेटि, केनाबिससेटाइभा मार्कुरिअस, पलसेटिला।

गर्मी रोग के वजह से सांजर—ओरम, मार्कुरियस-विन

अत्यन्त दर्द रहने से—हैमामेलिस।

अमावस और पुर्णिमा में बिमारी की तरक्की—कैलकेरिया,, साइलिशि, इत्यादि।

पुराना सांजर—कोनायम, स्पंजिया, औरम, ग्रैफाइटिस ऐगनस-कैस्टस, आर्जेन्टम, लाइकोपोडियम, सलफर इत्यादि।

एकोनाइट ६-३०—अन्डकोष में तेज प्रदाह के साथ ज्वर, अण्डकोष में दर्द और फूलन, अण्डकोष सख्त मालूम होना।

एपिस ६-३०—हाइड्रोसिल या सांजर, डंक मारने की तरह ज्वाला के साथ दर्द।

आर्निका २-३०—अण्डकोष फूला हुआ और कड़ा, अण्डकोष के रंग फूला हुआ चोट के कारण विमारी।

आर्सेनिक ६-३०—कण्ठमाला धातु के बच्चों का हाइड्रोसिल या सांजर में यह उपयोगी है। पोथा फूला हुआ।

औरम-मेट ३०-२००—गर्मी अथवा पारा के दोष के वजह से विमारी, पुरानी विमारी, दहिने अंग की विमारी, कौड़ी फूला हुआ और कड़ा. पोथा के रंग में स्नायविक दर्द छूने से दर्द की ज्यादती।

क्लिमेटिस ६-३०-२००—सुजाक के दोष के वजह से अथवा ठंढ लग कर सांजर होकर कौड़ियां पत्थर की तरह कठिन और दर्दनाक होने से फायदेमन्द है। इसके इस्तेमाल से फूलन कम हो जाता है, मूत्रनली की उत्तेजना और रात को दर्द का बढ़ना इत्यादि लक्षणों में यह देना चाहिये।

कोनायम ३०-२००—अण्डकोष फूला हुआ और कड़ा अण्डकोष में गर्मी रोग के वजह से गिल्टी।

ग्रैफाइटिस ३०-२००—बायां अङ्ग का हाइड्रोसिल अथवा सांजर। पोथा में दाद की तरह विमारी। चर्मरोग दब जाने के वजह से अण्डकोष में प्रदाह हो तो यह ज्यादा फायदेमन्द होता है।

रस्टक्स ६-३०—अण्डकोष फूला हुआ और कड़ा, पोथा मे खुजलाहट, पोथा सोथ की तरह फूला हुआ, कच्छा में गिलटी।

साइलिशिया ३०-३००—कण्ठमालाधातु के शिशुओं, के अवनजुल। लिंग और पोथा फूला हुआ। पोथा में खुजली और पसीना।

स्पंजिया ६-३०—अण्डकोष फूला हुआ और कड़ा। उस में मरोड़ सा दर्द। उसके साथ पोथा के रंग मे सूई भोंकना सा दर्द। हर्कत से वो कपड़ा के रगड़ से दर्द की ज्यादती। प्रमेह-स्राव वन्द होने के वजह से विमारी मे यह दवा उपयोगी है।

थुजा ६-३०-२००—अण्डकोष में शूल की तरह दर्द। चलने फिरने से ज्यादा होना। पोशा में मीठा गंधयुक्त पसीना। सुजाक के स्राव वन्द होने के वजह से विमारी और उसके साथ गठिया।

जेलसिमियम ६-३०—प्रमेह-स्राव रुक जाने से अथवा एकाएक ठण्ढ लगने से विमारी मे फायदेमन्द है।

हेमामेलिस ३x-३-६—अण्डकोष में तेज दर्द। यह दर्द एकाएक मेदा तक फैल जाता है। इसके साथ मतली वो मूर्च्छा भाव रहता है। पोथा मे पसीना। सुजाक के वजह से अण्डकोष का प्रदाह।

लाइकोपोडियम ३०-२००—पुरानी सांजर। वैठने

से पेरीनियम मे दर्द, पोथा और जांघ मे टटाना, लिङ्ग और बायां कोष में अकड़ाव।

मार्कुरियस ६-३०-२००—सुजाक और गर्मीरोग के वजह से सांजर, अण्डकोष फूला हुआ, सख्त और चमकीला पीलापन, सब्ज रङ्ग का प्रमेह-स्राव।

आक्जेलिक-ऐसिड ६-३०—पोथाका रग में तेज स्नायविक दर्द, मामूली हर्कत ही से दर्द की ज्यादती लेटने से विना कारण लिङ्ग का सक्त होना और उस मे और कोष मे दर्द मालूम होना।

पलसेटिला ६-३०-२००—प्रमेह-स्राव रुक जाने के वजह से सांजर; अण्डकोष फूला हुआ लाल और उस पर छुना वर्दास्त नहीं होना, स्पार्मेटिक कर्ड वा पोथा के रग मे अकड़ाव।

रोडोडेन्ड्रन ६-३०—अण्डकोष को छुने से बहुत दर्द होता है। तलपेट व जांघ तक टटाता है। अण्डकोष फूला हुआ, बायां अण्डकोष मे दर्द और फूलन, खास कर सुजाक के वाद।

स्टैफोसेग्रिया ३०-२००—दहिना स्पार्मेटिक कर्ड वा पोथा के रग में ज्वाला, डंक मारने की तरह दर्द, उसके साथ दहिना अण्डकोप मे अकड़ाव।

भेरिकोसिल।
(VARICOCLE.)

पोथा के veins वा शिराओं मे मैला खून ज्यादा देरतक ठहरनेके वजह से वे शिरायें फुल जाते हैं और इसी को भेरिकोज भेन्स (Vericose veins) वा भेरिकोसिल कहते हैं। इस विमारी मे आर्निका और हैमामेलिस प्रधान औषधियां है।

प्रोस्टेटिक ग्लैन्ड का पीड़ा समूह।
DISEASES OF THE PROSTATE

इउरेथरा वा मूत्रनली के शुरु की जगह के चारो ओर घेर कर प्रोस्टेटिक ग्लैन्ड रहता है। इस से मूत्र-स्थली के मुंह दृढ़रुपसे निर्मित हुआ है। इसकी आकृति सुपारी के सदृश है।

प्रोस्टेटाइटिस वा प्रोस्टेट का प्रदाह।

चिकित्सा :—आघात लग कर पीड़ा होंने से आरनिका अति उत्तम है। अत्यन्त दर्द होंने से वेनजोइक एसिड, केलि-आओड उत्तम है। वेलाडोना, सार्कुरिअस, थुजा भी उत्तम है।

—·o—

प्रोस्टेटिक ग्लैन्ड की वृद्धि।
HYPERTROPHY OF THE PROSTATE GLAND,

प्रायः वृद्ध वयस मे प्रोस्टेटिक ग्लैन्ड बड़ा हो जाता है। इस के हेतु मूत्रनली सिकुड़ जाता है और टेढ़ा हो

जाता है। पेशाब निकलने मे कष्ट या पेशाब बन्द हो जाता है। इस से कभी २ शुक्र निकलने का पथ बन्द हो जाता है। सलाई देने मे भी मुशकील होता है।

चिकित्सा—

एस्कुलस ३०-२००—बार २ पेशाब करने की इच्छा किन्तु पेशाब अति अल्प २ होता है, पेशाब के रङ्ग गाढ़ा होता है और उसके निकलने के समय बहुत ज्वाला होता है।

एलुमिना ३०-२००—पेशाब करने के समय बहुत कांखना पड़ता है।

एपिस ६-३०—बार २ पेशाब करने के वेग, पेशाब अल्प और गाढ़ा रङ्गदार होता है। पेशाब करने के समय मूत्रनली मे ज्वाला के साथ डंक मारना सा दर्द होता है।

बैराइटा-कार्ब ६-३०—पेशाब के बाद कांखना और थोड़ा २ पेशाब टपकना। बार २ पेशाब होता है किन्तु पैखाना नहीं होता है।

कैलकेरिआ-कार्ब ३०-२००—मूत्रस्थली के प्राचीन प्रदाह, पेशाब साफ किन्तु बहुत बदबूदार होता है।

मूत्र के वेग बहुत होता है और पेशाब होने पर भी मालूम होता है कि कुछ पेशाब भीतर रह गया।

कस्टिकम ३०-२००—अण्डकोष के नीचे टनकनेकी तरह दर्द होता है।

कोऊहल-विरइया [२८०—

गंध-लुद्धा गयालिमुहलेहिं।

चिमाफिला ६-३०—अण्डकोष के नीचे की जगह फूल जाती है। दोनों पैर को फैला कर सामने के तरफ झुक कर खड़ा न होने से पेशाव नहीं होता है। पेशाव में गाढ़ा, रस्सी के टुकड़े के सदृश खून मिला हुआ वलगम बहुत परिमाण से निकलता है।

कोलायस ६-३०-२००—वृद्धवयस में प्रोस्टेटिक ग्लैन्ड की वृद्धि और कठिनता हेतु पेशाव निकलते २ रुक जाता है और वार २ ऐसा होता है।

डिजिटेलिस ६-३०—वृद्धवयस में प्रोस्टेटिक ग्लैन्डकी वृद्धि के साथ दिल की विमारी। पेशाव आपही आप टपकता रहता है, वेग बहुत होता है किन्तु पेशाव धार से नही निकलता है। कष्ट ज्यादा होता है। साफ रङ्ग के पेशाव में धुआं रङ्ग के मैल देखा जाता है।

आइओडिअम ३०-२००—ग्लैन्ड कठिन, पेशाव मे कष्ट, पेशाव का आपही आप टपकना।

लाइकोपोडिअम ३०-२००—पेशाव के समय और उसके वाद व्लडर मे ज्वाला और मलद्वार मे टनकना, पेशाव के वेग को रोक नही सकना।

पलसेटिला ६-३०-२००—सर्वदा मूत्रस्थली के गलदेश में टनकना, चित होकर लेटने से मूत्रस्थली मे बोझ मालूम होना।

सिकेलि ६-३०—पेशाब मे खून मिला हुआ।

थुजा ३०-२००—गरमीराग अथवा सूजाक से पीड़ा।

—:०—:

बाघी ।

BUBO.

गरमीरोग वा सुजाक इत्यादि पीड़ा के साथ कच्छा के लिम्फैटिक ग्लैन्ड समूह में वारम वा फूलन होने से उसको बाघी वा बिउवो कहते हैं।

चिकित्सा—

एपिस ६x३०—बाघी लाल, फूला, गर्म, चमकीला, उसमें स्पर्श बर्दास्त न होना, उसमे ज्वाला और डंक मारना सा दर्द।

आर्सेनिक ३०-२००—बाघी के जखम कुछ सब्जापन दिखाता है।

बेलाडोना ३-६—बाघी अत्यन्त फूला, लाल, चमकीला, तेज ज्वर।

औरम ३०-२००—पारा के अपव्यवहार के बाद वो रात मे अस्थि में दर्द रहने से फलप्रद है।

बेड़ियागा १-३—बाघी अत्यन्त कठिन, रात में भयानक टीस मारना सा दर्द। पारायुक्त मलहम का प्रयोग अथवा कोई दवाई से जला देने से शकार सूख जा कर

जखम की जगह उंचापन हो कर रहने से यह उपकार करता है। इसका वाहर प्रयोग से भी विशेष उपकार होता है।

कार्वो-ऐनिमेलिस ६-३०—कठिन वाघी मे पीव होने की सम्भावना। पीव होने पर भी इस से पीव सूख जा सकता है। कुचिकित्सित वाघी मे चिड़ा लगाने से वा औषध द्वारा जला देने से जखम खतरेनाक होने से, जखम का चारो ओर कठिन, उसमें से पीव निकलना।

हिपर ६-३०-२००—शरीर मे पारा के दोष रहने से यह अति उत्तम है। पीव होने पर इस के प्रयोग से वाघी फूट जाता है।

मार्किउरिअस ६-३०-२००—पीव होने के कवल मे इस की ऊंची शक्ति के प्रयोग से वाघी दब जाता है। पीव होना शुरू होने से इसकी निम्नशक्ति के प्रयोग से जल्दी २ पीव पैदा होता है।

केलि-आयोड ३०-२००—पारा के अपव्यवहार के वाद, वाघी में जखम और सैन, उससे पतला, कालापन वदवूदार पीव निकलना, कण्ठमाला धातु।

लैकेसिस ३०-२००—पारा के अपव्यवहार वो गरमी रोग के वजह से पुराना वाघी। तपेदिक, गला के भीतर जखम। ललाट में अथवा सिर के पीछे का हिस्सा मे दर्द।

नाइट्रिक-एसिड ३०-२००—पारा के वदइस्तमाल वा कुपल, कार्वो-ऐनिमेलिस द्वारा संशोधित न होने से

विशेषत: शैंक्र में अत्यन्त लाल २ दानें बर्त्तमान रहने से यह फलदायक है ।

सल्फर व साइलिशिया ३०-२००—बहुत दिन का पुराना बाघी वो उससे पीव निकलनो, शीघ्र आरोग्य होने का कोई लक्षण देखा नहीं जाता है ।

हस्तमथुन और उस का कुफल ।

(MUSTARBATION OR ONANISM AND ITS BAD EFFECTS)

परिचय अस्वभाविक उपाय से रतिक्रिया का सुख भोग करने को हस्तमैथुन कहते हैं यौवन काल उपस्थित होने के समय मे वालक बालिकायें यौवन-सुलभ अज्ञता के कारण यह हस्तमैथुन रूप भारी और हर्ज पहुंचाने वाला पाप मे लिप्त हो कर मेह, शुक्रमेह व स्वप्नदोष ऐसा कि ध्वज भंग इत्यादि बहुत किस्म का रोग का बीज बोते हैं । गरम मुल्क का दस बारह साल के वालक बालिका तक हस्तमैथुनरूप कुअभ्यास में रत होता है ।

कारण—जवानीके शुरूमे युवक युवतियों के दिल में एक किस्म का अदभुत संगम-इच्छा होती है। यार दोस्त वगैरह के प्रलोभन व अनुकरण से वालक वालिका इसको सीखता है । वाल्यावस्था मे उपयुक्त शिक्षा के अभाव व कुसंग से इस पाप कार्य्य मे लिप्त होता है । अश्लीलतापूर्ण उपन्यास, नाटक, नभेल वा पुस्तकादि पाठ, प्रेम की कहानी व पशुओ को रतिक्रिया दर्शन इत्यादि इसका उत्तेजक कारण है ।

उपरोक्त कारणों के सिवाय दूसरी २ कारणों से भी यह कुअभ्यास होता है। अंतरी में छोटा २ कृमी पैदा होने से वह कृमी जब जननेंद्रिय मे घुस जाता है और उस मे खुजलाहट होता है तब खुजलाहट दूर करने के लिये लिंग को रगड़ने से यह कुअभ्यास हो सकता है। जननेन्द्रिय वा उसकी लगभग की जगह में दीनाय या खुजली से भी यह हो सकता है।

लक्षण व कुफल—चेहरा सर्व्वाङ्ग का दर्पण है, इसलिये जो बालक अथवा बालिका यह कुअभ्यास करता है उसका चेहरा बेरौनक व शरीर दुर्बल हो जाता है। निर्जनप्रियता, विमर्षता, लाज व भीरुता साफ प्रकाश पाता है; वह चंचल हो जाता है। चेहरा ठीक मतवाला अथवा अफीम खानेवालों की तरह हो जाता है। बेश बुद्धिमान वलवान बालक भी इस कुअभ्यास को सिखने के बाद से दुर्व्वल व बेवकूफ हो जाता है।

इस कुअभ्यास से नाना प्रकार की दिमागी बिमारी पैदा होती है। उस के बाद प्रमेह, बहुमूत्र, अजीर्णादि नाना रोग पैदा होकर बदन के तमाम यंत्रो को बिगाड़ डालता है। दिमाग की खराबी के वजह से नाना प्रकार की दुश्चिन्ता उपस्थित होती है। स्मरण-शक्ति व मानसिक वृत्तियों का एकदम बिनाश होता है। चित्तविकार, विमर्षता आत्महत्या की इच्छा वा मुर्छा वो उन्माद रोग तक आ सकता है। हस्तमैथुन का अभ्यास जल्दी त्याग न करने से ध्वजभग हो जाता है। हस्तमैथुन से मेदा, अंतरी, मूत्र-स्थली, सिधी अंतरी वगैरह दोषयुक्त होता है। गुह्यद्वार को

पेशियां भी संकुचित हो सकता है और उससे उस जगह की शिरायें फूल कर अर्श रोग की उत्पत्ति हो सकती है।

हस्तमैथुन परित्याग का उपाय व आनुसंगिक कर्त्तव्य ।

अपने २ सन्तान-सन्तति वो छात्रों को इस कुअभ्यास में प्रवृत्त हुए हैं यह मालूम होने ही से गोपन से इन लोगों के काम के प्रति ख्याल रखना चाहियें। बालकों की निर्जनप्रियता देखने से ही ऐसा सन्देह करना चाहिये। जिससे उन लोगों के शरीर व मन उपयुक्त व आवश्यकीय काम मे लगा रहे ऐसा उपाय करना चाहिये। नाटक, नभेल पाठ, थियेटर वगैरह देखना उचित नहीं है। समान बयस के बालक बालिकायों के साथ मिलने न देना चाहिये और सम्भव हो तो हमेशा अपने साथ रखना चाहिये, जिससे उनको हस्तमैथुन का मौका न मिले ऐसा करना चाहिये।

माता पिता वा अभिभावक की सुशिक्षा से जिससे इन लोगों के मन मे धर्मभाव व नीतिज्ञान हो उसका भी उपाय करना चाहिये। रोगी को अपना दोष व इसकी खराबी अच्छी तरह समझा देना चाहिये। नियमित व्यायाम व शीतल जल में स्नान की व्यवस्था करनी चाहिये।

चिकित्सा—

ज्यादा हस्तमैथुन से नयो बिमारी देखाइ देने से—चायना, फकुलस, फसफोरिक-एसिड, मार्कुरिअस सल।

पुराना रोग के लिए—कार्बो-भेज व सल्फर।

कण्ठमाला धातु के लोगों के लिये— ऐमोनिया, कैल्केरिया-कार्व पेट्रोलियम।

चायना ६-३०-२००—ज्यादा कमजोरी, जननेन्द्रिय कमजोर व ढीला।

कैलकेरिआ-कार्ब ३०-२००—ज्यादा दिमागी कमजोरी, मन में खौफ व कण्ठ माला धातु रहने से देना चाहिये।

ककुलस ६-३०—पीठ में अकड़ाव अथवा पीठ का निचला हिस्सा में दर्द।

कैन्थारिस ६-३०—मामूली कारण से लिङ्गमे तेजी व खराव स्वप्न।

नक्स-भोमिका ३०-२००— कब्ज, अजीर्णदोष, सिर-दर्द।

फसफोरिक-एसिड ३०-२००—सहज में ही जननेन्द्रिय का उत्तेजित होना, ज्यादा पेशाव होना, कमजोरी।

स्वप्न दोष

(NOCTURNAL POLUTION)

रोग परिचय—निद्रितावस्था मे शुक्रपात होने से उस का स्वप्नदोष कहते हैं। यह दिन में भी निद्रितावस्था मे पैखाना पेशाव के समय, घोड़े पर सवार होने से भी होता है।

कारण—वीर्य्याधार वा शुक्रनली की दुर्वलता के कारण

यह बिमारी शुरु होती है। शुक्रमेह के साथ इस बिमारी का फड़क यह है कि इस मे स्वप्नदर्शन से लिङ्ग उत्तेजित होने से शुक्रपात होता है। फलत हस्तमैथुन इत्यादि का कुफल ही से यह बिमारी होती है।

लक्षण—योवन काल में कभी २ स्वप्न में शुक्रपात होने से भी कोई शिकायत न हो तो उसको रोग नहीं कहा जाता है। क्योंकि इस उम्र में कभी २ स्त्रीगमन न करने से यह होना स्वभाविक है। जब प्रायः प्रति दिन रात को शुक्रपात होता है और उससे कमजोरी वगैरह शिकायत देखी जाय तब इस को रोग कहा जाता है। ऐसा रोगी के मन मे कोई सुख नहीं रहता है। इससे दिमागी कमजोरी, स्फूर्त्ति-हीनता, समाजभीति, विमर्षता, मानसिक जड़ता, सिर दर्द, सिरचक्कराना, बधिरता, हाथपांव का कांपना, दिल धड़कना, स्वांस की तकलीफ, अजीर्णता, शीर्णता, ध्वजभंग इत्यादि लक्षण प्रकाश पाता है। आखिरकार मृगी, उन्मादरोग इत्यादि हो सक्ता है।

आनुसंगिक उपाय—जितना जल्द हो सके हस्तमैथुनादि कुअभ्यास त्याग करना चाहिए। चित्त को बदलने के वास्ते धर्म्म और नीति के ओर मन देना चाहिए। शराब मांस इत्यादि तमाम उत्तेजक खाना परित्याग करना चाहिये। बलकारी अथच लघुपाक द्रव्य चाहिए। सोने के कवल लिंगादिको ठंढ पानी से धोना अच्छा है। ठीक भोजन के बाद ही सोना नहीं चाहिए। सख्त बिछावन उपकारी है। पास मे दूसरी तकिया न रखना चाहिए।

चिकित्सा—

ओरम-मेट ६-३०—हस्तमैथुन और स्वप्न दोष के कारण गमगीनो हालत व आत्महत्या की इच्छा। मुत्रत्याग के समय वीर्य्य की तरह चीज निकलना. अण्डकोष मे दोष।

वोभिष्टा ६-३०—ज्यादा संगम के कारण स्वप्न दोष के साथ सिर दर्द, सिर में वोझ मालुम होना।

कैल्केरिया-कार्व ६-३०—सिरपीड़ा, कण्ठमाला धातु।

कार्बो-भेज३०-२००—नीद की हालत में वेखवरी से शुक्रपात होना, अजीर्ण दोष, पेट में हवा जमा हाना ।

चायना ६-३०—ध्वजभंग के साथ तेज रतिक्रिया की इच्छा ज्यादा कमजोरी।

ककुलस ६-३०—ज्यादा कामेच्छा के वाद रात को स्वप्नदोष व अण्डकोष मे दर्द हो तो।

कोनायम ३०-२००—स्वप्नदोष, पीठ में दर्द कामेच्छा होने पर भी लिंग खड़ा न होना, शुक्रपात के समय कष्ट।

डिजिटेलिस ६-३०—प्राष्टेट गिल्टी का वढ़ना, मालुम होत है कि मुत्रनली से कोई चीज आ रही है।

इरिजिरण३-३०—पुरुषांग सख्त न होकर ही स्वप्नदोष, दिन में पेशाव के साथ शुक्रपात, थकावट, पुरुषांग ढीला, कमर में दर्द

केलि-ब्रोमेटम ६—वा ऊंची शक्ति—प्रणय के स्वप्न से स्वप्नदोष ।

लैकेसिस ३०-२००—हस्तमैथुन के दोष से मूर्च्छा, मृगीरोग, रात को स्वप्नदोष व उसके साथ ज्यादा पसीना ।

मार्कुरियस ६-३०-२००—ज्यादा कामेच्छा होने से स्वप्नदोष व बीर्य्य के साथ खून निकलना, कब्ज ।

नक्स-भोमिका ६-३०-२००—निद्रितावस्था में बिना इच्छा से शुक्रपात, कब्ज, लिङ्ग ढीला ।

ओपिअम ३०-२००—रात को प्रणय के स्वप्न देख ने से लिङ्ग खड़ा हो कर जागने पर शुक्रपात।

फस्फोरिक एसिड ६-३०—ऊंची शक्ति—ज्यादा स्वप्नदोष के कारण शरीर व मन कमजोर हो जाने से दिया जाता है । पैखाना फिरने के समय शुक्रपात, पेशाब में सफेद गाद ।

सिपिया ६-३०-२००—ज्यादा स्वप्नदोष के साथ चित्त का बिकार, याददास्त की कमी, थकावट, हताशभाव, सिर मे बोझ, लिङ्ग ढीला ।

सेलिनियस, थुजा, जिंकम, सलफर इत्यादि का व्यवहार भी होता है ।

—:०:—

धातु दौर्ब्बल्य वा शुक्रमेह।
(SPERMATORRHŒA)

रोग परिचय—रतिविषय मे सामान्य चिन्ता या बिना चिन्ता से ही, लिङ्ग खड़ा न हो कर वा सख्त न हो कर ही अथवा मलमुत्रत्याग काल मे कुंथने से शूक्रपात होने से उसको धातु दुर्व्वलता कहते हैं।

कारण—ज्यादा संगम, हस्तमैथुन, लिङ्ग मे खुजली, कृमी-दोष, बवासिर, प्रोष्टेट गिल्टी का प्रदाह, मूत्रस्थली का प्रदाह, मूत्रनली की पीड़ा, सुजाक इत्यादि से यह रोग होता है। कव्ज वं शुक्रनली का प्राचीन प्रदाह से भी यह होता है।

लक्षण— रति क्रिया विषय में स्वप्न दर्शन और हाइपोकन्ड्रिआक अवस्था याने हमेशा बिमारी की ख्याल होना, इस बिमारी के प्रधान लक्षण हैं। रोगी बिमर्ष और उदास रहता है। किसी के साथ मिलना नहीं चाहता है, रोगी आरोग्य विषय में हताश हो जाता है। सर्वदा आत्महत्या करने की इच्छा रहती है। स्वभाव बहुत चिरचिराहा होता है। स्मरण शक्ति बिलकुल कम हो जाती हैं। रोग अत्यन्त वृद्धि होने से शिर दर्द, शिर चक्करानो, कान में मन २ शब्द होना और कम सुनना, दृष्टि धुंधली होना, अत्यन्त कमजोरी, दिल धड़कना, चेहरा फीका हो जाना और आख के चारो ओर नीला दाग पड़ना, देह सूख जाना इत्यादि लक्षण देखा जाता है। इस से आखिरकार ध्वजमंग, उन्मादरोग, अनिद्रा इत्यादि रोग हो जाता है।

चिकित्सा—

एग्नस-कैस्टस ६-३०-२००— लिंग कमजोर, संगम के बाद शरीर हल्का बोध होता है। सम्पूर्ण ध्वजभग, थोड़ासा, पानी की तरह शुक्र निकलना, लिंग खड़ा ही नहीं होता है। अण्डकोष फूला हुआ, कड़ा व उस में दर्द । अकालवृद्धता।

ऐनाकार्डियम ३०-२००—धातु दौर्ब्बल्य, दिमागी कमजोरी, स्मरणशक्ति की कमी, मेदा कमजोर, पैखाना के साथ शुक्रपात, मूत्रत्याग के बाद शुक्र निकलना।

कैलाडियम ६-३०—शुक्रमेह, ज्यादा संगम का कुफल, बिना उत्तेजना से स्वप्नदोष, हमेशा लेटे रहने की और सोने की इच्छा, शीतल चीज पीने मे अनिच्छा, गरम पानीय की इच्छा, जल्द २ सन्तान होनेवाली स्त्रियों की दिमागी कमजोरी, कृमी के कारण कामोन्माद, संगम-शक्ति की कमी।

नक्स-भोमिका ३०-२००—हस्तमैथुन का कुफल, सिरपीड़ा, पीठ मे दर्द, खास कर स्मरणशक्ति की कमी, स्वप्नदोष, ज्यादा याशी के वजह से रोग, सहज में ही कामेच्छा किन्तु संगम के समय लिंग ढीला होना।

पिकरिक-एसिड १२-३०-२००— बहुत तेज के साथ थोड़ा देर के लिए लिंग का सख्त होना, उस के बाद बहुतसा शुक्र निकलना, बहुत ज्यादा संगम की इच्छा तमाम रात लिंग बहुत सख्त रहता है और नींद नही होता है।

निम्न अंगकी कमजोरी वा मारीपन, ध्वजभंग, लिंग ढीला ।

ष्टैफीसेग्रिया ३०-२००—हस्तमैथुन के कारण बदन पतला-दुबला आँख के चारो ओर नीला चेहरा वेरौनक लज्जाभाव इत्यादि लक्षण में दिया जाता है।

औरम-मेट ६-३०-२००—अत्यन्त गमगीन स्वभाव, आत्महत्या करने की इच्छा होती है । पुरूषांग की शिथिलता के हेतु शुक्रपात होना, संगम की इच्छा अत्यन्त प्रबल, लिंग ढीला पड़ जाता है।

कैलकेरिया—कार्ब ३०-२०० स्वप्नदोष के बाद सिरदर्द और दिल मे दर्द, हाथ पांव ठन्ढा, कण्ठ-माला धातु, सामान्य परिश्रम से ही पसीना खास कर सिर में, ज्यादा थकावठ।

चायना ३०-२०० बार २ अति दुर्बलताजनक स्वप्नदोष, हस्तमैथुन जनित कुफल। स्वप्रदोष के बाद चायना ३० शक्ति के एक डोज खाने से थकावट दुर हो जाता है।

डिजिटेलिस ६-३०—दुर्बलता के साथ दिलधड़कना और नाड़ी सुस्त होने से डिजिटेलिस अवश्य देना।

जेलसिमिनिअम ६-३०—लिङ्ग अत्यन्त दुर्बल कठिन न होती ही शुक्रपात हो जाता है। लिङ्ग ढीला और ठण्ढा रहता है।

लाइकोपोडिअम ३०-२००—लिंग कठिन न होकर ही बहुत परिमाण से शुक्रपात होता है और उसके बाद मूत्रनली में ज्वाला होता है। कब्ज, अर्शरोग, ध्वजभंग मे लिंग, शीतल और सिकुड़ा हुआ, वृद्ध लोगों की रतिक्रिया में अक्षमता के निमित्त लाइकोपोडिअम उत्तम है।

फसफोरस ३०-२००—अत्यन्त दुर्बलता, छाती में दर्द और कष्टबोध, अत्यन्त संगमेच्छा के हेतु सर्वदा स्त्री सहवास और हस्तमैथुन करना चाहते हैं। रति विषय में चिन्ता करते ही लिंग कठिन हो जाता है। लम्बा व पतला शरीर के युवकों के निमित्त यह औषध उत्तम है। इस दवे की एक हजार शक्ति व्यवहार करके विशेष फल पाया गया है।

फसफोरिक-एसिड १x-२x-१८—हस्तमैथुन हेतु धातु दुर्बलता। मलत्याग काल में शुक्रपात, रोगी सर्वदा रोग-विषय मे चिन्तित और विसर्प रहता है। पेशाब गदला वा ज्यादा होता है। इसकी १००० शक्ति के इस्तेमाल से हम वहुत फायदा उठाया है।

सेलिनियम ३०-२००—रात में रति-विषय मे स्वप्न देखने से शुक्रपात और कमर मे सूल मालूम होना, शुक्र बहुत पतला और स्वमाविक गन्धरहित, चलते वक्त, बैठते वक्त, निद्राकाल मे शुक्र निकलना।

आनुसंगिक उपाय—

(१) पुष्टिकर किन्तु हलका खाद्य भोजन करना चाहिये।

(२) नियमित व्याम करना विशेप उपकारी है ।
(३) कभी अकेला और कुसंग में रहना नही चाहिये ।
(४) सर्वदा उत्तम पुस्तक पाठ अथवा कोई अच्छा काम में लगा रहना चाहिये ।
(५) कभी रतिविषय की चिन्ता वा रतिविषयक पुस्तकादि पाठ नहीं करना चाहिये ।
(६) रात में पेट भर के भोजन नहीं करना चाहिये ।
(७) कम से कम भोजन के दो घण्टे बाद सोना चाहिये ।
(८) बहुत नरम बिछावन में सोना नही चाहिये ।
(९) उपयुक्त वयस में विवाह करना उचित है ।
(१०) शयन करने के पहले पुरुषाङ्ग, अन्डकोष और हाथ पैर को ठण्ढा जल द्वारा धोकर सोना चाहिये ।
(११) नींद आने में देर होने से सत् पुस्तक पाठ अथवा ऐश्वरिक चिन्ता करते २ सो जाना चाहिये ।

ध्वजभङ्ग वा इम्पोटेन्सि
IMPOTENCY

रतिक्रिया में क्षमताहीन होने से उसको ध्वजभङ्ग कहते हैं। इस रोग में सन्तानोत्पादन की क्षमता नहीं रहती है । सन्तानोत्पत्ति की क्षमता न रहने से उसको स्टेरिलिटि (Sterility) कहते हैं ।

कारण—अत्यधिक स्त्री-संगम और हस्तमैथुन ही इस रोग का सर्व प्रधान कारण है । किसी २ का जन्म से ही जननेन्द्रिय में कोई दोप हो जाता है। किसी प्राचीन पीड़ा, जैसे, स्पाइनेल मेनिञ्जाइटिस, डायेबेटिस इत्यादि के हेतु भी इस पीड़ा की उत्पत्ति हो सकती है ।

चिकित्सा—

एगारिकस, ऐगनस, बेराइटा-कार्ब कैलाडिअम, नक्स-भोमिका, लाइकोपोडिअम, फसफोरस, सेलिनिअम जेलसिमिअम इत्यादि इस रोग के प्रधान औषधें हैं।

संगम इच्छा के भाव वो पुरुषांग संकुचित हाने से कैनाबिस-इनडिका, लाइकोपोडिअम।

अन्डकोष शीतल—एलोज, वारबेरिस, कैपसिकम।

अत्यन्त हस्तमैथुन हेतु पीड़ा—ऐगनस, कैलकेरिआ, चायना, नक्स-भोमिका, फसफोरस, फस-एसिड, पिकरिक-एसिड।

स्त्रीसंगम की इच्छा अत्यन्त प्रबल—कैनाबिस-इण्डिका, नक्स, कन्थारिस, फसफोरस, पिक्रिक-एसिड।

लिंग खड़ा होता है किन्तु संगम की इच्छा बिलकुल नही रहती है—कैलाडियम, नाइट्रिक-एसिड।

एगारिकस—लिंग सिकुड़ा हुआ ठण्डा, संगम के बाद अत्यन्त दुर्बलता, लिंग में खुजलाहट।

ऐगनस-कैस्टस—संगम के बाद शरीर हलका मालूम होता है। यौवनकाल में वृद्ध के सदृश अवस्था, संगम की इच्छा और ताकत बिलकुल नष्ट हो जाती है।

औरम-मेट—अण्डकोष ढीला हो कर लटकता रहना, स्त्री और पुरुष उभय में ही बांझपन।

बैराइटा-कार्ब—अण्डकोष सिकुड़ जाता है।

कोऊहल-विरइया

दाणं-गंध-लुद्धा गयालिमुहलेहिं।

कैलाडियम —संगम इच्छा न हो कर ही स्वप्न में शुक्रपात होता है।

कैनाबिस-इन्डिका पुरुष की कामोन्मत्तता।

कोनाअम अकाल वृद्धता, अण्डकोप छोटा और सिकुड़ा हुआ।

जेलासिमिअम ६-३०—जननेन्द्रियको दुर्बलता और ढीला हो जाना।

लैकेसिस ३०-२००—हस्त मैथुन के वजह से मृगी रोग होना।

लाइकोपोडिअम ३०-२००—शारीरिक और मानसिक दुर्बलता, संगम के समय सो जाना, संगम की ज्यादा इच्छा किन्तु लिंग खड़ा न होना।

नुफरलुटिया ३०-२००—रति विषय मे बहुत किसम की मनोहर चिन्ता उपस्थित होने से भी लिगमें तेजी नही आती है।

पेट्रोलियम ३०-२००—स्त्री लोगों को संगम की इच्छा न होना।

फसफोरस ६-३०-२००—संगम की तेज इच्छा होने के कारण हस्तमैथुन की इच्छा।

प्लाटिना ३०-२००—कामोन्मत्तता, लिङ्ग की जगह स्पर्श वर्दास्त न होना, ऐसा कि कपड़ा के रगड़े से गशि आ जाता है।

को
जरायु
(Ute
अर्थात
यह सू
हमारे
उम्र
इस
इस
तक
जाता है
१।
कार्य्य

पुगे रम्या

स्त्री-रोगसमूह ।

ऋतु स्राव ।

MENSTRUATION.

स्त्रियों का जरायु से मासिक जो रजःस्राव होता है उस को ऋतुस्राव वा आर्त्तवस्राव कहते हैं। यह रजः प्रधानतः जरायु से निकलता है और प्रति वार में ४ से ६ औन्स तक निकलता है। यह स्राव निसृत होने के समय जरायु (Uterus), डिम्बाशय (Ovaries) और इसके सहायक अन्यान्य सब यन्त्रों में रक्ताधिक्य (Congestion) होता है। यह स्राव प्राय पृति २८ दिन अन्तर २ होता है और साधारणतः ३ से ५ दिन स्थायी होता है।

प्रथम ऋतुस्राव के कोई निर्दिष्ट समय नहीं है लेकिन हमारे यह उष्णपृधान देश के बालिकाओं का १२ या १३ वर्ष की उम्र मे पृथम ऋतु देखा जाता हैं। शीतपृधान देश में इस से २ या ३ वर्ष के बाद पृथम ऋतु देखा जाता है। ऋतु इस समय से आरम्भ हो कर प्रायः ४० या ४५ वर्ष की उम्र तक जारी रहता है और ५० वर्ष उम्र के बाद प्रायः बन्द हो जाता है।

रमणी-जीवनमें यह ऋतुस्राव से पृधानतः दो महत कार्य्य सम्पादित होता है—प्रथमतः—जो ज्यादा खुन गर्भा-

७५ -दार्णं-गंध-लुद्धा -गयालिमुहलेहिं।

वस्था में भ्रूण के गठन व वर्द्धन कार्य्य मे सहायता करता है, इसके निकलने से साधारण शरीरविधान में शान्ति प्राप्ति होती है। द्वितियत. इसके निकलने से ज्यादा रमणप्रवृत्ति की तृप्ति होती है—इसी से रमणियों की चित्तशुद्धिता व सतीत्व रक्षित होती है। आजकल के विज्ञानमत से जाना गया है कि जब डिम्बानुवीज (Ovum) अनुप्राणित (Impregnated) न हो कर अपजनित (degenerated) होता रहता है और रक्ताधिक्ययुक्त जरायु से रक्ताधिक्य-नाश करने के लिए उपयुक्त परिमाण से रक्त निकलता है तब ही ऋतुस्राव होता है।

यौवनकाल उपस्थित होने ही से बालिकाओं की ऋतु स्राव के बारे में सतर्क कर देना हरएक माता वा भगिणी का कर्त्तव्य है कारण अचानक रजः निकलते देखने हीं से बालिकायें गोपन से उसकी रोकने की कोशीश कर सकती है और उससे उसकी स्वास्थ्य नष्ट हो सक्ती है। ऋतु के समय ठढ लगना, वगैरह से रजोवन्द हो जाने से उसी से रजोसम्बन्धीय बहुत किस्म की बिमारियां होती है। इस लिए ऋतुस्राव में किसी किस्म की गड़बड़ी न हो सके उस के ऊपर हरएक रमणी को ध्यान रखना चाहिये।

डिम्बकोष का प्रदाह वा ओमाराइटिस
OVARITIS.

रोग परिचय—डिम्बाशयप्रदेश में तेज दर्द वा चांप देने से दर्द मालूम होना, उस स्थान का फूलना—उस के साथ कम्पन व ज्वर होने से उसको डिम्बकोष का प्रदाह कहते हैं।

प्रकार—यह प्राय: स्वयं उत्पन्न नहीं होता है जरायुपोड़ा का सहयोगी रोग के रूप से प्रकाश पाता है। यह दो प्रकार का होता है, यथा :—नया और पुराना।

कारण :—गर्भावस्था वा प्रसव के बाद नया रोग पैदा होता है। इसके अतिरिक्त ठंढ लगना, ऋतु बन्द होना, जननेन्द्रिय में यंत्र लगाना, जोर से संगमक्रिया करना, गर्भस्राव के जिये औषध सेवन इत्यादि कारण से नया प्रदाह पैदा होता है। पुराना प्रदाह नया रोग की ही पुरानी हालत।

लक्षण—नया रोग में कमर, काछा इत्यादि स्थान में बोझ, प्रसवान्तिक स्रावादि की कमी, मतली, कै, ऐंठन, पैखाना व पेशाब में तकलीफ, ज्वर इत्यादि लक्षण होते हैं। डिम्बाशय की जगह ऐसा कि जांघ में तक दर्द होता है। डिम्बाशय की जगह दबाने से गुठली सा सख्त व फूली हुई चीज मालूम

कोऊहल-विरइया

पड़ती है। आखिर में डिम्बाशय मे पीव पैदा हो सकता है। ज्वर बेशी होने से रोगिणी को बेहोशी वगैरह आ सकती है। इस रोग की पुरानी हालत में दर्द इत्यादि सब ही तकलीफ कम रहती है। इस हालत में पीव होने से शोथ रोग की तरह लक्षण प्रकाशित होता है। ऋतुकाल का अनियम, रजोकष्ट वा श्वेत प्रदर वर्त्तमान रहता है। कभी कभी डिम्बाशय मे जखम हो कर वह सड़ गल जा सकता है। गर्भ होने में भी रुकावट पैदा हो सकती है।

आनुसंगिक चिकित्सा—जिस से ठंढ न लगे खास कर ऋतुस्राव के समय, ठंढ न लगे इस विषय में ख्याल रखना चाहिये। इस समय मे तलपेट को मोटा गरम कपड़ा से बांध-कर रखना चाहिये। यह रोग होने से रोग जब तक पूरी तौर से आराम न हो तबतक स्वामी सहवास न करना चाहिये।

चिकित्सा:-

एकोनाइट ३-६—सूखी ठण्ढी हवा लगने से पीड़ा, भय हेतु पीड़ा।

एपिस ६-३०—दहिना ओमारि का प्रदाह, ओमारि फूला हुआ और इसमें ज्वाला के साथ डंक मारने की तरह दर्द। पेट का दहिना तरफ में झिन २ करना और वह झिनझिनी दहिना जांघ तक वा ऊपर के तरफ दहिना पंजरा तक फैल जाता है। पेशाव अल्प, कब्ज, खांसी के साथ छाती की बाया तरफ में दर्द।

तरह जांघ लेटने ... प्यास ... और दबाने ... बिछावन ... पेशाव के प्राय ... ज्वाला। ... दर्द, दोनों घुमाने से ही है।

आर्सेनिक ३०-२००—ओभारी में ज्वाला, अकड़ने की तरह अथवा टनकने की तरह दर्द, अत्यन्त अस्थिरता। दर्द जांघ तक फैल जाता है, हिलने डोलने से अथवा पेट के ऊपर लेटने से दर्द ज्यादा होता है। ऋतुस्राव पतला, फीका और दुर्गन्धयुक्त, चेहरा जर्द, शरीर दुबला पतला। अत्यन्त प्यास किन्तु थोड़ा २ पानी पीता है।

बेलाडोना ६-३०—दहिना ओभारी फूला हुआ कठिन और उस मे दबदबाना सा दर्द, पेट में चांप की तरह या दबाने की तरह दर्द और स्पर्शासहिष्णुता और शरीर मे अथवा बिछावन में जरासा झटका लगने से भी तकलीफ होती है।

ब्राइओनिआ ३०-२०० लम्बा स्वांस लेने से या करवट लेने से ओभारि में सुई भोंकने की तरह दर्द, मासिक बन्द हो कर नाक से रक्तस्राव।

कैन्थारिस ३०-२००—ओभारि में बहुत ज्वाला, बार २ पेशाब के वेग होना किन्तु पेशाब बुन्द २ मे होना, पेशाव प्रायः खून मिला हुआ होता है। पेशाब में भयानक ज्वाला।

कोनायम ३०-२००—ओभारि कठिन और फूला हुआ, जी मिचलाना और कै होना। ओभारि में कतरने की तरह दर्द, दोनों स्तन ढीला और सिकुडा हुआ, किसी तरफ शिर घुमावे से ही शिर चक्कराता है।

हैमामेलिस ३-६—आघात-हेतु ओभारि का प्रदाह,

…दाणं-गंध-लुद्धा-गयालिमुहलेहिं।

समस्त पेट में फोड़ा के सदृश दर्द, भेइन्स वा शिराओं में ज्यादा रक्तसञ्चार वा कनजेश्चन।

हिपर-सल्फ ६-३०-२००— यदि प्रदाहयुक्त स्थान में पीव पैदा हो जाय तो दिया जाता है। दबदबाना सा दर्द के साथ शीत मालूम होता है।

लैकेसिस ३०-२००—बायां ओमारि का प्रदाह, ओमारि के स्थान में स्पर्श सह नहीं सकती है. बहुत दर्द होता है। दहिने कर लेट नहीं सकती हैं।

प्लाटिना ३०-२००—अत्यन्त संगम करने की इच्छा, मालूम होता है कि योनिद्वार से ढेले की तरह कोई चीज निकल आवेगी। ऋतुस्राव ज्यादा होता है या बन्द रहता है।

पलसेटिला ६-३०-२००—पांव धोने से ऋतुस्राव बन्द हो जाता है, दर्द इतना अधिक होता है कि कष्ट से रोगिणी वेचैन होती है और रोती है। दर्द के साथ बहुत शीत होता है। ठन्ढी खुली हवा में आराम मालूम होता है और गर्म गृह में तकलीफ मालूम होती है।

—:o:—

डिम्बकोष का शोथ वा ओभारि-याान ड्रप्सि।

(OVARIAN DROPSY.)

इस का दूसरा नाम ओभारि के सिस्टिक टिउमर (Cystic Tumuor) वा ओमारि में जलकोष है।

रोग परिचय—ओमारी के कोषों में जल संचित हो कर यह टिउमर की उत्पत्ति होती है और इस से ओमारि का आकार बढ़ जाता है।

कारण—ठंढ लगना, चोट लगना, डर जाना रजोलोप इत्यादि इसका कारण है।

लक्षण—पहले २ कभी २ ओमारि के प्रदाह मे जो २ लक्षण देखा जाता है वैसे ही लक्षण इस में भी देखा जाता है। फिर कभी २ कोई भी लक्षण मालुम नही होता है।

सिष्टिक टिउमर कुछ बड़ा होने पर उस से मूत्रस्थली वो रेक्टम वा मलनाली के ऊपर दवाव पड़ने से पैखाना और पेशाब करने में तकलीफ होती है। स्नायु के ऊपर दवाव पड़ने के हेतु कमर और जांघ मे दर्द होतो है। भेइन्स के ऊपर दवाव पड़ने से निम्न शाखों के शिरा समूह रक्तवर्ण और मोटा हो जाता है। किसी २ रोगिणी में गर्भ के लक्षण के सदृश बहुत लक्षण इस बिमारी के साथ देखा जाता है, यथा

वमन, दुर्वलता, स्तन की पूर्णता और उसकी घुन्डी के चारो ओर काला दाग पड़ना, स्तन मे दूध का सञ्चार इत्यादि। पेट भी बड़ा हो जाता है। सिष्ट कभी २ इतना बढ़ जाता है कि उस से सारा पेट भर जाता है। उस समय स्वासकष्ट, दिलधड़कना, खासी और मल-मूत्र त्याग में कष्ट होता है।

चिकित्सा:—

एपिस ६-३०—अचानक पीड़ित स्थान मे डंक मारने की तरह दर्द, पेशाव अल्प और कब्ज होता है। प्यास नहीं होती है। चेहरा फीका, शोथ विशेषत आंख के नीचले पपुटे मे, दहिना ओभारि मे बिमारी।

आर्सेनिक ३०-२००—ज्वाला, अस्थिरता, व्याकुलता निस्तेजता, अत्यन्त प्यास किन्तु अल्प २ पानी पीना, सर्व्व शरीर में शोथ।

कैन्थारिस ६-३०-२००—पीड़ित स्थान में दर्द, बार २ पेशाव के वेग किन्तु थोड़ासा पेशाव सख्त ज्वाला के साथ होना।

कलोसिन्थ ६-३०—शूल की तरह दर्द, दोहरा होने या दबाने से कम हो जाता है।

आइओडिअम ६-३०-२००—श्वेतप्रदर के स्राव इतना तेज होता है कि कपड़ा मे लगने से कपड़ा जल जाता

है । दोनों स्तन सूखा, ढीला और सिकुड़ा हुआ, कण्ठमाला धातु ।

लिलिअम-टिग्रिनम ६-३० :—ओमारि की बिमारी के हेतु दिल-धड़कना, जरायु मे इतना बोझ मालूम होता है कि जान पड़ता है योनिद्वार से सब बाहर निकल जायगा। बोयां ओमारि फूला हुआ और उस में दर्द, पेशाब मे तकलीफ।

लाइकोपोडिअम ३०-२०० :—दहिना ओमारि मे टनकने की तरह दर्द, विशेषतः बैठी हुई हालत से खड़ा होने के समय। पेशाब मे लाल रेत की तरह गाद पड़ता है। जलोदरी, निम्न शाखों की शिरासमूह फूली हुई।

कैलकेरिया-कार्ब ३०-२०० :—पेट फूला हुआ, कठिन, ऋतुस्राव शीघ्र २ और बहुत परिमाण से होता है और बहुत देर तक ठहरता है।

चायना ६-३०-२०० :—अत्यन्त रक्तस्राव, शोथ, पेट फूला रहना, रक्तहीनता और दुर्व्वलता।

डिम्बकोष का शूल दर्द ।

OVARALGIA.

रोग परिचय :—इस दर्द मे डिम्बाधार मे किसी प्रकार प्रदाहादि नही होता है। यह शूलदर्द विशेष है।

हिस्टिरियावाली स्त्रीलोगों में यह पीड़ा अधिक देखी जाती है। अचानक ऐंठने वाला दर्द, हिलने डालने से ज्यादा और दबाने से कम मालूम होता है। कै और मतली और पेशाब अधिक परिमाण से होता है। हाथ पैर ठन्ढा। महिना २ नियमित ऋतुस्राव के बाद दर्द कम हो जाता है। यह दर्द नाना स्थान में फैलता है। पेट फूलना और दिल-धड़कना अकसर इस की सहकारी बिमारी के भाव से देखी जाती है।

चिकित्सा—रतिक्रिया बिलकुल नहीं करना चाहिये।

ऐमन-ब्रोमाइड ६-३०—ओमारि में बोझ और टनकने के सदृश दर्द।

सिमिसिफिउगा ३-६—वातरोग वाली रोगिणी, बांझपन, जरायु में दर्द।

लिलियम ६-३०—ओमारि के दोनों तरफ से खूब जोर से दबाने के सदृश दर्द।

कोनायम ६-३०—ओमारि का दर्द के साथ स्तन में दर्द।

जिंक-भेलेरिअम ६-३०—रोग की प्राचीन अवस्था में इस से उपकार होता है।

चिन-सल्फ और चिन-आर्स ६-३०—मैलेरिया जनित ज्वर इत्यादि के साथ यह रोग होने से दिया जाता है।

जरायु की पीड़ासमूह।

DISEASES OF THE UTERUS.

—:※:—

श्वेतप्रदर वा लिउकोरिया।

LEUCHORRHŒA

रोगपरिचय :—लिउकोरिया शब्द से साधारनतः जरायु से सफेद रंग की पतली पानीसा स्राव होना समझा जाता है, किन्तु यह स्राव सिर्फ सफेद ही नहीं होता है। पीला, हरा, नीला, गाढ़ा, पतला इत्यादि वहुत प्रकारका हो सकता है। यह विमारी जरायु वा उसका मुखदेश अथवा योनि के स्राव है। यह योनि, जरायु इत्यादि के प्रदाह के फल से उत्पन्न होता है। तनदुरुस्त हालत में योनि का मुंह की आवरक म्युकस झिल्ली गिल्टियों से एक प्रकार का रस निकल कर केवल योनि के दोनों होंठों (Labia) को जुटा कर रखते हैं किन्तु विमारी की हालत में वही स्राव ज्यादा हो कर भिन्न आकृति-और रंग धारण करता है और इसी प्रकार स्राव को ही लिउकोरिया वो प्रदरस्राव कहते हैं।

लक्षण :—साधारणतः जरायु और योनि की आवरक झिल्ली से एक प्रकार सफेद, पीलापन वा सब्जपन स्राव

कोऊहल-विरइया [२८०-

उर्णं-गंध-लुद्धा- गयालिसुहलेहिं।

होता है। स्राव पतला पानी के सदृश अथवा गाढ़ा लेई के सदृश और गन्धहीन वा गन्धयुक्त हो सकता है।

चिकित्सा :—

एस्कुलस ६-३०—श्वेतप्रदर के साथ पीठ और कमर में दर्द सामने झुकने से और फिरा करने से दर्द अधिक होता है स्राव गाढ़ा और पीला, वह शरीर के जिस स्थान में लगता है उसी स्थान में जख्म होता है।

ऐम्ब्राग्रिसिया ६-३०—स्राव नीलापन, बलगम ऐसा, केवल रात में प्रदरस्राव, योनि में ज्वाला व खुजलाहट।

ऐग्नस ६-३०—स्राव पतला और स्वच्छ, रतिक्रिया की इच्छा बिलकुल न होना।

ऐलेट्रिस Q, १, ३, —जरायु की ज्यादा दुर्बलता के हेतु पीड़ा, जांघ में अकड़ने की तरह दर्द

ऐसन-कार्ब ६-३०—अतिशय तेज, ज्वाला जनक और पतला पानी की तरह स्राव रज-स्राव शीघ्र २ और अधिक होता है। रक्त काला और ढेला २। खुली हवामें जाने से सिर दर्द होता है।

ऐसन-म्युर ३०-२००—प्रत्येक बार पेशाब के बाद धूआं रंग के चिकणा प्रदरस्राव होता है। कभी २ अण्डे की सफेदी की तरह स्राव होता है। रात में पेट फूलना, कब्ज।

एलुमिना ३०-२००—बहुत परिमाण से पतला और स्वच्छ स्राव पांव से वह कर नीचे गिरता है। सिर्फ दिन के समय स्राव होता है।

आर्सेनिक ३०-२००—पतला, ज्वालाजनक प्रदरस्राव।

बोभिष्टा ६-३०—विशेषत रजःस्राव के वाद अन्डेकी सफेदी की तरह स्राव, चलने फिरने के वक्त ज्यादा होता है।

बोराक्स ३-६—दो मासिक स्राव के ठीक मध्य समय मे अंडे की सफेदी की तरह और बहुत गर्म स्राव होता है।

कैल्केरिआ-कार्ब ३०-२००— ढीला बलगमी और कण्ठमाला धातु की वालिका और स्त्रियों को अति शीघ्र २ और बहुत परिमाण से रजःस्राव होता है। पुराना प्रदर स्राव, स्राव देखने मे दूध के सदृश, ऋतु के ठीक बाद ही स्राव ज्यादा होता है, योनि मे ज्वाला और खुजली होता है।

चायना ६-३०-२००—अत्यन्त दुर्वलता रज स्राव के ठीक बाद ही खून मिला हुआ प्रदरस्राव के साथ काला व ढेला २ अथवा वदबूदार पीव की तरह स्राव होता है।

हाइड्रास्टिस ३०-२००—पीला, गोंद की तरह स्राव को पकड़ कर खीचने से भी टूटता नही वलके सूत की तरह लम्बा होता है। इस औषध का मदर टिंचर के १० बुन्द एक औंस पानी मे मिला कर लोशन प्रस्तुत कर के पीड़ित स्थान को धो देने से फायदा होता है।

ग्रैफाइटिस ३०-२०० :—मोटी, ढीली, स्त्रीलोग का रज -स्राव देर में और अल्प २ होता है। प्रदरश्राव सफेद और ज्यादा होता है। चमड़े की बिमारी और उस मे से शहद की तरह चटचटा रस निकलता है।

केलिबाइक्रोमिकम ३०-२०० :—पीला रंग का गाढ़ा और बहुत लस्सादार श्राव, खींचने से टुटता नहीं।

क्रिओजोट ३०-२०० :—प्रदरश्राव अत्यन्त तेज, जखम पदा करने वाला और बदबूदार। रज:श्रावकाल मे सर्वदा शीत बोध, रज:श्राव शीघ्र २, बहुत परिमाण से और दीर्घ-स्थायी होता है।

लैकेसिस ३०-२०० —बहुत परिमाण से बदबूदार गोंद की तरह श्राव होता है, कपड़े मे सब्ज दाग लगता है, कमर मे कस कर कपड़ा बांध नहीं सकती है, मासिक वन्द होने के उम्र मे यह दवाई विशेष उपयोगी होती है।

आइओडिअम ६-३०-२०० :—प्राचीन पीड़ा, ऋतु के समय रोग ज्यादा होता है, श्राव से जाघ मे जखम हो जाता है, श्राव कपड़े मे लगने से कपड़ा जल जाता है। कण्ठमाला धातु की औरतों मे विशेष उपयोगी है।

मार्क-सल ३०-२०० :—श्राव पीला, पीव की तरह। योनिदेश से ज्वाला, खुजलाहट और दर्द। मसुढ़ा और टन्सिल फूला हुआ। रात में पीड़ा की ज्यादती।

पल्सेटिला ६-३०-२००—दर्द रहित श्वेतप्रदर, स्राव गाढ़ा, सब्ज मिला हुआ पीला, कभी २ ऋतु के पहले और बाद दूध की तरह स्राव होता है।

सिपिया ३०-२०० :—गाढ़ा मक्खन के सदृश अथवा पीला बदबूदार स्राव, रज-स्राव अल्प होता है, उसमे प्रसव की तरह दर्द होता है। बार २ पेशाब करने की इच्छा और योनि मे खुजलाहट, संगम इच्छा नहीं होती है।

सलफर ३०-२००—पुराना रोग, स्राव नाना प्रकार के होता है। पैर के तलवा और चांदी में अत्यन्त ज्वाला प्रति दिन सुबह ११ बजे भयानक भूख लगती है, कुछ न खाने से मूर्छा के ऐसा होता है।

—:(:).❀:◌.—

जरायु का प्रदाह वा मेट्राइटिस।

METRITIS.

— o.—

रोग परिचय :—यह बिमारी अधिक वयस की औरत मे ही ज्यादा होती है। कभी २ गर्भावस्था मे या सतान प्रसव होने के बाद भी होती है। इस बिमारी के प्रारम्भ मे कम्पन के साथ ज्वर होता है, नाड़ी पूर्ण और तेज होती है। अत्यन्त प्यास होती है। जी मिचलाता है, और कै होता है, कभी २ दस्त होता है। मल त्याग काल मे कुथना पड़ता है,

कोऊहल-विरइया [२८०–

दाणं-गंध-लद्धा गयालिमुहलेहिं ।

जरायु फुल जाता है और उसमे दर्द होता है, कभी २ विमारी टाइफाइड की आकृति धारण करती है । ठंढ लगना, चोट लगना ज्यादा या सजोर से सगम करना या मासिक बन्द होना इत्यादि इस विमारी का कारण है। कष्ट प्रसव से अकसरहा यह विमारी होती है योनि वा गुह्यद्वार मे कृमि का घुसना भी इस विमारी का कारण हो सकता है ।

विमारी तेज होने से तलपेट मे दर्द के साथ जरायु मे पीव भी पैदा हो सकता है, कमर मे, कक्षा मे व जांघ मे भी दर्द होता है । सिर मे दर्द होता है । विमारी खराव होने से टाइ-फाइड-हालत हो कर रोगिणी मर भी जा सकती है ।

चिकित्सा

एकोनाइट ३-६—तेज ज्वर, अत्यन्त अस्थिरता, व्याकुलता प्यास मृत्युभय ।

एपिस ६-३०— अत्यन्त निद्रा और निद्रा में कभी २ चित्कार करके उठना । अत्यन्त दुखी मिजाज, वा डिम्बकोष में ज्वाला के साथ-डंक मारने की तरह दर्द, मुंह सूखा हुआ किन्तु प्यास नही होती है ।

आर्सेनिक ३०-२००—अत्यन्त भय अस्थिरता, व्याकुलता और दुर्वलता । प्यास तेज होती है, लेकिन थोड़ा २ पानी पीता है । आग की तरह ज्वाला किन्तु फिर भी सर्वदा कपड़ा ओढ़ना चाहता है ।

बैलाडोना ६-३० :—दर्द अचानक आता है और अचानक चला जाता है। बहुत तेज विकार, शिर में दबदबाने के साथ दर्द, चेहरा और आंख लाल, पेट गर्म और उस पर छूना वर्दास्त न होना जरासा करवट लेने से भी दर्द, अत्यन्त अधिक होता है। पेट में ऐसा बोझ मालूम होता है कि रोगिणी को ख्याल होता है के उस से सब चीज योनि की रास्ता से निकल जायगी।

ब्राइयोनिया ३०-२०० :—रोगिणी सर्वदा स्थिरभाव से रहनी चाहती है, जरासा करवट लेने से दर्द की वृद्धि, सूई भोंकने की तरह दर्द। मुंह और जीभ सूखा, तेज प्यास, कब्ज।

कैलकेरिया-कार्ब ३०-२०० :—बलगमी मिजाज, देह मोटा और ढीला, शिर मे ठन्ढा पसीना, हाथ पैर ठन्ढा, जरायु की प्राचीन पीड़ा, ऋतु अधिक और शीघ्र २ होता है।

कैन्थारिस ३०-२०० :—अत्यन्त मूत्रकष्ट, बार २ पेशाब के वेग होता है किन्तु ज्वाला के साथ बहुत थोड़ा २ पेशाब होता है।

कैमोमिला १२-२०० :—रोगिणी बहुत चिरचिराहा और क्रोधी, किसी के साथ अच्छा व्यवहार नहीं कर सकती है। क्रोध के उपरान्त पीड़ा की वृद्धि।

कलोसिन्थ ६-३० :—शूल की तरह दर्द, दबाने से या दोहरा होने से कम होता है।

हाइयोसायेमस ३०-२०० .—टाइफायड-अवस्था, डिलिरिअम में बरबराती है, कपड़ा खोल कर नंगी हो जाती है। बिछावन खोटती है, हांथ पैर में ऐठन।

लैकेसिस ३०-२०० :—जरायु की जगह पर दवाव या स्पर्श बरदास्त नही कर सकती है। ऐसा कि उसके ऊपर कपड़ा भी नही रख सकती है। जरायु का दर्द रज स्राव होने से कम पड़ता है। निद्रा के उपरान्त सब लक्षणो की वृद्धि होती है। आखिरी मासिक वन्द होने के समय मे यह दवाई विशेष उपयोगी होती है।

मार्कुरिअस ६-३० :—जीभ गीला और मोटा और उस पर दांत का दाग पड़ता है। प्यास बहुत ज्यादा होती है। पसीना वहुत होता है किन्तु उससे कुछ भी उपकार नही होता है। रात मे पीड़ा की वृद्धि।

पलसेटिला ३०-२०० :—शान्त, गर्म और दु खी मिजाज की औरत, जो सहजही से रो पड़ती है और दूसरे की बात मान लेती है पांव भीगने के हेतु रज.स्राव या लोकिया-स्राव वन्द होने से पीड़ा। बार २ शीत होना, प्यास न होना, स्तन मे दूध न रहना।

रसटक्स ६-३०-२०० :—अत्यन्त अस्थिरता, वार २ करवट वदलने से आराम मालूम होना, जीभ सूखी और उसके अग्रभाग लाल, मध्य रात्रि मे दर्द की वृद्धि, टाइफायड अवस्था।

सिकेली ६-३०—जरायु में जखम होता है और यह सड़ जाता है। योनि से भुरा रङ्ग के वदवूदार स्राव होता है। ज्वर, कभी २ शीत बोध, सड़ा कै होना, वदवूदार दस्त।

सिपिया ३०-२००—विलकुल उदास, प्रसव की तरह दर्द, मालूम होता है कि जरायु से सब निकल जायगा। जरायु का टल जाना।

—:oo:—

प्रथम ऋतु-प्रकाश में विलम्ब।

(DELAYED MENSTRUATION.)

—:oo:—

रोग परिचय—यदि वालिकायों उपयुक्त वयस प्राप्त होने पर भी उनका ऋतु जारी न हो तो उस को ऐमेनोरिया वा प्रथम ऋतु प्रकाश में विलम्ब कहते हैं।

कारण—साधारणतः सर्वांगिका दुर्वलता वा धातु गत दोष के हेतु प्रथम, ऋतु-प्रकाश में विलम्ब होता है। कभी २ कुमारोच्छद वा हाइमेन (Hymen) में छिद्र न रहने के वजह से भी ऋतु वन्द रह सक्ता है और इसके लिये नस्तर देने की जरूरत होती है। डिम्वकोष के रोग के कारण भी यह तकलीफ हो सक्ती है।

लक्षण—प्राप्त वयस में ऋतु प्रकाशित न होने से सिर-पीड़ा, सिरचकराना, दिमाग विगार, वधिरता, दील-धड़कना

आख की विमारी, पेट के रोग, पेडु मे बोझ व दर्द वगैरह वहुत किस्म की तकलीफ हो सक्ती है। किसी २ वालिका को शोथ, खांसी अथवा मूर्च्छा रोग भी होते देखा जाता है, कभी २ ऋतुस्राव के वदले मे किसी २ का वदन के किसी अन्य स्थान वा यंत्रद्वारा रक्तस्राव होता है, उसको अनुकल्प रज-स्राव वा भिकेरियासस मेन्स्ट्रुएशन Vicarious Menstruation) कहते हैं। मतली, कै, पेट में दर्द, पेट फूलना इत्यादि भी इसके साथ अक्सरही रहता है। मृगि, हिष्टिरिया इत्यादि नानाविध स्नायुरोग भी वर्तमान इसका नित्य सहचर है।

आनुसंगिक उपाय—उत्तम आहार, साफ पोशाक नियमित स्नान, साफ हवादार गृहमे वास, नियमित परिश्रम, हमेशा खुश रहना इत्यादि जरूरी है। ठण्ढ लगाना वा गरम शरीर से पानी पीना उचित नहीं है। ज्यादा गरम चीज वा मीरचाई आदि, प्याज, लहसुन, इत्यादि सेवन न करना चाहिये। हलका व पुष्टिकर खाद्य आहार करना व स्वास्थ्य-कर स्थान में वास करना चाहिए।

चिकित्सा :-

थलथलो, मोटी वालिकायों की पीड़ा—एकोनाइट, वेला-डोना ब्राइयोनिया, ओपियम, सल्फर, कैल्केरिया।

ठंढ लगने से पीड़ा—एकोन, डल्कामेरा, पल्सेटिला रोडोडेन्ड्रन, सिपिया, सल्फ

प्रथम ऋतु-प्रकाश में विलम्ब वा ऐमेनोरिया। ४०९

पैर की तलवा भींगनेसे पीड़ा—डल्का, रसटक्स, पल्स।

ऋतु न होने से सिर पीड़ा—एकोन, वेल ब्रायो, कुप्रम ओपियम।

ऋतु न होकर नाक वा बदन के अन्य किसी स्थान से रक्तस्राव होना—ब्रायो. पल्स, फस, हेमामेलिस, फेरम क्रियोजोट।

ऋतु न होकर खुनी दस्त वा खूनी कै—फस, अप्टिलेगा लकेसिस, क्रियोजोट।

ऋतु न होने से पेट के रोग—आर्स, ब्रायो, चायना, फेरम लाइको, पल्स।

ऋतु न होने से शोथ—एपिस, ऐपोसाइनम इत्यादि।

ऋतु न होने से स्नायवीय पीड़ा—इग्नेशिया. ककिया कुप्रम, कलोसिथ, हायोसायमस. नेट्रम, जेल्सिमियस।

अतिशय दुर्ब्बल बालिका के लिए—आर्स, चायना, ग्रेफाइटिस, पल्स, फेरम, सल्फ।

मन्तव्य—पूरी चिकित्सा रजोलोप—अध्याय में देखिए।

रजोलोप वा ऋतुस्तम्भ वा एमेनोरिया ।

(AMENORRHOEA.)

रोग परिचय—स्त्रियों का प्रथम ऋतु प्रकाश होनेके वाद से आखरी ऋतुवन्द होने के समय तक काल मे (गर्भावस्था व दूध पीलाने के समय के विना) किसी कारण से मासिक ऋतुश्राव वन्द रहने से उसको रजोलोप वा ऋतु स्तम्भ कहते है।

कारण—अचानक ठंढ लगना, गरम खाना पीना, उपयुक्त आहार के अभाव, खराव जगह मे वास, आलस मे रहना, ज्यादा मेहनत करना, ज्यादा सहवास करना अथवा एकदम सहवास न करना, पसीना, की हालत मे ठण्ढी चीज पीना या ठण्ढ लगना, जुलाव लेना, डर, गम, किसी वजह से खुन की कमी होना, प्रमेह रोग इत्यादि कारण से यह रोग होता है। जरायु वा डिम्बकोप की असम्पूर्णता वा जरायु का टल जाना इत्यादि से भी यह होता है। इसके अलावे नानाविध रोग, कण्ठमाला, मृतपांडु, यक्ष्मारोग, मैलेरिया, गरमीरोग इत्यादि से भी यह होता है।

लक्षण— ऋतु वन्द रहने से कोई तकलीफ न हो तो उस को रोग नहीं कहा जाता है। ऋतु वन्द रहने से जव तकलीफ होती है तो उसके प्रतिकार की जरुरत होती है।

ऋतु बन्द होने से कभी २ शीत बोध, थोड़ा २ कांपनी पीठ व कमर में दर्द, जांघ मे टटाना, पेडु मे बोझ, सिरदर्द सिर चक्कराना, अजीर्णता, कै, मतली, स्वांसकष्ट, गमगीन हालत, कमजोरी, शोथ, दील-धड़कना इत्यादि लक्षण देखा जाता है कभी २ अचानक ऋतु बन्द होनेसे ज्वर भी होता है। रजोबंद होकर मूर्च्छारोग भी हो सक्ता है। यथासमय, यथारीति ऋतु स्राव न हो कर अन्यस्थान से भी रक्तश्राव हो सक्ता है, उसको **अनुकल्प वा प्रतिनिधि रजःस्राव वा भिकेरियस मेन्स्टुरुएशन** कहते है।

रोगनिर्णय—ऋतुबन्द होने से तीन महीना तक एन्तजार करना चाहिए कारण गर्भ होने से भी ऋतुबन्द हो जाता है। यदि इस समय के अन्दर गर्भ के कोई लक्षण न मालूम हो तो रोग हुआ है समझना चाहिये।

भाविफलः— किसी बाहरी कारण से बिमारी हो तो आसानी से आराम हो जाती है लेकिन यांत्रिक विगार से बिमारी हो तो आराम होने मे देर लगता है। इस पीड़ा के वजह से यक्ष्मा रोग, दम्मा, मृतपांडुरोग, दील का रोग कैन्सर, ववासिर शुलदर्द, हिष्टिरिया, मृगी, मूर्च्छारोग, आंख का रोग, सन्यास रोग, फलिज इत्यादि हो सक्ता है।

आनुसंगिक उपायः— स्वास्थ्यसम्बन्धी नियम रीतिमत पालन करना चाहिए। विशुद्ध वायु सेवन, विशुद्ध

हवादार गृह में वास नियमित श्रम, उत्तम आहार, प्रभृतिका बन्दोवस्त करना चाहिए। ज्यादा सहवास न करना चाहिए।

चिकित्सा:—

मिकेरिअस मेन्टुस्ट्रुएशन के निमित्त ब्राइयोनिया, क्रियोजोट पलसेटिला, फसफोरस, हेमामेलिस, मिलिफोलिअम, आस्टिलेगी, उत्तम है, नाक और पाकस्थली से काला रक्तस्राव और उसके साथ कमर मे दर्द रहने से—ब्राइयोनिया; किन्तु वह रक्त साफ लाल और फेफडा से निकलने से—मिलिफोलिअम विशेष उपकारी होता है। मेला ढेल २ रक्त और रोगिणी यक्ष्मारोग वाली होने मे—अस्टिलेगो विशेष फलप्रद है। रक्त काला और स्रावान्त मे आराम बोध होने से—हैमामेलिस। रोगी अत्यन्त दुर्बल, स्मृति शक्ति की हीनता व रक्त वमन के निमित्त—क्रिओजोट। अल्प वयस मे ही अत्यन्त शीघ्र २ पूरा यौवन प्राप्त होना बाया तरफ की बिमारी, मर्वदा भूखा बोध इत्यादि के निमित्त—फसफोरस। बालिकाओं के नाक से रक्तस्राव और प्रदरस्राव रहने से—पलसेटीला। ठन्ढी सुखी हवा लगकर ऋतुबन्द होने से—एकोनाइट। ऋतु के समय पर भिंगने से ऋतुबन्द होने पर—पलसेटिला। यदि हिम लग कर बिमारी हो—डलकेमेरा। अचानक पसीना बन्द हो कर पीडा होने से—केमोमिला। पानी मे भिगने के हेतु पीड़ा होने से - रसटक्स। पानी मे काम करके पीड़ा होने से

ऋतुकाल में—

कैलकेरिया कार्ब । भींगा कपड़ा में रहने के हेतु ऋतु बन्द होनेसे—नक्स मस्कैटा । स्नान हेतु होने से—एन्टिम-क्रुड । चिन्ता, भय, क्रोध, हेतु रोग में—इग्नेसिया । क्रोध हेतु रोग मे—कलोसिन्थ भय जनित रोग में—एकोनाइट प्रयोग होता है । आखरी ऋतु बन्द होने के कबल से—सिपिया, पलसेटिला, कोनायम, इग्नेशिया लैकेसिस, सलफर इत्यादि औषध विशेष फल देता है। इस पीड़ा मे स्वांस-कष्ट रहने से—ऐमन-कार्ब, आर्सेनिक, वेलाडोना, कैलकेरिया, ककुलस, हाइयोसायमस, फस । हाथ पैर फूल जाने से—एपिस, एपोसा, एसेटिक-एसिड, आर्सेनिक, चायना, फेरम, हेलिबोरस, सिपिया प्रयोग होता है। मनःपीड़ा के हेतु ऋतु बन्द होने से—चायना अधिक फल प्रद है। इस पीड़ा से दांत से दर्द रहने से—कैल्क, सिपिया, आर्सेनिक, बेल। ऋतुश्राव के बाद दन्तशूल—केलकेरिया । सिर घुमने से—कोनायम। यदि ऋतु के समय श्राव न हो कर पेट मे दर्द हो तो—ककुलस उत्तम है। ककुलस से उपकार न हो तो मेगनेसिया, सिपिया, ग्रेफाइटिस इत्यादि द्वारा फल मिलता है।

अनियमित ऋतु (Irregular Menstruation) के निमित्त ग्रेफाइटिस, कलोफाइलम, एलेट्रिस, हेलोनिअस साइक्लेमेन, कष्टिकम ।

एकोनाइट ३-६—यौवन से बार २ नाक से रक्तश्राव,

दील के धड़कन, दिमाग मे रक्तसंचार। भय, सुखी ठन्ढी हवा लगने के हेतु ऋतुवन्द।

एपिस ६-३०-२००—सिर में रक्तसंचार के साथ ऋतुश्राव, क्लोरोसिस और उसके साथ शोथ, शरीर दर्द। आंख के पपुटे और चेहरा फूला। दहिना ओमारी मे सूई चुभनेकी तरह ज्वालायुक्त दर्द।

एपोसाइनम ३-६-३०—पेट और शाखायों मे शोथ, खास कर नवयुवती में।

बेलाडोना ६-३० :—ऋतुश्राव के बदले मे प्रति महीने में खून का कै, सिर में रक्तसंचार।

ब्राइओनिया ३०-२००—ऋतु न हो कर उस समय मे नाक से रक्तश्राव।

कैलकेरिया-कार्ब ३०-२००—ढीली, मोटी बलगमी मिजाज की नवयुवती का रोग, पानी मे रह कर काम करने के हेतु रोग, शरीर मे शोथ।

कार्बो-भेज ३०-२००—ऋतु के समय मे योनि मे अत्यन्त खुजलाहट।

कस्टिकम ३०-२००—यौवन के समय मे मृगी की तरह फीट।

चायना ३०-२००—ज्यादा मनोकष्ट के हेतु ऋतु बन्द, स्तन में दूध आता है।

कुप्रम ६-३०—सख्त ऐंठने वाला दर्द, जी मिचलाना और कै होना, हाथ पैर मे ऐंठन।

डिजिटेलिस ६-३०—चेहरा नीला या बैंगनी। आंख कान, जीभ और ओष्ठ की शिरा समूह पूर्ण और फैली हुई। दील की क्रिया बेकायदा, नाड़ी अत्यन्त दुर्व्वल, गला व नाक से रक्तश्राव।

ग्रैफाइटिस ३०-२००—इस पीड़ा के साथ चर्मरोग और उस मे से शहद की तरह चटचटा रस निकलता है, नाखुन टेढ़ा और ऊंचा नीचा होता है।

हैमामेलिस ३-६-३०—मेदा और नाक से अनुकल्प श्राव, कब्ज, पैर की शिरा समूह फूली हुई।

कैलकेरिआ-कार्ब ३०-२००—चेहरा फूला विशेषतः आंख के ऊपर वाले पपुटा फूला हुआ, कमर मे दर्द, ऋतुश्राव के पहले मुंह से रक्त निकलता है।

लैकेसिस ३०-२००—ऋतुश्राव न हो कर नाक से रक्त श्राव होता है।

नेट्रम-म्युर ३०-२००—रोगिणी अत्यन्त दुं:खिता, जीभ के ऊपर छोटे २ छाले, अथवा जीभ पर मानचित्र की तरह छाले, कब्ज, पेशाव के वाद दर्द होना, अत्यन्त सिर दर्द, दीलधड़कना।

फसफोरस ६-३०-२००—ऋतु देर में होता है या बिलकुल नहीं होता है। छाती मे संकोचन भाव के साथ

सूखी खासी, के साथ खून आता है, सांझ से दो पहर रात के पहले तक खासी की ज्यादती।

प्लेटिना ३०-२००—समुद्र-यात्रा के हेतु ऋतु वन्द।

पलसेटिला ६-३०-२००—यौवन काल में पैर भिगने के हेतु ऋतुवन्द, रोनेवाला स्वभाव। चर्वी और घी वाली चीज खाने से अजीर्ण रोग, प्यास न होना, शीत भाव, ठंढी खुली हवा में आराम बोध।

सेलेसियो १-३-६—ऋतु वन्द। नींद नहीं होती है। चिरचिरहा स्वभाव, कब्ज, दुर्वलता, पीठ से कन्धा तक दर्द चलता फिरता रहता है। पुराना नाकसिर।

सिपिया ३०-२००—यौवनकाल में अथवा उस के बाद ऋतु वन्द सिर दर्द और जी मिचलाना, आंख के पपुटे का ढीला हो कर लटक जाता, मुंह के चारों ओर पीला दाग पड़ना, भोजन में अरुचि, खाद्य की बूही से कै होता है, दूध खाने से दस्त होना। हाथ पैर ठन्ढा, और सिर गर्म रहता है। ऋतु के पहले गला से खून निकलता है, ऋतु के तीन दिन पहले श्वेतप्रदर जारी होता है।

सलफर ३०-२००—चांदी और पैर में ज्वाला, नाना प्रकार के चर्मरोग, ठन्ढा पानी से हाथ पैर धोने में डरता है। खड़ा होने से रोग की वृद्धि होती है, रात में नीन्द नहीं होती है।

जैन्थोक्सिलम ६-३०—अर्शसे अनुरूप रजःश्राव। मलद्वार में बोझ व खुजलाहट।

फेरम ३०-२००—खांसी के साथ खून निकलना, चेहरा फीका, सहज ही से लाल होता है, निहायत कमजोरी, सिर चकराना, कान मे मन् मन् आवाज, दिल-धड़कना ।

—:०:—

रजसाधिक्य वा ऋतुश्राव की ज्यादती ।

(MENORRHAGIA.)

रोग परिचय—साधारणतः ऋतुकाल में यथापरिमाण से ज्यादा खून निकले या ज्यादा दिन तक ऋतुश्राव होता रहे तो उसको रजसाधिक्य वा मेनोरेजिया कहते हैं ।

कारण—नाना कारण से यह रोग होता है । ज्यादा संगम करना, कृत्रिम मैथून, ज्यादा संतान प्रसव करना वा बार २ गर्भश्राव होना, गर्म चीज खाना पीना, ज्यादा दूध पीलाना इत्यादि कारण से यह रोग होता है। जरायु, डिम्बाशय इत्यादि का बिगार व प्रदाह इत्यादि से भी यह बिमारी पैदा होती है ।

लक्षण—इस में ऋतु का नियमित समय में वा उस के पहले भी ज्यादा रक्तश्राव होता है अथवा नियमित समय मे ऋतु शुरू हो कर ज्यादा दिन तक जारी रहता है। इस से साधारणतः आलस्य मालूम होता है, जी मटियाता है। सिर मे तकलीफ मालूम होती है, कमर, पीठ व पेर से दर्द होता है। पेट में बोझ व चांप मालूम पड़ता है। कभी २

जाड़ा मालूम होता है, पात्र ठंढा, भूख कम होती है, अरुचि होता है। ज्यादा खून गिरने से कभी २ सांघातिक लक्षण प्रकाश पाता है।

आनुसंगिक उपाय—आहार-विहार का नियमादि प्रतिपालन सर्व्वतोभाव से करना चाहिए। किसी प्रकार गरम खाना पीना नहीं करना चाहिए। ज्यादा रक्तश्राव होते रहने से रोगिणी को स्थिरभाव से लेटा रखना चाहिए। भय, शोक, क्रोध इत्यादि मानसिक व्याकुलता परित्याग करना चाहिए।

मन्तव्य—इस रोग की चिकित्सा जरायु से रक्तश्राव-अध्याय मे वा मेट्रोरिजिया मे देखिए।

—:o—

जरायु से ज्यादा रक्तश्राव वा मेट्रोरेजिया।

(METRORRHAGIA.)

रोग परिचय—ऋतुकाल के सिवाय अन्य किसी समय अथवा समय में वा दो मासिक ऋतुकाल के मध्य-वर्ती काल में जरायु से रक्तश्राव हो तो उसको मेट्रोरेजिया वा जरायु से रक्तश्राव कहते हैं। गर्भावस्था वा संतान प्रसव के समय भी जरायु से ज्यादा रक्तश्राव होने से उसको भी जरायु से रक्तश्राव कहते हैं। अक्सर स्त्रियों के शेष ऋतुबन्द होने के समय भी जरायु से रक्तश्राव होता है।

कारण— जिन कारणों से जरायु में ज्यादा रक्तसंचार होता है, उन्हीं कारणों से जरायु से ज्यादा खून निकल सक्ता है। इन में ज्यादा संगम करना, गरम चीज खानापीना, भय, शोक, क्रोध इत्यादि मानसिक उद्वेग, पेडू में चोट लगना, जोर से खांसना, छिंकना जोर से कै करना, योनि में गर्म चीज का पिचकारी देना, पेसारी व्यवहार करना, दिलकी बिमारी, यकृत में रक्तसंचय ठन्ढ लगना इत्यादि कारणसे अक्सर जरायु का पुराना प्रदाह, जरायु में गिल्टी होना, जरायु मे जखम होना, जरायु का टल जाना इत्यादि रोगों के साथ यह रोग प्रकाश पाता है। पित्त का बिगार, जरायु में कृमी का घुसना इत्यादि से भी यह रोग होता है।

दुर्बल वा रक्तश्राव की आदत वाली स्त्रियों और ज्यादा दिन तक दूध पिलाने वाली स्त्रियों को यह रोग सहज से हो सकता है। गर्भावस्था व प्रसव के बाद यह रोग हो सकता है। कभी २ चेचक, सान्निपात ज्वर, हैजा, फेफड़े का प्रदाह इत्यादि रोग मे भी जरायु से रक्तश्राव होता है।

लक्षण—कभी २ पेडू में दर्द, सर्व्वाङ्ग में आलस्य, स्तन का फूलना, तलपेट मे बोझ, कब्ज, ज्वर-बोध, हांथ पांव का ठन्ढा होना, कम्पन, योनि में सुरसुराहट, इत्यादि लक्षण प्रकाश पाता है। रक्तस्राव आरम्भ होने से ये सब कम हो जाता है। बहुत ज्यादा रक्तस्राव होने से नजर धुन्धली, कान मे आवाज, स्वांसकष्ट इत्यादि सांघातिक लक्षण आ जाता है। अक्सर

सिरदर्द होता है। कभी २ पेट की गड़बड़ी व शोथ रोग होता है।

आनुसंगिक उपाय—ज्यादा रक्तस्राव होता रहने से रोगिणी को स्थिरभाव से लेटा रखना चाहिये और उसके पीठ के नीचे एक कम ऊंचा तकिया देना चाहिये। रोगिणी को कपड़ा से ढंक कर रखना चाहिये। तमाम किस्म का गरम खाना पीना, और खट्टा व मिर्चाई इत्यादि न देना चाहिये। किसी किस्म का मानसिक चिन्ता न करना चाहिये। आहार-विहार का नियम पालन करना चाहिये। एक वक्त भात और एक वक्त रोटी देना खराब नहीं है। मछली वा मांस का शोरुवा और दूध देना अच्छा है।

गर्भावस्था में. प्रसव अथवा गर्भस्राव के बाद रक्तस्राव के निमित्त—बेलडोना, फेरम, प्लेटिना, सेवाइना, आरनिका, चायना, इपिकाक, पलसेटिला, सिकेली, सिपिया, कलोफाइलम।

शेष वयस में जरायु से रक्तस्राव—पलसेटिला, लैकेसिस, प्लेटिना, सिपिया, सिकेली, अस्टिलैगो।

काला रक्तस्राव के हेतु—कैमोमिला, चायना, क्रोकस, फेरम, हैमा, क्रियोजोट, प्लेटिना, पलसे, सिकेलि।

काला और ढेला २ रक्तस्राव के लिये—कैमोमिला, चायना, क्रोकस, फेरम, पल्स।

काला, पतला रक्तश्राव—सिकेलि।

काला दुर्गन्धमय रक्तश्राव—कैमोमिला, क्रोकस, सिकेलि।

काला लसदार रक्तश्राव—क्रोकस।

चमकीला लाल रक्तश्राव—आरनिका, बेला, कैलकेरिआ, इरिजिरन, इपिकाक, सेवाइना, अस्टिलेगो, ट्रिलिअम।

चमकीला लाल रक्तश्राव, हिलने से वृद्धि—सेवाइना, अस्टिलेगो।

लाल रक्तश्राव, बहुत परिमाण से—अस्टिलेगो।

रक्त गर्म—बेला।

लाल रक्त के साथ काला २ ढेला मिला हुआ—आरनिका, बेला, सेवाइना अस्टिलेगो।

ढेले की तरह रक्तश्राव—एपोसाइनम्, कैमोमिला, क्रोकस, कक्स, प्लैटिना, पल्स।

रक्त काला, थोका २—कैमोमिला, चायना, पल्स अस्टिलेगो।

बड़ा २ काला थोका—कफिया। बड़ा २ काला दुर्गन्धमय ढेला—क्रिओजोट।

चमकीला लाल, तरल रक्त के साथ ढेले—आरनिका बेला, सेवाइना, अस्टिलैगो।

ढेले के साथ काला तरल रक्त मिश्रित—सिकेलि।

कोऊहल-विरइया [२८०—

णं-गंध-लुद्धा, गयालिमुहलेहिं।

ढेले के साथ फीका पानी की तरह रक्त—चायना, फेरम, सेबाइना, सिकेलि।

पानी की तरह रक्तस्राव—चायना, फेरम।

एकोनाइट ३-६—मोटी, ताजी वलवती स्त्रियों के रक्तस्राव के साथ मृत्युभय, अस्थिरता, व्याकुलता। शयनावस्था से उठकर बैठने से सिर चकराना। ठण्ढी, सुखी हवा लग कर पीड़ा की उत्पत्ति।

आर्सेनिक ३१-२००—जरायु के प्राचीन प्रदाह-हेतु बिमारी, दीर्घकालस्थायी रक्तस्राव, अत्यन्त दुर्वलता, अस्थिरता, ज्वाला।

वोभिस्टा ६-३०—ऋतुकाल में अति अल्प परिश्रम करने से ही अत्यन्त रक्तस्राव, ऋतु शीघ्र २ और बहुत परिमाण से होता है। दिन मे चलने फिरने के समय स्राव कम होता है, रात मे लेटने से बढ़ता है।

कैलकेरिया ३० २००—ऋतु शीघ्र २ और अधिक होता है, अधिक दिन रहता है, शिर में पसीना, हाथ पैर ठण्ढा, अत्यन्त प्रदरस्राव के साथ ज्वाला, खुजलाहट, ऊपर चढ़ने के समय दम फूलना, शिर चकराना, दन्तशूल। यह औषध ढीली, मोटी, कण्ठमाला धातु की स्त्रियों मे अधिक उपयोगी है।

कैमोमिला १२-३०—काला जमा हुआ रक्त ज्यादा

परिमाण से और ठहर २ कर निकलता है। जरायु में प्रसव की तरह तेज दर्द, रोगिणी का स्वभाव अत्यन्त चिरचिराहा।

चायना ६-३०-२०० —जरायु की शक्ति हीनता के हेतु रक्त श्राव, कभी २ काला जमा हुआ रक्तश्राव होता है। जरायु मे ऐंठन और दर्द, बार २ पेशाब करने की इच्छा, शरीर शीतल और नीलवर्ण। किसी प्रकार पीड़ा के हेतु जिनको अत्यन्त रक्तश्राव हुआ है उन के निमित्त यह औषध उत्तम है। कान में भन २ शब्द, सिर चक्कराना, मूर्च्छा, अत्यन्त दुर्बलता।

सिमिसिफिउगा ३-६-३०—श्राव काला, जमा हुआ, पीठ से नीचे की ओर जांघ तक अत्यन्त दर्द। जरायु में बोझसा मालूम होता है।

कक्युलस ६-३०—बहुत परिमाण से रक्तश्राव, सिर्फ सन्ध्या के समय, रक्त काला, ढेले २।

क्रोकस ६-३०—रक्त काला सूत के ऐसा, जरायु में मालूम होता है कि कोई जिन्दा जन्तु है।

इरिजिरन ३-६-३०—रक्त चमकीला लाल। अचानक बहुत परिमाण से रक्त श्राव हो कर उसी समय बन्द हो जाता है, जरासा हिलने डोलने से फिर रक्त श्राव होता है, पेशाव के समय कष्ट और ज्वाला।

फेरम ३०-२००—ऋतु शीघ्र २ व बहुत परिमाण से होता है। चेहरा लाल, कान मे भन २ आवाज, रक्त वेरंग

पानी की तरह और दुर्बलकारी, अथवा बहुत परिमाण से पतला पानी की तरह रक्तश्राव, काला जमा हुआ रक्त के ढेले निकलता है, कमर मे दर्द।

हेमामेलिस १-३-६-३०—दुर्वलता के साथ रक्त श्राव, धीरे २ अल्प २ रक्तश्राव होता है।

इपिकाक ६-३०-२००—चमकीला लाल रक्तश्राव बहुत परिमाण से होता है, लगातार जो मिचलाता है और कै होता है।

कैल्क-कार्व ३०-२००—द्वितीय या तृतीय महीने में गर्भश्राव होने के बाद लगातार रक्तश्राव, पीठ मे दर्द।

ऐमन-कार्व ६-३०—रात मे अधिक श्राव होता है। ऋतु के समय मलत्याग के साथ रक्तश्राव होता है।

वोरैक्स ६-३०—अति शीघ्र २ बहुत परिमाण से रक्तश्राव होता है, शूल दर्द, सामान्य आवाज से चौंक उठती है और नीचे उतरने के समय डरती है।

ऐलेट्रिस १-३-६—जमा हुआ रक्त के साथ काला रंग के बहुत परिमाण श्राव होता है, जरायु मे बोझा और पूर्णता मालूम होना।

कस्टिकम ३०-२००—चेहरा पीला, ऋतुश्राव शीघ्र और बहुत परिमाण से होता है। दुर्गन्धीश्राव और उससे योनि में खुजलाहट होता है, रोगिणी का स्वभाव गमगीन। श्राव सिर्फ दिन में होता है, लेटने से बन्द हो जाता है।

मिलिफोलिअम १-३-६—चमकीला लाल और तरल रक्तश्राब। इस औषधि को कमी २ चायना के साथ अदल बदल करके व्यवहार किया जाता है।

मिका-मोइनर १-३—बहुत परिमाण से रक्त श्रोत की तरह निकलता रहता है। जरायु के टिउमर से काला रक्त श्राव।

प्लेटिना ३०-२००—संगम करने की इच्छा अत्यन्त अधिक, ऋतु शीघ्र २, श्राव बहुत परिमाण और बहुत दिन स्थायी होता है। रक्त गाढ़ा और काला किन्तु जमता नहीं।

फसफोरस ६-३०-२००—दूध पीलाने वाली स्त्रियों को अत्यन्त अधिक ऋतुश्राव। रोगिणी यक्ष्मा-धातु वाली और उसके साथ संगम की इच्छा ज्यादा रहने से यह औषध से फल मिलता है।

सेबाइना १-३-६—गर्भश्राव के समय वा उसके बाद अथवा ऋतुश्राब के समय बहुत परिमाण से श्राव होता है। डांर से पिउविस (योनिद्वार के ऊपर) तक अत्यन्त दर्द। रक्त चमकीला लाल अथवा गाढ़ा व जमा हुआ व बहुत परिमाण, गर्भश्राव के डर, सामान्य हिलने डोलने से स्राव की ज्यादती।

सिकेलि १-३-६—बहुत परिमाण से और दीर्घकाल-स्थायी रक्तस्राव, ठीक रक्तस्राव के पहले कष्ट की वृद्धि होती है। चेहरा पीला, शाखाओं ठन्ढी, मूत्रस्थली और मलद्वार में वेग मालूम होना, रक्त दुर्गन्धी; हिलने डोलने से अथवा खांसी से स्राव की वृद्धि।

थ्लैपसी १·३-६—जरायु में अत्यन्त दर्द के साथ रक्तस्राव। जरायु के कैन्सर।

अस्टिलेगी ६·३०-२००—प्लेसेन्टा वा पुरैन निकलने से बहुत रक्त स्राव होना। गर्भपात हेतु रक्तस्राव, खून का कुछ हिस्सा ढेले २, कुछ हिस्सा तरल, जरायु की बिलकुल अचेतनावस्था।

एपिस :—ओभारी में ज्यादा खून होने के हेतु शरीर में बीरनी काटनासा लाल २ धब्बासा दाने निकलते हैं। बहुत परिमाण से रक्तस्राव, आँख के पपुटे फूला, दहिना ओभारी में दर्द।

क्रिओजोट ३०-२००—अत्यन्त दुर्गन्धी स्राव, रक्त बडे २ ढेले, जरायु के कैन्सर। बैठे रहने से रक्तस्राव कम होता है।

लैक केनाइनम ६-३०—रक्त चमकीला लाल और आग की तरह गर्म।

रजःकष्ट वा डिसमेनोरिआ।

DYSMENORRŒA

:—०:—

रोगपरिचय :—ऋतु काल मे वा उस के पहले ही से दर्द इत्यादि नाना प्रकार के कष्ट होने से उस को डिसमेनोरिया

कहते है। इस मे ऋतुस्राव अल्प या अधिक हो सकता है। यह दर्द ऋतु के दो एक दिन बाद तक भी हो सकता है। जरायु मे दर्द, शिर दर्द, कमर दर्द, दुर्बलता इत्यादि इस पीड़ा के लक्षण है। कारणानुसार इस बिमारी का निम्न लिखित श्रेणियों मे विभाग की जाती है।

(१) मेकानिकल डिसमेनोरिया वा जरायु के निर्माण विधान के परिवर्तन, जरायु का टल जाना, किसी प्रकार से जरायु के मुंह बन्द हो जाना इत्यादि से यह बिमारी होती है (२) कनजेजेष्टिम डिसमेनोरिआ वा जरायु में रक्ताधिक्य-हेतु डिसमेनोरिया (३) न्युरेलजिक डिसमेनोरिया अर्थात जरायु के स्नायुशूल जनित रज.कष्ट। (४) मेमब्रेनस डिसमेनोरिया अर्थात पर्दाजनित रजोःकष्ट। इस में ऋतुकाल मे स्राव के साथ जरायु के अन्दर से एक थैली की तरह झिल्ली निकलती है कभी २ यह पर्दा टुकरा २ हो कर भी निकलता रहता है। (५) ओभारीअन डिसमेनोरिआ वा डिम्बकोष के प्रदाह-हेतु रज कष्ट। (६) जरायु की नाना प्रकार पीड़ा. यथा-फाइब्रेयेड टिउमर, पलिपस, कैनसर इत्यादि से भी रजःकष्ट होता है।

चिकित्सा :—

एकोनाइट ३-६-३०—जरायु अथवा डिम्वकोष में रक्ताधिक्य अथवा प्रदाह के हेतु पीड़ा, विशेषत ज्वर के लक्षण बेचैनी, व्याकुलता इत्यादि वर्तमान रहने से व्यवहार होना है।

एसन-कार्ब ६-३०—अधिक परिमाण से रक्त स्राव के पहले जरायु में अंकड़ने की तरह दर्द चेहरा जर्द।

एपिस ६-३०—सामान्य लमका २ रक्तस्राव, रज लोप के साथ डिम्बकोष का फूलना और रक्ताधिक्य। दाहिना डिम्बकोष में ज्वालायुक्त डंक मारने की तरह दर्द।

आरनिका ६-३०-२००—आघात-हेतु पीड़ा।

आर्सेनिक ३०-२००—स्नायुशूल, ज्वाला के साथ दर्द, अस्थिरतो, कमजोरी। जरायु का पुराना प्रदाह, तेज प्रदरस्राव।

वेलाडोना ६-३०—दर्द अचानक आता है और फौरन चला जाता है, पेडु में प्रसव की तरह दर्द मालूम होता है कि योनिद्वार से सब निकल जायगा। सिर में रक्ताधिक्य, चेहरा लाल।

ब्राइओनिया १२-३०-२००—वात रोग वाली रोगिणी में उपयोगी है। दर्द करवट लेने से ज्यादा और चुपचाप रहने से कम होता है।

कैक्टस ३-६—ऋतु स्राव अल्प और शीघ्र होता है, लेठनेसे स्राव बन्द हो जाता है। छाती अत्यन्त कसी हुई मालूम होती है।

कैलकेरिया-कार्ब ३०-२००—ढिली मोटी बलगमी मिजाज की स्त्रियों में रज कष्ट, पीठ में दर्द, हाथ पैर ठढा, ठण्ढी हवा बरदास्त नहीं कर सकती है। ऋतु शीघ्र २ और बहुत परिमाण से होता है व ज्यादा देर तक ठहरता है।

कलोफाइलम् ३·६—स्वाभाविक स्राव के साथ ऐंठनेवाला रजःकष्ट, प्रसव की तरह दर्द।

कैमोमिला १२-३०-२००—स्नायविक दर्द, पीठ और छाती तक खींचने की तरह दर्द, स्राव काला, जमा हुआ दर्द अत्यन्त अधिक, एक गाल लाल और गर्म दूसरी गोल ठण्ढा और पीला, ललाट में चटचटो पसीना, मिजाज अत्यन्त चिरचिराहा।

सिमिसिफिउगा ३-६-३०—पीठ मे अत्यन्त दर्द, वह दर्द डांड़ से आरम्भ हो कर जांघ तक फैल जाता है, तलपेट में प्रसव की तरह दर्द, स्राव जमा हुआ, जरायु को उतर जानेकी आदत, बायां स्तन के नीचे दर्द, अत्तन्त दु:खी मिजाज।

कफिया ६-३०—असहनीय दर्द, अस्थिरता, नीद न होना।

कलोसिन्थ ६-३०—शूल दर्द, जोर से दबाने से या दोहरा होने से दर्द का कम हो जाना।

कोनिअम ६-३०-२००—स्राव अल्प और देखने में धुमैला, रक्त स्राव के पहले स्तन फूल जाता है व कठीन और दर्द नाक होता है, पेट मे वोझ मालूम होना। पेशाब में कष्ट बार २ ठहर २ कर, थोड़ा २ पेशाब होता है, शिर चक्कराना।

ककुलस ६-३०—तेज रजःशूल रक्त थोड़ा और जमा हुआ सिर चक्कराना, जी मिचलाना।

घ-लुद्धा गयालिसुहलेहिं ।

कुप्रम ६-३०—सरल ऐंठने वाला दर्द ।

लैकेसिस ३०-२००—कमर में अत्यन्त दर्द और छुना वर्दाश्त न होना, रक्तस्राव के वाद सव कष्ट की कमी होना। ऋतु के पहले नाक से रक्तस्राव होता है।

मैगनेसिया-फस ६x—ऋतुस्राव के चंद घण्टे पहले ही से अकड़ने की तरह शूल, गर्म प्रयोग से कम और करवट लेने से ज्यादा होता है।

नक्स-भोमिका ३०-२००—पाकस्थली की गड़वड़ी के साथ मतली होना। वार २ मलत्याग की निष्फल चेष्टा।

फसफोरस ६-३०—रज.स्राव अति शीघ्र २ और अल्प होता है, स्राव के समय निद्राभाव । पेट में दुर्वलता और खाली २ मालूम होना ।

पलसोटिला ६ ३०-२००—रज स्राव अत्यन्त अल्प होता है, अत्यन्त तेज दर्द, एक स्थान से स्थानान्तर में घुमता रहता है, स्वभाव नर्म और रोनेवाला।

प्लेटिना ३०-२००—पेट से योनि तक खुल जाने की तरह दर्द, अत्यन्त दु.खितभाव और रोना।

सिपिया ३०-२००—रज स्राव अति शीघ्र २ और अल्प होता है। प्रसव की तरह दर्द, ऐसा मालूम होता है कि योनि-द्वार से सव निकल जायगा, रज स्राव के पहिले प्रदर स्राव होता है और उस से योनिद्वार में जखम हो जाता है, रोगिणी रोनेवाली मिजाज की होती है।

भाइवरनम-अपुलस १x—ऐंठने वाला दर्द के साथ रजाकष्ट, ऋतु के पहले पीठ में दर्द हो कर पैर तक फैलता है। दर्द ऋतु के पहले से शेष तक वर्तमान रहता है। दर्द आरम्भ होने से प्रति १० मिन्ट या आधा घण्टा अन्तर २ यह औषध देने से बहुत उपकार होता है।

जेन्थक्साइलम् ३-६—स्नायविक ज्वर। तलपेट से कछा और योनि तक दर्द।

जरायू का टल जाना।

DISPLACEMENTS OF THE UTERUS

रोग परिचयः-- जरायु अपना मोकाम से इधर उधर होने से उसको जरायु टल जाना कहते हैं। स्वभाविक अवस्था मे इस गतिशील यंत्र का जो परिवर्त्तन होता है। उसको बिमारी मे शामिल नही किया जाता है—जैसे सीधी आंत मलपूर्ण रहने से जरायु सामने की ओर और मूत्रस्थली पूर्ण रहने से यह पीछे की ओर हट जा सक्ता है।

प्रकार भेदः—जरायु बहुत प्रकार से टल जा सक्ता है, यथा—

<u>प्रोलेप्सस (Prolapsus)</u> वा जरायु निर्गमन—इससे जरायु नीचे की ओर उतर जाता है—इसके योनि भी उतर जा सक्ता है।

रिट्रोमाशन (Retroversion)—इस में जरायु-देह पीछे की ओर और उसका ग्रीवा सामने की ओर हो जाता है।

ऐन्टिमार्शन (Antiversion)—इससे जरायुदेह सामने की ओर और उसका ग्रीवा पीछे की ओर चला जाता है।

इनभार्शन (Inversion)—इससे जरायु की दिवाल उलट कर जरायु ही के खोल में आ जाती है।

लैटारोमार्शन (Latroversion)—इस से जरायुग्रीवा दहिना या वायां तरफ झुक जाता है, इत्यादि—

कारण:—जरायु चन्द रगों के जरिए अपने मोकाम में अटका रहता है। किसी कारण से जरायु ज्यादा भारी हो तो अपने स्थान से टल जा सक्ता है। जरायु-प्रदेश का साधारण दुर्वलता होने से भी यह रोग हो सक्ता है। कस कर कपडा पहनना, कुदना, कुंथना, प्रसव के बाद ही चलना फिरना, जरायु पर ज्यादा चाप पड़ना, गर्भावस्था, जरायु के रगों की कमजोरी इत्यादि भी इस रोग का कारण है।

लक्षणादि:—जरायु टल जाने से पेट में बोझ, पेडू से योनिद्वार हो कर कोई चीज जोर से ठेल कर वाहर निकल जायगी ऐसा मालुम होना, पीठ में अकड़ाव, कमर में दर्द चलने फिरने से दर्द का ज्यादा होना, लेटने से तकलीफ की कमी श्वेतप्रदर-स्राव, वार २ पेशाव की इच्छा वा पेशाव करने में तकलीफ, पेशाव रुक जाना, पैखाना के वेग होना इत्यादि लक्षण प्रकाश पाता है।

पुरी ग्न्या.

ज़रायु अचानक टल जाने से सख्त दर्द, मूर्च्छा व रक्तस्रावादि लक्षण दिखाई देता है।

भाविफल :—स्वामी सहवास में अक्षमता, बांझपन जरायु में नाना प्रकार के ज़खम, गर्भसंचार होने से भी गर्भ पातक डर होता है।

आनुसंगिक उपाय व परिचर्य्या—जरायु अपनी जगह से हट जाने से यथासम्भव शीघ्र उसको स्वस्थान में स्थापन करने की चेष्टा करनी चाहिये। जरायु नीचे की ओर उतर जाने से उस को धीरे २ ऊपर चढ़ा देना चाहिए और रोगिणीको स्थिर भावसे लेटा रखना चाहिए। ज़रायु सामने की ओर टल जाने से जरायु में "साउन्ड" देकर जरायु को स्वभाविक जगह में स्थापन और रोगिणी को चित कर लेटा रखना चाहिए। जरायु सम्पूर्ण बाहर निकल आने से "टि T." ब्यान्डेज व "पेसारी" इत्यादि द्वारा उपकार मिलता है। रोगिणी को ज्यादा चलने फिरने न देना चाहिए, ऊपर नीचे करना नहीं चाहिए। कोई भारी चीज उठाने न देना चाहिए।

चिकित्सा :—

मलत्याग के समय जरायु बाहर होने से—कैल्क-फस, पोडो, स्टैनम, कब्ज के हेतु होने से—कलिनसोनिया, खड़ा होने से चलने फिरने से या सामान्य झटका लगने से

पीड़ा में—लेप्पा-मेजर, म्युरेक्स, टेरनटुला, प्राचीन उदरामय के साथ जरायु के स्थानच्युति होने से—पेट्रोलियम, जरायु के रगों की शिथिलताहेतु—सिमिसिफिउगा, हेलोनियस, ऋतु स्राव बन्द होने के हेतु—एगारिकस, क्रियोजोट, गर्भ पात के वाद—नक्स, प्रसव के वाद—वेला, नक्स, पोडो, रस, सिकेल, ज्यादा कुंथने से या भारी चीज उठाने से—आर्निका, रस, पोडो, योनि का प्रोलेप्सस के लिए—औरम, फेरम ।

औरम ३०-२००—पुराना रोग, दर्द वा कठिनाई के साथ टनकनासा दर्द, भारी चीज उठाने से रोग, रक्तसंचय के कारण जरायु भारी हो कर उतर जाना, ऋतु के समय पीड़ा की ज्यादती, श्वेतप्रदर, कमर दर्द, आत्महत्या करने की इच्छा ।

एसाफिटिडा ६-३०—जरायु बाहर निकल जायगा ऐसा मालुम होना, मालुम होता है कि योनि के रास्ता से पेट की सब चीज निकल जायगी, उसके साथ जरायु में जख्म, हिष्टिरिया, कामोन्माद ।

ऐलेट्रिस ३-६—रगों की कमजोरी के कारण जरायु का टल जाना, जरायु की कमजोरी के कारण बांझपन, दुर्ब्बलता कब्ज, अजीर्णता ।

आर्निका ६-३०-२००—चोट इत्यादि लगकर रोग होना,

दो ऋतुस्राव के मध्यवर्ती समय मे खून गिरना, रोगिणी सीधी हो कर चल नहीं सक्ती है, संगम के बाद रक्तस्राव।

बेलेडोना ६-३०—प्रसवकाल मे नई बिमारी, सिरपीड़ा, मालुम होती है कि पेडु की तमाम चीज ढेला बांध कर नीचे की ओर धसक रही है।

लैकेसिस ३०-२००—कमरमें कस कर कपडा बांध नहीं सक्ती है, शेष उम्रका रोग, कामोन्माद भाव, जरायु के अन्दर दर्द।

लिलियम ६-३०—गर्भस्राव वा प्रसव के बाद पीड़ा, प्रसव की तरह दर्द के साथ स्तन मे दर्द। योनिद्वार को हाथ से दबा रहने से आराम बोध।

नक्स-भोमिका ३०-२००—जोर से काम करने से या कोई चीज उठाते वक्त या गर्भस्राव के बाद रोग, बार २ जरायु प्रदेश में चांप पड़ना और जरायु का टलना, कमर में लटक जाने की तरह दर्द, श्वेतप्रदर, कब्ज।

प्लैटिना ३०-२००—जरायु का उतर जाना, गर्भावस्था मे व लेटने से तकलीफ की ज्यादती और ठन्डी व खुली हवा मे कमी, ऋतु बन्द, ज्यादा पेशाब होना।

पल्सेटिला ६-३०—जरायु की कठिनता के साथ बाहर निकलना, बैठने से योनि मे दर्द जरायु मे शूल दर्द, सर्वांग शीतल दील-धड़कना।

रसटक्स ६-३०-२००—ज्यादा मेहनत से या कोई भारी चीज उठाने से रोग।

सिकेली ६-३०—पेशाव के बाद जरायु का उतरना, पतली दुवली स्त्रियों का रोग, जरायु में जख्म, दुर्गन्धी स्राव, श्वेतप्रदर।

सिपिया ३०-२००—मालूम होता है कि पेड़ु से योनि का रास्ता होकर तमाम चीज निकल जायगी, पैर के ऊपर पांवदेकर दवा रखने से आराम वोध, जरायु-ग्रीवा का कठिनता, जरायु-प्रदाह, सहवास के वाद कभी २ रक्तस्राव, मेदा में खाली २ भाव, लेटने से वा कुछ खाने से आराम वोध।

ष्टैनम, थुजा, म्युरेक्स, जेल्स, नेट्रम, अष्टिलेगो इत्यादि दवायें भी इस रोग मे फायदेमन्द है।

——:❋:——

जरायु का पोलिपस वा गिल्टी।

POLYPUS OF THE WOMB

रमणियों के रोगों में यही सव से ज्यादा तकलीफदार है ३५ साल उम्र के वाद प्राय: जरायु की चौथाई हिस्सा विमारी का कारण इसी विमारी से पैदा होता है। पोलिपस जरायु मे एक या ज्यादा हो सक्ता है और छोटा मार्व्वल का आकार से लेकर छोटा वच्चों का सिर के आकार के तक हो सक्ता है।

प्रकार:—जरायु का पोलिपस तीन प्रकार का देखा जाता है, यथा,—(१) वलगमी (mucous) पोलिपस अर्थात् इसमे वलगम जम जाता है, (२) फाइब्रायेड (Fibroid)

वा रेशादार पोलिपस अर्थात् इसमें रेशा जमकर मांस की तरह हो जाता है, (३) सिष्टिक (Cystic) पोलिपस अर्थात् इसमें लेई की तरह चीज जम जाता है।

कारण इस रोग का संतोषप्रदायक कारण आज तक जाना नहीं गया, लेकिन विज्ञ डाक्टर लोगों के मत हैं कि शरीर-विधान से जिसप्रकार पुष्टि का प्रयोजन है वह उत्तमरूप से न मिलने के कारण से ही यह रोग पैदा होता है।

लक्षण—इस रोग मे जल्द २ कष्टदायक रजःस्राव ही खतरनाक है, स्राव अति सहज से ही होता रहता है और यह दर्द के साथ व दुर्ब्बलकारी होता है। इससे कभी २ जरायु बड़ा हो जाता है, पेडु में बोझ, दर्द व अंकड़ाव बोध होता है। मूत्रस्थली वा मलद्वार में कुंथन, जरायु में शूलदर्द, गर्भ का साधारण लक्षणावली, ज्यादा खून गिरना, ज्यादा व दुर्गन्धी प्रदरस्राव, खून की कमी, दिल धड़कना, भूख की कमी, अजीर्णदोष, ढेकार के साथ मेदा की गड़बड़ी, कब्ज, कमजोरी बेचैनी अकसर देखा जाता है। कभी २ अपने आप ही पोलिपस बाहर निकल आता है।

आनुसंगिक उपाय बलगमी पोलिपस हुआ है मालूम होने ही से देर न करके फरसेप (Forcep) के जरिए उसको पकड़ कर निकाल देना चाहिये और नाइट्रिक-एसिड द्वारा वह जगह जला देना चाहिये।

चिकित्सा :—कैलकेरिया-कार्ब, कैल्केरिया-आयोड,

लाइको, नाइट्रिक-ऐसिड प्लाटिना, पल्स, औरम, कोनायम, मार्कुरियस, मेजिरियम, पेट्रोल, फस, फस-एसिड, साइलि, थुजा, इत्यादि औषधों से फायदा होता है।

—(:०)—

जरायु का कैन्सर।

UTERINE CANCER.

रोग परिचय :—जरायु का विषैला (Malignant) जख्म ही को जरायु का कैन्सर कहते हैं। यह नेहायत खतरेनाक बिमारी है।

विशेष कोई लक्षण से इसकी आरम्भ की सूचना नहीं मालूम पड़ती है। इस बिमारी की हर हालत में जरायु से रक्तस्राव होना मुख्य लक्षण है। कैन्सर की पहली हालत में मेनोरेजिया वा ऋतु की ज्यादती देखी जाती है लेकिन पीछे ऋतु के समय के सिवाय अन्यान्य समय मे भी खून गिरने लगता है आखरी ऋतु वन्द होने की उम्र ही मे यह बिमारी होती है। इसमे जो प्रदरस्राव होता है वह पतला व बदबूदार होता है—इसका रंग सब्जापन पीला वा भूरा रंग वा क्रिमिची रग का होता है। जरायु मे जख्म की तरह दर्द होता है। कभी २ दर्द न भी रहता है।

भाविफल :—इस रोग का आराम होने की आशा बहुत ही कम है। औषध व्यवहार से कष्ट की कमी होती है लेकिन एकदम आराम नही होता है।

चिकित्साः—इस बिमारी की चिकित्सा दर्द को कम व रक्तस्राव को बन्द करने के लिए ही की जाती है।

आर्सेनिक ३०-२००—तेज कतरने की तरह दर्द, बिमारी की जगह में आग सा ज्वाला, तेज व जख्म पैदा करने वाला स्राब, मध्यरात के बाद तकलीफ की ज्यादती। स्राव बदबूदार, निहायत कमजोरी।

आर्सेनिक-आयोड ३०-२००—यह भी एक उमदा दवा है।

औरम ३०-२००—जरायु उतर जाना व कठिनता, जरायु मे कुचलने की तरह दर्द, सर्व्वदा आत्महत्या की इच्छा।

कैल्केरिया-कार्ब ३०-२००—जरायु में ज्वाला के साथ दर्द, सामान्य ठण्डी हवा से भी तकलीफ होती है। पैर के तलवा ठण्डा, सिंढ़ी से ऊपर चढ़ने से सिर चक्कराना ऋतु बहुत परिमाण से और जल्द २ होता है और देरतक ठहरता है।

चायना—३०-२००—ज्यादा देरतक स्थाई व बहुत परिमाण से रजःस्राव होने के हेतु रोग हो तो दिया जाता है। इस के साथ प्रायः निस्तेजकारी प्रदर-स्राव व रजोकष्ट रहता है, पेट फूलना हवा छुटने से भी कम नहीं होता है।

कोनायम ३०-२००—ज्वाला के साथ सुई भोकने के ऐसा दर्द, मतली; कै, स्तन ढीला—किन्तु ऋतुकाल में

स्तन फूल जाता है व दर्दनाक हो जाता है । रुक २ कर पेशाव होता है ।

क्रियोजोट ३०-२००—योनि मे सुई भोकने की तरह दर्द, योनि-कपाट का फूलना व जलन, ज्यादा परिमाण से काला व ढेला २ रक्त स्राव, स्राव दुर्गन्धी व ज्वाला के साथ, ऋतुकाल में शीत बोध, रात में दर्द की ज्यादती ।

हाइड्राष्टिस ३०-२००—स्राव पीला व गाढ़ा और रस्सी की शक्ल का, इस दवा का मदर टिंचर का १० बुन्द १ औंस पानी मे मिला कर उस से जख्म धो देने से फायदा होता है ।

हैमामेलिस ३०-२००—ज्यादा परिमाण से काला व ढेला २ रक्तस्राव हो तो दिया जाता है ।

आयोडियम ३०-२००—ज्यादा दिन तक स्थाई रज-स्राव—प्रतिबार मलत्याग के बाद कमर व नीचला पीठ में दर्द, पेडु मे कतरने की तरहदर्द, स्तन सूखकर लटक जाता है ।

लैकेसिस ३०-२००—आखरी रजोवन्द होने की उम्र मे जल्द २ रक्तस्राव होना - ज्यादा स्राव होने से दर्द इत्यादि की कमी ।

लाइकोपोडियम ३०-२००—झुकने से योनि मे दर्द, योनि से हवा छुटता है, पेशाव मे लाल रेत की तरह गाद ।

नाइट्रिक—एसिड ३०-२००—गरमी रोग से पैदा

हुआ रोग में फायदेमन्द है। पेशाब निहायत बदबूदार, पेट में सख्त दर्द।

फसफोरस ६-३० सहज ही से जल्द २ रक्तस्राव होता है। पेट में कतरने की तरह दर्द, ज्यादा नींद, खास कर आहार के बाद, पैखाना कुत्ता का मल की तरह मिहिन, सूखा व सख्त लेंड़ो।

सिपिया ३०-२००—जरायु से नाभी तक तेज कतरने की तरह दर्द, योनि से बदबूदार व छाले पैदा करने वाला स्राव, पेडु में ऐसा दर्द मालुम होता है कि योनिद्वार से सब निकल जायगा। रोगिणी पांव से या हाथ से योनिद्वार को दवा रखने में मजबूर होता है। हाथ पांव बरफ की तरह ठण्ढा, मेदा मे सूनभाव व कमजोरी।

साइलिशिया ३०-२००—रक्तस्राव, भूरा रङ्ग के दुर्गन्धी, पीव की तरह व खुजलाहट के साथ प्रदरस्राव, कब्ज, हमेशा ठण्ढ मालुम करना।

सलफर ३०-२००—हाथ पैर व चांदी में ज्वाला, योनि मे ज्वाला, सुबह ११ बजे सख्त भूख लगना व कमजोरी. बदबूदार व खुजलाहट व जखम पैदा करने वाला प्रदरस्राव, रात मे अच्छी नीद न होना।

थुजा ३०-२०० फुलकोबी की शक्ल का कैन्सर में उपकारी है। सहज ही से उस से रक्तस्राव होता है, स्राव बदबूदार। भल्मा व मलद्वार मे मस्से, कन्डाइलोमेटो। सिकलि, अष्टिलैगो, टैरेन्टुला इत्यादि भी फायदेमन्द है।

—:oo:—

गर्भाधान (PREGNANCY.)

ऋतु जारी होने के रोज से १६ दिन तक स्त्रियों का गर्भाधान का समय है। ऋतुवन्द होने के वाद से यह १६ रोज के अन्दर पुरुष के साथ सहवास करने से पुष्ट शुक्रकीट व ओमम के सहयोग से स्त्री गर्भवती होती है। युग्म दिवस में सहवास करना पुत्रोत्पादन के लिये उपयोगी है। शुक्रकीट व ओमम के सम्मिलन के वाद २७५ दिन से २८० दिन तक गर्भ ठहरने का समय है।

—:००:—

गर्भ लक्षण।

SIGNS OF PREGNANCY.

गर्भ-लक्षण हरएक स्त्री में एक सा नहीं होता है, इसलिए गर्भ के विशेष चन्द लक्षण नीचे लिखा जाता है।—इनमें भ्रूण का दिल की हरकत, भ्रूण की हरकत, फ्लकचुएशन व वैलटमेण्ट ये चार गर्भ का निश्चित लक्षण है।

(१) रजोलोप— मासिक रज स्राव वन्द होना ही गर्भ-संचार का प्रथम लक्षण है—जिस स्त्री को हमेशा मासिक रज स्राव नियमित भाव से होता है उनका मासिक २ या ३ महीना वरावर वन्द रहने ही से ख्याल करना चाहिये कि गर्भ-संचार हुआ है। लेकिन किसी २ स्त्री में देखा जाता है कि गर्भसंचार होने से भी कई महीने तक थोड़ा २ ऋतुस्राव होता

है। फिर नाना कारण से गर्भ संचार न होने पर भी ऋतु बन्द रह सक्ता है—इस लिए यह निश्चित लक्षण नहीं है।

(२) प्रभात वमन (Morning Sickness)-साधारणतः गर्भसंचार के २ से ६ हफ्ता के अन्दर रमणियों मतली व कै से तकलीफ पाती है—बाज स्त्रीको यह तकलीफ बिलकुल ही नहीं होती है।

(३) स्तन का आकार की वृद्धि—साधारणतः गर्भ संचार के ६ से ८ हफ्ते के वाद स्तन बड़ा होता है और उस में पूर्णता व टाटोनी मालूम होती है, उस में गांठ गांठ सा मालुम पड़ता है—कुछ दिन के वाद उस मे से दूध की तरह पतला रस निकलता रहता है।

(४) घुन्डी का काला होना—साधारणतः गर्भसंचार के वाद से घुन्डी की चारो ओर की वृत्ताकार जगह काली होती जाती है। गर्भकाल जितना अधिक होता है वह कालापन भी उतनाही बढ़ता जाता है। प्रथम गर्भ के समय ही यह ज्यादा मालूम पड़ता है--प्रथम गर्भ के वाद इस लक्षण की विशेषता नहीं रहती है।

(५) स्तन मे दूध-संचार-- प्रथम गर्भ मे यह लक्षण विश्वासयोग्य है परवर्ती गर्भ मे यह लक्षण विश्वासयोग्य नही है।

(६) उदर की वृद्धि—जरायु की क्रमिक वृद्धि के हेतु उदर में जो उच्चता होती है वह देखने से गर्भसंचार हुआ है

अनुमान किया जा सक्ता है। प्रायः द्वितीय महिने में उदर कुछ बड़ा और तृतीय महिने के शेष भाग मे अच्छी तरह मालूम पड़ता है। चौथा महिने से एक गोल सी सख्त चीजे क्रमशः बड़ा हो कर पेडु से नाभी के ओर चढ़ता रहता है। छट्ठे महिने मे यह नाभी तक पहुंच जाता है और नौवां महिने में एकदम पेट की सर्व्वोच्चस्थान अधिकार करता है और इस के शेष भाग में फिर वह कुछ उतर जाता है। गर्भ संचार की उदर वृद्धि नियमित, दृढ़, स्थितिस्थापक व हृद्वन्द होती हैं। नाना प्रकार बिमारी के कारण से भी उदर की वृद्धि हो सक्ता है लेकिन यह गर्भसंचार की वृद्धि की तरह नियमित नहीं होता हैं।

(७) भ्रूण का संचालन--अङ्गरेजी में इस को भ्रूण का कुइकनिंग (Quickning or movement of the Fœtus) कहते है। गर्भ का चौथा वा पांचवें महिने में पेडु मे भ्रूण की गति आरम्भ होती हैं--यह भ्रूणसंचालन का प्रथम दिवस से साढ़े चार महिने में प्रसव होता है।

(८) फ्लकचुएशन (Fluctuation)—द्वितीय वा तृतीय महीने में इस परीक्षा के जरिए गर्भ हुआ है या नहीं निश्चय किया जाता है। बायां हाथ से जरायु को दृढ़ भाव से पकड़ कर दहिना हाथ की दो अंगुली द्वारा परीक्षा करने से जरायुग्रीवा बन्द है या नहीं और पेट पर आघात करने से पेट मे तरल पदार्थ का हलचल Fluctuation मालुम होता है।

(९) बैलटमेन्ट (Ballotment)—गर्भ संचार के चंद हफ्ता के बाद ही गर्भवती रमणी को ठेहूंना व हाथ के भार बैठाकर योनि मे अंगुली घुसाकर जरायु के मुंह में धक्का देने से मालूम होता है कि कोई चीज ऊपर की ओर चढ़ गई और उसके बाद ही वह चीज फिर नीचे गिर कर अंगुली में लगती है। यह बैलटमेन्ट ही एक दम निश्चित लक्षण है।

(१०) भ्रूण का दिल की हरकत—गर्भ के चौथा या पांचवा महिने मे ष्टेथोष्कोप के जरिए गर्भ का दोनों ओर में परीक्षा करने से भ्रूण का दिल की आवाज जेबघड़ी की आवाज की तरह सुनाई पड़ती है। यह ज्यादे तर गर्भ के बायां ओर ही मे सुनाई पड़ती है। यह भी एक निश्चित लक्षण है।

(११) पेशाब मे किष्ठिन—गर्भवती रमणी का पेशाब चंद रोज किसी पात्र में रखने से देखा जाता है कि उसका ऊपरी भाग मे चर्बी वा छेना के ऐसा सफेद रंग के लेप जमा है।

(१२) इच्छा—गर्भसंचार के साथ साधारणतः रमणियों को आहार मे अरूचि, स्वाद का परिवर्त्तन व कोयला, खड़ी मिट्टी, चूणा, सोंधा मिट्टी वगैरह अखाद्य वस्तु खाने की इच्छा होती है।

(१३) गर्भ के अन्यान्य लक्षण—योनिदेश की झिल्ली की रंग धुमैला हो जाना, लारश्राव, चेहरा फीका होना, ज्यादा पेशाब होना, कब्ज इत्यादि।

कोऊहल-विरइया [२८०–

गर्भावस्था में रक्तस्राव।

गर्भावस्था में जरायु से रक्तश्राव का मूल कारण जरायु-देह से प्लासेन्टा वा पुरैन का आंशिक अलग होना है। यह दो किस्म का होता है, यथा—(१) आघातादि लगकर जरायु देह से पुरैन का आंशिक भाव से अलग होना (Accidental Seperation of the Placenta,) (२) अनिवार्य्य पृथ-की भवनावस्था (Unavoidable Seperation of the Placenta or Placenta Prévia.)

(१) आघातादि जनित (Accidental) रक्तस्राव—गिर जाना, चोट लगना, भारी चीज उठाना इत्यादि से होता है और आसानी से आराम भी हो सक्ता है। चन्द खुराक आर्निका सेवन करने ही से रक्तश्राव बन्द हो जाता है। आवश्यक होने से अन्यान्य दवायें भी व्यवहार हो सक्ती है।

(२) अनिवार्य्य रक्तस्राव वा प्लासेन्टा प्रिभिया (Placenta Previa)—गर्भ ठहरने के बाद अगर ओभ्युल (Ovule) नीचे उतर कर जरायु के निम्नांश अथवा जरायु का ग्रीवाप्रदेश मे संयुक्त हो कर जरायु-मुख के पास पुरैन पैदा करे और वह पुरैन पूर्ण आकार के होने के समय जब जरायु-ग्रीवा को आंशिक वा सम्पूर्ण भाव से झांप दे तब प्लासेन्टा प्रिभिया होता है।

ऐसी हालत मे भ्रूण जितना बड़ा होता है उतना ही भारी हो कर नीचे जरायु-मुख के ओर उतर कर उस जगह में

स्थित पुरन के ऊपर चांप देता है, आन्दाज छट्ठे महीने में भ्रूण के चांप से पुरैन जरायु से अलग हो जाता है। यह आंशिक भी हो सक्ता है पूर्ण भाव से भी हो सक्ता है।

लक्षण :— यह रक्तश्राव प्रायः छट्ठे महिने के पहले नहीं होता है—इस रक्तश्राव के कोई कारण ही नहीं मालूम होता है। पहले रक्तश्राव ज्यादा नहीं होता है लेकिन क्रमशः ज्यादा होता जाता है। गर्भ जितना पूरा होता जाता है रक्तश्राव भी उतना ही वढ़ता जाता है। अचानक विमारी का आक्रमण, श्राव की ज्यादती और विना कारण से रक्त श्राव होना देखने से ख्याल करना चाहिए कि प्लासेन्टा प्रिभिया हुआ है।

चिकित्सा:—ऐसा रक्तस्राव अगर आठवें महिने के पहले देखा जाय और प्रसव के दर्द की उत्पत्ति न कर के अपने आप ही वन्द हों जाय और प्रसूति को कोई तकलीफ न हो तब रोगिणी को जहां तक सम्भव विश्राम में रख कर लक्षण के मोताविक उपयुक्त औषध व्यवहार करने से अगर ज्यादा रक्तश्राव होता रहे और प्रसूति कमजोरी के कारण गर्भ पूरा होने तक न ठहर सकेगी ऐसा मालुम हो तो जिस से सहज से प्रसव हो वैसा उपाय करना चाहिये। रक्तश्राव कम रहे तो जिस से गर्भ ठहरे वैसाही उपाय करना चाहिये।

मन्तव्यः—औषधादि के लिए मेनोरेजिया वो मेट्रोरेजिया की चिकित्सा देखिए ।

गर्भस्राव, गर्भपात अकाल प्रसव ।

ABORTION, MISCARRIAGE AND PREMATURE LABOUR.

रोग परिचय :—साधारणतः गर्भ की पहली हालत में (३/४ महिने में) गर्भ गिर जाने को गर्भश्राव (Abortion) कहते हैं, चौथा महिने के वाद व पांचवा व छट्ठा महिने के अन्दर गर्भ गिर जाय तो उसको गर्भपात (Miscarriage) कहते हैं और सातवा महिने मे गर्भ गिरने को अकाल प्रसव (Premature Labor) कहते हैं—इस अवस्था मे कभी कभी बच्चा वच जाता है लेकिन गर्भश्राव वा गर्भपात होने से बच्चा नहीं बचता है। किसी के गर्भ एकवार नष्ट होने से करीव २ परवर्त्ती सवही गर्भ नष्ट हो जाता है।

कारण :—भय, आघात, गिर जाना, गरम वा तेज चीज खानापीना, गर्भावस्था मे ज्यादा सहवास करना, गम, दुःख, रात जागना, ज्यादा मेहनत करना, गरम दवा खाना, सख्त विमारी, श्वेत प्रदर, अर्शरोग हिष्टिरिया, गर्मी रोग, गर्भश्राव की आदत, वगैरह कारणों से गर्भस्राव होता है।

लक्षण :—इसकी पहली हालत में दर्द व रक्तस्राव होता है, गर्भ जितना ज्यादा दिन का होता है, दर्द व रक्तस्राव भी उतनाही ज्यादा होता है ।

गर्भस्राव होने के कवल मे शीत बोध होना, कमर मे दर्द पेड़ु मे भार बोध व प्रसव की तरह दर्द, कमजोरी इत्यादि मालूम होता है । स्तन कुछ बड़ा व नर्म होता है और उस से पानी की तरह स्राव होता है । योनि से थोड़ा २ पीव मिला हुआ खून, पीछे पानी की तरह खून निकलता है । उसके बाद गर्भ नीचे के ओर घसक जाता है, जरायु मुख (OS) धीरे २ खुलता है और आखिर से पानी की तरह, चीज के साथ गर्भस्राव हो जाता है ।

आनुसांगिक उपाय :—गर्भश्राव का खौफ होने से रोगिणी को स्थिरभाव से लेटा रखना चाहिए। खाना पीना ठण्ढा कर के खाने को देना चाहिए और किसी किस्म का गर्म वा उत्तेजक चीज न देना चाहिए। किसी प्रकार का मानसिक उत्तेजना न हो ऐसा उपाय करना चाहिए। गर्भश्राव के जो सब कारण बताये गये है किसी तौर से वैसा कारण न हो ऐसा करना चाहिए।

गर्भस्राव निवारण के उपाय —जिस रमणी को गर्भश्राव का खौफ रहता है उसको स्वास्थ्य-रक्षा के नियमादि पूरी तौर से पालन करना चाहिए और जिन कारणो से र्भश्राव होता है उन कारणो को सब से पहले दूर करना

चाहिए। गर्भावस्था में रहने के नियमादि भी पालन करना चाहिए और पहनने के कपड़ादि, वासगृह, शारीरिक परिश्रम आहार-विहार इत्यादि विषय मे सावधान होना चाहिए। चाय, कोफी, शराब, गरम दवा इत्यादि त्याग करना चाहिए। गाड़ी पर सवार होना वा ज्यादा चलाफिरा न करना चाहिए। गर्भस्राव के आदत पड़ जाने से गर्भश्राव के बाद ही रमणी को छः महीना या एक वर्ष के लिए स्वामी से अलग रखना चाहिए और इस आदत को दूर करने के लिए होमियोपैथिक दवा लक्षण के मोताबिक खिलाना चाहिए।

चिकित्सा :—

प्रथम महीने में गर्भश्राव—एपिस, भाइबर्नम। द्वितीय महीने में—एपिस, केलि—कार्ब। तृतीय महीने मे—क्रोकस सैबाइना, सिकेलि, थुजा।

पांचवा से सातवा महीने मे—सिपिया। गर्भस्राव के आदत के लिए—सैबाइना, सिपिया, कलोफाइलस, सिमिसिफुगा, पलसेटिला, सिकेलि, एलेट्रिस, कैलकेरिया इत्यादि।

प्रबल ऋतुस्राव—आर्निका-सैबाइना, सिनामोनम।

लाल रङ्ग के रक्तस्राव, आर्सेनिक, इपिकाक।

काला रक्तश्राव—हैमामेलिस, कैमो, सिकेलि, सैबाइना।

भारी चीज उठाने से रक्तस्राव—रसटक्स।

चोट लगने से रक्तस्राव—आर्निका।

गर्भस्राव प्रवणता निवारक औषधावली ।

कैलकेरिया ३०-२००:—मोटी, ढीली, बलगमी स्त्रियों को अकाल में ज्यादा रक्तस्राव, श्वेतप्रदर, स्तन मे दर्द, कमर मे दर्द, सिर चक्कराना ।

सैबाइना ६-३०—मोटी स्त्रियों को ज्यादा परिमाण से ज्यादा दिन तक रक्तश्राव होता है, तीसरे महिने मे गर्भस्राव होता है । इस हालत में जिस समय मे मासिक होना चाहिए उसके एक हफ्ता पहले से ४८ घन्टे अन्तर २ दवा देना चाहिए । जबतक तीन महीना बीत न जाय तब तक यही नियम में दवा देनी चाहिये ।

सिपिया ३०-२००—दुर्बल कोमल व पतली स्त्री लोग जिनको श्वेतप्रदर के साथ योनि मे दर्द खुजलाहट, नियमित समय के पहले ऋतुश्राव, सामान्य परिश्रम से पसीना, इत्यादि लक्षण हो उन के लिए उपकारी है ।

पल्सेटिला ६-३०-२००—कम रजःश्राव होनेवाली स्त्री, नर्म स्वभाव, मेदा की खराबी, शीतबोध ।

फेरम ३०-२०० :—पतली दुबली, कम खून वाली स्त्रियो को ज्यादा व पतला रक्तश्राव होने के लक्षण मे उपकारी ।

नक्स-मस्केटा वा इग्नेशिया ६-३०-२००—हिष्टि-रिया वाली स्त्रियों के लिए उपयोगी है ।

गर्भस्राव के लक्षण में औषधावली ।

आर्निका ६-३० :—गिर जाना वा चोट लगने के कारण रोग मे उपकारी है ।

रसटक्स ६-३० —भारी चीज उठाने के वजह से गर्भ-स्राव के खौफ ।

बेलाडोना ६-३०:—तमाम पेट मे चांप व खींचाव की तरह दर्द, कमर में तेज दर्द, पेडु से नीचे के ओर तमाम चीज का घसकने की तरह दर्द ।

कैमोमिला १२ —पीठ से पेडु तक कतरने की तरह तेज दर्द वार २ जम्हाई लेना, जाड़ा व कंपना, वेचैनी, लगातार काला वदवूदार रक्तश्राव ।

हायोसायमस ६-३० —हाथ पैर मे ऐंठन, वेहोशी, वरबराना ।

इपिकाक ६-३० —प्रवल लाल रक्तस्राव, लगातार मतली, नाभी के पास कतरने की तरह शूल ।

नक्सभ ६-३०-२००—वार वार पैखाना के निष्फल वेग, पेट मे शूल ।

पलसेटिला ६-३०-२०० :—जल्द २ काला रंग के रक्त-स्राव, शीत वोध ।

सिकेलि ६-३० —पतली-दुवली, खगना स्त्रीलोगको ज्यादा व काला पतला रक्तस्राव, ऐंठन, नाड़ी पतली ।

सिनामोनम ६-३० —रसटक्स से फायदा न होने से आभिघातिक प्रकार के रक्तस्राव में दिया जाता है।

सैवाइना ६-३०—गर्भ की पहली हालत मे खास कर तीसरे महीने मे गर्भश्राव के लिये उपयोगी है। लगातार काला रक्तस्राव कमर से जननेन्द्री तक खीचने की तरह दर्द। लगातार मलत्याग के वेग, मतली इत्यादि।

—:॰:(:):—

झूठा प्रसव-दर्द।

(FALSE LABOR PAIN)

गर्भ की आखरी हालत मे वा प्रसव के चन्द रोज या चन्द हफ्ते पहले बाज गर्भिणी को झूठा प्रसव-दर्द उपस्थित होता है। इस से गर्भिणी ख्याल करती है, जल्द ही प्रसव दर्द उपस्थित होगा। झूठा दर्द कमर के पीछे से शुरु होकर तलपेट मे फैल कर जांघ मे आकर कम हो जाता है यह सर्व्वदा नही रहता है। और प्रसव-दर्द की तरह तेज भी नहीं होता है। प्रकृत प्रसवदर्द नियमितभाव से आता व जाता रहता है और क्रमश ज्यादा होता जाता है। झूठा दर्द में किसी प्रकार स्राव नही होता है।

चिकित्सा—

बेलाडोना ६-३०—दर्द अचानक आकर अचानक ही चला जाता है, शब्द व रोशनी बरदाश्त नहीं होता है।

कलोफाइलम ३-६—यह एक उत्तम दवा है, प्रति रात मे उदर के ऊपर वाले हिस्से मे और क्रमशः पेट व हाथ पैर मे दर्द फैल जाता है।

कैमोमिला १२—पेट मे असहनीय शूलदर्द, उस के बाद ज्यादा पेशाब होना, बेचैनी, दर्द के मारे चिल्लाना।

कफिया ६-३०—पेट में असहनीय शूलदर्द, नीद न होना, दर्द के मारे पागल की तरह हो जाना।

सिमिसिफ्युगा ३०—उदर के पट्ठों में रह २ कर दर्द, बायां स्तन मे दर्द, मानसिक विकार—इस दवे से सहज से प्रसव होता है।

जेलसिमियम ३०—प्रसव की तरह दर्द ऊपर व नीचे जाता व आता रहता है। शारीरिक व मानसिक दुर्बलता।

नक्स-भोमिका ६-३०—प्रतिवार दर्द के साथ पैखानो व पेशाब के वेग। बार २ पैखाना के वेग, लेकिन पैखाना नही होता है। मिजाज चिरचिराहा।

पल्सेटिला ६-३०—रोगिणी ज्यादा देर तक लेट या बैठ कर नहीं रह सकती है, दर्द की कमी के लिए चल फिर करती रहती है। खुली हवा में आराम बोध।

सिपिया ६-३०—पीठ व पेट में बारबार प्रसव की तरह दर्द, पैर के ऊपर पैर को दबा कर बैठने से आराम बोध, पेट में खाली भाव मालूम होना।

भाइबर्णम ६-३०—जरायु में काटने की तरह दर्द के साथ पैर और पेट के पट्टों में दर्द, जरायु से रक्तस्राव।

भिरेट्रम-भिरिडि ३-३०—हाथ पैर मे ऐंठन।

गर्भावस्था की संक्षिप्त चिकित्सा।

गर्भावस्था में सिर चकराना—बेल, मार्क-माइभस।

" " आधकपाड़ी—एकोन, चायना, कलोफा, इग्ने, स्पाइजि।

गर्भावस्था में बवासिर—एस्कु, एलो, कोलिन्सो, नक्स, सल्फ।

गर्भावस्था में प्रदरस्राव—सिकेलि, हेलोनी, हाइड्राष्टिस, सिपिया।

गर्भावस्था में ऐंठन—बेल, जेल्स, ओपि।

" " उन्माद रोग—सिमिसिफ्युगा।

" " मूर्च्छा—एकोन, कार्वो-भेज, कैमोमिला, मस्कस, नक्स।

गर्भावस्था में अरुचि—आस, एन्टिम क्रुड, कैल्क, नक्स, पल्स, सल्फ।

योनिद्वार में खुजली—सिपिया।

गर्भावस्था मे मुंह में पानी आना—कैल्क, कैप्सि, कष्टिकम, कार्वो-एनि, नक्स, पल्स, सिपिया।

सोरी-घर व प्रसव के नियम।

सोरी-घर—प्रसव के कुछ दिन पहले ही सोरी-घर ठीक कर लेना चाहिये। सोरी-घर खूब अच्छी साफ सुथरी व सूखी जगह पर होना चाहिये। सोरी-घर में अच्छी हवा व रोशनी आ सके ऐसा होना चाहिये। सोरी-घर की खराबी होने से हमारे देश के बहुत शिशुओं की अकाल मृत्यु होती है। प्रसव के बाद घर की गरमी कुछ ज्यादा होना चाहिये किन्तु ख्याल रखना चाहिये कि घर में धुआं न होने पावे। घर में रखने के लिये सर्सों या अण्डी का तेल की बत्ती ही अच्छी है। केरासिन की बत्ती खराब है। शिशु वो प्रसूति का मलमूत्र, रक्त-क्लेदयुक्त कपड़ा बाहर फेंक देना चाहिये। प्रसूति का कपड़ा व बिछावन वेश साफ होना चाहिये। हमारे देश मे अकसर प्रसूति का घर व कपड़ा, बिछावन वगैरह निहायत गन्दा होता है, इससे बहुत खराबी होती है।

प्रसव-कराने का नियम—प्रकृत प्रसव दर्द का सूचना मालुम होने ही से प्रसुति को सोरी-घर में ले जाना चाहिये और उसके पास किसी औरत—जो प्रसव की हालत से वाकीफ हो उसको रखना चाहिये—निपुण दाई ही अच्छी है। गर्भिणी को हमेशा साहस देना चाहिये और कुंथने के लिये उत्साह देना चाहिये। इस समय में अकसरहां पैखाना का वेग होता है—सावधान। प्रसूति को इस समय सोरी-घर

छोड़ कर बाहर न जाने देना। प्रसव के समय प्रसूति को ठेहुना व केंहुनी पर बैठा कर एक औरत को उस का सिर पकड़ कर रखना चाहिए और दूसरा को पीछे रह कर बच्चा को हाथ मे लेना चाहिए। गर्भिणी का बिछावन पर इस समय अईल क्लाथ वा चादर बिछा देने से क्लेदादि तमाम जगह फैल नहीं सकता है। प्रसव के समय शिशु के गला मे नाड़ी वगैरह फंसा हुआ रहे तो फौरन छोड़ा देना चाहिए। भुमिष्ट होने के बाद शिशु का नाक व मुंह से क्लेदादि साफ कर देना चाहिए—नहीं तो शिशु का स्वांस बन्द हो जा सक्ता है।

चिकित्सादि :—प्रसव के चन्द हफ्ते पहले से रोज २।१ खुराक सिमिसिफ्युगा ६ सेवन कराने से सहज से प्रसव होता है। २०० शक्ति का पलसेटिला सेवन कराने से अस्वभाविक अवस्था से रहने वाला भ्रूण स्वभाविक अवस्था मे आता है। बात की तरह दर्द रहे तो कलोफाइलम ६ देना चाहिए।

कब्ज रहने से गरम पानी का पिचकारी देने से साफ दस्त हो कर भ्रूण का सिर निकलने का रास्ता साफ होता है। मूत्रस्थली मे पेशाब जमने नहीं देना चाहिए। प्रसूति को गर्म दूध मे गर्म घी मिला कर पीलाना फायदेमन्द है। जरायु-मुंह पर गर्म घी फहा में लेकर सेक करने से जरायु-मुंह जल्द खुलता है।

कष्टदायक प्रसव।

(DIFFICULT LABOR)

प्रसव-समय मे ज्यादा तकलीफ होने से उसको कष्टदायक प्रसव कहते हैं। प्रसव-दर्द ज्यादा देर तक स्थाई होनेसे या दर्द कम हो जाने से या ऐंठनादि होने से भी उसको कष्टदायक प्रसव कहते हैं।

कारण—जरायु का स्नायुमण्डली और पट्ठों के ताकत की कमी के वजह से दर्द तेज व नियमित नहीं होता है। प्रसूति किसी वजह से कमजोर रहने से भी प्रसव दर्द जोर से नहीं होता है। इसके सिवाय भ्रूण की विकृतावस्था व जरायु मुख (OS) वा जरायु-शरीर की कठिनता के वजह से भी प्रसव में बाधा होता है।
गर्भावस्था में अमिताचार, मेहनत के अभाव, कस कर कपड़ा पहनना वगैरह से भी प्रसव के समय कष्ट होता है।

आनुसंगिक उपाय—जरायु की कमजोरी के कारण संकोचन शक्ति की कमी हो कर प्रसव में देर हो तो गर्भ के ऊपर धीरे २ चांप देने से सहज से प्रसव हो सक्ता है। जरायु-मुंह कठिन होने से थोड़ा देर तक जरायु-मुंह में सुसुम पानी का फिचकारी देने से जरायुमुंह कोमल होता है।

चिकित्सा—

बेलाडोना ६-३०—दर्द अचानक आकर अचानक ही

दूर हो जाता है। जरायु मुख कठिन सूखा व गर्म उस पर स्पर्श बर्दाश्त नहीं होता है, आंख व चेहरा लाल।

आर्निका ६-३०—बहुत देर तक दर्द रहने के हेतु जरायु करीब सून हो जाता है, और दर्द बन्द हो जाता है, चेहरा लाल और गर्म, तमाम बदन शीतल।

कफिया ६-३०—असहनीय लेकिन निष्फल दर्द, दर्द के मारे रोना, जननेन्द्रिय मे दर्द, नींद न होना।

कैमोमिला १२-३०—तेज दर्द के कारण प्रसूति पागल की तरह होता है। स्वभाव चिरचिराहा, जरायु-मुंह कठिन, जरायु के मध्य भाग में संकोचन मालूम होना।

नक्स-भोमिका ६-३०-२००—दर्द होता है लेकिन वह ठीक दर्द नहीं, बार २ निष्फल पैखाना का वेग, प्रतिवार दर्द में मूर्च्छा।

पलसेटिला ३०-२००—कमजोरी, प्रसव-दर्द की हालत मे सर्व्वप्रथम इसी दवा को व्यवहार करना चाहिये। दर्द के साथ शीत-बोध, स्वांस-कष्ट, खुली हवा में रहने का इच्छा दर्द धीरे २ बढ़ता है।

भाईबर्नम ६-३०—सख्त दर्द से पेडु मे ऐंठन, दर्द का वेग पांव से शुरु होता है।

सिकेलि ६-६०—दुर्बल व रुग्ना रमणी के लिये उपयोगी है। दुर्बल व बेचैन करने वाला दर्द, नाड़ी पतली दुबली।

जेलसिमियम १-३-१२—झुठा प्रसव-दर्द, मालुम होता है कि जरायु के सब पट्ठों कमजोर हो गये, वेग देने की शक्ति नहीं है, जरायु-मुंह गोल मोटा और कठिन मालुम पड़ता है, प्रसव की पृथम अवस्था मे शीत और कम्प, जरायु सून हो जाने के हेतु पूसव-दर्द ठीक तरह से नहीं होता है। दर्द कम हो गया, जरायु का मुंह अच्छी तरह से फैल गया हो फिर भी वच्चा नहीं निकलता हो। रोगिणी को वेहोशी की तरह नीद होती है।

कलोफाइलम् १-३-६—यह औषध पूसव के निमित्त अति उत्तम है, बहुत देर तक दर्द होने के उपरान्त दर्द बिलकुल कम हो जाता है।

सिमिसिफिउगा ३-६-३०—दर्द प्रकृत पूसव के चन्द रोज पहले झुठा प्रसव-दर्द, प्रसव की पृथमावस्था में कम्प, जरायु का मुंह का ऐंठन के साथ सख्त होना, पूसव दर्द विलकुल कम हो जाता है।

हासिपिअस ३०-२०० —दर्द बहुत देर से हो रहा है फिर भी प्रसव नहीं होता है, पूसव दर्द बहुत कम हो जाता है।

जेबोरेंडि ३-१२ :—योनिपथ सूखा, पूसव के पथ गर्म और सूखा।

थनैल वा स्तन-प्रदाह ।

(MASTITIS)

रोग परिचय—दूध पीलाने वाली प्रसूति के स्तन में नाना प्रकार के कारणों से प्रदाह होता है उसी को थनैल कहते है ।

कारणः— ठंढ लगना, चोट लगना, वगैरह वजहों से स्तन के दुध की नलियों मे नियमित दूध संचालन का व्याघात होने से दूध नहीं निकल सकता है, अतएव प्रसूति के स्तन मे ज्यादा दूध जम कर प्रदाह पैदा करता है ।

लक्षण—यह विमारी कम या वेश कम्प के साथ ज्वर हो कर प्रकाश पाता है। तमाम स्तन व उसका कुछ हिस्सा ईंट की तरह सख्त हो जाता है, क्रमश दर्द इतना वढ़ता है कि प्रसूति का आहार निद्रा वन्द हो जाता है। अरुचि, सिर-दर्द वगैरह के शिकायत अकसर इसके साथ रहती है। अकसर विमारी की जगह पक जाता है।

अनुसंगिक उपाय—प्रसव के बाद स्तन से जितना ज्यादा दूध निकाला जावे उतना ही अच्छा है। प्रसूति को जिस से ठढ न लगे ऐसा करना चाहिये। थनैल हो जाने से तिसी का पुलटिस देना अच्छा है। "ब्रेष्ट पम्प" के जरिये दूध निकाल देना अच्छा है।

चिकित्सा —

एकोनाइट ६-३०—स्तन गर्म, कठिन, दूध की कमी,

कम्पन व ज्वर, ठंढ लगने से विमारी, ज्यादा प्यास, बेचैनी, मृत्युभय ।

एपिस ६-३०—स्तन में डंक मारने वाला व ज्वाला के साथ दर्द । जहरवाद की तरह प्रदाह ।

आरनिका ६-३०—स्तन के घुन्डी में जखम की तरह दर्द । आघात लगने से विमारी ।

बेलाडोना ६-३०—स्तन चमकीका, लाल, कठिन और फूला हुआ, दबदबाना सा दर्द, शिर पीड़ा, ज्वर ।

ब्राइओनिया १२-३०-२००—स्तन में टनकने की तरह दर्द, सामान्य हिलने डोलने से ज्यादा होता है, स्तन लाल नहीं होता है, स्तन अत्यन्त कठिन और अत्यन्त प्यास, ज्वर, शिरपीड़ा, उठने के समय माळूम होता है कि शिर फट जायगा, कब्ज ।

हिपर-सलफर ६-३०-२००—स्तन मे पीव पैदा होने पर फटाने के निमित्त दिया जाता है ।

लैकेसिस ३०-२००—प्रदाहयुक्त स्थान नीलापन दिखाई देता है, स्पर्शासहिष्णुता, बांया स्तन की पीड़ा मे विशेष उपयोगी है ।

मार्कु रिअस ६-३०—बेलाडोना के व्यवहार करने पर भी पीव उत्पन्न होने से दिया जाता है । शीतबोध और बहुत पसीना होना और फिर भी आराम माळूम न होना ।

फाइटोलका ३०-२००—स्तन की घुन्डी में जखम,

घुन्डी फटी हुई। दूध पीलाने के समय ऐसा मालूम होता है कि दर्द सब शरीर में फैल गया है। स्तन फूला और बहुत कठिन। स्तन का प्रदाह में यह औषध सर्व्वोत्कृष्ट है।

रस-टक्स ६-३० :—पानी में भींगने हेतु स्तन में दर्द और फूलना, सर्व्वाङ्ग में दर्द, अत्यन्त अस्थिरता।

साइलिसिया ३०-२०० .—प्राचीन रोग, स्तन में सैन होना।

फसफोरस ६-३०-२००—स्तन के भीतर गांठ २ सा फूलन और इस के साथ सैन, पतला दुर्गन्धी पीवश्राव, सूखी खांसी, दुवलकारी पसीना।

सल्फर ३०-२०० :—स्तन की घुन्डी फटी हुई व जखम के साथ, बदन में खुजली और ज्वाला, रात मे नींद नहीं होती है। जब दूसरी २ दवाइयां से फायदा न हो तब इस दवा को व्यवहार करना चाहिए।

—:o:—

हिस्टिरिया वा वायु-गोला।

HYSTERIA.

रोग परिचय——जरायु के साथ इस बिमारी के सम्बन्ध है, ऐसा अनुमान कर के ग्रीक शब्द हिस्टिरिया (Histera) से इस रोग को हिष्टिरिया नाम दिया गया है। किन्तु देखा जाता है कि जरायु के साथ इस पीड़ा के विशेष कोई गुरुतर

सम्बन्ध नहीं है। इस पीड़ा की अवस्था समूह को शरीरविधान को साधारण स्नायवीय पीड़ा कहा जा सकता है। यह 'बिमारी मानसिक अवस्था की गड़बड़ी के हेतु अवशत' प्राप्त स्नायुशक्ति के ऊपर किसी कारण से उत्तेजना का फल से उत्पन्न होती है। जरायु की किसी प्रकार उत्तेजना के साथ वा उत्तेजना के सिवाय भी यह पीडा होते देखा जाता है। यह बिमारी प्रधानत इच्छाशक्ति के दोष और चेतना शक्ति के परिवर्त्तन से ही अधिक होते देखी जाती है। यह पीड़ा विवाहिता और अविवाहिता दोनों प्रकार की स्त्रियों में देखी जाती है। १५ से ५० साल उम्र तक यह हो सकती है। कदाचित् पुरुषों मे भी यह देखी गई है।

कारण—दुर्बलता इस पीड़ा का प्रधान कारण मे गिनी जाती है, स्नायु मे रक्त के सचालन कम होने से ही हिस्टिरिया के लक्षण देखो जाता है। यह पीडा साधारणत रज.श्राव बन्द, ऋतु अनियमित वा अधिक होना, प्रदरश्राव, गर्भावस्था, अधिक काल स्तन-दान, मानसिक उत्तेजना, भय, शोक हताश प्रणय, निद्रा-शुन्यता, विलास मे जीवन यापन इत्यादि हेतु उत्पन्न होती है। हिष्टिरिया की रोगिणी के निकट पीड़ा के नाम करने से ही रोग का लक्षण प्रकाश पा सकता है।

लक्षण—रोगिणी के नाना प्रकार के भाव होता है—रोगिणी कभी रोती, कभी हंसती है, कभी चिल्लाती है, कभी

भाग जाती है, कभी झगड़ा करती है। रोग के आक्रमण के कब्ल मे ग्लोबस हिस्टिरिकस (Globus Hystericus) आरम्भ होता है अर्थात रोगिणी को मालूम होता है कि उस का पेट से गोला सा कोई वस्तु ठेल कर गले मे चढ़ रहा है, और इसके बाद ही रोगिणी चित्कार कर के गिर जाती है। इस समय मे मालूम होता है, रोगिणी को किसी प्रकार की इच्छा शक्ति वा ज्ञान नही रहती है। किन्तु अच्छी तरह से परीक्षा करने से मालूम पड़ता है कि उसका ज्ञान सम्पूर्ण लोप नहीं हुआ है। आंखों के पपुटे चलते रहते हैं और पुतलियां घुमती रहती है। आंख आधी खुली रहती है, पुतली फैलती नहीं है। श्वास प्रश्वांस शब्द के साथ और अनियमित होता है। गात्र ताप की वृद्धि नहीं होती है। प्रकृत हिष्टिरिया रोग निर्णय करने का एक सहज उपाय है— रोगिणी जिस स्थान मे दर्द मालूम करती है, ऐसा कि सामान्य स्पर्श से भी दर्द मालूम करती है, यदि तुम किसी प्रकार से उसका ख्याल को बदल दे सकते हो तो देखोगे कि पूर्व्वोक्त दर्द को मालूम नही करेगी। रोगिणी की आख मे अंगुली देने की चेष्टा करने से वह आंख बन्द करने की चेष्टा करेगी। हिष्टिरिया-रोगिणी का लम्बा श्वांस लेना भी एक प्रधान लक्षण है।

चिकित्सा :—

एसाकार्टियस ६-३०-२०० :— अत्यन्त दुर्बलता

स्मरण शक्ति का लोप, सर्वदा दुःखितभाव और फिक्र। सर्वदा कसम खाने की और शाप देने की इच्छा, एक इच्छा कुछ करने को कहती है, अन्य इच्छा मना करती है।

आर्सेनिक—प्रतिवार सामान्य उत्तेजना से मूर्च्छा रोग के सदृश दम फूलना, दोपहर रात में तकलीफ की ज्यादती, श्वास बन्द होने के डर से लेट कर रह नहीं सकती है, अकेली रहने के समय या शयन करने के समय मृत्युभय होता है। अत्यन्त अस्थिरता और व्याकुलता, गर्म-गृह में रहना चाहती है।

एसाफिटिडा ६-३०-२००—यह औषध ग्लोवस हिष्टिरिकस के निमित्त प्रधान है। पेट से गोला के ऐसा कोई वस्तु ठेलकर ऊपर की ओर गले में चढ़ता रहता है। शूल दर्द, पेट मे गड़गड़ाहट, हवा छुटने से आराम। रोगिणी अत्यन्त खुशी के साथ हंसती है।

औरम ३०-२००—सर्वदा आत्महत्या करने की इच्छा उदास भाव, रोगिणी कभी खुश रहती है, कभी झगड़ा करती है, कभी रोती है। मूर्च्छा रोग की तरह आक्षेप, अत्यन्त स्नायविक दुर्बलता। रज-स्राव अत्यन्त अधिक।

बेलाडोना ६-३०—बहुत पुराना बात को भी याद रखती है; दिमाग की गड़बड़ी, पानी में डूब कर मरना चाहती है, निद्रा की अत्यन्त इच्छा किन्तु सो नहीं सकती है। निद्रा में गुंगुआना।

सिमिसिफिउगा ३-६-३०—जरायु की गड़बड़ी के साथ हिष्टिरिया, दुःखित और चिरचिराहा स्वभाव, बायां तरफ के स्तन के नीचे दर्द होना। पाकस्थली में धस जाने की तरह भाव मालूम होना।

कलोफाइलम ३-६-३०—रजोकष्ट के समय हिष्टिरिया के लक्षण। जरायु की गड़बड़ी के कारण रोग।

कोनायम ६-३०—सिरचक्कराना किसी तर्फ सिर हिलाने से ही शिर चक्कराता है। ग्लोबस हिष्टरिकस। पेशाब के समय रुक २ कर पेशाब निकलता है। ऋतुश्राव के पहले स्तन में दर्द होता है और वह फूल जाता है।

हाइयोसायेमस ६-३०-२००—रोगिणी बेवकुफकी तरह काम करती रहती है और हंसती है, पेशियों का फड़कना और मसोड़ना, रोगिणी वस्त्रादि फेंक कर नंगी होना चाहती है। रात में सूखी खांसी, निगलने के समय गलेमें दबाव मालूम होना।

इग्नेशिया ३-६-३०-२००—शोक-दुःख वा और किसी प्रकार की मानसिक उत्तेजना से पीड़ा की उत्पत्ति, गले में एक गोले की तरह वस्तु अटक गया ऐसा मालुम होता है। पर्य्यायक्रम से हंसना और रोना, कभी हंसते २ चित्कार करती है, कभी चुपचाप बैठी रहती है और लम्बी २ श्वांस लेती है। बहुत परिमाण से मैला मूत्रत्याग, पेशियों का संकोचन पेट में गड़गड़ाहट, मेदा सून मालूम पड़ना।

लैकेसिस ३०-२००—रोगिणी हमेशा बकती है, हंसती है, सिटी देती है और नाना प्रकार की अङ्गभगी करती है, आत्महत्या करनी चाहती है, गले से गोले की तरह वस्तु अटका हुआ मालुम होना, गले मे स्पर्श वरदास्त नहीं होता है। निद्रा के बाद क्रोध होता है। आखरी ऋतुबन्द होने के समय मे पीड़ा।

मस्कस १-३-३०—दिल धड़कने के साथ व्याकुलता, गाली देने की अत्यन्त इच्छा, सर्वदा कहती है कि उसकी मृत्यु के दिन आगहा है। मूर्छा भाव के साथ हिष्टिरिआ के फीट; मुंह के भीतर अत्यन्त (खुराका,) पानी की तरह पेशाव ज्यादा परिमाण से होता है, वेखबरी से मलत्याग होने की आदत, इस दवाई का वार २ सुंघाना अत्यन्त उपकारी है।

नक्स-मस्कैटा ६-३०-२००—हंसी—सब ही उस के पास हंसीजनक मालूम होता है, अपने आप कहती रहती है, मुंह और जीभ अत्यन्त सुखा किन्तु प्यास नहीं रहता है। भोजन के उपरान्त पेट फूल जाता है, अत्यन्त निद्रा-भाव।

पलसेटिला ६-३०—स्वभाव नर्म और रोने वाला, सर्वदा लक्षणो का बदल जाना, सर्वदा शीतबोध, ऋतुश्राव अत्यन्त देर से व अति अल्प होना है या ऋतुबन्द रहता है।

सिपिया ६-३०-२००—हसने की या रोने की इच्छा

नहीं होती है किन्तु फिर भी हंसती और रोती है, उस को मालुम होती है कि अंतरियां ममोड़ कर गले के ओर चढ़ रही है, जीभ अंकड़ जाती है। मेदे में खाली-माव मालुम होता है। पेशाब दुर्गन्धी और उसके नीचे कादो की तरह गाद पड़ता है।

जिंकम ३०-२००—शारीरिक और मानसिक परिश्रम मे अनिच्छा। सर्वदा पैर और देह के फड़कना, चलने के समय, खांसते वक्त और छिंक आने के समय बेखबरी से पेशाब निकल जाता है, ऋतुश्राव के समय अच्छी रहती है।

—:✻:—

प्रसवान्त दर्द ।

(AFTER PAINS)

यह दर्द जरायु के संकोचन-हेतु होता है. सन्तान प्रसव के और पुरैन का जरायु से अलग हो कर निकलने के बाद भी जरायु का मांसपेशी के संकोचन के प्रयोजन होता है, कारण शुन्य जरायु उससे स्वभाविक अवस्था मे आता है. जरायु के अन्दर कोई रक्त के ढेला अंटका रहे तो भी उस को निकालने के निमित्त इस प्रकार का दर्द होता है। कभी २ दर्द इतना अधिक होता है कि उनने प्रसूति चितकार करती रहती है। स्तन मे दूध आने से दर्द कम हो जाता है। इस तकलीफ मे होमियोपैथिक दवा जादु का असर दिखलाती है।

चिकित्सा :—

आरनिका ३-६—यह इस विमारी मे सर्वप्रधान दवाई है, इस का स्थानीय प्रयोग भी हो सकता है, एक ग्लास पानी में २० बुन्द मदर टिंचर मिलाकर उस जल से कपड़ा भींगा कर पेडु के ऊपर प्रयोग करके उस पर सूखा फ्लानेल वान्ध रखना चाहिये ।

बेलाडोना ६-३०—अतिशय तेज प्रसव की तरह दर्द, मालुम होता है कि पेट की सब चीज ढेला वांध कर नीचे के ओर घसक गई है। दर्द अचानक आता, अचानक ही चला जाता है ।

ब्राइओनिया १२-३०—सुई भोकने की तरह दर्द, सामान्य हिलने डोलने से ज्यादा होता है ।

कलोफाइलम ३-६—विलम्बित और निस्तेजक प्रसव के बाद दर्द, ऐंठन होना ।

कैमोमिला १२—असहनीय दर्द, उस से प्रसूति पागल की तरह जो जाती है, स्वभाव अत्यन्त चिरचिराहा ।

सिमिसिफिउगा ३-६—दर्द जांघ में वहुत ज्यादा मालूम होता है और उस से नींद नहीं होती है, रमणी निहायत दुःखिता ।

कफिया ६-३०—अत्यन्त तेज दर्द से रमणी हताश हो जाती है, नींद न होना ।

कुप्रम ६-३०—सख्त ऐंठन के साथ दर्द ।

गर्भावस्था में मतली ।

MORNING SICKNESS.

साधारणतः प्रायः हरएक रमणी गर्भावस्था के शुरू में (१ से ४ महीने तक) मतली या कै से कम या बेश तकलीफ पाती है। बाज गर्भवती रमणी को यह तकलीफ इतनी ज्यादा होती है कि उस से उनका स्वास्थ्य एकदम खराब हो जाता है।

चिकित्सा :—

नक्स-भोमिका ६-३०—मला रंग की पतली-दुबली रमणी, बेचैनी, चिरचिराहट, कब्ज, हिचकी, खासकर सुबह को चटचटा, पतला कै होना।

इपिकाक ६-३०—लगातार जी मिचलाना, मेदा से तमाम खाई हुई चीज निकल जाती है, पित्त व बलगम का कै, दस्त।

पलसेटिला ६-३०—इपिकाक व नक्स से उपकार न होने से खास कर साम को और रात को कै होने से यह उपयोगी है। जीभ सफेद, नर्म मिजाज, दस्त होने का आदत।

फेरम ६-३०-२००—आहार के चन्द घन्टे के बाद तमाम खाई हुई चीज कै हो जाती है।

सिपिया ६-३०—गर्भ के पहले ही से जरायु को गड़-

चढ़ी, दूध की तरह बलगम का कै, रोगिणी गमगीन, प्रदरस्राव।

आर्सेनिक ३०-२००—कोई चीज खाना या पीना मात्र ही वमन हो जाना, अत्यन्त कमजोरी।

क्रियोजोट ६-३०—लगातार मतली व कै, पेडु व रीढ़ में दर्द। इस से फायदा न हो तो **एपोमर्फिया** ६ देना चाहिये।

—:०:—

सूतिका-आक्षेप।

PUERPERAL CONVULSION

किसी २ गर्भवती रमणी में प्रसव के पहले, उसके समय में या उसके बाद नानाप्रकार के, अल्प या अधिक आक्षेप होते देखा जाता है, आक्षेप अचानक उपस्थित होता है। और इस से रोगिणी अचेतन हो जाती है, मुखमण्डल और सर्वाङ्ग की पेशियों के आक्षेप हो सक्ता है। चेहरे की पेशियों का आक्षेप होने के हेतु मुखमण्डल विकृत हो जाता है, आंखें चारो तरफ घुमती रहती है, मुंह से रक्तमिश्रित फेन निकलता रहता है। इस रोग के आक्रमण ५ से २० मिन्ट तक रहता है। उस के बाद आक्षेप बन्द हो जाता है, रोगिणी चेतना लाभ करती है। कभी २ आक्षेप फिर दिखाई देता है और बार २ ऐसा घरुना है। यह रोग बड़ा खतरेनाक है, इससे गर्भिणी

की मौत तक हो सक्ती है। प्रसव के बाद आक्षेप होने से वह ज्यादा खतरेनाक होता है। गर्भ के समय आक्षेप होने से उससे गर्भस्थ सन्तान मर जा सक्ता है।

चिकित्सा—

हायोसायमस ६-३०—मुख-मण्डल की पेशी के और आंखों के पपुटे के आक्षेप के साथ सर्व शरीर मे आक्षेप और स्पदन, अंगुठा हथेली मे लग जाता है रोगिणी सम्पुर्ण अचेतन, भागना चाहती है। छाती में दवाने की तरह तकलीफ मालुम होना, खरराटे स्वांस, बेखबरी से मलमूत्र त्याग।

इग्नेसिया ६-३०—तमाम बदन में कम्पन होने के साथ रोगिणी चिल्ला कर अचानक नींद से चौंक कर जाग पडती है। लम्बी २ स्वांस लेती है, मुखमण्डल की पेशियों के आक्षेप।

ओपिअम ६-३०—डर जाने से पीड़ा, सर्वांग मे कम्पन और आक्षेप, पेशियों की विकृति, आक्षेप के बाद निद्रा, खर्राटे श्वांस, बेहोशी, चेहरा बैंगनी और फुला २।

स्ट्रैमोनियम ६-३०—रोगिणी जाग कर जो चीज को पहले देखती है, मालूम होता है कि उसी से वह डर रही है। प्रधानतः हाथों का आक्षेप होकर रोग आराम होता है, दांत किड़किड़ाती है, सर्वदा वकवाद करती है या तोतले की

तरह बोलती है। रोगिणी हंसीजनक भंगी करती है, हंसती है, गाती है, लम्बा स्वांस लेती है। तेज रोशनी और स्पर्श से फिर रोग का आक्रमण होता है।

ऐकोनाइट ६-३०—प्रसव के बाद आक्षेप, तेज ज्वर, बेचैनी, घबराहट, प्यास, मृत्युभय।

बेलाडोना ६-३०—शरीर वो मुखमण्डल की पेशियों मे आक्षेप, जीभ के दहिना ओर का सुन हो जाना, बोली बन्द रहना घोंट लेने मे तकलीफ होना, पुतली का फैल जाना, चेहरा लाल, नींदमें चौंक उठना, आक्षेप के बाद गहरी नींद।

कुप्रम ६-३०—आक्षेप व कै होना, हांथ पैर की अंगुलियों से आक्षेप शुरु होना, आक्षेप-काल मे धनुष्टंकार।

सिकुटा ६-३०—आक्षेप-काल में मुंह व हांथ पांव टेढ़ा हो जाता हैं। मुंह में फेन, चेहरा नीला, थोड़ा देर के लिये स्वांस रुक जाना।

जेलसिमिअम ६-३०—सिर बड़ा व भारी मालुम होना, जरायु का मुंह सख्त, सामने से पीछा होकर पेडु में दर्द का जाना, कभी २ वह दर्द ऊपर को ओर भी जाता है। मानसिक जड़ता।

नक्स-मस्कैटा ६-३०—पीछे से सामने की ओर सिर का सचालन व आक्षेप, हिष्टिरिया वाली गर्भिणी को आक्षेप, आक्षेप के पहले व पीछे कमजोरी।

पलसेटिला ६-३०—दुर्बलता व अनियमित प्रसव

क्रिया के बाद आक्षेप, मुखमंडल शीतल व रक्तहीन, बेहोशी।

नक्स-भोमिका ६-३० – कब्ज वाली व हमेशा आलस में रहने वाली गर्भिणी को आक्षेप।

सिकेलि ३०-२००—दुर्बल व रुग्ना रमणी, प्रसव के बाद धनुष्टंकार होने से दिया जाता है।

भिरेट्रम-भिर ३-६—मानसिक उत्तेजना से आक्षेप, नाड़ी बहुत तेज लेकिन पतली आक्षेप व उन्मत्तता, चेहरा लाल, प्यास।

कैमोमिला, मस्कस, ओपिअम, जिंकम इत्यादि औषध भी व्यवहार होते हैं।

—:०:—

प्रसव-काल में मूर्छा।

FAINTING.

प्रसव के समय अथवा प्रसव के बाद किसी २ प्रसूति को मूर्च्छा होती है। प्रसव के बाद कमजोरी, कष्टदायक प्रसव, डर लगना, शोक इत्यादि से यह होता है।

आनुसंगिक उपाय—प्रसूति को स्थिरभाव से लेटाकर उसकी आंख व चेहरे में ठंढ पानी की छीटा देना चाहिये। सर्व प्रकार मानसिक उत्तेजना व व्याकुलता त्याग करना चाहिये।

चिकित्सा—

एकोनाइट ३-६—डर लगने से मूर्च्छा, दिल धड़कना, सिर मे चक्कर, चेहरा फीका, मृत्युभय।

आर्निका ३-६-३०—कष्टदायक प्रसव वा चोट लगने से मूर्च्छा, तमाम बदन ठंढा, सिर गर्म दिल में दर्द।

आर्सेनिक ३०-२००—दुर्बलता के कारण मूर्च्छा।

ब्राइयोनिया १२-३०—मामुली हरकत ही से मूर्च्छा होना, प्यास, लम्बा स्वांस।

इग्नेशिया ६-३०—हिष्टिरिया वाली रोगिणी को मूर्च्छा।

कैम्फर—यह एक अच्छी दवा है। तमाम बदन बर्फ की तरह ठंढा। दवा पी न सकती हो तो इसको सुंघाना चाहिये।

चायना ६-३०—ज्यादा रक्तश्राव के वजह से मूर्च्छा, शीतल पसीना, नाड़ी पतली-दुबली कान में भनभनाहट।

कार्बो-भेज ३०-२०० —रक्तश्राव के कारण दुबलता के वजह से मूर्च्छा।

नक्स-भोमिका ३०-२००—कब्ज, कै वा मलत्याग के बाद और प्रसव दर्द के समय मूर्च्छा।

—:o:—

प्रसवान्त में ज्यादा रक्तश्राव होना।

(BLEEDING OF FLOODING)

प्रसव के बाद जरायु अच्छी तरह न सिकुड़ने के वजह से कभी कभी जरायु से ज्यादा रक्तस्राव होता है और उससे प्रसूति को बड़ी कमजोरी होती है। नाड़ी दुबली हो जाती है। मूर्च्छा ऐसा की मौत तक उससे हो सकती है।

आनुसंगिक उपाय— ज्यादा रक्तस्राव होता रहने से, प्रसूति को चित भाव से लेटा कर उस का पाछा के नीचे एक मामूली ऊंची तकिया रखना चाहिये। ठंढा पानी से कपड़ा भिंगा कर योनिद्वार मे ठुस देना चाहिए।

चिकित्सा—

प्लैटिना ६-३०—काला २ ढेला २ रक्तस्राव, पेडु के अन्दर सुरसुराहट, कमर व तलपेट मे चाप मालूम होना।

क्रोकस ६-३०—काला २ ढेला २ रक्तस्राव—मालूम होना है कि पेडु में बच्चा चलफिर रहा है।

चायना ६-३०— बहुत ज्यादा परिमाण से पतला व कालापन थक्का २ खून गिरना, कमजोरी, कान मे भनभनाहट।

इपिकाक ६-३० - लगातार लाल रंग के पतला खून गिरना, लगातार जी मिचलाना, पेडु मे कतरना सा दर्द।

कैमोमिला १२—काला व थक्का २ रक्तस्राव, पेडु में शूल, मिजाज चिरचिराहा।

फेरम ३०-२००—ज्यादा परिमाण से रक्तस्राव, उसका कुछ हिस्सा पतला व कुछ हिस्सा थक्का २।

मिकेलि ६-३०—अकसर इसी दवा के व्यवहार से खून बन्द हो जाता है।

बेलाडोना ६-३०—ज्यादा परिमाण से लाल रक्तस्राव, मालुम होता है कि योनिद्वार से तमाम चीज निकल जायगी गरम रक्तस्राव।

पल्सेटिला ३०-२००—थोड़ा २ खून रुक २ कर निकलता है, दिल धड़कना।

ट्रिलियस व इरिजिरण भी रक्त-श्राव के लिए अच्छा है।

—०:—

सूतिकोन्माद।

(PUERPERAL MANIA.)

गर्भश्राव वा प्रसव के बाद उन्माद लक्षण प्रकट होने से उसी को सूतिकोन्माद कहते हैं।

कारण—दिमाग की गिलाफ झिल्ली का प्रदाह से यह रोग होता है। कोई २ डाक्टर कहते हैं कि ज्यादा कमजोरी व उत्तेजना के कारण स्नायविक दुर्बलता से यह पैदा होता है। खानदानी उन्माद रोग, ज्यादा संतान प्रसव और उसके वजह से कमजोरी, पेशाब में ऐलबुमेन निकलना, जननेन्द्री की उत्तेजना, सूतिकावस्था में आक्षेप, सूतिका

ज्वर इत्यादि को इसका पूर्ववर्त्ती कारण कहा जाता है। इसके सिवाय कष्टप्रसव, अस्त्र की सहायता से प्रसव, जननेन्द्रिय में चोट लगना, रक्तस्राव, डर, शोक, दुःख, ज्यादा खुशी होना वगैरह इसका उत्तेजक कारण है।

आनुसंगिक उपाय—रोगिणी के लिये बलकारी लेकिन हलका पथ्य को व्यवस्था करनी चाहिये। जिससे रोगिणी को कमजोरी न हो ऐसा उपाय करना चाहिये। रोगिणी को बकाना या दिक नहीं करना चाहिये। अच्छी और मीठी बात से उसको तसल्ली देना चाहिये रोगिणी को अकेली रहने न देना चाहिये। कभी २ सुसुम पानी से नहा देना चाहिये।

चिकित्सा :—

औरम ६-३०-२००—सर्वदा आत्महत्या करने की इच्छा, बुद्धि और स्मरणशक्ति का लोप, सोती नहीं।

बेलाडोना ६-३०-२००—रोगिणी भागना वा छिप जाना चाहती है, कभी २ क्रोधी हो जाती है, रात को अनिद्रा, भूत का भय, अपने जीवन को नष्ट करना चाहती है। चेहरा लाल।

हायोसायमस ६-३०-२००—तेज क्रोध व मनोकष्ट के कारण बिमारी, अपने आदमियों को पहचान न सकना, बुद्धि का लोप, बेशरम को तरह बकना और नंगी होने की इच्छा किसी ने उसको विप खिलाया या खिलायगा ऐसो डर।

प्लाटिना ३०-२००—जननेन्द्री में सुरसुराहट, योनि से एक क़िस्म का तरल रस निकलना, रोगिणी वहुत गर्व्विता, साथियों के ऊपर नाराज होना।

पलसेटिला ६-३०-२००—सर्वदा चूप व गमगीन रहना नर्म मिजाज, आंख मुंदने से अच्छी मूर्ति देखती है और गाना सुनती है, पहली रात में नींद न होना।

ष्ट्रामोनियम ३०-२००—खराव वात करना, अन्धेरा और एकान्त मे खराव व्यवहार करना, अकेली अन्धेरा में रहने में कष्ट होता है, हमेशे वकवाद करना, चेहरा लाल होना और फुल जाना, डरना इत्यादि।

भिरेट्रम ६-३०—ठंढा पानी पीने की इच्छा, हरएक आदमी को ऐसा की अचेतन पदार्थ को भी आलिंगण करने की इच्छा।

जिंकम ३०-२००—मन हमेशा चंचल, सर्वदा चोर व भूत का भय, फिक्र।

इग्नेशिया ३०-२००—सर्वदा गमगीन रहना, लम्वी स्वांस लेना, कभी हंसना, कभी गाना, कभी रोना, फिर कभी रंज हो जाना।

कैनाविस इण्डिका २-६—रोगिणी ख्याल करती है कि वह राणी या देवी हे।

प्रसवान्तिक श्राव वा लोकिया ।

(LOCHIA.)

रोग परिचय—प्रसव के बाद पुरैन निकल जाने से जब तक जरायु स्वभाविक अवस्था प्राप्त न होता है तब तक योनिद्वार से एक प्रकार स्राव होता है। श्राव पहले पहल परिमाण में ज्यादा और लाल रङ्ग के होता है। क्रमशः वह परिमाण मे कम, गाढ़ा व सफेद होकर अदृश्य हो जाता है। प्रसव के बाद प्रायः एक हफ्ता यह श्राव लाल रहता है और तीन चार हफ्ते में श्राव बन्द हो जाता है। यह किसी को कम किसी को ज्यादा होता है। इस से कोई तकलीफ न हो तो चिकित्सा की कोई जरूरत नहीं है, लेकिन कभी २ यह श्राव बहुत ज्यादा होने से कमजोरी आ जाती है, श्राव कभी २ बहुत बदबूदार होती है, फिर कभी २ अचानक श्राव बन्द हो कर बहुत नुकसानी पहुंचाता है और इसके लिए चिकित्सा की जरूरत होती है।

आनुसंगिक उपाय—योनिद्वार में एक खन्ड कपड़ा तह देकर रखना चाहिए और वार बार उसको बदल देना चाहिए। योनिद्वार को हमेशा साफ सुथरा रखना चाहिए।

चिकित्सा—

एकोनाइट ६-३०—श्राव अल्प या एकदम बन्द;

पेट, छाती व सिर में तकलीफ, ज्वर, तेज प्यास, बेचैनी, घबराहट, मौत का डर। पेड़ु में कतरने की तरह दर्द, श्राव बदबूदार।

बेलाडोना ६-३०—श्राव बदबूदार, गर्म, चेहरा लाल, सिर दर्द, पेडू में दर्द अचानक आकर अचानक छूट जाता है। ज्वर, नींद न होना या नींद मे चौंक उठना, तेज विकार, आवाज व रोशनी बर्दास्त नहीं होती है।

आर्सेनिक ३०-२००—प्रसव के बाद इस दवा के प्रयोग से सूतिका-विष शरीर में कोई खराबी पहुंचा नही सक्ता है।

ब्रायोनिया १२-३०-२००—श्राव बन्द होना, तेज प्यास, सिर मे सख्त दर्द, हरकत से तकलीफ की ज्यादती अथवा ज्यादा श्राव के साथ ज्वालाजनक दर्द।

कैल्केरिया-कार्ब ३०-२००—दूधकी तरह श्राव, जो बलगमी धातु की मोटी रमणी को हैज ज्यादा व जल्द होता है, उन के लिये उपयोगी है।

कलोफाइलम ६-३०—बहुत दिन तक खूनकी तरह श्राव, बेखबरी से निकलता है।

कैमोमिला १२—श्राव मन्द होने से दस्त होना, शूल दर्द, दन्तशूल, मिजाज चिरचिराहा।

हेलोनियस ३०—प्रसव के बाद कई महीने तक श्राव, मानसिक जड़ता, जरायु का टल जाना।

क्रियोजोट ६-३०—छाले पैदा करने वाला वदबूदार श्राव, ठहर २ कर जोर से होता है ।

पल्सेटिल्ला ६-३०-२००—अचानक दूध बन्द हो जाना, दूध की तरह श्राव होना, प्यास न होना ।

नक्स-भोमिका ३०-२००—अल्प व वदबूदार श्राव कब्ज, बार बार मलत्याग की इच्छा, बार २ मलत्याग के साथ ज्वाला, जरायु मे दर्द, शीत बोध ।

सिकेलि ६-३०-२००—निहायत वदबूदार पतला श्राव, श्राव काला, पतली-दुबली रमणी ।

सिपिया ६ ३०-२००—वदबूदार व जखम पैदा करने वाला श्राव, जरायु का मुंह में सुई भोकने की तरह दर्द, पीठ में सख्त कुचलने के ऐसा दर्द, स्तन की घुन्डी फटा फटा ।

सल्फर ३०-२००—हांथ पांव व चांदी मे गर्मी की धां । श्राव से कमजोरी, पसीना ।

इरिजिरण ३-६—हिलने डोलने से ही श्राव जारी होना है, न तो वन्द रहता है ।

क्रोकस ६-३०—ज्यादा परिमाण से काला लसादार श्राव होना ।

—:०:—

प्लासेन्टा वा पुरैन का गिरने में देर होना।

बच्चा पैदा होने के थोड़ाही देर वाद पुरैन अपने आप निकल जाता है—कभी कभी पुरैन गिरने मे देर होता है, वाज वक्त किसी तरह से निकलना नहीं चाहता है।

आनुसंगिक उपाय—पुरैन को जोर से खीचने से ज्यादा खून निकल कर सांधातिक हालत हो सक्ता है। प्रसव होने के कुछ देरके वाद वायां हांथ की अंगुली मे तेल मल कर प्रसूति के योनि मे धीरे २ प्रवेश करा कर, अगर पुरैन योनि मे हो तो अंगुली से पकड़ कर उसको वाहर निकाल लेना चाहिए—और पुरैन जरायु के अन्दर अलग हो कर रहे तो वायां हांथ को उसी जगहे रख कर दहिना हांथ से पेट के ऊपर ऐसा धीरे २ चांप देना चाहिए जिस मे जरायु संकुचित हो। जव जरायु संकुचित हो रहा है ऐसा मालूम हो तव दहिना हाथ मे कुछ जोर से चांप देने से पुरैन योनि मे आवेगा और उस समय वायां हांथ से उसको पकड़ कर वाहर कर लेओ।

चिकित्सा—प्रसव के वाद **आर्निका** ३० एक खुराक खिलाने से पुरैन निकल जाता है। कभी कभी **पलसेटिला** और उससे न हो तो **सिकेलि** दिया जाता है।

बेलाडोना ६ ३०—ज्यादा तकलीफ, योनि सूखा और

गर्म, ज्यादा गर्म रक्तस्राव, खुन जल्द जम जाता है। जरायु का डमरु की तरह संकोचन ।

कैन्थारिस ६-३०—पीठ व पेडु का निचला हिस्सा मे ज्वाला के साथ दर्द, ज्वर-भाव, कै, जरायु का होठों का फूलना ।

सिकेलि ६-३०—लगातार कुंथना के साथ दर्द, दर्द के साथ रक्तस्राव । जरायु की शिथिलता व संकोचन के अभाव ।

सिपिया ३०-२००—जरायु की जगह मे तेज सुई भोकने की तरह दर्द, कभी २ जरायु मे ज्वाला बोध ।

सेबाइना ६-३०—प्रसवान्तिक दर्द बहुत तेज, पतला और थक्का २ रक्तस्राव ।

इपिकाक, जेलसिमियम, सिमिसिफयुगा वगैरह दवायें भी फायदेमन्द है ।

प्रसव के बाद मूत्र बन्द ।

प्रसव के समय मूत्रस्थली में आघात लगने से या कष्ट से संतान प्रसव होने से अकसर प्रसव के बाद कष्ट से मूत्रत्याग होता है या मूत्रबन्द रहता है ।

आनुसंगिक-उपाय—तलपेट में सेंक देने से या गर्म पानी के "टब" मे कमर तक डुबा कर प्रसूति को बैठा देने से पेशाब हो जा सकता है ।

चिकित्सा—

आर्निका ६-३०—चोट लगने से पेशाव बन्द, पेशाव के वेग होने से भी पेशाव नहीं उतरता है, चोट की तरह दर्द, कष्ट प्रसव के वजह से पेशाव बन्द।

आर्सेनिक ६-३०—मुत्रस्थली की कमजोरी के कारण पेशाव बन्द रहना।

बेलाडोना ६-३०—पेशाव बुन्द २ से होना, दर्द बिलकुल नहीं रहता है। यह एक उत्तम दवा है।

कैन्थारिस ६-३०—लगातार पेशाव के वेग, लेकिन कतरे २ से पेशाव होना, पेशाव के नली में ज्वाला।

कास्टिकम ३०-२००—वेग देने से पेशाव नहीं उतरता है लेकिन बेखबरी से पेशाव टपकता है।

नक्स-भोमिका ६-३०-२००—ज्वाला व टूट जाने की तरह दर्द, पेशाव बन्द रहने के साथ बार २ पैखाने का निष्फल वेग।

हायोसायमस ३०-२००—मूत्रकोष का सून हो जाना व कमजोरी, उस में हमेशा चांप मालूम होना।

पलसेटिला ६-३०—पेशाव बन्द व मूत्रकोष का बाहरी हिस्सा लाल व गर्म, स्पर्श से दर्द होता है।

स्ट्रामोनियम ६-३०— पेशाव बन्द, मूत्रनली सिकुड़ गई ऐसा मालुम होना और कतरे २ से पेशाव होना।

लाइकोपोडियम ३०-२००—पेशाब बन्द रहने के साथ रीढ़ में तेज दर्द, ठहर २ कर कभी २ पेशाव टपकता है।

—:◌:❀:(:):—

प्रसव के बाद कब्ज।

CONSTIPATION AFTER DELIVERY.

प्रसव के बाद तीन चार रोज तक कब्ज रहना अच्छा है। लेकिन यदि कब्ज ज्यादा दिन तक रहे तो प्रसुति का पेट में दर्द, सिर दर्द, भूख की कमी वगैरह तकलीफ होती है— इस लिये चिकित्सा की जरूरत होती है।

आनुसंगिक उपाय—मल बहुत कठिन होनेसे ग्लिसारिन वा गरम पानी का पिचकारी देना चाहिये।

चिकित्सा—

ब्रायोनिया ६-३०-२००—मल कठिन सुखा व काला, उसके साथ सिर दर्द।

नक्स-भोमिका ६-३०-२००—बार २ पखाना का निष्फल वेग, मुख न लगना, सिर दर्द।

ओपिअम ३०-२००— अन्तरी की शिथिलता हेतु मल मूत्र का वेग नहीं होता है—मल भेड़ारी की तरह।

सल्फर ३०-२००—ऊपर के कोई दवा से फायदा न हो तो देना चाहिये।

मलरुद्ध—कब्ज का इलाज देखिये।

प्रसवान्त में उदरामय वा सुतिका रोग।

यह रोग प्रसुतियों के लिये बड़ा खराब है। प्रसव के बाद खाने पीने की गड़बड़ी से यह होता है। प्रसुति को ज्यादा घी, मिर्चा, चाय वगैरह खिलाने से यह होता है। इससे कभी पतला दस्त होता है, कभी पेचिश होती है और कभी २ पेट फूला रहता है।

चिकित्सा—उदरामय वा दस्त की विमारी की चिकित्सा देखिये। प्रथम ही से प्रसुति का आहार के बन्दोबस्त अच्छा करना चाहिये। किसी प्रकार गुरुपाक चीज नहीं देना चाहिये। प्रसव के बाद तीन चार रोज तक भात, रोटी न देकर, साबू, बार्ली इत्यादि हलका चीज देना चाहिये।

दूध-ज्वर।

MILK FEVER.

प्रसव के दो तीन रोज के बाद स्तन में पहला दुध आने के समय स्तन-दर्द के साथ कठिन होता है और सामान्य-ज्वर होता है। तकलीफ ज्यादा होने से चिकितिसा की जरूरत पड़ती है।

आनुसंगिक उपाय—जिससे स्तन में ज्यादा दुध जमा न हो सके ऐसा उपाय करना चाहिये। यदि बच्चा

ज्यादा दूध न पी सके तो हाथ से दूध गाड़ कर निकाल देना, प्रसूति को जव का रोटी खिलाना अच्छा है।

चिकित्सा—

आर्निका ६-३०—प्रसव के बाद ही यह दवा देने से रोग नही होता है।

एकोनाइट ६-३०—तेज ज्वर, नाड़ी तेज व पतली, बेचैनी, घबराहट, प्यास।

आर्सेनिक ३०—अगर कोई सेप्टिक लक्षण देखा जावे तो देना चाहिये।

बेलाडोना ६-३०—तेज बुखार, आंख व चेहरा लाल, विकार।

ब्रायोनिया ६-३०—स्तन मे ज्यादा दूध होने से उस का सख्त होना और उसमे दर्द होना।

पल्सेटिला ६-३०—ज्वर के बाद भी यदि स्तन मे ज्यादा दूध हो तो देना चाहिए।

चायना, एसिड-फस, भेरेट्रम-भिरिडि इत्यादि दवायें भी लक्षणानुसार व्यवहार होती है।

स्तन-दूध की कमी।

(AGALACTIA.)

नाना प्रकार कारण से प्रसूति का स्तन का दुध सूख जाना

है। रमणी को पुष्टिकर आहार देने से और होमियोपैथिक दवा सेवन कराने से यह रोग आराम हो जाता है।

औषधावली—

एकोनाइट ६-३०—स्तन में खून की ज्यादती, स्तन गर्म, कठिन व फूला हुआ, स्तन में दूध न रहना, बेचैनी, घबराहट।

एग्नस ३-६—स्तन-दुध की कमी के साथ गमगीन मिजाज।

बेलाडोना ६-३०—स्तन भारी व बड़ा होना, स्तन की शिरासमूह लाल व फूला, सिर दर्द, आंख व चेहरा लाल।

ब्रायोनिया १२-३०—स्तन पत्थर की तरह भारी व कठिन, कब्ज, प्यास, सिरपीड़ा, उठ कर बैठने से मतली।

कफिया ६-३०—दुध की कमी के साथ नींद न होना।

कष्टिकम ३०-२००—ज्यादा मेहनत, रात जागना व फिक्र के कारण दुध की कमी, कब्ज।

कैमोमिला १२—स्तन दर्द के साथ कड़ा, मिजाज चिरचिराहा।

कैलकेरिया-कार्ब ३०-२००—दुध की कमी, स्तन कड़ा, कण्ठमाला धातु वाला, मोटी बलगमी स्त्री।

चायना २०-२००—रक्तस्रावादि के कारण दुर्बलता,

दस्त, प्रदर रोग दूध पतला. पानी की तरह. इस हालत में पेट फूलना व अम्ल पीड़ा रहने से कार्बो-भेज से भी फायदा होता है ।

इल्कामेरा ६-३०—ठन्डी या गीली हवा लग कर दुध बन्द होना, दूध अल्प, स्तन में दूध आकर भी निकलता नही, स्तन फूला व उसमें दर्द ।

लैकेसिस ३०-२००—द्वेष, हिंसा इत्यादि के कारण दुध की कमी दुध पतला व कुछ लाल ।

मार्कुरिअस ६-३०-२००—गर्मी रोग का दोष, दूध कम, मसुढ़ा में जखम, गिल्टियों का फूलना ।

पल्सेटिला ६-३०-२००—नर्म मिजाज की प्रसुति का दूध की कमी होने से दिया जाता है।

रसटक्स ६-३०-२००—स्तन फूला व लाल. गठिया, ज्यादे दिन तक बदबूदार स्राव ।

सल्फर ३०-२००- दूध की कमी के साथ तमाम बदन हाथ पाव व चांदी मे गर्मी. चर्म रोग ।

सिकेली ६-३०—पतली-दुबली रुग्ना प्रसुति, रक्तस्राव. दूध न रहना ।

स्तन-दूध की ज्यादती

चिकित्सा—

स्तन में दूध की ज्यादती स्तन फूला, स्तन में गिल्टी मालूम पड़ना — ब्राइयोनिया, कैल्क ।

अपने आप दूध का टपकना—कोनायम, कैल्केरिया-कार्ब, कैल्केरिया-फस, लाइको, फस, फस-एसिड, साइलिसिया ।

ज्यादा दूध निकलने के हेतु कमजोरी—चायना ।

—(:०:)—

दूध की खराबी ।

चिकित्सा

कैल्केरिया-कार्ब—दूध पतला पानी की तरह ।

नक्स—निशाखोरी वा गर्म चीज़ खाने के हेतु दूध की खराबी ।

पल्सेटिला ज्यादा चर्बीदार चीज खाने पीने से दूध की खराबी ।

साइलिशिया—दूध खराब, बच्चा दूध पीना नहीं चाहता है, दूध पीने से कै कर डालता है ।

लैकेसिस—दूध पतला, नीलापन, दूध पीने से कै हो जाता है ।

शिशु रोग ।

नवजात शिशु—प्रसव के बाद ही शिशु को प्रसुति से कुछ फरक मे रखना चाहिये जिससे प्रसूति का रसरक्तादि से शिशु को नुकसानी न हो। अंगुली से शिशु का मुंह वो नाक से श्लेष्मादि पोंछ देना चाहिये। इससे शिशु उत्तम रुप से रोवेगा। उससे मालूम होगा कि शिशु के फेफड़े में हवा जा आ रही है—कोई चिन्ता के कारण नही है।

नवजात शिशु का नाड़ काटना।

भूमिष्ट शिशु का नाड़ का स्पन्दन वन्द हो जाने से तव नाड़ काटना चाहिये। शिशु का नाभी से कम से कम दो इञ्च दूर मे सख्त तागा से कस कर बाध कर फिर उससे एक इञ्च दूर मे और एकठो गांठ बांधना चाहिए। इसके बाद दोनो गांठो के दरमियानमे अच्छा तेज चक्कु से नाड़ को काटना चाहिये। नाड़ काट कर उसमे थोड़ा सा कैलेन्डुला देकर एक टुकड़ा साफ कपड़ा वा "लिन्ट" मे लपेट कर नाड़ को वाया ओर लेटा कर रखना चाहिये। हर रोज इस कपड़े को बदल देना चाहिये—इससे नाड़का जखम जल्द सूख जाता है।

नाड़ पकना।

कभी २ बच्चे का नाड़ से प्रदाह हो कर उसमे पीब हो

जाता है। नाड़ मे वरम होकर ज्वर होने से एकोनाइट या आर्निका देना चाहिये। नाड़ मे पीव होने से साइलिसिया देना चाहिये। ज्वर वहुत तेज व बच्चे का आंख व चेहरा लाल होने से बेलाडोना देना चाहिये।

शिशु का ढोंढ़ी निकलना वा हार्निया।

ज्यादा कुंथना वा रोने के वजह से किसी २ शिशु का ढोढ़ी निकल जाता है अर्थात अंत्री का कुछ हिस्सा नाभी की ओर से निकल पड़ता है। इसके ऊपर एकठो पट्टी बांध कर नक्स-भोमिका वा केलकेरिया खिलाने से यह आराम हो जाता है।

नवजात शिशु का नहाना।

नाड़ काटने के बाद शिशु का तमाम बदन मे सर्सो का तेल मालिश कर सुसुम पानी से उसका वदन मल कर नहा देना चाहिये। हर रोज वा एक रोज नागा देकर नहाया जा सकता है। पहले रोज सुसुम पानी से उसके बाद आस्ते २ ठण्ढा पानी से नहाना अभ्यास करना चाहिये। नहाकर उसका वदन साफ व सूखा कपड़ से पोंछ देना चाहिये बच्चे को नहाने के लिये धुप से गरम किया हुआ पानी बहुत मुफीद है।

शिशु-रोग परिक्षा।

शिशु का गात्रपात —जन्म के रोज वदन की गरमी

१०० डिग्री उसके वाद ९८ या ९९ डिग्री होती है। शरीर का ताप इससे कम या ज्यादा होना विमारी का परिचायक है। शिशु का शेष रात्रि का ताप से दोपहर का ताप प्रायः एक या डेढ़ डिग्री ज्यादा होता है।

शिशु की नाड़ी—जन्म से एक साल तक नाड़ी की चाल प्रति मिन्ट मे १२० से १४० वार. दो से तीन वर्ष तक प्रति मिन्ट में १२० वार नाड़ो की चाल होती है।

शिशु की स्वांस—शिशु का स्वांस प्रति मिन्ट में ३५ से ५० वार तक होता है। दो साल के वाद ४० वार और नींद के समय में बहुत कम होता है।

शिशु का जीभ—सफेद मैल वाला जीभ अजीर्णता के परिचायक, पीलारंगदार जीभ यकृतपीड़ा का और लाल जीभ मेदा व मुखमंडल का प्रदाह का परिचायक है।

नवजात शिशु का स्वांसवन्द वा मृतवत् अवस्था (ASPHYXIA.)

रोग परिचय—भूमिष्ट होने के साथ २ ही शिशु जोर से चिल्लाता है और इसीसे उसका स्वांस चलने लगता है। बाज वक्त भूमिष्ट हो कर बच्चा नहीं रोता है, स्वांस वन्द हो कर मुर्दे की तरह पड़ा रहता है।

कारण—कष्ट से या देर में प्रसव होने के कारण

निस्तेजता से ऐसा होता है। शिशु का नाड़ उसका गले मे लपेट जाने के वजह से खून का दौड़ान बन्द होना, शिशु भूमिष्ट होने के पहले ही पुरैन का जरायु से अलग हो जाना, नाक वे मुंह मे श्लेष्मा जमा रहना इत्यादि से भी ऐसा होता है।

लक्षण—प्रसव के वाद शिशु नही रोता है, शिशु का स्वांस वन्द रहने से उसका वदन नीला वा कालो हो जाता है।

आनुसंगीक उपाय—प्रसव के वाद यदि देखो कि शिशु का शिर मे ज्यादा रक्तसंचारित हो रहा है तो फौरन शिशु का नाड़ काट देना चाहिए। लेकिन यदि खून की गति कमजोर हो और नाड़ काटने से भी खून न निकले तो शिशु को फौरन गरम पानी मे डुवा २ कर रक्त की गति वढ़ाना चाहिए। इस से शिशु का स्वांस चलने लगता है।

शिशु मृतप्राय. बोध होने से शिशु के अंगुलियो को ठंढा पानी मे डुवा कर उसका मुंह पर और शरीर से ठन्ढा पानी का छिटा जोर से देना चाहिए। उसके वाद शिशु को गरम पानी में डुवा लेकर जल्द फ्लानेल से उस को ढक देना चाहिए। दो तीन वार ऐसा करने से स्वास चलने लगता है।

शिशु के मुंह मे फूंक दे कर फेफड़े में हवा भर कर फौरन दो, हांथसे आस्ते २ उसका छाती दवा कर फेफड़े से

हवा निकाल देना चाहिये। बार २ ऐसा करने से स्वांस चलने लगता है।

मन्तव्य—जब स्वांस क्रिया मृदुभाव से होता रहे और जीवन का लक्षण कुछ मालुम हो तब लक्षणानुसार निम्न लिखित दवायों के व्यवहार से शिशु बच सकता है।

एकोनाइट ६-३०—शिशु का शरीर गर्म व नीला, नाड़ी का स्पन्दन न रहना या निहायत खफीफ रहना, स्वांस भी वैसा ही होना।

बेलाडोना ६-३०—एकोनाइट ही की तरह लक्षण के साथ शिशु का आंख व चेहरा लाल रहने से दिया जाता है।

चायना ६-३०—ज्यादा रक्तस्राव होना व स्वांस की कमजोरी।

ऐन्टिमटार्ट ३x विचूर्ण शिशु का शरीर फीका, स्वास का न चलना, नाड़ मे स्पन्दन न रहना।

ओपिअम ६—उपरोक्त दवायों से फायदा न हो तो दिया जाता है।

शिशु का प्रथम मलत्याग।

(MECONIUM)

शिशु भूमिष्ट होने के कुछ देर के बाद अपने आप पखाना होता है। यह मल गाढ़ा सब्ज रंग अथवा काला रंग का

आना लेकिन नींद न होना, पेशाव के वक्त चिल्लाना ।

बेलाडोना ६-१२—पेशाव के समय बेचैनी व रोना ।

कैन्थारिस ६-३०—चिल्लाना, कतरे २ पेशाव होना, पेशाव के ज्यादा वेग होना लेकिन पेशाव न उतरना ।

लाइकोपोडियम ६-३०—पेट फूलना, पेशाव में बालू की तरह गाद पड़ना ।

मार्कुरियस ६-३०—मूत्रवेग के साथ कुंथना, पेशाव के समय पसीना होना, मिहिन धारा से पेशाव होना, लाल रंग के पेशाव कतरे २ से होना ।

नक्स ६-३०—मूत्रवन्द, पेशाव के वृथा वेग, ज्वाला व कतरने की तरह दर्द के साथ बुन्द २ पेशाव होना, कब्ज ।

ओपिअम ६-३०—मूत्रस्थली, पेशाव से भरा हुआ लेकिन पेशाव न उतरना, उंघाई आना, चेहरा लाल व फूला २ ।

पलसेटिला ६-३०—तलपेट लाल रंग, उस में दर्द व चाप मालूम होना ।

हायोसायमस, कैनाबिस, आर्सेनिक इत्यादि भी फायदे-मन्द है ।

यमुआं वा शिशु-धनुष्टंकार।

(TETANUS)

देह की मांसपेशियों मे ऐंठन हो कर हाथ, पांव, गर्दन वगैरह का अंकड़ जाना, चहु का अंकड़ जाना इत्यादि शिकायत को धनुष्टङ्कार कहते हैं। ऐंठन के कारण शिशु का शरीर कमान वा धनुष की तरह टेढ़ा हो जाता है, इस लिए इसको धनुष्टङ्कार कहते है।

कारण—शरीर की किसी जगह में चोट लगना, ठंढ लगना नाड़ी पकना प्रभृति कारण से यह होता है। असल मे टिटानास रोग का खास सेप्टिक विष ही इस रोग का कारण है। यह विष शरीर का किसी जखम के जरिए शरीर मे प्रवेश करने ही से यह रोग होता है। इस लिये सूतिका-घर में जब बच्चे का नाड मे जखम रहता है उस समय मे यह रोग ज्यादा होता है। सूतिका घर में आग जलाने के वजह से वहां की हवा धूआं वगैरह से खराब होने के कारण भी बच्चा को यह रोग होता है।

लक्षण—यह रोग होने से अचानक बच्चा को ऐंठन हो कर बदन अंकड जाता है। क्रमशः ऐंठन बढ़ता जाता है और अकसर शरीर पीछे के तरफ टेढ़ा हो जाता है। पहले पहल शिशु रोता है व दुध पी नहीं सक्ता है। शिशु का शरीर लकड़ी की तरह कठिन हो जाता है। इसके साथ ज्वर भी

हो सक्ता है। स्वांसकष्ट, मल-मूत्र बन्द, पसीना, अनिद्रा प्रभृति रहता है। शिशु बेहोश नहीं होता है।

भाविफल—यह बड़ा भयानक रोग है। इस रोग का शिशु प्राय: ही मर जाता है।

चिकित्सा—

एकोनाइट ६-१२—ज्यादा ठंढ लगने से बिमारी, चेहरा लाल या फीका, चेहरे मे ठन्ढा पसीना, आंख का घस जाना, व ठन्ढा हो जाना, चक्षु का अकड़ जाना।

आर्निका ६-३०—चोट लगने के कारण रोग, सिर गर्म, शरीर शीतल।

एंगष्टुरा-भिरा ३-६—चोट के कारण वा शरीर की किसी जगह में सुई वा काटा भोक जाने के वजह से रोग होने से और पहले ही से गर्दन की पेशी कंपने से इसके प्रयोग से फल मिलता है।

कैम्फर ६-३० – धनुष्टङ्कार का आक्षेप के साथ बेहोशी, हांथ पांव पसारा हुआ व स्थिर, ठुड्ढी अंकड़ा हुआ व लटका हुआ, स्वांस कष्ट, दम्मे की तरह स्वांस, तमाम बदन बर्फ की तरह ठंढा।

सिकुटा ६-३०—सिर मे चोट लग कर धनुष्टकार हो कर शरीर कठिन होना, ठुड्ढी अकड़ जाना, हांथ पांव व शरीर का पीछे की तरफ टेढ़ा हो जाना, चेहरा मुर्दे की तरह, आंख चढ़ जाना।

हायोसायमस ६-३०-२००—चेहरा सियाह, दांत लगना, मुंह मे फेन, एक बार हाथ का ऐंठन फिर पैर का, गर्दन एक तरफ टेढ़ा हो जाता है, बेखबरी से मलमूत्र त्याग।

हाइड्रोसायनिक-एसिड ६-३०—टूट्टी अकड़ा हुआ, चेहरा व गर्दन फुला हुआ व नीला, नाड़ी बेकायदा।

इग्नेशिया ६-३०—डर के कारण रोग।

नक्स-भोमिका ६-३०-२००—यह एक उत्तम दवा है। ष्ट्रिकनिया की तरह लक्षण होने से दिया जाता है।

रस-टक्स ६-३०—पट्ठों में चोट लगने से धनुपटंकार में दिया जाता है।

ष्ट्रिकनिया ३०—ठहर २ कर आक्षेप होना, स्वांस कष्ट शाखायों का सून हो जाना, पीछे के तर्फ ऐंठन होना, पट्ठों के कठिन हो जाना।

पेसिफ्लोरा—यह भी एक उत्तम दवा है।

शिशू का दांत निकलना।

(DENTITION.)

दांत निकलना शिशूओं की स्वभाविक अवस्था है। यह किसी पीड़ा का कारण नहीं हो सकता है, लेकिन दांत निकलने के समय अकसर शिशुओं को नाना प्रकार की तकलीफ होती है। बाज लोगो का ख्याल है कि शिशु को दस्त इत्यादि तकलीफ

दांत निकलने के वजह से ही हो रहा है और उसका इलाज की जरूरत नहीं। यह बड़ा भूल है। तकलीफ होने से अवश्य इलाज करना चाहिये—न तो बिमारी सांघातिक हो सकती है। शिशु का मसूढ़ा फूला, कठिन और सफेद हो. उसमें दर्द न रहे और ऐसा मालूम हो कि दांत मसूढ़ा को छेद कर निकल नहीं रहा है तो मसूढ़ा में चिरा लगा देना चाहिये। शिशु का आहारादि के विषय में विशेष ध्यान देना चाहिये।

चिकित्सा—

मसूढ़ा फूला हुआ, लाल मुंह में लार निकलना—सल्फर ३०, कैल्केरिया ३०।

नींद न होना, बेचैनी, रोना—एकोनाइट, कफिया, कैमोमिला।

दांत निकलने के समय ज्वर—एकोनाइट, कैमोमिला, बेलाडोना नक्स, जेल्स।

दांत निकलने समय आक्षेप—कैमोमिला, इग्नेशिया, बेलाडोना, हायोसायमस, कुप्रम, सिना, सिकुटा, ष्टैनम।

दांत निकलने के समय कब्ज,—ब्रायोनिया, नक्स, मैग्नेशिया-म्युर।

दांत निकलने के समय दस्त—कैमोमिला, कैल्केरिया-कार्व, कैल्केरिया-फस, पोडो, मार्क-सल, सल्फर, इपिकाक, इथुजा इत्यादि।

दांत निकलने के समय खांसी—सिना, कैमोमिला, बेल, इपिकाक, नक्स।

दांत निकलने के समय चर्म्म रोग—सल्फर, ग्रैफाइटिस, मार्कुरियस, कैमोमिला, रस्टक्स, कष्टिकम, कैल्केरिया, आर्सेनिक ऐमन-कार्ब।

एकोनाइट ६-३०—ज्यादा बेचैनी, घबराहट, प्यास, बुखार, बच्चा हाथ का मुठा काटता रहता है।

इथूजा ६-३०—दांत निकलने के समय आक्षेप, आंख ऊपर चढ़ा कर बेहोशी से पड़ा रहना। ऊंघाई आना, आंख का घूमना, दुध पीने से दही की तरह हो कर कै हो जाना।

बेलाडोना ६-३०—तेज बुखार, आंख व चेहरा लाल, बार २ चौंक उठना, मसुढ़ा लाल वो फुला हुआ। सब्ज रङ्ग के खट्टा बूदार दस्त।

बोरैक्स ६-१२—बच्चा को नीचे उतारने के समय डरता है, निनावा, पतला वो पीला, सब्ज या भूरा रंग का दस्त।

कैल्केरिया-कार्ब ६-३०-२००—कण्ठमाला-धातु के बच्चा, चांदी खुला रहना, सिर में ज्यादा पसीना दांत निकलने मे देर होना, जल्द २ सर्दी लगना, जल्द चलना न सिखना, बच्चा का पेट फुला रहना, पांव टेढ़ा, सफेद रङ्ग के खट्टा बूदार दस्त।

कैल्केरिया-फस ६-३०-२०० - सिर की हड्डियों का जोड़ खुला रहना, चेहरा पर ठढा पसीना, पेट फूलने के साथ दस्त, मल सब्ज, बच्चा पतला दुबला, जल्द चलना नहीं सिखता है, देर से दांत निकलना, सिर की हड्डी नर्म ।

कैमोमिल्ला १२-३०—बच्चा बड़ा बदमिजाज, हमेशा खिन-खिनाता है, सिर्फ गोदी में रह कर टहलना चाहता है, एक गाल लाल व गर्म, दुसरा फीका व ठंढा । दस्त होना, मल पतला व सब्ज मल में सड़े अण्डे की बू, नींद न होना, मसुढ़ा फूला, सूखी खांसी, दुध खट्टा हो कर कै होना ।

कुप्रम ६-३०-२००—दांत निकलने के समय आक्षेप, अंगुलियों में ऐठन, पेट में दर्द, मुंह में जखम, मुंह में फेन, खून मिला हुआ सब्ज रङ्ग का दस्त, बलगम का कै ।

जेल्सिमियम ६-१२-३०—दांत निकलने के समय तेज ज्वर, पागल की तरह हालत, अचानक डर जाकर चिल्लाता है, नींद न होना, प्यास न होना, मसूढ़े में दर्द, मुंह लाल ।

हिपर-सल्फ ६-३० - मसूढ़े में बहुत दर्द व जखम, सफेद व खट्टा बूदार दस्त ।

आर्सेनिक ३०-२००—पतला-दुबला अम्ल-पीड़ा वाला शिशु, बदबूदार अजीर्ण मल, मसूढ़े में छाले पड़ना, तेज प्यास, बार २ थोड़ा २ पानी पीना, कोई चीज पीने से

अक्सर फौरन के हो जाना, आधी रात के वाद तकलीफ का बढ़ना।

इग्नेशिया ६-३०—चितकार मारने के साथ बच्चा रो कर जाग पड़ता है और कांपता है। प्रायः प्रति दिन ही एक ही समय मे आक्षेप होता है, अक्षेप के साथ विना इच्छा से हंसना व रोना, पसीना।

हायोसायमस ६-३०-२००—मसूढ़े पर मसूढ़े से दबाता रहना व ठुड्ढी में हाथ मुंह में अंगुली देता रहना, निगलने में कष्ट, आक्षेप, मूंह की पेशी का संकोचन, आक्षेप के वाद नींद।

इपिकाक ६-३०—शिशु हाथ को मुठा बांध कर मुंह मे घुसाता है नींद न होने तक चिल्लाता है, नींद में कुंथना व आंख आधा खुला रहना, लगातार मतली व कै होना, दस्त, मल फेनदार व सब्ज।

क्रियोजोट ६-३०—विमार बच्चों का दांत निकलने मे कष्ट मसूढ़ा फूला आक्षेप, दांत में कीड़ा लगना, कब्ज या दस्त, नींद न होना।

मैग्नेशिया-म्युर ३०—धीरे २ दांत निकलना, तलपेट फूला रहना, कब्ज यकृत कठिन व बड़ा, मल कठिन व वृहत, दूध हजम नहीं होता है, अजीर्णता।

मार्कुरियस-सल ६-३०-२००—मुंह से ज्यादा लार गिरना, जीभ व मसूढ़ा में फुन्सियां, पीला रङ्ग के तेज वू

द्वार पेशाव. आंव व खून मिला हुआ मल, कुंथना, गत में तक-लीफ का बढ़ना।

नक्स-वोमिका ६-३०-२००--मां का दूध में न पाले हुए वच्चे का दाँत निकलने के समय की पीड़ा, स्वभाव चिरचिराहा, भुख की कमी, कब्ज वा दस्त, मुंह में जखम, श्वांस में बदवु, नींद के समय लाल रङ्ग का लार गिरना।

रिउम ६-३०--दाँत निकलने के समय वेहद खट्टी वूदार दस्त. वच्चे की तमाम वदन में खट्टी वू।

पोडोफाइलम ६-३०-२००—मसूड़े के साथ मसूड़े को रगड़ता है व रोता है। पतला दस्त, मल सफेद, पीला व सब्ज कुछ खाने ही से दस्त, सिर को इधर उधर हिलाना।

साइलिशिया ६-३०-२००—कण्ठमाला-धातु का वच्चा, ज्यादा लार गिरना, वार २ मसूढ़े में हाथ डालना, मसूढ़े का वाहर निकलना और उस में जखम, रात को वुखार होना, सिर गर्म, तन पेट गर्म व फुला हुआ, कष्ट से पैखाना होना, ज्यादा खट्टी वुदार पसीना, खास कर पैर में, सिर वृहत, सिर की हड्डिओ का जोड़ खुला रहना।

स्टेफिसाग्रिया ३०-२००—मसुढ़ा फीका, सफेद हमेशा खिनखिनाता है मामुली धमक ही से रोता है वार २ पैखाने का वेग।

सल्फर ३०-२००—गन्दा वच्चा किसी तरह से नहाना

नहीं चाहता है, खट्टा दस्त, मलद्वार लाल हो जाता है, उस मे छाले पड़ जाता है, चर्म्म रोग, सिर गर्म।

जिकम ३०-२००—जीवनी-शक्ति की कमी, दाँत निकलने मे देर होना, वेहोशी व नीद की हालत मे चितकार मारना, तमाम बदन का कापना, नाँक मे अंगुली डालना, हाथ पाँव का पटकना, नीचलो शाखों की वेचैनी, रोना।

—.o:—

अस्थियों की अपुष्टता।
(RICKETS OR RACHITIS)

रोग परिचय—यह शरीर का तमाम अंग की दुर्वलता जनित एक खास रोग है। इससे वदन की हड्डिया पुष्ट न होने की वजह से मद्दी व टेढ़ी हो जाती है।

कारण—दात निकलने के समय ही ज्यादेतर यह पीड़ा की सूचना होती है। हड्डी से कैलसियम (Calcium) नाम के धातु की कमी होने से यह रोग होता है। अयोग्य वा अपरिमित आहार, खराब स्थान मे वास, मां का दुध की खरावी इत्यादि से यह रोग होता है। यह रोग अक्सर खानदानी होते देखा जाता है।

लक्षण—यह रोग बहुत धीरे २ प्रकाशित होता है, यह रोग प्रकाश होने के कवल वदहजमी, गैर मामुली भूख, दस्त, थोड़ा २ ज्वर, वेचैनी, सिर मे ज्यादा पसीना इत्यादि लक्षण प्रकाश पाता है। इस से प्रथम मे सिर की हड्डियां कोन

दीर्घास्थियों का अग्रभाग फूल जाता है। हड्डियां कठिन न होने के कारण टेढ़ी हो जाती है, क्रमशः जोड़ों फूल जाता है। क्रमशः शरीर का खून खराब होता है, हड्डियां पोख्ता न होने से अस्थिमय जगहो बदशक्ल हो जाती है, दांत जल्द नहीं निकलता है, बच्चा देर में चलना सिखता है, अकसर पेट चलता रहना है। बुद्धि भी कम होती है।

आनुसंगिक उपाय—इस रोग में साफ शुद्ध हवासेवन, थोड़ा २ धूप लगाना, शिशु को थोड़ा २ मेहनत कराना इत्यादि हितकारी है। मां का दुध का दोप रहने से उनका दूध न पीला कर दुसरा दूध को बन्दोवस्त करना उचित है। बच्चा कुछ बड़ा होने से उसको दुध, घी मछली, मास, फल वगैरह खाने को दिया जा सक्ता है।

चिकित्सा :—

बेराइटा-कार्ब ३०-२००—वामन आकार की लद्धर बच्चा।

ब्रायोनिया ६-३०—आहार के बाद ही वमन, सर्वांग मे दर्द, हमेशा बच्चा चुपचाप रहना चाहता है, कब्ज, मल सूखा-कड़ा व काला, होठ सुखा व फटा फटा।

कैल्केरिया-कार्ब ६-३०-२००—यह इस रोग के लिए एक उत्तम दवा है। ढीला, मोटा, बलगमी मिजाज का बच्चा, हमेशा सर्दी खांसी मे तकलीफ पाता है, चांदी खुला रहना,

सिर में ज्यादा पसीना होना, दिन पर दिन बच्चा दुबलाता व सुखता जाता है। कण्ठमाला-धातु।

कैल्कफेरिया-फस ६-३०-२००—यह भी इस रोग की एक उत्तम दवा है। देह व हड्डी पुष्ट न होना, चांदी खुला रहना, दस्त को शिकायत, सब्ज रङ्ग का पतला दस्त, दांत निकलने में देर होना, चलते सिखने में देर होना। शिशु पतला दूबला।

फसफोरिक-एसिड ३०-२००—ज्यादा कमजोरी, बिना दर्द के सफेद रङ्ग का दस्त, चेहरा मलिन।

ष्टैफिसेग्रिया ६-३०—रोग की बहुत ज्यादती, दांत का काला हो जाना व टुट जाना।

साइलिशिया ६-३०-२००—सिर में ज्यादा पसीना, शरीर के नाना स्थान मे पीब होना, हड्डी का फूलना, चांदी खुला रहना इत्यादि।

सल्फर ३०-२००—इस दवे को दूसरी २ दवायों के साथ कभी २ व्यवहार करना पड़ता है। शरीर मे फोड़ाफुन्सी निकलना, रात में अच्छी नींद न होना।

सुखौड़ी वा शरीर शीर्णता।

(MARASMUS)

रोग परिचय—शिशु बेश खाता पीता है व चलता फिरता है लेकिन दिन-परदिन सुखता जाता है।

कारण—कम उम्र के बच्चे ही इस से ज्यादा आक्रान्त होते हैं। यक्ष्मा रोग, गर्मी रोग वा पारा के दोष वाले मातापिता, साफ हवा व उत्तम खाद्य न मिलना इत्यादि इनका कारण है। माता के स्तन-दूध का अभाव, अपवित्रता इत्यादि से यह होता है।

लक्षण—प्रथम में कुछ समझा नहीं जाता है। बच्चा धीरे २ सूखता जाता है, बदन का चमड़ा ढीला होता व सिकुड़ता जाता है, बच्चा का चेहरा बुढ़े की तरह होता जाता है, नाक पतला होता व आंख बैठ जाता है। हाथ पांव गर्दन सब सूखते व पतला होते जाते हैं, चमड़ा सूखा रहता है, शरीर में फोड़ा फुन्सी निकल सक्ता है, पेट फूलना, ढेकार आना, दस्त होना अथवा कब्ज, गिल्टियों का बढ़ना इत्यादि भी हो सक्ते हैं।

भाविफल—यह रोग चंद हफ्ते से चंद महीने तक रह सक्ता है। रोग बड़ा धीरे २ आराम होता है—कभी २ ज्यादा कमजोरी, मेदा व फेफड़े का यक्ष्मारोग हो कर बच्चा मर भी जाता है।

आनुसंगिक उपाय—पीड़ा का कारणानुसार चिकित्सा करनी पड़ती है। रोगी का खाद्य व वास स्थान की व्यवस्था उत्तम होनी चाहिए। मां को भी अच्छा खाना-दार मिलना चाहिए, और परहेज से रहना चाहिए। मां का दूध अच्छा न हो तो गाय का दुध, बकरी का दुध वा गधी

का दुध का अच्छा वन्दोबस्त करना चाहिए। पेट खराव हो तो दुध न देकर साबु, वार्ली, वगैरह हलका पथ्य देना चाहिए। पेट खराब न हो तो थोड़ा २ मांस को शुरवा दिया जाता है। साफ हवा निहायत जरूरी है। शरीर में सर्सो का तेल मलना अच्छा है।

चिकित्सा---

ऐब्रोटेनम ३०-२००--पैर ज्यादा सूखा हुआ, राक्षस की तरह भूख, पेट फूला हुआ, कभी कब्ज, कभी दस्त, नाक से खून गिरना।

सोरिनम २००—यह सल्फर के समान फायदेमन्द है, जहां निर्व्वाचित औषध से अथवा सल्फर के व्यवहार से भी फायदा नहीं मिलता है वहाँ इसका व्यवहार से फल मिलता है। भूरा रङ्ग का पतला व निहायत बदबूदार दस्त के वाद बच्चा निढाल हो जाता है।

कैल्केरिया-कार्ब ३०-२००—ज्यादा सुखौड़ी के साथ बहुत ज्यादा भुख, सिर में ज्यादा पसीना, पेट की गिल्टियों का वढ़ना, पेट फूला रहना, पैर ठंढा, कादो के ऐसा दस्त।

पलसेटिला ३०-२००—ज्यादा उम्र के बच्चो का सुखौड़ी रोग, अजीर्णता, मल का रङ्ग बदलना, कमजोरी, चर्बी या घी से पकी हुई चीज हजम नहीं होती है।

चायना ६-३०-२०० —ज्यादा खून वगैरह गिरने के कारण सुखौड़ी रोग, रात को ज्यादा दस्त होना, दस्त में अजीर्ण चीज निकलना, ज्यादा परिमाण से बिना दर्द के दस्त, ज्यादा भूख, पेट फूलना, यकृत या तिल्ली का बढ़ना।

बैराइटा—कार्ब ३०-२००—पेट फूलना, गिल्टियों का बढ़ना, मानसिक व शारीरिक दुर्बलता, चञ्चल निद्रा या नींद न होना, सर्वदा खाने की इच्छा लेकिन मिठाई और फल में अरुचि, ज्यादा भूख रहने पर भी कम खाना, बाल का उड़ जाना।

लाइकोपोडियम ३०-२००—कोदवा के बाद सुखौड़ी रोग, पेट फूलना, खासकर साम को, तपेदिक, ढेकार आना बहुत भूख लगना लेकिन दो एक ग्रास खाने ही से पेट भर जाता है।

नेट्रम—म्युर ३०-२००—बहुत ही जल्द शीर्णता बढ़ती है; गर्दन सबसे ज्यादा सूख जाता है, गर्दन व जांघ के चमड़ा ढीला होकर सिकुड़ जाना।

स्टैनम ३०-२००—सुखौड़ी रोग के साथ दम्मे की शिकायत रहने से दिया जाता है।

आयोडियम ३०-२००—राक्षस की तरह भूख, हरदम खाय २ करता रहता है, खूब खाता है, फिर भी बदन सूखता जाता है, बदन को गिल्टियों का बढ़ना, यकृत बड़ा व कड़ा।

मार्कुरियस-सल ६-३०-२००—चेहरा जर्द या मिट्टी के रंग, सिर का जोड़ खुला हुआ; आँवदार दस्त, गिल्टियों का फूलना, उसमे पीव होना, रात को ज्यादा पसीना, गरमी मे तकलीफ का बढ़ना।

नक्स-भोमिका ३०-२००—यकृत फूला व कड़ा. कब्ज या कभी कब्ज कभी दस्त, भूख होना लेकिन खाने मे अरुचि. स्वभाव चिरचिराहा।

फसफोरस ३०-२००—लम्बा व पतला दुवला शरीर वाला शिशू के लिये ज्यादा उपयोगी है। चेहरा मलिन आंख धसी हुई, आँख की चारों ओर मे नीला दाग, अजीर्ण चीज मिला हुआ पतला दस्त, कमजोरी।

स्टेफिसेग्रिया ३०-२००—आँख धस जाना, कमजोरी ठुड्ढी व गर्दन की गिल्टीयों का फूलना, दुष्ट भूख, ऐसा कि पेट भरा रहने पर भी खाने की इच्छा।

सैफाइटिस, कार्बो-भेज, सल्फर, ऐन्टिम-क्रुड, ब्रियो-जोड, फसफोरिक-एसिड प्रभृति दवायें भी लक्षणानुसार प्रयुक्त होने से फायदा देती है।

शिशू की अनिद्रा व अस्थिरता व क्रन्दन।

नवजात शिशु को कोई तकलीफ न रहे तो दिन रात सोता रहता है। लेकिन नाना प्रकार खराबी की तकलीफ से

शिशु वाज वक्त बेचैन रहता है, सो नहीं सकता है और रोता है। ज्यादा दुध पीलाने से, माँ का आहार को खरावी से पेट मे दर्द होने से या कान में दर्द होने मे शिशु रोता है और सो नहीं सकता है। हमेशा कारण निर्देश करके चिकित्सा करना चाहिये।

आनुसंगिक चिकित्सा—शिशु व माँ का अहार के विषय में सुवन्दोवस्त करना चाहिये। शिशु का पेट पर सुसूम सर्सों का तेल मालीश करना चाहिये। वच्चे का दस्त वन्द रहे तो दस्त कराने का वन्दोवस्त करना चाहिये।

चिकित्सा

एकोनाइट ६-३०—बेचैनी के साथ अनिद्रा, हमेशा इधर उधर करता रहना, ज्वर-भाव।

वेलाडोना ६-३०—ज्यादा उंघाय लेकिन नींद न होना वार२ चौंक उठना, विछावन मे पेशाव करना।

एन्टिम-क्रुड ६-३०—शिशु को स्पर्श करने ही से रोता है, मिजाज वहुत चिरचिराहा।

कैमोमिला १२-३०—बेचैनी, अस्थिर निद्रा, वच्चा वहुत वदमिजाज, हमेशा गोदी मे चढ़कर टहलना चाहता है, पेट मे दर्द, हमेशा रोना, सवज रङ्ग का पतला दस्त।

सिना ६-३०—कृमी-दोष, नींद मे वकता, दाँत किड़किड़ाना, हमेशा रोना, गोदी मे लेने से भी चुप न होना।

जेल्सिमियम ६-१२—दाँत निकलने के समय अनिद्रा, ज्यादा प्यास होने से नींद का भाव।

हायोसायमस ६-३०---नींद न होना, आक्षेप, नींद मे रोना, लम्बी स्वाँस लेना।

नक्स-भोमिका ६-३०---माँ का कौफी चाय वगैरह गर्म चीज सेवन करने के कारण शिशु का अनिद्रा, बेचैनी कब्ज।

कलोसिन्थ ६-१२—पेट मे शूल होने के कारण रोना, शिशु टाँग को मोर कर पेट पर दबाता है। जोर से पेट पर चाँप देने से कुछ आफियत मालूम होना।

पल्सेटिला ६-३०-माँ का चर्बी, घी वगैरह ज्यादा खाने के हेतु बेचैनी इत्यादि।

ओपियम ६-३०---कफिया सेवन मे उपकार न हो तो दिया जाता है। तंद्राभाव से चेहरा लाल।

सल्फर ६-३०---सोने के साथ २ ही चौंक कर जाग पड़ना, नींद में गुंगुआना, चाँदी गर्म।

——:&:——

शिशुओं का आक्षेप वा फरका।

(CONVULSION,)

रोग परिचय- -शिशु का देह का पट्ठों का संकोचन, आँख चढ़ जाना वगैरह को आक्षेप वा फरका कहते हैं।

कारण—स्नायुमंडल की क्रिया का बिगार के वजह से वा और किसी पीडा के सहयोगी रोग के तौर पर यह रोग होता है। कब्ज, कृमिदोष ज्वर, सिर से चोट लगना, डर जाना इत्योदि इसका उत्तेजक कारण है। कोंदवा, चेचक, लाल ज्वर इत्यादि का दानें वैठ जाने के कारण दिमागी खराबी से भी यह होता है।

लक्षण—आक्षेप शुरु होने के कबल शिशु वेचन होता है, बार २ चौंक उठता है, रोता है, आक्षेप होने से हाथ पैर में ऐंठन होता है दांत लगता है, ठुड्ढी अंकड़ जाता है, मुंह से फेन निकलता है, स्वांस कष्ट होता व आंख ऊपर चढ़ जाती है। शिशु का आंख व चेहरा लाल हो जा सकता है। ऐंठन के स्वभाव से शिशु का गर्दन, हांथ पाव कठिन हो कर टेढ़ा हो जा सकता है, वेहोशी होती है, पुतली फैल जाती या सिकुड़ जाती हैं। स्वांस मे घरघराहट मालूम पड़ती है इत्यादि। कुछ देर तक ऐसी हालत रह कर आक्षेप छुट जाता है, कभी २ फिर से हो जाता है। बच्चा कमजोर और नाड़ी दुबली होने से रोगी मर जा सकता है।

आनुसंगिक-उपाय—सामान्य पीड़ा मे शिशु का आंख व चेहरे पर शीतल जल का छिटा देने से उपकार होता है। कभी २ कैम्फर का शीशी नांक के पास रखने से भी उपकार होता है। पीड़ा कठिन होने से एक गरम पानी का टब मे शिशु का पांव ठेहुना तक १०--१५ मिन्ट तक डुवा

रखना चाहिए और इसी समय उसका सिर में बर्फ का थैली या ठंढा पानी का पट्टी देना चाहिए। शिशु का होश होते ही उसका हाथ पाव-सिर सूखो कपड़ा से पोंछ देना चाहिए, कब्ज रहे तो ग्लिसारीन का पिचकारी दे कर पैखाना करा देना चाहिए।

चिकित्सा—

एकोनाइट ६-३०—तेज ज्वर, ठंढ लगने से पीड़ा, बेचैनी, प्यास, घबराहट, डर, कान के दर्द वा कृमि के वजह से रोग।

आर्निका ६-३०—सिर में चोट लगने के वजह से रोग।

आर्सेनिक ३०-२००—बच्चा मुर्दे की तरह पड़ा रहता है, बीच २ में स्वांस बन्द हो जाता है, शेष में एक बार इधर फिर उधर मुंह को टेढ़ा कर लेता है, मालूम होता है कि तमाम बदन का ऊपर से एक झटका चल गया।

एन्टिप टार्ट ६-३०—कोदवा, चेचक, वगैरह दब जाने के वजह से आक्षेप।

इथुजा ६ ३०—आक्षेप के साथ मूर्च्छा व प्रलाप, आँख की पुतली नीचे के तर्फ उतर जाती है, हाथ मुठी बन्द; कै वा दस्त के कारण रोग।

बेलाडोना ६-३०—आँख व चेहरा लाल, बार २ चौंक

उठना, सिर गर्म, हाँथ पाँव ठंढा, हाँथ पांव पटकना, रोना, गुंगुं आना।

कैमोमिला ६-१२—माँ या दाइ का गुस्सा वा दाँत निकलने के समय दस्त के कारण पीड़ा, शिशु अचानक सख्त हो कर टेढ़ा हो जाता है, नींद की हालत मे वदन का कंपना, स्वभाव चिरचिराहा, हर-दम रोना।

सिकुटा ६-३०--सिर व हाँथ पैर मे जोर २ से धक्का लगने के ऐसा दिखाना, आक्षेप के कारण तमाम वदन पीछे के तर्फ धनुष की तरह टेढ़ा हो जाता है।

सिना ३०-२००—कृमि का लक्षण, नाक व मलद्वार में खुजलाहट, सूखी खाँसी, छाती में आक्षेप शुरु हो कर हाँथ पाँव व समस्त शरीर कठिन हो जाता है।

कुप्रम-मेटालिकम ६-३०-२००—आक्षेप के कवल वल-थस का कै, चेहरा नीला, हाँथ व पैर की अंगुलियों में आक्षेप शुरु हो कर तमाम शरीर में फैल जाता है। वदन का दानें बैठ जाने से वा दाँत निकलने के समय का आक्षेप।

नक्स भोमिका ६-३०-२००—कब्ज रहने से वा भोजन के खरावी से पीड़ा हो तो व्यवहार होता है, शिशु को स्पर्श करने ही से आक्षेप शुरु हो जाता है, आक्षेप के बाद गहरी नींद।

ओपिअम ३०-२००—डर के कारण आक्षेप, कब्ज,

पाँव से सिर तक आक्षेप, आँख ऊपर के ओर चढ़ जाती है। आक्षेप के बाद गहरी नींद।

सिकेलि ३०-२००—एक एकठो माँसपेशी का फड़कन, हाँथ पाँव की अंगुलियों का टेढ़ी हो जाना, स्वाँसकष्ट।

ष्ट्रामोनियम ३०-२००—बदन का दानें अचानक दब जाने के कारण आक्षेप. डर जा कर चिल्लाता है. आक्षेप से रोगी पीछे के ओर टेढ़ा हो जाता है।

जिंकम ३०-२००—नींद से रो कर व डर जा कर जाग पड़ता है, सिर को इधर उधर हिलाता रहता है। पेट फूलना, ज्यादा पेशाव होना। दुर्बल शिशु का बदन का दानें उभर न सकने के कारण आक्षेप।

—:o:—

नवजात शिशु का चक्षु-प्रदाह।

(OPHTHALMIA NEONATORUM.)

रोग परिचय—नवजात शिशु का आँख में प्रदाह हो कर आँख का फूलना, लाल होना और उस से पीव निकलना को अफ्थेलमिया नियोनेटोरम कहते हैं। प्रसव के प्रथम वा द्वितीय दिन से, कभी कभी चंदरोज के बाद यह रोग प्रकाश पाता है। यह विषैला व बड़ा कठिन रोग है।

कारण—माँ को प्रमेह (सुजाक) वा श्वेतप्रदर प्रभृति रोग रहने से संतान को यह रोग होता है। प्रसव काल में

शिशु की आँख में प्रसूति का स्रावादि लगने से, प्रसूत घर में ज्यादा धूआँ होने से, शिशु की आँख में हिम वा ठंढ लगने से भी यह रोग होता है।

लक्षण—इस में आँख लाल हो कर फूल जाता है, आँख में बहुत दर्द होता है, शिशु आँख खोल नहीं सक्ता है, लगातार रोना है। क्रमशः आँख से बहुत पीब गिरने लगता है, पपुटे जुटा रहता है, बाज वक्त पपुटे वा आँख के अन्दर जखम हो जाता है।

भाविफल—नवजात शिशु का यह रोग बड़ा खराब है—इस से अकसरहाँ आँख नष्ट हो जाती है और बच्चा अन्ध हो जाता है।

आनुसंगिक उपाय—कष्टिक लोसन आँख में डालने से फायदा होता है। सुसुम पानी से प्रतिदिन ४-५ बार आँख धोना चाहिए। गरम पानी में थोड़ा सा बोरिक एसिड डाल कर उस से कपड़ा भिगा कर आँख में सेंक देना बहुत फायदेमंद है।

चिकित्सा—

एकोनाइट ६-३०—प्रदाह को शुरु में आँख लाल, ज्वर-भाव, प्यास, बेचैनी, इत्यादि रहने से दिया जाता है।

बेलाडोना ६-३०—आँख बहुत लाल, रोशनी बर्दास्त नहीं होती है; आँख के पपुटे से रक्तश्राव, आँख में सख्त दर्द।

एपिस ६-३०—आंख के पपुटे फूला, थोड़ा थोड़ा पीव निकलना, आंख से गरम पानी निकलना, आंख में डंक मारने की तरह दर्द । आंख का पपुटा फूला, गाढ़ा पीला रंग का पीव बहुत परिमाण से निकलना, कर्निया मे जखम ।

कैलकेरिया-कार्ब ३०-२००—आंख का कोण मे या काला जमिन में सफेद दाग पड़ना कण्ठमाला धातु ।

युफ्राशिया ६-३० २००—आँख से लगातार तेज पानी निकलता है । उस से पपुटे मे जखम व छाले पड़ जाता है ।

हिपर-सल्फर ६-३०-२००—आंख के पपुटे को छुने से उस से रक्तश्राव, आंख में बहुत दर्द, आँख में जखम होना, गाढ़ा व पीला रङ्ग के पीव बहुत परिमाण से गिरना । ठंढक से तकलीफ का बढ़ना व गरमी से आफियत ।

मार्कुरिअस ६-३०-२००—पतला व तेज पीव गिरना, आंख का पपुटा फूला, रोशनी वर्दास्त न होना, रात को तमाम तकलीफ की ज्यादती । मां बाप को प्रमेह वा गर्मी रोग रहने से यह दवा विशेष उपयोगी है ।

पल्सेटिला ३०-२००—गाढ़ा लाल रङ्ग का गाढ़ा पीव-श्राव होने से दिया जाता है ।

रसटक्स ३०-२००—गाढ़ा व पीला रङ्ग का पीवश्राव । पपुटा का भितरी हिस्सा ज्यादा लाल ।

सल्फर ३०-२००—दूसरी २ दवाओं से फायदा न हो तो दिया जाता है ।

मैफाटिस, एसिड-नाइट्रिक, कैमोमिला, फस्फोरस इत्यादि भी लक्षणानुसार दिया जाता है।

—:❀:—

शिशु का उदरामय वा दस्त की विमारी ।

(DIARRHŒA.)

एलो ३०—हर रोज सुबह को पतला दस्त होना, पेट बोलना, पैखाना का वेग को रोक न सकना, हवा छुटने के साथ पैखाना निकल जाना।

एन्टिम-क्रुड ६-३०—ज्यादा वा खराब चीज भोजन करने के कारण दस्त, गाढ़ा दूध पीने से दस्त, जी मिचलाना व अजीर्ण चीज का कै। ज्यादा परिमाण से पतला व अजीर्ण चीज मिला हुआ दस्त; जीसपर सफेद व मलाई की तरह मोटा लेप, पतला मल के साथ खुद्दा मिला हुआ।

आर्सेनिक ३०-२००—ठंढी चीज खाने से दस्त, ज्यादा प्यास, बेचैनी, कमजोरी, कठिनाकार का रोग।

इथुजा ६-३०— सब्ज रङ्ग का पतला व पित्त मिला हुआ दस्त, अजीर्ण चीज और छेना की तरह दूध व सब्ज ओवदार दस्त; दूध पीने से दही बन कर के हो जाना, गर्मी के दिनों में और दाँत निकलने के समय का दस्त।

कैमोमिला ६-१२—सब्ज रङ्ग का पतला दस्त, पेट में सख्त दर्द, शिशु हमेशा रोता है, सिर्फ गोदी में लेकर

टहलने फिरने से चुप होता है, दांत निकलने के वक्त का दस्त।

कैलकेरिया-कार्ब ३०-२००—मल सफेद कादो की तरह व खट्टा वदबूदार या गन्धक की तरह बूदार।

चायना ६-३०-२००—बिना दर्द के पतला दस्त, भोजन वा पान के बाद ही दस्त, कच्चा फल खाने से दस्त, अजीर्ण दुस्त।

क्रोटन ६-३०—ज्यादा व पीला रङ्ग को वा सब्ज वा भुरा रङ्ग का पतला दस्त पीचकारी की तरह जोर से निकलता है, कोई चीज खाने पीने के साथ २ ही दस्त होना।

गैम्बोज ६-१२—नाभी की जगह मे कतरने की तरह दर्द, दर्द के मारे शिशु छटपटाता है और रोता है, उसके बाद बहुत जोर से दस्त होता है। दस्त के बाद कुछ आफियत होती है और फिर वैसाही दर्द हो कर दस्त होता है।

आइरिस ६-१२-३०—दस्त के बाद मलद्वार मे ज्वाला, मतली, गले मे लहर, मुंह मे तेल को तरह स्वाद, बहुत सा बदबूदार दस्त छुटना, गर्मी का दिनों की बिमारी।

मैगनेसिया-कार्ब ६-२००—फेन के साथ सब्ज दस्त, दस्त फटा २, पानी की तरह दस्त, गर्मी के दिनों का व दांत निकलने के समय का दस्त।

पोडोफाइलम ६-३०—दस्त सुबह को ज्यादा होता है—दस्त पतला, सफेद या सब्ज रङ्ग का, दस्त में आटा की

तरह चीज, दर्द रहित दस्त, कुंथना, काच निकलना, बहुत बदबूदार दस्त ।

पलसेटिला ६-३०-२००—घी की चीज खाने से दस्त, बार २ मल का रङ्ग बदल जाना, दो बार का दस्त एक किस्म का नहीं होता है। मतली व कै, साम का दस्त की ज्यादती पेट मे दर्द होना ।

मन्तव्य—आवश्यक होने से उदरामय चिकित्सा देखिए ।

—.०—

शिशु का पेट में शूलदर्द ।

(COLIC OF INFANTS.)

रोग परिचय—शिशु का पेट मे दर्द होने से उस को शूल दर्द कहते हैं। दर्द के साथ पेट फूल जाता है, कै भी होता है, हवा भी छुटता है, दस्त भी हो सक्ता है ।

कारण—नाना कारण से शिशु का पेट में दर्द हो सकता है। अनियमित आहार, ज्यादा भोजन, अयोग्य भोजन, ज्यादा दूध पीना, मां का खराब दूध पीना इत्यादि कारण से यह रोग होता है। ठंढा लगना, कृमिदोष वगैरह से भी पेट मे दर्द होता है ।

लक्षण—दर्द अचानक शुरु होता है—उस वक्त शिशु बहुत चिल्लाता है—किसी तरह से चुप नहीं होता है,

शिशु बार २ ठेहूंना को मोर कर पेट पर दबाता रहता है। कभी २ पेट फूल जाता है हवा छुटता है, मतली व कै होता है।

आनुसंगिक उपाय सर्सो का तेल गर्म कर पेट पर मालिश करने से फायदा होता है। गर्म जल के साथ फलालेन से सेंक करने से भी उपकार होता है, कब्ज रहने से ग्लिसारिन का पिचकारी से दस्त कराना अच्छा है।

चिकित्सा—

एकोनाइट ६-३०—डर लगने से, ठंढ लगने से रोग ज्यादा प्यास, ज्वर-भाव, बेचैनी, घबराहट।

बेलाडोना ६-३०—दर्द अचानक आ कर अचानक ही छूट जाता है, शिशु अचानक चिल्ला उठता है और फौरन चुप हो जाता है।

ब्रायोनिया ६-३०—शिशु स्थिर भाव से पड़ा रहता है, हरकत करने से दर्द होता है, कब्ज, मल सूखा व कठिन जला हुआ ऐसा।

कैमोमिला ६-१२—शिशु हरदम रोता है व गोदी में रहना चाहता है, पेट में दर्द के साथ पेट फुला हुआ, ठेहुना को समेट कर पेट पर लेना है, पतला दस्त।

कलोसिन्थ ६-१२-३०—पेट शूल, शिशु ठेहुना को समेट कर पेट पर दबाता है। उसका पेट पर जोर से दबाने से दर्द कम होता है।

इस रोग के शुरू मे मल मे पित्त का रङ्ग रहता है, पेशाब भी होता है, लेकिन क्रमशः मल का रङ्ग कम होते २ बेरङ्ग और पेशाब भी कम होते २ एकदम बन्द हो जाता है। यह शिशु के लिए प्रानघाती पीड़ा है।

आनुसंगिक उपाय—इस रोग में शिशुओं को दूध नहीं देना चाहिए। छेना का पानी थोड़ा २ दिया जा सक्ता है। इस रोग मे प्यास के लिए ठंढा पानी या बर्फ के टुकड़े के सिवाय और किसी प्रकार पथ्य नही देना चाहिए।

हिमांगावस्था मे बदन मे अलिभ-अइल मालिश करने से फायदा होता है। अलिभ-अइल के बदले मे सर्सों का तेल से भी काम लिया जा सक्ता है। सिर गर्म होने से सिर में बर्फ का पानी का पट्टी या ओडिकोलन का पट्टी लगाना अच्छा है।

चिकित्सा—

एकोनाइट ६-३०—रोग की पहली हालत में विशेष उपकारी है। सब्ज या भूरा रङ्ग का पानीसा दस्त, पेट में गर्मी मालूम होना, शरीर खूब गर्म, वा सूखा, बेचैनी, तेज प्यास, कै, गर्मी के दिनों में अचानक पसीना बन्द होने से रोग।

एन्टिम-क्रुड ६-३०—पानी सा पतला मल के साथ ही निकलना, मां का दूध पीने के बाद ही कै होना, जीभ

पर सफेद व मोटा मैल का लेप, शिशु बहुत चिरचिराहा, प्यास न होना।

एन्टिम टार्ट ६-३०—बहुत कष्ट के साथ खाई हुई चीज का कै होना, कै के बाद कमजोरी, कम्प व निद्राभाव सामान्य जल पीने से भी कै होना, मल सब्जापन, खिनखिन करना।

इथुजा ३-६-३०—दूध का छेना वा दही की तरह होकर कै होना, कै के बाद कमजोरी, स्थिर दृष्टि, पुतली फैली हुई, हिचकी, मल सब्ज या पीला, पेट में दर्द, बदन में ऐंठन, ठण्ढा पसीना, बेचैनी, आक्षेप के साथ पुतली का नीचे की ओर उतर जाना।

एपिस ६-१२—तन्द्रालुता, कभी २ चौंक उठना व चिल्कार मारना, आंख कुछ लाल, सिर गर्म, जीभ सूखा, प्यास न होना, पेशाब अल्प होना, पेट खाली होना व उसपर स्पर्श से दर्द मालूम होना, पांव व जननेन्द्रिय का फूलना रोग की आखरी हालत में दिमाग में जलसंचय।

आर्जेन्टम नाइट्रस ६-३०—सूखा व पतला दुबला बच्चा, सब्ज रङ्ग का आंवदार लभभा २ मल—उसके साथ जोर से हवा छुटना, रात को बिमारी की ज्यादती, ज्यादा खाने से रोग, तमाम बदन का कंपना, आक्षेप, तन्द्रालुता।

आर्निका ६-३०—खून मिला हुआ वा पीव मिला हुआ

चटचटा व वदबूदार दस्त—उसके साथ कुंथना व दस्त का वेग, मुंह व स्वांस मे वदबू, जीभ पर पीला रङ्ग का लेप, पेट फूलना।

आर्सेनिक ३०-२००--निहायत कमजोरी, बेचैनी व घबराहट, तेज प्यास, बार २ थोड़ा २ पानी पीना, अक्सर पानी पीने ही कै हो जाना। हाथ पांव ठण्ढा, नाड़ी निहायत पतली दुबली, मलद्वार में जखम हो जाना, मध्य रात्रि के बाद बिमारी का बढ़ना, आंख व चेहरा का वैठ जाना।

आर्स-आइयोड ३०-२००—तेज प्यास, लगातार पानी की तरह दस्त, मलद्वार मे दर्द, मलद्वार को बन्द कर नही रख सक्ता है। निहायत कमजोरी, हाथ पांव ठण्ढा।

बेलाडोना ६-३०—सिर गर्म, चेहरा लाल, हाथ-पाव ठण्ढा, तन्द्रालुता, नींद मे चौंक उठना, सब्ज रंग का दस्त, विकार भाव।

बेनजोइक-एसिड ६-३०—पानी की तरह व वदबूदार दस्त, सफेद व खाकी रङ्ग का मल में एक किस्म का गाद पड़ना, कमजोरी, कम्पनी, सिर मे ठंढा पसीना. वेचैनी, नींद न होना निढाल हालत।

ब्राइयोनिया ६-३०—गर्मी के दिनों में दस्त, तेज प्यास खाई हुई चीज का कै होना, भोजन के बाद मतली व कै, पेट में दर्द. सफेद या कुछ भूरा रङ्ग का थका २ व वदबुदार दस्त हरकत करने से तकलीफ की ज्यादती।

कैलकेरिया-कार्ब ३०-२००—खट्टा कै, खट्टा दस्त, दूध हजम न होना, नींद की हालत में सिर मे ज्यादा पसीना, हाथ पाँव ठंढा, पेट फूलना सफेद पानी की तरह दस्त ।

कैलकेरिया-फस ६-३०—थोड़ा २ दस्त के साथ बहुतसा हवा छुटती है, वार २ कै होना ।

कैम्फर ३०-२००—रोग शुरू होने के साथ २ ही निहायत कमजोरी, वदन ठंढा हो जाना, नाडी गुम हो जाना, चेहरा नीला या फीका होना बोली बन्द होना, कभी २ दस्त व कै कुछ भी नहीं होता है लेकिन रोगी अचानक हिमाग हो जाता है ।

कार्बो-भेज ३०-२००—पतला व बदबूदार दस्त, उसके साथ पेट फूलना, बदन ठंढा, सब्वदा पंखा की ख्वाहिस करना स्वांस ठंढा, नाड़ी करीब गुम हुई ।

कैमोमिला १२-३०—पेट मे शूल, सब्ज रङ्ग का पतला दस्त, निहायत चिरचिराहा मिजाज, हमेशा गोदी मे रह कर टहलना चाहता है, दांत निकलने के वक्त का रोग ।

चायना ६-३०-२००—हिमांग व पतनावस्था, स्वांस जल्द, जीवनीशक्ति का क्षय, बगैर दर्द के पतला, अजीर्ण व पीला रङ्ग का दस्त, पेट बोलना, रात को ज्यादती, फलमूल खाने से रोग ।

कलचिकम ६-३०-२००—बार २ पानी सो दस्त, जेली की तरह आंवदार दस्त के साथ कुंथना, दस्त के साथ

खून मिला हुआ, कुंथने के साथ कांच निकलना, भोजन की बू से मतली।

क्रोटन ६-३०—दुध पीने के बाद ही दस्त, अचानक पिच-कारी की तरह जोर से दस्त, मल ज्यादा व पीला रङ्ग का।

कुप्रम १२-३०-२००—इस रोग मे जोर आक्षेप होने से दिया जाता है आंख का घूमना, तलपेट मे प्रबल आक्षेप के साथ मतली व कै।

फेरम फस ६-३०—बार २ पतला दस्त, कमजोरी, सिर मे जलसंचय वा हाइड्रोकेफेलस रोग, सिर को हिलाना, तंद्रालुता, गर्मी के दिनो मे पसीना रुक जाने से रोग, ज्वर मात्र।

इपिकाक ६-३०-२००—लगातार मतली व कै, बलगम व पित्त का कै, घास की तरह सब्ज वा सफेद फेनदार दस्त वा खुन मिला हुआ दस्त, पेट मे मड़ोड़, जीभ मैला, अरुचि प्यास न होना।

आइरिस ६-३०—बार २ पानी सा दस्त, उसके साथ बदबूदार हवा छूटना, पित्त का या खट्टा कै, मुंह से मलद्वार तक तमाम नली में सख्त ज्वाला, मलद्वार व मुंह में जखम चेहरा फीका।

कैलि ब्रोमेटम ६-३०—दिमागी हलचल, चेहरा चमकीला, पुतली फैली हुई, सिर हिलाना, कभी २ चितकार

मार कर जाग पड़ना, हाथ पाँव ठन्डा, पतला दस्त, बदन में ठन्डा पसीना, हिमोंगावस्था।

क्रियोजोट १२-३०—पेट में कुछ भी ठहरता नहीं, कै हो जाता है, पेट पर कपड़ा रखना नहीं चाहता है, ढेकार व हिचकी, गोदी में लेने से उसकी ज्यादती, प्यास, सिर गर्म, बदन ठंढा, पतला पानी सा दस्त, भूरा रङ्ग का व अजीर्ण चीज के साथ बदबूदार दस्त, मोहभाव।

लरोसिरेसस ६-३०—कठिन प्रकार का रोग, सब्ज रङ्ग का पानी सा दस्त, पानी पीने से आवाज के साथ पेट में जाना, पेशाब होना, स्वांस धीर, नाड़ी बेकायदा, प्यास।

मैग्नेशिया ६-१२—पीला या भूरा रङ्ग का पानीसा दस्त, दूध नहीं पचता है, खट्टा ढेकार, शिशु के बदन से खट्टी बू आती है, तेज प्यास कमजोरी।

मार्कुरियस भाइभस ६-३०-२००— सियाहपन सब्ज रङ्ग का आँव व खून मिला हुआ दस्त, जल्द २ खट्टा ज्वालाकारी दस्त के साथ मड़ोड़ शूल व कुंथना, पसीना।

नेट्रम फस ६-३०----खट्टा ढेकार, खट्टा कै, दूध जम कर कै होना, सब्ज दस्त, पेट में ऐंठन जीभ पर पीला लेप, ज्यादा दुध व ज्यादे मिठा खाने वाला बच्चे के लिये यह दवा उपयोगी है।

नेट्रम सल्फ १२-३०-२००---बार २ प्रबल शूल, पेट

घोलना, पीला रंग का पतला ज्यादा दस्त के साथ हवा छूटना, सुबह में दस्त का ज्यादा होना।

पोडोफाइलम ६-१२-३०-२०० —तन्द्रालुता, अस्थिर निद्रा, सर्व्वदा सिर हिलाना फेनदार व सब्ज रंग का व खाई हुई चीज का कै होना, सब्ज वा पानी सा दस्त ज्यादा परिमाण में होना, आंवदार दस्त, वगैर दर्द के दस्त, दस्त के समय व उसके बाद काच निकलना।

सिकेलि ६-३०-२००—बहुत कमजोरी; आंख व चेहरा का धसजाना, बेचैनी; बदन में लहर, बदन वर्फ की तरह ठंढा, बदन मे कपड़ा रख नहीं सकता हैं, हांथ पाव में ऐंठन।

सल्फर ३०-२०० —आखरी रात से अचानक दस्त व कै शुरू होना, मल सब्ज, बेखबरी से दस्त होना, दस्त खट्टा बूदार या बदबुदार, शीतल पसीना, प्यास, हाथ पांव में ज्वाला।

टेबेकम ६-३०—मतली व कै, पीलापन या सब्ज रंग का दस्त, सूखा कालरा, अचानक हिमांगावस्था, बेचैनी, ठेहुना तक पैर वर्फ की तरह ठंढा, नाड़ी बेकायदा व दुर्बल।

भेरेट्रम ६-१२-३०-२००—ज्यादा २ व फेन की तरह या चावल धोवन की तरह दस्त व कै, सिर में ज्यादा ठंढा पसीना, बदन में पसीना, निहायत कमजोरी, पेट में मड़ोर, ज्यादा प्यास।

जिंकम ३०-२००—सिर में जलसंचय, चेहरा का चमड़ा सिकुड़ा हुआ व ठंढा, तकिया में सिर घुसेर कर

रहना आंख आधी खुली हुई, नींद की हालत मे चितकार मारना, हाथ पांव पटकना, पेशाब न होना, सब्ज व आंव मिला हुआ दस्त, मल का हिस्सा खूब कम।

वात रोग।

—:o:—

वातज्वर वा आमवात वा बृहत् सन्धिवात।

(RHEUMATISM)

रोग परिचय—ज्वर के साथ बदन के सन्धियों वा जोड़ों (joints) में प्रदाह हो कर फुल जाने से उसको वातज्वर वा सन्धिवात कहते हैं।

कारण—कोई २ कहते हैं कि रक्त का दोष ही इस बिमारी का कारण है और यह खानदानी रोग है। किसी प्रकार चर्मरोग वा अतिसार बन्द हो कर भी यह रोग होते देखा जाता है। सतुं व जगह मे वास करना, ठंढ लगना, पानी मे भीगना इत्यादि इस का प्रधान कारण है। सुजाक व गर्म्मीरोग का दोष शरीर मे रहने से भी यह रोग होता है।

लक्षण—रोगाक्रमण के चंद रोज पहले ही से शरीर सामान्य अस्वस्थ बोध होता है। और उसके बाद सामान्य शीत हो कर ज्वर होता है व सन्धियों मे प्रदाह उपस्थित होता है। शरीर का छोटे बड़े सब सन्धियां इससे आक्रान्त

बोलना, पीला रंग का पतला ज्यादा दस्त के साथ हवा छुटना, सुवह में दस्त का ज्यादा होना।

पोडोफाइलम ६-१२-३०-२०० —तन्द्रालुता, अस्थिर निद्रा, सर्व्वदा सिर हिलाना फेनदार व सब्ज रंग का व खाई हुई चीज का कै होना, सब्ज वा पानी सा दस्त ज्यादा परिमाण में होना, आंवदार दस्त, वगैर दर्द के दस्त, दस्त के समय व उसके बाद कांच निकलना।

सिकेलि ६-३०-२००—वहुत कमजोरी; आंख व चेहरा का धसजाना, वेचैनी, वदन में लहर, वदन वर्फ की तरह ठंढा, वदन में कपड़ा रख नही सकता हैं, हांथ पांव में ऐंठन।

सल्फर ३०-२०० —आखरी रात से अचानक दस्त व कै शुरु होना, मल सब्ज, वेखवरी से दस्त होना, दस्त खट्टा वूदार या वदवुदार, शीतल पसीना, प्यास, हाथ पांव में ज्वाला।

टेवेकम ६-३०—मतली व कै, पीलापन या सब्ज रंग का दस्त, सूखा कालरा, अचानक हिमांगावस्था, वेचैनी, ठेहुना तक पैर वर्फ की तरह ठंढा, नाड़ी वेकायदा व दुर्वल।

भेरेट्रम ६-१२-३०-२००—ज्यादा २ व फेन की तरह या चावल धोवन की तरह दस्त व कै, सिर में ज्यादा ठंढा पसीना, वदन में पसीना, निहायत कमजोरी, पेट में मड़ोर, ज्यादा प्यास।

जिंकम ३०-२००—सिर मे जलसंचय, चेहरा का चमड़ा सिकुड़ा हुआ व ठंढा, तकिया में सिर घुसेर कर

रहना आंख आधी खुली हुई, नींद की हालत मे चितकार मारना, हाथ पांव पटकना, पेशाब न होना, सब्ज व आंव मिला हुआ दस्त, मल का हिस्सा खूब कम ।

वात रोग ।

वातज्वर वा आमवात वा बृहत् सन्धिवात ।

(RHEUMATISM)

रोग परिचय—ज्वर के साथ बदन के सन्धियो वा जोडों (joints) मे प्रदाह हो कर फूल जाने से उसको वातज्वर वा सन्धिवात कहते हैं ।

कारण—कोई २ कहते हैं कि रक्त का दोष ही इस विमारी का कारण है और यह खानदानी रोग है । किसी प्रकार चर्मरोग वा अतिसार बन्द हो कर भी यह रोग होते देखा जाता है । मतु व जगह में वास करना, ठंढ लगना, पानी में भीगना इत्यादि इस का प्रधान कारण है । सुजाक व गर्म्मीरोग का दोष शरीर मे रहने से भी यह रोग होता है ।

लक्षण—रोगाक्रमण के चंद रोज पहले ही से शरीर सामान्य अस्वस्थ बोध होता है । और उसके बाद सामान्य शीत हो कर ज्वर होता है व सन्धियों मे प्रदाह उपस्थित होता है । शरीर का छोटे बड़े सब सन्धियां इससे आक्रान्त

हो सक्ता है, आक्रान्त सन्धि फूल जाता है, लाल व गर्म होता है, उस पर छूना बर्दास्त नहीं होता है। प्रायः यह रोग शरीर की जगह २ के जोड़ों में घुमता फिरता रहता है। इस रोग के साथ बहुत पसीना होता रहता है लेकिन उससे ज्वर इत्यादि किसी लक्षण की कमी नहीं होती है। प्रदाहयुक्त सन्धि मे इतना दर्द होता है। कि उसको संचालन करना एकदम असम्भव होता है। यह रोग कभी २ आक्रान्त सन्धि को त्याग करके दिल को आक्रमण करता है, जिससे दिल का स्पंदन अनियमित होता है और बायें पंजरे में दर्द होता है।

इस रोग में ज्वर साधारणतः एक सप्ताह तक रेमिटेन्ट भाव से क्रमशः बढ़ता है। किन्तु हमेशा यह नियम नहीं रहता है। रोग को हालत के मोताबिक ज्वर कम-बेश होता है। बदन की गर्मी १०२ से १०४ डिग्रि तक हो सक्ता है। जीभ पर सफेद लेप, तेज प्यास, भूख की कमी; कब्ज वगैरह लक्षण वर्त्तमान रहता है। नाड़ी तेज, मोटी व भरी हुई होती है। पेशाब लाल होता है और उसमे ज्यादा युरेट्स और थोड़ा सा एल्बुमेन रहता है। कभी २ थोड़ा विकार भी देखा जाता है।

भोगकाल—इस रोग का भोगकाल की कोई स्थिरता नहीं है लेकिन साधारणतः रोग तीन से छ सप्ताह के अन्दर आराम की ओर जाना शुरू करता है।

इस के साथ और कोई खराबी रहे तो आराम होने में देर लगती है। यह रोग बार २ होते देखा जाता है।

भाविफल— और किसी प्रकार खराबी न रहे तो भाविफल शुभ होता है। ज्यादा ज्वर और दिल में खराबी होने से मृत्यु हो सक्ता है।

आनुसंगिक उपाय— रोगी के बदन में ठंड न लगे ऐसा उपाय करना चाहिए। आक्रान्त सन्धि को रुई वा फ्लानेल से बांध कर रखना चाहिए। कम्बल पर लेटना वा गरम कपड़ा व्यवहार अच्छा है।

ज्वर रहने से दुध साबु वार्लि वा सुजी वो आटा का रोटी दिया जाता है। अतिसार रहे तो दूध वा रोटी न देना चाहिए। इस रोग में मांस मछली न खाना ही अच्छा है। साग सब्जी अच्छा है। तेल वा घी का चीज वा ज्यादा मसालेदार चीज भोजन करना ठीक नहीं है। मीठा फल खाया जा सक्ता है।

मन्तव्य—कभी २ सन्धियां आक्रान्त न हो कर सिर्फ मांसपेशी (पट्ठा), टेन्डन, पेरिअस्टियम वा हड्डी का गिलाफ झिल्ली वगैरह में वात का आक्रमण होता है। इस रिउमेटिज्म को मस्कुलर (Muscular Rheumatism) वा पट्ठों का वात रोग कहते हैं। इस मे आक्रान्त स्थान का कोई स्थानीय परिवर्तन नहीं होता है याने आक्रान्त स्थान लाल भी नहीं होता है फूलता भी नहीं. सिर्फ दर्द होता है। हरकत करना, ठन्ढ लगना, विश्राम करना, गर्म प्रयोग इत्यादि से रोग की वृद्धि या कमी मालुम होती है।

वात ज्वर वा रिउमेटिज्म की चिकित्सा।

एकोनाइट ३-६-३०—ठन्ढी सूखी हवा लगने से पीडा, अत्यन्त ज्वर, अस्थिरता, प्यास और घबराहट। शरीर मे ज्वाला, चर्म्म सूखा व रूखड़ा।

एमन-फस ३-८-३०—अंगुली के सन्धि, पीठ और हाथ फुल जाता और टेढा हो जाता है।

एन्टिम क्रूड ८-३०—नया वात, गाउट और उसके साथ परिपाक क्रिया की गड़बड़ी, जीभ सफेद व मोटा मैलयुक्त।

एपिस ६-३० २००—पीड़ित स्थान मे डंक मारने की तरह ज्वालायुक्त दर्द। पीडा दहिना अंग मे आरम्भ हो कर बाया अंग में जाता है। शोथ के साथ फूलन।

एपोसाइनम ६-३०-२००—साधारण वात और जोडों मे दर्द, विशेषतः दहिना कन्धे और ठेहुना में, अंगुठा के सन्धि में दर्द।

आर्निका ६-३०-२००—पीड़ा युक्त स्थान फुला उस में झिन झिनी होना और जखम की तरह दर्द, लेटने से या बिछावन की गर्मी से दर्द की वृद्धि होना। सर्वांग मे दर्द, बिछावन कठिन मालूम होता है। गीली हवा व आघात से पीड़ा होना।

आरसेनिक ६-३०-२०० — जोड़ों फीका हो कर फूल जाता है, उसमे ज्वाला के साथ दर्द होता है, अत्यन्त दुर्बलता और अस्थिरता। गर्म प्रयोग से आफियत होना।

वेलाडोना ६-३०-२०० — तेज दर्द एकाएक आता है और एकाएक ही चला जाता है। सन्धि-स्थान चमकीला लाल और फूला, स्पर्श बरदास्त न होता है, जरासा हिलने से भी कष्ट होता है। अत्यन्त ज्वर, शिर पीड़ा, पुटपुरी के नस मे दबदबाना।

वेनजोइक एसिड ६-३० — पेशाब में अत्यन्त दुर्गन्धी, पेशाब अल्प और गाढ़ा रङ्ग का होता है।

ब्रायोनिया ३०-२०० — सुई भोकने की तरह दर्द, जरासा हिलने से ही दर्द अत्यन्त वृद्धि पाता है, चुपचाप रहने से आफियत मालूम होता है, जीभ सफेद और सूखा होता है, प्यास बहुत होता है। कब्ज, मल सूखा और कठिन होता है। स्वास प्रस्वास के साथ छाती मे दर्द होता है।

कैक्टस ६-३० — दिल की जगहपर ऐसा दबाव मालूम होता है कि लोहे के हाथ से दबाया गया।

कैल्केरिया-कार्ब ३०-२०० — प्राचीन सन्धि-प्रदाह और फूलन, पानी मे भींग कर काम करने से पीड़ा की वृद्धि। सिर में ठन्डा पसीना, पांव ठन्डा, कण्डमाला-धातु।

कलोफाइलम ३-६-३० — कलाई (wrist joint) और

अंगुलीसमूह को वातरोग शाखाओं से चलकर पीठ और गर्दन में प्रकाश पाता है, पीठ और गर्दन अकड़ जाता है।

कस्टिकम ३०-२००—सन्धि-स्थान कठिन और फूला, संकोचक मांस-पेशियों के सिकुड़ कर और कठिन हो जाना। आंखों के पपुटे लटक जाना। भौंह और नाक के ऊपर मस्से। निम्न शाखाओं की दुर्बलता और लंगड़ापन, ठन्डी हवा से दर्द की वृद्धि और बिछावन के गर्मी से कमी।

कैमोमिला ३०-२००—दर्द इतना अधिक होता है कि रोगी उससे प्राय पागल हो जाता है, स्वभाव अत्यन्त चिरचिराहा होता है, पीड़ित स्थान में कभी २ झिनझिनी होता है। रोगी का एक गाल गर्म और लाल, दूसरा फीका और ठन्ढा होता है।

कलच्चिकम १२-३०-२००—ज्वाला, फाड़ने की तरह या झटका देने की तरह दर्द, दर्द चला फिरा करता है, सन्धि फूला, किन्तु लाल नहीं होता है। हमेशा शीतबोध आग के पास रहने से भी शीत नहीं जाता है। सर्वदा जी मिचलाता है, खाद्य द्रव्य की बू से ही मतली होती है, नया गत रोग प्राचीन हो जाता या प्राचीन रोग मे नया आक्रमण होता है।

डलकामारा ६-३०—प्राचीन वातरोग, सामान्य ठन्ढ लगने से रोग बढ़ जाता है, नया चर्म रोग दब जाने के कारण

वातरोग उपस्थित होता है अतिसार और वातरोग का अदल बदल कर होना।

फेरम-फस ६-३०—एक के बाद दूसरी सन्धि आक्रान्त होता रहता है। नया वात रोग।

नेफेलियम १२-३०-२०० - अंगुठा और अंगुलियों के गांठ रोग।

आइओडिअम ३०-२००—प्राचीन सन्धि-वात, बाहुसन्धि मे प्रति रात मे भयानक दर्द होता है। सन्धि फूलता नहीं।

केलि-कार्ब ३०-२००—सुई भोंकने की तरह और फाड़ने की तरह दर्द, कम्प, और शीतवोध, लम्वेगो, मालूम होता है कि कमर टूट गया है, जांघ तक दर्द फैल जाता है।

केल्क-आइओड ३०-२००—गर्मी रोग के दोप और पारा की खराबी से पीड़ा मे उपकारी है, प्राचीन सन्धि-प्रदाह।

केल्क-सल्फ ६-३०—यदि एक सन्धि से पीड़ा अन्य सन्धि मे जावे और प्रथम सन्धि मे दर्द न रहे।

कैलमिया ६-३०—पीड़ा के आक्रमण ऊपर से हो कर क्रमशः नीचे के ओर फैलता जाता है, कन्धे के जोड़ों का वात रोग।

लैकेसिस ६-३०-२००—पीड़ा वायें अंग से आरम्भ हो कर दहिने अग मे जाता है, नींद के वाद पीड़ा की वृद्धि, पीड़ित स्थान सपर्शाहिष्णु, फुला व नीलापन, दिल का वात रोग ।

लैक्नेन्थिस ३-६—गर्दन एक तरफ टेढ़ा हो कर कठिन हो जाता है ।

लिडम ६-२०-२००—पीड़ा पैर के अगुलियों से आरम्भ हो कर ऊपर के तरफ फैलता रहता है । अदल वदल कर वात का दर्द और मुंह से खुन मिला हुआ थुक आना । सन्धि-स्थान कठिन और फूला । रोग रात मे विछावन की गर्मी से वृद्धि हो कर दोपहर रात तक रहता है ।

लैक-केनाइनम ६-३०-२००—पीड़ा वार २ दहिने से वायें ओर वायें से दहिने ओर जाता है ।

लिथिअम ६-३० - गाउटी मिजाज, दिल के स्थान मे जखम की तरह दर्द, वार २ अचानक आघात की तरह दर्द मूत्रत्याग के समय दिल में दर्द, ऋतु के पहले और उसके वाद उस स्थान में दर्द, दिल-धड़कना ।

लाइकोपोडियम ३०-२००—फाड़ने की तरह दर्द, विशेष कर दहिने अग का वात रोग । लम्बेगो रोग मे ब्राइयोनिया प्रयोग से पूर्ण उपकार न हो तो लाइकोपोडियस दिया जाता है प्राचीन विमारी मे स्पर्श शक्ति की कमी होना, खट्टा ढेकार, प्रात काल मे जी मिचलाना, पेट फूलना ।

सैंगानस ३०-२००—पीड़ा तीरछा तीरछी (Crosswise) चलता है। यथा :—दहिने हाथ और बायां पैर या बायां हाथ में और दहिने पैर में दर्द होना और इसी प्रकार से स्थान परिवर्तन करते रहना।

फाइटोलैक्का ६-३०-२००—पीठ और कुल्हे के सन्धि का वात। प्राचीन पीड़ा, प्रात काल में ठन्ढी हवा से वृद्धि होती है। पीडायुक्त स्थान फूलता नहीं। गर्मी रोग का दोष से हड्डियों की गिलाफ झिल्ली का वात, रात में रोग की वृद्धि, गले, कच्छे और बगल की गिल्टियों का बढ़ना।

पल्सेटिला ३०-२००—दर्द बार २ स्थान बदलता रहता है। स्वाद कड़ुआ, अरुचि, प्यास बिलकुल नहीं होता है, सर्वदा शीत-बोध, स्वभाव नर्म और रोने वाला, सन्ध्या के समय, गर्म गृह में और रात में बिमारी की वृद्धि, ठंढी खुली हवा में आराम बोध।

रोडोडेन्ड्रन ६-३०-२००—ठन्ढी, गिली हवा और तुफान के दिन में पीड़ा की वृद्धि, स्थिरभाव से रहने से पीड़ा की वृद्धि, चला फिरा करने से आराम।

रसटक्स ६-३०-२००—पीड़ित स्थान फूला और लाल, भत्तुव स्थान में वास हेतु या वर्षा के पानी में भींगने से

पीड़ा। स्थिरभाव से रहने से वृद्धि और चला फिरा करने से कमी। गर्म प्रयोग से पीड़ा की कमी।

रुटा ३०-२००—कलाइ और पैर में वात रोग, खट्टा बूदार पसीना।

सेलिसाइलिक-एसिड ६-३०-२००—सन्धि स्थान में प्रदाहयुक्त वातरोग, पीड़ित स्थान फूला और लाल, अत्यन्त ज्वर, हिला डोला नहीं जाता है।

सेंगुइनेरिया ६-३०—यह औषध विशेषकर दहिने कन्धे के जोड़ और वाहु के वातरोग मे फलप्रद है। वाहु फुलकर अंकड़ जाता है। हाथ उठाया नही जाता है।

थुजा ६-३० २००—साधारण वात और सन्धि वात जनित दर्द, गनोरिया जनित पीड़ा, शरीर के अनावृत स्थान में पसीना और आवृत स्थान सूखा।

जिंकम ३०-२००—वातरोग विशेषत. छोटे २ सन्धियों के गठिया, सर्वदा पैर मे बेचैनी, लगातार पैर को हिलाना पड़ता है। नींद की हालत मे आक्षेप के साथ शाखाओं का संचालन।

एकटिया-स्पाइकेटा ३-६-३०—यह औषध छोटे २ यथा—हाथ और पैर की अंगुलियों के जोड़ो के वातरोग में विशेष फलप्रद है।

सिमिसिफ्युगा ६-३०-२००—सन्धिवात, नीचला

अंग का वातरोग, छाती का दहिनी ओर मे शूल। बेचनी, लेकिन हरकत करने से दर्द और बढ़ता है। पट्ठों में दर्द ।

मेग्नेशिया-कार्व ६-३०—दहिनी कन्धे का सन्धिवात, गर्म प्रयोग से दर्द की कमी लेकिन बिछावन की गर्मी से दर्द का ज्यादा होना ।

मार्कुरियस ६—३०—२००—सन्धि व पेशियों का वात रोग फाड़ने को तरह दर्द, ज्यादो पसीना होना किन्तु उससे रोग की कमी न होना। रात में, बिछावन की गर्मी से. सतर्जी व ठन्ढी हवासे दर्द की ज्यादती, सर्वदा शीत बोध ।

नक्स-भोमिका ३०·२००—मतवालों का वातरोग, कब्ज, ऐलोपैथिक चिकित्सा के बाद लक्षणानुसार इस दवा से चिकित्सा शुरु करना पड़ता है।

साइलिशिया ३०-२००—खानदानी दोष से सन्धि-वात, रात में और बदन का कपड़ा खोलने से दर्द की ज्यादती, गर्मी से कमी ।

केलि-हाइड्रो वा आयोड ३०-२००—सन्धियों का विशेष कर ठेहुना का वातरोग, ठेहुना फूला हुआ, रात को दर्द की ज्यादती, गर्मी रोग वा पारा के दोष से वातरोग ।

गुयाइकम ६-३०—पुराना सन्धिवात के लिए विशेष उपकारी है। कष्टिकम के बाद यह बेशी फायदा करता है। शाखायों का बदशक्ल होना, हरकत से दर्द की ज्यादती

सन्धिको मोरा नहीं जाता हैं। पट्ठो मे दर्द, गर्मी रोग वा पारा, सुजाक दोप से विमारी मे भी यह फायदा करता हैं।

सल्फर ३०—२००—पुरानी विमारी का दोष, चांदी गरम, हाथ पैर मे लहर, नींद न होना।

लम्बैगो वा कमर का वातरोग।

रोग परिचय—पीठ के नीचले हिस्सा और कमर में वात की तरह दर्द होने से उस को लम्बैगो कहते हैं।

लक्षणादि— अच्छी भली हालत मे अचानक एक रोज रोग का आक्रमण होता है—अचानक कमर मे बिजली का चमक की तरह दर्द शुरु होता है, उससे रोगी का उठना बैठना, या चलना फिरना दुष्यार हो जाता है। इस रोग मे आक्रान्त स्थान फुलता भी नहीं, लाल भी नहीं होता है। ज्वर भी इस विमारी मे नहीं होता है। यह रोग वार वार होता है। इस का कारण भी वातरोग ही का कारण की तरह है।

चिकित्सा— वातरोग की चिकित्सा देखिए। साधारणत बेलाडोना, ब्रायोनिया, नेफेलियम, मार्कुरियस, रसटक्स, पलसेटिला, कैल्केरिया इत्यादि दवाये इस में फायदा देती है।

ग्रीवास्तम्भ वा राइनेक।
(RHYENECK)

—:o:—

रोग परिचय—अचानक गर्दन में सख्त दर्द होने के साथ गर्दन अंकड़ जाने से उस को ग्रीवास्तम्भ कहते हैं। इस से गर्दन को हिलाया डुलाया नहीं जाता है। ठन्ड लगना, पानी में भींगना, अथवा बेकायदे से सोने से यह रोग होता है प्रायः एक ही तरफ में यह दर्द होता है।

चिकित्सा :—

एकोनाइट ६-३०—ठढी व सूखी हवा लग कर या पसीना रुक कर बिमारी होना, बेचैनी इत्यादि।

बेलाडोना ६-३०—गर्दन में सख्त दर्द होता है, दर्द अचानक उपस्थित हो कर अचानक ही छुट जाता है, गर्दन, सख्त हो जाता है, गले में दर्द, गर्दन की गिल्टियों का फूलना।

ब्रायोनिआ ३०-२००—गर्दन का स्तम्भित होना, उसमें दर्द, हिलने डोलने से दर्द की ज्यादती।

रसटक्स ६-३०—बर्सात का पानी में भींगने के कारण बिमारी। गर्दन को लगातार हिलाने डोलाने से दर्द की कमी।

कैमोमिला १२—दर्द के मारे रोगी पागल की तरह हो जाता है। रोगी निहायत बदमिजाज।

कफिया ६-३०—बे बर्दास्त दर्द, नींद न होना।

नक्रस वा छोटे २ सन्धियों का वातरोग वा गाउट । (GOUT)

—:o:—

रोग परिचय—ज्वर के साथ चन्द छोटे २ सन्धियों, प्रधानत. अंगुलियो के सन्धियो मे खास कर पैर के अंगुठे के जोड़ो मे प्रदाह होने से उस को नक्रस वा गाउट कहते हैं।

कारण—अजीर्णता, विशेषकर अम्लरोग, अनुपयुक्त आवहवा इस रोग का उत्तेजक कारण है। खानदानी दोष भी इस रोग का एक प्रधान कारण है। अमिताचारी, ज्यादा शराव पीने वाला व मास, चर्वी इत्यादि चीज़ ज्यादा खाने वालो को यह विमारी होने की विशेप सम्भावना है। यह प्राय. शिशुओ को नहीं होता है। प्राय. तीस साल से ज्यादा उम्र के लोग इस से आक्रान्त होते है। प्रथम आक्रमण साधारणत वसन्तकाल मे होता है। रोग पुराना होने से हर एक ऋतु मे हो सक्ता है।

लक्षण—यह रोग होने के कवल कभी २ अजीर्ण, अम्ल-रोग, कब्ज, अतिसार, यकृत—दोष, स्नायु-पीड़ा, दिल-धड़कना प्रभृति लक्षण होता है। उस के वाद अचानक एक रोज रात को विमारी शुरू होती है। आक्रान्त सन्धि प्रदाहयुक्त हो कर फूल जाता है, लाल व गर्म होता है,

उसमें बेहद दर्द होता है। अंगुठे की शिराओं मे रक्तसंचित होता है, वह फुल जाता है। सुबह को लक्षण समूह कम रहता है. रात होने के साथ २ क्रमशः तकलीफ बढ़ती जाती है। नींद नहीं होती है, पेशाब कम होता है, उसके नीचे लाल रंग का गाद पडता है। प्यास ज्यादा व भूख कम होता है, कब्ज होती है। राग कम होना शुरु होने से फुलन वगैरह भी कम होता रहता है—इस समय सन्धि स्थान मे चांप देने से गहरा हो जातो है। शिरा का फुलन कम होकर चन्द रोज तक उस जगह में खुजलाहट होता है, क्रमशः वहां का चमड़ा उड़ जाता है और कुछ दिन तक जोड़ों में दर्द रहता है। रोग एक सन्धि से दुसरे २ सन्धियां में चलना फिरता है। यह रोग जितना पुराना होता है, इसका आक्रमण भी उतना ही जल्द २ होता है। आखिर में ऐसा मालूम होता है कि रोग हमेशा ही रहता है। पीड़ित अंगुलियां बदशक्ल हो जाते हैं।

भावीफल—यह रोग सांघातिक नहीं होता है लेकिन इस से दिल आक्रान्त होने से इससे मृत्यु हो सकता है। रोगी का उम्र कम होने से व खानदानी दोप रहने से आराम होना मुश्किल है।

आनुसंगिक उपाय—रोग की नयी हालत में ज्वर रहे तो साबू, वार्ली, दुध देना चाहिये। रोग कम होने से रोटी दिया जाता है, भात भी दिया जा सकता। शराब, मांस

आदि तमाम गर्म खाना पीना त्याग करना चाहिये। निरामिष भोजन करना चाहिये।

चिकित्सा—

नया रोग में—एकोनाइट, आर्निका, आर्सेनिक, ब्राइयोनिया, कैल्केरिया, सल्फर।

पुराना रोग—एसिड-फस, कैल्केरिया, कष्टिकम, कलोसिन्थ, आयोडियम, लाइको, मैग्नेशिया, नेट्रम-म्युर, सल्फर।

सिर व आंख आक्रान्त होने से—ब्रायो, इपिकाक, केलि-आयोड, नक्स।

मेदा आक्रान्त होने से—एन्टिम-क्रुड, आर्स, ब्रायो, लाइको, नक्स, सल्फ।

गुर्दा आक्रान्त होने से—केलि-आयोड, नक्स, सल्फ।

दिल आक्रान्त होने से—एन्टिम क्रुड, लाइको, कैलमिया।

अवरुद्ध गाउट मे—कलचिकम, लिथियम, नेट्रम-फस।

आर्निका ६-३०-२००—आक्रान्त सन्धि लाल वो प्रदाह युक्त, सुई भोकने की तरह दर्द, किसी कठिन वस्तु से दवा कर रखा गया ऐसा वोध होना, सर्वदा डरता है पीछे कोई हाथ लगावे, बिछावन कड़ा मालूम होता है। रात को दर्द की ज्यादती।

ऐक्टिया-स्पाइकेटा ६-३०-२००—ज़रा सा मेहनत

करने ही मे जोडों का फूलना, विश्राम के वाद जोड़ों का अकड़ाव, अंगुलियां सून, ठंढा व वेरङ्ग, मेहनत करने से पसीना होना।

फेरोटेनस ३०-२००—पुराना रोग, नस्तर भोकने की तरह तकलीफ, तेज ज्वर, दिल का आक्रान्त होना, शीत से वा ऋडतुकाल में और रात को दर्द का वढना।

वेन जोइक-एसिड ३०-२००—सन्धियों मे फाडने की तरह दर्द, दर्द का स्थान वदलना वायें तरफ से पीड़ा का आक्रमण हो कर दहिने तर्फ जाना या दाहिने पैर के अंगुठे मे पीड़ा का आक्रमण, पेशाव निहायत वदवूदार।

ब्राइयोनिया १०-३०-२००—सन्धि फूला हुआ लेकिन लाल नहीं, हरकत से दर्द का वढ़ना, सिर उठाने से मतली, कब्ज, मल कठिन वो सूखा, जीभ पर सफेद लेप।

कलचिकम ६-३०-२००—सन्धियां फूला हुआ, लाल व दर्द के साथ स्थान वदलने वाला व ज्वाला के साथ फाड़ने को तरह दर्द, पांव फूला हुआ, खाने की चीज की वू से मतली।

लिडम ६-३०-२००—शराव पीने के वजह से रोग, वा ऐलो-पैथिक चिकित्सा द्वारा वा कलचिकम का ज्यादा प्रयोग के कारण विमारी का वढ़ना, नस्तर देने का तरह दर्द, सन्धि खुव फूला हुआ, हाथ देने से वहां ठंढा मालूम होना, रात को वढ़ना, उस समय वदन का कपड़ा फेंक देता है।

लिथियम ६-३०-२००—ठेहुना व पैर का वात रोग,

चलने से फिल्ली मे दर्द होना, दिल मे दर्द, अंगुलियों के जोड़ो मे दर्द, रात को हाथ पैर में खुजलाहट, पेशाव मे युरिक-एसिड का गाद पड़ना।

लाइकोपोडियम ३०-२००—अंगुलियो में दर्द, पट्ठों का सिकुड़ना खून को तरह पेशाव, यकृत में दर्द, कब्ज, पत्थरी रोग का दर्द, वार २ पेशाव होना।

रुटा ६-३०-२००—कुचलने की तरह दर्द, तमाम वदन में दर्द, पैर के हड्डियों में दर्द, शीत व वर्षाकाल में विमारी का वढ़ना।

स्टेफिसेग्रिया ६-३०-२००—आंख से दांत तक दर्द, अमिताचार के वजह से रोगी दुर्वल, आंख मे ज्वाला व खुश्की, हाथ व पैर के छोटे २ जोड़ों मे जलन व दर्द, चर्म, रोग व जोड़ो का दर्द का अदल वदल कर होना।

पलसेटिला ६-३०-२००—दर्द वार २ स्थान वदलता है। साम को और रात को और गर्मी से दर्द की ज्यादती, खुली हवा मे आराम वोध।

सल्फर ३०-२००—कब्ज वा अतिसार, वदवुदार मल व हवा निकलना, ववासीर का रोगी मतवाला व आलस मे रहने वाला धनियो का रोग में यह उपयोगी है।

———

अस्थि-रोग ।

(DISEASES OF THE BONES)

अस्थि-प्रदाह, अस्थि का जखम, अस्थि का क्षयरोग ।

OSTITIS, CARIES, NECROSIS

रोग परिचय—हड्डी मे आघात लगना, हड्डीका टुट जाना, कण्ठमालाधातु गर्मी रोग, पारा का बद इस्तेमाल चर्मरोग का बैठ जाना इत्यादि कारण से हड्डी मे प्रदाह होने से उसको अस्थि-प्रदाह वो अस्टाइटिस कहते है। हड्डी की गिलाफ झिल्ली मे प्रदाह होने से उसको पेरि-अस्टाइटिस कहते हैं। अस्थि में दर्द होना व उसका फूलना इस रोग का प्रधान लक्षण है। प्रदाह बहुत ज्यादा हो तो आक्रान्त हड्डी में जखम हो कर सैन बन जा सक्ता है—हड्डी का जखम को केरिज (Caries) कहते है।

हड्डी का कोई हिस्सा खराब होने से वह हिस्सा अलग हो कर गिरतो जाता है और वहां खोंड़ बन जाता है—इसी को निक्रोसिस (Necrosis) कहते है। हड्डी का ऊपर गिल्टी पैदा होने से उसको एक्सोष्टोसिस (Exostosis) कहते हैं।

एंगष्टुरा ६-३०—केरिज, विशेषकर लम्बी हड्डियों का जख्म, कौफी पीने की बहुत इच्छा।

आर्सेनिक ३०-२०० – शोखाओं की हड्डियों मे छेद करने की तरह दर्द, नितान्त कमजोरी के साथ बेचैनी व प्यास ।

ऐसाफिटिडा ३०-२००—कण्ठमाला धातु के लोगों की हड्डी का प्रदाह व जखम, पारा के खराबी इस दवा से दूर होती है। प्रदाह की जगह फूला व नीलापन वहा स्पर्श बर्दास्त नही होता है। जख्म से पतला व बदबूदार पानी निकलता है ।

औरम ३०-२००—नाक और गाल की हड्डियों का केरिज, उसमें से पीव खून और बदबू निकलता है। पारा के अपव्यवहार हेतु सिर की और दूसरी २ जगह की हड्डियो का एक्जोस्टोसिस और उसमे छेद करने की तरह दर्द ।

कैलकेरिया-कार्ब ३०-२००—अस्थि-प्रदाह और फूलना, कण्ठमाला धातु के लोग के निक्रोसिस, अतिसार, पेट फूला हुआ, बदन का सूख जाना ।

फ्लुओरिक-एसिड ६-३० – गरमीरोग का दोष अथवा पारा के अपव्यवहार के हेतु केरिज ।

मेजिरियम ३०-२००—पेरिअस्टाइटिस और हड्डी के फूलना विशेषत. टिब्यिा हड्डी का रात मे अस्थि मे भयानक दर्द ।

नाइट्रिक-एसिड ३०-२००—गर्मीरोग के कारण रोग, विशेष कर पारा के अपव्यवहार होने से यह दवा बहुत फायदा देती है ।

फसफोरस ६-३०-२००—सिर की हड्डी का प्रदाह व फूलना, भयानक दर्द विशेषकर रात में, गर्दन की गिलटियां फूली हुई, खट्टा डकार और कै, मुंह, छाती और पेट में ज्वाला। रोगी निहायत पतला-दुबला।

रुटा ६-३०—आघात लगने के हेतु पेरिअस्टाइटिस और उसके साथ इरिसिपेलस।

साइलिसिया ३०-२००—अस्थि की नाना प्रकार पीड़ा में यह उत्तम औषध है विशेष कर इसके साथ हड्डी में सैन होना और उससे पतला पीव निकलना।

स्टैफिसेग्रिया ३०-२००—अंगुलियां के अस्थियों का प्रदाह में अत्यन्त उपकारी है।

सल्फर ३०-२००—चर्मरोग दब जाने से यह पीड़ा हो तो दिया जाता है।

औरम-म्यु०, कैलकेरिया-फस, चायना, आइयोडियम, लाइकोपोडियम, मारक्युरियस, एसिड-फस, थेरिडियन, इत्यादि औषधें भी इस रोग में व्यवहार होते हैं।

स्नायुविधान का पीड़ासमूह।

DISEASES OF THE NERVOUS SYSTEM

— o —

दिमाग और स्नायुतत्त्व।

दिमाग और स्नायु इन दोनों का एकट्ठा साधारण नाम स्नायुविधान वा नर्भस सिस्टेम है। स्नायु और दिमाग में जो संजीवनी शक्ति है उसी से दिल अपनी क्रिया करती है, सर्व शरीर मे रक्त का दौड़ा होता है और श्वांस चलता है। फलत इसी शक्ति से ही शरीर के अन्यान्य प्रत्येक यन्त्र हो कार्य्यक्षम रहता है। स्नायुविधान की प्रधानत. दो प्रकार की शक्ति है। (१, गति उत्पादिका शक्ति वा मोटर पावर (Motor Power)। (२) बोध उत्पादिका शक्ति वा सेनसरी पावर (Sensory Power)। इन दोनों शक्ति से इच्छानुसार सर्व शरीर की गति होती है और सर्वप्रकार बोधशक्ति की क्रिया मालूम होती है। ये दो शक्ति न रहने से शरीर की कोई क्रिया नही हो सकती है। स्नायु-मण्डल दो अंश में विभक्त है। (१) मस्तिष्कमेरुमज्जीय (Cerebro-Spinal) और (२) सहानुभावक (Sympathetic)। (१) मस्तिष्क वा दिमाग (Brain,) और मेरुमज्जा (Spinal Cord) के साधारण नाम सेरिब्रो-स्पाइनेल सिस्टेम है और (२) मेरुदण्ड के सन्मुख भाग के

दोनो तरफ का श्रेणीवद्ध गैंगलिया (Ganglia) और उन सबों के संयोग का स्नायु समूह और उन सबों का शाखा-समूह समस्त शरीर और यंत्रो की पोषण क्रिया में रत है। इस कारण इन सब को सिम्पेथेटिक सिस्टेम कहते हैं।

फालिज,पक्षाघात वा पैरालिसिस
(PARALYSIS)

रोग परिचय —शरीर के पेशियों को चेतना देनेवाली व हरकत देने वाली स्नायु शक्ति का लोप होने से उसको पैरालिसिस कहते हैं। यह स्थानिक व सर्व्वांगिक दोनो प्रकार का हो सकता है।

पेरालिसिस वा पक्षाघात नाना प्रकार का होता है। शरीर का किसी हिस्से को सिर्फ गतिउत्पादिका स्नायुशक्ति का नाश होने से अर्थात उस हिस्से की गति शक्ति नष्ट हो जाय लेकिन बोध शक्ति ठीक रहे तो उसको मोटर पैरालिसिस (Motor Paralysis) कहते है। फिर सिर्फ बोधशक्ति नष्ट हो कर गति शक्ति ठीक रहने से उसको सेन्सरी पैरालिसिस (Sensory Paralysis) कहते है। एक साथ ही गतिउत्पादिका व बोधोत्पादिका उभय ही शक्ति नष्ट हो सकती है। पक्षाघात से आक्रान्त अंग में कम्पन हो तो उस को कम्पयुक्त पैरालिसिस वा पैरालिसिस एजिटैन्स (Paralysis agintans) कहते हैं।

मोटर पैरालिसिस होने से पक्षाघातिक अंग की इच्छा-नुसार संचालन न किया जाता है। सेन्सरी-पैरालिसिस होने से बिमार हिस्से में किसी किस्म की बोधशक्ति नहीं रहती है— उस जगह को काट देने से या जला देने से भी रोगी को तकलीफ नही होती है। पूरा पैरालिसिस हो तो बिमार हिस्से की संचालन व बोध दोनो नष्ट हो जाता है—वह जगह एक दम लकड़ी की तरह असाड़ व अवश हो जाता है।

पक्षाघात नाना प्रकार का है, उनके हरएक का व्यान अलग अलग नीचे दिया जाता है।

साधारण पक्षाघात।

(GENERAL PARALYSIS)

इसमे तमाम ही बदन में पक्षाघात होता है ऐसा नहीं, लेकिन दोनों बाहु व पैर का पक्षाघात के साथ देह भी कमवेश पक्षाघात से आक्रान्त होता है।

अर्द्धांग-पक्षाघात वा हेमिप्लिजिया।

(HEMIPLEGIA)

शरीर का एक तरफ का अख्तियारी पेशियो (मसल्स) अवशता लाभ करने से उसको अर्द्धांग पक्षाघात वा हेमिप्लिजिया कहते हैं। साधारणत इससे एक तरफ का मुख

मण्डल व दोनों शाखायें पक्षाघात से आक्रान्त होते हैं। आंख, नाक व धड़ का पेशियां आक्रान्त नहीं होते हैं। रोगी आक्रान्त अंग को संचालित नहीं कर सक्ता है। मुंह टेढ़ा हो जाता हैं। जीभ को मुंह से बाहर निकालने से बिमार बगल के ओर लटक जाता है। बोली विकृत वा अस्पष्ट बोध होता है। ज्यादेतर दिमागी खराबी से यह होता है। दिमाग में खूनकी ज्यादती, सन्यासरोग, दिमाग की कोमलता इत्यादि कारण से यह रोग हो सक्ता है।

चिकित्सा—एलुमिना, एनाकार्डिअम, आर्जेन्ट-नाइट, आर्निका, बेलाड, कष्टि, चिन सल्फ, ककुलस, डल्का, ग्रैफाइटिस, हायोसायमस, केलिकार्ब, लंके, मार्क, नक्स भोमिका, फस-एसिड, प्लम्बम, रसटक्स, सिपिया, ष्टैनम, ष्टैफि, सल्फ-ऐसिड वगैरह दवायें इस में फायदा देती हैं।

—:o:—

निम्नांग-पक्षाघात वा पैराप्लिजिया।

(PARAPLEGIA.)

दोनों तरफ की ऊपर वाली शाखायों या दोनो नीचे वाली शाखायो मे पक्षाघात होने से उसको पैराप्लिजिया कहते हैं। साधारणतः रोगी का निम्नांग ज्यादेतर आक्रान्त होता है। यह रोग कभी २ धीरे २, कभी २ एकाएक हो जाता है। प्रथमतः पैर में अवशता उपस्थित हो कर उस का निम्नांग मे गति

व स्पर्शशक्ति का अभाव मालुम होता है। चलते वक्त पांव ठीक तरह से नहीं चलता है। मूत्रस्थली व सरलान्त्र के ऊपर किसी किस्म की शक्ति नहीं रहती है। यह रोग मेरुमज्जा वा स्पाइनल कर्ड की खराबी से होता है। पुराना दिमागी बिगार से भी यह होता है।

चिकित्सा— ककुलस, नक्स, लरोसिरेसस, सिकेली, इत्यादि दवायें फायदेमन्द हैं।

मुखमंडल का पक्षाघात।

(FACIAL PARALYSIS.)

मुखमंडल की पेशियों को पक्षाघात होने से उसको फेशियाल पैरालिसिस कहते हैं। ज्यादेतर ठंढ लगने ही से यह रोग होता है। साधारणतः इस रोग के साथ कोई दिमागी खराबी देखी नहीं जाती है पीड़ित स्नायु जिस हड्डी का आवरण को भेद करके चला है उसी हड्डी का आवरण का फूलन, किसी गिल्टी का चांप पड़ना वा अचानक मुखमंडल में ठन्ढ लगने से यह रोग होता है। कभी २ दिमाग के नीचे गिल्टी होने के कारण उस के चांप से यह रोग होता है। साधारणतः एक तर्फ का मुखमन्डल इस रोग से आक्रान्त होता है। कभी २ दोनों ही तर्फ आक्रान्त होता है। रोग एकाएक ही आक्रमण करता है और २-१ घन्टे से दो एक दिन के अन्दर ही तमाम मुखमंडल

में फैल जाता है। कभी २ तालु व घन्टी में भी यह रोग फैलता है।

चिकित्सा—बेला, कष्टि. ककुलस, ग्रैफाइटिस, केलिम्युर, नक्स, ओपि, रस, प्लामो इत्यादि दवायें उपकारी हैं।

पक्षाघात रोग का भाविफल—उत्तेजक कारण की प्रकृति और उसका निवारण करने की क्षमता के ऊपर इस रोग का भाविफल निर्भर करता है। किसी नयी बिमारीका परिणामस्वरूप से पक्षाघात होने से वह आराम हो सक्ता है। किन्तु सन्यास रोग से, दिमागी बिगार से या मेरुमज्जा के बिगार से पक्षाघात हो तो आराम होना मुश्कील है। ज्यादा उम्र, शारीरिक दुर्बलता और शरीर को ज्यादा जगह का पक्षाघात होने से भाविफल सन्देह जनक है।

सर्वप्रकार पक्षाघात की चिकित्सा।

परिचर्या—इस रोग मे कोई निर्दिष्ट पथ्य की व्यवस्था करना कठिन है। क्योंकि रोग की अधिकता और प्रकृति के अनुसार रोगी का पथ्य व सेवा का बन्दोवस्त करना पड़ता है। रोग का कारण व व्यवस्था के ऊपर ध्यान रख कर हलका लेकिन पुष्टिकर खाद्य की व्यवस्था करना चाहिए। सावधानता के साथ परिमित भाव से पक्षाघातिक

अङ्ग को संचालित कर सकने से वहुत दिन का रोग भी आराम हो सक्ता है। कोई २ कहते हैं कि पीड़ित अंग को सर्वदा गरम कपड़ा से ढंका रखना और गरम पानी से नहा कर सुखा कपड़ा से उत्तमरूप से वदन को मलना अच्छा है। कोई २ विजली लगाने का पक्षपाती हैं।

औषधावली—

डलकामेरा ६-३०—हिम वा ठंढ लग कर वा किसी प्रकार फोड़ा दब कर रोग की उत्पत्ति, हाथ पाँव व जीभ का पक्षाघात। आक्रान्त वाहु वर्फ की तरह ठंढा।

इग्नेशिया ६-३०—रात जागना वा ज्यादा मानसिक परिश्रम से पक्षाघात, हिष्टिरिया के कारण पक्षाघात, अंग प्रत्यंग में सून मालूम होना और उसका कम्पना।

प्लम्वम ३०-२००—सर्वांगिक वा आंशिक पैरालिसिस, ऊपर वाला व निम्न शाखायों का पक्षाघात, आक्रान्त अंग का सूख जाना, उस अङ्ग की संचालन व स्पर्शन शक्ति का रहित होना, रोग का आक्रमण का कवल आक्रान्त अंग का कंपना, मानसिक शक्ति की विकृति, आक्रान्त अङ्ग मे ऐंठन।

एकोनाइट ३-६—मेरुदण्ड में खून की ज्यादती पीड़ितांग में झिनझिनी होना। रोग की नयी हालत में यह फायदेमन्द है।

एगारीकस ६-३०—निम्न शाखा के पैरालिसिस के

साथ बाहु का आक्षेप, सेक्रम (डांड़) और कमर में दर्द, इकट्ठा एक तरफ का हाथ और दूसरे तरफ का हाथ और पैर की पीड़ा।

एलुमिना ३०-२००—स्पाइनल कर्ड की पीड़ा के हेतु पक्षाघात, पैर सून हो जाती है। रोगी अन्धेरा में और आंख बन्द करके चल नहीं सकता है।

एनाकार्डिअम ६-३०—एपोप्लेक्सी के बाद पक्षाघात पीड़ा में उत्कृष्ट है। स्मृतिशक्ति के नाश तथा इच्छासून्यता और मन की शिथिलता। ठेहुना का पक्षाघात, उसका अवश होना व अंकड़ाव।

आरनिका ६ ३०-२००—मेरुमज्जा अथवा दिमाग में जल-संचय हेतु पीड़ा। एपोप्लेक्सि, सख्त चोट लगना, दुर्बलता उत्पादक पीड़ा, बहुत काल स्थायी सविराम ज्वर इत्यादि जनित पैरालिसिस, शरीर में चोट की तरह दर्द, खड़ा होने से ठेहुना टूट जाने के ऐसा होना, स्पर्शज्ञान रहित होना।

आरसेनिक ३०-२००—नितान्त निस्तेज अवस्था और स्नायुशूल।

बैराइटा-कार्ब ६-३०-२००—वृद्धवयस में सर्वांगिक पक्षाघात, स्मृतिशक्ति के नाश तथा हाथ पैर का कम्पन, जीभ का पैरालिसिस। बदन में अवशभाव, रोगी सर्वदा लेटा रहना चाहता है।

बेलाडोना ६-३०—मस्तक में रक्ताधिक्य, एक तरफ को पैरालिसिस, दूसरे तरफ का आक्षेप, मुखमण्डल के पैरालिसिस, विकार।

कस्टिकम ३०-२००—मुखमण्डल, जीभ अथवा एक अंग का पैरालिसिस, उसके साथ शिर चक्कराना, दृष्टिशक्ति की दुर्बलता और क्रन्दनशीलता, चलने मे अक्षमता। अत्यन्त ठन्ड लगने के हेतु पीड़ा। किसी प्रकार का चर्म्म रोग दब जाने के हेतु पीड़ा। पेशियों का सिकुड़ जाना, आक्रान्त अंग मे कसने की तरह दर्द, संधिया अंकड़ा हुआ।

चायना ३०-२००—अत्यन्त शुक्र और रक्तादि श्राव के बाद पैरालिसिस।

ककुलस ६-३० मुखमण्डल वा जीभ के पैरालिसिस। वात जनित रोग, चलने मे अक्षमता, दिल-धड़कना, पीठ मे अत्यन्त ठन्ढ लगने के हेतु पीड़ा। हथेली व पैर के तलवा ठन्ढा, पैरके तलवे मे शोथ के ऐसा फूलना, ज्यादा कमजोरी।

कलचिकम ६-३०—सर्व शरीर का पसीना वा पैर का पसीना अचानक सूख जाने से पीड़ा की उत्पत्ति होने से उत्कृस्ट है।

कोनायम ३०-२००—वृद्धों का पैरालिसिस मे उत्कृष्ट है, विशेषतः नीचे से ऊपर के तरफ बिमारी फैल जाने से।

कुप्रम ६-३०-२००—आंखों के पपुटे बन्द रहना व उस मे आक्षेप, आंख खोलने से आंख का ढेला घुमता रहता है,

टाइफाइड ज्वर और कालेरा के बाद पैरालिसिस । आक्रान्त अंग में आक्षेप ।

जेलासिमिअम ६-३०-२००—संचालन की शक्ति नष्ट हो जाती है। किन्तु बोध शक्ति ठीक रहती हैं. डिफथिरिया के बाद पैरालिस्सि वाकशक्ति के अभाव, आंख का पपुटे का पक्षाघात, आक्रान्त स्थान में सुरसुराहट, उसके अन्दर से कीड़ा चलने की तरह मालुम होना। शरीर का निम्नांश का पक्षाघात, अंग का कम्पना ।

लैकेसिस ३०-२००—वांया तरफ की पीड़ा, मतवाला की तरह चलना, वांया तर्फ की पीड़ा ।

मार्क-सल ६-३०-२००—शाखा समूह का अंकड़ जाना, इच्छानुसार रोगी संचालन नहीं कर सकता है, हाथ पैर का कम्पना।

ओपिअम ३०-२००—एपोप्लेक्सि के बाद पैरालिसिस और स्पर्शबोध न होना मतवाला और वृद्धों के लिये यह दवा उपयोगी है, पैखाना व पेशाब रुक जाना ।

नक्स-भोमिका ३०-२००—मुखमण्डल बाहु अथवा पैर के असम्पूर्ण पैरालिसिस, आंख धुंधली, कान में आवाज, अरुचि, जी मिचलाना, कब्ज, ज्यादा मद्यपान और मानसिक परिश्रम के हेतु पीड़ा में विशेष उपकारी है। निम्न शाखा के पक्षाघात, अंग प्रत्यंग का संकोचन, वृद्धों का मूत्रस्थली का पक्षाघात, आक्रान्त स्थान शीतल, मतवाले की तरह कम्पना, ज्यादा सहवास से पीड़ा ।

फसफोरस ६-३०-२००—स्पाइनल कर्ड की पीड़ा के हेतु पैरालिसिस। अत्यन्त रति क्रिया अथवा प्रसव के बाद पैरालिसिस, पीठ में से टनकने की तरह दर्द आरम्भ होकर निम्न शाखायों मे फैलता है, मुखमण्डल का आधा हिस्सा का रोग। कीड़ा चलने की तरह मालूम होना।

रस-टक्स ६-३०-२००—पानी मे भीगने के हेतु पीड़ा, समस्त शरीर मे वात ऐसा दर्द, पीड़िताङ्ग में समय २ झिन २ करना और टनकना, स्थिरभाव से रहने से, ठण्ढा पानी से धोने से या वर्षा के दिनो में पीड़ा की वृद्धि। आक्रान्त स्थान सख्त, इसमें सुरसुराहट व भारीपन, एक तर्फ की, विशेष कर दहिना तरफ की पीड़ा।

रुटा ६-३०-२००—ठन्ढ लगने के हेतु मुखमंडल मे पैरालिसिस।

स्ट्रैमोनियम ६-३०-२००—कन्भलूशन (फरका) के अन्त मे पैरालिसिस तथा एक तरह का पैरालिसिस और दूसरे तरफ का आक्षेप।

जिंकम ३०-२००—मद्यपान के बाद पीड़ा की वृद्धि सर्वदा पैर की अस्थिरता। खुली हवा में अङ्ग में कमजोरी। लिखने के समय हाथ का कम्पनी, पानी में भींगना या पैर का पसीना रुकने से बिमारी।

शीर्णता के साथ शिशु को पक्षाघात ।

INFANTILE WASTING PALSY.

इस से मांसपेशीसमूह सूखता जाता है। ज्वर वा कन्भलशन होकर यह रोग आरम्भ होता है अथवा रोग होने का पूर्व्व मे किसी प्रकार का लक्षण प्रकाश न होकर एकाएक पक्षाघात दिखाई पड़ता है। शरीर के धड़ और शाखा समूह मे इकट्ठा वा दो एक अङ्ग में पक्षाघात होता है। पीड़िताङ्ग वर्द्धित नहीं होता है, क्रमशः सूखता जाता और ढीला होता जाता है।

चिकित्सा—तेज ज्वर, प्यास, वेचैनी ठंढी सूखी हवा से विमारी—एकोनाइट। दांत उठने के समय में बिमारी हो तो—कैल्केरिया-कार्व या कैल्क फस, टीका देने के वाद यह रोग हो तो—थुजा। आर्सेनिक, कष्टि, जेल्स, प्लम्बम, सल्फर, सोरिनम इत्यादि भी उपकारी है।

सिर चक्कराना वा भार्टिगो।

(VERTIGO—DIZINESS)

रोग परिचय—सिर व देह में किसी प्रकार संचालन के साथ वा संचालन वोध के साथ वा चारो ओर की चीजों का संचालन वोध के साथ दिमागी पीड़ा को सिरचक्कराना वा भार्टिगो कहते हैं।

कारण—दिमाग में खून की कमी या ज्यादती, हाजमे की खरावी, हस्तमैथुन करना व शराव पीना इत्यादि अत्याचार अथवा गरम औषध व्यवहार, दिमाग मे चोट लगना, फोड़ा वगैरह की दवा देना, दिमागी खरावी, बुढ़ापा इत्यादि से यह रोग होता है।

लक्षण—यह रोग होने से रोगी ख्याल करता है कि, उसके चारो ओर की चीजें घूम रही है, अथवा वह खुद ही चारो तर्फ घूम रहा है नजर धुंधली होना, मतली वा कै होना, आंख के सामने चिन्गारियां दिखाई पड़ता है, आंख के ढेले में दर्द होता है। कान में भनभन आवाज, चेहरा वेरौनक, पेट में दर्द, छाती में ज्वाला, कब्ज, पेट फूलना, दस्त वगैरह लक्षण भी हो सक्ता है। स्नायविक सिरचक्कराना से रोगी का स्वभाव तेज और वेचैनी व अनिद्रा होता है। बुढ़ापा के कारण सिरचक्कराने में किसी प्रकार का मेहनत के बाद वा उठकर बैठने से या खड़ा होने से सिरचक्करोता है, और आंख में अंधेरा देखना व अतिशय दुर्वलता मालूम होती है।

भाविफल—सिरचक्कराना के प्रकार भेद के अनुसार इस का भाविफल निर्णय किया जाता है। पाकाशयिक वा गैष्ट्रिक पीड़ाजनित सिर चक्कराना के भाविफल शुभ है। स्नायविक सिरचक्कराना अगर दिमाग का विधानगत पीड़ाजनित न हो तो भी भाविफल शुभ है। बुढ़ापा के

कारण सिरचक्कराने का भाविफल अशुभ है।

आनुसंगिक उपाय—प्रतिदिन भोर मे बिछावन त्याग और दो तीन बार शीतल जल से नहाना व खुली हवा मे टहलना अतिशय उपकारी है। दिमाग मे खून की ज्यादती के कारण सिरचक्कराने के लिए किसी प्रकार उत्तेजक वा मादक द्रव्य का व्यवहार निषेध है। दिमाग मे खून की कमी के कारण सिरचक्कराने के लिए पुष्टिकर व हलका पथ्य होना चाहिए। ज्यादा शारीरिक परिश्रम व ज्यादा भोजन न करना चाहिए।

चिकित्सा :—

रक्ताल्पताजनित सिरचक्कराना—वैराइटा-कार्व,फैफाइ, साइलि, लाइको, नक्स।

रक्ताधिक्य जनित रोग—एकोन, बेल, आर्निका, लैके, नक्स,

पाकाशयका पीडा जनित सिरचक्कराना—एन्टिम-क्रुड, नक्स-भोमिका, पलसेटिला सल्फर।

सिरचक्कराने के साथ वमन—आर्सेनिक इपिकाक, नक्स, पल्स सिरेट्रम।

सिरचक्कराने के साथ मूर्च्छा—कैमो, मस्कस, नक्स, हिपर, सल्फर।

शयनावस्था से उठने के समय सिरचक्कराना—एकोन, बेल, ब्राई।

सिरचकराने के साथ अस्पष्ट दृष्टि—एकोन, वेल, हायो-सायमस ।

हैजा के कवल सिर में चक्कर—कैल्के, पलसे सिपिया, भिरेट्रम ।

हैजा के समय रोग—ग्रैफ. लाइको, फस, हायोसा ।

हैजा के बाद सिर में चक्कर - ग्रैफाइटिस, नक्स, फस ।

कृमि के कारण रोग—मारकुरियस, सिकुटा इत्यादि ।

एकोनाइट ६-३०—पुष्ट व ज्यादा खुन वाला शरीर के लोगों की पीडा, चेहरा लाल, मृत्युभय, वैठी हुई हालत से खड़ा होने से या ऊपर के ओर ताकने से सिरचकराना, आंख के सामने कुहासा के ऐसा मालुम होना, बेहोशी, भय हेतु सिरघुमना ।

आर्निका ६-३०—सिर मे चोट लगना वा दिमाग में खुन की ज्यादती होने से रोग, मतली, लेटा रहने से उसकी कमी ।

एन्टिम-क्रुड - १२-३० - ज्यादा भोजन करने से सिर-चकराना,, जीभ पर सफेद रङ्ग का मोटा लेप ।

आर्जेन्टम-नाइट्रस ६-३०-२००—सुवह को सिर दर्द व सिरचकराना, सिर वड़ा मालूम होना साधारण दुर्वलता, स्मृतिशक्ति की कमी, मानसिक परिश्रम-जनित सिरचक्कराना में उपकारी है । कान में वजवज शब्द ।

कक्कुलस ६-३०—शयनावस्था से सीधा हो कर बैठने से अथवा गाड़ी, पाल्की, किस्ती, जहाजादि में भ्रमण करने से सिरघुमना ।

चायना ६-३०-२००—ज्यादा रक्त निकल जाने से कमजोरी के साथ सिरघुमना, नीद की कमी ।

ग्रैफाइटिस ३०-२००—सुवह को बिछावन से उठने से सिरघुमना विशेष कर ऊपर के ओर ताकने से उसकी वृद्धि, सिरघुमने के साथ सामने के ओर गिरने के डर, दिमाग मे सून भाव ।

लाइकोपोडियम ३०-२००—सुवह को उठने से मतवाले की तरह सिरघुमना, मालूम होता है कि तमाम चीज घुम रही है, साम को चार बजे से ८ बजे तक सिरघुमना ।

लैकेसिस ३०-२००—विशेष कर आखरी रजोवन्द होने के उम्र में सिरघुमना, सुवह को नीद से जागते ही सिरघुमना, सिर नीचा करने से सिरघुमना, वार २ थोड़े देर के लिए सिरघुमना ।

चिकित्सा ।

एगारोकस ६-३०—खूली हवा में चलने फिरने के समय सिर चक्कराता है मतवाले की तरह टहलता रहता है ।

एमन-कार्ब ६-३०—पढ़ने के समय और बैठा रहने से

सिर चक्राता है और चलने फिरने से आराम मालूम होता है।

एनाकार्डिअम ६-३०-२००—स्मृतिशक्ति की गड़बड़ी, धुंधली दृष्टि, सामने झुकने से मालूम होता है कि वायां तरफ से सिरघूम रहा है।

बेलाडोना ६-३०-२००—सिरचक्राना से मालूम होता है कि चारो ओर की चीजें घूम रही है, एक तरफ या पीछे के तरफ गिर जाने के डर होता है, आखों के सामने भगयोगिनी की तरह दिखलाइ देता है। दबदबाने के साथ सिर पीड़ा। आंख व चेहरा लाल, सिर नीचा करने से सिरपीड़ा की ज्यादती।

ब्रायोनिया ३०-२००—सिरचक्राना, मालूम होता है कि रोगी का दिमाग खूला हुआ है, खासकर सामने के तरफ झुकने से या सिर उठाने से।

कार्बो-भेज ३०-२००—पेट फूलना और कोष्ठबद्धता के साथ सिरघुमना।

कैल्केरिया-कार्ब ३०-२००—ऊपर के तर्फ ताकने से अथवा एकाएक गरदन फिराने से सिर घुमता है। पांव ठन्ठो और गीला। ऊपर चढ़ने के समय या खूली हवा मे सिर घुमना। टहलने के समय सिर घुमना, सुबह को बिछावन से उठने से सिरघुमना। कान में गर्जन।

सिकुटा ६-३०—सिर चक्राना के साथ सामने के ओर गिर जाना।

कोनायम ६-३०—लेटी हुई अवस्था में रहने से अथवा किसी तरह गरदन को फिराने से ही सिर चकराता है। बुढ़ों का रोग, रक्तालपता व तमाकू ज्यादा पीने से रोग।

साइक्लेमेन ६-३०—कोई चीज के ऊपर निर्भर कर के खड़ा होने से शिर चक्कराता है, रोगी मालूम करता है कि उसका सिर चल रहा है।

डिजिटेलिस ६-३०—शिर चक्कराने के साथ शरीर के कम्पन, स्मरणशक्ति के अभाव, मृदु नाडी।

जेलसिमिअस ६-३०—सिर चक्कराने के साथ दिमाग की गड़बड़ी, धुंधली दृष्टि, नाड़ी द्रुत, मतवाले की तरह चलता है, शिर हलका और बड़ा मालुम होता है।

ग्लोनइन ६-३०—शिर चकराना और उसके साथ दिमाग की गड़बड़ी, मूर्छा; आंखों के सामने काला २ छोटे २ चिंगारियां दिखाते हैं, सामने झुकने से वा सिर हिलाने से पीड़ा की वृद्धि।

नाइट्रिक-एसिड ३०-२००—प्रातः काल में सिर चकराना, कुछ कहना चाहता है किन्तु भूल जाता है, बैठे रहने से आराम मालुम होता है।

नक्स-मोस्केटा ३०-२००—मतवाला की तरह मार्टिगो, खुली हवा मे वृद्धि, दुर्बलता, पैर में झिनझिनी, रोगी को मालुम होता है कि वह हवा में उड़ रहा है, निद्रालुता।

नक्स-भोमिका ३०-२००--सिरदर्द, अक्षुधा, वमन, पेट में ज्वाला, अजीर्ण दोष, अर्श रोग, आहार के वाद पीड़ा की वृद्धि, सर्वदा बैठा रहना और मानसिक परिश्रम करना, शराव, कौफी, तम्वाकू, अफीम इत्यादि सेवन व रात जागना हेतु पीड़ा।

ओपियम ३० २००—बिछावन से उठने से अत्यन्त अधिक सिर चकराता है, फिर लेटना पड़ता है।

पलसेटिला ३०-२००—रोगी उठ कर खड़ा होने से मतवाले की तरह टहलता है, आंख खोलने से और आहार के वाद और सन्ध्या के समय पीड़ा की वृद्धि, खूली हवा में आराम।

साइलिसिया ३०-२००—ऊपर के तरफ ताकने से सिर चकराना।

स्पाइजिलिया ३०-२००—नीचे के तरफ ताकने से सिर चकराता है (कैलमिया, ओलिएडर)।

थेरिडिअन ६-३०—आंख मूंदने से सिर चकराना (लैकेसिस थुजा)। आंख खोलने से सिर चकराना, टैवेकम।

समुद्रपीड़ा वा सी-सिकनेस।

SEA-SICKNESS.

रोग परिचय—गाड़ी, किश्ती वा जहाजादि मे भ्रमण करने के समय मतली व कै होता है, सिर घुमता है, कै

होकर पेट से तमाम चीज निकल जाती है, रोगी की शारीरिक अवस्थानुसार रोग प्रवल वा मृदु होता है। जो कभी जहाज में सवार न हुआ है वह जहाज मे चढ़ने ही से इस रोग से आक्रान्त होता है, जहाज मे कुछ दिन रहना अभ्यास होने से फिर यह रोग नहीं होता है।

आनुसंगिक उपाय रोगी को थोड़ा २ पानी या वर्फ खिलाने से उपकार होता है। रोगी को स्थिर भाव से लेटा रखना अच्छा है। हलका व वलकारी पथ्य देना चाहिए। आहार नियमित होना चाहिये।

चिकित्सा :—

आर्सेनिक ३०-२००—मतली व कै के वजह से रोगी निहायत कमजोर हो जाता है कोई चीज खाने पीने ही से कै हो जाता है, तेज प्यास, बार २ थोड़ा २ पानी पीना, बेचैनी मौत का डर।

ककुलस ६-३०—यह एक उत्तम दवा है, सिरघुमना, बिछावन से उठने ही से सिरघुमना व मतली, खाने पीने से ज्यादा होना।

इपिकाक ६-३०—लगातार सख्त मतली व कै, मेदा मे सूनभाव।

नक्स-भोमिका ६-३०-२००—समुद्रयात्रा के केवल इस दवा को व्यवहार करने से यह पीड़ा होने का डर कम

रहता है। जहाज से उतरने के बाद भी सिर घुमता है, कब्ज, अरुचि ।

पेट्रोलियम ३०-२००—आसन से उठने से सिरघुमना, जी मिचलाना व कै होना ।

टेवेकम ६-३०—जी मिचलाने के साथ अतिशय दुर्वलता व मूर्छा भाव, खड़ा रह नहीं सकता है, ठंढा पसीना ।

कलचिकम ६-३०—रसूई की बू ही से मतली होना ।

दिमाग में रक्ताधिक्य ।

CONGESTION OF THE BRAIN.

रोग परिचय—दिमाग की खून की नलियों मे ज्यादा खून आ जाने से उसको दिमाग में रक्ताधिक्य कहा जाता है ।

कारण—नाना कारण से यह रोग होता है। सर्वांगिक रक्ताधिक्य, ज्यादा खाना पीना, ज्यादा शराब पीना, सर्दी गर्मी, ज्यादा मानसिक परिश्रम, मानसिक उत्तेजना बवासीर से रक्तस्राव व एकाएक हैज रुक जाना वगैरह, स्वभाविक रक्तस्राव बन्द होना, दिल की खराबी, एकाएक शोक व हर्ष होना इत्यादि से यह रोग होता है।

लक्षण—साधारणतः इस रोग में दो प्रकार का लक्षण होता है—उत्तेजना का लक्षण व अवसाद का लक्षण उत्तेजना का लक्षण मे सिर दर्द, सिर में दबदबाना, सिर चकराना, कान में भनभनाहट, पुतली का संकोचन, अनिद्रा,

एकाएक चौंक उठना, नाड़ी जल्द, चेहरा व आंख लाल प्रभृति लक्षण प्रधान है। अवसादक लक्षण में इन्द्रियों की जड़ता वा निस्तेजता, पेशियों की कमजोरी, मानसिक अवसाद, तन्द्रा, पुतली का फैल जाना, दिल का विगार इत्यादि लक्षण प्रधान है। अचानक दिमाग में ज्यादा खून होने से रोगी अचानक ही वेहोश हो जाता है।

साध्यफल—पीड़ा मृदु होने से रोगी जल्द ही आराम होता है किन्तु पीड़ा कठिन होने से व सन्यास रोग की तरह लक्षण होने से मारात्मक होने का खौफ है।

आनुसंगिक उपाय—दिमाग मे ज्यादा खून होने से शीतल जल से कपड़ा भिंगा कर रोगी के सिर पर पट्टी देना, अथवा अइलब्लाथ में वर्फ लेकर सिर पर रखना, व रोगी का पांव को गरम पानी मे डूबा रखना चाहिए। जिन लोगो को कभी २ यह रोग होता है उन लोगों को हर रोज ठन्डा पानी से नहाना चाहिए। सर्व प्रकार मानसिक उत्तेजना त्याग करना चाहिए। खुली हवा रोगी के लिए निहायत जरूरी है। गरम खाना पीना त्याग करना चाहिए। मछली मांस व ज्यादा तेल वा घी व्यवहार न करना चाहिए, गजा हल्का व पुष्टिकर होना चाहिए।

चिकित्सा :—

भयजनित रोग—एकोनाइट, ओपिअम।

ज्यादे खून वाला शरीर वालों के लिये—

एकोनाइट, वेल, सैंगुइनेरिया।

कृमिजनित रोग—सिना, सल्फर।

शराब पीनेवालों के रोग—नक्स, ओपिअम, सल्फ।

एकोनाइट ६-३०—रक्ताधिक्य-धातु के रोगी, प्रबल मानसिक उत्तेजना जनित पीड़ा, चेहरा लाल व उसमें गरमी मालूम होना, सिर नीचा करने से, घास मे सिर घुमना, सिर मे पूर्णता, आंख के सामने अंधेरा-देखना। भयजनित पीड़ा।

बेलाडोना ६-३०—सिर मे रक्ताधिक्य, आंख व चेहरा लाल, पुरपुरी मे दबदबाना के साथ सिरदर्द, रोशनी व सोरगूल बर्दास्त न होना, हिलने डोलने से और सिर नीचा करने से दर्द की ज्यादती।

आर्निका ६-३०-२००—आघातादि जनित पीड़ा, सिर मे ज्वाला व गर्मी, शरीर का अन्यान्य हिस्सा ठन्ढा।

ओपिअम ३०-२००—भयजनित पीड़ा, चेहरा कुछ फूला व बैगनी रङ्ग का, आधा बेहोशी, बगैर लेटने के रह नही सक्ता है। नीद मे नाक का खरखराना, आंख आधी खुली हुई, नाड़ी पूर्ण व मृदु, कब्ज।

नक्स-भोमीका ६-३०-२००—शराब पीना, रात जागना इत्यादि अमिताचार से पीड़ा, सिरघुमना, सिर अस्वाभाविक बड़ा मालूम होना, अनिद्रा किन्तु आंख मुन्द कर रहने की इच्छा। सिर मे दर्द। बुढ़ों का रोग मे उपकारी है।

हायोसायमस ६-३०-२००—आंख लाल व घुमने वाला, बेहोश भाव, प्रश्न का जवाब देता है लेकिन उसके बाद ही प्रलाप बकता है, जागने की हालत में बरबराना, भाग जाने की चेष्टा, बिछावन खोटना, बेचैनी, निद्राहीनता वा लगातार नींद में पड़ा रहना, निम्न अंग शीतल।

जेलसिमिअस ६-३०—सिरदर्द, सिर का पीछे से सामने के ओर दर्द का फैलना, मानसिक जड़ता के साथ सिर में भार बोध, चेतनाधिक्य, शिशुओं का दांत निकलने के वक्त की पीड़ा और उसके साथ ज्यादा ऊंघाय व आक्षेप, एक वस्तु दो नजर आना।

ब्राइओनिया १२-३०-२००—सिर के दोनों ओर में दर्द के साथ चांप मालूम होना, सिर नीचा करने से फटने की तरह दर्द कब्ज, गरमी के दिनों की पीडा।

ग्लोनइन ६-३०—सिर घुमना, सिरदर्द, दर्द नीचे से ऊपर के ओर चलता है, सिर के ऊपर व सामने पूर्णता बोध, आंख के सामने चिनगारियां नजर आना, कान में घंटे की आवाज मालूम होना, अनिद्रा, बेचैनी, प्रलाप।

भेरट्रम-भि ६-१२—यह एक उत्तम दवा है। शिशुओं का दांत निकलने के समय का रोग। तेज सिरदर्द, सिर में दबदबाना व गर्मी, सिर में बोझ व पूर्णता, बेहोशी, एक वस्तु दो नजर आना, अथवा नजर धुंधली, मतली व कै। दिल की खराबी रहने से निम्न शक्ति की दवा इस्तेमाल नहीं करना चाहिये।

सैंगुइनेरिया ३०-२००—दहिने ओर मे दर्द की ज्यादती, बेलाडोना का समस्त लक्षण, सुवह को वृद्धि।

ष्ट्रामोनियम ३०-२००—दिमाग मे ज्यादा रक्ताधिक्य और तेज प्रलाप, बेहोशी, चेहरा लाल, पुतली फैली हुई, तन्द्रा तेज प्यास।

—०—

दिमाग का प्रदाह वा सेरिब्राइटिस।

INFLAMMATION OF THE BRAIN OR CEREBRITIS

कारण—तेज ठंढ वा गर्मी लगना, चोट लगना, ज्यादा शराब पीना, शोक व भय वगैरह इसका प्रधान कारण है, कोढ़या लालज्वर, जहरवाद वगैरह दव जाने से भी यह रोग होता है।

लक्षण—रोग क्रमश वा एकाएक हो सक्ता है। रोग प्रकाश होने से ज्वर, सिर पीड़ा, जाड़ा, कै, मतली प्रभृति होता है। कभी २ पहले ही विकार होता है। शिशुओं का एकाएक फरका व आक्षेप हो सकता है। रोशनी बर्दास्त नहीं होता है, सिर गर्म व आंख व चेहरा लाल होता है। नाड़ी जल्द व पूर्ण व कब्ज होता है। चन्द रोज के बाद विकार मे रोगी बिछावन खोटता है, अटपट बोलता है, सिर हिलाता रहता है। नींद होना, स्वांस कष्ट, स्पर्श-शक्ति का लोप वा पक्षाघात वगैरह होता है, नाड़ी रफ्ते २

मृदु होती जाती है पेशाब बन्द हो जाना, पुतली का फैलना बदन ठंढा, बदन मे पसीना, बेखबरी से पैखाना, पेशाब होना, निढाल हालत वगैरह क्रमशः आता हैं। आखिर में रोगी की मृत्यु होती है।

भावीफल—इस रोग का भावीफल प्रायः संघातिक होता है, सुचिकित्सा होने से कभी २ रोगी बचता है, लेकिन प्रायः ही कोई न कोई अंगहानि होता है वा पक्षाघात होता है।

आनुसंगिक चिकित्सा—सिर का बाल छांट कर रोगी के सिर पर बर्फ वा ठंढा पानी का पट्टी देना चाहिये, सिर मे हवा देना चाहिये, पांव को गरम रखना चाहिये। रोगी को हमेशा मानसिक शांति देना चाहिये। रोगी को इच्छानुसार शीतल जल पीने को देना चाहिए, पथ्य हलका होना चाहिये।

चिकित्सा —

आघात जनित पीड़ा—आर्निका, हिपर।

सूर्याघात जनित पीड़ा—ग्लोनइन, बेल, भेरेट्रम-भिर।

आक्षेप के साथ रोग — कुप्रम, हाइड्रोसायनिक-एसिड।

आर्निका ६-३०-२००—आघात जनित पीड़ा ऊंघाय, सिर घुमना इत्यादि।

बेलाडोना ६-३०—दबदबाने के साथ सिर दर्द, आंख व चेहरा लाल, तेज बिकार, भागने को चाहना, चिल्लाना, मारना, काटना इत्यादि, प्रबल ज्वर, रोशनी बर्दास्त न होना, बार २ चौंक उठना।

ब्रायोनिया १२-३०-२००—सिर में ज्यादा खून होना, सिर दर्द, विकार में अपना कारोबार का वा खेलाधुला का बात करना, कहता है कि घर जाऊंगा, ज्यादा प्यास, कब्ज, रोगी स्थिरभाव से रहता है। हरकत से तकलीफ की ज्यादती।

सिना ३०-२००—कृमिजनित पीड़ा, नाक खोंटना, नींद में दांत कटकटाना, नींद से रो कर चौंक उठना।

जेलसिमियम ३०-२००—शिशुओं का दांत निकलने के समय का रोग, आंख का पपुटा भारी व कमजोर, शोथजनित पीड़ा, नजर कमजोर।

ग्लोनाइन ६-३०—सूर्याघात वा लू लगने से रोग, सख्त सिर दर्द, आंख लाल, आंख के ढेले में दर्द।

हिपर-सल्फर ३०-२००—आघातजनित रोग, शिशुओं का दिमाग के प्रदाह की तरुणावस्था कम होने के बाद यह दी जाती है।

हाइड्रोसायनिक-एसिड ६-३०-२००—सिरदर्द, कै, जल्द वेकायदे व पतली नाड़ी, स्वांस वेकायदे, अटपट बोलना, आक्षेप, रोग की शेष अवस्था में यह दी जाती है।

आक्षेप प्रधान रोग मे यह उपकारी है।

हायोसायमस ६-३०-२००—ऊंघाय, बेहोशी, बरबराना, पागल की तरह चेहरा, हाथ पांव का कंपना, एक चीज, दो नजर आना, चौंक उठना, नंगा होना, बिछावन खोंटना।

पलसेटिला ३०-२००—कान वा नाक का श्राव बन्द हो कर रोग, सिरघुमना।

ओपिअम ३०-२००—बेहोशी, खर्राटे के साथ स्वांस, नाक बोलना, आंख आधी खुली हुई; चेहरा बैंगनीरङ्ग, डरना चौंक उठना, कब्ज। शोक व भयजनित पीड़ा।

स्ट्रामोनियम ३०-२००—नितान्त अज्ञान-भाव, चारो ओर मे क्या हो रहा मालूम नही होता है, तेज विकार लगातार बकवाद करना, मारने की चेष्टा, अकेले रहने मे व अंधेरा मे डरता है, दांत में सूखा मैल, काला व पतला मल।

भिरेट्रम-भिर ६-३०—घाम से पीड़ा, सिर में बोझ व दर्द, सिरघुमना, कान मे गर्जन, एक चीज दो नजर आना, मतली व कै, स्मृतिशक्ति की कमी, पक्षाघात।

दिमाग की गिलाफ झिल्ली का प्रदाह वा मेनिंजाइटिस।

(MENINGITS)

कारण—यह रोग प्राय ही दूसरे २ रोगों के साथ होता है—यथा,—कान व नासिका का प्रदाह, दिमाग मे फोड़ा होना, दिमाग का टिववारकुलोसिस होना, टाइफाएड ज्वर, कोदवा लाल ज्वर, गर्मी रोग इत्यादि के साथ यह होता है। ऋतु लोप, ठंढ लगना, गर्मी लगना, शोक, भय, मानसिक उत्तेजना, अमिताचार, चोट लगना वगैरह से भी यह रोग होता है। चमड़े के रोग वा दस्त रुक जाने से भी यह होता है।

लक्षण—यह रोग हर उम्रमें हो सक्ता है, लेकिन बाल्यावस्था मे ज्यादा होता है। बालिकायों से बालकों में ज्यादा होता है। इस रोग का लक्षण प्राय तमाम ही दिमाग का प्रदाह का लक्षण की तरह है। दोनों का लक्षण मे जो तफरका है सो नीचे दिया जाता है—

दिमाग का प्रदाहमें—रोग का प्रारम्भ से ही किसी न किसी स्नायविक क्रिया लोप पोती है वा स्पर्शशक्ति की अभाव होती है। रक्तसंचालन यन्त्र की उत्तेजना प्रकाशित नही होती है वा प्रलापादि नही रहता है।

मेनिंजाइटिस में—रोग-प्रकाश का कुछ काल के बाद स्नायुशक्ति की क्रिया लोप पाती है। प्राय स्थानिक रक्तसंचालन की ज्यादती होती है, आक्षेप व प्रलाप रहता है

अन्याय सिरस झिल्ली (रसस्राव झिल्ली) के प्रदाह में जैसे प्रदाह के फल से झिल्लियों में रससंचय होता है इससे भी वैसा होता है ।

भावी-फल—पीड़ा कठिन है, लेकिन सुचिकित्सा होने से आराम होता है ।

आनुसंगिक उपाय—सिर में ठंढे प्रयोग करना उपकारी है ।

चिकित्सा:—

एकोनाइट ६-३०—अत्यन्त ज्वर, अस्थिरता, प्यास, घबराहट । नाड़ी पूर्ण, द्रुत, सूत्रवत ।

एपिस ६-३०-२००—रोगी सोते २ एकाएक जोर से चितकार करके उठता है, सिर को पीछे के तरफ हिलाकर लोटाते रहता है, आंख धसी हुई और आधा खुली हुई रहती है टेढ़ी दृष्टि, पुतली फैली हुई ।

एपोसाइनम ६-३०-२००—सिर की हड्डियों के जोड़ खुल जाते है, बेहोशी ।

आर्निका ६-३०-२००—आघातजनित पीड़ा, पीव होना । दिमाग मे रससंचय, गहरी नींद, सिर गर्म, शरीर ठंढा ।

बेलाडोना ६-३०—चेहरा लाल और गर्म, आंख चमकीली, पुतली फैली हुई, आंख के गोला घुमता रहता है,

टेढ़ी दृष्टि, अन्धापन, पुरपुरी मे दबदबाहट, ज्यादा ऊंघाय किन्तु सो नहीं सकता है, नीद से चौंक उठता है, आक्षेप।

ब्राइयोनिया ३०-२००—अत्यन्त सिर दर्द, जरा सा हिलने डोलने से वृद्धि, सर्वदा चुप चाप पड़ा रहना चाहता है, जीभ, ओष्ठ, मुंह, सब अत्यन्त सूखा, कब्ज, निद्रित अवस्था में किसी चीज को चुसने की तरह मुंह की हरकत।

सिना ३०-२००—कृमी के हेतु मेनिंजाइटिस की तरह लक्षण होने से दिया जाता है।

सिकुटा ६-३०-२००—आक्षेप से गरदन और सिर पीछे के तरफ टेढ़ा हो जाता है। पुतलियाँ ऊपर चढ़ जाती है।

कुप्रम ६-३०-२००—सिर गर्म, बेहोश अवस्था, सर्वांग में ऐंठन, सर्वदा साँप की तरह जीभ निकालता रहता है, पाँव ठंढा, नाखून व चेहरा नीला।

जेलसिमिअम ६-३०-२००—निहायत कमजोरी, सर्वदा नीद मे पड़े रहना, प्यास नहीं होता है, सिर गर्म, हाथ पाँव ठढा, सर्वदा थोड़ा २ पसीना होता है।

हेलिबोरस ६-३०-२००—मतवाले की तरह सिर चकराना, आँख फाड़ कर ताकना; आँख के गोली का घुमता रहना, आंख अर्द्ध मुद्रित, टेढ़ी दृष्टि, ललाट में ठढा पसीना, बेहोशी, नीचला चहु का गिर जाना सिर को तकिया के ऊपर गाडता रहता है। बगैर इच्छा के एक हाथ और एक पाँव का हिलता रहना, बेहोशी में चितकार करना।

केलि-हाइड्रो ३०-२००—कण्ठमाला व यक्ष्मा के धातु के लोगों के लिये यह उत्कृष्ट औषध है, पीड़ा की पहले से शेष तक यह औषध उपकार करता है।

ओपिअम ३०-२००—बिलकुल बेहोश अवस्था, खर्राटे के साथ स्वांस। बैंगनी रंग के फूला २ चेहरा।

स्ट्रामोनियम ३०-२००—सिर सामने के तरफ टेढ़ा हो जाता है, पुतली संकुचित, सर्वदा रोशनी में और साथियों के साथ रहना चाहते हैं। तोतलापन, हाथ पैर मे एंठन। तेज विकार, लगातार बकवास।

टुबरकुलिनम—इस औषध का २०० शक्ति के एक खुराक प्रयोग कर के बहुत रोगी मे फल मिला है। एक मात्रा प्रयोग करके दो तीन दिन तक इन्तजार करना चाहिये।

ओपियम, ष्ट्रामोनियम, आयोडियम, रसटक्स भी उपकारी है।

दिमागका प्रदाह की चिकित्सा देखिये।

:——.——:

दिमाग का शोथ वा हाइड्रोकेफेलस।
(HYDROCEPHALUS.)

रोग परिचय—दिमाग अथवा उसकी गिलाफ झिल्ली में पानी उतरने से उसको हाइड्रोकेफेलस कहते है।

कारण—नानाविध कारण से यह रोग होता है। गर्भ ही में अथवा जन्म के बाद ही बच्चा को यह रोग होता है।

रोगी का जन्म ही से यह रोग प्रकाश न पावे तो इसका कारण निर्णय करना कठिन है।

कण्ठमाला-धातु के बच्चों को यह रोग ज्यादा होता है। कोदवा, चेचक, लाल ज्वर प्रभृति रोग एकाएक दब जाने से और अतिसारादि का परिणाम से भी यह रोग हो सक्ता है।

लक्षण—प्रायः शिशु व कम उम्र के बालक-बालिकाओं का यह रोग होता है। शिशु अस्थिर, उसको नींद नहीं होती है। सर्वदा खिनखिनाता रहता है, खाने नहीं चाहता है—खाने से भी उपयुक्त पुष्टि नहीं होती है। सिर गर्म, पुतली फैली हुई, रोशनी व शोरगुल बर्दाश्त कर नहीं सक्ता है, नींद से चौंक उठता है, जाग कर चिल्लाता है। रोग की द्वितीय अवस्था में दिमाग में रस-संचय होता है, नाड़ी मृदु होती है। रोगी प्राय. हमेशा ही चिल्लाता है। चेहरा, ऊपर का होठ और बाहु का आक्षेपिक स्पंदन, सिरघुमना इत्यादि लक्षण होते हैं। प्राय ही मानसिक गड़बड़ी होती है। पीड़ा कठिन होने से पक्षाघात भी हो सक्ता है। खोपड़ी का जोड़ों खुल जाते हैं और खुले हुए जोड़ों को जगह तरल पदार्थ का थरथराहट मालूम पड़ता है।

भाविफल—यह रोग से मृत्यु हो सक्ती है। शिशुकाल बीत जाने से आसन्न मृत्यु का डर नहीं रहता है।

आनुसंगिक उपाय—प्रतिदिन नियमित व्यायाम,

खुली हवा में भ्रमण करना, जिस से किसी प्रकार मानसिक उत्तेजना न हो सके ऐसा विषयों में ख्याल रखना चाहिए। सिर ठन्ढा और पांव गरम रखना चाहिए। जिस परिवार में यह रोग देखा गया है वहां का नवजात बच्चों को मां का दूध के बदले मे दूसरा दुध पीलाना चाहिए। लघुपाक व पुष्टिकर खाद्य देना चाहिए।

चिकित्सा—

एकोनाइट ३-६-३०—रोग की पहली हालत मे ज्वरभाव, प्यास, बेचैनी, घबराहट, डर, रोना, शोरगुल, वर्दास्त न होना, सब्ज दस्त वगैरह लक्षण मे दिया जाता है।

एपिस ६-३०-२००—गरमो के दिनो का दुर्वलकारी अतिसार का परिणाम में यह रोग होना, तेज ज्वर व प्रलाप, सिर गर्म लेकिन शरीर का अन्यान्य हिस्सा ठन्ढा, मतली व कै, अतिशय शीर्णता व दुर्वलता, नाड़ी पतली, जीभ सूखा, प्यास न होना, सिर में ज्यादा पसीना, वार २ थोड़ी २ पेशाब होना, नींद की हालत मे वार वार जोर से चिल्लाना। सिर बड़ा होना। पुतलियों का नीचे की ओर घसक आना।

आर्जेन्टम-नाइट ३०-२००—पेशाब बन्द, नियमित मलत्याग, मल मक्खन की तरह, आहार के बाद कुछ हरापन पानी वा दूध का कै, पुतली फैली हुई, पक्षाघात, आक्षेप, मानसिक शक्ति का अभाव।

आर्सेनिक ३०-२००—दुर्बलकारी अतिसार के बाद रोग। ज्यादा ऊंघाय, टकटकी लगाकर ताकना, बेहोश भाव, बे मालूम पैखाना व पेशाब होना, निम्नाग का पक्षाघात, पुतली का फैलना, श्रवणशक्ति की कमी, प्यास, बेचैनी।

एपोसाइनम ६-३०—सिर बड़ा, खोपड़ी के जोड़ों का खुल जाना, कपार का उभरना।

इथुजा ६-३०—ज्यादा रोज का अजीर्णदोष, दूध हजम न होना, दही बन कर कै होना, ज्यादा घबराहट व रोना, नींद से चौंक उठना, प्यास न होना, आक्षेप।

बेलाडोना ६-३०-२००—चेहरा व आंख लाल, आंख का घुमना पुरपुरी का धकधकाना, नींद से चौंक उठना, तेज विकार, शोरगुल व रोशनी बर्दास्त न होना।

ब्राइयोनिया १२-३०-२००—पुतली का फैलना, होंठ व जीभ सूखा, ज्यादा प्यास, जीभ पर पीला मल, उठ कर बैठने से जी मिचलाना, कब्ज, मल सूखा व कठिन।

कैलकेरिया-कार्ब ३०-२००—कण्ठमाला-धातु, सिर बड़ा, खोपड़ी का जोड़ खुला रहना, नींद की हालत में सिर में ज्यादा पसीना।

इग्नेशिया ६-३०—दांत निकलने के समय अचानक बिमारी होना, चेहरा फीका, सिर हिलाना, प्रलाप के साथ आंख व होठ का आक्षेप, नींद न होना, पेशाब पानी की तरह व ज्यादा।

केलि ब्रोमाइड ६-३०—ज्यादा ऊंघाय, अचेतन भाव, आँख व चेहरा का धस जाना, हाथ पाँव नीला व ठंढा, पुतली का फैलना, नाड़ी पतली।

मार्कुरिअस ६-३०-२००—सिर में बोझ, सिर उठाने से सिर घुमना व जी मिचलाना; ऊंघाय आना, शिशु आधी लेटी हुई हालत में रहना चाहता है, बुद्धि की कमी, दुर्बलता, निम्नांग का पक्षाघात, आक्षेप, सिर बड़ा और उसके जोड़ों का खुल जाना।

ओपिअम ३०-२००—अघोर निद्रा, बेहोशी, स्वाँस खर्राटेदार, आँख आधी खुली हुई, पुतली का फैलना, सिर का पक्षाघात, आक्षेप के समय चिल्लाना।

ष्ट्रामोनियम ६-३०-२००—सिर हलका मालूम होना, रोगी बार २ सिर को झटके के साथ उठाते रहता है, नींद से डर कर जागना, लगातार बकवाद करना व भागने की चेष्टा करना मुंह सूखा, प्यास न होना, काले रंग का पतला दस्त।

सल्फर ३०-२००—सिर में बोझ, सिर आप से आप हिल जाता है, मुंह से खट्टी बू, दिन में नींद की भाव, रात को अनिद्रा, चर्म्मरोग, चमड़े के रोग बैठ जाने से रोग, कंठमाला-धातु।

जिंकम-मेट १२-३०-२००—चांदी का धस जाना, धुंधली नजर, नाड़ी, पतली, निस्तेजता, हिमांग की तरह

हालत, तेज प्यास, हरकत से जी मिचलाना व कै होना, कपार में ज्यादा ठंढा पसीना।

सन्यास रोग वा एपोप्लेक्सी।

APOPLEXY.

रोग परिचय—किसी कारण से दिमाग के खून की नलियां फट कर उसमें कमवेश अचेतन भाव होने से उसको सन्यास रोग वा एपोप्लेक्सी कहते हैं।

कारण—यह पीड़ा ज्यादा उम्र के पुरुषों में ज्यादा देखा जाता है। स्त्रियों में और यौवन अवस्था में यह कम होता है। एक चतुर्थांश रोगी ४० साल उम्र के बाद देखा जाता है। किडनी का प्राचीन प्रदाह, मस्तिष्क की धमनी की दिवाल मोटा होना अथवा उसका शिलापजनन (Calcarious degeneration), बहुत मद्यपान और गाउट रोग, उपदंश इत्यादि पीड़ा के हेतु मस्तिष्क की धमनी की दिवाल के फट जाने की आदत, दिमाग की धमनी में रक्त के ढेला इत्यादि कोई चीज अटक जाना इत्यादि नाना प्रकार कारण से धमनी का दिवाल फटकर ऐपोप्लेक्सि रोग होता है। ज्यादा मेहनत वा स्त्री सहवास, ज्यादा चिन्ता, आनन्द, ज्यादा भोजन इत्यादि से भी यह हो सकता है।

लक्षण—मस्तिष्क में रक्तस्राव अल्प या अधिक हो सकता है और लक्षण की प्रबलता भी इसके ऊपर निर्भर

करती है। साधारणतः यह पीड़ा होने के पहले सन्देहजनक कोई लक्षण देखा नहीं जाता है, किन्तु प्रायः अधिकांश रोगी मे देखा जाता है कि एकाएक रोगी वेहोश होकर गिर जाता है, कोई २ रोगी में प्रथमतः अत्यन्त सिरदर्द होता है उस के वाद मूर्च्छा अथवा अल्प मात्र कोलाप्स अथवा जी मिचलाना, कै होना अथवा सामान्य कन्मलसन होने के उपरान्त आधा घंटा के अन्तर अज्ञान अवस्था उपस्थित होती है। इस अज्ञानता से रोगी को किसी तौर से चेतन नहीं कियो जाता है, रोगी का चेहरा चमकीला लाल, नाड़ी पूर्ण और कठिन, धड़घड़ाहट के साथ स्वांस प्रस्वांस होता है। शरीर के शाखासमूह अंकड़ जाते हैं, कभी २ सिर और आंख एक तरह टेढ़ा हो जाता है, शरीर के उत्ताप कम हो जाता है। रोग कठीन होने से कोलेप्स होकर मृत्यु होती है, रोग सामान्य होने से अज्ञान अवस्था मे भी नाड़ी और स्वांस प्रायः स्वाभाविक रहता है और दो तीन दिन मे ज्ञान होता है। अधिकांश रोगी में ही अर्द्धाङ्ग के पक्षाघात होता है।

भाविफल—इस रोग का भाविफल प्रायः ही सांघातिक होता है। अगर रोगी आरोग्य लाभ करे तो उस के वाद भी प्रायः दिमाग की गड़वड़ी रह जाती है। प्रायः वोलने की शक्ति नष्ट हो जाती है।

आनुसंगिक नियम—हल्का लेकिन पुष्टिकर पथ्य होना चाहिए। शराव वा और किसी किस्म की गरम चीज

व्यवहार न करना चाहिए। पीड़ा की सूचना मालूम होने ही से शारीरिक व मानसिक परिश्रम बन्द कर देना चाहिए। रोग के आक्रमण के समय रोगी का बदन का कपड़ा उतार देना चाहिए। सिरको कुछ ऊंचा करके रखना चाहिए। रोगी के घर मे खुली हवा आने का वन्दोवस्त होना चाहिए।

चिकित्सा—

एस्कुलस ६-३०—ज्यादा सिरघुमनेके साथ मतवाले की तरह चलना व जी मिचलाना, धुंधली दृष्टि, दिमाग की जड़ता, दुर्बलता के साथ कंपना, बोली की जड़ता।

सैंगुइनेरिया ३०-२००—दिमाग में शैरिक खून की ज्यादती के कारण सन्यास रोग, सिर का पीछला हिस्सा भारी, उस में अचानक दर्द, गाल लाल, कान में ज्वाला, सिर चक्कराना, स्वांस व थुक में वदवू।

भेरट्रम भिरिडि ३०—रक्ताधिक्य के कारण सन्यास, सिरपीड़ा, रोगी विवश होकर चुप पड़ा रहता है, कान मे घंटे की तरह आवाज, आंख लाल, बोली में रुकावट, सिर, गर्म, पूर्ण कठिन व मृदु नाड़ी, आक्षेप, आंख में अन्धेरा देखना व उसके साथ जी मिचलाना व कै होना।

एकोनाइट ३-६—सिर गर्म, पुरपुरीका रग का धकधकाना, शरीर गर्म, नाड़ी पूर्ण और कठिन। डर जाने से यह रोग होना। तोनलापन, आंख व चेहरा लाल।

आर्निका ६-३०—सिर गर्म, और सर्वाङ्ग शीतल, बायां तरफ के पेरालिसिस। बेहोशी, स्वांस में सांसां आवाज, बरबराना, बेखबरी से पेखोना पेशाब होना।

बेलाडोना ६-३०—चेहरा लाल, पुतली फैली हुई दृष्टि-हीनता, पुरपुरी का रगका धकधकाना मुखमंडल के आक्षेप, जीभ का निकल आना। बेखबरी से मूत्रत्याग, गुंगुआना अर्द्धाङ्ग के पक्षाघात, बेहोशी। मुखमंडल का एक तरफ का टेढ़ा हो जानो, घोट लेने में कष्ट, इन्द्रीयशक्ति का लोप।

कक्कुलस ६-३०—चेहरा रक्तवर्ण और गर्म, आंख मूंदी हुई, पुतली फैली हुई, बेहोशी, एक अङ्ग के पेरालिस्सिस, सिर व चेहरा गर्म, पैर के तलवा ठन्ढा, सिर चक्कराना, आंख का फड़कना।

कोनायम ६-३०-२००—वृद्ध वयस में यह रोग।

ग्लोनोइन ६-३०-२००—अत्यन्त सिरदर्द, शिर मे दब्दबाना, भाग जाने की इच्छा। सिर मे गर्मी की धा, मानसिक उत्तेजना, घबराहट, गर्दन व सिर की जड़ता, सिर घुमना, चिनगारियां देखना।

जेलसिमिअम ६-३०—दांत उठने के समय शिशु का तन्द्रा, अचेतनावस्था, कनमलशन, धूप लगने के हेतु पीड़ा। बेहोशी, प्रायः सर्वांगिक पक्षाघात, सिरपीड़ा के साथ मतली, सिरचक्कराना।

हाइओसायमस ६-३०-२००—चितकार करके गिरजाना, ऊंघाय, चेहरा लाल, बेखवरी से मलमूत्र त्याग। वांयां अंग का पक्षाघात वेहोशी. वोलीवन्द, मुह मे फेन, निगल न सकना, पेशियों का फड़कना।

लैकेसिस ३०-२००—मद्यादि सेवन या मानसिक उत्तेजना हेतु पीड़ा, पायः वायां तरफ मे पीड़ा की आधिक्य. ज्ञान होने से वकवाद करना। हाथ पांव ठंढा, वेहोशी, मुंह का एक तरफ लटक जाना, गले में स्पर्श बर्दास्त न होना।

लरोसिरेसस ६-३०—सिरचक्कराना, चेहरा फूला, मुख-मंडल के पेशियों मे स्पंदन, दिल धड़कना, शरीर शीतल, नाड़ी मालूम नहीं होता है। स्थिर दृष्टि, मृदु पतली नाड़ी, पुतली फैली हुई घड़घड़ाहट के साथ स्वांस।

नक्स-भोमिका ३०-२००—ज्यादा भोजन और मद्यादि सेवन हेतु पीड़ा। रोग होने के कवल सिरघुमना, सिरदर्द, मतली व वमन, निम्नांग का पक्षाघात।

ओपिअम ३०-२००—आंख आधी खुली हुई, पुतली फैली हुई, चेहरा रक्तवर्ण और फूला २, मुंह से फेन निकलना, खरराटेदार स्वांस, सिर में गर्म पसीना, शाखासमूह में आक्षेप अथवा अकड़ाव।

एनाकार्डिअम ३०-२००—स्मरणशक्ति की हीनता, साधारण पेरालिसिस। पुरानी भाव की विमारी।

कास्टिकम ३०-२००—मन का भाव प्रकाश नहीं कर सकता है, मुखमंडल अथवा शाखासमूह के पेरालिसिस, पुराना भाव के रोग।

कुप्रम ३०-२००—जीभ के पेरालिसिस, तोतलापन अथवा बात न कर सकना, कोरिया। सख्त आक्षेप, चेहरा बिगरा हुआ, बोली न निकलना।

तापाघात वा सर्दी गर्मी।

SUN-STROKE.

यह ग्रीष्मप्रधान देश की पीड़ा है, यह तीन प्रकार के लक्षण के साथ देखा जाता है। (१) एकाएक मूर्च्छा और बेहोशावस्था, जी मिचलाना, कै होना, समस्त शरीर ठन्ढा हो जाना और दिल बन्द होकर रोगी मर जाता है। (२) एकाएक श्वांसकष्ट उपस्थित होकर रोगी की मृत्यु होती है। (३) शरीर अत्यन्त गर्म हो जाता है, ऐसा कि शरीर के उत्ताप ११२ डिगरी तक देखा गया है। आंख व चेहरा बहुत लाल होते हैं। इस प्रकार की पीड़ा धीरे २ होती है, पहले दुर्बलतो अस्थिरता, वमन-इच्छा, वमन, सिर चकराना, सिर दर्द इत्यादि होते है। श्वांस-प्रश्वास जल्द होता है, नाड़ी प्रायः गुम होती है, पुतली छोटी हो जाती है, श्वांस में घड़

घड़ाहट शब्द होता है, इसके बाद आक्षेप या कनभलशन हो कर मृत्यु हो सकता है।

चिकित्सा

रोगी को शीतल जल से नहाना, वो शीतल जल से सिर धोकर, सिर में शीतल जल की पट्टी देने से उपकार होता है। वर्फ के थैली सिर पर लगाना भी बहुत अच्छा है। मिश्री के शरवत नींबू के रस के साथ देने से रोगी बहुत आराम मालूम करता है।

कच्चा आम को जला कर पानी मे घुल कर मिश्री के साथ शरवत बनाकर देने से बहुत फायदा होता है।

ग्लोनइन ६-३०—अति प्रधान औषध है, भयानक सिर पीड़ा, सिर चक्कराना, बेहोशी, चेहरा और आंख लाल, स्वांसकष्ट, बहुत जोर से दिल का धड़कना।

एमिल-नाइट्रेट ६-३०—व्याकुलता, खुली हवा मे रहने की इच्छा, बुद्धि की गड़बड़ी, मतवाले की तरह हालत मालूम होती है, सिर में अत्यन्त दर्द, आंख और चेहरा लाल, आंख फैली हुई, छाती कसी हुई मालूम होना, दिल धड़कना।

बेलाडोना ६-३०—आंख और चेहरा लाल और गर्म, अत्यन्त सिरदर्द, बेहोशी, आंखों के सामने चिंगारियां दिखाई पड़ना, कान में भन २ आवाज।

हाइयोसायमस ६-३०—देर तक आक्षेप, वेहोशी, कै होना ।

कैम्फर १-३—अचानक शरीर शीतल हो जाना, दिल का धड़कन बन्द हो जाना ।

ओपियम ६-३०-२००—विलकुल वेहोशी, आंख चमकीली और आधी खुली हुई । खरखराहट के साथ खांसी ।

एनटिम-क्रुड, नेट्रम—कार्व, लैकसिस, ब्राइओनिया, आर्निका इत्यादि औषध भी उपकारी है ।

स्नायु-शूल वा न्युरैलजिया ।

NEURALGIA.

रोगपरिचय—किसी स्नायु में विजली चमकने की तरह मालूम होने से उसको न्युरैलजिया कहते हैं। इसमें स्नायु विधानके वनावट में कोई परिवर्तन देखा नहीं जाता है, यह स्नायु की क्रिया की खरावी (Functional derangement) से होता है ।

लक्षण—दर्द साधारणतः एक अङ्ग में देखा जाता है, कदाचित कभी दोनों अङ्ग में देखा जाता है, दर्द विजली चलने की तरह, तीर भोंकने की तरह, सलाई भोंकने की तरह, काटने की तरह अथवा दवदवाने की तरह होता है। दर्द का स्थायित्व-काल की कोई निश्चयता नहीं है,

दर्द कभी एक मिन्ट, दो मिन्ट, कभी एक दो घन्टे या दो एक दिन तक रहता है, दर्द बार २ आक्रमण करता है।

शरीर के खास २ स्थान का न्युरेलजिया को खास २ नाम दिया जाता है, यथा—१—केफैलजिया (Cephalgia) वा सिरदर्द। इसकी चिकित्सादि सिरदर्द अध्याय में देखो।

२—टिकडुलोरों (Tic douloureax) वा मुखमंडल का न्युरेलजिया—इसको प्रसोपेलजिया (Prosopalgia) भी कहते हैं। एलोयाम-सिपा, बेल, आर्स, सिड्रोन चायना, कलोसिन्थ, जेल्स, आइरिस कस्टिकम, मार्क नेट्रम-म्युर, फस, स्पाइजिलिया, भारवेसकम इत्यादि इस अधिकार मे प्रधान औषध हैं।

३—सारभाइको—अक्सिपीटल न्युरेलजिया (Cervico-occipital Neuralgia) वा मस्तक के पच्छातभाग और ग्रीवा देश का स्नायुशूल। इस अधिकार में एकोनाइट, बेल, कैलकेरिया, लैकेसिस, नक्स, पल्स स्पाइजिलिया, सलफर उत्कृष्ट औषध है।

४—सारभाइको-ब्रेकियाल (Cervico-bracnial) न्युरेलजिया वा ग्रीवादेश और बगल का स्नायुशूल। इस में एकोनाइट, आरनिका, चायना, फेरम, ग्रेफाइटिस, इगनेसिया लाइको, फस, रस, सिपिया, स्टेफिसेग्रिया इत्यादि उपकारी है।

५—लम्बो-एवडोमिनल (Lumbo-abdominal) वा कमर का न्युरेलजिया। इस में आरजेन्टम—नाइट्रिकम, बेल,

चायना, कैलमिया, नक्स, पल्स, रस, स्पाइजिलिया, स्टैफि, सलफर फलप्रद है।

६—मैसटोडाइनियां (Mastodynia) वा स्तन के न्युरेलजिया।

७ इनटर-कसटैल (Intercostal) न्युरेलजिया वा पसली की हड्डियों के अन्तर्वर्ती स्थान समूह के न्युरेलजिया, इसमे आरनिका, कैलकेरिया, आइओनिया, बोरैक्स सिमिसिफिउगा, स्पाइजिलिया इत्यादि उत्तम औषध है।

८—कुरल (Crural) वा इसकिअम न्युरेलजिया, इससे जांघ ठेहुना, घुट्टी, और पैर में दर्द होता है। कफिया, फाइटोलेका, स्टेफिसेग्रिया इत्यादि औषध इसमे फलप्रद है।

९—सायेटिका (Sciatica) यह पीड़ा वहुत आदमियों मे देखा जाता है, इसमे सायेटिक स्नायु वा कुल्ह का प्राय हिस्से मे ही दर्द मालूम होता है। दर्द स्तनदेश से आरम्भ करके चुतर, जांघ टांग, एड़ी और पैर के तलवे में आक्रमण करता है।

न्युरेलजिया की चिकित्सा—

एकोनाइट ६-३०—बिजली चमकने की तरह दर्द और झिनझिनी पैदा होना। डर, घबराहट बेचैनी इत्यादि।

आरजेन्टम-नाइट्रस ६-३०—चुतर से जांघ तक दर्द फैल जाता है और वह जगह सून सा होती है और सूख जाती है, प्रातःकाल मे और दोपहर में पीड़ा की वृद्धि।

आरनिका ६-३०-२००—चोट लगने से पीड़ा, अत्यन्त दर्द, बार २ करवट बदलना ।

आरसेनिक ६-३०-२००—पीड़ित स्थान में ज्वाला, व्याकुलता अस्थिरता, दोपहर को पीड़ा की वृद्धि, गर्म प्रयोग से पीड़ा की कमी।

बेलाडोना ६-३०-२००—मुखमण्डल का स्नायुशूल ज्वर, सोना चाहता है लेकिन सो नहीं सकता है। स्पर्श संचालन व ठण्डी हवासे और दिन दोपहर से रात दोपहर तक दर्द की वृद्धि ।

ब्राइओनिया ३०-२००—विश्राम अवस्था में कमी व संचालन से वृद्धि ।

कैमोमिला ६-१२-२००—दर्द से रोगी पागल की तरह होता है क्रोध हेतु वृद्धि ।

कैलकेरिआ ३०-२००—पानी में रह कर काम करने के हेतु पीड़ा ।

कस्टिकम ३०-२००—मुखमंडल का स्नायुशूल, उसके दहिना तर्फ का अंकड़ाव, खासते वक्त पेशाब होना ।

सिमिसिफिउगा ६-३०-२००—जरायु किम्वा ओभारी के उत्तेजना हेतु पीड़ा ।

कफिया ६-३०—रात में पीड़ा की वृद्धि के साथ अनिद्रा और अस्थिरता ।

लाइकोपोडिअम ३०-२००—चुतर में दर्द, पीड़ित पैर मे अंकड़ाव और झिनझिनी, पेट फूलना, कब्ज, पेशाब पीला और गदला, उसके नीचे लाल रङ्ग का रेत की तरह सेडिमेन्ट ।

मार्कुरिअस ३०-२००—दर्द की रात में वृद्धि, अत्यन्त पसीना किन्तु उस से पीड़ा की कमी नहीं होती है, गर्मी रोग का दोष ।

मेजिरिअम ३०-२००—पैर मे दर्द, पैर ठन्ढा, और उसके अन्दर गर्मी मालूम होना, सामकों और रात को रोग की वृद्धि ।

फाइटोलेक्का ३०-२००—जांघ के बाहर के तरफ दर्द, दबाने से, संचालन से व रात में वृद्धि उपदंशदोष ।

पलसेटिला ३० २००—सामको और रात में दर्द की वृद्धि, टहलने से आफियत, गर्म गृह में वृद्धि, खुली हवा मे आफियत ।

रसटक्स ६-३०-२००—पैर में झिनझिनी, विश्रामवस्था में वृद्धि, चला फिरा करने से आफियत, पानी में भीगने के हेतु पीड़ा ।

रुटा ६-३०-२००—दर्द हड्डी में मालूम होता है, विश्राम अवस्था में वृद्धि, चलाफिरा करने से आफियत, मालूम होता है कि मांसपेशियां संकुचित हो गये । आघातादि हेतु पीड़ा ।

सिपिया ३०-२००—गर्भावस्था में पीड़ा की वृद्धि, एड़ी में दर्द विश्राम से आफियत।

स्टिलिजिंया ३-६-३०—वायां तरफ की पीड़ा, सुजाक व गर्मी रोग की खरावी से रोग।

सलफर ३०-२००—चर्म रोग दब जाने के हेतु पीड़ा।

कलोसिन्थ, नेफेलिअम, हिपर, इग्नेशिया, केलि-हाइड्रो, केलि-वाइक्रोम, लैकेसिस, प्लम्बम, इत्यादि औषध भी फलप्रद है।

—०—

सिरदर्द।

(HEADACHE)

रोगपरिचय—यह नया व पुराना दो किस्म का और स्वयं एक स्वाधीन रोग न हो कर नाना प्रकार रोग का लक्षणरुप से प्रकाश पाता है। सिर के नाना स्थान में दर्द होता है और उन स्थानों के नाम के अनुसार सिरदर्द का नाना प्रकार का नाम होता है। सिर का आधा हिस्सा मे दर्द होने से उसको हेमिक्रेनिया (Hemicrania) वा आधकपाड़ी कहते हैं। नीचे अलग २ किस्म का सिरदर्द का व्यान करता हूं।

रक्ताल्पता जनित सिरदर्द वा ऐनिमिक हेडेक।

(ANÆMIC HEADACHE.)

नाजुक मिजाज व कम खुन वाली स्त्रियों को यह रोग अधिक होता है। साधारणत. सिर में मृदुभाव के दर्द होता है। लेटने से कम व शारीरिक या मानसिक परिश्रम से ज्यादा होता है। कमजोरी, कब्ज व नाड़ी दुर्बल होता है। अत्यधिक रक्तस्राव वा रक्त की खराबी ही इस रोग का कारण है।

रक्ताधिक्यजनित सिरदर्द।

(CONGESTIVE HEADACHE)

रक्ताधिक्य के कारण मध्य वयस में यह रोग होता है। वात रोग वाला धातु, अमिताचार, मेहनत का अभाव इत्यादि इस रोग का कारण है। इस पीड़ा में पुरपुरी का रग धकधकाता है, लेटने से सिर दर्द ज्यादा, कान में भनभनाहट, मतली वगैरह लक्षण प्रकाशित होते हैं, स्त्रियों का ऋतु बन्द हो कर यह रोग हो सकता है।

अजीर्णदोष-जनित सिरपीड़ा।

(GASTRIC OR BILIOUS HEADACHE.)

इस किस्म का सिर दर्द पानाहार का दोष वा अनियम, अजीर्णता वा यकृत के दोष से होता है। दर्द मृदुभाव के व कपार में होता है। इसके साथ सिर घूमना, मतली, कै, प्रभृति अजीर्ण-लक्षण वर्त्तमान रहता है।

बिषजनित सिरपीड़ा वा टक्सिमिक हेडेक।

(TOXIMIC HEADACHE.)

ज्यादा शराव, अफिम, तमाकू, प्रभृति का ज्यादा व्यवहार से खून में युरिया पैदा होने से, कोई विष शरीर में प्रवेश करने से, ज्यादा चाय, कौफी प्रभृति पीने से यह रोग होता है। मैलेरिया व सीसा का विष से भी ऐसा सिर दर्द होता है।

यांत्रिक सिरपीड़ा

(ORGANIC HEADACHE.)

सिर में टिउमर (गिल्टी) होने से यह हो सकता है, इससे सिर का एक स्थान मे वा समस्त स्थान मे दर्द होता है। गर्मीरोग-जनित गर्मी से भी यह रोग हो सकता है।

दर्द रात को ज्यादा होता है। आंख की खराबी, घ्राणशक्ति की खराबी, बोली का बिगार, मन की खराबी वगैरह लक्षण इसमे देखा जाता है।

स्नायुदौर्बल्य-जनित सिरदर्द ।

(NEURALGIC OR NERVOUS HEADACHE.)

स्नायु की दुर्बलता से नाना प्रकार का सिरदर्द हो सकता है। नियमित समय में आक्रमण, सिर के तमाम हिस्सा या एक हिस्से मे दर्द होता है।

आधकपाड़ी वा हेमिक्रेनिया ।

(HEMICRANIA—MIGRAINE.)

सिर के एक बगल में नियमित समय मे दर्द होने से उसको अधकपारी कहते हैं। मतली, कै, शब्द व रोशनी बर्दास्त न होना, मानसिक श्रम से ज्यादा होनो वगैरह लक्षण होता है।

चिकित्सा

एकोनाइट ६-३०—ज्यादा खून वाला धातु, ज्यादा धुप लगने से पीड़ा, ललाट व पुरपुरी मे दर्द, ललाट में बोझ, सिर में चांप बोध, अधकपारी, दर्द के साथ बायीं आंख व

मांक के जड़ में दर्द, सिर के अन्दर ज्वाला, हरकत करने से या सिर नीचा करने से दर्द की ज्यादती।

आर्निका ६-३० – सिर में चोट लगने से सिर दर्द, आख की ऊपरी भाग मे ज्यादा दर्द, कपार में सूई चुभने की तरह दर्द, सिर नीचा करने से उसकी ज्याती, मतली, नींद से जागने से, खांसने से व दिमागी मेहनत से विमारी की वृद्धि।

आर्सेनिक ३०-२००—किसी निर्दिष्ट समय मे सिर दर्द होना, ललाट मे बोझ, बायीं आंख की ऊपरी भाग मे सख्त दर्द, दर्द के साथ ज्वाला, गर्दन वा सिर के पीछे मे दर्द, कपार मे टनकना, मतली व कै, खास कर खाने पीने से, प्यास, बेचैनी, मृत्युभय, खुली हवा मे और ठंढा पानी से धोने से आफियत।

ओरम-मेट ३०-२००—स्नायविक रक्ताधिक्य व गर्मी रोग के दोष से सिर-पीड़ा, मसोड़ने की तरह दर्द व बायां पुरपुरी का अंकड़ाव, सिर के सामने के हिस्से में सूई चुभने की तरह दर्द, नीद न होना, नाउमेदी, जीन्दगी पर नफरत, आत्महत्या की इच्छा, सुवह को, ठंढी हवा मे लेटने से दर्द की ज्यादती व घुमने फिरने से वा शरीरको गर्म रखने से आफियत।

एन्टिम-क्रुड ६-३०-२००—दरिया में स्नान के वाद शिर पीड़ा।

आरजेन्टम-मेटालिकम ६-३०-२००—मस्तक के

भीतर सुनमात्र मालुम होने के साथ प्रति दिन दो पहर के समय दर्द आरम्भ होता है। स्नायविक रक्ताधिक्य व उपदंश जनित सिर दर्द।

आरजेन्टम-नाइट्रीकम ३०-२००—दर्द मस्तक और मुखमण्डल के बगल मे होता है, उसके साथ शरीर कापता है, और मालुम होता है कि शिर की हड्डियो अलग होती जा रही है।

बेलाडोना ६-३०—वमन के साथ शिरपीड़ा, ऐसा मालुम होता है कि शिर फट जायगा, शिर मे अत्यन्त रक्ताधिक्य, पुर-पुरी के रग का दबदबाना, रोगी आंख मुन्द कर पड़ा रहता है, सिर झुकाने मे या हिलाने डोलाने से दर्द अत्यन्त वृद्धि पाता है। रोशनी या शोरगुल बरदाश्त नहीं कर सकता है। आंख व चेहरा लाल। ऊंघाय, लेकिन नींद नही होती है। बार २ चौंक उठना।

ब्राइओनिया ६ ३०—प्रातःकाल मे जागने पर ही शिरदर्द आरम्भ होता है, दर्द इतना अधिक होता है कि मालुम होता है कि सिर फट जायगा, सिर हिलाने डोलाने से वृद्धि होती है रोगी चुपचाप पड़ा रहना चाहता है, उठ कर बैठने से सिर चक्कराता है और जी मिचलाता है, अम्ल वा तीता वमन, कठिन सूखा मल।

वोभिष्टा ६-३०—स्त्री लोगों के रजोदोष जनित शि

पीड़ा, प्रात-काल मे दहिने तरफ और शाम को बांयें तरफ में दर्द।

ग्रोमिअम ६-३०-२०० — बायां तरफ का अवरूपारी दर्द धुप में पीड़ा की वृद्धि और छाया मे कमी।

विउफो ३०-२०० — एक तरफ का विशेपतः दहिने तरफ का सिर दर्द, नाक से रक्तस्राव होने से सिर दर्द की कमी।

केलकेरिआ-कार्ब ३०-२०० — पुराना सिर पीड़ा, सिर के भीतर और बाहर वर्फ के सदृश ठन्ढ मालूम होता है, पैर ठन्ढा, ऐसा मालूम होता है कि भींगा पैतावा पहना हुआ था, सिर मे रुस्सी, सिढी से ऊपर चढ़ने मे शिर चकरोता है। ऋतु शीघ्र २ बहुत परिणाम से होता है, और बहुत देर तक रहता है।

केनाविस-इन्डिका ६-३० — मालूम होता है कि चांद्री एक बार खुल रहा है और एक बार बन्द हो रहा है।

कार्बो-भेज ३०-२०० — अत्यन्त मद्यपान हेतु शिरपीड़ा, मस्तक के पश्चात भाग से आँखों के ऊपरी भाग तक फैल जाता है, मस्तक के भीतर शुण २ शब्द होता है। नाक से रक्तस्राव होने से शिर दर्द की कमी।

कष्टिकम ३०-२०० — वैठे रहने से अथवा चलने के समय शिर में लगातार आघात या झटका लगने की तरह दर्द होता है।

कैमोमिला १२-३०—सर्दीजनित शिरपीड़ा, ललाट मे तेज दर्द, एक गाल लाल और गर्म और दूसरा गाल फीका और ठंडा, तीता पित्त का कै, दर्द के कारण रोगी पागल की तरह हो जाता है।

चायना ३०-२००—ज्यादा रक्त या शुक्रक्षय के कारण शिरपीड़ा, एक दिन अन्तर देकर पीड़ा की बृद्धि, मस्तक के पश्चातभाग मे दर्द, चलने फिरने से कमी, स्पर्श, ठन्ढ और मानसिक परिश्रम से दर्द की वृद्धि।

कफिया ६-३०—रोगी वहुत चिरचिराहा और चंचल होता है, दिमाग में सलाई (कांटी) भोकने की तरह दर्द, खुली हवा में वृद्धि, मालूम होता है शिर फट कर टुकडे २ होता जा रहा है, शिर अत्यन्त छोटा मालूम होता है, अनिद्रा, खट्टा ढेकार।

ग्लोनइन ६-३०—रक्ताधिक्य जनित और स्नायविक शिरपीड़ा, शिर के अन्दर दव २ आवाज और तरङ्ग सा मालूम होता है, और इसके साथ मालूम होता है कि दिमाग चांदी से फट कर निकल रहा है। गर्मी के समय मे पीड़ा आरम्भ हो कर समस्त ग्रीष्मकाल वर्त्तमान रहता है।

इग्नेसिया ६-३०-३००—ललाट में दर्द, लेटने से कमी, मालूम होता है कि सिर के एक पार्श्व को छेद करके भीतर से बाहर के तरफ सलाई भोक रहा है। रोगी गमगीन, कब्ज, कांच निकल पड़ना।

इपिकाक ६-३०-२००—हाजमे की गड़बड़ी से शिरपीड़ा। सर्वदा जी मिचलाना और कै होना।

जेलसिमिअम ६-३०-२००—शिरपीड़ा के पहले रोगी अन्धा हो जाता है। रोगी चुपचाप पड़ा रहता है, बार २ पेशाब करने से या निद्रा होने से आराम मालूम होता है।

सिमिसिफिउगा ६-३०—बालक और मतवालों के शिरपीड़ा, रजोदोपजनित शिरपीड़ा।

सिना ३०-२००—मृगिरोग के आक्रमण के बाद शिरपीड़ा (कुप्रम)।

केलि-बाई ३०-२००—शिरदर्द आरम्भ होने के पहले अन्धे की तरह हो जाना, पीड़ा आरम्भ होने से नजर का ठीक हो जाना।

कैल्मिया ३०—सूर्य्योदय अर्थात् सूर्य्य के उदय के साथ २ शिरपीड़ा उपस्थित होता है और सूर्य्य के अस्त हो जाने के साथ आराम होता है।

लैकेसिस ३०-२००—चांदी में आग की तरह ज्वाला, मस्तक के सन्मुख भाग मे दर्द, खड़ा होने से मूर्च्छा की तरह होता है मानसिक और शारीरिक निस्तेजता, नींद के बाद तकलीफ की ज्यादती।

लाइकोपोडिअम ३०-२००—ललाट मे हथौड़ी के आघात की तरह दर्द, प्रातःकाल मे आहार के बाद शिर पीड़ा की कमी मालूम होती है। पेट फूलना कब्ज।

कैलाडियम ६-३०—सिर के उपरीभाग में एक कान से दूसरा कान तक दर्द, नींद के बाद आफियत ।

सेंगुइनेरिया ३०-२००—पित्त के कै के साथ सिरपीड़ा सुबह से शुरू हो कर तमाम दिन रहता है । सिर के पीछे से दर्द शुरू हो कर ऊपर के तरफ जाता है । दहिना तरफ का सिरदर्द, सूर्य्य निकलने के साथ शुरू होकर दोपहर को बढ़ता है और साम को आराम हो जाता है । दहिने आंख के ऊपर दर्द ।

नेट्रम-सिउर ३०-२००—मैलेरिया जनित शिर पीड़ा, नींद से जागने पर पीड़ा की वृद्धि । आधकपारी, दिन १०-११ बजे रोग की वृद्धि ।

नक्स भोमिका ३०-२००—प्रात काल मे, आहार के बाद और खुली हवा में शिरपीड़ा की वृद्धि, ज्यादा कॉफी या चाय पीने के हेतु शिर दर्द । कब्ज, बवासीर, आलस मे बैठे रहने के अभ्यास, वेश्यागमन, शराब पीना इत्यादि के हेतु शिरपीड़ा ।

फसफोरिक एसिड ३०-२००—स्नायविक दुर्बलता, हस्त-मैथुन इत्यादि हेतु गर्दन और मस्तक के पश्चात भाग में दर्द ।

फसफोरस ६-३०-२००—सर्वदा ज्यादा आंख का मेहनत और ज्यादा मानसिक परिश्रम के हेतु शिरपीड़ा । सिर का पीछला हिस्सा ठंढा, एक दिन के बाद एक दिन सिरदर्द ।

फाइटोलेका ३०-२००—गर्मीपीड़ा जनित शिरपीड़ा।

सोरिनम २००—शिर पीड़ा के समय अत्यन्त भूख लगना।

भेरट्रम एल्ब ३०-२००—प्रबल स्नायविक सिरपीड़ा, अत्यन्त दुर्बलता, कपार में ठंढा पसीना, तमाम बदन मे ठंढा पसीना, प्रतिवार हैज के समय सिरपीड़ा, सिर में ठंढक मालूम होना। मालूम होता है कि सिर के पीछले हिस्से में लकड़ी भोंका जा रहा है।

पल्सेटिला ३०-२००—सन्ध्या के समय शीरपीड़ा की वृद्धि, गर्म गृह में वृद्धि, खुली हवा में आफियत, चेहरा फीका। ऋतु की गड़बड़ी।

सैंगुइनेरिया ३०-२००—प्रति सप्ताह में शिरपीड़ा, "आधकपारी" शिरदर्द, विशेपतः दहिना तरफ का।

सिपिया ३०-२००—अत्यन्त जोर से सिरदर्द, रक्ताधिक्य जनित पुराना सिरदर्द और उसके साथ रोशनी बरदास्त न कर सकना। सलाई भोकना या हथौड़ी के आघात की तरह दर्द दहिनी आंख या पुरपुरी में होता है, मतली और कै, अन्धेरा में और निद्रा की हालतमें आफियत, आधकपारी शिरदर्द। पेशाव में अत्यन्त दुर्गन्ध, और उसमें मटीला रंग के रेत दिखाई पड़ता है। दो ऋतु का दरमियान समय में श्वेतप्रदर।

साइलिसिया ३०-२००—स्नायविक दुर्बलता हेतु

शिरदर्द। गर्म प्रयोग से आफियत होता है। अधकपारी शिर दर्द। प्रति सप्ताह में शिर दर्द। शिर के बाल का उड़जाना।

स्पाइजिलिया ६-३०-२०० — प्रातःकाल मे सूर्य्य उदय के साथ सिर पीड़ा आरम्भ होकर दो पहर मे अत्यन्त वृद्धि प्राप्त होती है उसके बाद सूर्य्य के अस्त के साथ २ धीरे २ कम होकर सन्ध्या के समय बिलकुल आराम हो जाता है। तीर की तरह जोर से बायीं आंख और पुरपुरी के अन्दर से दर्द चलता है। किसी निर्दिष्ट समय में शिरपीड़ा।

—:(०):—

आक्षेप वा कन्भलशन।

(CONVULSION.)

रोगपरिचय—बिना इच्छा के हाथ पैर में स्पैज्म (Spasm) वा ऐंठन होना, आंख चढ़ जाना, मुंह से फेन निकलना वगैरह लक्षण होने से उसको आक्षेप या कन्भलशन कहते हैं।

कारण—बच्चों को यह रोग ज्यादा होता है। तेज ज्वर, दिमाग में ज्यादा खुन होना, भय, क्रोध, कोदवा, लाल ज्वर वगैरह का दाने का बैठ जाना, चोट लगना, ठंढ लगनो, लू लगना, कृमी की शिकायत, जरायु-रोग, विष सेवन, ज्यादा शराब पीना इत्यादि से यह रोग होता है। मृगी रोग, सन्यास रोग वगैरह में कन्भलशन होता है।

लक्षण--इस से रोगी अचानक वेहोश हो जाता है, आंख चढ़ जाता है, रोगी हाथ पाव पटकता रहता है, रोगी का मुंह से खुन निकलता है। कभी २ पैखाना व पेशाव वे मालुम निकल जाता है इत्यादि।

आनुसंगिक उपाय—रोगी के आंख व छाती मे शीतल जल का छींटा जोर से देना चाहिये। रोगी का सिर पर शीतल जल का पट्टी देना यो बरफ का थैली रखना व उस का पांव को ठेहुना तक गर्म पानी मे डुबा रखना चाहिये।

चिकित्सा —

एकोनाइट ६-३०—अत्यन्त अस्थिरता, अत्यन्त ज्वर, भय हेतु पीड़ा, वदन सूखा, कृमि हेतु उत्तेजना, ठन्ढ लगने की हेतु पीड़ा।

एपिस ६-३०—बेहोशी मे वार २ चितकार मारना, तकिया के ऊपर सिर को इधर उधर करना, दिमाग का प्रदाह।

बेलाडोना ६-३०-२००—आख और चेहरा लाल और फूला २। पुतली फैली हुई, शिर अत्यन्त गर्म, उंघाय किन्तु नींद नही होती है। नींद में चौंक उठना, दांत कड़कड़ाना।

कैमोमिला १२-३०-२००—एक गाल लाल और गर्म और दुसरा गाल ठन्ढा और फीका, दांत निकलने के

समय की पीड़ा माता के गोस्सा के समय दूध पीने से पीड़ा। रोगी अत्यन्त चिरचिराहा, शिशु सर्वदा गोदी में चढ़ कर टहलना चाहता है।

सिकुटा ३-६-३० — अचानक शिशु का समस्त शरीर कठिन होकर दृष्टि एक तरफ ठहर जाती है, सिर और शरीर के ऊर्द्ध भाग में कन्भलशान होता रहता है। चेहरा नीलापन और फूला २, कृमिजनित कन्भलशन, शरीर पीछे के तरफ ऐंठ जाता है।

कुप्रम ६-३०-२०० — रोगी एनिमिक वा रक्तहीन होने से यह औषध उत्कृष्ट है। कन्भलशन के बाद तन्द्रा और अज्ञान अवस्था में जी मिचलाना और गोंद की तरह लस्सादार कै होना, हाथ पैर में सख्त ऐंठन, अंगुठा मुठी में वन्द हो जाता है।

माइग्रापाइअम ३-६ — पीड़ा की पूर्व्वावस्था में मस्तिष्क की उत्तेजना हेतु शिशु चिरचिराहा होता है। अस्वाभाविक समय में शिशु खेलता है और हंसता है। नीन्द नहीं होती है, निद्रा के समय भी हंसता है।

जलसिमिअम ६-३० — दांत निकलने के समय की पीड़ा, शिशु अचानक चितकार करके उठता है, ज्वर।

हाइओसायमस ६-३०-२०० — सिर में रक्ताधिक्य, चेहरा नीलापन, आंख के गोला बाहर निकला हुआ, मुंह में फ़ेन, बेखबरी में पेशाब होना।

तांडव रोग वा कोरिया।

(CHOREA.)

रोग परिचय—रोगिणी वा रोगी की इच्छा के विरुद्ध ऐच्छिक मांशपेशियों का आक्षेपिक संचालन होने को कोरिया कहते हैं। यह एक किसीम की स्नायविक विकृति है। नाचने की तरह भाव देख कर इस रोग को तांडव रोग कहते हैं।

कारण—गठिया रोग, डर जाना, घवराहट, फिक्र, निराश प्रेम, गम वगैरह से यह रोग होता है। किसी प्रकार चर्म रोग दव जाना, हस्तमैथुन इत्यादि से भी यह रोग होता है।

लक्षण—यह रोग धीरे २ रोगी को आक्रमण करता है, मेदाका खराबी, भूख व रुचि न होना, ढेकार आना, पेटमे हवा होना कब्ज, कमजोरी, दिमागी थकावट, इत्यादि इस रोग का पूर्ववर्त्ती लक्षण है। इसके वाद हाथ पांव व मुखमण्डल के पेशियों में अनियमितरुप से आक्षेपिक संकोचन व स्पन्दन आरम्भ होता है। किसी २ रोगी को स्पन्दन इतना ज्यादा होता है और उस से रोगी के शक्ल ऐसा होता है कि उसको देखने से हंसी आती है। रोगी किसी चीज को पकड़ नहीं सकता है—झटके के साथ चीज गिर जाती है। चलते वक्त पांव अस्वाभाविक भाव से पड़ता

इगनेसिया ६-३०—अत्यन्त कन्मलशन। हिष्टिरिया होने का स्वभाव। दांत निकलने के समय पीड़ा, कोदवा, माता इत्यादि रोग के आरम्भ की पूर्व्वावस्था मे कन्मलशन। भय अथवा सजा के बाद, प्रथम मे शिशु सो जाता है और बाद ही पीड़ा आरम्भ होता है।

इपिकाक ६-३०-२००—सर्व्वदा जी मिचलाना और कै होना।

मेलिलोटस ३-६—दांत निकलने के समय दिमाग में रक्ताधिक्य के कारण रोग।

ओपियम ३०-२००—समस्त शरीर मे कंपन, शाखा समूह में कन्मलशन। खरराटे श्वांस के साथ निद्रा। पैखाना व पेश व बन्द। डर जाना अथवा डरी हुई मांके दूध पीने से पीड़ा।

सलफर ३०-२००—चर्मरोग दब जाने से पीड़ा।

भेरट्रम-भिर १-३-६—शरीर पीछे के तरफ टेढ़ा हो जाता है। उदरामय-हेतु रक्त-हीन। आंख व चेहरा लाल।

जिंकम ३०-२००—नींद में चौंक-उठना और चितकार करके उठना, जागने से चेहरा व्याकुल दिखाता है। पेशियों का आक्षेप, विशेषत दहिने तरफ के, चिरचिराहा स्वभाव, ज्यादा भूख, बेखबरी से पेशाब होना।

—(०:)—

है। फलत शरीर का जिस अङ्ग मे यह रोग होता है वह अङ्ग रोगी की ख्वाहीस के बरखेलाफ फड़कता रहता है।

भाविफल—यह रोग पुराना भाव ही के होता है। यह रोग साघातिक नही होता है लेकिन बहुत दिन का होने से इस से रोगी की मानसिक शक्ति को कमी होती है।

आनुसंगिक उपाय—रोगी को ज्यादा मानसिक श्रम नहीं करना चाहिए। नियमित व्याम करना व सर्वदा मन को प्रफुल्ल रखना चाहिए। पुष्टिकर व लघुपाक आहार होना चाहिए।

चिकित्सा :—

एगारिकस ६-३०-२००—समस्त शरीरका नाचना, एक समय मे बायां हाथ और दहिना पांव के या दहिना हाथ और बायां पांव के नृत्य। बार २ आखो के पपुटे का फड़कना।

सिना ३०-२००—चितकार शब्द होकर अङ्गभङ्ग होना आरम्भ होता है, पुतली फैली हुई, आंखों के चारो तरफ काला दाग पड़ता है। नाक खोटना, चेहरा फीका, जर्द या मटिला रंग के। राक्षस की तरह भूख, कृमि के कारण रोग।

कुप्रम ६-३०-२००—एक बाहु में पीड़ा आरम्भ होकर समस्त शरीर मे फैलती है, उससे भयानक ममोड़ और विश्री

अङ्गभंगी होता रहता है, बोल नहीं सकता है। भय हेतु पीड़ा।

बेलाडोना ३०-२००—शरीर वा सिर एक २ वार सामने के तरह टेढ़ा हो जाता है, रोगी तकिया के ऊपर शिर को इधर उधर करता और गाडता है। दांत किड़किड़ाना, गले मे दर्द, भय वा मानसिक उत्तेजना के वाद पीड़ा।

कष्टिकम ३०-२००—रात मे पांव का टेढ़ा बेढ़ा होना, ममोड़ना और चौक उठना। जीभ और दहिना अंग के पक्षाघात किसी प्रकार चर्म रोग दव जाने से पीड़ा।

सिमिसिफिउगा ३-६-३०—बांया अङ्ग की पीड़ा मे उत्तम है। ऋतु वन्द होने के हेतु पीड़ा। ऋतुस्राव काल मे पीड़ा की वृद्धि, वात रोग जनित उत्तेजना, शरीर के भिन्न २ स्थान मे पर्य्यायक्रम से शीत और गर्मी मालूम होना।

हाइओसायमस ६-३०-२००—रोगी हाथ को पटकता रहता है। स्मरणशक्ति की कमी होती है, सर्वदा सिर हिलाता रहता है। रोगी मतवाले की तरह चलता रहता है। सर्वदा वकता रहता है, सर्वदा हंसता रहता है।

इग्नेसिया ६-३०-२००—भय अथवा किसी प्रकार मानसिक उत्तेजना के हेतु पीड़ा, आहार के वाद वृद्धि, चीत हो कर लेटने से पीड़ा की आफियत।

माइगेल ६-३०—सर्वदा सिर के दहिने तरफ में

झटका देता रहता है । चलने के समय ठेहुने में दर्द मुखमन्डल और हाथ पैर के मांशपेशियों के संचालन । पर्य्याय-क्रम से से शीघ्र २ मुंह और आंख खुलता रहता है ।

ओपिअम ३०-२००—भयजनित पीड़ा ।

नक्स-भोमिका ३०-२००—अत्यन्त औषधादि वा ज्यादा शरोवादि पीने से पीड़ा ।

सिपिया ३०-२००—शिर और शाखा समूह का कन्भलशन तोतलापन, हरेक वसन्त-काल में शरीर दिनाय होना ।

स्टिक्टा ६-३०—पांव को जोर से दबा कर न रखने से उछलता रहता है । लेटने से ख्याल होता है कि पांव, पर की तरह हलका हो गया और वह उड़ जायगा ।

जिन्कम ३०-२००—नाना प्रकार पीड़ा के हेतु शरीर और मन निस्तेज, शरावादि पीने के बाद पीड़ा की वृद्धि ।

लरोसिरिसस, नेट्रम म्युर फसफोरस, ष्ट्रामोनियम, सलफर, भेरेट्रम-भिर, इत्यादि औषध भी उपकारी होता है ।

धनुष्टंकार वा टिटेनस ।

(TETANUS)

रोग परिचय—यह एक खास विष जनित रोग है । मेरुदंड वा मेरुदंड का मूल की उत्तेजना के कारण शरीर वा शरीर का किसी हिस्से के पेशियों का आक्षेप होता है ।

इस से शरीर धनुष की तरह टेढ़ा हो जाता है इस लिए इस को धनुष्टंकार कहते हैं। शरीर पीछे के ओर टेढ़ा होने से उसको ओपिष्थोटोनस (Opisthotonus) और सामने के तर्फ टेढ़ा होने से उस को एपिष्थोटोनस (Episthotonus) कहते हैं। इस रोग मे बेहोशी नहीं होती है।

कारण—शरीर का खून की दूषित अवस्था वा स्नायुमंडली का रोग के कारण अथवा शरीर की किसी जगह में चोट लगना, कांटि चुभना वगैरह कारण से उस जगह की स्नायविक उत्तेजना से साधारणतः यह रोग होता। कभी २ ठन्ढ लगकर भी यह रोग हो सक्ता है। हर उम्र में यह रोग हो सक्ता है, लेकिन युवा व्यक्ति और स्त्री से पुरुष को यह रोग ज्यादा होता है। शिशुओं को नाड़ काटने के बाद यह रोग होता है। डाक्टर लोगों के मत है कि "किटासेटो" नाम के बेसिलस वा जीवाणु ही इस रोग का कारण है, और वह शरीर के किसी जखम के जरिए शरीर मे प्रवेश करके स्नायु की उत्तेजना पैदा करने से यह रोग होता है।

लक्षण—रोगी शिशु न हो तो पीड़ा की पूर्वावस्था मालूम करता है। आक्रमण के कब्ले कभी २ भय, भविष्य विपद की खौफ वा हाजमे की खराबी होती है। बाद रोग लक्षण प्रकाशित होता है। गले मे दर्द व टाटानी होकर रोगी का दाँत लगता है, उस से रोगी मुंह खोल नहीं

सक्ता है, कोई चीज निगल नहीं सक्ता है, चेहरा बदशक्ल होता है, शरीर में आक्षेप होता है वा शरीर स्थिरभाव धारण करता है व बीच २ मे पीड़ित पेशी का आक्षेप होता है स्वाँस की आवाज तेज होती है, कभी २ रोगी धनुष की तरह टेढा हो जाता है। आक्षेप प्राय. लगातार वा टोनिक (Tonic) प्रकार का होता है। कब्ज रहता है, पेशाब बन्द होता है। खूब तेज बुखार भी हो सक्ता है।

भाविफल—इस रोग का परिणाम प्रायः साँघातिक होता है।

आनुसंगिक उपाय—रोगी का घर में ज्यादा गरमी न होना चाहिए। सिर में ठन्ढ प्रयोग न करके मेरुदन्ड में बराबर गर्म सेक देना चाहिए। रोगी अगर निगल न सके तो मलद्वार से पीचकारी के जरिए खाद्य देना चाहिए।

चिकित्सा :—

एकोनाइट ६-३०—चहु का अंकड़ जाना, आँख के गोला घुमता रहना, चेहरा के रङ्ग बदलता रहना। ओपीस्थोटोनस।

एंगस्टुरा ६-३०—आघातादि लगने के हेतु टिटेनस, पैर के तलवा मे सुई की तरह कोई चीज चुभ जाने से पीड़ा शिर गर्म, सर्व्व शरीर शीतल।

आर्निका ६-३०—चोट लगने के कारण टिटानस में

उपकारी है । खींचाव के साथ स्वांस, सिर गर्म, शरीर शीतल ।

वेलाडोना ३०-२००—चेहरा लाल और गर्म, सिर गर्म और पैर ठन्ढा । गले मे दर्द, निगलने मे कष्ट, कन्भलशन, आखों के पुतली फैली हुई। टेढ़ी दृष्टि ।

कैम्फर ३-६-३०—बेहोशी के साथ टिटेनस । शाखा-समूह फैला और अंकड़ा हुआ, मस्तक एक पार्श्व के तरफ टेढा हो जाता है, मुंह खुला और चहु अंकड़ा हुआ। स्वांस कष्ट, सर्व्व शरीर वर्फ की तरह ठन्ढा ।

सिकुटा ३-६-३०-२००—अचानक शरीर कठिन हो जाता है, ओपिस्थोटोनस । चेहरा फूला और नीला रङ्ग या फीका और शीतल, आंख स्थिर और टेढ़ी दृष्टि । मस्तक और मेरुदन्ड में आघात लगने से पीड़ा ।

कुप्रम ६-३०-२००—अज्ञानावस्था, चहु अंकड़ा हुआ, मुंह के फेन, निद्रावस्था मे चौक उठना, शरीर का सामने के तरफ टेढ़ा हो जाना ।

हाइड्रोसायेनिक-एसिड ३-६—एकाएक बिमारी का आक्रमण होना इसका विशेष लक्षण है । दिल के स्पन्दन अति मृदु, दिल रुक २ कर चलता है।

हाइपेरिकम ६-३०-२००—किसी प्रकार नोखदार चीज भोकने से पीड़ा हो तो दिया जाता है । जैसे सूइ चुभना, कांटी चुभना, चाकु से काटना वगैरह से रोग ।

लेकेसिस ३०-२००—दहिना पांव के अंगुठा गाड़ी के चक्का से कट जाने से टिटेनस।

हाइओसायेमस ६-३०-२००—चेहरा बैगनी और फूला २, आंख बाहर निकली हुई। पर्य्यायक्रम से ऊर्द्ध और निम्न शाखा मे कन्भलशन, शिर एक तरफ टेढ़ा हो जाता है, बेखबरी से पेशाव और पैखाना होना।

मस्कस ६-३०—समस्त शरीर अंकडा हुआ, पूरा ज्ञान रहता है। पेट के पेशी मे आक्षेप।

नक्स-भोमिका ३०-२००—ज्ञान पुरा रहता है, स्पर्श मात्र ही फिट होता है।

ओपिअम ३०-२००—आँख फैली हुई, अज्ञानावस्था खर्राटे स्वाँस, पैखाना और पेशाव वन्द।

जेलसिमियम, फाइटोलेक्का, प्लैटिना, रसटक्स, सिकेलि, स्ट्रैमोनिया, भेरेट्रम-भीर, फाइसोस्टिगमा इत्यादि औषध भी उपकारी है।

मृगीरोग वा एपिलेप्स।
EPILEPSY

रोग परिचय-एकाएक सम्पूर्ण चेतना लोप होना वा आक्षेप के साथ चेतना लोप होना को मृगी रोग कहते हैं।

कारण दिमाग की उत्तेजना, दिमाग के किसी रोग व

खानदानी मृगी रोग का स्वभाव इस रोग की उत्पत्ति का कारण है। कृमि, प्रबल मानसिक उत्तेजना, डर जाना, मानसिक उद्वेग, ज्यादा मानसिक परिश्रम, ज्यादा सहवास करना, हस्त-मैथुन, गर्भारोग, शराबादि मादक द्रव्य सेवन इत्यादि नाना प्रकार कारणों से यह रोग हो सकता है। इस रोग का प्रकृत कारण अभी तक निर्णित नहीं हुआ है लेकिन उपरोक्त कारणों को इस का उद्दीपक कारण कहा जाता है।

लक्षण—यह रोग प्रायः एकाएक आक्रमण करता है। कभी २ पूर्व लक्षण भी प्रकाश पाता है। पहले हाथ पाँव में शीतलता वा झिनझिनी मालूम होता है, यह क्रमशः सिर में तक फैल जाता है अथवा इन्द्रियादि की गड़बड़ी हो कर मृगी रोग आरम्भ होता है। रोगी अचानक तेज चितकार के साथ गिर पड़ता है, बेहोशी के साथ शरीर मे आक्षेप होता है। प्राय. आँख खुली रहती है. आँख का ढेला ऊपर चढ़ जाता है व इधर उधर घूमता रहता है। पहले ऐच्छिक पेशियाँ संकुचित हो जाते है। यह हालत थोड़ा देर रहती है उसके बाद ही जल्द २ पेशियाँ संकुचित व ढीला होता रहता है, जीभ निकल पड़ता है, कभी २ रोगी उसको दाँत से पकड़ लेता है। मुंह से फेन निकलता है। स्वाँस कष्टदायक और शब्द के साथ होता है। दिल की हरकत बेकायदे होती है। इसके बाद रोगी क्रमशः ज्ञान लाभ करता है। कोई २ रोगी आक्षेप के बाद बहुत देर तक

लेकेसिस ३०-२००—दहिना पांव के अंगुठा गाड़ी के चक्का से कट जाने से टिटेनस ।

हाइओसायेमस ६-३०-२००—चेहरा बैगनी और फूला २, आंख बाहर निकली हुई । पर्य्यायक्रम से ऊर्द्ध और निम्न शाखा में कन्सल्शन, शिर एक तरफ टेढ़ा हो जाता है, वेखवरी से पेशाव और पैखाना होना ।

मस्कस ६-३० —समस्त शरीर अंकडा हुआ, पूरा ज्ञान रहता है। पेट के पेशी में आक्षेप।

नक्स-भोमिका ३०-२००—ज्ञान पुरा रहता है, स्पर्श मात्र ही फिट होता है।

ओपिअम ३०-२००—आँख फैली हुई, अज्ञानावस्था खर्राटे स्वाँस, पैखाना और पेशाव बन्द ।

जेलसिमियम, फाइटोलेक्का, प्लैटिना, रसटक्स, सिकेलि, स्ट्रैमोनिया, भेरेट्रम-भीर, फाइसोस्टिगमा इत्यादि औषध भी उपकारी है।

मृगीरोग वा एपिलेप्स ।

EPILEPSY

रोग परिचय-एकाएक सम्पूर्ण चेतना लोप होना वा आक्षेप के साथ चेतना लोप होना को मृगी रोग कहते हैं।

कारण दिमाग की उत्तेजना, दिमाग के किसी रोग व

खानदानी मृगी रोग का स्वभाव इस रोग की उत्पत्ति का कारण है। कृमि, प्रबल मानसिक उत्तेजना, डर जाना, मानसिक उद्वेग, ज्यादा मानसिक परिश्रम, ज्यादा सहवास करना, हस्त-मैथुन, गर्मीरोग, शरावादि मादक द्रव्य सेवन इत्यादि नाना प्रकार कारणों से यह रोग हो सकता है। इस रोग का प्रकृत कारण अभी तक निर्णित नहीं हुआ है लेकिन उपरोक्त कारणों को इस का उद्दीपक कारण कहा जाता है।

लक्षण—यह रोग प्राय: एकाएक आक्रमण करता है। कभी २ पूर्व लक्षण भी प्रकाश पाता है। पहले हाथ पाँव में शीतलता वा झिनझिनी मालूम होता है, यह क्रमशः सिर में तक फैल जाता है अथवा इन्द्रियादि को गड़बड़ी हो कर मृगी रोग आरम्भ होता है। रोगी अचानक तेज चितकार के साथ गिर पड़ता है, वेहोशी के साथ शरीर मे आक्षेप होता है। प्राय. आँख खुली रहती है, आँख का ढेला ऊपर चढ़ जाता है व इधर उधर घूमता रहता है। पहले ऐच्छिक पेशियाँ संकुचित्त हो जाते हैं। यह हालत थोड़ा देर रहती है उसके वाद ही जल्द २ पेशियाँ संकुचित व ढीला होता रहता है, जीभ निकल पड़ता है, कभी २ रोगी उसको दाँत से पकड़ लेता है। मुंह से फेन निकलता है। स्वाँस कष्टदायक और शब्द के साथ होता है। दिल की हरकत वेकायदे होती है। इसके वाद रोगी क्रमशः ज्ञान लाभ करता है। कोई २ रोगी आक्षेप के वाद वहुत देर तक

बेहोशी से नींद मे पड़ा रहता है। अकसर इस रोग का "फीट" के समय बेमालुम पैखाना पेशाब हो जाता है। यह रोग शिशु-काल व यौवन मे होता है, ज्यादा उम्र मे नही होता है और औरत से मर्द को ज्यादा होता है।

भाविफल – यह रोग आराम होना कठिन है लेकिन सांघातिक नही होता है। किन्तु पानी, आग वगैरह में गिरने से मौत हो सकती है।

आनुसंगिक उपाय—रोगी को हमेशा सावधान रखना चाहिए। उसको आग व पानी से हमेंशा बचाना चाहिये। बेहतर है कि उसको कभी अकेले कहीं न जाने दिया जाय। किसी प्रकार अमिताचार नहीं करना चाहिये। ज्यादा दिमागी मेहनत न करना चाहिये। शराबादि न पीलोना चाहिये।

चिकित्सा :—

एगारिकस ६-३०-२००—आँख मिटमिटाना, हाथ पैर के अंगुलियो मे ज्वाला, खुजली और रक्तवर्णता, भय हेतु अथवा चर्म रोग दबजाने के हेतु पीड़ा।

आर्निका ३०-२००—आघात लगने से पीड़ा।

एमिल नाइट्रेट —इस दवा को सुंघने से विशेष उपकार होता है।

बेलाडोना ६-३०-२००—कन्मलशान बाहु मे आरम्भ

होता है; मस्तिष्क मे रक्तसंचार। पुरपुरी में दवदवाना, चेहरा और आंख रक्तवर्ण, पुतली फैली हुई।

बिउफो ३०-२००—भय अथवा हस्तमैथुन हेतु पीड़ा, रात मे फीट के वाद कई घन्टे तक अचेतन रहता है, वेखवरी से पेशाव निकल जाता है, निम्नशाखों में कन्भल्शन अधिक होता है।

कैलकेरिआ-कार्व ३०-२००—फीटके पहले चवानेके ऐसा मुंह संचालित होता है, दिल धड़कना, वाहु के ऊपर से कीड़ा चलने की तरह मालूम होना, मस्तक में पसीना। राक्षस की तरह खाता है किन्तु शरीर सूखता जाता है। पेट कड़ा और ऊंचा। ऋतुस्राव ज्यादा होता है, ग्रीवादेश का ग्लैन्डसमूह वढ़ा हुआ। भय हेतु अथवा प्राचीन चर्मरोग दव जाने से पीड़ा, शीतल पानीय पीने से पीड़ा, वर्ष के सव से छोटा और वड़ा दिन मे और पूर्णिमा के समय पीड़ा की वृद्धि।

कल्कोफाइलम ३-६-३०—ऋतुश्राव के समय मे पीड़ा।

इनान्थिक्रोकेटा Q—मृगीरोग की यह एक उत्तम दवा है। एकाएक वेहोशी, चेहरा फूला हुआ, मुंह मे फेन, पुतली का फैलना, आक्षेप के साथ दांत लगना। हाथ पांव ठन्ढा।

कास्टिकम ३०-२००—पीड़ा उपस्थित होने के पहले मानसिक दुर्वलता; मस्तक गर्म, शरीर में पसीना। श्वांस-

कष्ट, फीट के समय नाक से रक्तस्राव, मस्तक एक तरफ टेढ़ा हो जाता है, जीभ काटना, वेखवरी से पेशाव होना । दो फीट का मध्यवर्ती समय में मस्तक मे पसीना, नाक वन्द रहना, जीभ के दोनों पार्श्व मे सफेद दाग ।

सिकुटा ३०-२००—पेट के यंत्रों में रक्ताधिक्य होने के हेतु पीड़ा, चेहरा नीला और फुला २, टकटकी लगाकर ताकना । विजली की तरह चमक लगना, कम्पन, रोगी को निद्रा से जागना कठिन होता है ।

सिमिसिफ्युगा ३०-२००—इस रोग का आक्रमण ऋतुस्राव के समय अथवा उसके निकटवर्ती समय में होता है ।

कुप्रम ३०-२००—भयानक आक्षेप, फीट के पहले वमन-इच्छा, वमन, वायां वाहु संकुचित सा मालूम होना, दिल धड़कना । रोगी चित्कार करके गिर जाता हैं, फीट के समय अंगुलियां सिकुड़ जाते हैं । वेखवरी में पेशाव होना, छाती और मस्तक में पसीना होना, फीट के वाद रोना, शिरदर्द और वहुत परिमाण से पानी की तरह पेशाव होना, निद्रा । भय व मानसिक उत्तेजना से और पूर्णिमा तिथि में रोग की वृद्धि ।

डिजिटेलिस ३-६—हस्तमैथुन और अतिशय स्नायविक दुर्वलता हेतु पीड़ा (चायना, फस) । नाड़ी सुस्त ।

जेलसिमिअम ३०-२००—रक्तश्राव बन्द हो कर यह पीड़ा, रोग के आक्रमण के पहले सिर भारी मालूम होना।

हाइओसायेमस ३०-२००—रोग के आक्रमण के पहले शिरचकराना। फीट के समय चेहरा नीला होना, आँख बाहर निकली हुई, चितकार करना, दांत किड़किड़ाना, मुंह में फेन, पेशाव होना। कब्ज, निष्फल प्रणय वो शोक हेतु पीड़ा, तरल वस्तु पीने की चेष्टा करने से ही फीट उपस्थित होता है।

हाइपेरिकम ३०-२००—किसी चीज के साथ आघात लगने से ही यह रोग उपस्थित होता है।

लैकेसिस ३०-२००—फीट के पहले रोगी सो जाता है और उसके बाद ही फीट होता है। हस्तमैथुन, अत्यधिक संगम, शुक्रपात, प्रणय-प्रतियोगिता इत्यादि कारण से पीड़ा हो तो लैकेसिस विशेष फायदा करता है।

इन्डिगो ६-३०—कृमीरोग से यह रोग होना, गमगीन मिजाज शरीर लाल रङ्ग।

इग्नेशिया ६-३०-२००—शोक दुःख इत्यादि मानसिक कारणों से रोग, रोगी हमेशा गमगीन, ठीक एक ही समय फीट होना, ज्वर भाव, आक्षेप।

ओपिअम ३०-२००—रात में फीट होता है, मानसिक गड़बड़ी, दीर्घ फीट के बाद अत्यन्त निद्रा। खर्राटे के साथ स्वांस, कब्ज, मल भेंड़ारी की तरह।

पल्सेटिला ३०-२००—गले के भीतर गोला सा मालुम होता है, ऋतुस्राव के बदले फीट होना ।

सिपिया ६-३०-२००—प्रति दो-तीन सप्ताह के बाद प्रातःकाल में फीट होना, आंख फैली हुई, मस्तक का वायाँ तरफ में टेढ़ा होना रोगी को मालम होता है कि वह हवा मे उड़ रहा है, पीड़ा के बहुत दिन पहले से ही मस्तक में शब्द होता है, कान मे कम सुनाई देती है । नीन्द बहुत होती है ।

ष्ट्रामोनिअम ३०-२००—हमेशा मस्तक को दहीना तरफ झटका देता रहता है, वायाँ हाथ को घुमाता रहता है, खर्राटे श्वास के साथ गहरी नींद ।

सल्फर ३० २००—चर्म रोग दब जाने के हेतु पीड़ा । अन्यान्य औषधों के साथ बीच २ में इसका प्रयोग उपकारी है ।

केलि-ब्रोमाइड ६-३०—मानसिक जड़ता, अङ्गो का थकावट, बुद्धि का विगार ।

—:○:❀:○:—
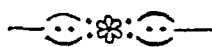
कम्परोग वा ट्रेमर (TREMOR)

वृद्धवयस, मस्तिष्क-मेरुमज्जा की पीड़ा, अत्यधिक रतिक्रिया और पारा इत्यादि विषैला चीज खाना, ज्यादा शराब पीना इत्यादि से कम्परोग उत्पन्न होता है । इस मे किसी का हाथ के कम्पन, किसी का मस्तक के कम्पन इत्यादि देखा जाता है ।

चिकित्सा——इस रोग मे आर्स, वेराइटा, कष्टिकम, एसिड-फस जिकम इत्यादि प्रधान औषध है। पारासेवन हेतु पीड़ा मे—कार्वो-भेज, चायना, हिपर, लेकेसिस, नाइट्रीक-एसिड, सल्फर फलप्रद है। मद्यपान हेतु कम्परोग में-आर्स, इपिकाक नक्स।

हाइड्रोफोबिया वा जलातंक।

HYDROPHOBIA, RABIES.

यह विषजनित रोग है। यह विष पागला कुत्ता, सियार इत्यादि जन्तु के लार में रहता है। पागला कुत्ता वगैरह किसी को काटने से उसको यह रोग होता है। अन्य रोग से हाइड्रोफोबिया में मृत्यु अत्यन्त कष्टदायक है। प्यास से छाती फटता है किन्तु जल का गिलास नजदीक लाने से ही भय से दम वन्द होने के सदृश होता है

पागला जन्तु का दंशन के बाद दो सप्ताह से ६-७ महिने मे रोग प्रकाशित होता है। हमारे देश मे लोग कहते है कि १८ दिनसे १८ महिने के अन्दर साधारणतः यह रोग प्रकाश पाता है। रोग प्रकाश पाने से जलदर्शन, जलस्पर्श ऐसा कि जल के शब्द तक रोगी के पास अत्यन्त भयानक मालूम होता है। जल देखने से रोगी नाना प्रकार मुखभंगी करके भययुक्त आंख से जलके तरफ ताकता है और कभी २ दीर्घ श्वांस फेंकता

है। किसी २ को जल देखने से ही आक्षेप उपस्थित होता है। क्रमशः आक्षेप वृद्धि पाकर धनुंष्टकार के सदृश होता है। कोई चीज निगलने की शक्ति नहीं रहती है। क्रमशः ज्वर व विकार दिखाई देता है। अवशेष में मृत्यु होती है।

प्रतिषेधक चिकित्सा—दंशित स्थान को शीघ्र जला देना उत्तम है। यह जला देने के नियम बहुत प्रकार का है। स्ट्रंग नाइट्रीक एसिड, स्ट्रंग कष्टिक अथवा आग की तरह लाल गर्म लोहा द्वारा किम्बा अंगार द्वारा जला दिया जाता है।

दंशित स्थान के तीन चार अंगुली ऊपर मे तुरन्त रस्सी द्वारा कस के बान्ध कर दंशित स्थान को चाकु से चिर कर उस मे से कुछ रक्त निकाल देना उत्तम है, उसके उपरान्त दंशित स्थान के ऊपर नरम केला के पत्ता रख कर उस के ऊपर तेल से भीगा हुआ एक खन्ड कपड़ा या रुई की मोटी वत्ती में आग लगाकर उससे वार २ धीरे २ जखम में आघात करके सेंक करने से विशेष उपकार होता है। जखम को हमेशा घी से तर रखना चाहिये।

हाइड्रोफोबिनम वा लिसिन २०० शक्ति—प्रति सप्ताह में एक वार व्यवहार करने से रोग का आक्रमण की सम्भावना कम रहती है।

—:※:—

एनागेलिस अरवेनसिस और मेलोमेजालिस भी इस रोग के उत्तम प्रतिपेधक हैं।

बहुत से विख्यात कविराजों का मत है कि कालो धतुरा के एक पक्का फल के साथ उसके समान वजन से काठडुम्बर के टुसा को पीस कर उससे २१ अदद गोली बना कर उसके एक गोली प्रति दिन एक गोली पानी के साथ निगल लेना चाहिये। यह गोली खाने से १८ महीने तक केला खाना अथवा केला के पत्ता पर भोजन करना निपेध है। २१ दिन तक नमक खाना भी निषेध है। गाय के घी के साथ भात और दूधभात उत्तम पथ्य है।

रोग प्रकाशित होने से निम्न लिखित औषध समूह की ३०, २०० और १००० शक्ति उत्तम कार्य्यकारी होती है। पहले ऊंची शक्ति व्यवहार करना चाहिए, उससे फल न मिले तो निम्न शक्ति व्यवहार करना चाहिये।

बेलाडोना—चेहरा और आंख लाल, फूला २, पुतली फैली हुई, सूर्य्य के रोशनी अथवा किसी प्रकार चमकीला बस्तु की ओर ताक न सकना। गले में आक्षेप और जखम की तरह दर्द, स्वर भंग, कन्भल्शन, तेज बिकार, काटना, मारना और नाना प्रकार के भयानक वस्तु देखना।

कैन्थारिस—निगलने के समय गले में आक्षेप और दर्द, लिंग का तान होना।

हाइओसायेमस—दंशित स्थान के चर्म बैगनी रङ्ग का होता है और उसका चारों ओर फुलो और कठिन होता है ।

हाइड्रोफोबिन—अत्यन्त कन्भलशन, रोगी गाली देता है, नङ्गा होता है ।

ष्ट्रामोनिअम—यह बेलाडोना और हाइओसायमस का समान औषधि है किन्तु इसमें नाना प्रकार के कल्पित भय के वस्तु देखा जाता है और रोगी चितकार करता रहता है ।

उन्माद रोग वा इन्सेनिटि ।

(INSANITY)

रोग परिचय—बुद्धिवृत्ति की बिगार को उन्मादरोग कहते हैं । यह दिमाग के प्रधान २ स्नायुकेन्द्रों की विकृति विशेष है, और इस से चिन्ता, अनुभव और कार्य्यादि की गड़बड़ी होती है ।

कारणादि—खानदानी दोष, अमिताचार, नेशा करना, मानसिक परिश्रम से अनिद्रा, हस्तमैथुन, सिर में चोट लगना, जरायु पीड़ा इत्यादि इस रोग का कारण है । शोक दुःख, नाउमेदी वगैरह से भी यह रोग होता है

लक्षण—इस रोग का लक्षण असंख्य प्रकार का होता है प्रधान २ लक्षण नीचे लिखा जाता है—उत्तेजना शीलता,

अवसाद, गन्दा रहना अथवा शुचिवाई, घृणाजनक पदार्थ भोजन, अश्लील भाव देखना, नंगा होना, दौड़ना, उछलना, चिल्लाना, गाली देना, प्रतिज्ञा करना; गाना, कपड़ादि फाड़ना, भूल बकना, अटपट बोलना, नींद न होना, शरीर मोटा होना, आत्महत्या की इच्छा, चोर देखना, दृष्टि-विभ्रम, प्रणयोन्माद इत्यादि ।

आनुसंगिक उपाय—रोगी को यत्न व स्नेह देखाना उचित है उसको मारना व धमकाना नहीं चाहिये । उसको हमेशा काम मे लगाये रखना अच्छा है । जिससे रोगी साफ रहे वैसा करना चाहिये ।

चिकित्सा—

ओपियम ३०-२००—हमेशे खौफ रहना, चौंक उठना मानसिक शक्ति का लोप, हाथ पांव का फड़कना, लेकिन नींद नहीं होती है, कब्ज, बुढ़ों का रोग ।

पलसेटिला ३०-२००—धर्मोन्माद, जरायु रोग के कारण उन्मत्तता, रोगी सर्वदा गमगीन, हमेशा अपने रोग की चिन्ता करता है, नर्म प्रकृति की स्त्री ।

इग्नेशिया ६-३०-२००—प्रणय में नाउमेदी, शोक दुःख इत्यादि से उन्माद रोग, रोगी सर्वदा गमगीन, लम्बी स्वांस लेता है, अस्पष्ट आवाज से रोता है, शब्द बर्दास्त नहीं होता है, काल्पनिक वा मानसिक पाप के लिये अनुताप ।

प्लाटिना ३०-२००—कामोन्माद, रोगी नितान्त अहंकारी सबको घृणा करता है, नीच समझता है, हर एक को आलिंगन करना चाहता है, मौत की चिन्ता, भूत का भय, दृष्टि विभ्रम।

सिपिया ३०-२००—विष के डर, स्मृतिशक्ति की दुर्वलता, अपने को आप मार डालने की इच्छा, मामूली कारण से भय पाता है, अकेले रहने से भय, क्रोध, काम मे अनिच्छा, किसी के ऊपर माया नही रहती है।

एनाकार्डिअम ३०-२००—रोगी की आत्मनिर्भरता के अभाव, क्रमशः मेधा और मानसिक वल कम होता है। कसम खाना, स्राप देना।

एसिड-फस ३०-२००—मानसिक अवसन्नता, मानसिक गड़वड़ी, विशेषतः चिन्ता शक्ति की दुर्वलता, अत्यधिक रति-क्रिया हेतु पीड़ा।

औरम ३०-२००—आत्महत्या की इच्छा अतिशय, प्रवल धर्म्म-विषय में पागल की तरह काम करना, अतिशय संगम-इच्छा। दिमाग में रक्ताधिक्य, वस्तुओं का अर्द्धभाग नजर आना, अत्यन्त दु:खी मिजाज।

वेलाडोना ३०-२००—अनिद्रा, डिलिरिअम, उन्मादावस्था। शब्द और रोशनी सह नहीं सकता है, शिर पीड़ा, आंख चमकीली, पुतली फैली हुई। नाना प्रकार के कल्पित भयानक वस्तु देखता है, सिर में रक्ताधिक्य, आंख व चेहरा लाल,

आर्सेनिक ३०-२००—रोग की निर्दिष्ट सामयिक वृद्धि ।

हाइओसायमस ३०-२००—नाना प्रकार के भयानक वस्तु के दर्शन के साथ डिलिरिअम । दिमाग में रक्ताधिक्य नहीं होता है । चौंक उठना, बरबराना, और अश्लील बातचित करना, नङ्गा होना ।

नक्स-भोमिका ३०-२००—कब्ज, सहज से ही उत्तेजित होने का स्वभाव, संध्या के समय निद्रालुता, अति प्रातःकाल मे जागना । जो लोग हमेशा मानसिक परिश्रम करता है, व सर्वदा बैठा रहता है, उसके निमित्त नक्स विशेष उपकारी है । तम्बाकु, गांजा, शराब इत्यादि सेवन करनेवाला रोगी को नक्स अवश्य देना चाहिये ।

जिन्कम ३०-२००—पुराना शिरपीड़ा, दिमाग की खराब हालत, हमेशा रोग के फिक्र के कारण मानसिक दुर्बलता ।

ष्ट्रैमोनिअम ३०-२००—भयानक क्रोध, अत्याचारी स्वभाव, डिलिरिअम नाना प्रकार भयजनक वस्तु दर्शन, सर्वदा बकना, गाना, नाचना, मारना, काटना, चिल्लाना । आंख चमकीली पुतली फैली हुई, आक्षेप, पक्षाघात ।

मन्तव्य—इस रोग में ऊंची ताकत की दवा ज्यादा फायदेमन्द होती हैं ।

—:०:—

व्याधिशंका वा अवसाद वायु ।

HYPOCHONDRIASIS.

रोगपरिचय—असल में विशेष किसी प्रकार रोग न होने पर भी रोगी सर्वदा ख्याल करता है कि उसको भारी रोग है या रोग होगा। इस लिए इसको व्याधिशंका कहते हैं। इससे मनोवृत्ति-समूह की उत्तेजना वा निस्तेज भाव होता है किन्तु बुद्धि ठीक रहती है।

कारण—यह रोग धनी व सुखी युवकों में ज्यादा देखा जाता है। खानदानी दोष, आलस्य, भोगविलास, अर्थ का अभाव, शोक, दुःख, फिक्र इत्यादि से भी यह होता है। कभी २ मेदा व यकृत की खरावी से भी यह रोग होता है। धातुदौर्बल्य इत्यादि के कारण चिकित्सा पुस्तकादि के पाठ से मन में खौफ होने से भी यह होता है।

लक्षण—किसी विशेष कारण न रहने पर भी रोगी हमेशा ख्याल करता है कि उसको कोई कठिन रोग हुआ है और उससे उसका मृत्यु वा उन्माद रोग का भावि-भय होता है। मामुली पेट फूलना, भूख की कमी, कब्ज इत्यादि के कारण रोगी ख्याल करता है कि उसको डिस्पेप्सिया हुआ है, कुछ दिन के बाद उसको किसी भारी बिमारी हुई है ऐसा बोध होता है। इसके अलावे ज्वर की तरह कभी शीत, कभी गर्मी मालूम होती है, शरीर का नाना स्थान में कीड़े चलने को

तरह बोध, हांफनी, खांसी, शिरदर्द, आधकपारी, सिरचक्कराना, कान में आवाज होना इत्यादि लक्षण हो सक्ता है। रोगी सर्वदा गमगीन रहता है, बड़ा चिरचिराहा होता है।

आनुसंगिक उपाय—रोगी को अकेले रहने न देना चाहिए। उसको सर्वदा किसी न किसी काम मे लगाये रखना चाहिए, उसको किसी प्रकार चिकित्सापुस्तक पाठ न करने देना चाहिए। नियमित स्नान करना चाहिए। जिस से सदा मन प्रफूल्ल रहे ऐसा उपाय करना चाहिए। ज्यादा सहवास इत्यादि से बिमारी हो तो अवस्थानुसार उसको बन्द करना वा नियमित कर देना चाहिए।

चिकित्सा-

औरम ६-३०-२००—मृत्युभय, अस्थिरता, फिक्र, सोच न सकना, सामान्य मानसिक परिश्रम से सिरदर्द होना।

चायना ३०-२००—मानसिक जड़ता, निराशा, फिक्र, सिरदर्द, अजीर्णदोष, पेट फूलना, आहार के बाद आलस्य इत्यादि।

नेट्रम-म्युर ३०-२००—भविष्य विषय मे निराशा, निर्जनप्रियता, जीवन में नफरत, क्रोध, सिरदर्द, भूख की कमी, हाजमे की खराबी, मुंह में बदबू, कब्ज इत्यादि।

हायोमाएमस ३०-२००—कोई कारण न रहने पर भी रामीरोग होने का खौफ।

लैकेसिस ३०-२००—किसी प्रकार शारीरिक या मानसिक कार्य्य करने में अनिच्छा, हमेशा दिल में सन्देह होना, अपने को आप मार डालने की इच्छा, गमगीनी व घबराहट, किसीने विष खिलायगा ऐसा डर। हमेशा अपनी तन्दुरुस्ती का फिक्र, नींद के बाद तकलीफ का बढ़ना

नक्स-वोमिका ३०-२००—जीन्दगी से नफरत, क्रोध, शारीरिक व मानसिक परिश्रम में अनिच्छा, मामुली मेहनत से थक जाना, हमेशा लेटे रहने की इच्छा, कब्ज, रात जागना, शराब पीना, याशी वगैरह से रोग।

स्टैनम ३०-२००—गमगीनी, हताशा, भूल आवाज सुनना, मेदा मे तकलीफ उसके साथ नियमित भूख होना, पेट मे खाली भाव, कब्ज, रात मे पसीना, टहलने फिरने से तकलीफ की कमी, विश्राम से फिर मालुम होना।

सल्फर ३०-२००—अपनी तन्दुरुस्ती व मुक्तिविषय में प्रार्थना करना, तकलीफदार फिक्र, बेचैनी, चांदी मे व हाथ पांव में ज्वाला, अच्छी नींद न होना, कब्ज।

मूर्च्छा या फेन्टिंग।

(FAINTING)

रोग परिचय—थोड़ी देर के लिए अचेतन हो जाना को मूर्च्छा कहते है। यह नाना विध यंत्र व दिलका यांत्रिक विगार के एक लक्षणरूप से प्रकाश पाता है।

कारण—साधारणतः पतन व आघात, असह्नीय दर्द, भय, शोक, ज्यादा रक्तश्राव, ज्यादा भीर मे जाना इत्यादि से मूर्च्छा होता है। किसी कारण से ज्यादा कमजोरी होने से भी यह हो सक्ती है।

लक्षण—इससे कुछ काल के लिए चेतना रहित हो जाती है, होश व चलने की ताकत नहीं रहती है। स्वांस व दिल की हरकत बन्द होने की सम्भावना होती है, रोगी का होंठ व चेहरा मुर्दे के समान हो जाता है।

आनुसंगिक उपाय—रोगी को भीड़ के अन्दर से खुली हवा में लाकर उस का तमाम बदन का कपड़ा ढीला कर देना वा खोल देना चाहिए। रोगी को सिर नीचा करके लेटा देना चाहिए। आंख, सिर व छाती पर शीतल जल का छिंटा देना चाहिए।

चिकित्सा:—

एकोनाइट ६-३०—डर के वजह से मूर्च्छा तेज दिल-धड़कना, आंख व चेहरा लाल लेटी हुई हालत से खड़ा होने से मूर्च्छा व चेहरा फीका हो जाना।

आर्निका ६-३०—आघात या पतन से मूर्च्छा।

चायना ६-३०—ज्यादा रक्तश्राव वा कमजोरी से मूर्च्छा।

कार्बो-भेज ३०-२००—मूर्च्छा के बाद नींद, बिछावन से उठने के बाद मूर्च्छा, कमजोरी।

डिजिटेलिस ६-२००—मूर्च्छा के कवल सिर में चक्कर और नजर का धुंधला होना, नाड़ी अतिशय सुस्त, मतली, दिल का बिगार ।

कैमोमिला १२-३०—शिशु वा नाजुक मिजाज का लोगो को दर्द के मारे मूर्च्छा होना ।

इग्नेशिया ६-३०-२००—भय, क्रोध, शोक दुःख इत्यादि से मूर्च्छा ।

लैकेसिस ३०-२००—स्त्रि लोगों को मूर्च्छा होने की आदत, मूर्दे के समान चेहरा, स्वास व नाड़ी करीव लुप्त, दिल मे दर्द, भय, शोक इत्यादि कारण से मूर्च्छा ।

सल्फर ३०-२००—दिन ११ बजे मूर्च्छा व उसके कारण भोजन न कर सकना ।

भेरेट्रम-एल्ब १२-३० - दर्द वगैरह से रोगी का मन एकदम दूसरे तर्फ हो जाना व हताश हो कर मूर्च्छा होने की करीना । सामान्य हरकत से मूर्च्छा का आक्रमण । कपार मे ठंढा पसीना ।

—०—

अनिद्रा वा इनसमनिया ।

(INSOMNIA—SLEEPLESSNESS)

रोग परिचय—नींद के सम्पूर्ण अभाव वा यथोचित निद्रा के अभाव को अनिद्रा रोग कहते हैं ।

कारण—यह दूसरी २ बिमारियों का लक्षण मात्र है। नाना विध पीड़ा मे नींद का व्याघात होता है। उन्माद रोग होने के पूर्व मे अनिद्रा देखी जाती है। रक्ताल्पता रोग में रात में अनिद्रा व दिन मे ज्यादा नींद होते देखी जाती है। उपदंश रोग से भी अनिद्रा रोग होता है। ज्यादा पाठ, ज्यादा सोच फिक्र, भय, शोक, दुःख, क्रोध, ज्यादा चाय, कौफि इत्यादि पीना, अजीर्णदोष इत्यादि से भी अनिद्रा रोग होता है।

भाविफल—जल्द यह तकलीफ दूर न होने से नाना प्रकार दिमागी हर्ज पहुंचता है।

आनुसंगिक उपाय—प्रतिदिन शीतल जल में स्नान व खुली हवा मे टहलना व व्यायाम करना उचित है। चाय कौफि वगैरह उत्तेजक चीज व्यवहार न करना चाहिए ज्यादा घी की चीज भी भोजन न करना चाहिए। सोने के कबल जिससे भोजन हजम हो जाय ऐसा बन्दोबस्त करना कर्त्तव्य है। जिस कारण से रोग हुआ है उस को सब से पहले दूर करने की कोशीश करना चाहिए।

चिकित्सा —

एकोनाइट ६-३०—बालक व बृद्धों की अनिद्रा, मध्य रात्रि के बाद नींद का अभाव, घबराहट, बेचैनी।

बेलाडोना ६-३०—स्नायविक उत्तेजना, दिमाग में

खूनकी ज्यादती, सिरपीड़ा, उंघाय आना लेकिन नींद न होना।

आर्सेनिक ३०-२००—खून की खराबी, पोषणाभाव के साथ स्नायविक दुर्बलता, अस्थिरता, ज्यादा प्यास, आखिर रात को अनिद्रा ।

कैमोमिला १२—स्नायविक उत्तेजना से अनिद्रा, अजीर्णता, दांत निकलने के समय अनिद्रा, बेचैनी, कुंथना, नींद मे बरबराना, मिजाज चिरचिराहा ।

सिना ३०-२००—चिल्लाना, बेचैनी, कृमि के कारण अनिद्रा, शिशु को न डोलाने से सोता नहीं। नींद से डर कर जाग पड़ता है।

कफिया ६-३०—शारिरीक व मानसिक उत्तेजना से अनिद्रा, रात जागना वा कौफि खाने से अनिद्रा, बिना कारण से अनिद्रा ।

जेलसिमियम १२-३०—स्नायविक उत्तेजना से अनिद्रा, डिम्बकोष की पीड़ा, गर्भावस्था में कमजोरी, तम्बाकु पीना इत्यादि से अनिद्रा ।

हायोसायमस ३०-२००—ज्यादा उंघाय वा नींद न होना, भय, निराशप्रणय इत्यादि से पीड़ा, गर्भावस्था में रोग ।

इग्नेसिया ६-३०-२००—शोक, भय, वा मनोकष्ट के कारण अनिद्रा, शासन के बाद अनिद्रा, हिष्टिरिया रोग से अनिद्रा ।

नक्स-भोमिका ३०-२००—ज्यादा पाठ हमेशा बैठा रहना, अजीर्ण दोष, चाय, कौफी वगैरह पीना, गरम चीज खाना गरम दवा खाना, रात जागना वगैरह से अनिद्रा। कब्ज, शेष रात में नींद टूट जाना, फिर भोर से कुबेर तक नींद होना।

ओपिअम ३०-२०० - भय वा कुसंवाद से अनिद्रा। मत-वाला, बुड्ढा वा बालक की पीड़ा, उंघाय आना लेकिन नींद न होना, सुनने को ताकत की तेजी।

पलसेटिला ६-३०-२००—बेशी रात में ज्यादा भोजन, प्रथम रात में ज्यादा चिन्ता होने के कारण नींद न होना, भोर मे नींद होना।

सिपिया ३०-२०० - गर्भावस्था वा सूतिकावस्था में अनिद्रा अथवा जरायु की गड़बड़ी से अनिद्रा, जल्द २ नींद टूट जाना उस के बाद फिर नींद न होना।

सल्फर ३०-२००—एक बार नींद टुट जाने से फिर नींद नही होती है। बिल्ली की तरह नींद अर्थात जरा सा आवाज ही से नींद टुट जाना, हाथ पैर व चांदी मे ज्वाला।

—:(०):—

गला, गलमध्य व मुखमध्य की पीड़ायें।

DISEASES OF THE NECK, THROAT & MOUTH

घेघा वा गयटार।

(GOITRE)

रोग परिचय—बगैर प्रदाह के थाइराइड गिल्टी (कण्ठ की गिल्टी) बढ़ जाने से उसको घेघा कहते हैं जहां का पानी मे ज्यादा मैग्नेशिया के साथ चुना रहता है वहां के लोगो में यह रोग अधिक होता है।

चिकित्सा

बेलाडोना—सिर मे गर्मी व खुन की ज्यादती। निगलने में कष्ट। छूने से दर्द।

ब्रोमिअम—रोगी कम उम्र का और गोरा, आंख नीली, बाल पतला।

केलकेरिया-कार्ब—कण्ठमाला धातु के रोगी, अमावस के रोज तकलीफ की ज्यादती।

आइओडिअम—घेघा अत्यन्त कठिन।

नेट्रम-कार्ब—घेघा में बहुत दर्द, घेघा फुला और कठिन।

नेट्रम-म्युर, नेट्रम-सल्फ—ये दो औषध भी विशेष फलप्रद है।

स्पंजिया, केलकेरिया—फ्लुओर, केलकेरिया फस केलकेरिया-आयोड, केलि-आयोड, लेकेसिस (बायां तरफ को पीड़ा मे), लाइकोपोडिअम (दहिना तरफ की पीड़ा मे) रसटक्स, बैडिग्यागा प्रभृति औषधे भी इस रोग मे विशेष उपकारी है।

अन्डे के छिलका के चिचुर्ण को शक्तीकृत करके व्यवहार करने से बहुत रोगी में फल पाया गया है इसकी ३० शक्ति का एक खोराक सप्ताह मे एक बार दिया जाता है। इस रोग में ३० या २०० शक्ति की दवा ज्यादा फल देती है।

—-:(०):-:—

जिह्वा का प्रदाह वा ग्लौसिटि्स।

GLOSSITIS

ऐन्थ्राक्स विष (Anthrax Poison) शरीर में प्रवेश करने से यह रोग संक्रामक होता है, पारा के दोष, कीट-दंशन, ज्यादा गरम चीज खाना, या पीने से भी यह रोग हो सकता है। इससे जीभ लाल होकर फुल जाता है। प्रदाह बहुत ज्यादा हाने से स्वरनली व घंटी मे चांप पड़ने के कारण स्वांस कष्ट होता है। पीड़ा कठिन होने से दम बन्द होकर मृत्यु भी हो सकता है। इस के साथ ज्वर भी रहता है।

चिकित्सा :—

एकोनाइट ६-३०—प्रबल प्रदाह, प्रबल ज्वर, वद - सुखा, तेज सिर दर्द; जीभ में सुई भोकने की तरह दर्द के साथ ज्वाला, चेहरा लाल, ज्यादा प्यास व बेचैनी, दम फुलना।

एपिस ६-३०—जीभ मे कीड़ा काटने की तरह या जल जाने की तरह भाव, जीभ में ज्वाला व अवला होना, जीभ का ज्यादा फुलना, प्यास न होना।

कोनायम ६-३०—जीभ के मूल देश मे दर्द, जीभ का कठिनता व दर्द निगलने मे कष्ट।

आर्निका ६ ३०— जीभ में चोट लगने से पीड़ा, मुंह मे सडा वदबू जीभ फुला व मैला।

ऐन्थ्रासिन ३०-२००—जीभ में अत्यन्त ज्वाला, जीभ का जखम का सड़ जाने की करीना होने से आर्सेनिक के बाद इसका प्रयोग फलप्रद है।

आर्सेनिक ३०-२००—कठिन प्रकार की पीड़ा; जीभ सब्जा-पन वा काला रङ्ग, जखम का सड़ जाना, ज्यादा प्यास, लेकिन थोड़ा २ पानी पीना, जीभ में ज्वाला के साथ दर्द, बेचैनी।

बेलाडोना ६-३०—जीभ गर्म व सुखा, उसके किनारे लाल, छूने से दर्द, जीभ मे ज्यादा प्रदाह व फुलन, जीभ का अगला हिस्सा में फुन्सियां, वहां छुने से ज्वाला।

कैल्केरिया-कार्ब ३०-२००—जीभ का अगला हिस्सा, बगल व पीछे के हिस्से में जखम, मुह व जीभ में ज्वाला, कण्ठमाला धातु ।

कैन्थारिस ६-३०—जीभ मे प्रदाह, फूलन व पीब होना, मुंह मे जखम, ज्वाला व दर्द के साथ फुन्सियां, जीभ आग की तरह लाल, जीभ का मूल देश की गिल्टियां फूली हुई और लाल, मुंह गले और मेदा मे ज्वाला, लार निकलना ।

कष्टिकम ३०-२००—जीभ के अगले हिस्से मे दर्द के साथ फुन्सियां, जीभ का बगल सफेद और बीच का हिस्सा लाल, जीभ के मूल में दर्द, लार गिरना ।

लैकेसिस ३०-२००—जीभ पर अवला होना, उसका जखम बनना, दम बन्द होने के भाव, जीभ सड़ जायगा ऐसा मालुम होना, निगलने मे कष्ट, गले में छूना वर्दास्त न होना, नींद के बाद तकलीफ का बढ़ना ।

मार्कुरियस ६-३०-२००—जीभ मे प्रदाह व पीब होना, जीभ मोटा, ज्यादा लार निकलना, जीभ में ज्वाला, मुंह में बदबू, चहु सख्त, निगलने मे कष्ट । पारा दोष रहने से यह उत्तम है ।

सल्फर ३०-२००—पुराना किस्म का रोग में अच्छा है ।

आर्टिका-युरेन्स २-६—जीभ जल जाने से रोग में फायदेमन्द है ।

जीभ के कैन्सर वा सड़ा जखम के लिये- आर्स, ऐन्थ्रासिन, कष्टिकम, कार्बो-एनि, कार्बो-भेज, कोनायम, हाइड्रास्टिस, नाइट्रिक-एसिड, सिपिया, फाइटोलैक्का, साइलिशिया, एसिड-म्युर वगैरह दवायें फायदेमन्द है।

जीभ के पक्षाघात के लिए- बैराइटा कार्ब, कष्टिकम, हायोसायमस, नक्स-मस्केटा, ओपिअम, ष्ट्रामोनियम फायदेमन्द है।

गलमध्य-प्रदाह वा सोरथ्रोट।

SORE THROAT.

रोग परिचय—गलमध्य की बलगमी अस्तर झिल्ली का प्रदाह का साधारण नाम सोरथ्रोट है। प्रदाह ज्यादा हो कर गले में जखम होने से उसको अलसारेटिभ (Ulcerative) सोरथ्रोट कहते हैं। पीड़ा बहुत दिन का होने से उसको पुराना सोरथ्रोट (Chronic sorethroat) कहते हैं।

कारण- ठंढ या गर्मी लगना, ज्यादा लेक्चर देना वा गाना, ज्यादा तम्बाकु पीना, चूना वगैरह तेज चीज निगलना इत्यादि कारण से यह रोग होता है। बाज वक्त यक्ष्मा रोग के सहकारी रोग रूप से भी यह प्रकाश पाता है।

लक्षण—इससे गलनली लाल होता है, उस में दर्द होता है, गलनली में खुश्की व गर्मी, निगलने मे कष्ट, खांसी प्रभृति लक्षण होते है। ज्वर भी इसके साथ होता है। गले मे सुरसुराहट के साथ खांसी होती है। घन्टी बढ़ जाती है, टन्सील भी बढ़ जा सक्ता है। बाज वक्त गलनली में बहुत से छोटे २ दाने निकलते हैं, और उसको ग्रैन्युलार (Granular) सोर-थ्रोट कहते हैं। गले मे जख्म भी हो सक्ता है। रोगी को मालूम होता है कि गले मे बलगम जमकर अटका हुआ है, रोगी बार बार उसको निकालने के लिए खंखारता रहता है।

चिकित्सा—

एकोनाइट ६-३०—गला के भीतर खुश्की और ज्वाला, ज्वर, अस्थिरता, ज्यादा प्यास, नया प्रदाह।

एपिस ६-३०—तरुण प्रदाह, गले के भीतर ज्वाला, डंक मारने की तरह दर्द, शोथ। टन्सील, घण्टी और जीभ लाल और फूला।

बेलाडोना ३०-२००—नया रोग, गलनली में तेज प्रदाह, फूलना, गलनली ज्यादा लाल, गलनली मे दर्द निगलने मे ज्यादा कष्ट, ज्वर; चेहरा लाल, सिरदर्द।

एलुमिना ३०-२००—पुराना प्रदाह, गलनली में जखम की तरह दर्द, खुश्की, स्वरभंग, गाढ़ा श्लेष्मा, क्षत स्थान से पीला या भूरा रंगके दुर्गन्धयुक्त पीव निकलता है।

एल्म-ट्रीफ ३०-२००—पुराना प्रदाह, सर्वदा खंखारना, नाक और गले के भीतर श्लेष्मा जमा रहने के साथ गला बैठ जाना।

आरजेन्टम-नाइट्रिस ३०-२००—गले के भीतर गाढ़ा श्लेष्मा जमा रहने के हेतु दम फूलना, गले मे दाने होना, कटा हुआ घाव सा मालूम होना।

औरम ३० २००—जखमदार प्रदाह, मुंह में सड़ा छेना के सदृश दुर्गन्ध अस्थि में जखम, पारा की खराबी।

बैपटिसिया ३०-२००—गले में सड़ा व काला रंग के जखम। स्वास प्रस्वांस मे दुर्गन्ध, नितान्त कमजोरी।

कस्टिकम ३०-२००—गलनली में ज्वाला, गाने के हेतु स्वरभंग।

केलिबाइक्रम ३०-२००—तालु व घन्टी में जखम, रस्सी की तरह मोटा व लस्सादार बलगम निकलना, नाक में बदबू।

हिपर-सल्फ ३०-२००—पारा के अपव्यवहार, पुराना प्रदाह, गले में कांटी की तरह चुभना।

हाइड्रास्टिस ३०-२००—यह एक उत्कृष्ट औषध है, इसके Q के १५ बुन्द एक गिलास गर्म पानी में मिला कर कुल्ला करने से विशेष उपकार होता है। अनेक चिकित्सक के मत में यह औषध प्राचीन प्रदाह मे उपकारी है।

इग्नेसिया ६-३०-२००—तरुण प्रदाह, गले मे गोली सी कोई चीज अटकी हुई मालुम होना, दर्द, निगलने के समय कष्ट की ज्यादती ।

लैकेसिस ३०-२००—गला मे फांसी लगने की तरह मालुम होना, गले के भीतर ढेला सो मालुम होना, निगलने के समय अत्यन्त दर्द, गला स्पर्श करने से अत्यन्त कष्ट होता है, बायां तरफ की पीड़ा, नींद के बाद वृद्धि ।

मार्क-सल ६-३०-२००—गलनली लाल और फुला, जीभ मोटा, फुला २, अत्यन्त लार निकलना, गरदन की गिल्टियां फुली हुई, उस मे दर्द, ज्यादा प्यास, मुंह में बदबू स्वांस बदबुदार । गले मे जखम । पारादोष, रात को ज्यादा तकलीफ होना ।

लाइकोपोडिअम ३०-२००—दहिना तरफ मे पीड़ा अधिक कष्टदायक, समय २ प्रात काल में बहुत सा पीलापन गाढ़ा बलगम निकलता है ।

फसफोरस ६-३०-२००—गलनली में खुश्की, गलनली चमकीला दिखाता है ।

फाइटोलाक्का ३०-२००—गले में आग की तरह गर्म गोला है ऐसा मालुम होना ।

पल्सेटिला ३०-२००—गलनली का नस फुला हुआ, व जीभ सूखा, प्यास न होना ।

केलिहाइड्रो ३०-२०० — गर्मी रोग व पानी की खराबी से रोग।

नाइट्रिक-एसिड ३०-२०० — गर्मीरोग व पारा की खराबी से गले में जखम, गले में दर्द, मुंह में बदबू मुंह से लार निकलना।

मुखमध्य-प्रदाह वा ष्टोमाटाइटिस।

(STOMATITIS.)

मुंह की बलगमी झिल्ली प्रदाहयुक्त होकर उसमें दर्द, जखम वगैरह होने से उसको ष्टोमाटाइटिस कहते हैं, यह रोग निम्न लिखित कई प्रकार का होता है:—

निनांवां वा एफ्थि (Aphthæ)—यह शिशु रोग है, इस रोग का पूरा ब्यान व चिकित्सादि शिशु रोग में दिया गया है—इसलिये यहां दोबारा ब्यान करने की जरूरत नहीं समझते हैं। शिशु रोग देखिये।

(२) थ्राश (Thrush) यह भी मुंह का एक खास किस्म का जखम है। यह एफथी से भी खराब रोग है। दुर्बल, बेखून बच्चों को खास कर ज्यादा दस्त होने वाले बच्चों को और टाइफाइड ज्वर, यक्ष्मा रोग वगैरह की शेष अवस्था में युवकों को होता है। यह रोग, तालू, मसूढ़ा, होठ इत्यादि में होता

है। जख्म सफेद होता है लेकिन इस के चारो ओर लाल होता है। वाज वख्त वहुत से जख्म आपस मे मिल जाता है।

(३) मुंह का सड़ा जख्म वा अलसारेटिम ष्टोमाटाइटिस (Ulcerative stomatitis) यह मुंह का खराव किस्म का जख्म है। रक्तालपता ही इस रोग का प्रधान कारण है। यकृत का बिगार, अजीर्ण रोग, मैलेरिया जनित पुराना ज्वर, प्लीहा, यक्ष्मारोग प्रभृति कारण से भी यह रोग होता है। गर्मीरोग, पारा के दोष, इत्यादि भी इसके कारण से गिना जाता है। स्त्रियों को हैज की खराबी या गर्भावस्था में यह रोग हो सक्ता है। जख्म पहले पहल मसूढ़ा मे होता है, पीछे तालु, जीभ, गाल, होठ इत्यादि में फैल जाता है। जख्म मे वहुत दर्द होता है, अकसर जखम सड़ गल जाता है। मुह से वदबू आती है, लार निकलता है। यह कठिन रोग है।

आनुसंगिक उपाय—सर्वदा सुसुम पानी में कैलेन्डुला मदर टिंचर मिला कर मुंह धोना चाहिए। हाइड्रास्टिस वा बैपटिसिया का मदर टिचर पानी में मिलाकर उससे कुल्ला करने से भी वहुत फायदा होता है। एक औंस पानी मे मदर टिचर १० बुन्द होना चाहिए।

चिकित्सा—

इथुजा ६-३०—यह एफथि के लिए अच्छी दवा है। बच्चा दूध पीने से दही की तरह थक्का २ होकर कै हो जाता है।

आरसेनिक ३०-२०० — जखम में अत्यन्त ज्वाला, निहायत कमजोरी, जखमका सड़ जाना, ज्योदा प्यास, बेचैनी ।

बैप्टिसिया ३०-२०० — यक्ष्मारोग का शेषावस्था में मुंह मे जखम । जख्म बैगनी रंग का होता है, मुंह मे अत्यन्त दुर्गन्ध । सिर्फ तरल वस्तु पी सकता है । मल, मूत्र, पसीना इत्यादि श्राव अत्यन्त बदबूदार । पीलही के कारण जख्म ।

बोरैक्स ६-३० — मुंह में अत्यन्त गरमी और खुश्की, उदरामय, मल सब्ज । मुंह मे जख्म, ऐफथि के लिए यह बहुत अच्छी है ।

हिपर-सल्फ ३०-२०० — पारा के खराबी में दिया जाता है ।

मार्क्युरिअस ६-३०-२०० — मुंह से ज्यादा लार निकलना मुंह मे दुर्गन्ध, मसुढ़ा, जीभ और दांत के भीतर जखम, श्वास दुर्गन्धी, रात में पीड़ा की वृद्धि ।

स्टैफिसेग्रिया ३०-२०० — जखम नीलापन लाल या पीला । श्वांस दुर्गन्धी, मुंह से लार निकलना ।

सलफिउरिक-एसिड ३०-२०० — मुंह से अत्यन्त लार निकलना । बोरैक्स के बाद यह औषध उपकारी होता है । शरीर जर्द, मसुढ़े से रक्तश्राव । अत्यन्त दुर्बलता, शरीर के किसी २ स्थान मे रक्त का जमा होना ।

कैलकेरिआ-कार्ब ३०-२००—दांत निकलने के समय की पीड़ा। खट्टा कै, खट्टा दस्त। सिर में पसीना।

हाइड्रास्टीस ६-३०-२००—गाढ़ा, गोंद की तरह लस्सा-दार मवाद निकलना।

लैकेसिस ३०-२००—जीभ के अग्रभाग में सड़ा जखम।

नाइट्रिक-एसिड ३०-२००—पारा की खराबी से रोग, मुंह में दुर्गन्ध, अत्यन्त लार निकलना। जख्म में सुई चुभने की तरह दर्द।

फाइटोलैका ३०-२००—जीभ के बगलोंमें जखम, उसका अग्रभाग लाल, मुंह से चिपचिपा फेन निकलना, पारा की खराबी।

कार्बोभेज ३०-२००—ज्यादा नमकीन चीज खाने से वा पारा की खराबी से रोग, मसूढ़ा फूला, उससे आसानी से खून निकलना।

सलफर ३०-२००—लाल रंग बदबूदार लार निकलना, दस्त होना, सड़ा जख्म।

नक्स ३०-२००—मुंह, मसूढ़ा व तालु मे सड़ा व बदबू-दार जख्म, कब्ज।

म्युरिएटिक-एसिड ३०-२००—कोदवा या चेचक के बाद मुंह के सड़ा जख्म मे उपकारी है। टाइफाइड हालत।

केलि-म्युर, रस-भिनेटा, ऐराम, डल्कामेरा इत्यादि भी लक्षणानुसार दिया जाता है।

मसूढ़े में फोड़ा या गम वएल।

(GUM BOIL)

दाँत के मसूढ़े में छोटे २ फोड़े होते हैं, उस मे दर्द होता है, अकसर फोड़ा पक जाता है और उस मे पीव होता है। जब तक फोड़ा फट कर पीव न निकल जाय तब तक मसूढ़े में बहुत दर्द रहता है। इस के साथ प्राय. ज्वर रहता है।

कारणादि—दांत में कीड़ा पड़ना व ठन्ढ लगने से यह रोग होता है।

भाविफल—यथा समय में इस रोग की चिकित्सा न करने से दांत क्षयप्राप्त होता है और टुटता जाता है। इससे अजीर्णरोग होता है।

आनुसंगिक उपाय—हर्रे का छिलका फोड़े के ऊपर लगा रखने से फायदा होता है। फोड़े का पकने की करीना हो तो पुलटिस देना अच्छा है। फोड़ा पक जाय तो नस्तर दे देना चाहिये। जिससे घाव सैन न वन जाय उसके प्रति ध्यान रखना चाहिए।

चिकित्सा :—

एकोनाइट ३-६—मसूढ़े के फोड़े के साथ ज्वर रहने से इस से फायदा मिलता है।

बेलाडोना ६-३०—फोडा लाल, कठिन व बहुत दर्द के साथ। चेहरा लाल, सिरदर्द, साम को रोग की वृद्धि।

कार्बो-भेज ३०-२००—मुंह में बदबू, अजीर्णदोष, आसानी से मसूढ़े से खून गिरना।

हिपर-सल्फ ६-३०-२००—कण्ठमाला धातु के लोग की पीड़ा अथवा पारा की खराबी से रोग में विशेष उपयोगी है। फोड़ा पक कर पीव होना, मसूढ़ा फूला व नर्म, मसूढ़े में हाथ न लगाया जाता है।

मार्क्युरियस ६-३०-२००—फोड़ा मलिन अथवा बहुत लाल, उसमें ज्वाला के साथ चुभते वाला अथवा दबदबाने वाला दर्द, मसूढ़ा फूला, मुंह से लार गिरना, रातमें रोग की वृद्धि। पीड़ा के शुरु में इसके व्यवहार से फोड़े में पीव पैदा हो सक्ता है।

नक्स-भोमिका ६-३०-२००—निचले मसूढ़े मे फोड़ा, ज्यादा रक्तश्राव, मुंह मे बदबू, कब्ज।

फस्फोरस ६-१२—निचले मसूढ़े मे फोड़ा, ज्यादा रक्तश्राव।

साइलिशिया ६-३०-२००—मसूढ़ा बहुत फूला, उस में दर्द, फोड़े में पीव होना, पीव पतला वा बदबूदार, मसूढ़े मे सैन होना।

सल्फर ३०-२००—बार बार यह रोग होना, मसूढ़ा फूला, उसमे दर्द।

स्टैफिसेग्रिया ३०-२००—कीड़ा पड़ा हुआ दांत के वजह से यह रोग होना।

दन्तशूल वा टूथएक ।

(TOOTHACHE-ODONTALGIA.)

कारण—वहुत प्रकार कारण से यह रोग होता है—उन मे निम्नलिखित कारण प्रधान है। दांत में कीड़ा पड़ना, ठंढ लगना अजीर्ण दोष इत्यादि। गर्भावस्था मे कभी २ यह रोग उपस्थित होता है। कृमी के कारण अथवा ज्यादा मीठा खाने वाले बच्चों को यह तकलीफ अक्सर होती है।

आनुसंगिक उपाय—प्रतिदिन नियमितरुप से अच्छी तरह से दांत साफ करना चाहिए। भोजन के वाद दांत के फांक मे कोई चीज अटकी रहे तो फौरन निकाल देना चाहिए। ज्यादा उम्र तक स्तनदूध पीने से दांत मे कीड़ा पड़ता है इस लिए १-१॥ साल के वाद ही बच्चों को स्तनदूध छुड़ा देना अच्छा है। प्रसूतियों को उचित है कि बच्चे को दूध पीलाने के बाद एक चामच पानी पीला दें और मीठा आदि खाने के बाद ठंढा पानी से मुंह धो दें।

एकोनाइट Q अथवा प्लान्टागो Q फाहा में करके दर्द की जगह लगाये देने से दर्द कम हो जाता है।

चिकित्सा—

बांये तरफ के दर्द—एकोन, एपिस, आर्निका, कार्बो, कैमो, सल्फ, मार्कु।

दहिने तरफ के दर्द—वेला, ब्राइओ, कैल्क, कफिया, लैके, नेट्रम म्युर, नक्स, ष्टैफिसेग्रिया।

खोखला दांत में दर्द—ऐन्टिम-क्रुड, बेल, कैल्क, कार्बो, कष्टिकम, कैमो, मार्कु, नक्स, पल्स, ष्टैफिसेग्रिया।

सविराम दर्द—बेला, कैमो, कफिया, मार्कु, नक्स, पल्स, ष्टैफि, सल्फ।

सिर्फ दिन में दर्द, रात मे आफियत—मार्कुरियस, कैल्क, नक्स,।

रात में दर्द की ज्यादती—एकोनाइट, बेला, कार्बो, कैमो, कफिया, मार्कु, नेट्रम-म्युर, नक्स, पल्स रस्टक्स, ष्टैफि।

जागने से दर्द,—बेल, कार्बो, लैके, नक्स।

साम को दर्द का बढ़ना—पलसेटिला।

गीली हवा से दर्द—मार्कुरियस।

हवा लगने से दर्द—एको, पल्सेटिला, रस्टक्स, साइलिशिया।

ठण्ढी चीज पीने से दर्द—कैलके, कैमो, कष्टिकम, हिपर, मार्कु, नेट्रम, नक्स, सल्फ, साइलि, ष्टैफि।

गर्म चीज खाने पीने से दर्द—ब्राइयो, कैमो, नक्स, कैल्के, पल्स।

गर्भावस्था में दन्तशुल—एपिस; बेल, ब्रायो, कैल्क, हायोसायमस, मार्कु, पल्स।

पारा की खराबी से दांत में दर्द—कार्बो-भेज, हिपर, लैकेसिस, ष्टैफि।

शिशुओंका दंतशूल—ऐन्टिमक्रुड, बेल, इग्नेशिया, मार्कु, पल्स ।

मुंह मे ठण्ढा पानी रखने से आफियत—ब्रायो, कफिया, नेट्रम सल्फ ।

बाहर की गर्मी से आफियत—आर्स, बेला, कैमो, हायो-सायमस, मार्कु, रस्टस्क, नक्स, ष्टैफि ।

दांत के जड़ में सैन (Fistula) हों तो—साइलि, सल्फ हिपर-सल्फ कैल्क, कष्टिक, रैटानिया, कैल्क-फ्लुओर, 'एसिड, फ्लुओर प्रभृति दवायें उपकारी है ।

एन्टिम-क्रुड ६-३०—खोखला दांत में दर्द विशेषतः सन्ध्या के समय, कुछ खाने से या ठण्ढ पानी लगने से दर्द की वृद्धि, (ब्राइ, कैमो; नक्स, मार्कु) ।

आरनिका ६-३०—दांत में नस्तर करने के बाद दर्द, आघात लगना ।

आर्सेनिक ३०-२००—अत्यन्त निस्तेजावस्था, अस्थिरता, बार २ थोड़ा २ पानी पीना ।

बेलाडोना ६-३०—दबदबाना दर्द, दर्द अचानक, आता है और जाता है, चेहरा लाल, रात में लेटने से या ठन्डी हवा लगने से दर्द की वृद्धि ।

कैलकेरिया ३०-२००—ठन्डो हवा लगने से, ठन्डा अथवा गर्म पानी पीने से अथवा सामान्य हवा के परिवर्तन से दर्द की वृद्धि । गर्भावस्था में दंतशुल ।

कार्बो-वेज ३०-२००—मसूढ़ा का दांत से अलग हो जाना; आहार के बाद और नमकमिश्रित वस्तु आहार करने से दर्द की वृद्धि ।

कैमोमिला १२-२००—पसीने की हालत में ठन्ढ लगने से पीड़ा। दर्द असहनीय विशेषतः रात में, आराम में नाउमेदी गाल लाल, खुली हवा में और रात में वृद्धि, रोगी अत्यन्त चिरचिड़ाहा ।

काफिया ६-३०—असहनीय दर्द के हेतु रोगी पागल के सदृश हो जाता है, मुंह में अत्यन्त ठन्डा पानी रहने से दर्द में आराम होता है, अनिद्रा ।

डलकामारा ६ ३०—ठन्ढ लगने के हेतु दांत में दर्द और दस्त ।

मार्कुरिअस ६-३०-२००—टनकने की तरह दर्द विशेषतः खोखला दांत में, दर्द रात में बढ़ता है। ठन्ढ लगने से, गर्म अथवा ठन्डा खाद्य भोजन करने से दर्द की उत्पत्ति होती है, मसूढ़े से रक्तस्राव, पीव निकलना, मसूढ़ा अलग हो जाना, मुंह से ज्यादा लार निकलना, मुंह बदबूदार ।

मेजिरिअम ३०-२००—खोखला दांत के दर्द में विशेष उपकारी है, दांत के साथ कोई चीज लगने से और सन्ध्या के समय दर्द की वृद्धि ।

नक्स-मस्केटा ६-३०—शिशु और गर्भवती के निमित्त अति उपयोगी औषध है। ठन्डी हवा लगने के हेतु पीड़ा। गर्म पानी से कुल्ला और सेंक करने से आफियत।

नक्स-भोमिका ३०-२००—रात में, प्रातःकाल मे मानसिक परिश्रम से, ठण्ढ लगने से और ठन्ढा वस्तु खाने से दर्द की वृद्धि, गर्म चीज पीने से आफियत, कब्ज, चिरचिराहट।

पल्सेटिला ६-३०-२००—कोमल और क्रंदनशील स्वभाव, दन्तशूल के साथ कान में दर्द और "आधकपारी" दर्द धीरे २ बढ़ कर अचानक कम हो जाता है। ठन्ढी हवा और ठन्ढ लगने से आफियत, गर्मी से वृद्धि।

सिपिया ३०-२००—गर्भावस्था में दांत में दर्द, चेहरा फीका, दुर्गन्धयुक्त लिउकोरिआ, दर्द के समय मुंह से पानी निकलना।

स्टेफिसाग्रिया ३०-२००—खोखला दांत में काले २ दाग मसूढ़ा सफेद या फीका और दर्द के साथ, प्रात.काल मे और ठण्ढी चीज पीने से वृद्धि।

क्रिओजोट ६-३०-२००—खोखला दांत के दर्द मे विशेष उपकारी है। दांत मे काला रङ्ग के दाग, इसका Q फाहा मे करके खोखला स्थान मे लगाने से दर्द में आफियत होती है।

लेकेसिस ३०-२००—बायां तरफ के दांत मे दर्द सोने के बाद, गर्मी और ठंढ में दर्द की वृद्धि।

मैगनेसिया-फस ६-३०—दर्द रात मे बढ़ता है।

प्लैन्टागो-मेजर १x-१-३—खोखला दांत में दर्द। इसका Q फाहा मे करके खोखला स्थान में रखने से उपकार होता है।

थुजा ३०-२००—दांत के जड़ में कीड़ा पड़ना और जखम होना।

—:—

टनसिलाइटिस वा तालु-मूलग्रन्थी का प्रदाह।

(TONSILITIS-QUINSY.)

रोग परिचय—तालुमूलग्रन्थि मे प्रदाह हो कर फुल जाने से उसको टन्सिलाइटिस कहते हैं। इस से गले में दर्द होता है। टनसिल में प्रदाह होकर उसमे पीव पैदा हो तो उसको कुइंजि (Quinsy) कहते हैं।

कारण—ठण्ढ लगना ही इस रोग का प्रधान कारण है। ठंढ लगना, भिगा कपड़े मे ज्यादा देर तक रहना, ठंढी गीली हवा लगना, एकाएक पसीना रुक जाना वगैरह से यह रोग होता है। कण्ठमाला व बलगमी धातु, पारा के दोष, अजीर्ण दोष प्रभृति से यह रोग पुराना हो जाता है।

लक्षण—इस रोग का नया आक्रमण के समय ज्वर होता है, गले में दर्द हो कर वह दर्द कान तक फैल जाता है, निगलने के समय तकलीफ होती है, गला बैठ जाता है, गले मे सुरसुराहट के साथ तकलीफदार सूखी खांसी होती

है। रोग बहुत बढ़ जाने से और पीव होने से फोड़ा फट जाता है और तब रोगी को शान्ति मिलती है। दोनों टन्सिल ज्यादा बढ़ जाने से स्वांसकष्ट भी होती है। नया प्रदाह ५-७ रोज में आराम हो जाता है। यह रोग एक बार होने से बार बार होने की सम्भावना होती है। पुराना रोग बहुत मुश्कील से छुटता है।

आनुसंगिक उपाय—मुह में गर्म पानी वा गर्म दूध रख कर सेंक करने से आफियत होती है। पीव होने के दवा से न फटे तो नस्तर दे देना चाहिए। टन्सिलमें "कष्टिक लोशन" वा "टेनिक ग्लिसरीन" लगाने से बढ़ा हुआ टन्सिल जल्द छोटा हो जाता है और दर्द व खांसी भी कम हो जाती है।

चिकित्सा :—

एपिस ६-३०-२००—कोई चीज निगलने के समय ज्वाला के साथ डंक मारने वाला दर्द, गले के भीतर और टन्सीलमें शोथ के सदृश फूलन, प्यास न होना।

बेराइटा-कार्ब ६-३०-२००—यह इस रोग का उत्कृष्ट औषध है। सामान्य ठन्ढ लगने ही से या पैर के पसीना दब जाने से सहज से ही टन्सीलाइटिस होता है। टन्सील में पीव होता है। पुरानी विमारी मे यह बहुत फायदेमन्द है।

बेलाडोना ६-३०—दहिना तरफ का टन्सीलाइटीस। टनसील फूला और लाल, स्पर्श से दर्द की अत्यन्त वृद्धि।

निगलने मे सख्त तकलीफ, ज्वर ।

हिपर-सल्फ ६-३०-२००—गले में कांटी वा सुई भोकने की तरह दर्द, पीव होने की सम्भावना, पारा के दोष, कण्ठमाला धातु, पुरानी बिमारी ।

कैलकेरिया-कार्ब ३०-२००—टन्सिल व घन्टी का प्रदाह व फूलन, गले में दर्द, टन्सिल का ऊपर सफेद या पीला रङ्ग का जख्म । कण्ठमाला धातु के लोगों का पुराना रोग में यह बहुत उपकारी है ।

बैराइटा-म्युर ३०-२००—पुराना टन्सिलाइटिस मे यह बहुत उपकारी है। टन्सिल व घन्टी बढ़ा हुआ, इसके साथ कान में पीब होना।

लैक-कैनानम ६-३०—टन्सिल में प्रदाह, व दर्द, टन्सिल चमकीला, बायां टन्सिल में अथवा दोनों टन्सिल में पीव होना निगलने में या गले पर हाथ देने से दर्द होना ।

रसटक्स ६-३०-२००—गले के अन्दर जहरबाद की तरह फूलन, टन्सिल, खासकर दहिने तर्फ का टन्सिल जर्द रङ्ग की झिल्ली से ढका हुआ। निगलने के समय दर्द होना। पानी में भिगने से रोग।

सिफिलिनम २००—खानदानी गर्मी रोग के दोष से रोग, टन्सिल की पुरानी वृद्धि व कठिनता ।

इग्नेसिया ६-३०—सामान्य जख्म वाला और श्लेष्मा निकलने वाला प्रदाह में, यह उत्कृष्ट औषध है ।

लैकेसिस ३०-२०० — बायां तरफ के टन्सिल की पीड़ा में यह सर्वोतकृष्ट औषध है, पहले बायां तरफ के टन्सिल मे पीड़ा हो कर दहिना तरफ मे फैल जाना। कड़ी चीज खा सकता है लेकिन पतली चीज निगलने में बहुत कष्ट होता है।

लाइकोपोडिअम ३०-२००—दहिना तरफ के टन्सिल में प्रदाह अथवा पहले दहिना तरफ के टनसिल में प्रदाह होकर बायां तरफ मे फैल जाना। टन्सिल फूला व कड़ा, उसमें छोटे २ जख्म, पुरानी बिमारी।

मार्कुरियस ६-३०-२००—टन्सिल जर्दी लाल, मुंह से दुर्गन्धयुक्त लारनिकलना, मुंह मे दुर्गन्ध, जीभ मोटा, व गीला और उस पर दांत का छाप पड़ता है। मुंह में जख्म, टन्सिल में पीव होना, ज्यादा पसीना।

फाइटोलेका ३०-२००—टन्सिल बैंगनी रङ्ग के और अत्यन्त बड़ा।

साइलिसिया ३०-२००—टन्सिल में पीव होकर सैन हो जाना।

डिफथिरिया वा दुषित गल-प्रदाह।

(DIPHTHERIA)

रोग परिचय—गलनली, स्वरनली, वायुनली प्रभृति स्थान को वलगमी अस्तर झिल्ली में झुठी झिल्ली पैदा

करने वाला प्रदाहयुक्त तरुण संक्रामक रोग को डिफथिरिया कहते हैं। एक खास किस्म का कीटाणु (Bacillus) ही इस रोग का कारण है।

लक्षणादि—ग्रीक शब्द डिफथेरा (Diphthera) का अर्थ झिल्ली है और इस रोग में गलनली, मुखमध्य स्वरनली प्रभृति स्थान में एक किस्म की पीलापन सफेद रङ्ग की झुठी झिल्ली पैदा होती है, इस लिये इस रोग को डिफथिरिया कहते हैं। यह स्थानिक पीड़ा नहीं है, समस्त शरीर के रस रक्तादि इससे दुषित होता है। यह एक खास विषजनित प्रदाह है, इससे प्रदाहयुक्त स्थान से जो मवाद निकलता है; वही जमाट होकर परदा की उत्पति करता है और उस परदे के नीचे जखम होता है। इस परदे को अलग कर देने से वह जखम साफ़ नजर आता है। डिफथिरिया के रोगी के स्वांस की हवा नितान्त दूषित होती है। यह स्वाँस की हवा दूसरे किसी के शरीर मे प्रवेश करने से उसको यह रोग होने की विशेष सम्भावना है। इस रोग का मवाद मे भी इसका विष रहता है और हवा, कपड़ा, नस्तर, दूध वगैरह के साथ यह दुसरे के शरीर मे प्रवेश कर सकता है। स्त्री पुरुष सव हो को यह रोग होता है, लेकिन वालक वालिकायों को यह रोग अधिक होते देखा जाता है।

यह रोग सर्वप्रथम में हलक (फेरिम्स) व टन्सिल को आक्रमण करता है और उस पर झुठो झिल्ली पैदा होती है।

यहाँ से रोग नाँक साँसी, मूत्रमध्य इत्यादि नाना स्थान मे फैल जाता है। इस रोग से निकटवर्त्ती गिल्टियाँ भी फुल जाती है। गले मे सख्त दर्द होना इस रोग का एक प्रधान कष्ट है। ऐसा कि रोगी, वाज वक्त तरल चीज भी निगल नही सकता है, वाज वक्त बोली एक दम वन्द हो जाता है। इस रोग के साथ ज्वर अवश्य होता है। ज्वर को उत्ताप १०३ से १०६ तक होता है। रोग कठिन होने से वेहोशी, विकार वगैरह खतरे-नाक लक्षण उपस्थित होता है। नाक मे रक्तस्राव प्रभृति लक्षण उपस्थित हो कर रोगी का प्राणनाश का खौफ होता है।

स्वरनली व वायुनली आक्रान्त होने से घुंड़ी खाँसी की तरह लक्षण होता है। खुश्क खाँसी, गला वैठ जाना व गले में दर्द होता है। नाँक में रोग होने से पीव, रक्त प्रभृति निकलता है।

यह निहायत कठिन विमारी है। इस रोग का भोगकाल ४—५ दिन से एक महीना है।

उपसर्ग व परिणाम—रोग आराम होने पर भी वहुत दिन तक दुर्वलता रहती है। परिणाम में प्रायः पक्षाघात का लक्षण प्रकाश पाता है। हाथ पाँव का पक्षाघात, वधिरता, अन्धता, मूत्रस्थली का पक्षाघात हो सकता है।

चिकित्सा :—

क्षतयुक्त स्थान में ग्लाइको थाइमलीन (Glycothy-

moline) लगाना बहुत फायदेमन्द है ।

एकोनाइट ३-६—पीड़ा की सर्व प्रथम अवस्था मे, तेज ज्वर, प्यास, बेचैनी, घबराहट इत्यादि रहने से फायदेमन्द है ।

म्युरिएटिक-एसिड ३०-२००—नाक से रक्तश्राव, रक्त लाल, बदबूदार, मुंह से सड़ा बदबू निकलना, दांत में काला दाग । टाइफाइड लक्षण ।

नाइट्रिक-एसिड ३०-२००—मुखमध्य में जखम, निगलने मे कष्ट, नाक से क्षतकारी श्राव. मुह में बदबू, तेज बुखार, गिल्टियां फुली हुई । पारा वा गर्मी के दोष से पीड़ा में उपकारी है।

लैकेसिस ६-३०—लेटने से दम बन्द होने का डर, रोगी को बैठा रहना पड़ता है । प्रति वार नींद क बाद स्वांस रोध करने वाली खांसी; गले में सांइ सांइ आवाज, पेशाब बन्द या पीला रङ्ग का पेशाब, प्रात.काल से रोग की कमी ।

फाइटोलैका ३०-२००—रोगी की पहली हालत मे गले के भितर खुष्की व टाटाना, सिरदर्द, शीतवोध, सर्वांग मे दर्द, टन्सिल इत्यादि में मैलारंग का पर्दा होना, स्वांस में बदबू, निहायत कमजोरी ।

रसटक्स ६-३०—बहुत बेचैनी, सर्वदा इधर उधर करना, गले में दर्द, नींद की हालत में कमी २ मुंह से

लाल रंग का स्राव होता है । सान्निपातिक लक्षण, कनसुहा ।

डिफथिरीनम २००—इस दवा के इस्तमाल से वहुत फायदा होता है। यह प्रतिषेधक व आरोग्य कारक हैं।

क्रोटेलस ६—३०—लगातार रक्तस्राव गला व नाक से रक्तस्राव, वमन व दस्त, निहायत कमजोरी, प्यास, वदन गर्म व पसीना के साथ, सड़ा जख्म।

एसिड-कार्बोलिक ३-६-३०— नितान्त निस्तेज अवस्था, सामान्य ज्वर, नाड़ी क्षुद्र, चेहरा फीका मुंह मे अत्यन्त दुर्गन्ध। शरीर के पीव दूषित होने से विमारी।

एपिस ३०-२००—प्रदाहयुक्त स्थान शोथयुक्त, श्वांस-कष्ट, दम वन्द होने के ऐसा मालुम होना, ज्वाला के साथ डक मारनेवाला दर्द।

आर्सेनिक ३०-२००—अत्यन्त निस्तेजता, अस्थिरता मौत का डर, घवराहट, वार २ थोड़ा २ पानी पीता है, रात दो पहर को पीड़ा की वृद्धि।

वैपटिसिया ६-३०-२००—प्रदाहयुक्त स्थान अत्यन्त शोथ के साथ फूला हुआ किन्तु उसमें किसी प्रकार का दर्द नही होता है। वेहोशी के साथ नींद वरवराना, टाइफायड अवस्था, स्वांस मे कष्ट।

वेलाडोना ६—३०—अचानक रोगके आक्रमण के साथ दम वन्द होना सुर्खी और लाल रंग, गले मे अत्यन्त दर्द, गला के वाहरी भाग मे फूलन, अत्यन्त ज्वर।

ब्राइओनिया ३०-२००—जीभ सफेद, मुंह सूखा, बहुत देर २ के बाद बहुतसा पानी पीता है।

केलि-बाइ ३०-२००—नाक से गोंद की तरह गाड़ा रक्तस्राव, क्रुप की तरह खांसी, गले मे गहरा जखम, मुंह में दुर्गन्ध, खूनी बलगम, कनपट्टी की गिल्टी फूली हुई

लेक-कैनाइनम ६-३०-२००—रोगी अस्थिरता के हेतु सर्वदा इधर उधर करता रहता है, गले के भीतर लाल और बैगनी रङ्ग का प्रदाह। गलमध्य लाल व फूला, प्रदाह बार २ इधर से उधर और उधर से इधर करता रहता है।

लैकेसिस ३०-२००—पहले गला के बायां तरफ मे रोग प्रकाश पाता है, पीछे दहिना तरफ में फैल जाता है। प्रदाहयुक्त स्थान बैगनी रङ्ग का होता है, निद्रान्त मे पीड़ा की वृद्धि, गलदेश में स्पर्शासहिष्णुता।

मार्कुरिअस-सायेनेटस ६-३०-२००—बहुत विख्यात चिकित्सक के मत मे यह एक अचुक औषध हैं।

मार्कु-विन ६-३०—बायां टन्सिल मे पीड़ा, घन्टी की वृद्धि, जीभ और मसूढ़े मे दर्द, गले मे लार जमा होने के कारण बार बार घोंट लेना।

मार्क-प्रटो ६-३०—दहिना तरफ में पीड़ाकी अधिकता, गर्म पानी से पीड़ा की वृद्धि।

श्वांस यंत्रों की पीड़ासमूह।

DISEASES OF THE RESPIRATORY ORGANS.

—०:—

सरदी और खांसी।

COUGH AND COLD.

एकोनाइट ३-६-३०—पीड़ा की प्रथमावस्था, चेहरा लाल, आंख से पानी निकलता है, सूखा व खोखला खांसी, ठंढी हवा से, पानी पीने से और रात में वृद्धि, गले में सुरसुराहट, आक्षेपिक खांसी।

एलिअम-सिपा १-३-३०—आंख से पानी निकलना, नाक से जो पानी निकलता है उस से छाले पड़ जाता है। खांसीके साथ मालूम होता है कि लेरिङ्क्स टुट जायगा। बहुत छींक आता है।

एमन-कार्ब ६-१२—आंख में ज्वाला, आंख से पानी निकलना, सर्दी, नाक वन्द विशेषतः रात में। वुढोंका पुराना खांसी के साथ हांफनी।

आरसेनिक ३०-२००—वांर २ छींक आना, पतला व गर्म सर्दी निकलना, नाक के द्वार में ज्वाला और छाले पड़ जाना, मुंह सूखा, सूखा खासी, दोपहर रात को और लेटने

से वृद्धि। श्वासकष्ट, हाफनी, खांसते २ दम फुलना; गले में गन्धक के धुआ सा मालूम होना।

एरम-ट्रीफ ३-६-१२—सर्दी और उसके साथ नाकसे पीव की तरह चीज निकलता है। उससे ओष्ट छिल जाता है, नाक वन्द, मूंह से श्वांस लेना पड़ता है। गले में दर्द गला वैठ जाना।

बेलाडोना ६-३०—गला बैठ जाना, गले में अत्यन्त दर्द हिलने डोलने से, खांसी की वृद्धि, अत्यन्त सूखी खांसी सर्वदा गले में सुरसुराहट, खांसते २ आंख व चेहरा लाल हो जाता है। वमन, वलगम में खून का छिटा।

ब्राइओनिया १२-३०-२००—खुष्क सर्दी के साथ नाक के द्वार में प्रदाह और जग्लम। जीभ सूखा, फटा २। अत्यन्त सूखी खांसी के साथ छाती मे सूई भोकने की तरह दर्द, खांसी के समय छाती दवा कर रखना पड़ता है। हिलने डोलने से वृद्धि। खांसते समय सिर में दर्द, साम और रात को खांसी, खासते २ पेशाव हो जाना। गर्म पानीय से खासी में आफियत।

कार्वो-भेज ३०-२००—आंख से पानी निकलना, आंख मे ज्वाला। पतला सर्दी के साथ स्वरभंग, गले मे सुरसुराहट के साथ खांसी, उसके साथ साथ पीलाफ़न सब्ज पीव की तरह वलगम निकलता है। पसली में दर्द। वलगम नमकीन या खट्टा। गन्धक का धुआ लग गया ऐसा मालूम होना।

कैमोमिला १२-३०—नाक से पतला छाले पैदा करने वाला सर्दी, रात में ऐसा कि निद्रितावस्था में भी सूखी खासी। बच्चा सर्वदा गोदी में चढ़ कर टहलना चाहता है।

डलकामारा ६-३०—ठन्ढ लगकर खुष्क सर्दी और खांसी, मुंह सूखी किन्तु प्यास नहीं है। ठन्ढ से पोड़ा की वृद्धि।

एन्टिम-टार्ट ६-३०-२००—मालूम होता है कि गले में बहुत सा तरल बलगम जमा हुआ है किन्तु कुछ निकलता नहीं, गले मे घड़घड़ाहट। जी मिचलाना, कै होना। खांसी के साथ स्वासकष्ट व ऊंघाय।

कस्टिकम ६-३०-२००—गले मे सुरसुराहट के साथ खांसी, छाती और गले मे जखम की तरह दर्द, बलगम निकाल नहीं सकता है, निगल लेता है। साम से दो पहर रात तक पीड़ा की वृद्धि, ठन्ढा पानी पीने से आफियत, खांसी के साथ बेखबरी से पेशाब हो जाना, गला बैठ जाना।

सिना ६-३०-२००—कृमि वाला लोगों की खांसी, खुष्क आत्तेपयुक्त खांसी। खांसते २ आख से पानी गिरना। खांसी के साथ कै होना, कोदवा के साथ खांसी।

ड्रोसेरा ६-३०-२००—तकिया पर सिर रखने से ही गले मे सुरसुराहट के साथ सूखी खांसी, खांसी के साथ छाती मे अत्यन्त कष्ट होता है। हंसने मे, बात करने से

खाँसी। आक्षेपिक खाँसी, कोदवा के बाद खाँसी, खोखला आवाज वाको खाँसी।

हाइयोसायमस ३-६-३०-२००--सूखी आक्षेपयुक्त खाँसी रात में लेटी हुई हालत मे वृद्धि, बैठा रहने से आफियत। युवती और हिस्टिरियायुक्त स्त्री लोग के खाँसी, (गर्भवती स्त्री लोग के खाँसी में कोनायम, नक्स, सिपिया), लड़की बढ़ने की वजह से खाँसी, कोदवा के बाद खाँसी, बलगम नमकीन।

इग्नेशिया ६-३०--खुश्क खाँसी, खांसते समय मलद्वार और बवासीर में दर्द, जितना खाँसता है खाँसी उतना ही बढ़ता है।

हिपर-सल्फ ६-३०--सहज से ही सर्दी लगता है, विशेषत: पारा की खराबी से खांसी, मालूम होता है कि गला छिला गया है, स्वर भंग, खांसी के साथ सांई सांई, घड़ २ शब्द होना, आखरी रात मे खांसी की बृद्धि, सामान्य ठन्ढ लगने से बृद्धि। तर खांसी से दम फूलना, दिन में बलगम निकलता है, रात में नहीं।

इपिकाक ६-३०-२००--पतला सर्दी के साथ नाक बन्द, घ्राणशक्ति की कमी होना छाती मे घड़ २, सांई सांई शब्द, सर्वदा जी मिचलाना, कै होना, खाँसते २ चेहरा लाल होना व तमाम बदन का काँपना, दम फूलना।

कोलि-बाई ३०-२००--बलगम पीला, रस्सी की

तरह मोटा, लस्सादार, बलगम खींचने से लम्बा होता है, टूटता नहीं। नीला व खाकी रङ्ग का बलगम। कभी २ सफेद भी होता है।

लैकेसिस ६-३०-२००—सर्दी आँख से पानी गिरना, मुंह शुष्क और उसमें मोर्चा की तरह ज्वाला, गला के भीतर कोई चीज खाने से ही खांसी आती है. निद्रान्त में पीड़ा की वृद्धि, गला स्पर्श करने से खांसी होती है। सुरापान व आव हवा की तबदिली से खाँसी, स्वाँस कष्ट, निगलने में कष्ट।

मार्कुरिअस ६-३०-२००—आँख में ज्वाला, आँख से पानी गिरना, टन्सिल में प्रदाह और जखम। रात में पीड़ा की वृद्धि. गर्म गृह में आफियत, बलगम पीलापन। बलगम सड़ा अथवा नमकीन, मुंह से लार निकलना। ज्यादा पसीना, लेकिन उससे कोई फायदा नहीं होता है।

पलसेटिला ६-३०-२००—नाक से पीला या पीलापन सब्ज व गाढ़ो, दुर्गन्ध बलगम निकलना। स्वाद और गन्ध मालूम न होना। संध्या, रात और गर्म गृह मे खांसी की वृद्धि, खुली हवा में आफियत, खाँसते २ मतली के भाव, बलगम तीता स्वादयुक्त। दिन को बलगम निकलना रात को सूख जाना।

रस-टक्स ६-३०-२००—कपड़ा के अन्दर से हाथ निकालने से ही खाँसी, बलगम लौहे के जंग की

तरह रङ्गदार, गर्म गृह मे आफियत।

सिपिया ६-३०-२००—नाक के द्वार में जखम, नाक फुला और पूदाहयुक्त, खूष्क सर्दी, गन्ध मालुम न होना, धीरे २ टहलने से खाँसी की आफियत, सूखी खाँसी। जरायू की गड़बड़ी के साथ खांसी।

फसफोरस ६-३०-२००—सूखी खांसी के साथ छाती मे दवाने की तरह मालुम होना, गला मे सुरसुराहट, बात करने से खांसी आती है। शाम से दोपहर रात्रि तक खांसी की वृद्धि। गले में दर्द, गला बैठ जाना, खांसते वक्त पैखाना हो जाना, फेनदार, ईंट के रङ्ग को बलगम, खट्टा या नमकीन अथवा मिठा बलगम।

कैलि-आइओड ३०-२००—इनफ्यूलेन्जा जनित खांसी मे उत्कृष्ठ है। उपदंश पीड़ायुक्त धातु, मालुम होता है कि छाती के बहुत नीचे से बलगम निकल रहा है। यक्ष्मा होने के उपक्रम। बलगम गाढ़ा, पीला व बहुत नमकीन।

कैल्केरिया-कार्ब ३०-२००—कण्ठमाला धातु की स्त्रियों की पीड़ा, रात को खांसी, गला बैठ जानो, स्वर नली व गल-नली मे जखम व खासी, छाती में तर बलगम की आवाज, खाँसते समय सिर में पसीना। रिकेटी बच्चा की खांसी।

कोरालियम ३०-२००—स्नायविक व आक्षेपिक खाँसी, बवासीर वाले की खांसी में यह उपकारी है। जल्दी

जल्दी जोर से खांसी, खाँसी की आवाज वन्दुक की तरह। ठन्ढा वलगम निकलना।

कुप्रम ६-३०-२००—स्नायविक वा आक्षेपिक खुष्क खाँसी, रात को खाँसी की वृद्धि। लगातार दम वन्द करनेवाली खाँसी, ठण्ठा पानी पीने से खाँसी की आफियत, सुवह को गाढ़ा, खून मिला हुआ वलगम निकलना। खांसी के साथ हाथ पांव ऐंठ जाना।

नक्स-भोमिका ३०-२०० - गले में सुरसुराहट होकर खाँसी, सुवह व अखिर रात में खाँसी की वृद्धि, खाँसते २ सिर व पेट में दर्द। नींद के वाद, मानसिक परिश्रम के वाद वा तमाकू पीने से वा पानाहार के वाद खाँसी की वृद्धि, गर्म पानीय से आफियत, खाँसी के समय खाने की इच्छा।

रिउमेक्स ६-३०—आक्षेपिक खाँसी के लिए यह एक उत्तम दवा है। लगातार खुष्क खाँसी, गले में सुरसुराहट, वात करने से वा गला या छाती में चाँप पड़ने से खाँसी होना। इन्फ्लुयेन्जा के वाद खाँसी, रात में खाँसी की वृद्धि, खाँसने वक्त पेशाव हो जाना।

स्पंजिया ८-३०—सूखा, कुत्ता की आवाज की तरह वा साँसाँ शब्द के साथ खाँसी, सफेद वा पीलापन वलगम, लेटने से खाँसी की वृद्धि, सामान्य कुछ खाने ही से आफियत, इन्फ्लुयेन्जा के वाद खांसी।

ष्टैनम ३०-२००—तर खांसी, बलगम गाढ़ा बहुत मिठा, छाती में कमजोरी, हांफनी के भाव। बलगम कभी २ नमकीन भी होता है।

सल्फर ३०-२००—खांसते २ दम फुलना, सूखी खांसी से छाती में दर्द, गला बैठ जाना, कभी २ गले में घड़घड़ाहट, कभी २ पेट में दर्द, वमन, गर्म बिछावन में आफियत, बलगम सब्जापन, मिठा स्वाद के वा पीवरक्त मिला हुआ।

सिल्सा वा स्कुइला ३०-२००—गले में सुरसुराहट के साथ रात दिन तकलीफदार खांसी, तर खांसी के साथ छाती में सुई भोकने की तरह दर्द, तर खाँसी लेकिन बलगम तकलीफ से निकलता है। सुवह को तर खाँसी, शाम को सूखी खाँसी। ठन्ढा पानीय से व मेहनत से खाँसी की वृद्धि, खाँसी के साथ छींक आना व पेशाब होना।

मन्तव्य—हुपीगकफ, ब्रोकॉइटीस, निउमोनिया और यक्षमा रोग की चिकित्सा द्वारा खाँसी की चिकित्सा में विशेष सहायता मिलेगी।

नाक से रक्तस्राव वा एपिस्टैक्सीस।

(EPISTAXIS)

प्रकार भेद व कारण—रक्ताधिक्य व रक्तालपता दोनो कारण से रक्तस्राव हो सकता है। रक्तस्राव दो प्रकार।

प्रबल वेग से धमनी का लाल खून निकले तो उसको ऐकटिभ् (Active) रक्तस्राव कहते है। और शिरा से काला खून धीरे २ निकले तो उसको पैसिम (Passive) रक्तस्राव कहते हैं। आघात लगना गिर पड़ना, जोर से खांसना व नाक छड़ना व ववासीर के खून वन्द होना वा रजोलोप इत्यादि कारण से यह रोग होता है।

लक्षण—अक्सर रक्तस्राव के कबल कोई लक्षण नहीं मालुम होता है। वाज वक्त सिर दर्द, सिर चक्कराना, हाथ पॉव का ठन्ढा होना प्रभृति लक्षण होता है।

आनुसंगिक उपाय—सिर, गर्दन व नाक मे शीतल जल वा वर्फ का प्रयोग से उपकार होता है। कैलेन्डुला वा दुर्वाघास का रस अथवा धानका पेड़ का जड़ का रस प्रयोग करने से भी फायदा होता है। शीतल जल में नहाना बहुत उपकारी है। पुष्टिकर लेकिन लघुपाक द्रव्य भोजन करना चाहिये। गरम चीज हरगिज न खाना चाहिये।

चिकित्सा—

चमकीला लाल रक्तस्राव—एकोनाइट, फेरमफस, आर्निका, वेलाडोना, डलकामारा, हायोसायमस, इपिकाक, मिलिफोलियम।

मैला लाल रक्तस्राव—क्रोकस, नक्स-भोमिका।

थक्का २ रक्तस्राव—कैमोमिला, हैमामेलिस, मार्कुरियस, [illegible]ज्ञाटिना।

एकोनाइट ६-३०—रक्ताधिक्य, चेहरा लाल, दिल में प्रबल [illegible]ड़कन, खून चमकीला लाल।

आर्निका ६-३०—आघात के वजह से रक्तस्राव।

आर्सेनिक ६-३०—क्रोधादि अथवा वमन के बाद नाक से [illegible]क्तस्राव, ज्यादा गर्मी व बेचैनी।

बेलाडोना ६-३०—सिर में ज्यादा खून होने से नाक से [illegible]क्तस्राव, आंख व चेहरा लाल, सिर नीचा करने से सिर [illegible]करराना, हरकत सोरगूल व तेज रोशनी से रोग की वृद्धि, आंख के सामने चिंगारियां दिखाई पड़ना, कान में शब्द होना।

ब्राइओनिया ६-३०—प्रातः काल में नींद टूटने पर रक्तस्राव, स्त्रियों के ऋतु के समय नाक से रक्तस्राव, गर्मी के दिनों मे [illegible]रीर गर्म होकर नाक से रक्तस्राव।

कार्बो-भेज ६-३०-२००—ज्यादा देर तक स्थाई रक्तस्राव, मुखमण्डल जर्द, निहायत कमजोरी, नाड़ी करीब गुम हुई, ज्यादा पंखा की ख्वाहीश।

चायना ६-३०-२००—ज्यादा खुन गिरने से निहायत कम-जोरी बदन फीका होना, कान में मनमनाहट, मूर्छा।

इरिजिरन ३-६—सिर में रक्ताधिक्य के कारण नाक से रक्तस्राव, ज्वर-भाव चेहरा लाल।

हैमामेलिस ३-६-३०—नाक से काला रक्तस्राव।

पलसेटिला ६-३०-२००—हैज के बिगार के कारण नाक से रक्तस्राव, खुली हवा मे आफियत, गर्म हवा या गर्म कमरे में तकलीफ की ज्यादती।

थ्लैप्स-बर्षा-पैष्टोरिस Q—यह नाक से रक्तस्राव के लिये एक नामी दवा है।

ट्रिलिअम ६—पैसिभ रक्तस्राव के लिए यह एक अच्छी दवा है।

इपिकाक, फसफोरस, फेरम-फस इत्यादि भी उपकारी है।

नकड़ा वा नेजल पोलिपस।

NASAL POLYPUS.

रोग परिचय—नाक के अन्दर एक प्रकार का कोमल व लहसुन की तरह आकार की गिल्टी होने को नकड़ा कहते हैं।

लक्षण—इसका आकार व आयतन नाना प्रकार के होता है। यह देखने में स्पंज की तरह और पीला रङ्ग का व कोमल होता है. इससे नाक के सूराख वन्द होने के ऐसा होता

है, स्वांस में तकलीफ होती है। अकसर स्वांस के साथ खर्राटेदार आवाज होती है। प्रायः सर्दी का लक्षण वर्तमान रहता है। गिल्टी को काट देने से भी फिर से होता है।

चिकित्सा—कैल्केरिया-कार्ब, केलि-आयोड, केलिनाइट्रिकम, फस्फोरस, पलसेटिला, सैंगुइनेरिया, टिउक्रियम, औरम, सिपिया, सिपा, ग्रैफाइटिस, नाइट्रिक-एसिड इत्यादि दवा इसमें फायदेमन्द हैं।

कैल्केरिया-कार्ब ३०-२००—कण्ठमाला धातु के मोटा लोगों के रोग, नकड़ा में सूई चुभने की तरह और खुजलाहट मालूम होता। पांव ठंढा, ठढी हवा से रोग की वृद्धि।

फसफोरस ६-३०-२००—नकड़ासे सहज ही से खून गिरना, सिर मे बोझ, नाक बन्द मालूम होना।

सिपिया ६-३०-२००—शान्त मिजाजकी स्त्रियों के लिए यह उपकारी है, नाक बन्द होना, वार २ छींक आना, पेशाव में कादो के रंग का बदबूदार गाद पड़ना।

केलि-बाइ ३ x चूर्ण—उपकारी है।

साइलिसिया ३०-२००—नाक के चारो ओर खुजली व छोटे २ फफोला नाक मे चलाते की तरह दर्द व सिर नीचा करने से बोझ मालूम होना, अमावस व पूर्णिमा के रोज रोग का बढ़ना।

सर्दी वा नेजल केटर वा कोराइज़ा ।

NASAL CATARRH OR CORYZA.

लक्षण—सर्दी अति साधारण पीड़ा है। नाक और उस के निकटवर्ती स्थानसमूह की म्युकस झिल्ली के प्रदाह ही सर्दी है। पहले नाक और तालु-प्रभृति स्थान में सुर सुर करता है और खुजलाता है, उसके बाद पानी की तरह स्राव होता है। बार २ छींक आता है, ललाट में बोझ मालूम होता है. आंख तमतमाता है, आंख से पानी निकलता है। यदि इस अवस्था में आराम न हो तो सर्दी गलमध्य और छाती तक फैल जाता है और उस से स्वरभंग, गलेमें दर्द, खांसी, स्वांसकष्ट, ज्वर प्रभृति लक्षण प्रकाश पाता है।

कारण—(१) भिंगा कपड़े मे रहना, (२) शीतल वायु बदन में लगना, (३) बहुत देर तक पानी मे रहना, (४) गर्मी से अचानक ठन्ढ मे जाना, (५) पहरने के कपड़े की अल्पता इत्यादि। शिशु, वृद्ध, रुग्न और दुर्बल व्यक्ति को इन कारणों से सावधान रहना चाहिये।

चिकित्सा:—

कैम्फर के अर्क—सर्दी के प्रारम्भ मे ही इसके दो बुन्द चिनी के साथ आधा घन्टा फासले पर २, ३, ४, बार खाने से सर्दी बन्द हो जाता है।

एकोनाइट ३-६—हिम और ठन्ढ लग कर

पीड़ा, पीड़ा की प्रथमावस्था मे विशेषतः उस के साथ ज्वर रहने से उत्कृष्ट औषध है, एक बुन्द दो २ घन्टे अन्तर २ देना चाहिये ।

आर्सेनिक ६-३०— लगातार नाक से गर्म पानी ज्वाला के साथ निकलता है, आंख से पानी निकलना, नाक मे दर्द और गर्म प्रयोग से आफियत, नाक मे ज्वाला, ज्यादा प्यास, कभी २ नाक बन्द रहना कभी २ नेटा गिरना।

बेलाडोना ६-३०- गले मे दर्द और स्वरभङ्ग, दबदबना सिरदर्द, संचालन से वृद्धि, अत्यन्त कष्टदायक खुश्क खांसी, चेहरा लाल, सिर गर्म, हाथ पांव ठन्डा । नाक में लहर, नाक से पानी निकलना, वहुत छींक आना, गला सूखा, निगलने मे कष्ट ।

ब्राइओनिया ६-३०—सूखा सर्दी, ओष्ठ सूखा और फटा, सूखा खांसी, कब्ज, मल सूखा और कठिन, मिजाज चिरचिराहा।

कार्बो-भेज ३०—नाक बन्द, विशेषत. सन्ध्याकाल मे सर्दी लौट आता है ।

कैमोमिला १२—नाक से पतला व जख्म पैदा करने वाला नेटा निकलना, स्वरभङ्ग और छाती में श्लेष्मा के घड़घड़ाहट के साथ खांसी, रात में वृद्धि, निद्रित अवस्था में भी खांसी होती है। रोगी निहायत चिरचिराहा ।

जेलसिमियम ६-३०—हवा के सामान्य परिवर्तन से ही सर्दी लगता है, गले में दर्द, इसके साथ निगलने में कष्ट, दर्द कान के भीतर टीस मारता है।

हिपर-सल्फ १२-३०—अति सहज से ही सर्दी लगता है, विशेषतः पारा की खराबी से रोग, गले के भीतर कांटीसा चूमता है, हुपींग कफ की तरह खांसी और स्वरभंग, श्लेष्मा तरल और श्वास में रुकावट।

इपिकाक ६-३०—छाती के भीतर श्लेष्मा घड़ २ करता है, किन्तु खांसने से नहीं निकलता है, जी मिचलाता है, कै होता है, दम्मे की तरह स्वांसकष्ट।

नक्स-भोमिका ६-३०—सर्दी सूख कर और श्लेष्मा निकलना बन्द हो कर नाक बन्द और सिर भारी होने से यह औषध प्रयोग होता है।

मार्क सल ६-३०—लगातार छींक आना, गाढ़ा श्लेष्मा निकलना, अत्यन्त पसीना होना, गले में दर्द, आंख लाल, सन्ध्याकाल में पीड़ा की वृद्धि।

पलसेटिला ६-३०—दुर्गन्धयुक्त गाढ़ा श्लेष्मा निकलता है, स्वाद और गन्ध नहीं मालूम होता है, सिर भारी, कान और सिर के बगल में दर्द, मुंह सूखा, प्यास नहीं होता है।

सलफर ३०-२००—स्वाद और घ्राणशक्ति एकदम नष्ट हो जाती है, बार २ घुमरी आना, सहज से ही सर्दी लगता है। प्रातःकाल में दस्त।

ऐमन-म्युर ६-३०—नाक बन्द होने की तरह मालूम होना, नाक से पानी गिरना, नाक में जखम को तरह दर्द, सिर झुकाने से नाक के अग्रभाग लाल हो जाता है।

ऐनाकार्डियम ६-३०—नाक से पानी गिरना, छींक आना, घ्राणशक्ति तेज, कपड़े में मल की बू मालूम होना, रात में अंगार की तरह ज्वाला।

ऐराम-ट्रिफ ६-३०—नाक से ज्वाला व जखम पैदा करने वाला तरल नेटा निकलना, उससे होठ व मुंह का कोणों में जखम होना, नाक बन्द रहना। लगातार नाक खोंटते २ जख्म कर डालना।

ऐसारम ६-३० नाकसे पानी गिरना, वधिरता मालूम होता है कि कान मे ठेपी लगा हुआ है।

एलियम-सिपा ६-३०—नाक से बहुत पानी निकलना, उससे होठ व नाक में घाव हो जाता है। आंख मे ज्वाला व खुजलाहट, आंख से पानी गिरना, गर्म कमरे मे व सास को तकलीफ का बढ़ना, खांसी।

युफ्रेसिया ६-३०—नाक व आंख से पानी निकलना, आंख का पानी झांसीला सिर्फ दिन मे खांसी, ऊपर वाला ओष्ठ लकड़ी की तरह सख्त।

केलि-बाइक्रम ३०-२००—नाक के मूल में चांप की तरह दर्द, ललाट भारी, उसमें दर्द, नाक के मूल मे चांप देने से आफियत, सर्दी से नाक होठ मे जखम, गर्मी से तकलीफ, ठंढ से आफियत।

लाइकोपोडिअम ३०-२०० - सिर मे ऐसा दर्द होता है जिससे मालूम हो कि सिर टूट जायगा। रात को नाक बन्द हो जाना व मुंह से स्वांस लेना।

फसफोरस ६-३०—अदल बदल कर नाक खुश्क होना वा नाक मे पानी गिरना। सुबह को नाक बन्द अथवा एक नाक बन्द और एक नाक से पानी गिरना, छींक के जोर से सिर में दर्द, छाती मे कसाव, मुखमध्य चमकीला नजर आना, उसमें ज्वाला स्वाद व गन्ध मालूम न होना।

सिपिया ६-३०—नाक से ज्यादा पानी गिरना, अचानक सिर का पिछले हिस्से मे दर्द होना; सिर मे गठिया की तरह दर्द।

सैंगुइनेरिया ३०—नाक के मूल मे दर्द, आंख को स्पर्श करने से दर्द, गले मे दर्द, खांसी और शेष मे दस्त।

पुराना सर्दी व नाक में जख्म।

(CHRONIC CATTARH AND OZÆNA.)

रोगपरिचय—असावधानता, और कुचिकित्सा इत्यादि के हेतु अथवा गर्मीरोग के दोष शरीर में रहने से नया सर्दी आराम न हो कर पुराना हो जाती है। इस से नाक की म्युकस झिल्ली मोटी हो जाती है। पीछे झिल्ली पतली व फीका रङ्ग हो कर कड़ी होती है। नाक से जो

स्राव होता है वह पीव की तरह, परिमाण में कम वा बेशी होता है। प्रायः नाक के अन्दर चोइयां जमता है—चोइयां देखने में काला व खुन मिला हुआ होता है। यदि वह पीव की तरह चीज सड़ जाय तो नाक से बदबू आती है—ऐसी हालत को ओजिना (Ozaena) कहते हैं। इस रोग से नाक में जख्म होता है, उससे पीव निकलता है और बाद मे नाक की हड्डी में जख्म होकर वह हड्डी एकदम नष्ट हो जा सकती है। और इससे कण्ठमाला रोग की उत्पत्ति हो सकती है। यह अति कठिन रोग है। खुब धीरता के साथ चिकित्सा न करने से आराम होना कठिन है।

चिकित्सा—

ऐमन-कार्ब ६-३०—नाक बन्द, खास कर रात में, नाक से झागीला पानी निकलना, उस से लहर होना।

ऐगारिकस ३०-२००—बहुत परिमाण से बदबुदार नेटा निकलता है, नाक में ऐसा नेटा जमा रहता है जिससे नाक पूर्ण मालुम होता है, मुंह मे बदबू।

ऐलुमिना ३०-२००—नाक में ज़ख्म, उसमे चोइयां पड़ना, गाढ़ा पीला रङ्ग का नेटा।

ऐन्टिम-क्रूड ३०-२०० — शीतल हवा के स्वाँस लेने से नाक में जख्म की तरह दर्द, नाक में चोइयां, मुंह का कोणा फटा।

आर्जेन्टम-नाइट ३०-२०० — नाक से खून के ढेला के साथ पीव निकलना। शीत वोध, आँख से पानी गिरना, सख्त सिरदर्द, नाक में खुजलाहट।

एसाफिटिडा ३०-२०० — सब्ज रङ्ग की वदबूदार नेटा, पारा की खराबी।

औरम ३०-२०० — नाक प्रदाहयुक्त, स्पर्श से जख्म की तरह दर्द, नाक की हड्डी में जख्म, नाक से वदवूदार नेटा निकलना, नाक मे जख्म, नाक बन्द होना। समस्त नाक मे दर्द, रात में वृद्धि, पारा व गर्मीरोग के दोष से रोग।

औरम-म्युर ३०-२०० — नाक के अन्दर दर्द के साथ जख्म। नाक से गले तक नेटा, सिरदर्द, कब्ज, ववासीर।

वैराइटा-कार्ब ३०-२०० — नाक के अन्दर के पीछला हिस्से मे चोइयाँ जमना।

कैल्केरिया-कार्ब ३०-२०० — नाकसे पीवकी तरह गाढ़ा व वदवूदार स्राव, स्राव लाल वा पीला, उस से होठ में जख्म होना, दिन मे नेटा निकलना, रात में नाक सूखा व बन्द होना। नाक के मूलदेश फूला, नाक के द्वार व बीच का दिवार में जख्म, सडा अंडा वा गन्धक की तरह बू। सुबह को गला बैठ जाना, कण्ठमाला धातु।

इलैप्स ६-३०—नाक के बहुत दूर तक बन्द मालूम होना उस के साथ ललाट में दर्द, कभी २ नाक से बदबूदार नेटा निकलना, कभी २ नाक से खून गिरना; रात को छींक आना। गन्ध मालूम न होना। ऋतु का रक्त ज्यादा व कालारङ्ग ।

ग्राफाइटिस ३०-२००—नाक बन्द और उस के साथ बदबूदार नेटा निकलना, कभी २ नाक बन्द होना, और कभी २ नाक से पानी गिरना, नाक में चोइयाँ पड़ना, ऋतु स्राव के समय पीव की तरह बलगम निकलना, खून गिरना, नाक मे बाल जलने की तरह बू, नाक में जख्म, कान के पीछे रसदार फुन्सियों, जननेन्द्री व पैखाने के रास्ता के चारो ओर फुन्सियां ।

हिपर-सल्फ ३०-२००—नाक मे स्पर्शासहिष्णुता, नाक फूला व लाल, नाक छेड़ने के बाद दर्द, नाक में हवा जाने से भी तकलीफ होना ।

आइओडियम ३०-२००—बदबूदार नेटा निकलना, नाक फूला व दर्द के साथ ।

कैलि-बाइक्रम ३०-२००—खून मिला हुआ चोइयां निकलना, पीव की तरह बदबूदार नेटा एक नाक से निकलता है, गले के अन्दर श्लेष्मा जमता है, खांसते वक्त खासकर रात में दम फूलना, गठिया के लक्षण ।

केलि-हाइड्रो ३०-२००—गरमी अथवा पोरा के दोष, पैर के तलवा की हड्डी मे दर्द, खास कर रात मे।

केलि-फस १२—यह भी फायदेमन्द दवा हैं।

मार्क-प्रटो-आयोड ६-३०-२००—गले मे स्याही मैल, लाल रङ्ग, घन्टी का बढ़ना, नाक के पीछले हिस्से में बलगम जमा होना, टन्सिल का बढ़ना व उस मे जखम, नाक के पीछले हिस्से मे रस्सी की तरह बलगम जमा हो कर गले में लटक जाता है—उससे हमेशें खंखारते रहना।

नेट्रम-कार्ब ६-३०—खराब बूदार पीलापन सब्ज रङ्ग का बलगम, रात में आहार के बाद बलगम गिरना बन्द होता है, रात में नाक बन्द, स्वाद व बू मालूम न होना।

नेट्रम-म्युर ३०-२००—नाक के बहुत दूर तक बन्द और उस से कभी २ पतला पानी निकलना, नाक के पीछला हिस्सा खुष्क मालूम पड़ना, उस के साथ लेरींग्स में जखम सा मालूम होना, नाक के नली बन्द होने से आंख से पानी गिरना, कान में आवाज होता रहने के कारण पढ़ा सुना नहीं जाता है, स्वाद व बू मालूम न होना।

नाइट्रिक-एसिड ३०-२००—नाक के पीछला हिस्सा से श्लेष्मा निकलना. उस मे बदबू, पारा के दोष।

पेट्रोलियम ३०-२००—नाक के पीछले हिस्से से बहुत परिमाण श्लेश्मा निकलकर हलक में जमा रहता है, कान मे आवाज ।

फस-फोरस ३०-२००—नाक से पीला या सब्जापन पीला अथवा लाल बलगम निकलना, नाक फूला व जख्म के साथ, लाल ज्वर आदि रोग मे गला फूला, आंख फैली हुई, दोनों हाथ नीला व ठन्ढा, लेटने से नेटा गले में गिरता है,

सारिनम २००—बहुत बदबू. शरीर के तमाम ही स्राव में बदबू. नाना प्रकार दवा के इस्तमाल से भी बिमारी आराम न होती है।

पल्सेटिला ३०-२००—नाक से गाढ़ा, पीलारंग अथवा सब्ज रंग के दुर्गन्धी नेटा गिरना, नाक फूला, उसमें खुजलाहट, नाक के पुरे में जख्म; स्वाद व गन्ध मालुम न होना; ऋतु थोड़ा व देर मे होता है; ऋतु के बाद श्वेत प्रदर; कोमल स्वभाव, ठन्ढी, खुली हवा में आफिअत।

सिपिया ३० २००—नाक से सब्ज रंग का नक्टी निकलना ; कान के पीछे अकौता ।

साइलिशिया ३०-२००—नाक से गाढ़ा, लसलसा पीव की तरह बलगम निकलना, प्रात काल मे नाक बन्द और सब्ज़ा-पन पीला रङ्ग का बलगम गले से निकलता है। नाक से पानी गिरना और उससे ओंठ में जखम होना, ललाट में दर्द, गले मे दर्द व खुश्की, लुढ़की फूला, टन्सिल व गर्दन की गिल्टियां फुली हुई।

सलफर ३०-२००—नाक से श्लेस्मा निकलना, आंख व ओष्ट में ज्वाला, नाक में खुश्की, छींक आना, नाक के पीछला हिस्से से खींच कर वलगम निकालने पड़ता है। नाक छेड़ने में कान बन्द मालुम होता है, अथवा ऐसा मालुम होता है कि कान से हवा निकल रही है। नाक मे जखम। स्वांस लेने वक्त नाक दुखता है।

ष्टैफिसेग्रिया ३०-२००—नाक मे दर्द, नाक का सुराख को बन्द होना, वार २ छींक आता है। नाक के नीचे रूसी की तरह चीज।

टिउक्रिअम ६,३०-२००—यह इस रोग के लिये एक आला दवा है। इसका मदर टिंचर नकड़ा में लगाया भी जाता है।

स्वरनली का प्रदाह, स्वरभंग और स्वरबन्द।

(LARYNGITIS, HOARSENESS AND APHONIA)

रोगपरिचय—स्वरनली वा लेरिंग्स की अन्तर झिल्ली का प्रदाह होने से उसको लेरिंजायटिस कहते हैं। इसके साथ मृदु ज्वर, निगलने में कष्ट, स्वांकष्ट, शुष्क खांसी, स्वरभंग (Hoarseness) स्वरबन्द (Aphonia) वगैरह लक्षण होते हैं।

कारण-अचानक आबहवा का बदलना, ठन्ढ लगना, तेज वाष्प वा गर्दा वगैरह का स्वांस लेना, ज्यादा लेक्चर

देना वा गाना, रोना वगैरह से यह रोग पैदा होता है। कोदवा, चेचक, क्रुप, हुपींग कफ, ब्रोंकाइटिस, निउमोनिया, थाइसिस वगैरह रोग के साथ अकसर यह रोग होता है।

लक्षण—रोग के आरम्भ में स्वरनली की वलगमी झिल्ली मे खून की ज्यादती देखी जाती है और उस के बाद वहाँ से बलगम निकलना शुरू होता है। वहां की खून की नलियां फट कर कभी २ रक्तश्राव भी होता है। परिशेष में वहां जख्म भी हो सक्ता है। इस से आवाज कड़ी होती है और पीड़ित स्थान का फूलन ज्यादा होने से आवाज वैठ जाती है और आवाज बन्द भी हो जा सक्ती है। गले में सुरसुराहट व दर्द, सँाँसँा शब्द के साथ स्वास चलना, निगलने में कष्ट खांसी वगैरह लक्षण प्रकाश पाता है। स्वरभङ्ग व आवाज वैठ जाना लेरिंजाइटिस के साथ जरूर ही होता है। रोग प्रवल होने से ज्यादा बुखार होता है। चेहरा कभी लाल, कभी मलिन होता है। यह रोग अनुमान ४ दिन में आराम हो जाता है। इस रोग का भाविफल शुभ है, लेकिन आक्रान्त स्थान मे पीव होने से भाविफल खराब होता है। कुचिकित्सा होने से यह रोग पुराना हो जाता है। रोग पुराना होने से और यक्ष्मारोग के कारण होने से आराम होना कठिन होता है। रोग पुराना होने से स्वरभङ्ग ही प्रधान लक्षण होता है।

चिकित्सा—

ठंढी हवा लग कर रोग होने से—एकोनाइट, हिपर। गरमी से अचानक ठंढी हवा लगने से रोग—ब्राइओनिया, डल्कामेरा। गले में सुरसुराहट, ज्वाला व खुश्की केलि-बाइ, केलि हाइड्रो, (Dush)आर्सेनिक, फस्फोरस।

एकोनाइट ३ x—६ —३० —पीड़ा की पहली हालत में ज्वरभाव, बेचैनी, प्यास, खुश्क ठनाठना खांसी, आवाज बैठ जाना, गले में दर्द, खुश्क ठंढी हवा लगने से बिमारी।

एपिस ६-३०—स्वरनली में शोथ के ऐसा फुलना, उसमें डंक मारने की तरह दर्द, खुश्क खासी।

बेलाडोना ६-३०—ज्वर, कुत्ता भुकने की तरह शब्द के साथ सख्त खांसी, गले में दर्द, सिर पोड़ा, आवाज बैठ जाना, गले में ज्वाला, निगलने में कष्ट।

एन्टिम-टार्ट ६-३०—लेरिंग्स में धड़धड़ाहट, बलगम नहीं निकलता है।

एन्टिम-क्रुड ६—३०—गाने वाले का रोग में फायदेमन्द है।

ब्रोमिअम ६-१२—गलमध्य में खुश्की व (खखोडने) की तरह मालुम होना, लेरिंग्स में बलगम जमकर दम फुलना।

कष्टिकम ३०-२००—गाने वाले के स्वर लोप, प्रात.काल में वृद्धि, गले में दर्द ज्वाला इत्यादि।

हिपर-सलफ ६-३०-२००—क्रूप की तरह खांसी, शेष रात मे वृद्धि, निगलने के समय एक कान से दूसरे कान तक सुई भोकने की तरह दर्द, शीत काल की ठन्ढी हवा से रोग, स्वरनली मे जख्म। चटचटा व पीब की तरह बलगम निकलना। लेरिंग्स का बायां तरफ मे दर्द, मालूम होता है कोई चीज अटकी हुई है। गले पर दबाव वा कपड़ा बर्दास्त नहीं कर सक्ता है। बात करते वक्त खांसो होता है।

फसफोरस ६—३०— गले में सुरसुराहट के साथ प्रबल खांसी; सिर पीड़ा, स्वरभङ्ग, साम को स्वरभङ्ग और खांसी का बढ़ना।

स्पांजिया ६-३०—स्वरभंग, गले मे ज्वाला व खुश्की, साँसाँ आवाज के साथ सुखी खासी, ज्वर, साम को रोग का बढ़ना, अथवा मध्य रात मे दम फुलना।

आयोडियम ६-३०-२००—पुराना रोग मे फायदेमन्द है। सुरसुराहट के साथ खाँसी, गले मे संकोचन भाव, कण्ठ-माला धातु, ज्यादा भूख, फिर भी रोगी का पतला दुबला होना।

कैल्केरिया-कार्ब ३०-२००—कण्ठमालाधातु के लिये यह ज्यादा मुफीद है। लेरींग्स में जख्म व दर्द, आवाज का बैठ जाना, साम को, खास कर लेटने से खुश्क खांसी, गले से पीला रङ्ग का बलगम निकलना, हाथ पाव ठंढा, सामान्य कारण से ठंढ लगने की आदत।

कार्बो-वेज ३०—२००—स्वरलोप, खासकर सुबहको गले में सुरसुराहट, खांसी, गले से टुकड़े २ सब्ज रङ्ग का बलगम निकलना, निहायत कमजोरी। बलगम बदबूदार ।

आर्जेन्टम-नाइट्रस ३०-२००—पीड़ित स्थान फूला, उसमें जख्म, उसमें लाल २ दानें । लेरींक्स मे सुरसुराहट, गला खरखरा, आक्षेपयुक्त खांसी।

ब्राइओनिया ३०-२००—हिलने डोलने से या गर्म कमरे में खांसी की वृद्धि ।

केमोमिला १२-३०—लगातार सुरसुराहट के साथ खांसी, रात मे वृद्धि । निद्रित अवस्था में भी खांसी, चिरचिराहा स्वभाव।

ड्रोसेरा ३-६—लगातार गलेमें सुरसुराहट के साथ खांसी ।

डलकामारा ३-६—अकस्मात् गर्मीसे ठन्ढ पड़नेसे पीड़ा।

केलि-वाइ ३०-२००—गले के भीतर की शिरासमूह लाल फूली हुई और गले से लस्सादार बलगम निकलना ।

केलि-हाइड्रो ३०-२००—लेरिङ्क्स मे बैगनी रंग के फुलन, छोटे २ जख्म, गले मे दानें, स्वरभंग, सूखी खांसी गले में खुश्की व ज्वाला ।

मार्क्युरिअस ६-३०—सहज से ही पसीना होता है किन्तु उस से आराम नहीं मालुम होता है, गले में दर्द, मुंह से लार निकलना, मुंह में बदबू।

पलसेटिला ६-३०—शीतबोध, सन्ध्या के समय और गर्म गृह में पीड़ा की वृद्धि, खुली हवा में आफियत। प्यास नहीं होती है लेकिन मुंह सूखा रहता है।

रस-टक्स ६-३०—शरीर मे दर्द, विश्राम से वृद्धि, संचालन से आफियत।

रिउमेक्स ६-३०—स्वांस लेने से बात करने से, ठन्डी हवा के सांस लेने से, गला दबाने से सूखी खांसी।

——:०:——

क्रुप वा घुंड़ी खांसी।

(CROUP.)

रोग परिचय—सर्दी लगने के बाद, झुठी झिल्ली पैदा करने वाला, गलनली व स्वर नली का, तरुण प्रदाहिक रोग को क्रुप कहते हैं। इससे खांसी का वर्तन वा कुत्ते की तरह बोली की तरह आवाज के साथ खांसी, स्वांसकष्ट, साँसाँ घड़घड़ आवाज के साथ स्वाँस व दम बन्द होने के भाव, ज्वर इत्यादि लक्षण होते हैं।

कारण—यह बाल्यावस्था का रोग है, सात साल उम्र के बाद यह रोग नहीं होता है। ठंढ लगना ही इस रोग का प्रधान कारण है। भय, क्रोध वा मानसिक उत्तेजना इत्यादि से भी यह रोग होता है। कण्ठमाला धातु के बच्चों को यह रोग सहज से होता है

लक्षण क्रुप रोग कभी क्रमशः और कभी अचानक प्रकाश पाता है। पहले सामान्य सर्दीज्वर, नाक से पानी गिरना, खांसी, स्वरभंग, छींक आना, आँख से पानी निकलना, शीत या गर्मी, सिर दर्द प्रभृति लक्षण प्रकाश पाता है। ये सब लक्षण क्रमशः वृद्धि पाकर अचानक एक रोज रात को शिशु सोई हुई हालत से दम बन्द होने के भाव होकर जाग पड़ता है और उच्च शब्दयुक्त खांसी, सांसां आवाज के साथ स्वांसकष्ट इत्यादि उपस्थित होता है। यह तकलीफदार हालत करीब तीन चार घण्टे रह कर कम हो जाती है और शिशु सो जाता है। अनेक समय देखा जाता है कि उस समय से ऐसा कि दूसरे रोज तमाम दिन ही विशेष कोई तकलीफ नहीं रहती है, सिर्फ थोड़ा २ खांसी, स्वांसकष्ट, स्वरभंग, सामान्य ज्वर रहता है। लेकिन रात को बिमारी फिर तकलीफदार हो जाती है। इसी तरह से पहले पहल दो तीन रोज रोग बढ़ता व घटता रहता है।

एक प्रकार का क्रुप रोग देखा जाता है, जिस मे रोग का कोई पुर्व लक्षण प्रकाशित न हो कर अचानक रोग उपस्थित होता है। इससे शिशु का स्वरनली में दर्द, स्वरभंग खांसी, स्वाँसकष्ट, प्रबल ज्वर होता है और रोग बहुत जल्द ही खतरनाक हो जाता है। क्रमशः रोगी की नाड़ी लोप होती जाती है, बदन ठंढा होता जाता है, बेहोशी आ जाती है और मृत्यु-लक्षण प्रकाश पाता है।

क्रुपरोग में प्रायः प्रथम से शेषतक आवाज की खराबी रहती है। तकलीफदारी खांसी होती है, खांसी की आवाज कांसा की वर्त्तन वा गधे की आवाज की तरह होती है। स्वांस सांसां वा घड़घड़ाहट के साथ होता है, दम फूलता है, चेहरा नीला हो जाता है। पहली हालत मे वलगम नहीं निकलता है, पीछे छेना की तरह चीज खांसी के साथ निकलती है और आखिर मे भिन्न २ प्रकार से व झिल्ली की तरह टुकड़े २ चीज कै के साथ निकलती रहती है। रात को नींद के वाद यह रोग वढ़ता है और वहुत ही जल्द सांघातिक आकार धारण करता है, ऐसा की २-३ ही रोज मे अनेक रोगी की मृत्यु होती है।

चिकित्सा —

एकोनाइट ३-६—रोग का प्रथमावस्था मे, प्रवल ज्वर वदन गर्म व सूखा, अस्थिरता, व्याकुलता, अत्यन्त प्यास, स्वरभंग के साथ खांसी।

आरसेनिक ३०-२००—रात, दोपहर के समय पीड़ा की वृद्धि अत्यन्त दुर्वलता, अस्थिरता, व्याकुलता, वहुत जल्द २ थोड़ा २ पानी पीना।

बेलाडोना ३-६—सिर गर्म, चेहरा लाल, गले मे भयानक दर्द, सूखा खनखना खांसी, कुंथना, ऊंघाय आना किन्तु नींद नहीं होती है। नीन्द में चौंक उठना।

ब्रोमिअम ६-३०—स्पन्जिया के प्रयोग के वाद भी दुसरे

दिन सन्ध्या के समय पीड़ा की वृद्धि हो तो दिया जाता है।

एन्टिम-टार्ट ६-३०-२००—चेहरा बैगनी, शीतल पसीना, नाड़ी द्रुत, गले मे घड़घड़ाहट।

कैलकेरिया-कार्ब ६-३०—सिर में ठन्डा पसीना, पेट फूला। कैलकेरिया के खास मिजाज वाला शिशू का रोग।

कुप्रम ६-३०—चेहरा और ओष्ठ नीला, कन्मलशान (आक्षेप) शिशु वा माता के डर जाने के हेतु पीड़ा, रात में शीतल पसीना, ठन्ढा पानी पीने से खांसी की कमी।

क्लोरम १-३—श्वाँस लेने के समय कौवा की तरह आवाज, स्वांस फेंकने के समय ज्यादा तकलीफ।

जेलसिमिअम ६-३०—निश्वास वहुत देर तक लेता है और उसमे कौवा की तरह आवाज होता है किन्तु अचानक वेग के साथ श्वास त्याग होता है।

हिपर-सल्फ ६-३०—आखरी रात मे और प्रातःकाल मे खासी की वृद्धि, गले मे घड़घड़ाहट किन्तु वलगम नहीं निकलता है, स्वरभंग कुत्ता भुकने की तरह सूखी खांसी।

कस्टिकम ३०-२००—गले मे जखम सा मालुम होना, वलगम निकाल नहीं सक्ता है, निगल लेता है, ठंढा पानी पीनेसे आफियत।

आइओडिअम ६-३०—हिपर के वाद फलप्रद है, प्रात:काल में खांसी की वृद्धि, गले में घड़घड़ाहट, वलगम नहीं निकलता है, स्वरभंग।

कैन्थ-बाइ ६-३०—प्रातःकाल में रोग की वृद्धि, गले के भीतर प्रदाह और परदा पैदा होना, स्वरभंग।

लैकेसिस ३०-२००—गला के ऊपर स्पर्श बरदास्त नहीं कर सकता है। दिन दो पहर के बाद, निद्रा के समय और निद्रान्त में पीड़ा की बृद्धि गले के भीतर पर्दा पैदा होना।

लाइकोपोडिअम ३०-२००—स्वाँस के साथ नाक के पुरे पंखे की तरह हिलते रहते हैं।

फस्फोरस ६-३०—अत्यन्त स्वरभंग, गले में दर्द, सूखा खांसी सन्ध्याकाल से रात दोपहर तक ज्यादा होना।

मैंगुइनेरिया ६-३०—धातु पात्र के शब्दके सदृश खांसी, गले में सांसां आवाज।

स्पंजिया ६-३०—सां २ शब्द के साथ खांसी, श्वांस लेने के समय आरी से लकड़ी चिरने के शब्द की तरह आवाज मालूम होती है, दम फूलना।

सैम्बुकस ३-६—सोते २ ही दम फुल कर शिशु जाग पड़ता है।

औषध प्रयोगके नियम—रोग कठिन होने से १५। २० मिन्ट अन्तर २ औषध देना चाहिये नहीं तो २। ३ घन्टे अन्तर २ देना चाहिये।

सहकारी उपाय—गर्म जल के सेंक देना इस पीड़ा में विशेष उपकारी है। गर्म पानी मे कपड़ा भिगा कर, निचोड़

कर गलेके ऊपर प्रयोग करना चाहिये और उसके ऊपर सूखा फ्लानेल कपड़ा बांध देना चाहिए, बार २ इस प्रकार करो ।

छाती-परीक्षा ।

PHYSICAL EXAMINATION

छाती-विभाग—फेफड़े (Lungs) और दिल (Heart) छाती के अन्दर रहते हैं। इस लिये छाती के बाहरी भागकी आकृति, संचालन और उसके अन्दर के शब्दादि की परीक्षा द्वारा फेफड़े और दिल के रोग पहचाना जाता है। इस परीक्षा के सुविधा के लिये डाक्टर लोग निम्न लिखित हिस्सो में छाती को विभाग किये हैं। छाती का सामने का उभय ओर मे ऊपर से क्रमशः नीचे की तर्फः—सुप्रा क्लेभिकुलार प्रान्त अर्थात् हसुली की हड्डी के ऊपर वाला हिस्सा, इन्फ्राक्लेभिकुलार प्रान्त अर्थात् हसुलीकी हड्डी के नीचला हिस्सा, मेमारि प्रान्त अर्थात् स्तनदेश, इन्फ्रा मेमारी अर्थात् स्तन के निम्नदेश। मध्य भाग मे —सुप्रा ष्टार्नल (ष्टार्नम हड्डी की उर्द्धदेश), अपार ष्टार्नल अर्थात् ष्टार्नम हड्डी के उपर का हिस्सा, मिडष्टार्नल अर्थात् ष्टार्नम हड्डी का दरमियाना हिस्सा, लोअर ष्टार्नल अर्थात् ष्टार्नम के निम्न-अश । बगल मे —ऐक्जिलियारी प्रदेश वा बगल

से निचला हिस्सा। छाती का पश्चात भाग का दोनों पार्श्व मे :—सुप्रा स्कैपुलर वा पखुरा से ऊपर वाला हिस्सा, इन्फ्रा स्कैपुलार अर्थात् पखुरा से नीचला हिस्सा, इन्टार स्कैपुलर अर्थात् दोनों पखुरे के मध्यवर्त्ती प्रदेश। छाती परीक्षा के लिये इनजगहों की बाहरी आकृति, संचालन और इस के अन्दर का शब्दादि परीक्षा करना पड़ता है।

छाती-परीक्षा के उपाय—दर्शन, स्पर्शन, परिमापन (नाप करना) आघातन (ठोकरना,) आकर्णन (सुनना) और हिलाना, ये कई उपायों से छाती-परीक्षा की जाती है।

(१) दर्शन (Inspection इनष्पेक्शन) :—इस उपाय से छाती की गठन वा आकृति मे किसी किस्म का गड़बड़ी है या नहीं सो मालूम पड़ता है। छाती के संचालन अर्थात् स्वांस की चाल भी देखने से ही मालूम होता है।

(२) स्पर्शन (Palpation पैलपेशन) :-तुम्हारे हथेली को छातीपर रखकर रोगी को १-२-३ प्रभृति संख्या गिणने कहो; उस से रोगी की बोली वा स्वर का कम्पन वा थरथराहट हथेली में मालूम पड़ेगा। इस को <u>भोकल फ्रेमिटस (Vocal Fremitus)</u> कहते हैं। दोनों तर्फ का कम्पन का तुलना करने के लिये दो हथेली को दो तर्फ रख सकते हो। स्वस्थ स्वरकम्पन चंद स्वस्थ व्यक्ति को परीक्षा करने ही से मालूम हो जायगा। फेफड़े और ब्रंकियल टिउब को

अच्छी हालत में खूब साफ हल्का कम्पन मिलता है। निउमोनिया और थाइसिस रोग में उस जगह में कम्पन ज्यादा मिलेगा। बालक व स्त्रियों से युवकों के स्वर कम्पन ज्यादा होता है। किसी वजह से ब्रंकियल टिउब बन्द होने से वा प्लुरा में जल संचय इत्यादि से फेफड़े पर चांप पड़ने से स्वर कम्पन कम होता है वा एक दम ही नहीं मालुम पड़ता है।

(३) परिमापन (Measurement मेजरमेंट) :—छाती में जल संचय होने से छाती का परिमाण बढ़ जाता है, फेफड़ा संकुचित होने से छाती का परिमाण कम हो जाता है, पीड़ा का ह्रासवृद्धि बूझने के लिये तागा वा फीता से छाती का परिमाण नाप कर रखा जाता है।

(४) आघातन (Percussion पारकशन) :—इस को अंगुली से ठोक कर परीक्षा करना कहते हैं। जिस स्थान की परीक्षा करना है उस स्थान पर तुम्हारे बांयां हाथ की मध्य दो अंगुली को रख कर दहिना हाथ के अंगुठे की बगल की अंगुली से आस्ते २ आघात करने से छाती का शब्द सुना जायगा, इस शब्द को पलमोनारी रेजोनेन्स (Pulmonary Resonance) कहते हैं। फेफड़ा स्वस्थ रहने से यह पलमोनारी रेजोनेन्स साफ लेकिन कुछ खोखला (Hollow) शब्द व्यापक होता है। चंद स्वस्थ आदमी को परीक्षा करके

मामूली पलमोनारी रेजोनेन्स पहचान लेना चाहिये। छाती में ज्यादा मांस वा चर्बी होने से पलमोनारी रेजोनेन्स कम होता है। प्लुरिसी में भी यह निहायत कम मिलता है।

फेफड़े का टिसू का परिवर्त्तन से इस शब्द का परिवर्त्तन न होता है।

उपरोक्त मामूली पलमोनारी रेजोनेन्स फेफड़े के अन्दर के वायु के कम्पन व छाती के दिवाल के कम्पन से उत्पन्न होता है। फेफड़ा ठोस होने से इस शब्द की कमी होती है और तब उसको "डल" (Dull) वा स्थुल अर्थात पूर्णता बोधक आवाज़ कहते हैं। फेफड़े के ऐआर सेल्स (Aircells) वा हवा के कोठरियां फैल जाने से (यथा Emphysema रोग मे) यह ज्यादा खोखला शब्दज्ञापक होता है, तब उसको "हाइपर रेजोनेन्स" (Hyper Resonance) कहते हैं। हवा से फूला हुआ पेट पर पारकशन करने से अतिशय खोखला व टिम्पैनिटिक (Tympanitic) शब्द मिलेगा। यक्ष्मा रोग में फेफड़े मे बड़े २ गहराई (Cavity) पैदा होने से और उसमे हवा भरा रहने से टिम्पैनिटिक आवोज मिलती है। यक्ष्मा रोग में केभिटी वा गहराई पैदा होने से कभी २ फटो बर्तन की तरह आवाज (Crackedpot-Sound) क्रैकेड-पट-साउन्ड मिलती है।

(५) आकर्णन (Auscultation) असकलटेशन— छाती के अन्दर जो शब्द होता है उस को सूनना को

असकल्टेशन कहते हैं। इस परीक्षा के सुविधा के लिये ष्टेथोस्कोप नाम के यंत्र व्यवहार होता है। ष्टेथोस्कोप भिन्न २ प्रकार का होता है। लेकिन दोनली ष्टेथोस्कोप ही सबसे अच्छा है।

स्वांसप्रस्वांस (Breathing ब्रीदिंग) का शब्दसमूहः—

भेसिकुलर मरमर (Vesicular murmur—)—यह फेफड़े का स्वभाविक शब्द है। स्वांस लेने के समय यह सुना जाता है—स्वांस परित्याग के समय प्रायः सुना नहीं जाता है। स्वांस लेने से फेफड़े के एअर सेल्स मे हवा प्रवेश करने के समय उसके अनुकम्पन से यह शब्द उत्पन्न होता है। शिशुओं में यह शब्द कुछ तेज होता है।

यह भेसिकुलर मरमर किसी जगह में कम मृदु वा लुप्त हो सकता है। किसी वजह से (जैसा फेफड़े के उपर चांप पड़ने से वा ब्रंकिअल टिउब वन्द होने से) फेफड़े में स्वांस की हवा के प्रवेश में बाधा हो तो ऐसा हो सक्ता है।

यह भेसिकुलर मरमर अनेक कारण से ज्यादा भी हो सकता है :—जैसे, द्रुत स्वांस व फेफड़े का एक भाग बेकार होने के हेतु दूसरा भाग मे स्वांस प्रस्वांस की वृद्धि।

ब्रूंकिअल वा टिउब्युलर ब्रीदिंग (Bronchial or tubular Breathing):— छाती के जिस स्थान से स्वांस-नली उत्पन्न हुआ है यह उसी स्थान की स्वभाविक

आवाज है। स्वांस लेने और फेंकने के समय ब्रंकियल टिउब के अन्दर से हवा जाने आने के कारण यह शब्द होता है। होठों को इकट्ठे करके फुंक देने से करीब २ ऐसा शब्द होता है। यह शब्द लेरिंग्स और ट्रकिया के ऊपर ज्यादा सुना जाता है।

केभार्नस ब्रीदिंग (Cavernous Breathing) —फेफड़े मे वृहत केभिटी (Cavity) वा गहराई पैदा होने से उसमे यह शब्द सुना जाता है। ब्रङ्किअल टिउब का एक भाग ज्यादा फैल जा कर गहराई पैदा होने से उसमे यह शब्द मिलेगा। यह पुर्वोक्त ब्रंकियल ब्रीदिंग का ही आधिक्य मात्र है। यह खुष्क व खोखला शब्द है।

एम्फोरिक ब्रीदिंग (Amphoric Breathing):—यह केभार्नस ब्रीदिंग से भी ज्यादा खोखला शब्द है। संकीर्ण गला व मोटा पेट वाला शीशी के मुंह मे फुंक देने से ऐम्फोरिक ब्रीदिंग ऐसा शब्द होता है। फेफड़े मे अति वृहत केभिटी पैदा होने से यह शब्द सुना जाता है।

रंकाई (Rhonchi) :—सांसां, हिस् हिस्, सीटी देना वगैरह की तरह खुष्क आवाज को रंकाई कहते हैं, ब्रंकिअल टिउब में हवा जाने आने मे बाधा होने से इसकी उत्पत्ति होती है।

सोनोरस रंकस (Sonorus Rhonchus) :—बड़े२

ब्रंकियल टिउब्स में प्रदाहादि हेतु उसकी बलगमी अस्तर झिल्ली मोटी होने के कारण सांसां, हिस् हिस् शब्द होता है—इसी को सोनोरस रंकस कहते हैं। उक्त टिउब्स में आक्षेप होने से भी यह शब्द होता है।

सिबिलेन्ट रंकस (Sibilant Rhonchus):—उक्त कारणों से सीटी (Whistle) देने की तरह वा बंशी की तरह आवाज होने से यह शब्द होता है। कों कों वा कौवा की तरह आवाज को क्रोइङ्ग रंकस (Crowing Rhonchus) कहते हैं।

राल्स (Rales)—यह तरल शब्द है, म्युकस वा बलगम तरल अवस्था मे रहने से उसके अन्दर से स्वांस की हवा जाने आने के समय यह शब्द उत्पन्न होता है। शब्द के उच्चतानुसार राल्स को छोटा मध्यम व बड़ा कहा जाता है। राल्स बहुत ज्यादा होने से उसको गरलींग (Gurgling कुल्ला करने की तरह आवाज) कहते हैं। राल्स बड़बडाहट, खलखलाहट की तरह शब्द है। न्युमोनियां के रिज-ल्युशन हालत, यक्ष्मारोग की आखरी हालत इत्यादि में यह शब्द सुना जाता है।

हलोबब्लींग (Hollow Bubling) रंकस—यह बुलबुल्ला फुटने की तरह आवाज है। यक्ष्मारोग मे फेफडे में गहराई (Cavity) होने से स्वांस प्रस्वांस के समय यह शब्द होता है।

मेटालिक टिंक्लींग (Metalic tincling) :— यह धातु पात्र की तरह आवाज है, यक्ष्मारोग में फेफड़े में वृहत् केभिटी होने से सुना जाता है।

क्रिपिटेशन (Cripitation) :—यह केश मर्दन की तरह शब्द है। एक गुच्छा केश को अंगुली से रगड़ने से ऐसा शब्द होता है। यह शब्द न्युमोनिया की प्रथम अवस्था मे सुना जाता है। फेफड़े का शोथ होने से भी यह सुना जाता है। यह सिर्फ स्वांस लेने के समय होता है।

रिडक्स क्रिपिटेशन (Redux cripitation) :— यह न्युमोनिया के रिजल्युशन अर्थात् आरोग्यमुख अवस्था के शूरु में जब, फेफड़े के अन्दर का जमाट बलगम पिघलने लगता है उस वक्त मिलता है। यह उपरोक्त क्रिपिटेशन से कुच मोटा व उच्च शब्द है।

फ्रिक्शन शब्द (Friction Sound) :—प्लुरा का प्रदाह वा प्लुरिसी की प्रथमावस्था में प्लुरा के दोनों तह का रगड़ से यह शब्द होता है ब्लोटिंग कागज को अंगुली से खसोठने से ऐसा शब्द होता है।

भोकल रेजोनेन्स (Vocal Resonance) :—छाती पर ष्टेथोष्कोप लगाकर रोगी से कोई बात बोलवाओ, इससे उसकी बोली का कम्पन (Vibration) कान में मालूम होगा। इसी कम्पन को भोकल रेजोनेन्स कहते हैं। यह शब्द उच्चमात्रा से होने से उसको ब्रंकोफोनि (Broncho-

Phony) कहते हैं। ब्रंकोफोनी ष्टार्नम व क्लेभिक्ल हड्डी के संयोग स्थान में व स्केपुला हड्डियों के मध्यवर्त्ती स्थान मे स्वस्थ अवस्था में ही मिलता है। यक्ष्मारोग मे और न्युमोनिया में फेफड़े के जो भाग ठोस वा करीब ठोस होता है, उस स्थान मे भी ब्रंकोफोनि मालूम होता है। ठोस फेफड़े मे शब्द अधिक परिचालित होता है, यह न्युमोनिया रोग पहचानने का एक प्रधान उपाय है। प्लुरा मे जल संचय होने से जल के परिमाण के अनुसार भोकल रेजोनेन्स कम होता है या एक दम ही मालूम नहीं होता है।

(६) **सक्काशन** (Succussion) .—हाइड्रो-थोराक्स अथवा पाइओ-न्युमो-थोराक्स रोग में रोगी को हिलाने से प्लुरा के अन्दर के संचित तरल पदार्थ का शब्द पायो जाता है, उसको सक्काशन कहते हैं।

हूपींग कफ (WHOOPING COUPH)

समसंज्ञा—पारटुसिस (Pertussis,) टुसिस कन्भलसिभा (Tussis Convulsiva)।

रोग परिचय—श्वांसपथ की वलगमी झिल्ली का प्रदाह के साथ स्नायुमूल की अत्यधिक उत्तेजना के कारण आक्षेप व कुत्ते की तरह शब्दयुक्त संक्रामक खाँसी को हुपींग कफ कहते हैं। यह खास कर शिशुओं का रोग है और

इस मे खांसते वक्त हूप २ शब्द होता है इस लिये इसको हुपींग कफ कहते है।

कारण—यह रोग बाल्यावस्था मे ही होता है। कोई २ कहते है कि ब्रंकिअल अथवा ट्रेकिअल ग्लैण्डस फुल कर भेगस स्नायु के ऊपर चांप पड़ने से यह खांसी होता है। फिर कोई २ कहते कि खास किस्म का बेसिलस वा कीटाणु ही इस रोग का कारण हैं और रोगी का बलगम थुक, कपड़े वगैरह के जरिये यह दूसरे के स्वांसपथ मे प्रवेश करने से उनको भी यह रोग होता है।

लक्षण—इस रोग की तीन हालत देखी जाती है :—
(१) सर्दी की हालत, (२) आक्षेपिक हालत, (३) आरोग्य-मुख हालत।

(१) सर्दी की हालत (Catarrhal stage) :—इस में सामान्य ज्वर होता है; आंख लाल होता है, नाक आंख से पानी गिरता है बार २ छींक आता है। ईस अवस्था मे क्रमशः शुष्क खांसी देखाई देता है, नाक व आंख से पानी गिरना बन्द हो जाता है। क्रमशः खांसी आक्षेपयुक्त होता जाता है। दो तीन हफ्ते तक ऐसी हालत रहती हैं।

(२) आक्षेपिक हालत (Spasmodic stage) :—इस हालत में रोगी के गलमध्य में एक किस्म के अव्यक्त भाव होता रहता है और उस से बहुत जल्दी २ आक्षेपयुक्त

खांसी उपस्थित होता है। खांसते वक्त रोगी स्वांस ले नहीं सकता है सिर्फ उसको स्वांस फेंकना ही पड़ता है। कुछ समय तक इस प्रकार का खांसी होने के बाद रोगी एक वार खूब लम्बा सांस लेता है, उससे एक कड़ी आवाज होती है और उसको हूप whoop कहते हैं। खांसते वक्त रोगी का चेहरा लाल हो जाता है, नाक व आंख से पानी गिरता है। कभी २ बदन में पसीना आ जाता है, आंख नाक वा मुंह से रक्तस्राव होने लगता है, हाथ पैर में आक्षेप होता है। कभी २ खांसी इतना कठिन होता है कि खांसते २ रोगी कै वा पेशाब कर डालता है। कभी कांच निकल पड़ता है। वाज के दिमाग की नली फट कर सन्यासरोग हो सकता है।

(३) आरोग्य- मुख अवस्था में खांसी का आक्रमण क्रमशः देर में होता रहता है। खांसी की आक्षेपिक अवस्था क्रमशः कम हो जाती है और बलगम निकलता रहता है, वमन, खांसी व अन्यान्य कष्ट भी कम हो जाता है, रोग क्रमशः स्वस्थ होता जाता है।

भावीफल व भोग काल —कोई खराब लक्षण उपस्थित न हो तो भावी फल शुभ है। ज्यादा रक्तस्राव, वमन वगैरह होने से भाविफल खराब हो सक्ता है। इस रोग के भोगकाल करीब तीन महीना है। लेकिन होमियोपैथिक इलाज से जल्द ही आराम हो सक्ता है।

चिकित्सा :—

ब्रोमिअम ६-३०—गले में गन्धकके धुआं लगने की तरह सुरसुराहट व दम बन्द होने के भाव, छाती में सांसां आवाज, खांसने से कुछ भी नहीं निकलता है, हरकत से व लम्बा स्वांस लेने से खांसी की ज्यादती, गले में ठन्ढ मालुम पड़ना, मुंह में फेन की तरह बलगम जमा होना, स्वासकष्ट।

कोरालिअम-रुब्रम ६-३०—प्रबल, दम बन्द करने वाला खांसी, स्वांसा की आवाज कुत्ते की आवाज की तरह, खांसते २ चेहरा लाल वा कालापन हो जाता है। शेष रात व सुबह को खांसी का बढ़ना, खांसने २ आखिर मे थोड़ासा सख्त, रस्सी की तरह लम्बा बलगम निकलता है।

हिपर-सल्फ ३०-२००—स्वरभङ्ग के साथ रात को क्रुप की तरह खांसी, साम को सां सां अवाज के साथ खांसी, सुवह को बदबूदार बलगम वा खून मिला हुआ बद-बूदार वा खट्टा बूदार बलगम वा मिठा स्वाद के बलगम निकलना। पानाहार से खांसी की वृद्धि, छाती मे घड़घड़ा-हट के साथ दम फूलना, ठंढी हवा से खांसी का बढ़ना, ज्यादा नींद, सिर में पसीना, पारादि का दोष रहने से यह बहुत मुफीद होता है।

रिउमेक्स ६-३०—गले मे खुसखुसाहट होकर खांसी,

छाती के मध्य में सुरसुराहट होकर वार २ खांसी होता है, शीतल हवा का स्वांस लेने से व गले के ऊपर चांप पड़ने से खांसी बढ़ता है, स्वरभंग, नाक में तरल सर्दी, छाती में सूई भोकने की तरह दर्द। खांसते वक्त पेशाव हो जाना।

स्पंजिया ६-३०—गले में पुटरी की तरह भाव के साथ खांसी, स्वरनली में सुरसुराहट होकर खांसी, सुबह को गोंद की तरह चटचटा वलगम निकलना, पानाहार से खासी की कमी, ठन्ढी हवासे वा हरकतसे खांसीकी वृद्धि, छाती में सां सां, आवाज मालुम होता है कि आरी से लकड़ी चिरा जा रहा है।

स्पेमन-ब्रोमाइड ६-३०—घन्टे तक लगातार खांसी, खासकर रात में।

लैकेसिस ३० २००—गले में सुरसुराहट के साथ खांसी, हांफनी के साथ, मालुम होता है कि गले में कोई चीज फड़फड़ करके नाच रहो है। निद्रान्त में खांसी की वृद्धि, गले पर स्पर्श वर्दास्त न कर सकना।

भिरेटम-एल्वम ६-१२—खांसने से पतला वलगम निकलता है, उसके साथ ललाट में शीतल पसीना, खांसते वक्त पेशाव निकल जाना, रोगी निहायत दुर्वल, चेहरा का वैठ जाना, गरम गृह में और शीतल जल पीने से खांसी बढ़ता है, लेटने से आफियत।

एकोनाइट ३-६—रोग के प्रारम्भ में जब ज्वर, खुश्क खांसी गले में दर्द प्रभृति रहता है, प्रत्येक बार खाँसी के समय ही शिशु हांथ द्वारा गला पकड़ लेता है। अस्थिरता व्याकुलता, प्यास।

एमब्रा-ग्रीसिया ६-३०—खोखला शब्द के साथ भयानक खांसी। कष्टकर द्रुत स्वांस प्रस्वांस। बहुत परिमाण से गाढ़ा, सफेद या पीला बलगम निकलना; विशेषत: प्रात:काल में खांसी के साथ ढेकार आना।

आर्निका ६-३०—खांसी के फीट के पहले शिशु रो पड़ता है। आंख रक्तवर्ण, नाक से रक्तस्राव।

आर्सेनिक ३०-२००—अतिशय दुर्बलता, शरीर शीतल और रक्तशुन्य, बार २ पानी पीता है, गर्म गृह में आक्रियत, मध्यरात्र में वृद्धि।

बेलाडोना ६-३०—खाँसी के समय चेहरा लाल होना, नाक से रक्तस्राव।

ब्राइओनिया २०-२००—भोजन और पानान्त में पीड़ा की वृद्धि और वमन, कब्ज, होंठ सूखा और फटा २, छाती में सुई भोकने की तरह दर्द।

कैमोमिला १२-३०—सूखा खाँसी, रात में वृद्धि, निद्रित अवस्था में भी खाँसी, शिशु चिरचिराहा, पतला व सब्जरङ्ग का मल में सड़े अण्डे की बू, ललाट में गर्म पसीना।

सिना ३०-२००—खाँसते २ अचानक बच्चा सख्त हो जाता है, खाँसी के बाद ही गले से पेट में तक गड़ २ शब्द, दौड़ने व, बात करने से, हंसने से खाँसी की वृद्धि, चेहरा कालापन, कृमि के लक्षण ।

कक्कस-कैक्टाइ ३-६—रस्सी के शक्ल का बलगम निकलता है, उससे गला बन्द होने के ऐसा होता है और भोजन किया हुआ वस्तु वमन हो जाता है ।

कुप्रम ३०-२००—बहुत देर तक आक्षेपयुक्त खाँसी, तरल चीज खाने से वृद्धि किन्तु शीतल जल पीने से आफियत, खाँसी के समय दम बन्द हो जाता है, गाढ़ा बलगम निकलता है । चेहरा और ओष्ठ नीला हो जाता है, हाथ पैर मे ऐंठन होता है ।

ड्रोसेरा ६-३०-२००—दो पहर रात के बाद खाँसी की वृद्धि, खून आना, अजीर्ण वस्तु के वमन, जल वगैरह पीने मे वा तम्बाकु पीने से खाँसी की वृद्धि, खून का पेशाब होना ।

हाइओसायेमस ६-३०-२००—रात मे लेटने से सूखा खासी का बढ़ना ।

इपिकाक ६-३०-२००—दम बन्द होने के ऐसा भाव के साथ खाँसी, खाँसी के समय नाक और मुंह से रक्तस्राव, खाँसी के समय खून आना, बलगम की कै होना । छाती मे बलगम के घड़घड़ाहट, किन्तु कुछ भी नहीं निकलता है, जी मिचलाना ।

एन्टिम-टार्ट ६-३०-२००--खाने पीने के बाद ही खाँसी होती है, छाती में श्लेष्मा के घड़ २ शब्द मालूम होता है कि छाती तरल श्लेष्मा से भरा हुआ है किन्तु कुछ भी नहीं निकलता है, वमन-इच्छा और वमन, ललाट मे शीतल पसीना, ज्यादा ऊंघाय।

केली-कार्ब ३०-२०० — रात दोपहर के बाद और ३ बजे खाँसी की वृद्धि, चेहरा फूला २। आँख की उपरवाले पपुटे शोथयुक्त।

मेफाइटीस ६-३० — दिनरात खाँसी. खाँसी के समय उठ कर बैठने पडता है चेहरा नीलवर्ण, आक्षेप दुर्गन्धी पतला मल, आहार के कई एक घन्टे के बाद खाई हुई चीज का कै हो जाना।

नक्स-भोम ६-३०-२००—भोजनके बाद और प्रातःकाल में खांसी की वृद्धि, जी मिचलाना, कै होना, कब्ज, पेट में दर्द।

पलसेटिला ६-३०—खाँसी के साथ बहुत सा बलगम निकलना, बार २ बलगम और खाई हुई चीज का कै होना, उदरामय विशेषतः रात में, गर्म गृह में पीड़ा की वृद्धि, खुली हवा में आफियत।

फासफोरस ६-३०—खूष्क खाँसी, सन्ध्याकाल से रात दो पहर तक खाँसी की ज्यादती।

स्कुइला (सिल्ला) ३-६—शीतल जल पीने से खाँसी आती है, खाँसी से पेशाब निकल आता है।

रक्तखांसी वा हिमोप्टिसीस।

HÆMOPTYSIS.
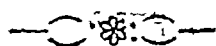
रोग परिचय—स्वरनली, सोसी, स्वाँसनली वा फेफड़े के वायुकोष से खाँसी के साथ मुंह के रास्ता से खून निकले तो उस को रक्तखाँसी वा हिमोप्टिसिस कहते हैं।

कारण—ज्यादा मेहनत करना वा भारी चीज उठाना, बहुत देर तक जोर से फुंकते रहना वा गाना, वन्शी बजाना जोर आवाज से लेकचर देना वा गाना, फेफड़े का याँत्रिक विगार, हैज वगेरह के खुन बन्द होना वगैरह बहुत प्रकार कारणों से यह रोग हो सक्ता है।

लक्षण—स्वरनली व साँसो से रक्त निकलने के समय सुरसुराहट के साथ सामान्य खाँसी व मुंह में नमकीन स्वाद मालूम होता है। फेफड़े से खून निकलने के केवल छाती मे गर्मी व पूर्णता बोध होता है; उस के बाद गले में से खून निकलना, मुंह में ऐसा एक विशेष स्वाद मालूम होता है, गले में सुरसुराहट हो कर खाँसी होता है और उस के साथ खून

निकलता है। कभी २ गले में खुसखुसाहट हो कर खांसी के सिवाय और कोई लक्षण मालुम नहीं पड़ता है। खून के परिमाण हमेशा एकसा नहीं होता है—कम वा ज्यादा हो सकता है। खून के रङ्ग वा हालत भी एक किस्म का नहीं होता है। कभी लाल, कभी काला, कभी गाढ़ा, कभी पतला, कभी जमा हुआ होता है। छोटी २ नलियों से खून निकले तो सिर्फ थुक के साथ खून का छींटा देखा जाता है। बड़ी २ नलियों से खून निकले तो उस के परिमाण ज्यादा होता है, ऐसा कि आधा सेर से डेढ़ सेर तक हो सकता है।

रोग निर्णय—रक्त वमन के साथ रक्त खांसी को भूल हो सकता है। रक्त वमन में मेदा से व रक्त खांसी में स्वांस यंत्रों से खुन निकलता है।

रक्त वमन में जी मिचलाना, पेट में दर्द, ज्यादा खून निकलना, फेनरहित व काला खुन, खाद्यद्रव्य के साथ मिलो हुआ खून और प्राय. मल के साथ खून निकलता है।

रक्तखांसी में कष्ट दायक स्वांस, छाती में दर्द, कम रक्त निकलना, रक्त फेनदार व लाल, बलगम के साथ खून मिला हुआ रहता है और मल के साथ खून नहीं निकलता है, वार २ खून निकलता है।

भावीफल—इस रोग का भावीफल जल्द सांघातिक नहीं होता है लेकिन बहुत ज्यादा रक्त स्राव होने से मृत्यु हो सकता

है, कभी २ यह स्थानिक प्रदाह वा यक्ष्मा रोग का पुर्व लक्षण रूप से प्रकाश पाता है।

आनुसंगिक चिकित्सा—रोगी को सम्पूर्ण विश्राम देना चाहिये। रक्तस्राव के समय रोगी को ऊंची तकिया पर ठेस देकर रखना व बोलने न देना चाहिये। रक्तस्राव के समय शीतल जल वा वर्फ का टुकड़ा देना अच्छा है, रोगी का तमाम प्रकार का खाना, पीना ठंढा होना चाहिये। हल्का व पुष्टिकर पथ्य देना चाहिये। रक्तस्राव के समय गाय के ताजा दूध देना अच्छा है। क्रोध, शोक, दुखः वगैरह तमाम किस्म की मानसिक चिन्ता परित्याग करना चाहिये। जोर से लेक्चर देना, गाना, वंशी बजाना इत्यादि त्याग करना चाहिये।

चिकित्सा—

एकालाइफा इन्डिका Q-३ ६—रक्तखांसी के लिये यह दवा निहायत मुफीद है, सूखी खांसी के साथ प्रबल वेग से खुन निकलना, स्वांस जल्द, सुबह को चमकीला लाल रक्त व शाम को मैलो रंग का जमा हुआ खून निकलता है।

एकोनाइट २-६—अस्थिरता, भय, व्याकुलता, दिल धड़कना, दिमाग और छाती में रक्त संचार, मृत्यु-भय इत्यादि लक्षणों पर उत्कृष्ट है।

आर्निका ६-३०—आघातादि लगने के हेतु पीड़ा, सामान्य परिश्रम के बाद रक्तस्राव, लगातार खुसखुसाहट

के साथ खांसी, छाती में सुरसुराहट और फोड़ा की तरह दर्द।

आरसेनिक ३०-२००—मूर्च्छा और दुर्बलता, अत्यन्त अस्थिरता, मृत्यु-भय। छाती और पेट में ज्वाला, ऋतुस्राव बन्द।

बेलाडोना ६-३०—छाती और शिर में रक्त की ज्यादती, छाती मे सूई भोकने की तरह दर्द, संचालन से वृद्धि, ऋतु-स्राव बन्द।

कैक्टस १-३—रक्त स्राव के साथ दिल की बिमारी, आक्षेपयुक्त खांसी, दिल धड़कना, मालुम होता है कि लोहे के पतरी से छाती कस के बान्धी हुई है।

कार्बो-भेज ३०-२००—चेहरा फीका, गात्र शीतल, नाड़ी सुस्त वा रुक २ कर चलने वाली अथवा लुप्त, कभी २ अत्यन्त खाँसी, सन्ध्याकाल में स्वरभंग की वृद्धि। काला अथवा पतला लाल रक्तस्राव।

चायना ६-३०—ज्यादा रक्तस्राव, निहायत कमोजोरी कान में भन भन शब्द और मुर्छा के सदृश बोध, निर्दिष्ट समय मे या एक दिन के बाद एक दिन रक्तस्राव की वृद्धि, रात में पसीना आंख में धुन्ध देखना, बदन ठन्ढा।

फेरम ३०-२००—रक्तस्राव के साथ छाती के अन्दर भिन्न भिन्न स्थान में थोड़े देर ठहरने वाला दर्द, धीरे २ टहलने से आफियत, लाल, चमकीला रक्तस्राव, दिल की धड़कना,

श्वाँसकष्ट, रक्तहीनता किन्तु सामान्य परिश्रम से ही चेहरा लाल हो जाता है।

हैमामेलिस १-३-६—सहज से ही काला रंग का ज्यादा रक्तस्राव होता है। स्राव के समय मालूम होता है कि छाती के अन्दर से गर्म जल का स्रोत चल रहा है।

इपिकाक ६-३०—सहज से ही जी मिचलाना वा मतली के साथ चमकीला लाल रक्तस्राव।

मिलिफोलिअम ३-६– खाँसी न होने से भी अपने आप गले से रक्तस्राव, मानसिक उत्तेजना वा आघातादि के बाद रक्तस्राव, रक्त चमकीला लाल, बवासीर के रक्त बन्द हो कर गले से रक्तस्राव। थाइसिस रोग में रक्तश्राव।

फसफोरस ३०-२०० - ऋतु-स्राव बन्द होने के हेतु फेफड़े से रक्तस्राव, सूखा कष्टदायक खाँसी, सन्ध्या से रात दो पहर तक वृद्धि। बलगम के साथ थोड़ा खून मिला हुआ, बहुत परिमाण से रक्तस्राव अथवा लगातार कभी अल्प, कभी अधिक रक्तस्राव।

पलसेटिला ३०-२००—काला रंग के जमा हुआ रक्तस्राव, उदरामय, ऋतु बन्द होनेवाला मिजाज, गर्म कमरे में भी शीत-बोध। रात में नितान्त अस्थिरता, पेट में शुन्यता बोध, वमन-इच्छा।

रस-टक्स ६-३०—कुंथना, कोई भारी चीज उठाना, बन्शी बजाना, मानसिक अवसाद वा उत्तेजना हेतु रक्तश्राव, रक्त खूब लाल, छाती के बीच मे सूरसूराहट होकर खांसी होता है। उस से मालूम होता है कि छाती के भीतर कुछ टुट जायगा।

सेनेसिया ३-६—ऋतु बन्द होने के हेतु रक्तस्राव। यक्ष्मा रोग का प्रारम्भ में रक्तश्राव के साथ कष्टदायक खांसी, खांसी पहले सूखा रहता है, पीछे तरल होता है और उस मे खून के छिटा रहता है और बहुत परिमान से पीला बलगम निकलता है। इस के साथ छाती मे जखम सा दर्द होता है।

—:०·—

दम्मा, हांफनी वा ऐज्मा।

ASTHMA

:—:—:

रोगपरिचय—स्वांसनली के पेशियों के आक्षेप व संकोचन के साथ डाएफ्राम्म वा पेट व सीने को अलग करने वाला पेशी का आक्षेप व स्वांसकष्ट होने वाला रोग को दम्मा वा ऐज्मा रोग कहते हैं।

कारण—प्राय खानदानी दोष से यह रोग होता है। कभी २ चर्म रोग बैठ जाने से यह रोग होता है। उन्माद रोग

मृगी, हिष्टिरिया प्रभृति रोग दम्मे में परिणत हो सक्ता है। इस के सिवाय धुला तम्बाकु, चूर्ण, तृणादि के रेणु वा अन्य किसी चीज का गन्ध से यह रोग हो सक्ता है। नकड़ा रोग, मेदा, यकृत, अंतरी, जरायु दिल वगैरह की उत्तेजना से भी यह रोग हो सक्ता है। गर्मी रोग व पारा के दोष से भी दम्मा होता है। आबहवा की तबदिली इस रोग का उद्दीपक कारण है। यह सब ही को हो सक्ता है लेकिन बाल्यावस्था से ज्यादा उम्र में और स्त्री से पुरुष मे अधिक होता जाता है।

लक्षण—अचानक मध्यरात मे स्वांसकष्ट उपस्थित होता है, रोगी ख्याल करता है कि दम बन्द हो जागया, छाती में सा सा शब्द होता है, प्रबल भाव से छाती संचालित होता रहता है। नाक के सुराख फैल जाता है. नाड़ी बेकायदे से चलती है चेहरे से तकलीफ के भाव मालूम होता है। रोगी लेट नहीं सक्ता है उस को सामने के तर्फ सिर झुका कर बैठा रहना पड़ता है। रह २ कर ऐसा खांसी होता है कि रोगी बोध करता है उसी से मृत्यु होगा। खुश्क खांसी के बाद ढीला बलगम निकलता रहता है। रोगाक्रमण का कोई ठिकाना नही है, कभी तो रोग चंद रोज और कभी रोगी चंद वर्ष तक बिमार रह सक्ता है। तकलीफ कुछ दिन रहने के बाद अपने आपही हांफनी कम हो जाता है।

छाती परीक्षा करने से पारकशन वा प्रतिघात से पलमोनारी रेजोनेन्स की आधिक्य वा ज्यादा खोखली आवाज

मालूम पड़ती है। ष्टेथोष्कोप से सोनोरस (साँ साँ शब्द) वा सिविलेन्ट रंकस (सीटी देने की तरह आवाज) सुना जाता है। स्वाँस प्रस्वाँस के मध्यवर्त्ती समय मे क्रोइंग रंकस वा कोंकों शब्द सुना जाता है॥

भोगकाल व भाविफल—यह रोग तरुण भाव में २।४ रोज और पुरानाभाव मे २।४ वर्ष वा आजीवन रह जाता है।

ब्रोंकाइटिस व एमफाइसेमा—(फेफड़े के एअरसेल्स का फैलजाना) इस रोग का साथी है। इस रोग के साथ दिल की बिमारी रहने से प्रायः दम्मा सांघातिक होता है।

आनुसंगिक उपाय—यदि इस के साथ ज्वर न रहे तो रोज ठंढो पानी से नहाना अच्छा है। जिस से पेट गरम न हो उस के प्रति विशेष ख्याल रखना चाहिये। गर्म दूध पीना अच्छा है। विशुद्ध वायु सेवन कराना सर्वदा जरूरत है।

रोग-निवारण, रोग की तेजी को दमन करना और इस के पुनराक्रमण निवारण, ये तीन उद्देश्य से दवा निर्णय करना होता है। अनेक समय ब्लैटा वा लोबेलिया का मदर टिंचर देकर जल्द रोग निवारण कर के पीछे धातुदोष निवारणकारी वा रोग-आरोग्यकारी औषध प्रयोग करने से विशेष फल पाया जाता है।

इन्टी के साथ धुतुरा के सूखा पत्ते को छोटे २ करके काट कर तम्बाकु की तरह पीने से बहुत जल्द दम्मा का हमला रुक जाता है।

चिकित्सा:—

पेट में हवा होने के हेतु दम्मा—कार्बो-भेज, चायना, सलफर, नक्स।

बलगमी दम्मा—आर्सेनिक, कुप्रम, पलसेटीला, ष्टैनम, एन्टिम-टार्ट, इपिकाक।

वायुप्रधान दम्मा—कक्टस, कुप्रम, लोबेलिया, नक्स, ब्लेटा ओरिएन्टल, सेम्बुकस, सलफर।

ऋतु दोष के साथ दम्मा—पलसेटिला, कुप्रम, सिपिया। दम्मा के आक्रमण के समय स्पिरिट-केम्फर के आघ्राण, इपिकाक, नक्स, आर्सेनिक, लोबेलिया, ब्लेटा, सेम्बुकस।

दम्मा के दोष दूर करने के निमित्त—कैलकेरिया, सलफर, नक्स, आर्सेनिक, लकेसिस, लाइकोपोडिअम।

ठन्ढ लग कर दम्मा—एकोनाइट, ब्राइयोनिया, डलकामेरा, इपिकाक, आर्सेनिक।

सर्दी बैठ जाने के हेतु दम्मा वा बलगमी दम्मा—आर्सेनिक, इपिकाक, नक्स, पल्स, एन्टिम-टार्ट।

चर्मरोग दब जाने के हेतु दम्मा—इपिकाक, पल्स, आर्स, सल्फ, कार्बो-भेज।

एकोनाइट १x-३-६—श्वांस प्रश्वांस द्रुत विशेषतः निद्राकाल में, श्वांस कष्ट, गहरा श्वांस नहीं ले सक्ता है, आक्षेपयुक्त खाँसी, व्याकुलता, मृत्युभय, अस्थिरता।

आर्सेनिक ३०-२००—श्वांस प्रश्वांस जल्द और कष्टदायक, विशेषतः ऊपर चढ़ने के समय दम फूल जाता है। विशेष कर रात में संध्याकाल में और लेटने से पीड़ा की वृद्धि, अत्यन्त मानसिक अस्थिरता व्याकुलता और मृत्युभय, अत्यन्त प्यास किन्तु थोड़ा २ पानी पीता है, निर्दिष्ट समय में रोग का आक्रमण।

बेलाडोना ६-३०—रोग के आक्रमण प्राय दिन दो पहरके बाद और शामको होता है, मालूम होता है कि फेफड़े में गर्दा घुसा हुआ है, सिर को पीछे के तरफ हिलाने से या श्वाँस बन्द कर खाँसने से आफियत, आंख और चेहरा लाल, सिर गर्म, हाथ पांव ठन्ढा, सूखा आक्षेपयुक्त खांसी, विशेषतः रात में ऊंघाय आना, लेकिन नींद न होना।

ब्राइओनिया १२-३०—रोगी सर्वदा स्थिर और चूप से रहना चाहते हैं, कारण जरासा हिलने डोलने से ही रोग की वृद्धि होती है, बार २ खुष्क खाँसी या खाँसी के साथ ढेला २ बलगम निकलता है। स्वांस लेने में या खांसने के समय छाती में सूई भोकने की तरह दर्द, कब्ज, कठिन व सुखा मल।

चायना ३०-२००—हांफनी के समय रोगी को देखने से

मालुम होता हैं कि उसका मौत का देर न हैं। पानी पीने से और रात मे वृद्धि, एक दिन के बाद एक दिन रोग की वृद्धि।

इपिकाक ६-३०-२०० – आक्षेपयुक्त दम्मा, खासी और उस के साथ छाती और गले में प्रवल संकोचन वोध, छाती में दवाने की तरह मालूम होना, घड़घड़ाहट के साथ द्रुत श्वांस, सामान्य संचालन से वृद्धि, मतली व कै होना।

कुप्रम ६-३०—वायुप्रधान, आक्षेपिक दम्मा, अत्यन्त श्वांस-कष्ट, दम वन्द होने के डर, रात मे वृद्धि, अचानक दम्मा आरम्भ होता हैं, एक से तीन घण्टे तक "फोट" रह कर अचानक चला जाता हैं, सां २ घड़ २ इत्यादि नाना प्रकार के शब्द के साथ कष्टदायक श्वास प्रश्वांस। ऋतु के समय मे वृद्धि। शिशु और हिस्टिरिया के रोगी में और भय और सर्दी के वाद और ऋतु के पहले रोग होने से यह उपकारी हैं।

लोवेलिया ६-३०—दम्मा के आक्रमण के पहले सव शरीर ऐसा कि हाथ के अंगुली से पैर के अंगुली तक सुरसुर करना; श्वास प्रश्वांस-व्याकुलता जनक, दीर्घश्वास लेने की इच्छा, ठन्ढ लगने से और गर्म चीज भोजन करने से वृद्धि, दम्मा के आक्रमण के समय यह औषध पुन. २ सेवन करने से विशेष उपकार होता हैं।

नक्स-भोमिका ६-३०-२००—परिपाक-शक्ति की दुर्वलता, मेदा में पूर्णता वोध, ढेकार आने से आफियत, प्रातःकाल में और भोजन के वाद श्वांस कष्ट, दो पहर रात के

बाद दम फूलना, जल्दी २ स्वांस चलना और अति कष्ट से बलगम निकलना।

सल्फर ३०-२००—पुराना दम्मा रोग, निद्रित अवस्था में या सन्ध्याकाल मे दम्मा के आक्रमण उपस्थित होता है। छाती को चारो तरफमे कसकर बान्धनेको तरह मालूम होना। ऐसा मालूम होता है कि स्वांसनली में सर्दी भरा हुआ है, स्वरभंग के साथ खांसी, छाती मे दर्द और दबाव बोधके साथ खासी, शिर मे सबदा गर्मी मालुम होना।

एन्टिमटार्ट ६-३०—व्याकुलता के साथ स्वांसकष्ट के हेतु सीधा होकर बैठने की इच्छा, मालूम होता है कि छाती मे तरल श्लेष्मा भरा हुआ है किन्तु कुछ निकलता नहीं छाती मे घड़घड़ाहट।

ब्रोमिअम ६-३०—जहाज के खलासियों को जहाज से जमीन पर जाने ही से दम्मा के आक्रमण होता है।

कार्बो-भेज ३०-२००—निद्रित अवस्थामें रात दो प्रहर के समय पीड़ा उपस्थित होता है, सामने तकिया रख कर, बैठा रहना पड़ता है; पेट फुलता किन्तु ढेकार नहीं आता है वृद्ध व्यक्ति में दुर्वलता के साथ दम्मा।

ग्राफाइटिस ३०-२००—प्रति रात में पीड़ाके आक्रमण के हेतु रोगी जाग पड़ता है, विशेषत रात दो पहर के बाद थोड़ा सा कोई चीज खानेसे ही पीड़ाकी आकियत होती है।

लैकेसिस ३०-२००—गलनली और छाती मे अत्यन्त

संकोचन बोध, गला स्पर्श करने से ही दम्मा उपस्थित होता है। निद्रान्त में पीड़ा की वृद्धि।

पलसेटिला ६-३०-२००—सन्ध्याकाल में पीड़ा की वृद्धि, सर्वदा शीत बोध, वमन-इच्छा और वमन, खुली हवा में आफियत, ऋतु श्राव की गड़बड़ी, किसी प्रकार के चर्म रोग दब जाने से पीड़ा।

पलमो भलगेरिस ६x ट्रीटुरेशन—वृद्धों का ढीला खाँसी के साथ दम्मा रोग में विशेष उपकारी है।

ब्लैटा ओरिएन्टालिस—यह हमारे देश का सनकीरवा नाम के कीड़ा से बनता है। इस के Q या १म शक्ति प्रति तीन घन्टे अन्तर २ खाने से विशेप उपकार होता है। कीड़े को पानी में उबाल कर वह पानी गर्म २ दो तीन चमच पीड़ा के आक्रमण के समय खाने से दम्मा रुक जाता है। इस कीड़े को सूखा कर चूर्ण बना कर थोड़ा सा चूर्ण शहद के साथ प्रति दिन दो तीन बार खाने से भी उपकार होता है।

केलि-कार्ब वा बाइक्रम ६-३०—शेष रात ३॥ बजे दम्मे का आक्रमण, रोगी स्वाँस लेने के लिए उठ कर बैठता है, सिर को सामने के तर्फ झुका कर रखता है। पीलापन। हरा रङ्ग गाढ़ा व ज्यादा लस्सादार बलगम निकलना। आँख के पपुटा फूला।

नेट्रम-सल्फ ३०-२००—गीली हवा में पीड़ा की वृद्धि, छाती में ढीला बलगम की आवाज, सुबह को दस्त

होना, सुबह ४-५ बजे रोग की वृद्धि, ज्यादा सब्ज रंग के बलगम निकलना, छींक आना।

पोथस ६-३०—गर्दा वाली हवा के स्वांस लेने से दम्मा की वृद्धि होने से यह फायदेमन्द है।

फसफोरस ६-३०-२००—प्रबल हांफनी, जल्द व ऊंची आवाज के साथ स्वांस, छाती में आक्षेप, दबाव, गला बैठ जाना, तकलीफदार खांसा, कब्ज, पेट में कमजोरी मालूम होना, बलगम गोंद की तरह चटचटा।

स्पंजिया ६-३०-२००—स्वांसकष्ट, मालुम होता है कि गले में कोई कठिन चीज है, खूब जोर सां सां आवाज के साथ स्वास, रोगी भय पा कर जागता है स्वांसबन्द होने की करीना होती है। स्वर भंग।

सैम्बुकस ६-६०—रात में रोग के आक्रमण, रोगी घबराता है और छटपटाता है, स्वांसबन्द करने वाला खांसी करीब दोपहर रात में, बिछावन में लेटने से अथवा सिर नीचा करने से तकलीफ की ज्यादती।

लाइकोपो ३०-२००—पेट फूलना, पेट में हवा होने से इससे बेश उपकार मिलता है। स्वांस बन्द करने वाला खांसी, कब्ज, ढेकार वा हवा छुटने से आफियत।

एम्ब्रा-ग्रिसिया ६-३०—रतिक्रिया की चेष्टा करने से हांफनी होती है।

एपिस ३०-२००—हर बार स्वाँस के समय रोगी को मालुम होता है कि यही आखरी स्वाँस है।

आर्स-आयोड ३०-२००—यक्ष्मा रोगी व खाज खुजली के दोषयुक्त धातुवाले रोगी के हांफनी मे मुफीद है।

मेफाइटिस ६-३०—मतवाले व यक्ष्मारोग वाले लोगों के दम्मामे फायदे मन्द है। स्वाँस लेना कष्टदायक, स्वाँस फेंकना असम्भव, गन्धकका धुआँ की बू से हाफनी व खाँसी होता है।

प्लुरिसि वा प्लुराइटिस।

PLEURISY OR PLEURITIS.

रोग परिचय—फेफड़े की गिलाफ झिल्ली को प्लुरा (Pleura) कहते हैं। प्लुरा का प्रदाह को ही प्लुरिसी कहते हैं।

कारण—ज्यादेतर ठन्ढ लगकर ही यह रोग होता है, आघातादि लगकर पसली की हड्डी टुट जाने से भी यह रोग होता है। प्लुरा के लगात्र के यंत्रादि मे प्रदाह होकर वह प्रदाह प्लुरा मे फैल जा सकता है, जैसे—फेफड़े मे निउमोनिया, यक्ष्मारोग, पाईमिया जनित प्रदाह अथवा सीना, बगल, कन्धा, स्तन वगैरह के प्रदाह मे यह हो सक्ता है। फेफड़े में कैन्सर होने से उससे प्लुरिसी हो सक्ता है। अनेक समय कोढ़वा, चेचक, लाल ज्वर, टाइफाइड ज्वर इत्यादि से प्लुरिसी होता है। वातज्वर मे भी यह रोग होता है।

पैथोलजी वा पीड़ा जनित स्थानीय परि-वर्त्तन—इस पीड़ा की तीन हालतें हैं।

(१) प्रथम वा प्रदाहावस्था, प्लुरा सुष्क, लाल व गर्म होता है, उस के वाद प्लुरा की भिन्न २ जगह मे रक्तश्राव के चिन्ह, अथवा गाढ़ा लीम्फ का तह पर तह संचित होते देखा जाता है।

(२) द्वितीय वा एफ्युशन (Effusion) **हालत**—इस हालत में प्लुरा से फाइब्रिन (fibrin) मिला हुआ सिरम (Serum) नाम के जलीय पदार्थ निकल कर प्लुरा के खोल में जमा होता है, यह कम वा वेशी हो सक्ता है। सिरम वहुत परिमाण से जमा होने से निकट के यन्त्र जैसा दिल वगैरह को एक तर्फ ठेल देता है। सिरम के साथ खून भी मिला हुआ रह सक्ता है।

(३) शोषणावस्था—यह सिरम व फाइब्रिन सूख जाय तो रोगी सहज से आराम होता है। फाइब्रिन शोषित न होने से वह मॉस वन जाता है, इस से फेफड़े के साथ छाती के दिवार हमेशे के लिए संयुक्त हो जा सक्ता है। सिरम शोषित न हो कर पीव भी वन जा सक्ता है, और तव इस को एम्पाइमा (Empyema) कहते हैं। एम्पाइमा का पीव शोषित हो जा सक्ता है अथवा यह फेफड़े के दिवार को भेद कर भी निकल सक्ता है—ऐसा होने से खॉसी के साथ पीव निकलता है।

लक्षणादि—प्रथम अवस्था में, प्लुरिसि के शुरु में शीत व कंप के साथ बुखार व पसली में दर्द होता है, स्वाँसकष्ट भी होता है। दर्द कतरने की या सुई भोकने की तरह होता है, स्वाँस लेते वक्त, हंसते वक्त वा खाँसी के साथ दर्द ज्यादा होता है। रोगी प्राय चित हो कर वा स्वस्थ पार्श्व पर लेटे रहते हैं। ज्वर के परिमाण १०० से १०३ डि० तक हो सक्ता है, पीड़ित स्थान में ष्टेथोस्कोप से फ्रिक्शन शब्द (Friction Sound) सुना जाता है। छाती के दिवार व फेफड़े के साथ सूखा प्लुरा के घिसावट से यह शब्द होता है।

द्वितीयावस्था में प्लुरा के खोल में सिरम नाम के पानी की तरह चीज संचित होती है, इस लिए फ्रिक्शन शब्द सुना नहीं जाता है, दर्द कम हो जाता है, संचित सिरम की कमी वेशी के मोताविक लक्षणादि का विभिन्नता होती है। सिरम के परिमाण ज्यादा होने से स्वाँसकष्ट ज्यादा होता है। रोगी चित हो कर वा स्वस्थ पार्श्व पर लेटे रहते हैं। खांसी एकदम नहीं रहता है वा सामान्य रहता है, उस के साथ थोड़ा २ वलगम निकलता है। साधारणतः १०० से १०३ डि० ज्वर रहता है। इस संचित जल छाती के नीचले हिस्से में पड़ा रहता है, इस लिए वहीं पर "परकशन" करने से डल शब्द (Dull sound) और स्टेथोस्कोप से भेसिकुलर मर-मर (Vesicular murmur) और भोकल

रेजोनेन्स वा स्वर प्रतिध्वनि कम भाव से सुना जाता है अथवा कुछ भी नहीं सुना जाता है । पीड़ित पार्श्व दूसरा पार्श्व से कम संचालित होता है और ज्यादा फूला मालूम होता है । ज्यादा पानी होने से उस पार्श्व का पसली की हड्डियों के मध्यवर्त्ती स्थान समूह की गहराई मालूम नहीं पड़ती है । वायां तरफ में ज्यादा जल संचय होने से दिल को अपनी जगह से हटा कर दहिना ओर में ठेल कर रखता है। जलपुर्ण अंश से ऊपर के हिस्से में ष्टेथोस्कोप द्वारा टिउव्युलार ब्रीदिंग वा ब्रंकोफोनि सुना जाता है । यहां परकशन करने से क्राक्ट पट साउन्ड सुना जाता है ।

खूब ज्यादा जलसंचय होने से दो हांथ से रोगी को हिलाने से (सकशन से) पानी का खलखलाहट सुना जाता है।

तृतीयावस्था में प्लुरा के अन्दर के पानी क्रमशः शोषित (absorbed) हो कर छाती स्वभाविक अवस्था में परिणत होता जाता है। इस हालत में फिर से फ्रिक्शान शब्द व मोकल फ्रेमिट्स क्रमशः मिलता है । परकशन से डल शब्द के वदले मे क्रमशः रेजोनेन्स वा फेफड़े के स्वभाविक स्वर-ध्वनि सुना जाता है । स्वांसप्रस्वांस स्वभाविक होता है और स्थानच्यूत यंत्रादि अपनी जगह में आते हैं ।

रोग-निर्णय (Diagnosis) —इन्टार-कष्टैल निउ-रेलजिया, प्लुरोडाइनिया, न्युमोनिया व हाइड्रोथोरैक्स

रोग के साथ इस का भूल हो सक्ता है। इन्टारकष्टैल न्युरेलजिया व प्लुरोडाइनिया का दर्द बिजली चमकने की तरह होता है लेकिन प्लुरिसि का दर्द सुई भोकने की तरह होता है। न्युमोनिया में ज्वर प्लुरिसी से ज्यादा होता है। प्लुरिसि में फ्रिक्शन शब्द और न्युमोनिया मे क्रिपिटेशन मिलता है। हाइड्रोथोरेक्स में दोनों पार्श्व आक्रान्त होता है।

भाविफल—सामान्य प्लुरिसी मे और किसी प्रकार की शिकायत न रहे तो आराम हो जाता है लेकिन दूसरे २ शिकायत की ज्यादती होने से रोग सांघातिक हो सक्ता है।

आनुसंगिक उपाय—रोगी को ठंढ से बचाना चाहिए। लकड़ी के कोयला के आग से सूखा फ्लानेल वा नमक के पुटरी तप्त करके उस से सेक करने से आफियत होतो है। रोगी की छाती को रूइसे चारो तर्फ लपेट कर रखना भी अच्छा है। रोगी को हलका व पुष्टिकर पथ्य देना चाहिए, रोगी सबल रहे तो दूध न देना ही अच्छा है।

चिकित्सा :—

वेलाडोना ६-३०—तेज ज्वर, आंख व चेहरा लाल, विकार इत्यादि दिमागी लक्षण।

हिपरसल्फ ३०-२००—पीव होने वाला प्लुरिसि में, कण्ठमाला धातु व यक्ष्मागामी धातु के लोगों के प्लुरिसी में उपकारी है। चेहरा पीला तपेदिक।

रैनंकुलस ६-३०—छाती मे तेज सुई भोकने की तरह

दर्द, दहिना तरफ मे ज्यादा पीव हो तो इसको सूखाने के लिये यह दवा अच्छी है।

लरोसिरेसस ६-३०—मतवालों के रोग के शुरू मे लगातार दम बन्द करने वाला खाँसी। प्लुरा के किसी निदिष्ट स्थान में तेज दर्द।

सेनेगा ६-३०—प्रदाह के वाद जब ज्यादा बलगम कष्ट से निकलता है तब दिया जाता है। छाती मे चांप व ज्वाला मालूम होना।

सिल्ला वा स्कुइला ६-३०—बांयां पसली में सुई भोंकने की तरह दर्द, खांसी के घड़घड़ाहट से नींद नहीं आती है। बांये करवट लेट नहीं सकता है। गाल बहुत लाल, ललाट मे ज्यादा पसीना।

कैन्थारिस ३०-२००— ज्यादा सिरम का जमना, बार२ खांसी होना, दिलधड़कना ज्यादा पसीना होना, ज्यादा कमजोरी, मुच्छा होने के भाव।

एकोनाइट १x-३-६ -शीत होकर ज्वर, नाड़ी पूर्ण और द्रुत, गात्र खुश्क और गर्म, अस्थिरता, छटपटाना, अत्यन्त प्यास, चेहरा लाल, छाती में सूई भोकने की तरह दर्द, सूखी खांसी।

एपिस ६-३०-२००—प्राचीन प्लुरिसी, बहुत जल संचय हेतु स्वास कष्ट और मुर्छा के भाव।

आरसेनिक ३०-२००—जब प्लुरा में अधिक जल-

संचय होता है और उससे अत्यन्त श्वांस कष्ट, दर्द, अतिशय वलहीनता, शरीर शीतल इत्यादि लक्षण हो तब दिया जाता है।

ब्राइओनिया ६-३०-२००—छाती में सूई भोकने की तरह दर्द, श्वांस लेने में और सामान्य संचालन से वृद्धि, अत्यन्त प्यास, बहुत देर के बाद बहुत परिमाणसे पानी पीता है, मल कठिन व सूखा।

मार्कुरिअस ६-३०—छाती में दर्द और ज्वालो, छाती के दहिना तरफ में सूई भोंकने की तरह दर्द, खांसी; रात मे और बायां पार्श्व पर लेटने से वृद्धि, अत्यन्त पसीना होता है किन्तु उससे कुछ भी आराम नहीं मालुम होता है। रात में लक्षण की वृद्धि।

केलिकार्ब ३०-२००—ब्राइयोनिया के प्रयोग से भी सूई भोकने की तरह दर्द (विशेषत बायाँ पार्श्व में) और दिल धड़कना कम न हो तो इस औषध से उपकार मिलेगा। रात तीन बजे खासी की वृद्धि।

आइओडिअम ६-३०-२००—कण्ठमाला धातु के लोगों की प्राचीन पीड़ा, जब प्लुरा मे जल-संचय होता है उस समय मे कण्ठमाला धातु के व्यक्तियों के निमित्त आइयोडियम को एकोनाइट वा ब्राइओनिया के साथ पर्य्यायक्रम से व्यवहार किया जाता है।

फसफोरस ६-३०-२००—प्लुरिसि के साथ ब्रोंकाइटिस

अतिशय दुर्बलता, रक्तमिश्रित बलगम, छाती में दबाव बोध, सूई भोकने की तरह दर्द प्रायः बायां पार्श्व में होता है।

रस-टक्स ६-३०-२००—यदि बातरोग के हेतु अथवा पानी में भिगना वा जोर लगा कर कोई भारी वस्तु उठाने के कारण पीड़ा हो तो दिया जाता है। जीभ के अग्रभाग लाल, अत्यन्त कष्टदायक दर्द, किन्तु हिलने डोलने से आफियत, अस्थिरता।

एन्टिम-टार्ट ३-६-३०—खांसी के साथ गले में घड़घड़ाहट, किन्तु कुछ भी नहीं निकलता है, श्वास कष्ट, दम फुलना।

सलफर ३०-२००—जब इस रोग के साथ फेफड़े का प्रदाह रहे अथवा ठीक निर्वाचित औषध से कोई फायदा न हो तब सल्फर अति उपकारी है। रोग का पुराना होना, कुछ दर्द रहना, बदन मे बार २ दुर्बलकारी पसीना, अवसन्न-भाव, बदन मे गर्मी की धा, चांदी में गर्मी-बोध इत्यादि लक्षण रहने से सलफर देना चाहिये।

कैम्फर, कार्बो-भेज, फेरम, केलिहाइड्रो, लैकेसिस, साइलिसिया, प्रभृति औषधें भी उपकारी हैं।

हाइड्रोथोरैक्स (HYDROTHORAX.)

रोग परिचय—प्लूरा का खोल मे शोथजनित जलसंचय होने से हाइड्रोथोरैक्स कहते हैं। यह ठीक जलोदरी

की तरह रोग है। यह सर्व्वांगिक शोथ के साथ हो सकता है। दिल का रोग व गुर्दों के प्रदाह के साथ यह रोग प्राय होता है। यह रोग प्राय छाती के दोनो पार्श्व में होता है। श्वांस-कष्ट ही इस का प्रधान लक्षण है। चेहरा नीला होता है। ज्यादा जलसंचय होने से छाती फुला हुआ मालुम होता है। अन्यान्य लक्षण प्लुरिसी की तरह, लेकिन इसमें वैसा दर्द नहीं होता है।

चिकित्सा —

एपिस ६-३०—ज्यादा श्वांसकष्ट, लेट नहीं सकता है, प्यास न होना, पेशाव कौफी की तरह गाढ़ा रंग लाल, ज्वर के बाद रोग।

एपोसाइनम ५-३०—रोगी बात नहीं कर सकता है, बीच २ में श्वांस का रुक जाना, मेदा इतना उत्तेजित होता है कि जरा सा ठन्डा पानी पीने से भी निकल जाता है। पेशाव पैदा ही न होना।

आर्सेनिक ३०-२००—निहायत कष्टदायक श्वांस, कमजोरी, ज्यादा प्यास लेकिन थोड़ा २ पानी पीना।

ब्राइओनिया ६-३०-२००—पसली में दर्द, मतली के साथ सिर फट जाने की तरह दर्द, हरकत से दर्द की ज्यादती पेशाव कम होना, ज्यादा प्यास, मल कठिन व सूखा।

कलचिकम ६-३०—हाथ पांव फूला, पेशाव का वेग होता है लेकिन पेशाव बहुत कम होता है। नया बात के कारण रोग।

डिजिटेलिस ६-३०-२००—नाड़ी रुक २ कर चलती है, नाड़ी निहायत सुस्त, शोथ, दिल का रोग, मूत्रकष्ट।

लैकेसिस ३०-२००—नींद के बाद रोग का बढ़ना, बदबुदार मल, पेशाव काला रङ्ग।

लाइकोपोडियम ३०-२००—चित हो कर लेटने से स्वांसकष्ट, पेडु के बायां हिस्से में गलगल आवाज।

माकुरिअस ३०-२००—जननेन्द्री का प्रदाह, तमाम बदन शोथयुक्त, पसीना होने पर भी आफियत नहीं होती है। सूखो कष्टदायक खांसी।

सिल्ला ६-३०—*लगातार खांसी, उस के साथ बलगम निकलता है*। पेशाव के वेग होना लेकिन कम पेशाव होना।

स्पाइजिलिया ६-३०—दिल धड़कना, स्वांसकष्ट, सिर्फ दहिना कर में लेट सकता है, उस पर भी शरीर को ऊंचा कर के रखने पड़ता है, हरकत से दम बन्द होने के भाव।

स्वांसनली वा वायुनली का प्रदाह वा ब्रोंकाइटिस। (BRONCHITIS.)

रोग परिचय—स्वांसनली वा वायुनली की बलगमी

(mucous) अस्तर झिल्ली का प्रदाह को ब्रोंकाइटिस कहते हैं। यह रोग नया और पुराना दो प्रकार का होता है।

नया स्वांसनली-प्रदाह

(ACUTE BRONCHITIS)

कारण—यह रोग हर उम्र में बहुत प्रकार कारण से हो सकता है—लेकिन ठंढ लगना, पानी में भीगना, अचानक ऋतु बदलना इत्यादि से यह रोग ज्यादातर होता है। गर्दा, धुआं, चुणा वगैरह का स्वांस नली में जाना वा और किसी प्रकार का उत्तेजक वाष्प का स्वांसनली में जाना इत्यादि से भी यह रोग होता है। फ़ोदना, चेचक, लाल ज्वर, इन्फ्लुयेंजा, टाइफाइड ज्वर, वगैरह के साथ अक्सर ब्रांकाइटिस होता है। शिशु और वृद्धों को यह रोग ज्यादा होता है।

लक्षण—साधारणतः सिने में भार वोध व सामान्य सर्दी के लक्षण प्रकाश पाकर रोग आरम्भ होता है। शीत वोध, सामान्य ज्वर, देह भहराना, कब्ज, भूख की कमी, इत्यादि वर्तमान रहता है। क्रमशः गला बैठ जाना, छाती के मध्यभाग मे दर्द व खांसी उपस्थित होता है। पहले खांसी शुष्क, पीछे तरल होता है और आसानी से बहुत परिमाण से बलगम निकलता रहता है। बलगम के साथ रक्त का छिटा कभी २ देखा जाता है। रोग कठिन होने से स्वांस में कष्ट होता है, छाती सांसां, घड़२ शब्द होता है।

निदान वा प्रैथोलोजी—यह रोग होने से पहले

स्वांसनली की बलगमी झिल्ली में रक्ताधिक्य हो कर लाल होता है और फूल जाता है। उस के बाद उस से पतला बलगम निकलता रहता है पीछे यह बलगम सफेद व पीला व गाढ़ा हो जाता है और क्रमशः उस में पीव देखा जाता है। कभी २ वायुनली के अन्तर्गत खून की नली फट जाने से बलगम के साथ खून निकलता है।

छाती-परीक्षा —"पारकशन" से प्रायः फेफड़े के स्वभाविक रेजोनेन्स शब्द सुना जाता है लेकिन कभी २ इसकी ज्यादती भी होती है। "अस्कल्टेशन" से पहली हालत में अर्थात् बलगम तरल होने के कवल सोनोरस रंकस (सांसां शब्द) वा सिबिलेन्ट रंकस (सिटी देने की तरह आवाज) सुना जाता है। बलगम तरल होने से "रांलस" वा तरल बलगम के शब्द (घरघराहट) सुना जाता है। सामान्य रोग में कोई शब्द नहीं सुना जाता है।

भाविफल, भोगकाल व उपसर्ग —साधारणतः यह रोग १/२ हफ्ते में आराम हो जाता है। इस के साथ और कोई खराबी न हो तो रोग सांघातिक नहीं होता है। ज्यादा कमजोरी होने से, दिल की बिमारी रहने से भाविफल अशुभ हो सक्ता है। रोग कुचिकित्सित होने से यह पुराना हो जाता है, आखिर में यक्ष्मारोग एमफाइसेमा (ब्रंकिअल टिउब का फैल जाना) हो सक्ता है। यह रोग बढ़ कर न्युमोनिया अथवा कैपिलारी ब्रंकाइटिस हो सकता है।

कैपिलारी ब्रंकाइटिस।

(CAPILLARY BRONCHITIS)

स्वांसनली वा ब्रंकिएल टिउब की कैशिक शाखायों याने केश की तरह पतली शाखायों की म्युकस झिल्ली से प्रदाह होने से उसको कैपिलारी ब्रंकाइटिस कहते हैं। आजकल इसी को ब्रंको-न्युमोनिया कहते हैं। यह रोग शिशुयों को ही ज्यादा होता है।

कारण—ठन्ढ लगना, अचानक ऋतु—बदलना, इत्यादि कारण से यह रोग होता है।

लक्षण—स्वासनली का प्रदाह की तरह शीत हो कर ज्वर होता है, छाती में दर्द होना है स्वांसकष्ट उपस्थित होता है, नाड़ी तेज हो जाती है, ज्वर ज्यादा होता है। खांसी पहले खुष्क रहता है, पीछे गोंद की तरह चटचटा बलगम निकलता है। चेहरा नीला होता है, पीड़ा कठिन होने से स्वांस में बहुत तकलीफ होती है, नाड़ी निहायत सुस्त हो जाती है, ऊंघाय, बेहोशी, प्रलाप वगैरह उपस्थित होता है, "पारकशन" करने से पाड़ित स्थान में अस्वभाविक शब्द सुना जाता है। बलगम तरल होने से, रालस शब्द सुना जाता है। यह रोग प्रायः न्युमोनिया के लक्षण के और उसी की तरह कठिन होता है।

नया व कैपिलारी ब्रंकाइटिस की चिकित्सा।

फेरम-फस दश-१२x-३० —शिशुयों के, रोग में यह

उपकारी है, छाती मे टाटाना, गर्मी मालुम होना, नया रोग, आक्षेपिक खांसी, खांसी के साथ छाती में दर्द, खांसते २ पेशाव कर डालना, नाड़ी पूर्ण व तेज। यह एकोनाइट की तरह हालत में उपकारी है।

जेलसिमिअम ६-१२—ज्यादा ऊंघाय, नाड़ो कोमल, बसन्त काल का रोग, इनफ्लुयेंजा के साथ रोग।

एकोनाइट ३-६—रोग की प्रथमावस्था मे यह औषध व्यवहार होता है, शीत ज्वर, बदन सूखा व गर्म, अतिशय अस्थिरता, अत्यन्त प्यास, वार २ सूखा खांसी और वायु-नली मे सुरसुराहट। सूखी ठण्डी हवा लग कर पीड़ा होने से यह अति उत्तम है।

एन्टिम-टार्ट ६-३०-२००—छाती में तर वलगम के घड़घड़ाहट, श्वांस प्रश्वांस कष्टदायक, जब रोगी खांसता है मालूम होता है कितना श्लेष्मा निकलेगा, किन्तु कुछ भी नहीं निकलता है। मतली व वलगम का कै होना।

आरसेनिक ३०-२००—भयानक सूखी खांसी के साथ छाती में ज्वाला, रात में खांसी की वृद्धि, दम बन्द होने के डर से लेटने में डरता है। अत्यन्त दुर्बलता, अस्थिरता और घवराहट। वार २ थोड़ा २ पानी पीता है।

आर्स-आइओड ३०-२००—श्वांस यन्त्रों के सरदी, पतला वा फांसीली वलगम, शिर दर्द, गले से रक्त-मिश्रित गाढ़ा श्लेष्मा निकलता है।

बेलाडोना ६-३०—सूखा घन २ शब्द वाले आक्षेपयुक्त खांसी, चेहरा और आंख बहुत लाल, शिर गर्म शिर में इतना बोझ और दर्द होता है कि मालूम होता है शिर फट जायगा। शरीर गर्म किन्तु थोड़ा २ पसीना होता है। ऊंघाय किन्तु सो नहीं सकता है. खांसी के समय बाया पंजरे के नीचे दर्द।

ब्राइओनिया ६-३०-२०—सूखा खांसी से छाती में इतना लगता है कि मालुम होता है छाती फट जायगा। श्वासकष्ट, शिरमें अत्यन्त दर्द, रोगी सम्पूर्ण स्थिर भाव से रहना चाहता है, हिलने डोलने में वृद्धि, देर २ के बाद ज्यादा पानी पीता है।

कैलकेरिया-कार्व ६-३०-२०१—तरल खांसी और गले में घड़ २ शब्द रात मे सूखा खांसी और दिन मे तरल खांसी स्वास लेने में व भोजन के बाद खांसी की वृद्धि. सिर में बहुत पसीना, खास कर नींद के समय।

कार्बो-भेज ३०-२००—स्वरभंग विशेषत, सन्ध्याकाल में, छाती मे आग की तरह ज्वाला अत्यन्त प्रबल खांसी, पीला या पीलापन पीब की तरह श्लेष्मा निकलता है। ठंढी हवा में जाने से खांसी की वृद्धि, गर्म विछावन में भी दोनो ठेहुना ठन्ढ रहता है।

कष्टिकम ३०-२०१—प्रातःकाल में स्वर भंग, खोखला शब्दयुक्त खांसी, गले में सुरसुराहट और जखम की तरह दर्द, होता है।

कैमोमिला सूखी खांसी, रात में, क्रोध के बाद और ठन्ढी हवा मे खांसी की वृद्धि, गर्म में और गर्म

चीज पीने से खांसी की आफियत, निद्रितावस्था में भी खांसी होता है। रोगी अत्यन्त चिरचिराहा। अत्यन्त प्रबल खांसी के साथ बेखबरी से पेशाब निकलना, बलगम निकाल नहीं सकता है, निगल लेता है ठण्ढा पानी पीने से खांसी की कमी। छाती में जखम की तरह दर्द।

चेलिडोनिअम ६-३०-२०० — यह कैपिलारी ब्रोंकाइटिस के अति उत्कृष्ट औषध है। प्रबल ज्वर, शिशु के तमाम छाती में घड़ २ शब्द, श्वांसप्रश्वांस के साथ नाक के पुट का फड़कना।

ड्रोसेरा ६-३० — अत्यन्त आक्षेपयुक्त खांसी, खांसने के समय हाथ से छाती दबा कर रखता है।

हिपर-सल्फ ६-३० — स्वरभंग के साथ खांसी खांसी सूखा या ढीला। शरीर के कोई अङ्ग को ठण्ढा करने से ही खांसी का आक्रमण होता है, गर्म घर में रहने से खांसी की आफियत, गले में घड़ २ करके श्वांस रोकने वाली खांसी, दो पहर रात के बाद वृद्धि, कष्टदायक श्वांसप्रश्वांस के साथ घड़घड़ शब्द, लेटने से दम बन्द होने की तरह मालुम होना।

हाइओसायमस ६-३०-२०० — रात में सूखा आक्षेप जनक खांसी। लेटने से ही खांसी के आक्रमण होता है, इस कारण बैठा रहना पड़ता है।

इपिकाक ६-३० — ढीला खांसी, खांसी के समय चेहरा नीला हो जाता है, खांसी के बाद ललाट में पसीना और श्वांसप्रश्वांस क्षुद्र। खांसने के समय मालूम होता है

कितना ही वलगम निकलेगा किन्तु कुछ भी नहीं निकलता है। लगातार मतली, वलगमी कै होना।

केलि-वाइक्रम ३०-२००—श्लेष्मा गोंद की तरह चटचटा निलापन, ढेले की तरह। श्वाँसकष्ट, प्रातःकाल में निद्रान्त में भोजन के वाद व पाने के वाद वृद्धि, पेट मे दर्द, पेट फूला।

केलि-कार्ब ३०-२००—शिशुओं का कैपिलारी ब्रोंकाइटिस, खांसने के समय कष्ट से श्लेष्मा निकलता है। खांसते २ खट्टा कै होता है, फीका चेहरा खांसने के समय लाल हो जाता है। पीठ मे दर्द, आंख के पपुटे फुला, रात ३—४ वजे से खांसी की वृद्धि, भोजन के वाद आफियत।

लैकेसिस ३०-२००—खांसते २ दम वन्द होना, ष्टारनम के नीचे अथवा सदा मे सुरसुराहट के साथ लगातार खांसी आंख से पानी जाता है, मुंह मे पानी आता है, पेट मे दर्द होता है, छाती मे श्लेष्मा भरा हुआ रहता है, किन्तु अत्यन्त खासने से थोड़ा सा निकलता है, श्लेष्मा अल्प, पानी की तरह नमकीन। निन्द्रान्त में खांसी की वृद्धि, गला के ऊपर दवाने से दर्द होता है।

मार्क-सल ६-३०-२००—स्वरभंग और गले मे दर्द, गले मे सुरसुराहट हो कर प्रवल खांसी होता है, मालुम होता है कि छाती फट जायगी। दहिना कर लेटने से खांसी की वृद्धि। पसीना वहुत होता है किन्तु उससे कुछ भी आराम नहीं मालुम होता है।

नक्स-भोमिका ६-३०-२००—दो पहर रात से भोर तक सुखी खाँसी, सिर दर्द। नाक वन्द, हिलने डोलने से ही शीत बोध होता है। रात ४ वजे के वाद वृद्धि, कब्ज।

फासफोरस ६-१२-३०-२००—आवाज बैठ जाना, गले में दर्द, उससे बोला नहीं जाता है। छाती में दबाव बोध, खांसते २ दम फूल जाता है। सन्ध्याकाल से रात दोपहर तक चटचटो और नमकीन श्लेष्मा निकलता है और हंसते, बात करते, भोजन में और शीतल हवा मे खांसी की वृद्धि। वायें पार्श्व पर लेट नही सकता है।

पलसेटिला ६-३०-२००—रात में सूखा खांसी, उठकर बैठने से आराम बोध होता है, पीला या हरारंग का ढीला बलगम बहुत परिमाण से निकलता है। गर्म गृह मे भी शीत बोध, जीभ सूखा किन्तु प्यास बिलकुल नहीं होता है। शीतल हवे में आफियत।

रस-टक्स ६-३०-२००—शरीर मे बात के सदृश दर्द के साथ खांसी, विश्रामकाल में वृद्धि, संचालन से आफियत, रात में विशेषत दोपहर रात मे वृद्धि, श्लेष्मा में रक्त के स्वाद, किन्तु रक्त देखा नहीं जाता है।

सलफर ३०-२००—स्वरभंग, स्वरबन्द, श्वांसनली के भीतर कीड़ा चलने की तरह सुरसुर करके श्लेष्मा निकलता है और छाती मे दर्द होता है, छाती मे सूई भोंकने की तरह दर्द, छाती में घड़घड़ शब्द, सन्ध्या के समय लेटने से वृद्धि, मीठा या नीमकीन श्लेष्मा, चांदी में गर्मी मालूम होना, हाथ पैर में ज्वाला।

नेट्रम-सल्फ ३०-२००—रात में खांसी के आक्रमण होने से उठकर बैठता है और दो हाथ से छाती को दबा कर रखता है। प्रात:काल में दम चढ़ जाना, ठंढी गीली हवा में वृद्धि।

सहकारी उपाय—छाती में सरसों के तेल मालीश,

तीसी का पुलटीस या फ्लानेल का सेक देने से खांसी सरल होता है और दर्द भी कम हो जाता है।

पथ्य—तरुण रोग में साबु, बारली, सिघाग के सेदा का मन्ड उत्तम पथ्य है। ज्वर अधिक रहने से दुध नहीं देना चाहिये, ज्वर कम होने से दूध दिया जा सकता है।

पुराना ब्रोंकाइटिस।

(CHRONIC BRONCHITIS.)

यह नया ब्रोंकाइटिस ही की पुरानी हालत है। इस लिए नया ब्रोंकाइटिस के लक्षणों के साथ इसके लक्षणों के बहुत सादृश्य है। बसन्त व शीत काल में इस रोग की वृद्धि होती है। गरमी के दिनों में रोगी कुछ चंगा रहता है। वृद्ध वयस में इस रोग की अधिकता देखी जाती है। इस रोग में खांसी के साथ ज्यादा बलगम निकलता है। श्लेष्मा पतला वा गाढ़ा हो सक्ता है। इस रोग से ब्रोंकिअल टिउब्स संकुचित होने से अथवा भिन्न २ जगहों में प्रसारित होने से श्वांसकष्ट उपस्थित होता है। किसी २ रोगी का बलगम सड़ा व बदबुदार होता है इस रोग से अकसर एम्फाइसेमा (Empy-sema) वा फेफड़े की एअर सेलस की प्रसारित अवस्था होती है। एम्फाइसेमा, शोथ, यकृत-रोग इत्यादि शिकायत इस बिमारी के साथ होने से यह रोग खतरनाक हो सक्ता है, नही तो सांघातिक नहीं होता है।

चिकित्सा—नया ब्रोंकाइटिस की चिकित्सा से भी इस में फायदा मिलेगा।

एलुमिना ३०-२००—सुबह ६ बजे नींद से उठने के

समय वा उस के बाद ज्यादा खांसी, बलगम कम निकलता है, रात मे खांसी कम होता है। शीतकाल मे खांसी शुरू हो कर गरमी का शुरू तक रहता है।

ऐमन-कार्व ३०-२००—गले मे सुरसुराहट के साथ खुश्क खांसी, शराब पीने की तरह गले मे ज्वाला, आवाज कड़ा होना, सूखा भड़तुफान के ठंढ लगना, वृद्ध वयस का रोग।

ऐमन-म्युर ३०-२००—खांसी के साथ ज्यादा गाढ़ा व सफेद व कभी २ थक्का २ बलगम निकलता है। छाती में घड़घड़ाहट लेटने से बढ़ना, गले में जख्म की तरह मालूम होना, वृद्ध वयस का रोग।

आर्सेनिक ३०-२००—आक्षेप के साथ खुश्क खांसी, हांफनी, कमजोरी, शोथ-भाव, रात में और शयनावस्था मे खांसी की वृद्धि।

कैलकेरिया-कार्ब ३०-२००—कण्ठमाला धातु के लोगों के लिए यह उत्तम दवा है। चेहरा ज़र्द, बलगम बदबूदार, गाढ़ा व पीला रङ्ग का और मिठा स्वाद का।

क्रिओजोट ३०-२००—दांत खिया जाने वाला लोग को आक्षेपिक खांसी सिर बड़ा, गला पतला।

हिपर-सल्फ ३०-२००—बदबूदार पीला बलगम का ज्यादा निकलना, शरीर के किसी हिस्सा नङ्गा रहने ही से खांसी होता है। ठंढ बर्दास्त न होना।

केलि-बाइ ३०-२००—रस्सी के शक्ल के सदृश बलगम अथवा खांसी के समय गोंद की तरह बलगम निकलना। पान वा आहार के बाद वृद्धि।

लाइकोपोडिअम ३०-२००—कोदवा व हुपींग कफ के बाद के रोग, शरीर दुबला पतला, अजीर्णता, पेट फूलना, पीला व पतला बलगम निकलना, वह खट्टा व बदबूदार। पेशाब में लाल रङ्ग का रेत।

नेट्रम-सल्फ ३०-२००—ठंढी गीली हवा से रोग की वृद्धि, सुबह के कवल हांफनी का बढ़ना, खांसी का आक्रमण होने से रोगी को उठ कर बैठना पड़ता है।

फसफोरस ३०-२००—खुश्क खांसी, प्रातःकाल में ढेला २ बलगम निकलना, कभी २ बलगम ठंढा मालूम होता है। खांसी के समय कंपन।

स्टैनम ३०-२००—पुरानो ब्रोंकाइटिस से दम्मा, छाती मे सां सां आवाज होना, स्वांसकष्ट, बलगम कष्ट से निकलता है, बलगम मीठा। छाती में कमजोरी।

साइलिशिया ३०-२००—हड्डी की खराबी, सिर बढ़ा, पीब की तरह बलगम पानी मे डुब जाता है, ठंढ से रोग का बढ़ना, गरम पानीय से आफियत।

सोरिनम ३०-२००—सड़ने वाला स्वभाव के रोग, बलगम मे बदबू, चर्मरोग।

सल्फर ३०-२००—वात, कण्ठमाला व चर्म्मरोग वाला धातु के लोग के लिए उपकारी है। उत्तम निर्वाचित औषध से फायदा न हो तो सल्फर देना चाहिए।

—:○:○:○:—

न्युमोनिया वा फेफड़े का प्रदाह ।

(PNEUMONIA.)

रोग परिचय—फेफड़े का प्रदाह का अङ्गरेजी नाम न्युमोनिया है । आक्रान्त स्थान के भेद के अनुसार इस रोग को दो भाग किया जाता है ।

(१) लोबार न्युमोनिया (LOBAR PNEUMONIA)—इस को क्रुपस (crupous) न्युमोनिया वा न्युमोनाइटिज (Pneumonitis) भी कहते हैं । तमाम फेफड़े वा उस का किसी अंश का प्रदाह से ऐसा न्युमोनिया होता है । यह प्रदाह फेफड़ा का वायु-कोषों से शुरु होता है ।

(२) लोव्युलार न्युमोनिया (Lobular Pneumonia) or ब्रंको न्युमोनियो (Broncho Pneumonia)—इस को सर्दी जनित (catarrhal) Pneumonia भी कहते हैं । लोवार न्युमोनिया की तरह इसका प्रदाह वायुकोष से शुरु नहीं होता है । पहले ब्रोंकाइटिस हो कर वही प्रदाह फेफड़े के भिन्न २ अंश के वायुकोषों में प्रवेश करता है । इस किस्म का न्युमोनिया फेफड़े के एक, दो वा वहुत अंश मे अलग २ होता है, इसलिये इसको विच्छिन्न (Diseminated) न्युमोनिया भी कहते हैं । मूल वात यह है कि ब्रोंकाइटिस से जो न्युमोनिया होता है उसी को ब्रोंको—न्युमोनिया वा लोव्युलार न्युमोनिया कहते हैं । ब्रोंकाइटिस हो कर ज्यादा दिन तक ज्वर रहने ही से ब्रंकोन्युमोनिया हुआ है ऐसा सन्देह करना चाहिए और छाती परीक्षा करके देखना चाहिए । कोढ़ना, चेचक, इन्फुलुएन्जा, रेमिटेन्ट ज्वर, टाइफाएड ज्वर

इत्यादि के साथ प्रायः इसी किस्म का न्युमोनिया होता है। बाहर से किसी किस्म का दूषित वाष्प इत्यादि प्रवेश करने से भी यह रोग हो सकता है।

इस किस्म का न्युमोनिया को पहचानना बड़ा कठिन है थोड़ी सी जगह में होने से प्रायः पता नहीं लगता है, ज्यादा जगह में होने से "क्रिपिटेशन" व "डल" शब्द मालुम पड़ता है। बुखार एकाएक हठात् बढ़ जाने ही से लोब्युलार न्युमोनिया हुआ है ऐसा अनुमान करना चाहिये।

लोबार न्युमोनिया

पूर्ववर्ती कारण—यह रोग स्त्री पुरुष, बालक, युवा, वृद्ध सब ही को हो सकता है। लोबार न्युमोनिया युवको और लोब्युलार न्युमोनिया शिशु व वृद्धो को ज्यादा होते देखा जाता है। शीत और हेमन्त काल में इस रोग का ज्यादा प्रादुर्भाव होते देखा जाता है। ऋतु-परिवर्तन, अचानक ताप का परिवर्तन, गीलो व ठंडी हवा लगना वगैरह को इसका आंशिक कारण कहा जा सकता है दुर्बलता व ज्यादा सुरापान भी इसका पूर्ववर्त्ती कारण है। यह रोग जिसको एक बार होता उसको बारंर होने का डर रहता है।

उद्दीपक कारण—लोग कहते हैं कि ठंढ लगकर ही न्युमोनिया होता है लेकिन अकसर न्युमोनिया रोगी में ठंढ का इतिहास नहीं मिलता है। अतएव ठंढ लगने के सिवाय अन्य कारण से भी न्युमोनिया होता है यह मान लेना चाहिये।

आज कल पण्डित लोग स्थिर किये हैं कि न्युमो ककाई (Pneumo cocci) वा डिप्लो ककाई (Diplo cocci) नाम के बीजाणु (Germ or Bacillus) ही इस रोग का

कारण है। यह बीजाणु फेफड़े मे प्रवेश करने ही मे न्युमोनिक फिवर होता है। ठंड लगना, क्लान्ति भय, दुर्बलता प्रभृति उस का आक्रमण को सहायता करता है।

लक्षण—कम्प के साथ ज्वर होता है, ज्वर प्राय १०३ से १०५ डि० या और ज्यादा होता है। छाती मे दर्द होती है, खांसने से स्वांस लेने से वा दबाने से दर्द ज्यादा होती है।

स्वासकष्ट—स्वासकष्ट इस रोग का एक प्रधान लक्षण है, यह रोग का शुरु से ही मालूम पडता है, स्वांस जल्दी २ व ऊपर २ चलता है, बाज वक्त स्वांस के साथ नाक के पूरे पखा की तरह चलता है। नाड़ी के साथ स्वास की समता नहीं रहती है। स्वांस प्रतिमिनिट ३० से ८० वार तक हो सक्ता है। स्वांस व नाड़ी का स्वभाविक अनुपात १: :३ वा १: :४ होता है लेकिन इस रोग मे १½ :२ वा १: :२ हो जाता है।

नाड़ी जल्द होती है। नाड़ी की चाल प्रति मिन्ट में ९० से १२० वार तक होता है। नाड़ी क्रमश. दुर्बल होती जाती है, कभी कभी रूक २ कर चलती है।

खांसी इस रोग के साथ २ ही अवश्य होता है। खांसी पहले सूखा रहता है अथवा फेन के साथ पहला बलगम निकलता है, पीछे खासी ढीला होता है, उस समय मे गाढ़ा चटचटा बलगम निकलता है। अकसर बलगम का रङ्ग ईट के चूर्ण की तरह होता है अन्य रङ्ग का भी हो सक्ता है।

जीभ प्रथमत: गीला व कोमल रहता है, पीछे खुश्क व फटा २ होता है। किसी २ रोगी में वमन, उदरामय, यकृत का बढ़ना व पान्डु रोग देखा जाता है।

सिरदर्द, बेचैनी, अनिद्रा प्रभृति अकसर रोगी में पाया जाता है विकार भी हो सक्ता है।

पेशाव थोड़ा २ व गाढ़ा रङ्ग का होता है किसी २ रोगी में जीवनिशक्ति की निहायत कमी होती है, इस हालत मे बेहोशी, विकार, तन्द्रा, आक्षेप. प्रभृति दुर्लक्षण देखा जाता है।

रोग की परिणति—रोग की वर्द्धितावस्था में अचानक रोगी की हालत अच्छी मालूम पड़ती है। प्राय सप्तम. अष्टम. दशम या एकादश दिवस में ज्वर कम होना शुरू होता है. और १२ से १८ घंटे के अन्दर शरीर की गर्मी स्वभाविक गर्मी से नीचे उतर जाती है, ज्वर के साथ नाड़ी की गति व स्वास की संख्या कम होती है जीभ स:स होता है रोगी हर हालत में आराम बोध करता है। इस तरीके से जल्दी २ ज्वर उतर जाने को "क्राइसिस" कहते हैं। किसी २ रोग मे इस तरीके से ज्वर उतरने के समय ज्यादा पसीना व दस्त होता है। किसी २ रोगी मे ज्वर क्रमश धीरे २ कम होते २ उतर जाता है, इस तरीके पर ज्वर उतरने को "लाइसिस कहते हैं।

साधातिक प्रकार की पीड़ा होने से दिल की क्रिया बन्द हो कर और फेफड़े के पक्षाघात हो कर रोगी की मृत्यु होती है। ऐसी हालत में न्युमोनिया की हरेक हालत दिनपर दिन बढ़ती जाती है। स्वांस बहुत जल्द व तेज, नाड़ी जल्द क्षुद्र व दुवली, होती है। चेहरा नीला, जीभ सूखा, काला व फटा फटा होता है। दिन रात प्रलाप रहता है।

रोगी जल्दी २ निढाल होता है। इस अवस्था मे फेफड़े में पीव पैदा होता है।

पैथोलजी वा स्थानीय परिवर्त्तन—इस रोग की तीन अवस्था में तीन प्रकार परिवर्त्तन देखा जाता है।

प्रथम अवस्था वा एनगर्जमेंट ष्टेज (Engorgement Stage)—इस से फेफड़े के पीड़ित स्थान के वायु कोषों के दिवारों में प्रदाहजनित खून की ज्यादती होती है वा दिवारें फूल जाती है, फेफड़ा भारी, कठिन, अस्थिति स्थापक व लाल होता है। इस हालत में स्वांस जल्द चलता है, छाती का संचालन कम होता है, भोकल फ्रेमिटस वा वाक्जनित अनुकम्पन ज्यादा होता है; पारकशन से "डल" शब्द सुना जाता है, अस्कल्टेशन से क्रिपिटेशन शब्द सुना जाता है। यही इस अवस्था के सर्वप्रधान लक्षण है।

द्वितीयावस्था वा हिपाटिजेशन ष्टेज (Hepatization Stage) वा यकृतीभूत अवस्था—इस हालत को एक्जुडेशन ष्टेज वा स्रावणावस्था भी कहते हैं। इस अवस्था मे रोगाक्रान्त फेफड़े के वायुकोषों मे एक्जुडेशन (Exudation) वा अपश्राव हो कर फेफड़ा यकृत की तरह ठोस व कठिन हो जाता है, पहली की तरह स्थितिस्थापक नहीं रहता है; आकार मे भी बढ़ जाता है। इस अवस्था के शुरु में फेफड़े लाल रङ्ग होता है (इसी को रेड हिपाटिजेशन Red Hepatization कहते हैं)। लेकिन पीछे इस के रङ्ग ग्रे (Grey) वा धूसर हो जाता है (इसी को ग्रे हिपाटिजेशन Grey Hepatization कहते हैं)। इस अवस्था में पीड़ित पार्श्व

कुछ कुला मालूम हो सक्ता है। छाती का संचालन अच्छी तरह से नहीं होता है मोकल क्रमिटस और ज्यादा होता है। परकशन के शब्द और ज्यादा डल होता है। अस्कल्टेशन से ब्रांकिअल ब्रीदिंग व ब्रंकोफोनि (भोकल रेजोनेन्स की ज्यादती) सुना जाता है।

तृतीयावस्था वा रिजल्युशन ष्टेज Resolution Stage) यह रोग का आरोग्य मुख अवस्था है, इस हालत में फेफड़े के अन्दर के जमा हुआ बलगम पिघल कर खांसी के साथ निकलना शुरू होता है, इस में रिडक्स क्रिपिटेशन व रालस सुना जाता है, श्वांस प्रश्वास की गति धीरे २ अच्छी होती जाती है।

भाविफल व भोगकाल—यह अति कठिन रोग है। रोगी सबल रहने से प्राय तीन हफ्ते मे आराम होता है; फेफड़े से पीव होने मे कुछ ज्यादा दिन लगता है। ऐसी हालत में अक्सर उबलना बढ़ते २ रोगी मर भी जा सक्ता है अथवा रोग थाइसिस बन जा सक्ता है।

आनुसंगिक उपाय—रोगी को न ज्यादा गर्म, नही ठंढा, ऐसा कमरे मे रखना चाहिए। कमरे मे साफ, खुली हवा के चलाचल बन्द न करना चाहिए, साथ ही ख्याल रखना चाहिए कि रोगी को ठंढ न लगे। रोगी के कमरे में केरासीन की बत्ती वा धूआ होने वाली आग न रखना चाहिए।

रोगी के छाती पर पुराना घी मालीश करके सेंक कर छाती को रूई से बांध देना उपकारी है। जरूरत हो तो, तिसी का पुलटीस भी दिया जा सक्ता है। पुलटीस ठंढा होते ही मे बदल देना चाहिए और ख्याल रखना चाहिए कि

मालिश करते वक्त वा पुलटिस वदलने के वक्त रोगी को ठंढ न लगे। रोगी को पुष्टिकर व हल्का पथ देना चाहिये। अवस्थानुसार साबू, बार्ली, दूध, मांस का शुरवा, मसुर वा मूंग का शुरवा दिया जाता है। पथ्य हमेशा ताजा व गरम होना चाहिये।

न्युमोनिया-चिकित्सा—

एकोनाइट ६-३०—रोग की शुरू में प्रबल ज्वर, तेज प्यास, वेचैनी, घबराहट, मृत्यु भय नाड़ी पूर्ण, जल्द व कड़ी, कष्ट दायक सूखा खांसी, फेन की तरह पतला व कभी २ खून के साथ पतला बलगम निकलना।

एन्टिम-टार्ट ३०-२००—श्वासप्रश्वास व खाँसी, के साथ छाती में ढीला बलगम के घड़घड़ाहट, मालूम होता है, कि बहुत सा बलगम निकलेगा, लेकिन कुछ भी नहीं निकलता है, कपाड़ से पसीना कभी २ पान्डु रोग के ऐसा होना। टाइफाइड हालत में रोगी वेहोशी से नींद में पड़ा रहता है, नाक के छिद्र प्रसारित व काला रंग का होना, जीभ सूखा व भूरा रंग, दस्त। श्वास के साथ नाक का पूरे का फड़कना।

आर्निका ६-३०-२००—आघातादि से पीड़ा, रक्तस्राव का डर, शुष्क खाँसी, खाँसते वक्त सर्वांग का कंपना, उसके साथ खून मिला हुआ बलगम निकलना।

आर्सेनिक ३०-२००—निहायत कमजोरी, ज्यादा वेचैनी व घबराहट, ज्यादा प्यास, लेकिन थोड़ा २ पानी पीना, ओष्ठ और जीभ सूखा व मलिन, अतिसार, श्वासकष्ट,

छाती मे ज्वाला, ज्यादा पसीना, हाँथ पाँव ठंढा, सड़ा वलगम निकलना, मध्य रात्रि मे तकलीफ का वढ़ना। फेफड़े का सड़ जाने की करीना।

बेलाडोना ६-३०-२००—सिर मे खून की ज्यादती, आँख व चेहरा लाल, सिर गरम हाँथ पाँव ठंढा, ज्यादा ऊघाँय लेकिन नींद न होना अथवा नींद से चौंक उढना, प्रवल विकार, आक्षेप होने का डर, स्वाँस कष्ट, छाती मे दर्द, कष्टदायक खाँसी। प्रवल सिर दर्द, हरकत से ज्यादा होना।

ब्राइओनिया ६-१२-३०—एकोनाइट के इस्तेमाल के वाद, रोग की द्वितीयावस्था में यह ज्यादेतर व्यवहार होती है। खाँसी या स्वांस के साथ छाती मे दर्द, दवाने से दर्द की कमी, हरकत से ज्यादती, पीड़ित पार्श्व पर लेटने से आफियत, शुष्क खाँसी, ढेले २ चटचटा व पीलापन लाल रङ्ग का वलगम, कब्ज, ज्यादा प्यास, जीभ मैला व सूखा।

कैल्केरिया-कार्व ३०-२००—खाँसी के साथ जो वलगम निकलता हैं वह पानी मे डुव जाता है और उसके पीछे से दुम की तरह निकलता है; सिर में ज्यादा पसीना।

कैप्सिकम ६-३०—खाँसी से रात को नींद नहीं होती है। खाँसते वक्त फेफडे से जो हवा निकलती है वह वदबूदार और खराव स्वाद की होती है। ठंढा पानी पीने से आफियत, व लेटने से खाँसी की ज्यादती, मैला भूरा रङ्ग का वलगम, खाँसी के समय सिर व छाती में दर्द। पीठ व मूत्रस्थली में सुई चुमने की तरह दर्द।

कार्वो-भेज ३०-२००—रोग की तृतीयावस्था में यह

दवा उपकारी है. आन्त्रिक खांसी, आवाज बैठ जाना, छाती में ज्वाला, ज्यादा परिमाण से पीला रङ्ग की दुर्गन्धी बलगम निकलना, छाती में घड़घड़ाहट; पीड़ा की आखरी हालत मे चेहरा मुर्दे की तरह, आंख आधी खुली हुई, नाक ठंढा, हांथ पांव ठंढा, ठंढा पसीना, पुतली का सून होना रोगी बेहोश, नाड़ी, जल्द दुर्बल व क्षुद्र, मालूम नहीं पड़ती है, चेहरा धसा हुआ, नीला व ठंढा, पेट फूला हुआ, स्वांस जल्दी २ व ऊपर २ चलती है, फेफड़े का पक्षाघात होने की करीना, सर्ब्बदा पंखा की ख्वाहीश। दुर्गन्धी दस्त।

चेलिडोनियम ६-३०-२००—यकृतदोषयुक्त न्युमोनिया में यह एक निहायत उमदा दवा है। दहिना पखुरा के नीचला कोण में सुई भोकने की तरह दर्द, तर खांसी लेकिन कष्ट से बलगम का निकलना छाती मे कष्टबोध, नाक के पूरे का पंखा की तरह चलता रहना, एक पांव गर्म, दूसरा ठंढा, दहिना फेफड़े मे रोग। रात में मृदु विकार, दिन में जड़ के ऐसा पड़ा रहना, चेहरा जर्द, मल सोने की तरह रङ्ग का। दहिना तर्फ का न्युमोनिया के साथ हल्दी रङ्ग का दस्त रहने से यह दवा उपकारी है।

फेरम-फस ६-१२-३०—यह भी एकोनाइट की तरह न्युमोनिया की पहली हालत में उपकारी है। प्रायः बलगम नहीं निकलता है यदि निकले तो पतला पानी की तरह व खून का छींटा के साथ होता है। फेफड़े में खून की ज्यादती, प्रबल ज्वर कष्टदायक व जल्द स्वांस, बेचैनी।

हिपर-सल्फ ३०-२००—रोग की तीसरी हालत में जब

बलगम पीव की तरह होता है अथवा फेफड़े में फोड़ा होने का खौफ होता है तब दिया जाता है।

हायोसायमस ३०-२००—न्युमोनिया के साथ मृदु विकार, बरबराना, बिछावन खोंटना, आक्षेपिक खांसी, लेटने से उसका बढ़ना।

केलिवाइ ३०-२००—बलगम गाढ़ा, रस्सी की तरह शक्ल का, छाती में घर घराहट, पीठ से ष्टार्नम तक दर्द।

केलि-कार्ब ३०-२००—रात तीन बजे खांसी की ज्यादती, छाती के नीचला हिस्सा में सुई चुभने की तरह दर्द, नाड़ी क्षुद्र व बेकायदा, चेहरा फीका, चर्म व मल सूखा, छाती में तर बलगम लेकिन निकालने में कष्ट, स्वांस कष्ट, रोगी लेट नहीं सक्ता है, छाती मे सां सां आवाज, दहिने फेफड़े में टीस मारना, दहिने फेफड़े में तकलीफ की ज्यादती दहिने कर लेट न सकना, रोग की तीसरी हालत में ज्यादा बलगम निकलना, ऊपर के ओष्ठ मे पसीना।

केलि-म्युर ६-३०—यह न्युमोनिया के एक उत्तम दवा है। फेरम-फस के साथ इसको अदल बदल कर व्यवहार करने से बहुत फायदा होता है। बलगम सफेद, चटचटा, जीभ सफेद मैल वाला। यह दवा दूसरी हालत में उपकारी है, तीसरी हालत में जब गाढ़ा व पीला रङ्ग का बलगम निकलता है तब इस के बदले में केलि-सल्फ उपकारी होता है।

सैंगुइनेरिया ३०-२००—दहिना तर्फ का न्युमोनिया, व, छाती के ऊपर वाले हिस्से में ज्वाला व पूर्णताबोध,

तेज सूई भोकने की तरह दर्द, खास कर दहिना तरफ में. स्वाँसकष्ट, बलगम कुछ लाल, हाँथ पाँव ज्यादा गर्म या ज्यादा ठंढ, निहायत बदबूदार बलगम, दिल की क्रिया कमजोर व अनियमित, फेफड़े मे ज्यादा खुन होना।

फेरम-फँस ६-१२—शुरू में फेफड़े में ज्यादा खुन होने से उपकारी है। प्रबल ज्वर, दिल की क्रिया की ज्यादती, नाड़ी पुर्ण व जल्द, जीभ के मध्यभाग में लाल रङ्ग का लकीर। आँख खुब लाल।

बैप्टिशिया ३०-२००—रोगी मालूम करता है कि छाती मे बलगम टुकड़े २ हो कर आ रहा है; रोगी उसको इकट्ठा करके निकालने की चेष्टा करता है। टाइफाइड हालत।

लेकेसिस ३०-२०० -अत्यन्त स्वाँसकष्ट, निद्रित मे कष्ट की वृद्धि, पीड़ा पहले वाम पार्श्व में आरम्भ होता है। दुर्गन्ध-युक्त मल। टाइफोइड अवस्था। निद्रावस्था में खाँसी। बल-गम में रक्त और पीव रहता है। अत्यन्त पसीना। बिकार मे बरबराना और भयजनक चीज देखना। मुँह और बलगम मे बदबू, गैंग्रीण होने का डर।

लाइकोपोडियम ३०-२००—दोनों गाल रक्तवर्ण, पेट फूलना, नाक के पूरे का फड़कना, सहजे से ही मुँह भर भर कर बलगम निकलना, बलगम चटचटा सुरखी की तरह रंग का, बिमारी पहले दहिने तरफ में शुरु होता है। आखरी हालत में एक पांव ठंढा, दूसरा गर्म, रात को पसीना, पीव को तरह बलगम।

मार्क-सल ६-३०—दहिना तरफ की पीड़ा, पैत्तिक दोषयुक्त निउमोनिया, पांडु रोग, दहीना फेफड़े में टीस

मारना, मेदा और यकृत के स्थान पर दबाने से अत्यन्त दर्द, ज्वर मे भी अत्यन्त पसीना होता है किन्तु उससे कुछ भी आफियत नहीं होती है। जीभ पीलापन, बलगम हरापन।

ओपियम ३०-२००—शिशुओं का निउमोनिया, चेहरा बेगनी रङ्ग का, फुला २, खरराट के साथ स्वांस प्रस्वांस, वृद्ध वयस का निउमोनियां। फेफड़े को पक्षाघात के कारण स्वास रुक २ कर चलना, बलगम फेनदार व नीला रङ्ग। नींद मे चौंक उठना। बिलकुल अचेतन अवस्था। शरीर में गर्म पसीना, बिछावन गर्म मालुम होता है।

फसफोरस ६-३०-२००—यह इस रोग का एक प्रधान औषधि है। सिर्फ फसफोरस और ब्राइयोनिया ये दो औषधि का प्रयोग करके बहुत रोगी को आराम किया गया छाती में बोझ, छाती कसी हुई बोध होना, खुश्क खांसी, साम से दोपहर रात तक उसकी ज्यादती, बांयां कर लेटने से तकलीफकी ज्यादती, ज्यादा प्यास लेकिन स्वांस कष्टके कारण ज्यादा पानी पी नही सक्ता है। नाक के पुटे का फड़कना, खांसी के साथ बेखबरी से दस्त होना, रोगी दुर्बल, विकार, बरबराना, बिछावन हाथराना, सन्ध्या से रात दोपहर तक खांसी की वृद्धि। निढाल हालत, आंख मे धुन्ध इत्यादि।

रस-टक्स ६-३०-२००—टाइफाइड अवस्था के निउमोनिया, जीभ का अगला हिस्सा लाल, अत्यन्त खांसी और अस्थिरता, स्थिर भाव से रहने से स्वांसकष्ट और दर्द की वृद्धि होती है, बलगम लाल या सुर्खी रंग अथवा हरा व बदबूदार दुर्बलता बेहोशी, बेहोशी मे पैखाना पेशाब होता है,

टिउबरकुलोसिस ।

(TUBERCULOSIS.)

रोग परिचय—यह एक स्पर्शाक्रामक पीड़ा है और "बेसीलस टिउबरकुलोसिस" (Bacillus Tuberculosis) नाम के वीजाणु से पैदा होती है। शरीर की जिस जगह से यह रोग होता है, वहां पहले पहल चावल के कण के प्रमाण, मटर प्रमाण अथवा उससे भी बड़े २ ढेले २ पदार्थ समूह उभर आते हैं, इन पदार्थों को टिउबर्कलस (Tubercles) कहते हैं। यह टिउबर्कल समूह क्रमशः कठिन होकर केजिएशन (Casiation) प्राप्त होता है अर्थात् पनिर (छेना) की तरह अवस्था प्राप्त होता है या उससे भी कठिन होता है, आखिर में टिउबर्कल समूह क्षय प्राप्त होकर जखम हो जाता है। यह टिउबरकुलोसिस रोग दिमाग जरायु, हड्डी सिंदा अंत्री, यकृत, फेफड़े इत्यादि शरीर के भिन्न २ स्थान में हो सकता है, जैसे—टिउबकुलोसिस आफ इनटेस्टाइन (Tuberculosis of Intestine) याने अंत्री का टिउबकुलोसिस, टिउबकुलोसिस आफ लंगस (Tuberculosis of Lungs) याने फेफड़े का टिउबकुलोसिस इत्यादि। शरीर-शीर्णता वा कंजम्शन (Consumption) इस रोग का सर्व प्रधान लक्षण है इसलिये इस रोग को कंजम्शन (CONSUMPTION) भी कहते हैं अनेक समय बाहरी जखम के जरिये भी यह बेसिलस देह में प्रवेश करता है।

कारण—यह रोग सर्वजातीय मनुष्य और सर्व प्रकार प्राणी, विशेषत: गो जातीय पशु को हो सकता है। बलक्षयकारी रोग, खानदानी दोष, खराब जगह में वास, पत्थर काटना, कोयला के खान में काम करना, न्युमोनिया, मैलेरिया ज्वर, इनफ्लुएन्जा, बहुमूत्र-दोष, विशुद्ध वायु का अभाव, निकट सम्बन्धीय के साथ विवाह, हस्तमैथुन, ज्यादा स्त्री-सहवास, पारा के दोष, गर्मी रोग के दोष, मानसिक अवसाद, ज्यादा सन्तान प्रसव, ज्यादा दूध पीलाना, ज्यादा मेहनत, रात जागना, कण्ठमाला-दोष प्रभृति इसका पूर्ववर्ती कारण है। "बेसिलस टिउबर्कुलोसिस" का शरीर में प्रवेश करना इसका मुख्य कारण है। यह बेसिलस स्वांस के साथ या खाद्य के साथ शरीर में प्रवेश करता है। इस रोग के रोगी का स्वांस दूषित होता है। रोगी का बलगम सूख जाने से हवा में उड़कर दूसरे के फेफड़े में प्रवेश कर सकता है। इस रोगवाली गाय बकरी इत्यादि का मांस या दूध दूषित है, इसको खाने पीने से भी यह रोग होता है।

—:o:—

यक्ष्मा रोग या थाइसिस।

(PHTHISIS.)

रोग परिचय:—पूर्व कथित टिउबर्कुलोसिस व कंजम्शन रोग फेफड़े में होने से इसको पलमोनारी (Pulmonary) फेफड़े का टिउबर्कुलोसिस अथवा पलमोनारी

कंजस्शन कहते हैं, और इसी का खास नाम थाइसिस या यक्ष्मारोग है।

कारण :—टिउवकुलोसिस का कारण देखिये।

स्थानीय परिवर्तन वा पैथोलजि :—इस रोग की तीन अवस्था है।

प्रथम अवस्था :—फेफड़े के वायुकोष और उस के दिवार या ब्रंकिएल टिउब में टिउबर्कल समूह प्रथम उत्पन्न हो कर निकट के टिसू समूह को आक्रमण करता हैं। इस प्रकार से सिर्फ टिउबर्कल पैदा होने को इस रोग की प्रथमावस्था कही जाती है।

द्वितीयावस्था :—इस अवस्था में टिउबर्कल समूह कठिन हो कर केजिएशन प्राप्त होता है अर्थात् पणिरता प्राप्त होता है अथवा और कठिन होता है और उस के चारो ओर मे प्रदाह हो कर फेफड़े की हालत न्युमोनिया की दूसरी हालत की तरह ठोस हो जाती है।

तृतीयावस्था—इस हालत में टिउबर्काल समूह व न्युमोनिया की अवस्था प्राप्त स्थान समूह मे जखम होता है और उस से वहां गहराई (Cavity केभिटि) पैदा होती है, इन गहराइयों में फेफड़े के गलित टिसू, पणिर की तरह चीज व पीव देखा जाता है।

पीड़ा के आक्रमण :—साधारणतः एक तरफ के फेफड़े का शीर्षभाग (हंसुली की हड्डी से ऊपर का हिस्सा) में सर्वप्रथम टिउवर्कल पैदा होता है और वहां की कठिनता वा केभिटि होते न होते ही उसके नीचे की जगह मे टिउवर्कल पैदा होता रहता है और चारो तरफ फैलता रहता है।

लक्षण :—खांसी, खून निकलना, प्रायः पीवयुक्त बलगम निकलना, स्वांसकष्ट, शरीर—शीर्णता, दुर्बलता हैकटिक ज्वर वा तपेदिक, रात में पसीना, ये यक्ष्मारोग के सर्वप्रधान लक्षण है।

—रोग के आरम्भ में, ज्यादेतर रोगी में पहले खांसी होता है। खांसी के साथ थोड़ा २ बलगम वा पीव के साथ बलगम निकलता है। फिर कभी २ देखा जाता है कि एकदम तन्दुरुस्त हालत ही में अचानक एक रोज गले मे सुरसुराहट हो कर अचानक बिना कष्ट के गले से खून निकलना शुरू होता है। इस खून के परिमाण कम या वेशी हो सकता है जैसे कई बुन्द से आधा सेर या और ज्यादा। इस समय, सिवाय खून निकलने के और कोई लक्षण नहीं होता है ऐसा कि छाती परीक्षा करने से भी कुछ मालूम नहीं होता है। आपसे आप खून बन्द हो कर कुछ दिन तक रोगी अच्छा रहता है, फिर अचानक एक रोज खून दिखाई देता है। बार २ ऐसा होते २ खांसी, ज्वर इत्यादि यक्ष्मा रोग के लक्षण समूह क्रमशः प्रकाश पाता है। अरुचि, दुर्बलता

शरीर-क्षीणता इत्यादि पहले उपस्थित होतो है पीछे छाती-परीक्षा से रोग प्रकड़ा जाता है।

रोग स्पष्ट प्रकाशित होने के बाद कोई २ रोगी तीन चार महीने में मर जाता है, कोई २ रोगी १०, १५ साल तक जीवित रहता है। शेषोक्त प्रकार रोगी की हालत बार २ कभी अच्छी कभी खराब होती रहती है।

खांसी :—प्रत्येक रोगी में खांसी देखा जाता है। प्रथम अवस्था में खांसी सहज रहता है और बलगम सहज से निकलता है, रोग की शेष अवस्था में खांसी बहुत कष्टदायक होता है, बाज वक्त खांसी के साथ गला बैठ जाता है। रोगी की पहली हालत में जो कफ (Sputum) निकलता है वह ब्रंकाइटिस के कफ की तरह होता है, रोग वृद्धि के साथ क्रमशः कफ पीला, या हरापन पीला होता है, इस कफ को पानी में फेकने से डूब जाता है। आखिर हालत में कफ पीव की तरह होता है इस कफ की परीक्षा करने से, इससे "बेसिलस टिउबर्कुलोसिस" मिलता है।

मुंह से खुन निकलना :—यह प्रायः थाइसिस के सर्व आदि लक्षण है, यह खुन साधारणतः चमकीला लाल या फेनदार होता है किन्तु अनेक रोगी में बहुत दिन तक काला खून के छोटे छोटे टुकड़े भी निकलता है। रोग की शेष अवस्था में कभी २ पीवयुक्त कफ के साथ खुन का छीटा रहता है। खून कम या ज्यादा और काला या लाल उभय प्रकार का हो सकता है।

स्वांस-कष्ट :—पीड़ा के शुरू ही से यह लक्षण कुछ २ देखा जाता है लेकिन रोग बढ़ने के साथ २ यह बहुत कष्टदायक होता है।

ज्वर:—रोग के शुरू मे ही ज्वर रहता है, यह कभी रेमिटेन्ट या कभी इन्टरमिटेन्ट भाव से होता है। प्रायः सांम को ज्वर बढ़ता है। पसीना, खास कर रात में होना इस ज्वर के एक अवश्यम्भावी आनुसंगिक लक्षण है।

शरीर-क्षीणता—यह भी इस रोग का एक अवश्यम्भावी लक्षण है। इसके साथ बदन भी रक्तहीन होता जाता है।

अंगुलियों का अग्रभाग फुलना, नाखूनो का धनुष की तरह टेढ़ा हो जाना, और हथेली का शोथ या "उसका रोग निश्चय आरोग्य होगा" रोगी का ऐसा विश्वास भी यक्ष्मा रोग का लक्षण है। नाड़ी द्रुत तथा कोमल होती है। इस रोग की शेष अवस्था में अतिसार एक सांघातिक लक्षण है।

छाती-परीक्षा : प्रथम अवस्था मे छाती परीक्षा से कुछ भी मालुम नहीं होता है, लेकिन कभी २ परकसन से स्वभाविक रेजोनेन्स शब्द की कमी या स्टेथोस्कोप से भेसिकुलार मरमर की कमी मालुम होती है।

द्वितीयावस्था में छाती के रोगाक्रान्त स्थान की विस्तृति के अनुसार छाती का संचालन की कमी देखी

होती है, क्लेविकल हड्डी के ऊपर या नीचे की जगह गहरा हो जाता है। परकशन से स्वभाविक रेजोनेन्स की कमी अर्थात "डल" शब्द सुना जाता है। प्लूरा से पानी आने से उतना डल शब्द नहीं मिलता है बलकि कहीं २ हाईपाररेजोनेन्स सुना जाता है। स्टेथोस्कोप से ब्रंकिअल वृदिङ्ग सुना जाता है। खांसी के साथ ब्रंकोफोनि सुना जाता है। इस हालत में दिल की आवाज स्पष्ट भाव से सुना जाता है।

तृतीयावस्था में छाती की आकृति परिवर्त्तित होती है, छाती चिप्टा, लम्बा और संकीर्ण होता है। कन्धा गहरा हो जाता है। परकशन से केभिटी की कमी बेशी के अनुसार डल, हाइपाररेजोनेन्स; टिम्पेनिटिक अथवा क्रेक्ट-पट शब्द ऐम्फोरिक, कैभारनस इत्यादि शब्द सुना जाता है, केभिटी खूब बड़ा होने से ब्रंकोफोनि या स्वर-कम्पन खूब ज्यादा सुना जाता है। मेटालिक टिकलिंग अथवा राल्स भी सुना जाता है।

भाविफलः—इस रोग का भावीफल प्रायः खराब है।

आनुसंगिक उपाय:—ज्वर या अतिसार की अवस्थानुसार पथ्य की व्यवस्था होनी चाहिये। पथ्य हल्का और पुष्टिकर होना चाहिये। परिपाक-शक्ति की अवस्था समझ कर घी, दूध, अंडा, मांस, मक्खन, मिसरी, पूरी, मोहनभोग, भात, रोटी इत्यादि दिया जा सकता है।

कमरा उत्तम हवादार होना चाहिये। जलवायु परिवर्त्तन करना अत्यावश्यक है। ऊंची व न गर्म न ठंढा ऐसी जगह में रहना अच्छा है। स्त्री-सहवास नितान्त अपकारी है। "काडलिभर आइल" से अनेक समय अतिसार हो कर खराबी पहुंचाता है। खुली हवा मे भ्रमण उपकारी है। रोगी के लिये सुवायु का बन्दोबस्त अवश्य होना चाहिये।

चिकित्सा:—यक्ष्माखांसी पूर्ण विकाश प्राप्त होने से आरोग्य होना असम्भव, किन्तु रोग के प्रारम्भ में आहारादि का नियम पालन और उपयुक्त होमियोपैथिक औषध व्यवहार करने से आरोग्य हो भी सकता है। रोग पूर्ण विकाशावस्था प्राप्त होने से, रोग सम्पूर्ण आरोग्य न होने से भी उपयुक्त औषध सेवन से यन्त्रणा बहुत उपशमित और जीवन दीर्घ काल स्थायी हो सकता है। इस लिये लक्षण विशेष में निम्न लिखित औषधावली व्यवहार की जाती है।

वेसिल्लाइनम या टिउबर्कुलाइनम २०० या १००० — यक्ष्मारोग के प्रारम्भ में इस के प्रयोग से अनेक समय धातुदोष निवारित होता है। अतिशय शीर्णता, खांसी, खांसी के साथ खून निकलना, गले मे दर्द, ठंढ बरदाश्त न होना, सर्दी लगने के आदत इत्यादि इसका लक्षण है। इस दवा को बार २ प्रयोग न करना चाहिये।

एसेटिक-एसिड ३०-२०० — रोगी रक्तहीन; चेहरा व चर्म एकदम फीका, मोम की तरह; अतिसार होना, ज्यादा प्यास।

आर्सेनिक ३०-२००— ज्वर, पसीना, अतिसार व अजीर्णता के लक्षण, दुर्बलता, ज्यादा शीर्णता, प्यास, बेचैनी, शरीर में ज्वाला, स्वांस-कष्ट, रात में खास कर आधी रात में खांसी की ज्यादती, सब्ज रङ्ग का व नमकीन बलगम निकलना।

ब्राइयोनिया ३०-२००—खांसी के समय छाती में दर्द, सुखी खांसी, कब्ज, मल सूखा व कठिन, ज्यादा प्यास।

केलि-कार्ब ३०-२००—आंख के पपुटा फुला, छाती में सूई चुभने की तरह दर्द, रात तीन बजे से सुबह तक खांसी की ज्यादती, पीवयुक्त कफ निकलना, सिर की चांदी या पैर के तलवे में ज्वाला, सड़े अंडे के स्वाद वाला ढेकार, पैर का फुलना।

नेट्रम-कार्ब ३०-२००—गरम कमरे में प्रवेश करने ही से खांसी आता है, अम्ल या अजीर्णरोग, कोई चीज हजम नहीं होती है।

नेट्रम-म्युर ३०-२००—मुंह के अन्दर धड़कन मालुम होना शीर्णता, रक्तालपता, ज्वर, नमकीन चीज खाने की ज्यादा इच्छा।

नाइट्रिक-एसिड ३०-२००—पारा या गर्मी रोग के दोषयुक्त रोगी के लिये यह उपयोगी है। अचानक छाती में

रक्त के धावा । ज्वर, छाती मे दर्द, सर्वदा चमकीला लाल रङ्ग का रक्तस्राव, स्वांसकष्ट, अतिसार, दिल की कमजोरी, दिल धड़कनो, सुरसुराहट के साथ खांसी. कमी सूखा, कमी तर खांसी, कफ वदवूदार, पीला, सब्जापन, रक्तमय और शेष में पीवयुक्त होता है ।

नक्स-भोमिका ३०-२००—लगातार खांसी, कमी कफ निकलता है कमी नहीं निकलता है । प्रात.काल में और आहार के वाद खांसी वढ़ता है। सिर दर्द, पेट में दर्द या वोझ, कब्ज, अम्लरोग ।

पलसेटिला ३०-२००—रात मे खुश्क खांसी, सीधा हो कर वैठने से आफियत. तर खांसी, पीला या हरापन वलगम और तीता वलगम, ऋतुवन्द, अतिसार ।

सोरिनम २००—खुजली, सारीश के धातु के रोगी के लिये उपयोगी है, वदन में वदवु, पैखाना पसीना वगैरह वदवूदार, चर्म रोग दव जाकर रोग ।

सैंगुनेरिया ३०-२००—दिन ४ वजे से ज्वर की वृद्धि; स्वांस व कफ निहायत वदवुदार, खांसी के पहले या पीछे ढेकार आना; खांसी के वाद गर्मी या नींद, रात में ज्यादा पसीना, वायाँ छाती के नीचला हिस्सा में दर्द, छाती के ऊपर वाला हिस्सा में ज्वाला या वोझ ।

सिपिया ३०-२००—खुश्क खांसी, साम को खुश्क खांसी, सुवह को कफ निकलता है, अथवा रात में कफ

निकलना, दिन में नहीं। बदबुदार कफ, लेटने से खाँसी की कमी। पीलापन खाकी रंग का बलगम।

साइलिशिया—पीव होने से यह उपकारी है। ज्यादा बदबूदार बलगम, ज्यादा पसीना, खाँसी पहले खुष्क, पीछे तर, ज्यादा परिमाण से पीवयुक्त बलगम निकलना, पत्थर काटने वालों का रोग में उपकारी है।

फेरम-फस १२-३०—रक्तस्राव बन्द करने में यह दवा उपयोगी है (हैमामेलिस मिलिफोलिअम, इरेकथाइटिस)।

सन्ध्याकाल और प्रात.काल में वृद्धि फेफड़ा से रक्त-स्राव; फेफड़ा में ज्वाला, अत्यन्त निस्तेज अवस्था, उदरामय, शीत और पसीना, मुँह में जखम।

आरसेनिक आइओड ३०-२००—दम्मा की तरह दम फूलना, दिनरात कष्टदायक खाँसी, विशेषतः लेटने से और भोर मे, उदरामय, अत्यन्त निस्तेजता मुँह में जखम।

कैलकेरिया कार्ब ३०-२००—रोग की पुर्वावस्था मे, विशेषतः अल्प वयस में ही युवक की आकृति प्राप्त होने वाला और बलगमी मिजाज के व्यक्ति में उतकृष्ट कार्य्यकारी है। प्रातःकाल में खाँसी की वृद्धि और गला में से बहुत परिमाण से ढेला के सदृश पीवसंयुक्त पीला बलगम निकलना, सहज से ही पसीना होना, सामान्य मेहनत से ही थक

जाना, सीढ़ी से ऊपर चढ़ने के समय स्वांसकष्ट, रोगी क्षीण हो जाता है किन्तु भूख अच्छा रहता है, सामान्य कारण से ही सर्दी लगता है, शीतल वायु बरदास्त नहीं होता है। यह कंठमाला धातु के लोगों के लिये विशेष उपयोगी है।

कैलकेरिया फस ३०-२००—रोग की प्रथमावस्था में रक्तहीनता, रात में अत्यन्त पसीना, विशेषतः मस्तक और गला में, प्राचीन खाँसी के साथ गला में खुश्की और जखम की तरह दर्द, खांसी के साथ रक्त निकलना, पीवयुक्त हरापन बलगम, स्वांसप्रस्वांस जल्द, शरीर शीर्ण।

कार्बो भेज ३० २००—रात में नाक से रक्तस्राव अत्यन्त कष्टदायक खांसी, बलगम पीला या पीव की तरह, दुर्गन्धी सन्ध्या के समय स्वरभंग, गात्र शीतल, रात में बिछावन में रहने से भी दोनो ठेहुना ठंढा रहता है, अत्यन्त शय्याशायी अवस्था, चेहरा मृत के समान।

चायना ३०-२००—रक्तस्राव, दीर्घकाल तक स्तन्यदान, शुक्र-क्षय इत्यादि हेतु पीड़ा, सविराम ज्वर के साथ पसीना और सो जाना।

फेरम मेटालिकम ६-३०—नाक से रक्तस्राव, खांसी के साथ रक्त निकलना, सन्ध्या से रात दोपहर तक खांसी की वृद्धि, प्रातःकाल में बहुत परिमाण से पीव के साथ

वलगम निकलता है किन्तु सन्ध्य काल में सूखा खांसी होता है। अजीर्ण पदार्थ के वमन, चेहरा रक्तसून्य, बिना दर्द के उदरामय, पानी की तरह पतला ऋतुश्राव। सामान्य मानसिक उत्तेजना वा परिश्रम से ही चेहरा लाल हो जाता है।

हिपर-सल्फर ३०-२०० रोग की प्रथमावस्था में बच्चों के और कंठमाला धातु के लोगों के लिये यह विशेष उपकारी है। गले में घड़घडाहट के साथ खासी, दो पहर रात के बाद इस की वृद्धि, सामान्य ठढ लगने से ही खांसी होता है, शीतल हवा बर्दास्त नहीं कर सकता है।

आयोडियम् ३०-२००—लगातार गला में खुरखुराहट के साथ खासी, वलगम स्वच्छ, राक्षस की तरह क्षुधा किन्तु शरीर अत्यन्त शीर्ण, शरीर का समस्त ग्लैन्ड बढ़ जाता है किन्तु दोनों स्तन सूख जाता है। बहुत परिमाण से ऋतुश्राव, प्रातःकाल मे पसीना।

लैकेसिस ३०-२००—निद्रान्त में खांसी की वृद्धि, बहुत कष्ट से वलगम निकलता है। अत्यन्त दुर्गन्धी मल। रोग की शेष अवस्था में मुंह में जखम।

लाइकोपोडियम ३०-२००—दिन रात खांसी के साथ मुंह भर के पीव युक्त वलगम निकलता है। वलगम नमकीन होता है, धीमा बुखार, रात में पसीना, साम को ४ वजे से आठ वजे तक रोग की वृद्धि, पेट में गड़गड़ाहट।

फसफोरस ६-३०-२००—जो व्यक्ति अल्प वयस में जल्दी २ वृद्धि प्राप्त हो कर युवक के ऐसा शरीर प्राप्त हुआ है उस के लिये यह विशेष उपकारी है। बुद्धि तेज और जल्दी २ विकाश प्राप्त होती है। बायां फेफड़ा के उपरी भाग मे दर्द, बायां कर मे लेटने से वृद्धि, खुष्क आक्षेपयुक्त खांसी, छाती में दवाने की तरह मालूम होना, हंसने से, बातचीत करने से, खुली हवा में खांसी की वृद्धि, स्वरभङ्ग, कब्ज, मल मिहिन और लम्बा। पतला लम्बा शरीर।

स्टैनम ३०-२००—छाती में अत्यन्त दुर्वलता, बात करने के बाद, बलगम निकलने के बाद, छाती में इतनी दुर्वलता मालूम होती है कि मालूम होता है उस में कुछ भी नही है। बलगम मीठा होता है, रात मे अत्यन्त पसीना।

एकालाइफा-इन्डिका १-३—गला से चमकदार लाल रक्त-श्राव होने से उत्तम कार्यकारी होता है।

सलफर २००—खुष्क खांसी के साथ स्वरभङ्ग और गला में खरकी, कभी कभी बहुत परिमाण से पीव के सदृश बलगम निकलता है। छाती में श्लेष्मा घड़घड़ करता है, खांसी प्रातःकाल में वृद्धि होता है। बदन खुष्क, मस्तक व हाथ पैर में ज्वाला, बदन में खुजली, सुबह को दस्त होना. रात में पसीना।

हृदय यंत्रों की पीड़ासमूह।

THE DISEASES OF THE HEART.

१। छाती के दहिना तरफ ष्टार्नम के निकट द्वितीय इन्टारकष्टैल स्थान, २। ष्टार्नम के सर्व निम्न कोण, ३। वायां तर्फ मे ष्टार्नम के निकट तृतीय इन्टारकष्टैल स्थान, ४। बार्या स्तनकेन्द्र से १ इञ्च नीचे के और १½ इञ्च दहिना तरफ, ये चौहद्दी के अन्तर्गत स्थान को हृदय-स्थान (Pre-cordial region) कहते हैं। प्रथम स्थान में एवरटिक भल्म का द्वितीय स्थान में वाइकासपिड या माइट्रल भल्मका, तृतीय स्थान में पलमोनारी भल्म का और चतुर्थ स्थान मे ट्राइकासपिड भल्म का शब्द सुना जाता है।

हृदय परीक्षा।

फेफड़े की परीक्षा की तरह हृदय-परीक्षा भी दर्शन, स्पर्शन, आघातन या आकर्णन द्वारा की जाती है।

दर्शन (Inspection)—स्वभाविक हालत में हृतस्पंदन हृदय-स्थान मे भी आंख से देखा नहीं जाता है हृतस्पंदन आंखसे देखा जाय तो बिमारी हुआ है समझना चाहिये।

स्पर्शन या पैलपेशन (Palpation)—हृदय स्थान मे हाथ रखने से हृतस्पंदन के बेग मालूम किया जाता है।

आघातन या पारकशन Percussion-हृदयस्थान में पारकशन करने से "डल" शब्द होता है। हृदय के सम्मुख भाग में फफड़ा अधिक परिमाण में रहने से "डल" शब्द मामूली से ज्यादा जगह मे मिलता है।

आकर्णन या असकलटेशन (Auscultation)- ष्टेथीस्कोप के जरिये हृदय स्थान में दिल का सिष्टोलिक (सिकुड़ने का) और डाएष्टोलिक (फैलने का) शब्द (लप-डप) सुना जाता है। यह शब्द पूर्वकथित चार स्थानों में ज्यादा सुना जाता है। बिमारी की हालत मे इस शब्द की कमी-वेशी होती है।

— o:—

दिल-धड़कना, हृतस्पदंन ।

(PALPITATION OF THE HEART.)

रोग परिचय—स्वभाविक हालत में दिलका धड़कन भी मालुम नहीं होता है और बेगैर परीक्षा से उसके शब्द भी सुनाई नहीं जाती है। लेकिन दिल का यांत्रिक विकार अथवा क्रिया-विकार होने से दिल का तकलीफदार धड़कन या स्पंदन मालुम पड़ता है—इसीको दिल-धड़कना या पैल-पिटेशन आफ दि हार्ट कहते हैं।

कारण—शोक, दुःख, भय. आनन्द, फिक्र इत्यादि मानसिक उत्तेजना और शराब, चाय, कौफि, तम्बाकू इत्यादि चीज व्यवहार करना प्रभृति कारण से नाजुक मिजाज के दुर्बल लोग इस रोग द्वारा प्रबलभाव से आक्रान्त होते हैं। साधारतः स्त्रिया इससे ज्यादा आक्रान्त होती है और शारीरिक या मानसिक दुर्बलता, ज्यादा फिक्र, अनिद्रा, ज्यादा मेहनत, हिस्टीरिया, ज्यादा संगम, रक्तालपता, क्लोरोसिस रोग प्रभृति से यह होता है। कब्ज, मूत्रपत्थरि, जरायु या ओभारी मे ज्यादा खून होना इत्यादि कारण से भी यह रोग होता है।

लक्षण—प्रथमतः जी घबराता है, छाती में नितान्त कमजोरी मालुम पड़ती है, कभी २ रोगी मालुम करती हे कि उसका दिल अलग होकर लटक रहा है। कभी २ रोगी बहुत अस्थिर हो जाता है और ख्याल करता है कि दिल बन्द हो कर मर जायगा। सिरदर्द, चेहरे में नीलाई और ज्यादा पसीना प्रभृति लक्षण प्रकाश पाता है। बाज वक्त दिल के धड़कन बाहर ही से देखा जाता है और उसके शब्द भी निकट से सुना जाता है। दिल बहुत जोर से धड़कता रहता है। नाड़ी पूर्ण और कठिन होती है। कभी २ चेहरा लाल हो जाता है, स्वांस कष्ट होता है। अनेक समय यह दूसरे २ रोग के सहकारी भाव से प्रकाश पाता हैं।

आविफल—दिलका यांत्रिक दोषसे रोग हो तो आराम होना मुश्किल है, न तो क्रिया-विकार-जनित वा स्नायविक रोग आराम होता है।

चिकित्सा:—

एकोनाइट ६-३०—युवा वयस, भय हेतु पीड़ा, मदिरा पान के बाद पीड़ा।

आर्सेनिक ३०-२००—हारपीस नामक चर्म्मरोग दब जाकर और पैर के पसीना रुक जाने के हेतु पीड़ा।

औरम मेट ३० २००—पैलपिटेशन, अनिद्रा, उत्साह और स्फूर्त्तिहीनता के साथ आत्महत्या की इच्छा।

एसाफिटीडा ६-३०—ऋतु इत्यादि स्वाभाविक श्राव बन्द होने के हेतु पीड़ा।

बेलाडोना ६-३०—दिमागमें कनजेश्चन वा रक्त संचार के साथ पीड़ा।

कैकटस ३-६—पाकस्थली में गड़गड़ाहट शब्द करके पैलपिटेशन उपस्थित होता है। मालुम होता है कि छाती लोहे की पत्ती से कस कर बांधा हुआ है।

कैलकेरियाकार्ब ३०-२००—बर या और किसी प्रकार का इरपशन (दानें) दब जाकर पीड़ा। हस्तमैथुन-हेतु पीड़ा, पैर शीतल। सिढ़ीसे ऊपर चढ़ने के समय सिर चक्राना।

कैम्फ़र ३-६—हिमांग के साथ पैलपिटेशन। हाथ पैर ठंढा, चेहरा फीका, स्वांसप्रस्वांस मे अकस्मात् कष्ट।

चायना ३०-२००—जीवन-रक्षक तरल पदार्थादि के नाश-हेतु पीड़ा, वहुत दिन तक स्तन्य-दान-हेतु पीड़ा।

डिजिटेलिस ६-३०-२००—बात करने से हिलने डोलने से या लेटने से हृतकम्प उपस्थित होता है, मालूम होता है कि हिलने से ही हृत्स्पन्दन बन्द हो जायगा। हृदय-प्रदेश मे सुई भोकने की तरह या संकोचक दर्द, दील का यान्त्रिक रोग के साथ पैर मे शोथ। चेहरा पीलापन या नीलापन, नाड़ी की गति सविराम।

फेरम् ३०—अत्यन्त रक्तहीनता, किन्तु सामान्य हिलने डोलने से ही चेहरा लाल हो जाता है। दिल का अग्रभाग में फुस २ शब्द से "मरमर" सुनाई पड़ता है।

नक्स-मस्केटा ३-६—रात दोपहर के बाद रोग की वृद्धि, मालुम होता है कि दिल अब नहीं चलेगा, फिर अति वेग से स्पन्दन होता है और इस के साथ ढेकार आता रहता है। हिष्टीरिआ।

मस्कस १-३—इस पीड़ा के साथ हिष्टीरिया रोग वर्त्तमान रहने से दिया जाता है।

नक्स भोमिका ३०-२००—कौफी, मद्य, गर्म मसाला, इत्यादि आहार-हेतु पीड़ा।

नेट म्‌-म्युर ३०-२००—रक्तहीनता, ऋतुश्राव के अभाव, चर्म्म के कार्य्य पसीनादि नहीं होना।

ओपियम ३०-२००—भय, शोक, दुःख इत्यादि हेतु पीड़ा।

फसफोरस ६-३०—छाती के चारों तरफ में कस के पकड़ने के सदृश मालूम होना और इस से स्वांस लेने में कष्ट और अतिशय दुर्वलता वोध। हृत्कम्प, मानसिक उत्तेजना और आहार के वाद उस की वृद्धि।

एसिड-फस ६-३०—हस्तमैथुनादि वो वहुत दिन का शोक द्वारा शरीर क्षय होने से इस औषधि द्वारा फल मिलेगा।

पलसेटीला ६-३०—यौवन के प्रारम्भ में हृत्कम्प।

सिपिया ६-३०—नाड़ी कम्पमान और सविराम। ऋतु वन्द।

स्पाइजिलिया ६-३०—हृत्कम्प इतना जोर से होता है कि दूसरे को उस का शब्द सुनाई पड़ता है, रोगी कांपता है।

भिरेट्रम ६-३०—प्रवल वेग से हृत्कम्प, ललाट मे शीतल पसीना, सिरपीड़ा, वमन, पतला दस्त।

लैकेसिस ३०-२००—वारवार लम्बा स्वांस, कभी कभी स्वांस रुक जाता है और मूर्च्छा होता है, नाड़ी दुर्वल, छाती के वायां तरफ में सुई भोंकने की तरह दर्द। निद्रा के वाद हृत्कम्प और स्वांसकष्ट की वृद्धि होती है।

क्रेटेगस इस का मदर टिंचर हर खुराक मे ३।४ बुन्द करके रोज ३।४ वार देना चाहिये। यह हृदरोग का एक उत्तम औषधि है। यह हृतपीन्ड को बल देने वाला और अति वेग को धोर वेग में लानेवाला है। शोथ वर्त्तमान रहने से भी इस से उपकार होता है।

रस-टक्स, ६-३०—स्थिर भाव से रहने से हृत्कम्प होता है, चलने फिरने स आराम होता है। दिल में सुई भोकने की तरह दर्द और उस के साथ बायां हाथ मे दर्द के साथ अवशाना। (सूनभाव)

जेलसिमिअम ६-३०—मालूम होता है कि न हिलने डोलने से दिल का स्पन्दन वन्द हो जायगा।

—:—

मूर्च्छा वा सिंकोप।

SYNCOPE

रोगपरिचय :—अकस्मात् दिल का कार्य्य वन्द होने से मूर्च्छा उपस्थित होता है, स्नायु-केन्द्र मे रक्तहीनता ही इस का प्रधान कारण है। मूर्च्छा गुरुतर भाव से उपस्थित होने से उस के साथ फेफड़े की क्रिया वन्द हो कर श्वांस प्रश्वांस रुक जाता है।

चिकित्सा—

इस अधिकार में एकोनाइट, एमिल-नाइट्रेट, आर्स, केम्फ, केमो, कक्यूलस, कुप्रम-आर्स, इलैप्स, ग्लोनइन,

हिपर, इग्नसिया, लेकेसिस, लगेमिसनस, मस्कस, नक्स, एसिड-फस पल्स, भिरेट्रम इत्यादि औषधें प्रधान हैं ।

भय वा मानसिक अस्थिरता हेतु मूर्च्छा में—एकोनाइट, कमो, इग्नसिया, लेकेसिस, ओपियम, भेरेट्रम ।

भयानक दर्द हेतु मूर्च्छा में—एकोनाइट, कमोमिला ।

सामान्य दर्द में मूर्च्छा—हिपर, नक्स-मस्केटा ।

हिस्टिरिया के रोगी का मूर्च्छा—केमोमीला, कक्यूलस, इग्नेसिया, लेकेसिस, मस्कस, नक्स-मसकेटा, नेट्रम म्यूर ।

तरुण पीड़ा किम्बा रक्तश्राव, उदरामय इत्यादि दुर्बलता उत्पादक पीड़ा में मूर्च्छा—कार्बोभेज, हिपर, लेकेसिस, ओपियम ।

ऋतुस्राव के समय मूर्च्छा—एकोनाइट, एपिस, केमोमिला सिमिसिफ्यूगा, कक्यूलस कोनियम, हेलोन, इग्नेशिया लेकेसिस, मस्कस, नक्स मस्केटा, नक्स-मोम, प्लम्बम, पल्स, सल्फर ।

पारा के अपव्यवहार हेतु मूर्च्छा—कार्बो-भेज, हिपर, लेकेसिस, ओपियम ।

एकोनाइट ६-३०—भयानक हृत्कम्प, दिमाग में रक्तसंचार, कान में भन २ शब्द । रोगी को शयनावस्था से खड़ा होने से मूर्च्छा होता है और उस के साथ शीत होना और लाल चेहरा का मुर्दे के ऐसा हो जाना ।

कैम्फर ३०-२००—सर्वांग वरफ के सदृश शीतल। नाड़ी सूत के ऐसा। शरीर मे कपड़ा नहीं रख सकता है।

कार्बो-भेज ३०-२००—निद्रान्त में मूर्च्छा, ऐसा कि विछावन मे रहते हुए भी अथवा प्रात काल में विछावन से उठने के बाद।

कैमोमिला १२-३०—कान में कम सुनाई पड़ना, आँख में अंधेरा आ जाना इत्यादि के साथ मूर्च्छा।

कफ़िया ३-६—सहज से ही उत्तेजित होने वाले व्यक्ति के निमित्त विशेष उपयोगी है। भय हेतु पीड़ा मे एकोनाइट द्वारा फल न मिलन से इस औषध द्वारा फल मिलेगी।

डिजिटेलिस ६-३०—मूर्च्छा के पहले अंधेरा दिखता है और सिर चकराता है। नाड़ी धीर, वमनेच्छा और पाकस्थली मे नितान्त दुर्वलता बोध।

इलाप्स ३-६—मूर्च्छा होने की आदत, विशेषत पट लेटने से अथवा वलगमो के होने से। रोगी मालूम करता है कि सब रक्त मस्तक में जा कर ठहर गया है, इस के साथ हाथ शीतल।

हिपर ६-३०—सन्ध्या के समय सिर-चकराने के साथ मूर्च्छा।

लैकेसिस ३०-२०० – स्त्रीओं के मूर्च्छा होने का स्वभाव। शोक हेतु दिल में दर्द हो कर पीडा। नाडी किंवा स्वांस मालूम नहीं किया जाता है। दम फूलना, सिर चकराना, चेहरा रक्तहीन, वमनेच्छा, शीतल पसीना, आक्षेप, चहुआ अंकड़ जाना, शरीर अंकड़ा हुआ।

मस्कस ३-६—रात में अथवा खुली हवा में मूर्च्छा, इसके साथ फेफड़े में आक्षेप, मूर्च्छा के बाद सिर-पीड़ा।

नक्स-भोमिका ३०-२००—प्रात काल मे वा आहारान्त मे मूर्च्छा, गर्भवती स्त्री और मानसिक परिश्रम से थका हुआ अथवा मद्यादि पान करने वाले पुरुषो के निमित्त उत्तम है।

सल्फर ३०-२००—मध्यान्ह में मूर्च्छा, क्षुधा होने से बरदाश्त नही कर सकता है।

—:※:—
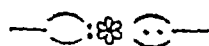
हृत्पिण्ड के रोग में सहकारी उपदेश।

१। हृदरोग में पेट भर के आहार करना नहीं चाहिये।

२। जिससे रोगी को शोक भय, उत्तेजना इत्यादि न हों ऐसा उपाय करना चाहिये।

३। देर तक दम बंध कर के रखना विपदजनक है। दम बन्द करके कोई चीज उठाना नहीं चाहिये।

४। वीर्य्य-क्षय हृद् रोगी के लिये प्रत्यक्ष प्राण हारक है। हृद्रोगी को रतिक्रिया नहीं करना चाहिये। हस्तमैथुन आदि पाप कार्य्य अवश्य परित्याग करना चाहिये।

५। अत्यधिक परिश्रम करना निषेध है। दौड़ना, जोर से चलना, इत्यादि नहीं करना चाहिये।

६। उपवास, रात्रि-जागरण इत्यादि से हृद्रोग की वृद्धि होती है।

७। नाना प्रकार के गरम मसाला, शराब, चाय, कौफी तम्बाकू इत्यादि वर्ज्जन करना चाहिये।

८। हलका और पुष्टिकर खाद्य आहार करना और शान्त धीर भाव से सर्वदा रहना चाहिये।

हृदय-शूल।

(ANGINA PECTORIS.)

रोग परिचय—हृदय को स्नायुसमूह का क्रिया विकार के कारण हृदय मे सविराम शूल दर्द उपस्थित होने से उस को हृदयशूल वा एंजाइना पेक्टोरिस कहते है।

कारण—इस रोग का निश्चित कारण आज तक जाना नहीं गया है। साधारणतः हृदय की कोई यांत्रिक पीड़ा, मेद-वृद्धि, हृदय मे रक्तसंचालन के बाधा, ज्यादा तम्बाकू व शराब पीना, ज्यादा संगम, शोक, भय, दुःख, अजीर्ण रोग, गर्मी रोग के दोष इत्यादि से यह रोग पैदा होता है।

लक्षण—यह एक निहायत कष्टदायक शूल दर्द है। इसका आक्रमण का कोई ठीक समय नहीं रहता है। ज्यादेतर रात में व मेहनत के बाद यह दर्द उपस्थित होता है। अचानक कष्टदायक दर्द उपस्थित होने से रोगी निहायत बेचैन हो जाता है। दर्द आरम्भ हो कर थोड़े ही देर रहता है। कभी २ गर्दन व बायां हांथ की अंगुलीतक दर्द धावा करता है। स्वास-कष्ट, जल्दी २ स्वांस चलना इत्यादि हो कर मृत्यु होगा ऐसा खौफ लगता है। रोगी स्थिरभाव से बैठा रहता है, हरकत करना नहीं चाहता है। नाड़ी क्षुद्र दुर्बल व चेहरा बदशक्ल व बेरौनक हो जाता है।

भावीफल व भोगफल—यह साधारणतः सांघातिक नहीं होता है, आसानी से आराम हो जाता है। प्राय दर्द का आक्रमण आधा घन्टा से दो तीन घन्टे तक रहता है। यह कभी २ अचानक उपस्थित हो कर अचानक ही चला जाता है।

आनुसंगिक उपाय—रोगी को ज्यादा मेहनत करने नहीं देना चाहिये। रोगाक्रमण के समय स्थिरभाव से रखना चाहिये। तम्बाकू, शराब वगैरह कोई गरम चीज व्यवहार नहीं करना चाहिये। शीतल व पुष्टिकर खाद्य उत्तम है।

चिकित्सा :—

एकोनाइट ६-३०—पूर्ण व सबल नाड़ी, घबराहट, मृत्युभय, दर्द अतिशय तेज, बायां हांथ तक दर्द का फैल

जाना, स्वांसरोध होने के कारण छाती में कसावट, और तकलीफ से पसीना होकर तमाम बदन भींग जाता है। डरके कारण रोग।

आर्निका-मन्ट—चोट के कारण दर्द, मेद की ज्यादती।

औरम-मेट ६-३०—हृद के यौंत्रिक रोग, दिल मे खून बन्द होने के कारण रक्ताधिक्य, स्नायविक दुर्बलता, हताशाभाव, स्थिर रहने से वृद्धि, संचालन से व गर्म प्रयोग से आफियत।

आर्सेनिक ३०-२००—दुर्बलता, दिल मे कष्टदायक दर्द, गर्दन व चांदी तक दर्द फैल जाता है, ज्वाला के साथ सूई चुभने की तरह दर्द, सामने के तरफ झुक कर स्वांस लेना पड़ता है। हरकत से दर्द की ज्यादती, ज्यादा बेचैनी, मृत्युभय, मूर्च्छाभाव।

ब्राइयोनिया ३०-२००—मानसिक उत्तेजना वा डर से राग, छाती मे सूई चुभने की तरह वा कतरना सा दर्द, बायां हाथ तक उसका धावा करना, कष्टदायक व जल्द स्वांस, हरकत से रोग का बढ़ना।

केक्टस ३-६—दिल में ज्यादा कसावट, मालूम होता है कि दम बन्द हो जायगा। दिल धड़कना, रात मे व बायां करवट लेटने से उसकी ज्यादती, मूर्छाभाव।

सिमिसिफ्युगा ६-३०—दिल में बहुत तकलीफ के साथ बांये कन्धे में दर्द, बायाँ स्तन के निम्नभाग में दर्द, जरायु-रोग के कारण हृदयशुल।

डिजिटेलिस ३-६-३०—पुराना रोग, विशेषत बुढ़ों का रोग, ज्यादा शोक दुःख व फिक्र से रोग, समय २ अचानक रोग का आक्रमण, प्रतिवार उसके पहले के आक्रमण से ज्यादा तकलीफ होना, दिल में सूई चुभने की तरह दर्द. ज्यादा भय व व्याकुलता, मालुम होता है कि दिल की हरकत बंद हो जायगी, मूर्छाभाव, नाड़ी सुस्त व अनियमित, दिल धड़कना।

डायोस्कोरिया ६-३०—मेदा में स्नायु-शुल, बोल नहीं सकता है, अचानक दिल में दर्द हो कर बायां हाथ तक फैल जाता है। ज्यादा पसीना, दिल की सुस्ती, नाड़ी का लोप, स्वांस-कष्ट।

हाइड्रोसायनिक-एसिड ६-३०—दिल-धड़कना, दिल की सुस्ती व अनियमित स्पंदन, बहुत देर तक निढाल होकर पड़ा रहना, छाती में ज्यादा तकलीफ व स्वांसकष्ट।

लैकेसिस ६-३०-२००—दिल की जगह मे चांप मालुम होनो, दिल-धड़कना, घबराहट, मुर्च्छा भाव, रोगी लेटे रह नहीं सकता है। सिर को सामने झुका कर बैठा रहता है। गले पर स्पर्श बर्दास्त नहीं होता है, उस से दम बन्द होने के भाव होता है।

रस-टक्स ६-३०-२०० — वातरोग वा किसी भारी चीज उठाने के कारण रोग। दिल में दर्द व टाटाना, स्थिर रहने से तकलीफ की ज्यादती, हरकत से आफियत।

स्पाइजिलिया ६-३० — दिल की यांत्रिक पीड़ा, प्रति स्पंदन के साथ दिल में सुई भोकने की तरह दर्द, दहिना तरफ से बायां तरफ में दर्द का चलना, प्रवल दिलधड़कना, हरकत से उस का बढ़ना।

टैबेकम ३-६-३० — चेहरा मुर्दे की तरह, मतली, छाती मे तनाव मालम होना, अचानक दर्द होना, पांव बर्फ की तरह ठंढा, दिल-धड़कना उस के साथ तमाम बदन का कंपना, क्षुद्र व अनियमित नाड़ी।

भिरेट्रम-एल्व ६-१२-३० — किसी निर्दिष्ट समय में बायां पार्श्व में कतरने की तरह दर्द, दर्द के लिये रोगी छटपटाता है, कभी २ दम वन्द होने के भाव, जोर से दिलधड़कना, कपार में ठंढा पसीना।

—०—०—

हृदय की बृद्धि व कठिनता।

(HYPERTROPHY OF THE HEART)

हृदय के पेशी अस्वाभाविक स्थूलता प्राप्त होती है, इस लिये दिल बड़ा कठिन हो जाता है।

कारण — हृदय की ज्यादा क्रिया, तम्बाकू, चाय इत्यादि सेवन, ब्राइट पीडा मे रक्तप्रवाह के रुकजाना वगैरह, से यह रोग होता है। स्त्री से पुरुष को यह ज्यादा होता है

निदान व पैथोलजी—इस से दिल भारी होता है, प्रायः दिल का बायां हिस्सा कठिन होता है।

लक्षण—ष्टेथोस्कोप से दिल की हरकत की ज्यादती और ज्यादा धड़कना मालूम पड़ता है। धमनियों में ज्यादा खून होने के कारण शिराओं में खून की कमी होती है। चेहरा व आंख लाल होती हैं, मालूम होता है कि आंख के ढेले बाहर निकल आयगा। सिर दर्द, सिर घुमना, स्वांसकष्ट, शुष्क खांसी प्रभृति लक्षण होते हैं। नाड़ी पूर्ण कठिन व उछलनेवाली होती है, दहिना खाने ज्यादा फैल जाने से शोथ देखा देता है। परकशन से ज्यादा डल शब्द सुना जाता है।

आनुसंगिक उपाय—रोगी को मेहनत करने नहीं देना चाहिये। मानसिक उत्तेजनादि परित्याग करना चाहिये। रोगी को पुष्टिकर व अनुत्तेजक पथ्य देना चाहिये।

चिकित्सा—

एकोनाइट ६-३०—प्रदाहिक व नया रोग में दिया जाता है। दिल धड़कना, फेफड़े में ज्यादा खून होना, बेचैनी, घबराहट।

आर्सेनिक ६-३०—दुर्बलता, हांफनी, बेचैनी, सिरपीड़ा।

एपिस ३-३०—इस रोग के साथ शोथ व मूत्राल्पता रहने से दिया जाता है।

कैक्टस ६-३०—दिल का बढ़ने के साथ शोथ व दिल में कसावट मालुम होना।

डिजिटेलिस ६-३०—जोर से दिल धड़कना, ष्टार्नम हड्डी के नीचे दर्द, दहिना उदर का बढ़ने के साथ सिर में रक्ताधिक्य।

फेरम-फस ६-३०—शारीरिक रक्ताल्पता व दुर्बलता के साथ दिल-धड़कना, टिउबरकुलोसिस होने का डर।

नक्स-भोमिका ६-३०—कौफी, शराब, वगैरह गर्म चीज पान करना व ज्यादा मानसिक श्रम से रोग।

सिपिया ६-३०—ऋतु की खराबी से रोग में उपकारी है।

स्पाइजिलिया ६-३—दिल का बढ़ना; दहिना खाना फ़ैल जाने से इससे फल होता है।

—:○—

हृदय-रोग का चन्द परीक्षित औषध।

—:o:○:o:—

एगारीकस ६-३०-२००—बुढ़ों का दिल-धड़कना, स्नायवीय उत्तेजना हेतु यह रोग होना।

ऐगु फ्टुरा ६-३०—अजीर्ण दोष मे रोग, बायां करवट लेटने से आफियत।

ऐपिस ६-३०-२००—ज्यादा दम बन्द होने का भाव, मालुम होता है कि हवा के अभाव से मृत्यु होगी, नाड़ी अनियमित, एकसा नहीं, प्रति ३।४ स्पदन के बाद नाड़ी का रुक जाना।

आर्जेन्ट-मेट ३०-२००—दिल का स्नायुशूल।

आर्जेन्ट-नाइट्रस ३०-२००—स्थिर होकर बैठा रहने से मालुम होता है कि दिल बन्द हो जायगा।

आर्निको ६-३०-२००—दिल का अधिक काम, दिल के चारो ओर ज्यादा चर्बी होना।

आर्सेनिक ३०-२००—दिल का रोग के कारण बदन पतला दुबला होना।

ऐसाफिटिडा ३०-२००—दिल सहज ही से उत्तेजित, होता है।

ऐसपेरागस ३०-२००—बुढ़ो की दिल का रोग।

ब्रोमिअम ६-३०—दहिना कर लेट नही सक्ता है, हांफनी।

कैक्टस ६-३०—दिल का धड़ना, दिलकी क्रिया अनियमित, दिल का ज्यादा वेग।

कैप्सिकम ३०-२००—दिल में चर्बी होना, ज्यादा चर्बी वाला लोग का रोग।

कलचिकम ६-३०-२००—तरुण वात रोग के बाद हृदय-रोग। हाइड्रोपेरिकार्डियम वा दिल की गिलाफ झिल्ली में शोथ।

कोनायम ३०-२००—बुढ़ों का कमजोर दिल।

फेरम ३०-२००—ज्यादा रक्ताल्पता।

जेल्सिमियम ३०-२००—रोगी को ख्याल होता है कि हरकत न करने से दिल बन्द हो जायगा, स्नायविक शीत व कंपना, लेकिन बदन गर्म।

ग्रैफाइटिस ३०-२००—दिल के चारो ओर में ठंढक मालूम होना।

ग्रिन्डेलिया ६-३०—स्वांस बन्द होने के डर से लेट नहीं सकता है।

केलि-ब्रोम ३०-२००—सर्वदा चंचल, हमेशा रोगी कुछ न कुछ काम करता रहता है।

केलि-कार्ब ३०-२००—नाड़ी अनियमित, सविराम अथवा द्रुत और दुर्बल।

कैलमिया ६-३०—दिल का गठिया।

लैकेसिस ३०-२००—दिल के वात रोग की शेष अवस्था, बुढ़ों और मतवालों का धमनी मे कंकड़ होना।

लैकनेन्थिस ३०-२०० मालुम होता है कि दिल में दर्द रखा है।

लरोसिरेसस ६-३०—ऐसा मालुम होना कि दिल उलट जायगा, लेटने से आफियत।

लिलियम ३०-२००—मालूम होता है कि दिल मे बहुत ज्यादा खुन है वह खुन निकल जाने ही से आराम होगा। बायां कर लेटने से और खुली हवा मे आफियत।

लोबेलिया ६-३०—मालुम होता है कि दिल हरकत नहीं करेगा।

मस्कस ६-३०—छाती मे दबाव बोध लम्बा स्वांस लेने से आफियत।

म्युरिएटिक-एसिड ३० २००—दिलकी धड़कन चेहरे मे मालुम होना।

कोब्रा ३०-२००—मालुम होता है कि छाती में गर्म लोहा भोक दिया गया और उसके ऊपर बड़ा भारी बोझ रखा गया।

नेट्रम-कार्ब ३०-२००—रात मे बाया कर लेटने से दिल धड़कना।

नेट्रम-म्युर ३०-२००—मानसिक परिश्रम के समय दिल की क्रिया की ज्यादती, दिल का बढ़ना।

पेट्रोलियम ३०-२००—मालूम होता है कि दिल में पत्थर है।

फस्फोरस ३०-२००—दिल का दहिना भाग का रोग, भेनस खून की गति मन्द होना, दिल में चर्बी होना, पांव फूला हुआ, स्वांस-कष्ट।

सैंगुइनेरिया ३०-२००—मालूम होता है कि छाती से गर्म पानी पेट में गिर रहा है।

साइलिशिया ३०-२००—तेजी से चलने के बाद दिल धड़कना।

भाइपेरा ६-३०—दिल के रोग के साथ पेट फूलता व स्वांसकष्ट।

जिंकम ३०-२००—अचानक दिल में झटका देता रहना।

शोणित-रोगसमूह

DISEASES OF THE BLOOD.

रक्तक्षीणता वा एनीमिआ ANÆMIA.

रोग परिचय :—स्वाभाविक शरीर में १००० भाग रक्त में १३० भाग परिमाण लाल कणा रहता है। उस की

कमी हो कर ८० या ९० में परिणत होता है और रक्त में मिला हुआ नमक के भाग वृद्धि पाती है; इस अवस्था को एनीमिया कहते हैं। इस से शरीर पीला हो जाता है, मुखमण्डल और आंख में रक्त देखा नहीं जाता है, नाड़ी मृदु और द्रुत होता है, शोथ-भाव, हृत-कम्पन देखा जाता है, हृद्-स्थान में हुस हुस शब्द मूर्च्छा व श्वांसप्रश्वांस में कष्ट देखा जाता है।

कारण:—असंख्य है, अत्यन्त रक्तश्राव अनुपयुक्त आहार, अजीर्णदोष, शरीर के अन्यान्य जीवनरक्षक तरल पदार्थों के ज्यादा क्षय, यथा—ज्यादा दूध और शुक्र-पात, उदरामय, अत्यन्त पीब निकलना इत्यादि। बहुत काल रोग भोग, सीसा, पारा प्रभृति किसी प्रकार विष द्वारा शरीर विषाक्त होना इत्यादि।

चिकित्सा : इस अधिकार में आर्स, चायना, हेलोनिअस, हाइड्रास्टीस, केल्केरिआ, कार्वो-भेज, सिना, फेरम, इग्नेसिया, लेकेसिस, लाइको, नेट्रम, नक्स, फस, फस-एसिड, पल्स, सिपिया, साइलीसीया, सल्फर और मेरेट्रम प्रधान औषधें हैं।

यदि अत्यन्त रक्तश्राव अथवा और किसी प्रकार के जीवनरक्षक तरल पदार्थ के नाश हेतु यह रोग हो तब—चायना, नक्स-भोमिका, केल्केरिया, कार्वो-भेज, हाइड्रास्टीस, एसिड फस उत्तम है।

कोई कठिन तरुण रोग हेतु यह रोग होने से—केल्केरिया, कार्बो-भेज, चायना, हिपर नेट्रम-म्युर उत्तम है।

आर्सेनिक ३०-२००—शीघ्र २ अत्यन्त दुर्बल और निढाल हो जाना, अत्यन्त अस्थिरता, मृत्यु-भय।

चायना ३०-२००—अत्यन्त रक्तस्राव, शुक्र-क्षय, उदरामय, श्वेत-प्रदर या अत्यन्त दूध निकलना इत्यादि कारण से पीड़ा होने से चायना महौषधि है।

हलोनिअस ३०-२००—सिर में भारबोध और इस के साथ दृष्टिहीनता, मूर्च्छा, कान में भन भन शब्द, रात में अनिद्रा रहने से और जननेन्द्रिय के यन्त्र समूह की पीड़ा से एनिमिया होने से यह उत्कृष्ट औषध है।

फेरम ३०-२००—चेहरा और समस्त शरीर रक्त-शून्य किन्तु सामान्य मात्र हिलने डालने से ही चेहरा रक्तवर्ण होना। हृद्स्थान में हुस २ शब्द स्टेथोस्कोप द्वारा सुना जाता है। शरीर शीर्ण।

नेट्रम-म्युर ३०-२०० मैलेरिया जनित रक्तहीनता, पेट फूला, कब्ज, मलद्वार के संकीर्णता, नितान्त दुःखितभाव।

नक्स-भोमिका ३०-२००—सर्वदा आलस भाव से जीवन निर्वाह अथवा मदिरापान; रात्रि-जागरण, वेश्यागमन

इत्यादि से परिपाक-यंत्र की पीड़ा हो कर अनिमिश्रा होने से विशेष उपकारी है।

एन्टिम-क्रूड ६-३०—जीभ के ऊपर मलाई की तरह सफेद लेप, पाकस्थली की दोष, उस के साथ भूख न होना और ढेकार आना।

पलसेटीला ६-३०-२००—प्रथम रजोदर्शन विलम्बित किम्वा प्रथम ऋतु हो कर फिर रुक जाना, तलपेट में अड़कने की तरह या दबाने की तरह दर्द, बार बार हृतकम्पन, सर्वदा शीतबोध, खुली हवा में रहने की इच्छा, ऋतु अल्प और देर में और अल्पकाल स्थाई, खराब स्वाद, तेल या चर्बीयुक्त खाद्य परिपाक नहीं होता है, रोने वाला स्वभाव।

सिपिया ३०-२००—ऋतुबन्द, बार बार श्वेत-प्रदर का स्राव, हिस्टिरिया, प्रबल वेग से सिर पीड़ा, जरायु में दर्द, कमर से उदर तक प्रसव की तरह से दम बन्द ऐसा होता है, मालूम होता है कि भीतर से सब चीज योनिद्वार से निकल जायगा। नाक और गालों के ऊपर पीलापन दाग, क्रन्दनशील स्वभाव, पेशाब में दुर्गन्ध, उस में नीलापन बदला पड़ता है।

शोथ वा ड्रप्सी।

DROPSY.

रोग परिचय :— शरीर के कोई स्थान में अस्वाभाविक भाव से जल संचय होने से उसको शोथ कहते हैं; समस्त शरीर के या शरीर के किसी अंश के सेलुलोर टीसु समूह में इस प्रकार के जल संचय होने से उसको "एनासारका" कहते हैं। सामान्य किसी सीमाबद्ध स्थान में शोथ होने से उसको "इडीमा" कहते हैं, जैसा आंख के पपुटे में शोथ होना। पेफड़ादि यन्त्रों में जल संचय को भी इडीमा कहते हैं। छाती के अन्दर प्लुरा से जल संचय को "हाइड्रोथोरैक्स", "पेरिकार्डियम" में जल संचय होने से "हाइड्रोपेरिकार्डियम", पेट मे पेरिटोनीयम नामक सिरस झिल्ली में जल संचय होने से "एसाइटिस", मस्तिष्क के सिरस झिल्ली में जल संचय को "हाइड्रोकेफेलस" कहा जाता है। सर्वांग में शोथ होने से उसको सर्वाङ्गिक शोथ वा जेनेरलड्रप्सी कहते है।

कारण – शिरा और कैपिलारी समूह नाना कारण से अत्यधिक रक्त से परिपूर्ण होने के हेतु उन सबों का गात्र से पानी चूता रहता है और उससे उन सबों का चारो तरफ में जल संचय होता है, यथा :—टिउमर, बढ़ा हुआ ग्लैंड

समूह, गर्भयुक्त जरायुके दवाव भेइन वा शिराके ऊपर पड़ना यकृत की पीड़ा, दिल की पीड़ा, पुराना प्रदाह, किडनीकी पीड़ा, रक्त दूषित होना, एनीमिआ, चर्म रोग दब जाना, इत्यादि नाना कारण से यह पीड़ा होती है।

लक्षण—फूलन शोथ के विशेषत सर्वाङ्गिक शोथ के प्रधान और सुस्पष्ट लक्षण है। फूला हुआ स्थान कोमल, तलतला होता है। चर्म सफेदापन, चमकीला और शीतल होता है। फूला हुआ स्थान में अंगुली द्वारा दबाने से गहरा हो जाता है अगुली उठा लेने के बाद भी कुछ समय तक वह दाग रहता है। क्षुधा ह्रास होता है, अरुचि होता है, प्यास की वृद्धि होती है। पेशाब लालवर्ण और बहुत थोड़ा होता है। हृत्कम्पन, स्वासकष्ट, दुर्बलता और कब्ज वर्त्तमान रहता है।

चिकित्सा—सर्वांगिक शोथ में डिजिटेलिस; एपिस, एपोसाइनम, एसेटिक-एसिड, आर्सेनिक, ब्राइयोनिआ, चायना प्रधान है।

उदर में शोथ—एपोसाइनम, आर्सेनिक, चायना, उत्तम है।

दिमाग में जलसञ्चय—हेलिवोरस, मार्क्युरिअस वेलेडोना, एपिस।

छाती में जलसंचय—ब्राइयोनिया डिजिटेलिस आर्सेनिक, हेलिवोरस।

हृत्पिण्ड में जलसञ्चय—डिजिटेलिस, स्पाइजिलिया, आर्सेनिक।

एसेटिक-एसिड ३-६-३०—चर्म मोम की तरह फीका, तमाम बदन में शोथ, उदरामय, बदन सूखा, ज्यादा प्यास।

एपिस ६-३०-२००—यह शोथ रोग का एक प्रधान औषध है। शरीर के किसी अंग के या सर्व शरीर के शोथ। शरीर के नाना स्थान में ज्वालायुक्त डंक मारनेवाला दर्द। मूत्र अल्प और ज्वालायुक्त। अत्यन्त स्वांसकष्ट, ऐसा मालूम होता है कि एक वार स्वांसत्याग करके फिर नहीं ले सकेगा। प्यास न होना। ठंढ प्रयोग से आफियत।

एपोसाइनम ३-६-३०—शोथ रोग में यह भी उत्कृष्ट औषध है, शोथ के साथ अत्यन्त प्यास किन्तु पानी पीने से वमन हो जाना। टाइफ़ाएड, लालज्वर, कोढ़ा, यकृतादि की पोड़ा, कुइनाइन का अपव्यवहार इत्यादि हेतु शोथ, स्वांसकष्ट, मूत्राभाव, उदरामय। लेटनेसे ललाट के सम्मुख भाग फूल जाना। नाखून नीलापन, नाड़ी अत्यन्त दुर्बल।

आर्सेनिक ३०-२००—सर्वांग में शोथ, जलोदरी, शरीर विशेषतः मुख-मंडल के रंग नीलापन या सफेदापन हाथ पैर का शोथ, अत्यन्त दुर्बलता। रोगी के दम बन्द

हो जाने के ऐसा होता है, विशेषतः रात में चित होकर लेटने से, अत्यन्त प्यास, व्याकुलता और मृत्युभय।

आइओनिया १२-३०-२००—सर्वाङ्गिक शोथ, पैर फूला, दिवाभाग में, फूलन की वृद्धि, राति में कमी। छाती में जलसंचय पसली में दर्द, आंख का निचला पपुटा फूला ओष्ठ नीलापन, शुष्क और फटा २, अत्यन्त प्यास, पेशाब अल्प, कब्ज।

चायना ६-३०-२००—रक्तस्राव के बाद, यकृत और प्लीहा की पीड़ा हेतु जलोदरी और सर्वांगिक शोथ, वृद्ध वयस की पीड़ा, चेहरा रक्तहीन।

कल्चिकम ६-३०—मुखमण्डल पीला व फूला, पैर फूला, चर्म शुष्क और शीतल अथवा रात में कभी शीतल कभी गर्म, हृत्पिण्ड का स्पन्दन, पेशाब अल्प और कष्टदायक।

डिजिटेलिस ६-३०—कोमल तलतला फूलन, अंगुली द्वारा दबाने से गहरा हो जाता है। चेहरा रक्तहीन ओष्ठ नीलापन, नाड़ी दुर्बल अनियमित। ठेहुना और पोथे में शोथ।

हेलिबोरस ६-३०-२००—नया शोथ, मस्तिष्क में शोथ, अत्यन्त दुर्बलता, समझने की शक्ति की कमी होना, चेहरा पीला, उदरामय, मल मांड़ की तरह, पेट में दर्द, लेटने से श्वासकष्ट, पेशाब का रङ्ग गाढ़ा।

फेरम ३०-२००—रोगी रक्तहीन, शरीर शीर्ण, आहारान्त में वमनेच्छा, कब्ज ।

लैकेसिस ३०-२००—यकृत, हृतपीण्ड और प्लीहा के पीड़ा हेतु शोथ । बायां डिम्बकोष फूला, उस में दबाने के सदृश और सुई भोकने के सदृश दर्द । जरायुप्रदेश में दबाव बरदास्त नहीं कर सकता है, चेहरा फीका, पेशाब गाढ़ा रक्त का या काला, निद्रान्त में पीड़ा की वृद्धि ।

लाइकोपोडियम ३०-२००—देहका ऊपरांश सूक्ष्म किन्तु निम्नांश फूला, एक पांव गर्म, दूसरा पांव शीतल, मूत्र अल्प, उस में ईंट के चूर्ण की तरह लाल रङ्ग गाद पड़ता है, मद्यपानादि के बाद रोग होने से उपकारी है ।

सलफर ३०-२००—शोथ में ज्वाला, बदन में नीलापन दाग, चर्म खुश्की, फोड़ा, फुन्सी, खुजली इत्यादि किसी प्रकार के चर्म रोग दब जाने से पीड़ा होतो उपकारी है ।

टेरावेन्थ ३-६—पेशाबमें में रक्त रहनेसे प्रयोग होता है ।

सहकारी उपाय—सर्वदा गात्र वस्त्रावृत रखना चाहिये, गीली हवा और सीड़ गृह एकदम त्याग करना चाहिये, जमीन पर लेटना नहीं चाहिये । पथ्य हलका होना चाहिये, दूध सुपथ्य है । प्यास दूर करने के वास्ते ठंढा पानी पी सकता है । नमक न खाना बहुत उपकारी है । सान्द्र बहुत उपकारी है ।

कण्ठमाला वा स्क्रफुलोसिस।
(SCROFULOSIS.)

लक्षण—यह धातुगत पीड़ा है। इस पीड़ा में ग्रीवा-देश में चहु के नीचे, बगल में और कक्षा में सख्त २ गिलटियां देखी जाती हैं। उन गिलटियों में कोई कोई पक जाती हैं और कोई २ कठिन हो कर रह जाती है। उन मे दर्द होता है। पकी हुई गिलटी में जखम हो जाता है और वह जखम जल्दी नहीं सूखता है।

कण्ठमाला धातु के चिन्ह—अल्प वयस में बुद्धि की तेजी, ओष्ट और नासिका की स्फीति, आंख नीलापन और आंखो की पुतलियां फैली हुई, वृहत मस्तकमें रूसी और नाना प्रकार के इरपशन (उद्भेद), केश सीधा और सख्त, अंगुलियां भद्दा और टेढ़ा-मेढ़ा, पेट मोटा, मांस पेशियां कोमल और ललतला। स्क्रफुला रोग मातापिता से सन्तानादि में हो सकता है अथवा यह पीड़ा स्वोपार्जित भी हो सकता है। वाल्यावस्थामें कंठमाला वा उपदंश दोषयुक्त स्त्री लोगों के दूध पीने से स्वस्थ शिशुओं को क्रमशः यह धातुगत दोष उत्पन्न होते देखा जाता है। इसके साथ निम्नलिखित उत्ते-जक कारण रहने से रोग और भी जल्दी बढ़ जाता है:—सीड़ गृहमें वास, पुष्टिकर और स्वास्थ्यकर खाद्य का अभाव, धुप

और खराब हवादार या बन्द गृह में दीर्घकाल रहना, मादक द्रव्य सेवन और सर्वदा आलस्य में जीवन यापन इत्यादि।

चिकित्सा—एसाफिटीडा, ओरम, बेडियागा, बैराइटा-कार्ब, बेल केलकेरिया-कार्ब और फश, सिस्टस, कोनायम, हिपर, आइओडियम, लाइका, मारक्युरिअस नेट्रम-म्युर, नाइट्रिक-एसिड रसटक्स, सिपिया, साइलीसिया, सलफर, थेरीडियन इस रोग मे उत्कृष्ट औषध है।

बेलाडोना ६-३०—रक्तपूर्ण शरीर; बचापन ही में बुद्धि की तेजी, आँख नीला; गिलटियों का प्रदाह; आंख के पपूटे प्रदाहयुक्त और आंखों मे जखम। ओष्ठ, नाक जीभ और टन्सिल फूला; गले में दर्द के हेतु निगलने में कष्ट।

कैलकेरिया-कार्ब ३०-२००—कंठमाला दोषयुक्त शिशुओं के निमित्त यह औषध विशेष उपयोगी है विशेषत: जिनके सिर बड़ा और चांदी बन्द होने में देर होता है; मेरूदण्ड टेढ़ा, हड्डियां नरम, गिलटियों का पक जाना, नाक में लाल रङ्ग फूलन, राक्षस की तरह क्षुधा, सूखा और कोमल चर्म्म, चेहरा सफेदापन है।

हिपर-सलफर ६-३०-२००—कण्ठमाला धातु के लोगों के चक्षुप्रदाह, आंखों के पपूटे से पानी या पीब निकलना, गिलटियां का पक जाना।

मारकुरियस ६-३०-२००—गिलटियों का फूल जाना सख्त रहना या पकजाना, अस्थियों के सन्धियां और आंख की पीड़ा में और रोगी के बदन में नाना प्रकार का इरपशन वा जखम रहने से यह उत्तम औषध है।

साइलिशिया ३०-२०० सिर बडा, चांदी खुला-हुआ; गिलटियों का बड़ा होना और पकजाना, अस्थियों का जखम होना और सड़ जाना; कब्ज, मल कठिन और कष्ट से निकलना, मल का थोड़ासा निकलकर फिर ऊपर चढ़जाना।

सलफर २००—सर्व प्रकार कण्ठमाला दोषयुक्त रोगी के निमित्त उपयोगी है विशेषत जिस में चर्म्म रोग के आधिक्य, गिलटियां बड़ा, और कठिन होता है और पकजाता है, सहज से ही सर्दी लगता है। शिशु सर्वदा बिमार रहता है; देह अपुष्ट, शारीरिक और मानसिक दुर्बलता।

थेरिडियन ३०-२००—यह औषध स्कफुला रोग में अति उत्कृष्ट है। जब दूसरी २ दवाइयों से फायदा नही होता है तब यह दी जाती है, रेकाइटिस, केरीज, निक्रोसिस इत्यादि के वर्तमान में यह औषध फायदा करता है, कान के पीछे खुजली; प्राचीन सर्दी और नाक से दुर्गन्ध युक्त मोटा और पीलापन स्राव होना।

सहकारी उपाय —कण्ठमाला-रोगी के निमित्त मछली और मांस अच्छा नहीं है। भात, रोटी दूध, उत्तम, फल, परिष्कार वायुसेवन आवश्यक है। किसी प्रकार का मादक द्रव्य सेवन निषेध है।

स्कार्भी SCARVY.

उदभिद-खाद्य के अभाव से शरीर की पोषण क्रिया अच्छा तरह से नही होने से यह पीड़ा होती है। अति मांस-भोजी मनुष्यो को ही यह पोड़ा अधिक होती है।

एनीमिया वा रक्तहीनता, मसूढ़े से रक्तस्राव, मसूढ़ा का फूलजाना, दन्तमूल का अलग हो जाना, मुह मे दुर्गन्ध, शरीर के किसी २ स्थान मे रक्त जमा होना वा किसी स्थान से रक्तस्राव होना इत्यादि लक्षण देखा जाता है।

चिकित्सा —रोगी को उत्तम वायुपूर्ण गृह मे रखना चाहिये, उस को वहुत परिमाण से नेम्बु का रस खिलाना चाहिये। मूली का कच्चा पत्ता खाने से विशेष उपकार होता है, घी या कद्दु, सलाद और परवल वहुत उपकारी है।

माक्यु रिअस, कार्वोभेज, एसिड-म्यूर इस विमारी मे उपकारी औषध है।

कर्णरोग-समूह।
(DISEASES OF THE EAR.)

कनसूहा वा कर्णमूलप्रदाह वा मम्पस।
(MUMPS OR PAROTITIS.)

रोग-परिचय—कर्णमूल अथवा कर्ण के निम्नस्थ लार निकलनेवाली गिल्टी (Parotid gland) का प्रदाह को कनसूहा वा मम्पस कहते हैं।

कारण—शीतकाल अथवा वर्षाकाल मे यह रोग बहुत लोगों को होता है। यह रोग युवक युवती व बालक बालिकाओं को ज्यादा होता है। ठंढ लगना ही इस रोग का प्रधान कारण है।

लक्षण—रोग प्रकाश होने के कबल में हाथ पैर मे दर्द, शीतबोध, ज्वरभाव वगैरह लक्षण प्रकाश पाता है। पीछे बुखार ज्यादा होता है और कर्णमूल की गिल्टी फूल जाती है और दर्द के साथ कठिन हो जाता है। यह क्रमश: फूलते २ गर्दन तक फूल जाता है और ४।५ दिन तक क्रमश: बढ़कर फिर क्रमश: कम होते २ अदृश्य ही जाता है। इस प्रदाह मे प्राय: पीव पैदा नहीं होता है। कभी २ देखा जाता है कि यह प्रदाह कर्णमूल से हट कर स्त्रियों के स्तन अथवा

पुरुषों के पोथे मे प्रदाह पैदा करता हैं और तब इसको इस रोग का मेटास्टेसिस (Metastasis) कहते हैं। यह निहायत कष्टदायक रोग है।

आनुसंगिक उपाय—रोगी को जिस से ठन्ढ न लगे तत् प्रति ध्यान रखना चाहिये। मम्पस मे किसी किस्म का प्रलेप न देना ही अच्छा है। अगर देना जरूरी हो तो तीसी का पुलटीस ही सब से अच्छा है। रोगी को चबाकर खाना पडे ऐसा कोई पथ्य न देना चाहिये। साबू, वार्ली, दुध इत्यादि देना चाहिये।

चिकित्सा :—

बेलाडोना ६-३०—कर्णमूल ज्यादा फूला व चमकीला लाल, विशेषतः दहिना तरफ के कनसूहा; कर्णमूल प्रदाह; अचानक फूलन कम हो जाकर दपदपाते हुये सिरदर्द और प्रलाप बकना; ज्यादा उंघाय, किन्तु नींद नही होती है। तेज ज्वर, आंख व चेहरा लाल।

हायोसायमस् ६ ३०—यदि रोग स्थान परिवर्त्तन करके दिमाग में जाय; प्रलाप; हाथ पैर के स्पन्दन और पटकना इत्यादि स्नायविक लक्षण; स्थिरदृष्टि; चेहरा पागल की तरह।

मारकियुरिअस ६-३०—यह इस रोग का प्रधान औषधि है। ठंढ लग कर पीड़ा होना, गिलटी अत्यन्त

कठिन और फला; चवाने मे और निगलने मे अत्यन्त कष्ट, पसीना होता है, किन्तु उस से कुछ भी आराम मालुम नहीं होता है, मुंह से बहुत परिमाण मे लार निकलना है और श्वास दुर्गन्धी होती है। सब लक्षण ही रात मे और गोली हवा और वर्षा के दिनो मे वृद्धि पाता है।

पलसेटिला ६-३०—जव रोग स्थान परिवर्त्तन करके स्तन को आक्रमण करता है, अन्डकोष के प्रदाह और फूलना, प्रातःकाल मे खराब स्वाद और सिर चकराना।

रस-टक्स ६-३०—ठण्ढ अथवा गीली हवा से पीड़ा हाथ पैर मे दर्द; ज्यादा बेचैनी; बैंगनी रंग के फूलन; मस्त दर्द, टाइफाएड लक्षण।

हिपर-सल्फर ६-३०—जब गिलटी मे, पीब उत्पन्न हो जाये तब यह औषधि प्रयोग से गीलटी फट जाता है।

साइलिसिआ ३०-२००—गिलटी से पीव होने की करीना होने से विशेष उपकार करता है। जखम सुखाने के निमित्त साइलिसिया विशेष उपकारी है।

कार्वो-भेज और आर्सेनिक ३०-२००—रोग स्थान परिवर्त्तन करके अन्डकोषमे प्रकाशित होने से दिया जाता है।

आर्सेनिक, चायना, लैकेसिस और क्रियोजोट—दूषित प्रकार का सम्प्राम् और उसमें पीव होने मे विशेष उपकारी है।

कर्णप्रदाह।

(OTITIS—INFLAMMATION OF THE EAR.)

रोग परिचय—कानके भीतर या बाहर प्रबल स्थानिक दर्द के साथ ज्वर होने से कर्णप्रदाह रोग निर्णय किया जाता है।

कारण – ठंढ लगना, सर्दी लगना इत्यादि से यह रोग होता है, किन्तु कान के निकट के अन्यान्य यन्त्रों के प्रदाह भी कान मे फैल जा सकता है। कोदवा, लाल ज्वर वगैरह के साथ भी कान मे प्रदाह होते देखा जाता है।

लक्षण —प्रथम में कानमें खुजलाहट होता है और कान लाल हो कर फुल जाता है जिस से कान की सुराख करीब बन्द हो जाता है। कान में सख्त दर्द होता है, कान को स्पर्श नही किया जाता है। चबाया नहीं जाता है, कान में कम सुनाई पड़ती है। रोग न आराम होने से पुराना हो जाता है। अक्सर इस से कान में पीब हो जाता है। रोग बहुत दिन रहने से कान में जखम व बधिरता होती है।

आनुसंगिक उपाय—कान के चारो ओर में गरम पानी का सेंक देने से आफियत होती है। कान में रूई डाल कर बन्द कर रखना अच्छा है। बेलाडोना मदर-

टिंचर १० बुन्द एक औंस ग्लिसरिन में मिला कर कान में डालने से फायदा होता है ।

चिकित्सा:—

एकोनाइट ६-३०—कान लाल, फूला व गर्म, कान मे सख्त दर्द, बेचैनी, घबराहट, ज्वर, ठंढ लगने से रोग ।

बेलाडोना ६-३०—कान बहुत लाल व फूला, उसमें दपदपानेवाला दर्द, ज्वर ।

आर्निका ६-३०—चोट के कारण कर्णपूदाह । सान्निपातिक लक्षण ।

मार्कुरियस ६-३०-२००—कान में बहुत दर्द, रात को दर्द की ज्यादती, कान में आवाज होना, कान से खून मिला हुआ बदबूदार पीव निकलना, कान मे फोड़ा फुन्सी होना । सिर में ज्यादा पसीना ।

कैमोमिला १२-३०—सर्दी से पूदाह होना, ज्यादा दर्द दर्द के मारे रोगी पागल की तरह हो जाता है, मिजाज चिरचिरा ।

पलसेटिला—कान में दर्द, कान बन्द हो गया है ऐसा मालूम होना, शीतबोध, शाम को दर्द की ज्यादती, कौदवा के बाद कान का पूदाह ।

रसटक्स, डलकामेरा, टेलुरियम, इत्यादि दवायें लक्षणानुसार फायदा देती है ।

कर्णशूल वा ओटैलजिया ।

(OTALGIA—EARACHE)

रोग-परिचय—कान के स्नायु की ज्यादा उत्तेजना के अनुसार समय २ बहुत कष्टदायक दर्द होता है. उसी को कर्णशूल कहते हैं ।

कारण—ठंढ लगना, सर्दी लगना इत्यादि कारण से यह रोग होता है । कोदवा, लालज्वर, चेचक वगैरह के साथ भी यह रोग हो सकता है ।

लक्षण—इस रोग में किसी प्रकार के प्रदाह देखा नहीं जाता है । कान मे बिजली चमकने की तरह दर्द होता है ।

आनुषंगिक उपाय—इस रोग में कान मे किसी प्रकार विषैला तेल वा वस्तु देना नहीं चाहिये । आक्रान्त कान के चारो ओर में गर्म पानी का सेंक देने से आफियत होती है । "मुलेन ओइल" कान में डालने से अनेक समय फायदा मिलता है ।

चिकित्सा :—

अतिशय कष्टदायक दर्द में—एकोनाइट, कैमोमिला, काफिया ।

दर्द अचानक आकर अचानक चला जाने से—बेला ।

एकोनाइट ६-३०—हिम, ठंढ, सर्दी लगकर बीमारी,

अथवा कान का किसी प्रकार का पुराना स्राव बन्द हो कर कर्णशूल ।

बेलाडोना ६-३०-२००—कान मे छेद करने की वा खोदने की तरह दर्द, दर्द एकाएक आकर एकाएक चला जाता है। कान में सनसन् सब्द, शोरगुल बरदास्त नहीं होता है। सिर व आंख मे दर्द ।

कैमोमिला ६-१२—हिम लगकर वा पसीना बन्द होने से रोग दर्द असहनीय, रात मे और खुली हवा मे दर्द की ज्यादती, स्वभाव चिरचिराहा ।

डल्कामेरा ६-३०—ठण्ढ लगने से रोग, रात में शयनावस्था में और खुली हवा से, ठण्ढ से व गीली हवा से रोग की ज्यादती ।

मार्कुरियस ६-३०-२००—कान मे पीव होना, कान में टीस मारना, सख्त दर्द, ज्यादा पसीना लेकिन उस से जरासा भी आफियत न मालूम होना; रात में, शीतल हवा से और भी रोग की वृद्धि ।

पलसेटिला ६-३०-२००—कान में छूरी भोकने की तरह दर्द मालूम होना, कान बन्द हो गया है ऐसा मालुम होना, कान से कोई चीज जोर से बाहर निकल रहा है ऐसा मालूम होना, सामको दर्द की ज्यादती, शीत बोध ।

कान पकना वा कान से पीव गिरना।

(OTORRHŒA—RUNNING OF THE EAR)

रोग परिचय कान के प्रदाह से यह रोग होता है। कान की बलगमी झिल्ली मे जखम हो कर क्रमशः कान के पदाह (Drum पर्दा) तक पहुंचता है। कान मे जखम होने के कारण ही से पीव गिरता है।

कारण— कण्ठमाला धातु व गर्मी रोग के धातुवाले लोगों को ज्यादेतर यह रोग होता है। कान के पुराना प्रदाह से यह रोग होता है।

लक्षण— छोटे २ बालक बालिकाओं को यह रोग ज्यादा होता है। इस से कान से पीव निकलता है। कभी २ पीव के साथ खून मिला हुआ रहता है। कभी २ पीव एकदम सड़ा व बदबूदार होता है। इस के साथ कान मे दर्द रहता है।

भावीफल— यह रोग क्रमशः पुराना होता जाता है, और इस से बधिरता उत्पन्न हो सकती है। अनेक समय इस से दिमागी रोग भी हो सकता है।

आनुषंगिक उपाय— इस रोग मे किसी प्रकार का बाहरी प्रयोग करना उचित नहीं है। प्रतिदिन सुबह को गर्म पानी मे कच्चा दूध मिलाकर कान को धो कर भीतर से

कान का पानी पोंछ देना चाहिये कान में पिचकारी देना बहुत खराब है।

चिकित्सा—

बांयां कान से श्राव—फेरम सेंट।

सड़ा बदबूदार पीवश्राव औरम आर्स कार्बो-भेज कष्टिकम, मार्कु रियस सल्फर सरिनम।

बलगम मिला हुआ पीवस्राव—आर जेन्टम नाइट बोराक्स

सड़ा मांस को तरह श्राव—थुजा।

सब्जापन पीला श्राव—इलैप्स।

श्राव किसी स्थान में लगने से छाले पड़ जाता है—लाइको।

ज्यादा दिन पीव श्राव के बाद रक्तश्राव—चायना।

पतला बदबूदार श्राव—आर्स, ग्राफाइट, साइलि, टेलूरियम।

ज्यादा परिमाण में श्राव—आर्स, कैल्क-कार्ब, पल्स।

पीव व खून के साथ पतला श्राव—ग्रैफाइटिस।

आर्सेनिक ३०-२००—कान से ज्यादा परिमाण में जख्म पैदा करनेवाला व बदबूदार पीव श्राव, ज्वाला व खुजलाहट होना, कान बैठ जाना, कम सुनना, कान के अन्दर सनूसन् शब्द होना।

औरम-मेट ३०-२००—गर्मीरोग का दोष के कारण कान बहना, कान मे ज्वाला व खुजलाहट, रात को बदन का कपड़ा खोलने से व स्थिर रहने से वृद्धि, संचालन से, धोने से व खुली हवा से आफियत । कान के स्राव किसी तरह से बन्द नहीं होना चाहता है।

बेलाडोना ६-३०—कोदवा, लालज्वर प्रभृति के बाद पीवस्राव होने से यह उपयोगी है। कान में सन २ शब्द, कान बठ जाना या कम सुनना, गर्दन की गिल्टयों का बढ़ना, उनमे दर्द ।

कैल्केरिया-कार्ब ३०-२००—कण्ठमाला धातु के लोगों की पीड़ा मे यह उपयोगी है । दहिना कान से वदबूदार पीवस्राव ।

ग्रैफाइटिस ३०-२००—पुरानी बिमारी मे यह उपयोगी है। कान स पतला पानी की तरह बदबूदार रस निकलना, रस व रक्त गिरना।

हिपर-सल्फर ३०-२००—पारा वगैरह के दोष व कण्ठ माला धातु वाला रोगी, दुर्गन्धी पीवस्राव, कान में सन २ शब्द व दपदपाना, कान से कम सुनना ।

कैलि-आयोड ३०-२००—निहायत दुर्गन्धी व तेज स्राव के साथ कनपट्टी की हड्डी मे छेद करने की तरह दर्द ।

लाइकोपोडिअम ३०-२००—कण्ठमाला दोष जनित पीड़ा, लालज्वर के बाद कान से पीव जाना, कान से ज़खम करने वाला पीवस्राव, कम सुनना ।

मार्क-सल ६-३०-२००—गर्मी दोषजनित रोग, कान से बदबूदार पीवस्राव और कान के बाहर में जखम होना, कम सुनना, कान में छेद होने की करीना ।

नाइट्रिक-एसिड ३०-२००—पारा व गर्मी दोषजनित रोग निहायत बदबूदार स्राव ।

पल्सेटिला ६-३०-२००—कोदवा के बाद कान से स्राव, कान से बलगम की तरह चीज वा गाढ़ा, सब्जापन पीला पीव गिरना, कम सुनना, कान बन्द होने की तरह बोध कान में फाड़ने की तरह व सुई मारने की तरह दर्द ।

साइलिशिया ३०-२०० - कान से पानी की तरह पतला व बदबूदार स्राव कान के बाहरी भाग का फूलना, कान बन्द रहता है व खोलने के वक्त शब्द होता है कण्ठ-मालाधातु ।

सल्फर ३०-२००—कान से, विशेषत. बायां कान से पीवस्राव, पीव बदबूदार, चर्मरोग वा फोड़ा दब जाने से वा जख्म सूख जाने के बाद कान से पीव गिरना ।

—:०:—

कर्णनाद वा टीनीटस् औरियम ।
(TINNITUS AURIUM)

अधिकांश कर्णरोगके साथ ही कानके भीतर नाना प्रकार के शब्द सुनाई देता है । यह कर्णनाद उन्हीं विमारियों का एक लक्षण मात्र है। किन्तु कभी २ देखा जाता है कि किसी प्रकार के कर्णरोग न रहने से भी कान के भीतर नाना प्रकार शब्द सुनाई देता है। ऐसा होने से उसको एक पृथक रोग ही समझा जाता है ।

(१) हिसींग अर्थात् हिस २ शब्द होने से—ग्र फाइटिस, क्रियोजोट, मिउर-एसीड़, नक्स-मोम, साइलीसिया, टिउक्रियम ।

(२) मधुमक्षी की तरह गुण २ शब्द होने से—वेज एमोन-कार्व, कस्टीकम, ग्रैफाइटिस, हाइयोस, आइयोड नेट्रम-मिउर, पल्स ।

(३) मेघगर्जन की तरह शब्द होने से—केलकेरिया, ग्राफाइटीस, प्लैटिना, औरम, कष्टिकस, चेलीडोनियम ।

चायना ६-३०—कभी २ हिस २, कभी २ घन्टे की ध्वनि अथवा गाना की तरह शब्द ।

कारबो-भेज ३०-२००—ज्यादा कुनाइन खाने से रोग (कैलकेरिया, पलसेटिला)

मारकिउरिअस ६-३०—जब यह रोग माता के बाद होता है और बहुत पसीना होता है तब दिया जाता है।

नक्स-भोमिका ३०-२००—जब ठंढ लगकर यह रोग होता है और प्रातःकाल में वृद्धि होना है।

पल्सेटिला ६-३०—जब कोदवा के बाद यह पीड़ा होती है, सन्ध्याकाल में वृद्धि।

रस-टक्स ६-३०-२००—जब पानी में भीगने से, शीतल जल में नहाने से अथवा कोई भारी चीज उठाने से बीमारी होती है, विश्राम की अवस्था मे वृद्धि।

सल्फर ३०-२००—जब पुराना जखम सूख जाकर या किसी प्रकार चर्मरोग दबजाकर पीड़ा होती है।

बधिरता वा डेफनेस।

(DEAFNESS)

रोग-परिचय—किसी वजह से कान में सुनाई न पड़ने से उसको बधिरता कहते हैं।

प्रकार व कारण—

(१) स्नायविक बधिरता—जिस कारण से देह का तमाम पेशी व स्नायु की दुर्बलता व शिथिलता पैदा होती है वही कारण से कान की बधिरता उपस्थित होती है, इस प्रकार बधिरता मे दर्द वगैरह कोई तकलीफ नहीं होती है।

(२) अन्य प्रकार रोग जनित बधिरता—दिमागी तब-
दिली, अन्दरूनी कान के अवरोध, कानके पर्दा वा ड्रम में ज़खम
वा छेद होना, कान के स्नायु का पक्षाघात, कान के नया व
पुराना प्रदाहयुक्त रोग, आघात लगना, ज्यादा कुनाईन खाना
इत्यादि से बधिरता होती है। कान में मैल जमना, उच्च
शब्द श्रवण, ठंढ लगना प्रभृति से भी यह रोग होता है।

भाविफल—रोगी का वयस, खानदानी दोष, अन्यान्य
पीड़ा, दिमागी लक्षण इत्यादि के ऊपर भाविफल निर्भर
करता है। एकाएक बधिरता होने से व उस के साथ दर्द
रहने से आराम की आशा की जाती है। जन्म से बधिरता
होने से और वृद्धवयस में यह रोग होने से आराम होना
कठिन है।

चिकित्सा—

कर्णस्राव के साथ बधिरता—मार्कुरियस, पल्स, सल्फर,
कैलकेरिआ, लाइको, कष्टिकम।

सर्दी के कारण बधिरता—पल्स, मार्क, कैमो, कैल्क,
आर्स, कार्बो-भेज, ग्रैफाइट।

कोदवा, चेचक वगैरह के बाद बधिरता—पल्स, कार्बो
भेज, मार्क।

रक्ताधिक्यजनित बधिरता—बेल, सल्फर, साइलि-
नक्स।

स्नायविक वधिरता—आर्निका, फस, पेट्रोल।

जखम वा स्राव रुकने से बधिरता—आर्स, सल्फ, कस्टि, ऐंटिम-क्रुड।

कुनाईन के बाद इस्तेमाल के कारण वधिरता—कार्वो-भेज, नाइट-एसिड, कैल्केरिया।

वृद्धवयस में वधिरता—आर्निका, पेट्रोल।

सिर्फ मनुष्यस्वर न सुनना—आर्स, फस, साइलि, सल्फ।

आर्निका ६-३०—आघातादि जनित वधिरता, कान से रक्तस्राव, कान में दर्द, कान में खुञ्की, ऊंचा शब्द वर्दास्त न कर सकना।

आर्सेनिक ३०-२००—सान्निपातिक ज्वर में वधिरता, मनुष्यस्वर सुना नहीं जाना है, कान बन्द ऐसा मालूम होना, कान में गजन व घण्टे की तरह आवाज, कान के चारो ओर में लाल दाने का उभरना।

बेलाडोना ६-३०-२००—सान्निपातिक वा लाल ज्वर के वाद वधिरता, ठंढ लगने से कम सुनाई पड़ना, मालूम होता है कि कान के सुराख चमड़े से ढंका है, कान में गर्ज्जन व घन्टे की तरह आवाज।

कैल्केरिया-कार्ब ३०-२००—कण्ठमाला धातु के लोगो के रोग मे यह उपकारी है। कम सुनना विशेषतः

कुइनाइन से ज्वर बन्द होने के बाद वधिरता होने से यह उपकारी है।

कोनायम ३०-२००—कान मे सड़ा काला रङ्ग का बलगम व पीव वा चमकीला लाल रङ्ग का मैल संचित हो कर कान मे कम सुनना वा वधिरता।

चायना ३०-२००—कान मे गर्ज्जन व भनभन शब्द, मालूम होता है कि कान मे कोई चीज है। कान से बदबूदार स्राव, कान मे दर्द।

ग्रैफाइटिस ३०-२००—वधिरता के साथ बाहरी कान खुश्क, शोरगुल में वा गाड़ी मे सवार होने से वेश सुना जाता है, अपनी बोली कान में प्रतिध्वनित होती है।

जेलसिमियम ३०-२००—सामयिक वधिरता के लिये उपकारी है।

हिपर सल्फ ३०-२००—कान मे सोंसो आवाज, दप दपाना, कम सुनना, मालूम होता है कि कान मे फोड़ा हुआ है, कान मे पीव होना।

मार्कुरियस ६-३०-२००—कम सुनना, सर्वप्रकार शब्द से ही कान मे फरफराहट मालूम होता है, कान मे जखम व दर्द।

नाइट्रिक-एसिड ३०-२००—पारादि के बेजाय इस्त-माल से रोग, निहायत बदबूदार पीव निकलना, कान में रुकावट के साथ गर्जन की तरह शब्द व दर्द।

फसफोरस ३०-२००—बधिरता के साथ पांव ठंढा, मनुष्य--स्वर न सुना जाता है, कान में शब्द का प्रतिध्वनि होना, सान्निपातिक ज्वर के बाद रोग।

पल्सेटिला ६-३०-२००—कौदवा के बाद बधिरता, कान बन्द हो गया है ऐसा मालूम होना, कान में काला रङ्ग का कठिन मल जमा होना।

साइलिशिया ३०-२००—मनुष्यस्वर न सुना जाता है, पुर्णिमा मे वधिरता की वृद्धि, कान वन्द हो जाना व कभो २ खुलासा होना, कभी सुनता है, कभी कान में सामान्य शब्द बर्दास्त नहीं होता है।

सल्फर ३०-२००—मनुष्य-स्वर न सुनना, बार बार कान बन्द हो जाना, विशेषत. भोजनकाल में व नाक छिड़ने मे कान से भोंभों आवाज, बार २ सर्दी लगना।

चक्षु रोगसमूह
DISEASES OF THE EYES.

—:o:—
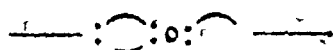
अक्षिपत्र वा पपुटे के प्रदाह ।
BLEPHARITIS OR INFLAMMATION OF THE LIDS.

यह पीड़ा कईएक प्रकार के होता है, यथा .—(१) पपुटे के साधारण प्रदाह—ठंढादि लग कर होता है। इस मे पपुटे रक्तवर्ण और स्फीत होता है, उस मे दर्द होता है।

(२) पपुटे के फ्लेगमोनस इनफ्लामेशन (Phlegmonous Inflammation) वा पपुटे के फोड़ा।

(३) ऐंकाइलोपस (Anchylopes) वा आंख के अन्तः कोणमें "लैक्रिमेल सैक (Lachrimal Sac) वा अश्रुस्थली के निकट फोड़ा होना।

(४) ब्लेफाराइटीस मार्जीनेलीस (Blepharitis marginalis)—आंख के पपुटे के किनारे के प्रदाह को कहते हैं, प्रदाह सामान्य होने से पपुटे के किनारे रक्तवर्ण दिखाई देता है और रात में पपुटे सट जाता है। यह प्रदाह वृद्धि पाकर पपुटे के समस्त किनारे दानेदार, मोटा और कड़ा हो जाने से उसको टाइलोसिस (Tylosis) कहते है। प्रदाह पपनी का मूलदेश तक फैल जाने से पपनी गिर-जाता है।

(५) ट्रिकिएसीस (Trichiasis) वा सुवरवाल — पपनी टेढ़ा होकर आंख के अन्दर घुसजाना ।

(६) डीस्टीकिएसीस अर्थात् पपनी के दो कतार हो जाना ।

चिकित्सा—

पपुटे के साधारण प्रदाह के निमित्त, एकोनाइट—ठंढ लगने के हेतु पीड़ा । एपीस—पपुटे में शोथयुक्त फूलन और ज्वालायुक्त डंक मारने की तरह दर्द । बेल—पपुटे चमकीला लाल विशेषतः दहिना आंखके पपुटे, रोशनी बर्दास्त न होना । कैमोमिला ठंढ लगने के बाद रक्तवर्ण फूलन । पल्स—सिर के सर्दी के साथ यह पीड़ा । रसटक्स—पीड़ा का बायां तरफ से दहिना तरफ में फैल जाना, वर्षात के पानी में भीगने से पीड़ा ।

आंख के पपुटे के फोड़ा के निमित्त, हिपर-सलफ—डंक मारने के सदृश और दपदपानेवाला दर्द, ठंढ लगने से वा स्पर्श करने से दर्द की वृद्धि । लैकेसीस—फोड़ा बैंगनीरंग का होना । साइलिसीया—जब फोड़ा में पीब हो जाय या उस मे जखम हो जाय ।

पपुटे के किनारे के प्रदाह की चिकित्सा—

एलुमिना—आंख शुष्क, प्रातःकाल में वृद्धि । आस-

निक—आंख से ज्वालाजनक और जखम करनेवाला पानी निकलना। कैलकेरिया वो आयोडियम—पपुटे फूला वो कठिन। कष्टिकम—आंख के भौंह वा ऊपरवाला पपुटे के ऊपर मस्से। य्युफ्रेशिया—आंख से तेज पीव, ज्वालाजनक पानी, और तेज व गाढ़ा श्लेष्मा निकलना, उस से गाल पर छाले पड़ जाना।

ग्रैफाइटिस—आंख के भौंह में खुश्क चोइयां पैदा होना और पपुटे के किनारे में खुरंट पैदा होना। आंख के रोग और पपुटे फटा २। मस्तक और कान के पीठ पर रसयुक्त एकजिमा।

हिपर-सल्फर—मुखमण्डल अथवा अन्यान्य स्थान में छोटा २ फोड़ा होना।

मार्क-सल—पपुटे में जखम, पपुटा लाल, विशेषतः ऊपर वाला पपुटा। रात में, गर्मी में, ठंढ से और आग की गर्मी मे पीड़ा की बृद्धि।

एसिड-फस—पपुटे के किनारे फूला व लाल, भौंह का गिरना।

सोरीनम—प्राचीन पीड़ा, आंख से दुर्गन्धी स्राव, कंठमाला धातु।

पलसेटिला—सन्ध्यासमय वो गर्मगृह में पीड़ा की वृद्धि, खुली हवा में आराम बोध।

सिपिया—आंख के किनारे में बरें की तरह छोटे २ फुन्सियां।

स्टैफिसेग्रिया—पपुटे के किनारे का खुश्क और मोटा होना

सलफर—पपुटे के किनारे मोटा वो पपुटे के भितरी भाग मे रेत की तरह छोटे २ दाने, चेहरे पर फुन्सियां।

ट्रिकिएसिस वा सुवरबाल के लिये—

बोराक्स—कभी २ उपकार करता है। ग्रैफाइटिस—क्षतान्त चिन्ह में उपकारी है। सिपिया—भौंह का गिर जाना, पपुटे के किनारे में जखम वो आंख में पीब गिरना। थुजा—भूसी की तरह चोंइटा वा खुरंट, पपुटे पर विशेषतः भौंह के चारो तरफ लगा रहता है।

सम्बन्ध—नई बिमारी में ६-३०—शक्ति को और पुराना बिमारी में २००—शक्ति की औषधि व्यवहार करना चाहिये।

गुहौरी वा अञ्जिनि।

(STYES OR HORDEOLUM.)

आंख के पपुटे के किनारे के ऊपर जो छोटे २ फोड़े होते हैं उसी को अञ्जनि कहते हैं। फोड़ा एक या तीन चार इकट्ठा निकलता है। कभी २ एक अच्छा हो कर

दूसरा निकलता है, फिर कभी २ एकट्ठा भी दो तीन निकलता है। इस में अत्यन्त कष्ट होता है और फोड़ा पक कर पीव निकल जाने से ही आराम मालुम पड़ता है। हमेशा अक्षिजनि होता रहने से उससे मेइबामाअन ग्रन्थी भी आक्रान्त होता है, उस मे मेदापजनन वा खड़ी मिट्टी के सदृश अवस्था प्राप्त होने से उसको मेइबोमीअन-सीस्ट (Meibomian cyst) कहते है। यह सिस्ट पपुटे के भितरी भाग के किनारे मे सफेद वर्ण या फुन्सी की तरह दिखाई पड़ता है।

चिकित्सा :—

पल्स ६-३०—प्रायः फायदा देता है। इस के व्यवहार से पीड़ा की वृद्धि नहीं हो सकती है।

हिपर-सल्फ ३०—पीव होने से दिया जाता है।

स्टैफिसेग्रिया ६-३०—यदि अक्षिजनि मे पीव न हो कर सख्त गोटी की तरह हो तो उपकार करता है।

ऊपरवाला पपुटे के अक्षिजनि के निमित्त—कस्टिक, मार्कुरियस, एसिड फस, सल्फर उपकारी है। नीचे के पपुटे के अक्षिजनि के निमित्त फसफोरस, रसटक्स, स्टेफिसेग्रिया उपकारी है।

सहकारी उपाय—पहले २ गर्म पानी से सेक देना चाहिये। फोड़ा बड़ा होने से पुल्टिस लगाना चाहिये। और पकने पर अपने आप न फटे तो सुई से उसका देना चाहिये।

चक्षु प्रदाह वा अपथैलमिया।
(OPHTHALMIA.)

यह कनजांकटाइमा (Conjunctiva) वा आंख की गिलाफ झिल्ली के प्रदाह है। यह पीड़ा कई प्रकार की होती है। यथा —

(१) कनजाकटाइमा के रक्ताधिक्य (Hyperæmia of the Conjunctiva) वा आंख में रक्ताधिक्य—इस मे आंख की अवरक झिल्ली की रक्त वहनेवाली नलियों में अत्यधिक रक्त जमा होने के हेतु आंख बहुत लाल हो जाता है और आंख दुखता है।

(२) केटारेल अपथेलमिया (Catarrhal ophthalmia) वा सर्दी-जनित साधारण आंख आना। इस से आंख बहुत लाल हो जाता है, आंख बहुत दुखता है, आंख के भीतर रेत की तरह कड़कड़ाता है, रोशनी के तरफ ताक नही सकता है और आंख से बहुत पानी निकलता है, पीव होता है। रात में आंख सट जाता है।

यह रोग छूआछूत से होता है। आंख मे धुला, बालु, कीड़ादि गिरना, ठंढ लगने से अथवा कोदवा, माता लाल ज्वर इत्यादि के साथ यह पीड़ा हो सकता है।

(३) पूरुलेन्ट अपथेलमिया वा पीवयुक्त चक्षु प्रदाह (Purulent ophthalmia)—यह अति भयानक पीड़ा है, पहले पहल आंख में खुजलाहट, रक्तसंचय और शुष्कता

देखाई देता है। बाद आंख से पीव निकलना रहता हैं, आंख मे ज्वाला वो गर्मी मालुम पड़ता है और इसके साथ ललाट और पुटपुरी में बहुत दर्द होता है। पीडा की क्रमिक वृद्धि के साथ आंख में रक्तस्राव होने के हेतु आंख के सफेद भाग मे लाल और नीला दाग दिखाई पड़ता है। पपुटे फूल जाता है और कभी २ उलट जाता है। प्रदाह अत्यन्त कठिन होने से आंख के अन्यान्य अंश में भी यह प्रदाह फैल जाकर आंख को बिलकुल नष्ट कर देता है। आंख मे फूला वा माड़ा (Pannus) पड़ना इसके सर्व्व प्रधान उपसर्ग।

यह पीड़ा साधारणत. निम्न लिखित दो प्रकार की होती है—

(क) गनोरिएल अपथेलमिया (Gonorrhoel Ophthalmia)—गनोरिआ वा सुजाक के पीव आंख में प्रवेश करने से यह पीड़ा उत्पन्न हो कर अति शीघ्र ऐसा की चौबीस से अड़तालिस घन्टे मे आंख नष्ट हो जा सकता है।

(ख) अपथलमिआ नियोनेटोरम (Ophthalmia Neonatorum)—अर्थात नवजात शिशु का पीवयुक्त चक्षु प्रदाह। यह अति कठिन रोग है। जन्म के तीन, चार रोज बाद ही यह पीड़ा आरम्भ हो सकती है। पहले पपुटे लाल होते हैं और आंख से थोड़ा २ स्राव होतो रहता है। शिशु आंख मुंद कर रहता है, खोल नही सकता है। क्रमश. पपुटे बहुत

फूल जाता है और उससे वहुत पीव निकलता है वाद में पीड़ा के वाद सब लक्षण और उपसर्ग प्रकाश पाता है। माता की श्वेतप्रदर अथवा गनोरिया पीड़ा रहने से शिशु को यह पीड़ा होने की विशेष सम्भावना रहती है।

(४) पसटुलर अपथेलमिया (Pustular Ophthalmia) वा फुन्सीवाला चक्षु प्रदाह। इस रोग में कनजांकटइभा मे एक या दो छोटा रसपूर्ण फुन्सी होता है। कभी २ यह फुन्सी अपने आप सूख जाता है और कभी २ फट जा कर ज़ख़म हो जाता है। यह पीड़ा अनायास से आराम होती है।

(५) रोहा वा ग्रैनिडलर अपथेलमिया (Granular Ophthalmia or Trachoma)—इस बिमारी मे आंख के पपूटे के निम्नांश मे छोटे २ दाने दिखाई पड़ते हैं। आंख से पानी निकलता है, आंख मे रेत गिरने के सदृश दुखता है। रोशनी सहा नही जाता है। उपरोक्त दाने को अङ्गरेजी मे ग्रेनिडल्स (Granules) कहते है। यह पीड़ा अति कठिन है, प्राचीन होने से बहुत कष्ट से आराम होता है।

यह दाने के घिसावट से कर्णियां के स्वच्छता नष्ट होकर कर्णियां घिसा हुआ कांच की तरह अस्वच्छ और सफेद हो जाता है। कर्णियां के ऊपर इस किसीम के दाग होने को फूल वा माड़ा कहते हैं। इस फूल का अङ्गरेजो नाम पैन्नास (Pannus) है।

चक्षु प्रदाह की चिकित्सा —

एकोनाइट ६-३०—सूखी ठंढी हवा अथवा उत्ताप लगने के हेतु नई पीड़ा, अत्यन्त तेज दर्द के साथ आंख बहुत लाल होना और फुल जाना। ज्वर, देह में ज्वाला।

एपिस ६-३०-२००—आंख के पपुटा शोथ के साथ फूला हुआ, खासकर ऊपरवाला पपुटा, आंख में ज्वालायुक्त डंक मारनेवाला दर्द।

आरजेन्टम-नाइट्रस ६-३०-२००—आंख में विशेष कोई कष्ट नहीं होता है किन्तु आंख से बहुत सा पीव निकलता है, आंख के पपूटे बहुत फूला रहता है। अफथैलमिया-नियोनेटोरम् और रोहा के लिये यह औषधि विशेष फलदायक है। इस औषधि का प्रथम या तृतीय ट्रीटुरेशन का ५, ६ ग्रेन अथवा ३० शक्ति के ५, ६, बूंद एक औन्स पानी में डाल कर इस लोशन को आंख में दिन मे दो तीन दफे डालने से विशेष उपकार होता है।

आर्सेनिक ३०-२००— आंख बैंगनी रंग का होना, आंख में अत्यन्त ज्वाला और कष्ट के साथ पतला, जखम पैदा करनेवाला स्राव निकलता है, अत्यन्त प्यास व बेचैनी।

बेलाडोना ६-३०—तरुण चक्षु प्रदाह, रोशनी वो शब्द सहा नहीं जाता है, आंख अत्यन्त लाल, आंख से

गर्म पानी निकलता है या आंख, बिलकुल सूखा रहता है, दपदपानेवाला सिर दर्द, आंख मे अत्यन्त दर्द ।

कैलकेरिया ३०-२००—कण्ठमाला दोप से आंख के प्रदाह मे अति उत्तम औपधि है, कर्णिया के अस्वच्छता (opacity) वा आंख के काला जमीन के ऊपर सफेद २ दाग ।

इउफ्रेशिया ३-६-३०—तेज आंसू बहुत परिमान से तेज और गाढ़ा स्राव होना, उससे पपूटे और गाल मे छाले पड़जाता है, माड़ा पड़ना, रोहा ।

ग्रैफाइटिस ३०-२०० —कण्ठमाला दोप से पुराना चक्षु-प्रदाह, पीव निकलना, आंख मे माड़ा. आंख के बाहरी कोण का फट जाना व पपनी का गिरजाना ।

मारकिउरियस ६-३०—पतला, तेज स्राव, पपुटे अत्यन्त फूला, आंख मे कतरने के सदृश या ज्वालायुक्त दर्द, गर्म्म गृह ठंढी हवा सन्ध्याकाल और रात में वृद्धि । आंख के सफेद जमीन पर फुन्सिया, जखम, कण्ठमाला वा सूजाक जनित आंख का प्रदाह ।

हिपर-सल्फ ३०-२००—कण्ठमाला वा गर्मी पीड़ा जनित चक्षु प्रदाह, अत्यन्त पीव स्राव, पपुटे फूला, स्पर्श—सहा नहीं जाता है। दपदपानेवाला दर्द, गर्म प्रयोग से आफियत, ठंढी हवा से वृद्धि, आंख में जखम ।

लाइकोपोडियम ३०-२००—अपथैलमिया-नियोनेटोरम में विशेष उपकारी है, पपूटे फूला, पीव स्राव

नेट्रम-म्युर ३०-२००—आर्जेन्टम-नाइट्रस के अत्यधिक व्यवहार से कुफल के निमित्त उपकारी है।

नाइट्रिक-एसिड ३०-२००—गर्मी रोग अथवा पारा के विष शरीर में रहने से यह औषधि अतिशय फलदायक होता है। गनोरियल-अपथैलमिया में भी यह औषधि उपकारी है।

पलसेटिला ६-३०-२००—सर्दी वा बात जनित चक्षु प्रदाह प्रमेह का स्राव रुक जाने के हेतु चक्षु प्रदाह, अपथैलमिया-नियोनेटोरम, साम को वृद्धि, खुली हवा मे आफियत।

रसटक्स ६-३०—आंख में छोटे २ फुन्सियां, कान के पीछे की गिल्टियां का बढ़ना, पानी मे भिगने के हेतु पीड़ा, बहुत सा पीव या पानी निकलना।

सिपिया ३०-२००—जरायु के पीड़ा के साथ चक्षु रोग, प्रातःकाल और सन्ध्याकाल मे वृद्धि।

सलफर ३०-२००—सलफर के विशेष लक्षण वर्तमान रहने से अथवा अन्यान्य औषधि के व्यवहार से फल न मिलने से प्रयोग होता है। तीर भोंकने की तरह तेज दर्द,

रात में वृद्धि, चर्म रोग, कण्ठमाला-धातु, प्रातःकालीन अतिसार, ठंढा पानी से बदन धोने से पीड़ा की वृद्धि।

सहकारी उपाय—आंख में तकलीफ देनेवाली तमाम चीज से आंख को बचाना चाहिये। रोगी को अन्धेरा कमरा में रखना अच्छा है। दिन में दो तीन बार सहने योग्य गर्मपानी या दूध और पानी मिलाकर आंख धोने से अच्छा होता है। ज्वर रहने से पथ्य विषय में सावधानता के आवश्यक हैं। जब तक आंख बिलकुल अच्छा न हो तबतक धूप, धुला इत्यादि से आंख को बचाना चाहिये, इसलिये नीला या हरा चस्मा या परदा व्यवहार करना चाहिये।

गर्म पानी में थोड़ा सा बोरिक-एसिड डालकर उस पानी से फलानेल या रूई भिगा कर आंख में सेक करने से बहुत उपकार होता है। तीन ग्रेन अरगाई रोल एक आउन्स डिष्टिल वाटर में मिला कर लोशन बनाकर आंख में रोज तीन चार बार डालने से बहुत जल्द आंख अच्छी हो जाती है। प्रोटार गोल लोशन भी बहुत फायदेमन्द है।

रोहा के लिये—दो ग्रेन जिंक-सल्फ और पांच ग्रेन बोरिक एसिड एक औन्स डिष्टिल वाटर में मिलाकर लोशन बनाकर आंख में डालने से फायदा होता है। इसके लिये काष्टिक लोशन भी अच्छा है। दो ग्रेन काष्टिक एक आउन्स डिष्टिल वाटर में मिलाने से काष्टिक लोशन बनता है।

रात में आंख में "येला अयेन्टमेन्ट" रूई की बत्ती के जरिये सुरमा की तरह से लगा देने से आंख सटता नहीं। दो ग्रेन येलो मार्करी एक आउन्स भेसलीन में मिलाने से यह अयेन्टमेण्ट बनता है।

अफथेलमिया में मछली, मांस व मीठा खाना नहीं चाहिये।

अर्द्ध दृष्टि वा हेमिओपिया।

(HEMIOPIA)

रोग-परिचय—किसी चीज का आधा हिस्सा दिखाई पड़ने से उसको अर्द्धदृष्टि कहते हैं।

चिकित्सा

सिर्फ अर्द्धांश दिखाई पड़ना—औरम, डिजिटैलिस, फसफोरस ।

दहिना हिस्सा दिखाई पड़ना—साइक्लेमेन, लिथियम, कार्ब, लाइकोपोडियम ।

बायां हिस्सा दिखाई पड़ना—वोभिष्टा, कैल्केरिया, म्युर-एसिड, नेट्रम-म्युर ।

बेलाडोना ६-३०—एक चीज तीन दिखाती है । किताब पढ़ने के समय लाइन सब टेढ़ा दिखाता है।

कष्टिकम ३०-२००—ठढ लगने से आंख के पेशी का पक्षाघात के लक्षण दिया जाता है।

एगारिकस ३-६-३०—ज्यादा लिखने पढ़ने का काम करने से पीड़ा ।

चेलिडोनिअम ६-३०-२००—दूरदृष्टि रोग, लिखते के समय अत्तर सव अस्पष्ट देखना ।

युफ्रेशिया ६-३०—ठंढ लगने के कारण आंख के स्नायु का पक्षाघात होने के कारण यह रोग होने से दिया जाता है ।

जेलसिमिअम ६-३०—डिफथिरिया रोग के वाद आंख के पपुटे के पक्षाघात और उसके साथ गले के पेशी के प्रक्षाघात रहने से दिया जाता है ।

फसफोरस ६-३०—ज्यादा सहवास के कारण रोग में दिया जाता है ।

नक्स ६-३०—मैंदा की खरावी के साथ रोग, तम्वाकू; गांजा इत्यादि गर्म चीज के इस्तमाल से रोग ।

द्वि-दर्शन वा डिप्लोपिया ।

(DIPLOPIA.)

रोग-परिचय—एक चीज दो दिखाई पड़ने से उसको द्वि-दर्शन कहते हैं । दोनों आंख एक साथ समानभाव से काम न करे तो एक ही समय में उभय आंख से भ्रमपूर्ण

दृष्टि-ज्ञान लाभ हो सकता है। दिमागी रोग, यकृत-पीड़ा, गठिया, आंख में गिल्टी होना इत्यादि कारण से यह रोग हो सकता है। रोशनी के किरण "रेटिना" के एक ही स्थान में न पड़ने के कारण ऐसा दृष्टि-भ्रम होता है।

चिकित्सा—

आर्जेन्ट-नाइट ६-३०—आंख के अन्दर के पेशी का पक्षाघात, निकट की चीज साफ देखाई नहीं देती है।

ऑरम-मेट ३०-२००—आंख ठेलकर बाहर निकल रहा है ऐसा बोध होना।

रातौंधी वा हिमारोलोपिया।

(HIMEROLOPIA)

इस रोग में रात मे दिखाई नही पड़ती है। चिकित्सा द्वारा यह पीड़ा आरोग्य होती है किन्तु कोई रोगी को आराम होने मे देर लगता है।

चिकित्सा—आरजेन्टम-नाइट्रिकम, बेल, चायना, हायोसायमस, मार्क्युरियस, लाइकोपोडियम, पलसेटिला, स्ट्रामोनियम, भेरेट्रम, सलफर, इत्यादि इस रोग मे उपकारी है।

दिनौंधी वा निकटालोपिया ।

(NYCTALOPIA.)

चिकित्सा—फस, साइलिसिया, सल्फ, मार्क्युरियस, कोनायम, जेल्स; नक्स, पल्स, स्ट्रामो उपकारी है ।

—:o:⁀:o:—

मोतियाविन्द वा केटारेक्ट ।

(CATARACT.)

अक्षिमण (आंख का शीशा Lens) की स्वच्छता नष्ट होने से उसको कैटारेक्ट वा मोतियाविन्द कहते हैं। पिउपिल वा आंख के पुतली के भीतर से दृष्टि करने से ही कैटारेक्ट के ओपेसिटी (opacity) अर्थात धुआं वा सफेद सा रङ्ग मालुम पडता है। यह पीड़ा के आरम्भ में रोगी दूर के वस्तु अस्पष्ट देखता है, उसके बाद अस्वच्छता जितना बढ़ती जाती है, दृष्टि उतनी ही कम होती जाती है। अवशेष मे कैटारेक्ट खूब पोख्ता होने से कोई वस्तु दिखाई नही पड़ता है।

चिकित्सा—कैटारेक्ट पोख्ता होने से विज्ञ चिकित्सक द्वारा अस्त्र चिकित्सा कराना ही अच्छा है। होमियोपैथिक औषध व्यवहार से भी फल लाभ होता है।

एमन-कार्ब—दहिना आंख के कैटारेक्ट । आईटा-कार्ब—कण्ठमाला धातु के लोग के रोग। कैनाबिस, कष्टिकम

बार २ आंखको रगड़ना और उससे कुछ आराम मालूम होना। क्रोनायम—वृद्धों का कैटारेक्ट। लाइको—टाइफास् ज्वर के वाद और ऋतुस्राव बन्द होकर पीड़ा। युफ्रेसिया सलफर—शिशुओं का कैटारेक्ट।

सिनारेरिया-मेरिटिमा—इसका मदर टिंकचर आंख में प्रयोग करने से भी वहुत फल मिलता है।

दृष्टिक्षीणता वा एमब्लायोपिया।

(AMBLYOPIA)

यह रोग अक्सर देखा जाता है। इस के स्पष्ट कोई कारण निर्णय किया नहीं जाता है। सव चीज स्पष्ट दिखाई पड़ती है, ऐसा मालूम होता है कि कुहासा के भीतर से देख रहा है। कभी २ आंख के सामने काला, चमकीला इत्यादि रंगका नाना प्रकार की विन्द २ चीजें वा चिंगारियां उड़ती हुई देखी जाती है। इस रोग के कारणों में, दीर्घकाल रोग के सेवाशुश्रुषा करना व रात्रि-जागरण, प्रबल रोशनी में अनेक समय रहना, अधिक पाठ करना विशेषतः दीया को रोशनी में, मानसिक चिन्ता, हस्तमैथुन, अपरिमित स्त्री-सहवास, दर्शन-स्नायु की पीड़ा इत्यादि प्रधान है।

चिकित्सा—

एकोनाइट ३-६—सिर चकराना वो अचानक दृष्टि की अन्धता, सव चीज अस्पष्ट दिखाई पड़ना।

औरम ३०-२००—आंख के सामने काला २ बिन्द दिखाई पड़ना; अर्द्धदृष्टि मात्र, अर्द्धांस दिखाई पड़ना।

वैराइटा-कार्ब ३०-२००—वृद्ध मनुष्य की अन्धता ; आंख की दुर्बलता, विशेषतः सन्ध्याकाल मे।

बेलडोना ६-३०—पढ़ने के समय मालूम होता है कि अक्षर सब कांप रहा है, आंख की पुतली फैली हुई ; दीया के चारो तरफ मे लालवर्ण मण्डल दिखाई पड़ता है ; रोशनी बरदास्त नही होता है।

बेप्टिसिया ६-३०—आंख निस्तेज, ज्योति हीन ; प्रातः काल में आंख के सामने परदा सा मालूम होना।

कैल्केरिया ३०-२००—आंख के सामने धुंधलापन, झिलमिली सा मालूम होना विशेषतः पढ़ने के समय या भोजन के बाद आंख के सामने काला २ बिन्दु दिखाई पड़ता है; आंख में दबाव या ठंढापन मालूम होना; रोशनी से अत्यन्त डरना।

चेलिडोनिअम ६-३०-२००—दृष्टिशक्ति के ह्रास; धुंधलापन ; लिखने वो पढ़ने के समय मालूम होता है कि अक्षरसमूह एकट्ठा हो जा रहा है ; आंख के सामने जगमगाना, स्याली र[illegible]ज का देखाई पड़ना।

कष्टिकम ३०-२००—अचानक और अकसर आंख के

ऊपर जालासा मालूम पड़ना और दृष्टिहीनता, आंख के सामने कुहासा या काला २ सूत की तरह मालूम पड़ना।

चायना ६-३०-२००—दृष्टिशक्ति की कमजोरी, रोगी सिर्फ निकट की चीज का ढांचा देखता है, अक्षर वेरङ्ग दिखाई पड़ता है और उस के चारो तरफ में सफेद कोढ़ सा दिखाई पड़ता है। आँख में धुआं सा मालूम पड़ना, आंख के सामने चमकीला और काला २ विन्दु देखना ।

सिमिसिफ्युगा ३-६-३०—दोनों आंख के गोला के बीच मे टीस मारनेवाला दर्द, आंख के सामने काला काला विन्दु दिखाई पड़ना, एक चीज दो देखाई पड़ती है।

जेलसिमियम ६-३०—कोई चीज पर स्थिर भाव से ताकने से आंख बन्द हो जाता है, गरदन के तरफ व कंधे के तरफ सिर हिलाने से दोहरा दृष्टि होना, सिरचकराना के साथ बिलकुल अन्धा होना, धुंधलापन ।

हायोसायमस ६-३०-२००—पुतली का फैल जाना, कमर, आंख और पपुटे के ऐंठन होना, टेढ़ी नज़र। दोहरा दृष्टि, और रातौंधी, ऐसी दृष्टि होना कि सब चीज लाल या असली कद से बड़ा दिखाई पड़ना ।

इगनेसिया ६-३०—अधिक सहवास करने के हेतु स्त्रियों की क्लान्त दृष्टि और दृष्टिहीनता, पढ़ने के वक्त

आंसू आने की तरह धुंधलापन मालूम पड़ता है, दृष्टि के सामने सफेद चमकता हुआ टेढ़ाटेढ़ो दिखाई पड़ना।

लाइकोपोडियम ३०-२००—सन्ध्याकाल में रतौंधी हो जाना, अर्द्धदृष्टि, आंखों के सामने परदा सा मालूम पड़ना, टाइफस के बाद दृष्टिहीनता, लिखने के समय बदली सा मालूम पड़ता।

मारक्युरियस ६-३०-२००—आंख के सामने कुहासा की तरह बोध। आंख ज्योतिहीन, आंख के पपुटे नाचता है। रोशनी वो आग के तरफ ताक नहीं सकता है।

फसफोरस ६-३०-२००—सूर्य्य की किरण में अचानक दृष्टिहीनता या जगमगाहट, रोशनी के तरफ देख नहीं सकता है, आंख के सामने अंधेरा या काला २ विन्दु या चिंगारियां मालूम पड़ना, अधिक सहवास करने के हेतु पीड़ा।

पलसेटिला ६-३०-२००—मालुम होता है कि धुआं या कुहासा के भीतर से देख रहा है, आंख के ऊपर जाला सा मालुम पड़ना, सन्ध्याकाल में वृद्धि।

सलफर ३०-२००—आंख में ज्वाला, आंख के सामने जाला सा देखाई पड़ना, सूर्य्य का किरण सहा नहीं जाता है, आंख के सामने काला २ विन्दु की तरह चीज उड़ती रहती है। चांदी, हथेली और पैर के तलवा में गर्म्मी मालूम होना।

फसफोरस ६-३०-२००—वृद्धों की दृष्टि क्षीणता के लिये उत्तम है।

—:○:—

निकट दृष्टि वा मायोपिया।

(MYOPIA.)

रोग-परिचय —इस रोग में रोगी निकट की चीज ही को अच्छी तरह देखता है, दूर की चीज साफ नजर नही आती है। इस रोग में आंख के ढेले के सम्मुख-पश्चात व्यास रेखा स्वभाविक आंख की उक्त रेखा से लम्बी होती है इसलिये दृष्टि वस्तु का किरण रेटिना से प्रतिमूर्त्ति उत्पादन नही कर सकता है किन्तु रेटिना के सामने कुछ दूर में रहता है और इस कारण से दुर की चीज नजर नहीं आती है। माता को यह रोग रहने से सन्तान को यह रोग हो सकता है। ज्यादा पढ़ना ज्यादा सूई का काम करना इत्यादि से भी यह रोग होता है। चस्मा व्यवहार से इस रोग में फायदा होता है। ककेम ('concave) वा न्युब्ज चस्मा होना चाहिये।

औषधावली कैल्केरिया, लाइकोपोडियम, फसफोरस, पलसेटिला, सल्फर।

—०○०—

दूरदृष्टि वा हाइपारमेटौपिया।

(HYPERMETROPIA.)

रोग-परिचय स्वभाविक आंख के ढेले के सम्मुख-पश्चात व्यास रेखा छोटी हो जाने से दृष्टि का यह रोग होता है। इससे दृश्य वस्तु का किरण रेटिना में पड़ कर उसकी प्रतिमूर्ति संगठन नही करता है, वह रेटिना से पार होकर पीछे चला जाता है। इस कारण निकट की चीज नजर नहीं आती है लेकिन दूर की चीज नजर आती है। उपयुक्त कनभेक्स (convex) वा कुब्ज-चश्मा व्यवहार से यह दोष दुर हो जाता है।

औषधावली—कैल्केरिया, हायोसायमस, नेट्रम-म्युर नक्स, सिपिया, सल्फर।

टेढ़ीदृष्टि वा स्कुटिंग।

(SQUINTING-STRABISMUS.)

रोग परिचय—दृष्टिरेखा का विपथगमन-फल से टेढ़ी दृष्टि रोग होता है। दोनों आंख एक समय में समभाव से कार्य्य न करने के कारण और समभाव से न रहने के कारण दृष्टि टेढ़ी हो जाती है। इससे रोगी किसी वस्तु की ओर ताकने से अन्य व्यक्ति को मालूम होता है कि रोगी और किसी तरफ ताक रहा है।

आनुषंगिक उपाय—थोड़े दिन का रोग होने से चशमा व्यवहार से फायदा होता है। चशमा से शीशा न बैठा कर उसमें कूट बैठा कर उसके ठीक बीच में एक ऐसा छोटा छेद रखना होगा जिसके बीच से नजर चले। इस उपाय से बहुत फायदा होता है। अगर किसी चीज के तरफ ताकने के समय आंख बाहर की ओर घुमे तो कालारङ्ग के एक टुकड़ा कपड़ा मुंह से नाक के ऊपर तक सर्वदा लगा रखना चाहिये। अगर आंख नाक के मध्य रेखा की ओर घुमे तो ललाट के दोनों बगल में चमकीला रेशमी कपड़ा का पर्दा लटका रखना चाहिये। प्रतिदिन अच्छी आंख को बन्द करके पीड़ित आंख से दृष्टि करना चाहिये। इस में अस्त्र चिकित्सा आवश्यक होती है।

चिकित्सा:—

बेलाडाना ६-३०—किसी प्रकार दिमागी पीड़ा के कारण टेढ़ी दृष्टि। सिर गर्म, आंख लाल, पागल की तरह चंचल दृष्टि।

हायोसायमस ६-३०—मध्य वा उपर के तरफ आंख का टेढ़ा होकर रहना। किसी चीज के तरफ ताकने से उस को मामूली से बड़ा दिखना है।

फसफोरस ६-३०—आंख का स्नायु का फलिज होने से व आंख खोल नहीं सकने से दिया जाता है।

ष्ट्रामोनियम ६-३०—हर तरफ ही में आंख टेढ़ी होती है। आंख के पेशी का आक्षेप होने से जैसी हालत होती है। उसी तरह आंख के ऊपरवाले पपुटे गिर जाते हैं। पुतली का फैलजाना, सिकुड़ जाना और पक्षाघात की तरह अचल-भाव।

एगारिकस, सिकुटा, सिना, स्पाइजिलिया इत्यादि भी लक्षणानुसार दिया जाता है।

—o—

पपुटा के पक्षाघात वा टोसिस।

(PTOSIS)

रोग-परिचय—आंख के पपुटा को उठानेवाला पेशी का पक्षाघात को टोसिस कहते हैं। साधारणतः दुर्बलता व वृद्ध वयस में यह रोग होता है। गर्मी रोग जनित पक्षाघात वा मैलेरिया रोग जनित दुर्बलता से यह रोग हो सकता है। इस रोग में ऊपरवाला पपुटा ऐसी अवशभाव से गिरा रहता है कि रोगी अपनी इच्छा से उसको उठाकर आंख खोल नहीं सकता है।

चिकित्सा—

एलुमिना ३०-२००—ऊपरवाला पपुटा के पक्षाघात। आंख में ज्वाला के साथ सुर्खी, आंसू न निकलना।

कष्टिकम ३०-२००—आंख मूंद कर रहने की इच्छा, ऊपरवाला पपुटा भारी मालूम होना, आसानी से पपुटा को उठा नहीं सकता है।

युफ्रेसिया ६-३०-२००—ठंढ लग कर पीड़ा, आंख के स्राव से उस के चारो ओर और गाल में छाले पड़ जाना।

जेलसिमियम ६-३०-२००—इस रोग के साथ जल्दी जल्दी बोलना, चेहरा लाल, आंख में जखम के ऐसा मालूम होना, हरकत से उस की ज्यादती।

कैलमिया ६-३०—वातरोग से यह पीड़ा, पपुटा व आंख के पेशी में असमता मालूम होना।

लिडम ६-३०—चोट वगैरह से रोग, पपुटा व कंज-क्टाइमा में काला धब्बा पड़ना।

नेट्रम-म्युर ३०-२००—पतला दाहक स्राव, आंख के ऊपर में दर्द, नीचे के ओर ताकने से उस की वृद्धि।

रसटक्स ६-३०-२००—गठिया के प्रकार के रोग; ठंढ लगने से रोग, पपुटा भारी, सिर और चेहरे में दर्द।

सिपिया ६-३०-२००—पपुटा के पक्षाघात के साथ रजः स्राव की गड़बड़ी।

हायोसायमस ६-३०-२००—पपुटा में प्रदाह न रहे त इस रोग में उपकारी होता है।

नेत्रनली रोग।

(FISTULA LACHRYMALIS.)

रोग-परिचय—यह लैक्रिमैल सैक (Lachrymal Sac) या अश्रुस्थली अथवा अश्रुपथ से नाक के जड़ तक के चमड़े के मेन (Sinus) है। इस के साथ कभी कभी हड्डी मे भी सैन हो जाता है। फोड़ा, आघात, केरिज, निक्रोसिस इत्यादि से यह रोग होता है।

आनुसंगिक चिकित्सा—सैन के मुंह में हाइड्राष्टिस लिनिमेन्ट देने से फायदा होता है। एक आउन्स अलिभ आएल मे १५ बुन्द हाइड्राष्टिस डालने से यह लिनिमेन्ट बनता है।

चिकित्सा :—

बेलाडोना ६-३०—२००—प्रदाहिक अवस्था में उपकारी है। अश्रुस्राव, रोशनी सहा नही जाता है, पपुटा फूला हुआ, उस का सट जाना, साम को रोग की वृद्धि।

सल्फर ३०-२००—अन्यान्य औषध से उपकार न हो तो दिया जाता है।

कैल्केरिया-कार्ब ३०-२००—सल्फर से उपकार न हो तो इस का प्रयोग होता है।

लाइकोपोडियम ३०-२००—कैल्केरिया के प्रयोग के बाद इस दवे के १।२ खुराक देने से रोग प्रायः आराम हो जाता है।

चिकित्सा—थोड़ासा बोरिक-एसिड गर्म पानी में डालकर फ्लानेल वा रुई के जरिये उस पानी से आंख में सेंक देना बहुत मुफीद है। आंख में येलो आएन्टमेन्ट लगाना अच्छा है।

सिमिसिफ्युगा ६-३०—आंख से सिरतक निहायत जोर से टीस मारना ।

एपिस ३०-२००—आंख मे ज्वाला के साथ डंक मारने की तरह दर्द, पपुटा में साथ के ऐसा दिखाना ।

आर्जेन्टम-नाइट्रस ३०-२००—दीया के चारो ओर "रामधनुष" वा पनसोखा की तरह दिखाना। सुबह और साम को आंख में तीर भोकने की तरह दर्द, खुली हवा में आफियत। गरम कमरे में रोग की वृद्धि ।

आर्सेनिक ३०-२००—ज्यादा परिमाण से दाहक पानी निकलना, रोशनी न सहना, रात दोपहर में रोग की वृद्धि, बेचैनी, गरम प्रयोग से आफियत ।

एसाफिटिडा ३०-२००—आइरिस में दर्द, वह दर्द केन्द्र देश से परिधि के तरफ धावित होता है।

औरम ३०-२००—माड़ा, रोशनी से डरना, बहुत परिमाण से दाहक आंसू निकलना, बाहर के ओर से भीतर के ओर दर्द धावा करता है।

कैल्क-कार्ब वा आयोड ३०-२००--सिर बड़ा, चाँदी खुला हुआ, देर में दाँत निकलना, पेट फूला हुआ, सिर में पसीना, कण्ठमाला धातु, सर्दी व दस्त प्रायः रहता है, टन्सिल व गर्दन की गिल्टियों का चढ़ना।

कैमोमिला ६-१२—चिरचिराहा मिजाज हमेशा गोदी मे रहना चाहता है।

सिनाबारिस ३०-२००—आंख के चारो ओर अथवा भीतर कोण से बाहर कोण तक दर्द का फैल जाना।

कोनायम ३०-२००—करणिया में जखम के साथ रोशनी से डर और आक्षेप के साथ पपुटा का बन्द होना। पपुटा को खोलने की चेष्टा करने से जोर से पानी निकलना।

क्रोटन ६-३०—रात में भौंह के ऊपर दर्द, चेहरे वा पपुटे मे रसपूर्ण फूनसियाँ।

यूफ्रेशिया ६-३०—दाहक व जखम पैदा करनेवाला आंसू निकलना, आंख मे रेत वा बाल गिरने की तरह तक-लीफ। इस दवे के बाद कैल्केरिया और उस के बाद साइ-लिशिया उपकारी है।

ग्राफाइटिस ३०-२००—रोशनी से बहुत डर, ज्यादा पानी निकलना, करणिया मे जख़म, पपुटा लाल, उस में

दर्द, पपुटे में खुरन्ट पड़ना चेहरे में व कान के पीछे एकजिमा रोग, आंख को कोण फटा हुआ।

हिपर-सल्फर ३०-२००—कण्ठमाला-धातु वा पारादोष, कर्णिया व कंजांक्टाइमा लाल. रोशनी से डर, आंसू गिरना, तेज व दपदपाने वाला दर्द, गर्मी से आफियत, ठंद से, आंख खोलने से व सामको रोग की ज्यादती।

मार्कुरियस-सल ६-३०-२००—गर्मी-दोष व कण्ठमाला-धातु के लोगों में उपयोगी है। गहरा हलका जखम, दर्द बढ़ने वाला, रात में व गीली हवा में ज्यादा होना, शीतल जल से थोड़ा देर के लिये आफियत।

मार्क-सायानेटस ६-३०—रोहा, माड़ा, सिर, भौंह, आंख के खाना व ढेला में दर्द, लेटने से ज्यादा होना, रात में संधियों में दर्द, गर्मी रोग से दर्द।

मार्क-प्रटो-आयोड ६ ३०—कर्णिया के बाहर टेढ़ा-मेढ़ा, जखम, रोशनी से ज्यादा डर, आंख लाल, जीभ का मूलदेश पीला।

नेट्रम-म्यूर ३०-२००—मांसिला स्राव नीचे के तरफ ताकने से आंख में टीस मारना, कष्टिक इत्यादि का बद इस्तमाल की खराबी।

साइलिशिया ३०-२००—गहरा जखम, सड़ा जखम, रोगी सिर को ढका रखना चाहता है, टीका देने के बाद खराबी में उत्तम है।

थुजा ३०-२०० – गर्मी रोग वा सुजाक के वजह से रोग, आंख के ऊपरी भाग में दर्द, मालूम होता है कि सलाई भोंक रहा है।

भैकसिनिनम २००—टीका देना वा चेचक के साथ रोग, भैरियोलीनम भी इस रोग मे व्यवहार हो सकता है।

सल्फर २००—नया अथवा पुराना रोग, कर्णिया के चारो ओर मे गुलाबी रंग के शिराचक्र देखा जाता है, आंख मे दर्द, आंख धोने से तकलीफ की ज्यादती।

केलि-बाइक्रम ६-३०-२००—अप्रदाहिक जखम, कोई तकलीफ वा लाली नहीं है, स्राव गोंद की तरह चटचटा।

स्टैफिलोमा के लिये एपिस, कैल्केरिया, नाइट्रिक-एसिड, लाइकोपोडियम, सल्फर उत्तम है।

फुली वा कर्णिया ओपेसिटी।

(OPACITY OF THE CORNEA.)

रोग परिचय—आंख मे प्रदाह व जखम रोग के परिणाम से वा आरोग्य के अंत में कर्णिया वा आंख के श्वेत क्षेत्र मे सफेद दाग पैदा होता है। पुतली के सामने होने से इससे दृष्टि का व्याघात होता है।

औषधावली—

युफ्रेशिया ६-३०—कर्णिया में दाग पड़ना व कर्णिया अस्वच्छ, इस दवे का मदर टिंचर १० बुन्द एक आउन्स गुलाब जल मे मिला कर आंख में डालने से अनेक समय फायदा मिलता है।

कैल्केरिया-कार्ब ३०-२००—फुली के लिये यह बहुत अच्छा है, खास कर कण्ठमाला-दोष रहे तो।

आर्निका ६-३०-२००—चोट वगैरह से फूली हो तो दिया जाता है।

नाइट्रिक-एसिड ३०-२००—पारादि के दोष रहने से इस दवे से फायदा होता है।

चेलिडोनियम, कुप्रम, एलुमिना, हिपर केलि-बाई, नेट्रम-सल्फ पल्स रस, साइलिशिया, स्पंजिया वगैरह भी उपकारी है।

——:o:——

आइराइटिस (IRITIS.)

रोग परिचय—आंख की पुतली के चारो ओर के हलका काला रङ्ग के चक्र को आइरिस कहते हैं। आइरिस के प्रदाह को आइराइटिस कहते हैं।

कारण—गठिया, मेह, गर्मीरोग मैलेरिया, अचानक आबहवा का बदलना, ठंड लगना, चोट लगना प्रभृति कारण से यह रोग होता है।

लक्षण —आइरिस के रङ्ग का बदलजाना, और उस का नियमित फैलने व सिकुड़ने की शक्ति न रहना, पुतली का छोटा होना, खास कर सूर्य्यास्त के बाद अस्पष्ट दृष्टि, कर्णिया के चारो ओर गुलाबी रंग होना, कंजांक्टाइभा के शिरासमूह लाल होना अर्थात आंख लाल होना, आंख में दर्द, आंख से पानी गिरना, रोशनी बर्दास्त न होना, प्रभृति लक्षण होते हैं पुतली के प्रान्त व आइरिस के ऊपरी भाग व अन्दर मे एक प्रकार रसस्राव होता है और उस से आइरिस लेन्स वा आंख की शीशा के साथ लग जाता है, आंख के पपुटे के फूलन, ज्वर-भाव वगैरह लक्षण रहता है।

चिकित्सा—

एकोनाइट ६-३०—अचानक पीड़ा होना, रोग की प्रथम अवस्था में यह दवा उपकारी है। चोट के कारण आइराइटिस। पुतली का छोटा होना, आंख मे दर्द, ज्वरभाव, गर्मी मालूम होना, प्यास इत्यादि।

आर्निका ६-३०-२००—आघातादि से रोग।

आर्सेनिक ३०-२००—आइराइटिस, ज्वाला के साथ दर्द, रात में खास कर मध्य रात मे सब तकलीफ की ज्यादती। गरम प्रयोग से आफियत।

बेलाडोना ६-३०—ठंढ लगकर बीमारी, पीड़ा की प्रथम अवस्था में उपकारी है। आंख व चेहरा खुब लाल

आंख मे तपतपाने वाला दर्द, सिर में सख्त दर्द, बिजली चमकने की तरह दर्द, रोशनी से डर ।

आइयोलिया ३०-२००—गठिया के कारण रोग, आंख को संचालन करने से रात में व साम को ज्यादती, सिर मे टीस मारना, सिर नीचा करने से फटकने की तरह दर्द ।

चायना ६-३०-२००—रक्तस्राव से दुर्बलताजनित वा मैलेरिया जनित रोग, दर्द का बरसना, निर्दिष्ट समय में दर्द का हमला होना ।

जेलसिमियम ६-३०—ज्यादा रक्तस्राव, आंख के तरल पदार्थ का खराब होना, आंख मे रक्त संचय व दर्द ।

मार्कुरियस-कर ६-३०-२००—गर्मी रोग से यह रोग होना आंख के चारो ओर की हड्डियों मे फाड़ने की तरह दर्द दाह-जनक दर्द, रोशनी से डर, दाहक व जखम करने वाला पानी निकलना ।

मार्क-सल ६-३०-२०० —सर्व प्रकार आइराइटिस में यह उपयोगी है । फाड़ने की या छेद करने की तरह दर्द, रात में व गिली हवा में वृद्धि, पुतली का छोटा होना, पपुटा लाल व फूला, रात में पसीना, मुंह में बदबू ।

मार्क-डलसिस ६-३० —कण्ठमाला-दोष के बच्चों में मार्क-सल का लक्षण रहने से दिया जाता है ।

मार्क आयोड ६-३०—यह भी एक उत्तम दवा है ।

पलसेटिला ६-३०-२००—वातरोग वा गठिया से रोग, सामको रोग की वृद्धि, खुली हवा में आफियत, गर्मी में ज्यादा तकलीफ।

रसटक्स ६-३०-२००—वातरोग के कारण रोग, पानी में भींगने से रोग, चोट लगने से रोग, आंख में दर्द, खास कर मध्यरात और वर्षात के मौसम में।

स्पाइजिलिया ६-३०—स्नायविक वा वातिक आइराइटिस; आंख के चारो ओर या अन्दर टीस मारना।

चर्म्मरोग समूह

(SKIN DISEASES.)

मन्तव्य—अनेक समय चर्म्मरोग वर्म्मरूप से जीवदेह को रक्षा करता है। बाहरी चर्म्मरोग नाना प्रकार भीतरी बिगार का परिचायक है। इसलिये चर्म्मरोग की बाहरी मल्हम वगैरह लगाकर दवा देने से साधारणतः नाना प्रकार भीतरी तकलीफ होती है। फिर भीतरी बीमारी का आराम-काल में नाना प्रकार चर्म्मरोग होते देखा जाता है। इसी कारण से महात्मा हैनिमन साहब सोराविज्ञान (Psora-theory) के बारे में इतना आन्दोलन किये हैं। डाक्टर ननेज (Dr. Nunez) प्रभृति के बहुदर्शन से निम्नलिखित घटनायें सत्य प्रमाणित हुई हैं।

(१) गुह्यद्वार के बाहर के चर्म्मरोग दबकर यकृत की वृद्धि।

(२) प्रिपिउस वा लिङ्गमुन्ड के ऊपर के चर्म्मरोग दब कर ध्वजभङ्ग इत्यादि।

(३) कान के पश्चातभाग के चर्म्मरोग रुक जाने से खांसी व चक्षुरोग इत्यादि।

(४) सिर के चर्म्मरोग रुक जाने से यक्ष्मारोग इत्यादि।

(५) बाहु व हाथ के चर्म्मरोग रुक कर स्वरनली का यक्ष्मा इत्यादि।

(६) हथेली का चर्म्मरोग रुक कर दम्मा इत्यादि।

(७) मुखमंडल का चर्म्मरोग रुककर दिल का रोग इत्यादि।

इसलिये दीनाय, एकजिमा, प्रभृति चर्म्मरोग को कभी बाहरी मलहम पट्टी से चिकित्सा करके आराम करना याने दबा देना कर्त्तव्य नहीं है।

मत्स्य-चर्म्मरोग।

(ICHTHYOSIS—FISH SKIN.)

अन्य नाम—आयुर्वेद मत में,—एक कुष्ट।

रोग-परिचय—यह चर्म्म वृद्धि होने के श्रेणी का रोग है। यह रोग खानदानी वा स्वयंजात रोग होता है।

कारण—इस रोग के प्रकृत कारण आज तक जाना नहीं गया है, अनेक समय यह खानदानी दोष के वजह से होते देखा जाता है। उपत्वक (Epidermis) व पेपिली (Papillæ) की वृद्धि ही इस रोग की स्वभाविक अवस्था है।

लक्षण—इस से शरीर का चर्म्म सूखा व चोंइटादार व मोटा होता है। साधारणत: पांव के प्रसारक पेशी इस से आक्रान्त होता है, कभी २ हांथ पांव के सब स्थान मे, कभी २ तमाम बदन मे यह रोग होता है। लेकिन हथेली, तलवा व सन्धि के तलदेश में नहीं होता है। यह साधारणत बाल्य-काल मे आरम्भ हो कर यौवनकाल तक वृद्धि पाता है और उस के बाद एक ही भाव मे रहता है, सिर्फ ऋतु बदलने के समय कमबेश होता है। स्त्री व पुरुष उभय को ही यह हो सकता है।

यह मृदु व प्रबल उभय आकार से प्रकाश हो सकता है। मृदु आकार की पीड़ा ऐसी मृदु हो सकती है कि, चर्म्म सामान्य मात्र शुष्क व रुखड़ा होता है लेकिन अक्सर उसपर पतला, मलिन व काला रंग का चोंइटा देखा जाता है। प्रबल आकार के रोग ज्यादा चोंइटादार व मोटा हो कर मस्से की तरह हो जाता है। इस से चोंइटा के नीचे के चर्म्म मे प्रदाह नही होता है, खुजलाहट, स्पर्शाधिक्य अथवा अन्य किसी प्रकार का सर्व्वांगीन लक्षण भी उपस्थित नही होती है। गर्म्मी के दिनों में यह रोग की कमी व शीतकाल में वृद्धि देखी जाती है।

भाविफल—इस रोग के भाविफल प्रायः अशुभ है अर्थात् यह रोग किसी तौर से आराम नहीं होता है। अच्छा इलाज न होने से यह क्रमशः बढ़ता है।

चिकित्सा—

प्रधान औषधें—आर्स, ग्राफ, हिपर, पेट्रोल, सिपिया,

पैपिली की वृद्धि के कारण टिउमर—ऐन्टिमक्रुड कष्टिकम, नेट्रम-म्युर, नाइट्रिक-एसिड, फाइटो, रसटक्स, सिपि सल्फ, थुजा।

भेनस केपीलारीश्रों का बढ़ना व रक्तस्राव—फेरम-फस, सल्फर, कार्बो-भेज, फ्लुओरिकएसिड, पल्स, थुजा।

अरुणिका रोग वा इरीथीमा।
(ERYTHEMA.)

रोग-परिचय—वगैर फूलन के लाल रङ्ग के धब्बेदार एक प्रकार के चर्म्मरोग को इरिथिमा कहते हैं। इरिथिमा से आक्रान्त स्थान लाल होता है, वहां चांप देने से थोड़े देर के लिये वह जगह पीलापन हो जाती है। लेकिन फिर लाल हो जाता है।

जहरवाद के साथ इसका कुछ सादृश्य है, लेकिन जहरवाद की तरह इस रोग में आक्रान्त स्थान में रसपूर्ण फोड़े नहीं होते हैं, इसमें ज्वाला, गर्मी, खुजली व दर्द वगैरह की ज्यादती नहीं होती है, ज्वर भी साधारणतः इसमें नहीं होता है, जहरवाद की तरह यह रोग उतना फैलता भी नहीं।

इरिथिमा नाना प्रकार का होता है यथा,—इरिथिमा इन्टरट्रिगो, इरिथिमा लिभी, इरिथिमा नोडोसम, इरिथिमा मार्सिनेटम इत्यादि।

इरिथिमा इन्टरट्रिगो—गन्दा रहना, चर्म्म का घिस्सट और बच्चों के बदन में मलमूत्र लगा रहना इत्यादि कारण से इस प्रकार की पीड़ा होती है। साधारणतः कच्छा, मोटा शिशुओं का गर्दन, दो स्तन के मध्यस्थान वो स्तन के नीचे यह रोग प्रकाश पाता है। गर्मी के दिनों में यह रोग ज्यादेतर होता है। रोग के प्रारम्भ में चर्म्म सामान्य लाल होता है, किन्तु रोग होने से चर्म्म गर्म होता है वहां दर्द व ज्यादा पसीना होता है। आक्रान्त स्थान में बदबू होती है। अच्छी चिकित्सा न होने से वह जगह फट जाती है वहां छाले पड़ जाते हैं व जख़म हो जाता है।

इरिथिमा लिभि—शोथ रोग वाला लोगों के जांघ में यह रोग होता है।

इरिथिमा सार्सिनेटम—इस को आकृति प्रायः अंगुठी की तरह होता है यह नया वा पूराना जुरपित्त के साथ पैदा होता है।

इरिथिमा नोडोसम—इस प्रकार की पीड़ा मे स्थानिक लक्षण प्रकाश होने के पूर्व्व में साधारणतः शरीर मे अस्वस्थ भाव, गठिया की तरह दर्द, और कभी २ गले मे जखम प्रभृति लक्षण उपस्थित होता है। इस पीड़ा में गोटियां अलग २ भाव से प्रकाश पाता है और छोटे २ पिन्ड वा नोड (Node) की तरह फुनन व दर्द के साथ होता है। नोड समूह छोटा बादाम के आकार से मुर्गी के अंड के आकार के या उमसे बड़ा होते है। यह प्रथमत लाल व कठिन होता है पीछे कोमल व काला हो जाता है। साधारणत ये गोटिया पैरमें होती हैं और युवकों को अधिक होती है।

इरिथिमा मालिटफार्म:—यह प्रधानतः हाथ, बाहु गोर, जांध व चेहरा प्रभृति स्थान में होता है। इस पीड़ा के प्रकाश होने के पूर्व्व मे कभी २ गले में दर्द बदन मे दर्द, शरीर मे अस्वस्थता बोध वगैरह लक्षण उपस्थित होता है। पदाहयुक्त चमडे में ज्वाला, खुजलाहट व खुश्की वर्त्तमान रहता है और उस जगह में नाना प्रकार की गोटियां उभर आती हैं। रोगी साधारणतः चंद हफ्ते मे आराम लाभ करता है। कभी २ रोग पुराना हो जाता है और कभी २ आराम होकर पुरानी जगह मे फिर से होता है।

चिकित्सा—

शिशुओं के जांघ में रोग व उसके साथ दस्त होना—बोराक्स, कैमो, लाइको, मार्कुरियस, रसटक्स, सल्फर।

कान के पीछे रोग—ग्राफाइटिस, पेट्रालियम इत्यादि ।

सूर्य्य के ताप से रोग—एकोना, कैम्फर, कैन्थारिस ।

काला २ दाग (Decubitus)—आर्निका, कार्बो भेज, चायना, फ्लुओरिक-एसिड, सल्फ-एसिड इत्यादि ।

पेप्युलस इरिथिमा वा बरें की तरह इरिथिमा—एकोन, बेल, लैके, मार्क, रस, सल्फ ।

इरिथिमा नोडोसम—आर्निका, लैके, लिडम, लाइको मेजिरियम, रस-भेनेनेटा, सल्फ-एसिड, सल्फर ।

हार्पिस वा इन्द्रबिद्ध ।

(HERPES.)

रोग परिचय—यह एक दाद के किस्म के रोग है । इस में चमड़े के ऊपर बड़े २ या छोटे २ जलपूर्ण दाने उभर आते है । यह शरीर के भिन्न २ स्थान में दल के दल पैदा होता है लेकिन इस के दानें एकजिमा के दानें की तरह एक दूसरे के साथ आपस में मिले हुए नहीं होते हैं । हरएक अलग २ रहते हैं और बीच २ में स्वस्थ चर्म्म रहता है । कुछ दिन के बाद दानें सूख जाता है और उसके ऊपर चोंइटा पड़ता है ।

लक्षणादि—हार्पिस कई प्रकार के हैं । यथा,—हार्पिस फेशियालिस, हार्पिस फ्लिकटिनइडस हार्पिस लेनियालिस, हार्पिस प्रिपुशियालिस, हार्पिस जाष्टार, हार्पिस सार्सिनेटस इत्यादि ।

हार्पिस फेशियालिस (Herpes Facialis)—मुखमडल के ऊपर के हार्पिस।

हार्पिस फ्लिक्टीनइडस (Herpes Phlyctænoides)—गाल व आंख के पपुटे के ऊपर के हार्पिस।

हार्पिस लेबियालिस (Herpes Labialis) होठ के ऊपर के हार्पिस। इस को ज्वरपक कहते हैं। इस प्रकार की पीड़ा मलेरिया ज्वर, न्युमोनिया, टाइफस ज्वर प्रभृति के साथ देखा जाता है।

हार्पिस प्रिप्युशियालिस (Herpes Præputialis)-यह रोग साधारणतः लिंगमुंड के आवरक चर्म्म और स्त्रियों के जननेन्द्री के बाहरी भाग मे होता है।

हार्पिस जोष्टार वा ज़ोना वा शिंगेल्स (Herpes Zoster or Zona or Shingles)—यह आधा-कमर बन्द (Half Belt) वा अर्द्ध मालाकार होकर पैदा होता है। यह नया रोग मे शामिल है। साधारणतः यह शरीर के एक तरफ, खासकर दहिना तर्फ में होता है। कभी २ सिर और शाखायों में भी यह होता है। इससे आक्रान्त स्थान में प्रथमतः ज्वाला होकर लाल हो जाता है, उस के बाद, उस पर अबले की तरह जलपूर्ण फून्सियां दल के दल होते हैं और ये एक दूसरे के साथ मिल जाता है। ४।५ दिन में उसके ऊपर खुरन्ट पैदा होता है। किन्तु प्रायः देखा जाता

है। इस प्रकार का हार्पिस एक दल अच्छा हो कर फिर दल के दल देखाई देता है। जिस जगह में जोस्टार होता है वहां गठिया की तरह दर्द होता है, उसके साथ ज्वर व दुर्बलता भी होता है। अनेक समय रोग आरोग्य होकर छाती में न्युरेलजिया दर्द होता है। कभी २ फुन्सिया मे पीब होता है। यह रोग साधारणतः दो या तीन हफ्ता में आराम होता है।

हार्पिस सार्सिनेटस वा रिंगवारम (Herpes circinatus or Ring Worm)—इससे अवले की तरह फुन्सियां अंगुठी की तरह गोलाकार से प्रकाश पाता है। इस गोल जगह के मध्य स्थान के चर्म प्रथमतः स्वभाविक ही रहता है। लेकिन चंद रोज के बाद वह रुखड़ा व लाल होता है और फुसियां इकट्ठे मिल जाने के समय उससे चोंइटा गिरता है। कभी २ फुन्सियों में बहुत खुजलाहट होता है। यह साधारणत. हाथ पैर में ज्यादा होता है।

चिकित्सा

हार्पिस लेबियालिस—ब्राइयो, ग्रफाइ, नेट्रम-म्युर, रस-टक्स, सल्फ।

हार्पिस प्रिप्युशियालिस—हिपर, मार्क, कैलाडिअम।

हार्पिस जोष्टार—क्रोटन, कैन्थारिस, रस, आर्स।

हार्पिस सार्सिनेटस—कैलक-कार्व, हाइड्रेष्टिस, हिपर, नेट्रम-कार्व, नेट्रम-म्युर, फस, सिपिया, टेल्लूरिअम।

आर्सेनिक ३०-२००—प्रवल ज्वाला के साथ दर्द, रात में रोग को वृद्धि, वेचैनी इत्यादि।

कैन्थारिस ६-३०-२००—अवला पड़ना, ज्वाला, दहिना तर्फ की विमारी।

सिष्टस ६-३०—पीठ मे हार्पिस।

कमोक्लाडीया ६-३०—निम्न शाखायों में हार्पिस।

क्रोटन ६-१२—पीड़ित स्थान लाल, उसमें ज्वाला व खुजलाहट, फुन्सिया जल पुर्ण, उसमे से पीव होना, हार्पिस जोष्टार में यह बहुत उपकारो है।

युफरवीया ६-३०—मुखमण्डल में ज्वाला, गाल में प्रदाह उस मे छेद करने को तरह दर्द।

ग्राफाइटिस ३--२००—फटा २ और दाग की तरह रोग, उसमे से रस निकलना, वाया तरफ का रोग।

आइरिस ६-३०—दहिना तर्फ का रोग, उसके साथ हाजमें की खरावी।

कैलमिया ६-१२—हार्पिस जोष्टार होने के वाद न्युरैलजिया दर्द।

लैकेसिस ३०-२००—वसन्त काल के रोग, गिर जाने

से रोग, हार्पिस रोग के दानें खूब बड़ा होने से और उस में ज्वाला रहने से दिया जाता है। बायां तर्फ की पीड़ा।

मार्कुरिअस ६-३०-२००—इस से ज्वाला व नया २ दानें निकलना, आश्चर्य्यभाव से आराम होता है। दहिना तर्फ का रोग। पीड़ित स्थान मे ज्वाला, रसदार दानें, उस के चारों ओर में सूखा चोइटा, खुजलाने से ज्वाला होना, रात में और गीली हवा में पीड़ा की वृद्धि।

मेज़ीरिअम ३०-२००—हार्पिस जोष्टार के बाद स्नायुशूल वा न्युरैलजिया। फुन्सियों के ऊपर भूरा रङ्ग का खुरन्ट पड़ना।

नेट्रम-सल्फ ३०-२००—हजामत करने के बाद हार्पिस होना, मुंह के चारो ओर, गाल व शरीर में कहीं २ जलपूर्ण फुन्सियां।

पलसेटिला ६-३०—हार्पिस के साथ हाजमे की खराबी रहना, सांस की तकलीफ का बढ़ना, नर्म व रोनेवाला स्वभाव।

रैनंकुलस बलबोसस ६-३०—हर्पिस के साथ पसली की हड्डियों के मध्यवर्ती स्थानों का न्युरैलजिया। पानी की तरह पतला वा दाहक रसपूर्ण दानें उस में खुजली।

रसटक्स ६-३०-२००—ज्वर, अस्थिरता व ज्वाला के साथ खुजलाहट, दहिना अंगका रोग। छाती में दर्द व

पेचीश का अदल बदल कर होना । केशयुक्त स्थान में हार्पिस ।

स्टैफिसेग्रीया ३०-२००—जोड़ों के नीचे, हाथ, जांघ और पैर में सूखा खुरंटदार हार्पिस, एक स्थान में खुजलाते खुजलाते दूसरी जगह में खुजलाहट शुरू होना ।

थुजा ३०-२००—सुजाक की खराबी । खुजलाने से ज्वाला होना ।

जिंकम ३०-२००—पीड़ित स्थान में सुई भोकने की तरह दर्द, पीव होना ।

—०—०—

जुरपीत्ती वा अर्टिकेरीया ।

(URTICARIA—NETTLE-RASH.)

रोग-परिचय—इस से प्रथमतः बदन में खुजलाहट होता है, खुजलाते २, वहां चकता २ होकर फूल जाता है । बीरनी, चींटी प्रभृति कीट दंशन करने से बदन में जैसा चकता चकता फूलन होता है आर्टिकेरिया का इरपशन भी वैसाही होता है। यह लाल वा फीका दोनो प्रकार का होता है। इरपशन थोड़ा देर तक रहकर आपसे आप मिट जाता है, कुछ देर के बाद फिर से होता है। इसी तरह से बार २ होता है। यह रोग पुराना होने से आराम होना कठिन है। कभी २ इस के साथ हांफनी होता है।

कारण—ठंढ लगना, आहार के दोष, हाजमे का बिगार जरायुदोष प्रभृति से यह रोग होता है। पित्तवृद्धि और यकृत दोष ही से यह रोग ज्यादेतर होता है। ज्वर के साथ भी कभी २ यह रोग होता है।

आनुसंगिक उपाय—दाने निकलने से गर्म पानी से धो देने से आफियत होती है। ज्वर ज्यादा रहे तो पानी से धोना उचित नहीं है। मछली मास, दुध इत्यादि गुरुपाक चीज अहार करना नही चाहिये। वर्षा के पानी में भोगना, ठंढ लगना उचित नहो है। दस्त साफ रहना चाहिये।

चिकित्सा

एनाकार्डियम ६-३०—मानसिक उत्तेजनासे रोग ज्वाला, खुजलाहट, फुलन, चम्म खूबलाल, छोटे २ आवले की तरह दाने। साम को व बिछावन की गर्मी से वृद्धि।

रिउमेक्स ६-३०—शरीर के नाना स्थान में रोग, वदन खोलने से खुजलाहट की ज्यादती।

सल्फर ३०-२००—कण्ठमाला-दोष, रोगी पतला दुबला। चेहरा मलीन व सुष्क, आंख के पपुटे के किनारे लाल, गर्दन की गिल्टियो को फूलना, रातमें बिछावन की गर्मी से खुजलाहट की ज्यादती, कभी २ ठंढी हवा से खुजलाहट शुरू होती है।

अग्निस्तैगो ६-३०—रात में खुजलाहट की ज्यादती, हैज की गड़बड़ी से रोग।

एकोनाइट ३-६—अत्यन्त ज्वर रहने से दिया जाता है। तरुण रोग की पहली हालत में उपकारी है।

एन्टिम-क्रुड ६-३०—खुजलाहट के साथ सफेद २ धब्बे वो उसके चारों तरफ लाल वर्ण, जीभ सफेद मोटा मैलयुक्त।

एपिस ६-३०—ज्वाला वो डंक मारने की तरह दर्द।

बेलाडोना ६-३०—अत्यन्त अधिक ऋतुस्राव के समय रोग, वांधाकोबी व खट्टा खाने से रोग।

आर्सेनिक ३०-२००—अत्यन्त ज्वाला, शीत वो ज्वर दम्मो व क्रुप खांसी का अदल बदल कर होना।

कैलकेरिया-कार्व ३०-२००—मोटा थुलथुला शिशुओं के दांत उठने के समय की पीड़ा, पुराना रोग, खुली हवा में जाने में तकलीफ दूर हो जाती है।

डलकामेरा ३-६—ठंढ लगकर पीड़ा होने से दिया जाता है। खुजलाने से ज्वाला होना।

हिपर ३०-२००—प्राचीन पीड़ा, सविराम ज्वर के समय हाथ और अंगुलियों में पीड़ा।

पलसेटिला ६-३०-२००—ऋतु बन्द होने से यह पीड़ा हो तो उपकारी होता है।

सोरिनम २००—खुजली दब जाने से बार २ यह पीड़ा हो तो उपकारी होता है।

रस-टक्स ६-३०-२००—ज्वाला वो खुजलाहट के साथ चर्म्म फुला वो रक्तवर्ण, पानी में भीगने के हेतु पीड़ा, ठंढी हवा में वृद्धि। वात के दर्द, विश्राम से वृद्धि।

सिपिया ३०-२००—प्राचीन पीड़ा, ठंढी हवा में वृद्धि वो गर्म कमरे में आफियत, जरायु की गड़बड़ी।

सल्फर २००—प्राचीन पीड़ा, रात में खुजलाहट की वृद्धि।

आर्टीका-युरेन्स ३-६—यदि दूसरी किसी किस्म की शिकायत न रहे तो इस रोग में यही सर्वोत्तम दवा है।

—:o:—:o:—

खुजली व कलकल

(ITCH AND SCABIES)

रोग परिचय—एकेरस स्केबियाई (Acarus Scabii) नामक कीटाणु वा परांगपुष्ट बीज (Parasite) द्वारा उत्पन्न चर्म्मरोग को खूजली वा कलकल कहते हैं। इस से उत्पन्न दानें छोटे २ होने से उसको खुजली (Itch)

और दानें बड़े २ और पीवदार होने से उसको कलकल (Scabies) कहते हैं। ये कीटाणुगण अंडा देने के लिये चर्म्म के अन्दर प्रवेश करता है, इसलिये उसमे प्रदाह उत्पन्न होता है, वहां गोटियां निकलती हैं। एक गर्भवती स्त्री-कीटाणु किसी के अङ्ग मे जाने ही से उसको यह रोग हो सकता है। आठ दश रोज मे अंडा पोख्ता हो कर फुटता है। स्वस्थ्य व्यक्ति को पीड़ित व्यक्ति के साथ लेटने से अथवा पीड़ित व्यक्ति का बिछावन व कपड़ादि व्यवहार करने से उसके शरीर में यह कीटाणु प्रवेश करता है। प्रथम में आक्रान्त स्थान में खुजलाहट होता है। साधारणतः यह घाव, हाथ, पांव, अङ्गुलियो के मध्यवर्त्ती स्थान-समूह जननेन्द्री प्रभृति स्थानो में ज्यादा होता है। यह रोग मारात्मक नही होता है लेकिन बहुत मुश्किल से आराम होता है, और आप से आप आराम नही होता है।

सहकारी उपाय—पहले बहुत देरतक कार्बोलिक-साबुन मलकर पीछे गरम पानी से बहुत देरतक धो कर गंधक का मल्हम लगाने मे अच्छा होता है। पीड़ित स्थान मे लेभेन्डर आइल अथवा केरासिन तेल देने से कीटाणु मर जाता है और इससे परवर्त्ती कुफल भी प्रकाश नहीं पाता है।

एक तोला गोलमिर्च और एक तोला मुद्रासंख को एकट्ठे महीन पीस कर कपड़छान कर गड़ी के तेल में मिलाकर लगाने से खुजली व कलकल बहुत जल्द आराम होता है।

चिकित्सा:—

डा० लिलिएन्थल कहते हैं—खुश्क प्रकार की खुजली में मार्कसल व सल्फर ३० अदल बदल कर प्रति ४ रोज वा एक हफ्ता अंतर २ देना होता है, उससे कुछ परिवर्तन होने से कार्बो-भेज वा हिपर देना होता है। यदि पुर्वोक्त औषध से कभी २ गोटियों में पीव होता रहे तो कष्टिकम देना चाहिये। उसके बाद सिपिया देने से आराम होता है।

कलकल के लिये सलफर व लाइकोपोडियम ३० उक्त प्रकार से व्यवहार करना चाहिये। सलफर और लाइकोपोडियम से फायदा न हो तो कभी २ कष्टिकम देना चाहिये।

आर्सेनिक ३०-२००—ठेहुना के जोड़ में कलकल, उस में ज्वाला व खुजली। गरम प्रयोग से आराम बोध।

कार्बो-भेज १२-३०-२००—प्रायः सर्व्वाङ्ग में सूखा खुजली बदन के कपड़ा खोलने से खुजलाहट बढ़ता है। अजीर्ण दोष, पेट फूलना, ढेकार आना, हवा छुटना, पारा की खराबी।

कष्टिकम ३०-२००—गंधक वा पारा मिला हुआ मलहम लगाने के कारण कलकल दब जाने से खराबी, चेहरे पर मस्से, चेहरा जर्द, हंसते या खांसते वक्त पेशाब निकल जाना, ठंढी हवा बर्दास्त नहीं होता है।

क्रौटन-टिग ६-३०—चर्म्म लाल, उस में खुजलाहट व ज्वाला, दोनों में पीव होना, खुरंट पड़ना ।

हिपर ३०-२००—पीव भरा हुआ कलकल, ठंढी हवा बरदास्त न होना, पारा की खराबी रहने से उत्तम है ।

लोबेलिया ६-३०—सर्व्वाङ्ग में कांटो भोकने की तरह तकलीफ के साथ खुजली ।

लाइकोपोडियम ३०-२००—रस या पीव भरा हुआ दानें, बीच २ में गहरा दाग, दिन में गरमी होने से ज्यादा खुजलाहट ।

मार्कुरियस ६-३०-२००—बड़े बड़े खुजली या कलकल, केहुनी में ज्यादा, चंद दानें पककर मोती की तरह दिखाता है। रात में बिछावन की गरमी से ज्यादा तकलीफ। गोटियां इकट्ठे होकर एकजिमा की तरह होना ।

सोरिनम २००—टिउवरकुलोसिस रोग वा उस के लक्षण के साथ कठिन रोग, नया रोग, केहुनी व कलाई के चारो ओर दानें, वार वार रोग जहां तहां होता रहता है। रुका हुआ दानें इस दवे के इस्तमाल से निकल आते हैं।

सिपिया ३०-२००—गंधक आदि का अपव्यवहार, खास कर स्त्रियों की पीड़ा, सामको ज्यादा होना, बड़े २ कलकल का विषैला जखम बनजाना ।

रसटक्स ६-३०-२००—लालरंग का व रस भरा हुआ दानें।

सलफर ३०-२००—यह इस रोग में एक प्रधान दवा है। बिछावन में लेटने के बाद शरीर कुछ गर्म होने ही से खुजलाहट शुरु होता है। जितना नोचा जाता है उतना ही सुख व दर्द मालूम होता है खुजलाते २ छाले पड़ना व जखम होना, चोइटादार रुखड़ा चमड़ा, बीच २ मे रसभरा हुआ या पीवदार गोटियां। गिल्टियों का फूलना।

सल्फिउरिक-एसिड ६-३०—प्रति बसन्त काल में खुजली व कभी २ पीवदार गोटियों का निकलना। खुजली असम्पूर्णरूप से आराम होकर कलकल होना।

औषध-प्रयोग—औषध लगातार इस्तमाल करना नहीं चाहिये, कभी २ नागा देना चाहिये।

—:○—

उकौता वा एकजिमा।

(ECZEMA.)

रोग परिचय—प्रदाह के साथ घना, दलबन्द, छोटे २ रस भरे हुए फुन्सियां अर्थात् भेसिकुलर इरपशन (Vesicular Eruption) होनेवाला चर्म्मरोग को एकजिमा वा उकौता कहते हैं।

कारण—यह स्त्री पुरुष सब को हर उम्र में हो सकता है। कण्ठमाला धातु के लोगों को यह ज्यादा होते देखा जाता है। कब्ज के साथ अजीर्ण रोग रहने से एकजिमा हो सकता है। पेशाब में ज्यादा क्षार (alkali) होनेसे भी यह रोग होता है। गाउट वा वात रोग, उपयुक्त पथ्य का अभाव, अयोग्य आहार, कृमि की शिकायत प्रभृति नाना कारण से एकजिमा रोग होता है। ज्यादा गर्मी व ठंढ लगना, ज्यादा पसीना, पारा वा चूर्ण प्रभृति तेज चीज का मल्हम लगाना वगैरह से भी यह हो सकता है। कोई २ अजीर्ण दोष को ही सर्व्व प्रधान कारण समझते हैं।

लक्षण—एकजिमा रोग साधारणतः शरीर के जोड़ों अर्थात कछा, बगल, प्रभृति स्थान और सिर, पोथा, ठुड्डी, टांग, कान के पीछा प्रभृति स्थान में होता है। फुन्सियां का रस जल्दी ही सफेद दूध की तरह व गदला होता है और तीन चार रोज के अन्दर ही निकलता रहता है। निकला हुआ श्राव सूख कर पीला रंग के पतला खूरंट पैदा करता है। इस खूरंट के नीचे जखम रहता है और आक्रान्त स्थान के चारो ओर में नया २ फुन्सियां निकलते हैं। यह कभी २ पुराना आकार के हो जाता है और कभी २ वसन्त काल, शरतकाल वो शीतकाल में शरीर के भिन्न २ जगह में होता है। खुजलाहट इस रोग का सबसे कष्टदायक लक्षण है। चर्म्म रोगों में एकजिमा सर्व्वप्रधान है। यह निम्न ३

आकार से, भिन्न २ वयस में शरीर के नाना स्थान में भिन्न २ अवस्था मे प्रकाश होता है। कहीं यह दलबन्द रसपूर्ण अथवा पीवपूर्ण फुन्सियों के भाव से, कहीं जख्म के आकार से, कहीं दरार के भाव से, कहीं दाद के आकार से और कहीं खुश्क चोइश्रों के आकार से होते देखा जाता है।

यह यदि सिर में हो और छोटा मछली के चोंइटा की तरह खुरंट इस में पैदा हो तो उस को टिनिया फारफिउरेसिया" (Tinea Furfuracea) कहते हैं और इसी चोंइटा को रूसी (Dandruff) कहते हैं। किन्तु यदि इस पीड़ा में सिर में मोटा खुरंट पैदा हो और उस से बाल जटा की तरह इकट्ठा सट जाय तो उस को "टिनिया केपिटिस" (Tinea Capitis) कहते हैं।

मुखमंडल में एकजिमा होने से उस को टिनिया फेशियाइ (Tinea Faciei) वा क्रष्टा लैकटिया (Crusta Lactea) कहते हैं। स्तन्यपायी शिशुओं को यह रोग होता है।

एकजिमा पीवदार फुन्सियों के आकार के होने से उस को एकजिमा इम्पेटिगिनोसम (Eczema Impetiginosum) अथवा एकजिमा पष्टिउलासम कहते हैं।

एकजिमा रक्तवर्ण प्रदाहयुक्त चर्म्म पर होने से इस को एकजिमा रूब्रा (Eczema Rubra) कहते हैं।

एकजिमा रसपूर्ण मोटा खुरंटदार होने से उस को स्कोएमस एकजिमा Squamus Eczema) कहते हैं।

एकजिमा रसपूर्ण फुन्सियों के तौर पर होने से उस को एकज़िमा भेस्किकुलोसम (Eczema Vesiculosum) कहते हैं ।

कछा में एकजिमा रोग होने से उस को एकजिमा मार्जिनेटम (Eczema Marginatum) कहते हैं—इस को सिर्फ मार्जिनेटा भी कहा जाता है ।

टाग के एकजिमा में मोटा खूरंट पड़नेसे उस को साल्ट रियम (Salt Rheum) कहते हैं ।

हथेली व तलवे में कभी २ एक प्रकार के एकजिमा होता है जिस से वहां फुन्सी न हो कर, वहां का चमड़ा सफेद चोंइटे की तरह उड़ता रहता है, उस को सोराएसिस अथवा पिटिरिएसिस पालमेरिस वा प्लान्टेरिस । (Psoriasis or Pityriasis Palmaris or Plantaris) कहते हैं ।

दूध पीलानेवाली स्त्रियों के स्तन की घुन्डी में जो जखम (Sore Nipple) होता है, वह भी एक किस्म का एकज़िमा है ।

पसीना के कारण वा जल-कादो लगकर अंगुलियों के दरमियान में जो जखम होता है वह भी एकजिमा है । इत्यादि ।

आनुषंगिक उपाय—परिपाक-क्रिया के ऊपर विशेष ध्यान रखना चाहिये । मछली, मांस, गरममसाला, शराब प्रभृति त्याग करना चाहिये । ज्यादा घी वा चर्बीदार चीज भी न खाना चाहिये । तम्बाकू, चाय वगैरह भी अच्छा नहीं है । आक्रान्त स्थान को सर्व्वदा साफ रखना चाहिये ।

बाहरी प्रयोग सम्बन्ध में मन्तव्य—

बाहरी प्रयोग के जरिये एकजिमा रोग आराम करने से अर्थात् दवा देने से बहुत रोगी को अचानक किसी कठिन रोग जैसा दम्मा, दस्त, कलिक ऐसा कि थाइसिस तक होते देखा गया है। इसलिये हम सावधान कर देते हैं कि इस रोग को कभी मरहम वगैरह बाहरी दवा से बैठा मत देना।

चिकित्सा :—

सिर पर एकजिमा—आर्स, ब्रोम, कैल्के-कार्ब, ग्राफाइ, आइरिस, लाइको, सल्फ।

सिर पर गीला खुरंट—ग्राफाइ, लाइको, सोरिनम रस, रूटा, साइलि, सल्फ, हिपर, नेट्रम-म्युर, थुजा, स्टैफि।

गीला व बदबूदार खुरंट—ग्राफाइ, लाइको, मार्क्, रिअस, नेट्रम-म्युर, ओलिएन्डर, रस, साइलि।

केश लपेट जाना—फ्लुओरिक एसिड, ग्राफाइ सेजिरिअम नेट्रम म्युर, सोरिनम सार्सापेरिला।

खुश्क खुरंट—आर्स, कैल्के, मार्क्, साइलि, सिपिया, सल्फ।

आंखके पपुटे से मुखमंडल तक एकजिमा—आर्स, बैराइटा, कैल्के, डल्का, फ्लुओर-एसिड, ग्राफाइ, लाइको हिपर, मार्क्, सोरिनम, रस, सिपि।

ललाट में एकजिमा—मार्क्, रस, सिपि ।

हाथ के पीठ पर एकजिमा—आर्जेन्ट-नाइट, केलि-नाइट्रेट, मेजि, प्लम्बम, थुजा, जिंकम ।

ठुड्ढी में एकजिमा—कष्टिक, हाइड्रास, लाइको, नेट्रम म्युर, नाइट्रिक-एसिड, सिकूटा, सल्फ ।

बाहु में—ग्राफाइ, मेजि, फस, साइलि ।

हाथ में—आर्स, ग्राफाइ, लाइको, मेजि, फस ।

पैर में—आर्स, कार्बो-भेज, ग्राफाइ, लाइको, लैके, मार्क्, नेट्रम म्युर, सल्फ ।

गोड़ों का निम्नतल में—एमन-कार्ब, ब्राइ, ग्राफाइ, लिडम, मार्क्, सिपि ।

जननेन्द्री के ऊपर—आर्जेन्ट-नाइट, आर्स, कलाड, क्रोटन, ग्राफाइ, हिपर, लाइको, नेट्रम, नाइट्रिक-एसिड, पेट्रो, रस, सिपि, थुजा ।

गीला फून्सी—कैल्क-कार्ब, क्लिमेटिस, डल्का, ग्राफाइटिस, हिपर, लाइको, मार्क्, मेज, नेट्रम, फाइटोलैका, रस, सिपि, साइलि, ष्टेफि, सल्फ ।

खुश्क एकजिमा—आर्स, बैराइटा, कैल्के, कैन्थ, फ्लुओर-एसि, केलि-का लाइको, सिपि, साइलि, शल्फ ।

दाहक स्राव वाला एकजिमा—आर्स, क्लिमे, ग्राफाइ, मार्क्यू, आयोड, नेट्रम, सल्फ।

बदबूदार स्राव—आर्स, ग्राफाइ, हिपर, लाइको, मार्कु, मेजि, सोरि, रस, सिपि, साइलि, स्टैफि, सल्फ, थुजा।

जलपूर्ण फुन्सियां—रस, मार्कु, लाइको, आर्स, क्रोटन।

गले की गिल्टियों के फूलन के साथ रोग—बैराइटा, सल्फ, कैल्के-कार्ब, कोनायम।

रिकेट पीड़ा के साथ रोग—कैल्के, साइल।

पीवदार एकज़िमा—हिपर, कैल्के, ग्राफाइ, साइलि।

आर्सेनिक ३०-२००—खुष्क चोइटादार एकजिमा, कभी २ दुर्गन्धी रसदार और उस में रात को सख्त लहर या खुजलाहट।

बैराइटा-कार्ब ३०-२००—गीला खुरंट, बाल का उड़ जाना, गले की गिल्टियों का बढ़ना।

कैल्केरिया-कार्ब ३०-२००—खुष्क अथवा गीला व मोटा खुरंट पड़ना, कण्ठमाला धातु।

आइसोफीनिक एसिड ६-१२—चोंइटादार रोग में यह अच्छा है ।

क्लिमेटिस ३०-२००—रोग शुक्लपक्ष में पूदाहयुक्त होता है और कृष्णपक्ष में खुश्क हो जाता है ।

सिकुटा ३०-२००—ज्वाला व खुजलाहट अथवा उभय के साथ एकजिमा । एकजिमा के रस से पीला खुरंट पड़ता है । ठुड्डो के रोग ।

ग्राफाइटिस ३०-२००—खुजलाहट के साथ रसदार रोग, नोचनेसे जख्म की तरह दर्द मालूम होता है, गोंद की तरह चटाचट रस गिरता है । बायां ओर में और साम को ज्यादा होना ।

हिपर ३०-२००—खुजलाता है और जख्म की तरह मालूम होता है । पीव की तरह रस निकलना, बाया ओर और सामको ज्यादा होना, अस्वस्थ चर्म, जरासा खसोट लगने ही से पक जाता है ।

लाइको ३०-२००—मोटा चोंइटा पढ़ना और उसके नीचे से बदबूदार श्राव निकलना, नोचने से उससे खून गिरता है ।

मार्कुरियस ३०-२००—पीला रंग के चोंइटा पढ़ना, डंक मारने का तरह ज्वाला व दर्द, नोचने से चारो ओर पूदाह युक्त हो जाता है ।

नेट्रम-म्युर—जखम व प्रदाहयुक्त एकजिमा, उस से लगातार जखम पैदा करने वाला रस निकलता है। उससे केश नष्ट हो जाता है।केशवाली जगह के हद में रोग।

रसटक्स ६-३०-२००—मोटा रसपूर्ण कोमल चोंइटी, टीस मारना, ज्वाला, डंक मारने की तरह तकलीफ, खास कर रात में।

स्टैफिसेग्रिया ३०-२००—चोंइटा के नीचे से पीला रङ्ग के झांसीला पीव निकलता रहता है। छिना हुआ स्थान के ऊपर तुरन्त पीवदार फुन्सियां निकलते हैं। व फट जाते हैं। एक स्थान मे नोचने में वहां का नोचनी छूट कर दुसरी जगह में नोचनी शुरू होती है।

सलफर ३०-२००—चोंइटादार जखम व फून्सियों में नोचनी, खास कर रात में वहां से खून गिरता है।

सोराएसिस पालमेसि के लिये-मेग-कार्ब,-रैनंकुलस-वल्व रस व सिपिया अच्छा है।

मन्तव्य—इम्पेटिगो चिकित्सा देखो।

इम्पेटिगो (IMPETIGO)

रोग-परिचय—यह रोग और एकजिमा एक ही रोग है। एकजिमा में पीव होने से उसी को इम्पेटिगो कहते हैं।

इम्पेटिगो कंटेजिओसा (Impetigo Contagiosa)—ज्वर के साथ एक जगह का चमड़ा प्रदाहयुक्त व लाल हो जाता है, उसमें ज्वाला व खुजलाहट के साथ छोटे २ रसपूर्ण फून्सियां होते हैं। वे फुन्सियां ५, ६, रोज में मटर की तरह बड़ा होता है और उनके उपर गहराई पैदा होता है, कुछ समय के बाद उनके उपर पोवाल की रङ्ग के चोंइटा पड़ता है। इसका रस जहां लगता है वहीं यह रोग हो सकता है।

चिकित्सा—

आर्स ३० २००—रात में ज्वाला व नोचनी, गर्म प्रयोग से आफियत।

बेराइटा-कार्ब ३०-२००—सिर का बाल उड़ जाता है, गर्दन व ठुड्डी की गिल्टियों का बढ़ना।

ब्रोमियम ३०-२००—इस रोग से सिर टोपी की तरह आवृत हो जाता है, ज्यादा बदबूदार स्राव, ग्रीवा की गिल्टियों का फुलना, लेकिन गिल्टियों मे दर्द न होना।

कैल्केरिया-कार्ब ३०-२००—दांत निकलने के समय का रोग कण्ठमाला-दोष, गर्दन की गिल्टियों का फूलना, जखम को धोने से बढ़ना है, सामान्य जखम भी सहज से ही पक जाता है। किसी गर्म चीज को खाते मात्र ही पसीना होना है। अमावस के समय रोग का बढ़ना।

सिकुटा ६-३०-२००—मोटा व पीला रङ्ग के चोंइटा पड़ना।

क्लिमेटीस ३०-२००—शुक्लपक्ष में रोग की वृद्धि, कृष्ण पक्ष में कम होना।

क्रौटन ६-३०—चोंइटा के चारो ओर रसदार फुन्सियां जहरवाद की तरह रोग, नोंचने से ज्वाला होना, बहुत नोंचनी।

ग्राफाइटिस ३०-२००—गोंद की तरह चटचटा रस निकलना, बाल नष्ट हो जाना, कान के पीछे से रोग ठुड्ढी तक फैलता है, आख से बहुत दिन तक पानी गिरना, धोने से जख्म का बढ़ना।

हिपर ३०-२००—बिछावन से उठने से नोचनी व ज्वाला, सिर के पिछले हिस्से के रोग, केश का उड़ जाना, कहीं सूख्क और कही गीला चोंइटा, पीड़ित स्थान में दर्द व पीब होना, शरीर में छोटे २ फोड़े, कण्ठमाला-दोष से आख आना, गर्दन के पीछे की गिल्टियों का बढ़ना, रात मे खट्टी बूदार पसीना।

हाइड्रास्टिस ३०-२००—केशवाली जगह के हद मे रोग, धोने से रस गिरना, रस गोंद की तरह चटचटा व ज्यादा लसादार।

लाइकोपोडियम ३०-२०७—चोंइटादार जख्म, उस में ढील होना, उस के नीचे से खुन वा पीव निकलना, पीव बदबूदार, कान के पीछे गीजा जख्म, चमड़ा खुश्क, जख्म की तरह और फटा फटा, निद्रितावस्था में एकाएक चितकार मारना, शीर्ण शरीर।

मार्कुरियस ३०-२००—गिल्टियां प्रदाहयुक्त, ज्वाला व नोचनी, नोचने से चारो और प्रदाहयुक्त हो जाता है। लार निकलना, मसूढे में जख्म।

मेजेरियम ३०-२००—शुष्क चोंइटा की तरह इरपशन, वह ललाट, कान व गर्दन तक फैलता है। अथवा उसके नीचे पीव व ऊपर में चोइटा हो कर केश समूह को लिपटा लेता है, उसमें कीड़ा पड़ना है, बहुत खुजलाहट खासकर स्पर्श करने से और बिछावन में रहने से।

सोरिनम २००—दुध की तरह रस के साथ पीला रंग के फुरंट, उस में टीन, बहुत ज्यादा नोचनी, गर्दन की गिल्टियों का फुलना, सिर के कपड़ा खोलने न चाहना, समस्त शरीर में बदबू।

पेट्रोलियम ३०-२००—सिर में चोंइटा पड़ना, कान के पीछे जख्म की तरह होना, गर्दन के पीछे ठेहुना में व स्तन में यह रोग। चमड़ा फटा २, हथेली व अंगुलियों में रक्तवर्ण दाग।

रस्टक्स ३०-२००—खुरंट मोटा, उसमें सब्जापन पीव रहता है, उसके चारोंओर में छोटी २ फुन्सियां। गर्दन में अंकड़ाव, गर्दनकी गिल्टियों का फूलना, रात में नोचनी की ज्यादती।

स्टैफिसेग्रिया ३०-२००—गीला व बदबूदार खुरंट, बहुत नोचनी, जहां नोचनी होता है नोचने से वहां का नोचनी छुट कर दुसरी जगह में नोचनी शुरू होती है।

सल्फर ३०-२००—सूखा या गीला खुरंट शरीर के नाना स्थान में चर्म्मरोग, चेहरा फूला २ व फीका। गर्दन की गिल्टियां फूली हुई, सुबह को दस्त होना, पेट फूलना, खुजलाहट के कारण नींद न होना, खुजलाने से खून निकलना।

भायोला-ट्रिकलर ६-३०—मोटा चोंइया पीला रंग के ज्यादा पीव, उससे बाल लिप्टा जाता है। प्रायः बेखबरी से पेशाब होना, पेशाब मे बिल्ली के पेशाब की तरह बू।

इम्पेटिगो के लिये—

एन्टिमक्रुड—एक उत्तम दवा है।

एकोनाइट ज्वर रहने से दिया जाता है।

इउफरबिया—चर्म्म प्रदाहयुक्त, चेहरा फूला, मटर की तरह पीला रंग का फुन्सी।

केलि-बाइक्रोम—यह भी एक उत्तम दवा है।

एण्टिमटार्ट—फुन्सी में बहुत पीब।

थुजा—टीका देने के बाद यह रोग होने से दिया जाता है।

माइलिशिया व केलि-नाइट्रम भी अनेक समय उपकारी होता है।

—:o:—

बुराइयों का एक प्रकार खुजली।
(PRURIGO.)

रोग-परिचय—यह एक प्रकार का पुराना चर्म्मरोग है। इससे साधारणतः पांव, बाहु, कलाई व हाथ के पश्चातभाग आक्रान्त होता है। जननेन्द्रीमें भी यह रोग होता है। कभी २ देह के अन्यान्य स्थानमें भी होता है लेकिन सिर मे कभी नहीं होता है आक्रान्त स्थान में असहनीय खूजलाहट के साथ फुन्सी निकलता है। यह साधारणतः बाल्यावस्था मे आरम्भ होकर जिन्दगी भर रह जाता है। ज्यादा उम्र में भी यह रोग हो सकता है। वृद्ध, बालक, गर्भवती स्त्री व बहुमूत्र रोग वाला लोगों में इसका प्रादुर्भाव होता है।

चिकित्सा—

एकोनाइट ६-३०—ज्यादा खूजलाहट के साथ ज्वरभाव रहने में यह उपयोगी है।

आर्सैनिक ६-३०-२००—ज्वाला के साथ खुजलाहट और उसके साथ कमजोरी रहने से- पुराना रोगमें उपकारी है।

सेजिरियम ३०-२००—प्रथम में सुरसुराहट के साथ खुजलाहट शुरु होता है, योनिदेश में खुजलाहट।

इरनेशिया ६-१०—मच्छर काटने की तरह छोटे २ फुन्सियां।

क्रियोजोट ६-३०—ज्वाला व दंशन को तरह खुजली, पीड़ित स्थान को प्रदाह व फूलन।

ग्राफाइटिस ३०-२००—ऋतु के कबल योनि में खुजलाहट, पोये में पीड़ा।

कार्बो-भेज ३०-२००—स्त्री अंग में ज्वाला, खुजलाहट व छुना बरदास्त न होना।

नाइट्रिक-एसिड ३०-२००—प्रमेह के बाद मूत्रनली में खुजलाहट, योनि में खुजलाहट।

सिपिया ३०-२००—योनि में खुजलाहट।

साइलिशिया ३०-२००—ऋतुस्राव काल में जांघों के मध्यवर्त्ती स्थान में फुन्सी होना व योनि में ज्वाला व खुजलाहट।

सल्फर ३०-२००—पुराना रोग, खुजलाने के बाद ज्वाला होना, रात को बिछावन में खुजलाहट की ज्यादती।

टेरेन्टुला ऋतु के बाद ज्वाला व खुजलाहट।

—:o:—

सोराएसिस वा एक प्रकार चोंइटादार चर्मरोग।

(PSORIASIS.)

रोग-परिचय—यह एक किसीम का चोंइटावाला चर्मप्रदाह है। इस रोग में एक जगह का चर्म चमकीला लाल होकर कुछ ऊंचा व कड़ा हो जाता है और उस पर चिकना, मोटा व सफेद चोंइटा पैदा होकर दृढ़भाव से सटा रहता है। इस चोंइटा के वजह से पीड़ित स्थान के सर्वांग लाल नजर नहीं आता है सिर्फ उसके किनारे लाल दिखाई पड़ता है। चोंइटा निकाल देनेसे लाल, चिकना व सूखा चमड़ा नजर आता है। क्षुद्रवीण से देखने से उसमें गाढ़ा लाल रङ्ग के ऊंचा २ विन्दु नजर पड़ता है। पीड़ाक्रान्त स्थान चकत्ता २ होता है, उसको व्यास १-२-३ इंच वा और ज्यादा होता है और देखने मे चूणा-वालू का टिपकारी की तरह होता है।

ज्यादेतर रोगी में यह रोग पहले केहुनी व ठेहुना में होता है। जाघ, पीठ, छाती व कमर में भी हो सकता है,

कभी २ नाखून पर भी होता है। इस रोग वाला रोगी का स्वास्थ्य साधारणतः अच्छा रहता है। इसमें खुजलाहट रहता है लेकिन ज्यादा नहीं। यह रोग बहुत दिन तक रहता है। ३, ४ साल रह कर आप से आप एकदम अच्छा हो जा सकता है, और कुछ दिन के बाद फिर से भी हो सकता है।

चिकित्सा—

इस रोग में आर्स, कैल्क-कार्ब, क्लिमेटिस, कोरालियम, कुप्रम, फ्लुरिक-एसिड, हाइड्रोसाएनिक एसिड, इपिकाक, आइरिस, मार्कुरियस, नाइट्रिक एसिड, पेट्रोलियम, फस-एसिड फाइटो-लाक्का, सोरिनम, सेलिनियम, सिपिया, साइलिशिया, सल्फर, टेलुरियम प्रभृति औषधियां विशेष उपकारी हैं।

बर्रे (ACNE)

रोग-परिचय—यौवन के शुरु में ललाट, नाक व चेहरे पर जो छोटे २ फुन्सियां होते हैं उसको बर्रे कहते हैं।

कारण—मेदग्रन्थी का अतरुण प्रदाह प्रभृति नाना कारण से यह रोग होता है, हाजमें की खराबी, कब्ज, यौवनकाल में शारीरिक परिवर्तन, धातु की खराबी,

इन्द्रिय-दोष, प्रसृति कारण से यह रोग होता है. ऋतु की खराबी से भी यह रोग होता है।

यह रोग चन्द किस्म का होता है, यथा,—

एक्नि पंक्टेटा (Acne Punctata)—यह मामूली प्रकार का है इसका मुंह सूक्ष्म होता है और दबाने से इसके अंदर से सफेद कीड़े की तरह मवाद निकलता है।

एक्नि इन्डिउरेटा (Acne Indurata), इसका फुन्सी कड़ा होता है, इसका तलदेश कालापन लाल रंग के होता है।

एक्नि रोजासिया (Acne Rosacea), इसका फुन्सी लाल रंग का होता है। यह ज्यादेतर नाक व गाल में होता है. कभी २ इन फुन्सो में पीब होता है। यह रोग ज्यादेतर नाक व गाल में होता है और वहां का चमड़ा मोटा हो जाता है।

आनुसंगिक उपाय—सहज से हजम होनेवाला, पुष्टिकर खाद्य, नियमित व्यायाम, साफ रहना, शीतल जलमे नहाना इत्यादि उपकारी है। सिमल के कांटा को पानी के साथ घिस कर लगाने से उपकार होता है।

चिकित्सा—

मामूली किस्म का दर्द—औरम, बेल, ब्रायो, कैल्क, कार्बो-भेज, डिजि, आफ.इ, हिपर, नेट्रम, नाइट्रिक-एसिड, सिपिया, सल्फ, थुजा।

कड़ा बरें—औरम, आर्स, बार्बेरिस, कार्बो भेज कोनायम, हिपर केलि-ब्राइ, केलि-आयोड, लिडम, नक्स, पल्स, साइलि, सल्फ।

युवकों का बरें आर्स, आर्स-आयोड, आर्स ब्रोम बेल, कैल्फ, कार्बो-भेज, कष्टिक, हिपर. लैकेसिस, नेट्रम, नाइट्रिक एसिड, फस-एसिड, सल्फ-एसिड, सेलिनियम, पल्स, सल्फ।

एलास ६-३०—शिरा समूह का लाल होने के साथ कब्ज।

आर्सेनिक ३०-२००—बरें के साथ ज्वाला रहने से।

कैल्क-कार्ब ६-३०-२००—ऋतु के बिगार व दिमाग में खून की ज्यादती।

कैल्क-सल्फ ३०-२००—कण्ठमाला धातु के रोगी।

कार्बो-भेज—नाक के शिरा समूह अस्वभाविक भाव से बढ़ जाने से।

लैकेसिस ३०-२००—नीलापन लाल रङ्ग के बरें।

पेट्रोलियम ३०-२००—खुजलाहट के साथ बरें।

सल्फर ३०-२००—ज्यादा खुजलाहट और चेहरा नीलापन होने से।

सेलिनिअम व फस-एसिड ३०·२००—ज्यादा शुक्रक्षय के कारण वरें।

ढेला, कोड़ांटी वा कर्न्स।

(CORNS)

दवाव व घिसावट के वजह से वो कांटा वगैरह चुभा रहने से पैर के तलवा, अंगुठा, एड़ी वगैरह जगहों में यह रोग होता है। इससे वहां का चमड़ा कड़ा हो कर फूल जाता है उस में दर्द भी होता है। इसके लिये एंटिम-क्रुड सब से उम्दा दवा है। सल्फर भी काम देता है।

सिहूली वा लिकोडारमा।

(LEUKODERMA.)

रोग परिचय—इस से छाती, पीठ, चेहरा इत्यादि स्थान के चमड़े पर सफेद २ दाग हो जाता है। चमड़े के उस जगह के वर्णाभाव ही इस रोग के कारण है।

चिकित्सा - इस रोग में आर्स-आयोड, फलेभस, एलुमिना, आर्स, नेट्रम, सिपिया, साइलिशिया, कैल्केरिया, मार्कुरिअस, नाइट्रिक-एसिड, सल्फर प्रभृति दवायें उपकारी है।

दद्रु रोग वा रिंगवर्मस् (दीनाय) ।

(RING WORMS)

यह छूत की बिमारी है । पीड़ाक्रान्त स्थान में प्रत्येक रोओं के छेद में एक प्रकार दानें उत्पन्न होता है, उस में खुजलाहट और ज्वाला होता है। यह बिमारी सूखा वो गिला दोनों किस्म को होता है यह अति कष्टसाध्य बिमारी है किन्तु पृथमावस्था में औषधि प्रयोग द्वारा फल लाभ हो सकता है।

चिकित्सा—

क्रोटिकस ३०-२००—गर्दन में रसयुक्त दाद, बहुत खुजलाता है, विशेषतः सन्ध्याकाल में प्राचीन रोग।

म्याक्युरिअस ३०-२००—दद्रु, विशेषतः दोनों बाहु में, पक जाना है जखम होना है स्पर्श करने से ज्वाला होता है निकटवर्ती स्थान मे दर्द होता है।

रसटक्स ६-३०-२००—क्षुद्र क्षुद्र रसपूर्ण फुन्सियां, ज्वाला और खुजलाहट।।

सिपिया ३०-२००—दद्रुरोग के एक उत्कृष्ट औषध है। दाद रसयुक्त, खुजलाहट वो ज्वाला। स्त्रीयों के लिये विशेष उपकारी है। शिशुओं को मुखमण्डल में दद्रु रोग।

ग्राफाइटिस ३०-२००—चर्म्म अत्यन्त कठीन हो जाता है वो उस में बहुत खुजलाता है। अथवा उससे शहद की तरह गाढ़ा, चटचटा रस निकलता है।

हिपर-सल्फ ३०-२००—पीवयुक्त दाद रोग ।

स्टेफिसेग्रिया ३०-२००—दद्रु खुश्क वो चोंइयांदार, सन्ध्याकालमें भयानक खुजलाता है, वो खुजलाने से ज्वाला होता है ।

सलफर २००—असहनीय खुजलाहट, खुजलाने से बहुत ज्वाला होता है ।

नेट्रम-म्युर ३०-२००—ठेहुना और केहुनी में दद्रु रोग, रसयुक्त दाद, बहुत खुजलाता है ।

सोरिनम २००—रसयुक्त दद्रु रोग, गर्म्म होने से असहनीय खुजलाहट, दोपहर रात के पहले और खुली हवा में वृद्धि ।

टेलुरियम ६-३०—सर्व्व शरीर में दद्रु रोग विशेषतः निम्न शाखाओं में ।

थुजा ३०-२००—सर्व्व शरीरमें दद्रु रोग, खुजलाहट और ज्वाला, भूसी की तरह बहुत चोंइटा निकलता है ।

बेसिलाइनम् २००—दद्रु रोग में अति उत्कृष्ट औषधि है, यह धातुगत दोष दूर करके आरोग्य करता है ।

फोड़ा वा बएल (BOIL)

चिकित्सा—

एकोनाइट ६-३०—अति प्रारम्भ में, जब अत्यन्त ज्वर, अस्थिरता और ज्वाला रहता है।

बेलाडोना ६-३०-२००— जब फोड़ा अत्यन्त लाल, चमकीला होता है, बहुत दर्द और फूला होता है अर्थात् पीव होने के पहले।

मार्क-सल ६-३०-२००—पीव होने के कबल में इसकी उच्च शक्ति के प्रयोग से फोड़ा न पक कर बैठ जा सकता है, यदि बैठ जाने के उमेद न रहे तो इसकी निम्न शक्ति के प्रयोग से जल्दी २ पीव पैदा होकर पक जाता है।

साइलिसिया ३०-२००—फोड़ा फट जाने के बाद उसको सुखाने के वास्ते प्रयोग होता है। प्राचीन अवस्था में विशेषतः सँन होने से विशेष उपयोगी है।

हिपर-सल्फ ६-३०-२००—फोड़ा में पीव होना, उसमे स्पर्श वा शीतल हवा बरदास्त न होना, टीस मारना। इसकी निम्न शक्ति से फोड़ा फटता है और उच्च शक्ति से फोड़ा बैठ जाता है।

सलफर २००—बार २ फोड़ा होने की आदत पड़ जाने से इसके प्रयोग से रक्तदोष दूर हो जाता है।

आर्निका ३०-२००—जब छोटे २ फोड़ा दल के दल होता रहता है तब यह औषधि प्रतिदिन दोबार सेवन करने से विशेष उपकार होता है ।

सहकारी उपाय—अत्यन्त दर्द रहने से तिसी का पुलटिस प्रयोग से विशेष लाभ होता है। कपड़ा धोने का सावुन वो चिनि समान वजन मे लेकर उस में थोड़ासा पानी मिलाकर मलहम बना कर फोड़ा के ऊपर लगाने से जल्दी फट जाता है। शरीफा के पत्ता कच्चा दूध के साथ पीस कर गरम करके पुलटीस देने से फोड़ा बहुत जल्द फट जाता है। नीम के पत्ता को पानी के साथ पीस कर उस में गाय के घी मिलाकर गर्म करके पुलटीस देना बहुत फायदेमंद है। फोड़ा के शुरु मे गरम पानी मे थोड़ासा बोरिक-एसिड मिला कर उस से सेक करना बहुत अच्छा है।

ऐबसेस (ABSCESS)

रोग-परिचय—शरीर के किसी स्थान में प्रदाह होकर उस में पीव होने से उस को फोड़ा कहते हैं। छोटा फोड़ा को वएल (Boil) व बड़ा फोड़ा को ऐवसेस (Abscess) कहा जाता है। ऐबसेस पेशी, यकृत, हड्डी, स्तन, फेफड़ी, अंतरी प्रभृति स्थान में हो सकता है ।

आनुसांगिक उपाय—फोड़ा की सहकारी चिकित्सा देखिये ।

एपिस ६-३०—फोड़ा में ज्वाला के साथ डंक मारने की तरह दर्द ।

आर्निका ६-३०—गर्म, कड़ा व चमकीला फूलन, आक्रान्त स्थान मे कांटी चुभने की तरह वा सुई भोकने की तरह दर्द ।

आर्सेनिक ३०-२००—फोड़ा के सड़ गल जाने की करीना, ज्यादा ज्वाला, ज्यादा परिमाण से रक्त मिला हुआ, दाहक व जखम पैदा करने वाला पतला व दुर्गन्धी स्राव ।

बेलेडोना ६-३०—ज्वर, फोड़ा बहुत फूला व लाल, स्पर्श व ठन्ढी हवा बरदास्त न होना ।

ब्रायोनिया ६-३०—फोड़ा मलिन उस मे तीर भोकने की तरह दर्द, दबदबाना, फोड़ा कठिन, उसमे भार बोध ।

कैल्क-पिक्रिकम ६-३०—लगातार फोड़ा होता रहने से उपकारी है ।

रसटक्स ६-३०-२००—बगल वा कनपट्टी की गिल्टी में फोड़ा, उस मे स्पर्श करने से दर्द की ज्यादती, रसरक्त वाला पीव स्राव, उसमे डंक मारना वा चबाने की तरह दर्द, चिप्टा लाल व चमकीला फूलन, पीड़ित स्थान मे दर्द वाले छोटे २ फुन्सियाँ ।

सल्फर ३०-२००—पुराना किस्म का फोड़ा, सोरा वा कण्ठमाला धातु, दर्द, पीव सूखने के बाद जखम होने की करीना ।

टैरेन्टुला ६-३०—ज्यादा दर्द के साथ प्रदाहित फोड़ा, पीड़ित स्थान के सड़ जाने की करीना, निकट की गिल्टियों का आक्रान्त होना, गिल्टी फूला कड़ा व दर्द के साथ ।

लैकेसिस ३०-२००—दुषित ऐवसेस, पीड़ित स्थान का सड़ जाने की तरह काला होना, उसमें ज्वाला और दुर्गन्ध, बैगनी रंग का फोड़ा ।

साइलिसिया ३०-२००—ऐबसेस फट जाने से, जखम सेन की तरह होने से पीव पतला पानी की तरह वा दुर्गन्धयुक्त होने से प्रयोग होता है। इस के प्रयोग से जखम जल्द सूखता है ।

हिपर ६-३०-२००—पीव पैदा होने से फटाने के वास्ते प्रयोग होता है। फटने के बाद भी इस के प्रयोग से जल्दी जल्दी २ पीव निकल कर जखम सूख जाता है फोड़ा मे बहुत दर्द, स्पर्श व शीतल हवा बर्दास्त नहीं होती है ।

मार्क्युरिअस ३०-२००—पीव होने के क़ब्ल में और पीव होने की प्रथम अवस्था में दिया जाता है। इससे जल्द जल्द पीव पैदा होता है। फोड़ा खूब फूला और कड़ा ।

कार्बंकल।

CARBUNCLE

इकट्ठे बहुत से दुष्ट फोड़ा किसी गम्भीर टिशु में अति घना घना (निकट २) उत्पन्न होने से उस को कार्बंकल कहते हैं। कार्बंकल चमड़ा वो उस के नीचेका सेलुलार टिसु का प्रदाह विशेष है। किसी प्रदाह-स्थान मे तीन चार वा बहुत से मुंह होने से उस को कार्बंकल बोलके सन्देह होता है। कार्बंकल का मुंह झांजरी की तरह दिखाई पड़ता है।

पृष्ठदेश में कार्बंकल अत्यन्त अधिक होती है इसलिये इसको पृष्ठाघात भी कहा जाता है।

जिस जगह में यह पीड़ा उत्पन्न होता है उस मे पहले भयानक ज्वाला वो दर्द के साथ प्रदाह आरम्भ होता है, प्रदाहयुक्त स्थान फूला वो कठिन होता है और लाल वा बैगनी रङ्ग का होता है। यह फूला हुआ स्थान के ऊपर छोटे २ सफेद वा पीलापन फुन्सियां देखा जाता है। यह फुन्सियां फूट कर झांजरी की तरह बहुत सा छिद्रयुक्त देखा जाता है वो उस में से पहले २ रस निकलता रहता है। फूला वो कठिन अवस्था क्रमशः चारो तरफ बढ़ता जाता है, इसके बाद में फुन्सियों से पीव निकलना शुरु होता है। कभी २ यह पीवयुक्त स्थान के चमड़ा वो मांस सड़ सड़ कर गिरता जाता है। इस प्रकार सड़ा गला मांस को स्लफ (Slough) वो इस प्रकार जखम को गेंग्रीन

(Gangrene) कहते हैं। कभी २ ऐसा भी देखा जाता है कि कार्बंकल में पीब होने का कोई लक्षण ही नहीं देखा जाता है, केवल मांस सड २ कर गिरता जाता है। यह साघातिक होता है और इस को अङ्गरेजो में मेलिगनेंट Malignant or Angry looking Carbuncle कहते हैं।

इस रोग में बुखार भी होता है। रोग कठिन होने से ज्वर भी कठिन होता है और डिलिरियम इत्यादि देखा जाता है।

कार्बंकल कभी बच्चों को नहीं होता है। स्याना आदमियों में विशेषत शक्कर (चिनि) युक्त बहुमूत्र रोग वाले आदमियों में यह रोग अधिक होती है। २५ से ५० वर्ष तक उम्र में यह रोग अधिक होता है।

चिकित्सा—होमियोपेथिक चिकित्सा कार्बंकल में विशेष फलदायक है।

आर्सेनिक १२-३०-२००—इस पीड़ा में अति उत्तम औषध है। पीड़ा स्थान मे अत्यन्त ज्वाला, बहुत बेचैनी, बहुत प्यास किन्तु बार २ बहुत थोड़ा २ पानी पीना, अत्यन्त दुर्बलता, रात में पीड़ा की वृद्धि, उत्ताप प्रयोग से आराम मालूम होना इसका प्रधान लक्षण है।

एन्थ्रासीन ३०-२००—पीड़ा-स्थान में अत्यन्त ज्वाला यो वह ज्वाला आर्सेनिक से दूर न हो तो ऐन्थ्रासिनम द्वारा

उपकार होगा। सड़ा जखम, स्लफ गिरना, पीव पतला वो जखम पैदा करनेवाला।

एपिस ६-३०-२००—जहरवाद की हालत के कारबंकल, उस में ज्वाला व डंक मारने की तरह दर्द।

विउफो ६-३०—पीड़ा प्रथम ही से सांघातिक होती है। आक्रान्त स्थान की चारो ओर नीला रङ्ग और गर्दन, पीठ व शरीर के अन्यान्य स्थान में लालवर्ण रेखायें।

हिपर-सल्फ ६-३०-२००—कारबंकल के चारो ओर कड़ा, सख्त दर्द, नींद न होना, जखम के किनारे में डंक मारने की तरह ज्वाला, उस के साथ जखम पैदा करनेवाला स्राव, पारादोष।

म्युरियाटिक-एसिड ६-३०-२००—जखम का सड़ जाना, मसुढ़े में जखम व उससे खून निकलना। मेदा व पेट में खाली भाव, सर्व्वदा पेशाब के वेग व ज्यादा व साफ पेशाब होना।

नाइट्रिक-एसिड ३०-२००—जखम का सड़ना और उस से रक्तस्राव होना, निहायत कमजोरी, रात में पसीना, गर्मी रोग व पारा के दोष।

रसटक्स ६-३०-२००—कारबंकल के चारो ओर में ज्वाला और खुजली, सिर घुमना, चेहरा फीका, ज्यादा बेचैनी, हमेशा हरकत करने से आराम बोध।

साइलिशिया ३०-२००—इस के प्रयोग से घाव जल्दी २ सूखता है सैन नही होता है। कन्धा व ग्रीवा के मध्यवर्ती स्थान मे कारवंकल, शरीर का मामूली उत्ताप के अभाव। घाव सूखने के बाद वह जगह कड़ा रहना।

टैरेन्टुला ६-३०—कारबंकल के चारो ओर जहरवाद की तरह लाल। प्रवल कपनी के वाद गात्रदाह के साथ ज्वर, ज्यादा प्यास, घबराहट, सिरदर्द, ज्यादा पसीना, पेशाब वन्द रहना, कारवंकल में बहुत दर्द।

बेलेडोना ६-३०—पीड़ा-स्थान अत्यन्त चमकीला लाल, अत्यन्त दर्द।

कार्बो-भेज ३०-२००—काला या वैगनी रङ्ग का कारवंकल, सड़ी बू, चेहरा विकृत, रक्त दूषित।

सिकेली ३०-२००—गेंग्रीन, बहुत ज्वाला, बाहर का उत्ताप बरदाश्त नहीं कर सकता है।

सहकारी चिकित्सा—नीम के पत्ता पीस कर उस में गाय की घी मिलाकर गरम करके पुलटीस बनाकर फोड़ा वा कारवंकल के ऊपर लगाने से वह आपही आप फट कर पीब निकल जाता है। यह पुलटीस लगाने के पहले एक टुकड़ा साफ कपड़ा को गरम घी मे भींगा कर फोड़ा के ऊपर लगा कर उस पर पुलटीस देना चाहिये। नीम के पत्ता को पानी में उबाल कर उस पानी से जखम को

धोना चाहिये और उसके बाद नीम-घी लगा देना चाहिये। कैलेन्डुला मदर-टिंचर दो ड्राम ८ आउन्स पानी में मिलाकर उस से भी जखम धोआ जाता है वो कैलेन्डूला आएन्टमेन्ट द्वारा जखम को ड्रेस कर दिया जाता है।

पथ्यादि—इस रोगी के लिये दूध उत्तम पथ्य है, दूध के साथ वार्लो व साबूदाना भी दिया जाता है। डायेवेटीस का रोगी को मीठा न देना ही अच्छा है।

अंगुलवेढ़ा वा हुइटलो।

(WHITLOW.)

इसको पैनारिटियम (Panaritium) वा फेलन (Felon) भी कहते हैं। इस बीमारी मे अंगुली के आखिर में नाखून के नीचे वो उसके चारोतरफ में प्रदाह होता है वो उस जगह फूल जाता है, लाल होता है, उस में वहुत दर्द होता है। इस के साथ बुखार भी होता है। इसके बाद पीव होता है।

चिकित्सा—

एमन-कार्ब ६-३०—यह अति उत्तम औषधि है।

एन्थ्रासिनम ३०-२००—भ्यानक ज्वाला के साथ स्लफ गिरता है।

एपिस ६-३०-२००—ज्वाला युक्त डंक मारने वाला दर्द।

आर्स ३०-२००—सड़ा हुआ, आग की तरह ज्वालायुक्त जख्म, वहुत वेचैनी वो घवराहट। रात दोपहर को कष्ट की वृद्धि।

हिपर ६-३०-२००—अत्यन्त टीस मारना, पीव होना।

लैकेसिस ३०-२००—पीड़ा-स्थान वैगनीरंग का होना, सड़ जाना।

लिडम ३-६—सुई की तरह कोई नोकदार चीज घुस जाने के हेतु पीड़ा।

मार्क-सल ६-३०-२००—पीव होना, अंगुली को हवा मे रखने से आराम वोध।

नाइट्रिक-एसिड ३०-२००—पीड़ा स्थान में कांच के टुकड़े की तरह भोंकता रहता है।

रसटक्स ६-३०-२००—पीड़ा स्थान इरिसिपेलस की तरह दिखाई पड़ना।

साइलिशिया ३०-२००—यह इस पीड़ा के अति उत्तम औषधि है। हड्डी में पीड़ा का आक्रमण, हिपर के वाद यह वशेष क्रिया करता है।

सलफर ३०-२००—उपर्युक्त कोई औषध से फल न मिले तो। सोरा (Psora) दोष नष्ट करने के लिये यह औषधि प्रयोग करना चाहिये।

सहकारी उपाय—पीड़ास्थान में तीसी (Linsid) का पुलटिस वा नीम-घी का पुलटिस देने से विशेष उपकार होता है।

बेवाय।

CHILBLAINS.

शीतकाल में ओष्ठ, गाल व शरीर का और कोई स्थान के प्रदाह हो कर फट जाता है। कभी २ उसमें बहुत खुजली होता है। शीतप्रधान देश में बर्फ पड़ता है—उससे चमड़े का प्रदाह होने से उसको फ्रस्ट-बाइट (Frost-Bite) कहते हैं।

चिकित्सा—इसमें एगारिकस, आर्निका, आर्स, बेल, कैन्थारिस, एन्टिम-क्रुड, पेट्रोल, रसटक्स, रुटा, सिकेली, सलफर प्रधान औषधि है।

फीलपांव वा गजांगी वा एलिफैन्टियासिस।

(ELEPHANTIASIS)

इस बीमारी में पाव के चर्म का और उसके नीचे का सेलु मोटा हो जाता है। जिन लिम्फैटिक नलियां उस स्थान को पोषण करता है उन सब में रुकावट हो जाने के हेतु यह रोग होता है।

चिकित्सा—इस बीमारी में हाइड्रोकोटाइल सर्वश्रेष्ठ औषधि है। साइलिशिया, एनाकार्डियम, आर्स, हाइड्रास्टिस, मार्क-सल, मिरटिका, फस, आयोडिअम इत्यादि भी उपकारी है। जखम होने से—आर्स, लैकेसिस, साइलिशिया, सल्फर भेरिकोज भेइन (Varicose vains) मे आर्निका, हैमामेलिस, लैकेसिस, पल्स, सिपिया।

कोढ़ी, कुष्ठ वा लिप्रोसी।

LEPROSY (LEPRA.)

यह चर्म मे प्रकाशित प्राचीन पीड़ा विशेष है। पीड़ास्थान मे बैसिलस लेप्रि (Bacillus Leprae) नामक बीजानु पाया जाता है।

लेप्रा तीन किस्म का देखा जाता है।

(१) लेप्रा मेकिउलोसा (Lepra Maculosa) अर्थात् वर्णमय कुष्ठ—इससे चर्म्म मे लाल, सफेद अथवा सफेदापन लाल दाग होता है।

(२) लेप्रा टिउवारकिउलोसा (Lepra Tuber-culosa) अर्थात क्षयशील कुष्ठ—इस प्रकार के कुष्ठ लाल व भुरापन लाल वर्ण का ढेलापन दिखाई पड़ता है। कभी २ यह कुष्ठ-स्थान मे जख्म हो कर गलता रहता है, इसलिये इसको गलित कुष्ठ कहा जाता है।

(३) लेप्रा एनोस्थिटिका (Lepra Anesthetica) अर्थात् स्पर्श ज्ञान-लुप्त कुष्ठ—इस प्रकार के कुष्ठ पीड़ायुक्त स्थान अचेतन हो जाता है। उस जगह पर स्पर्श करने से वा सूई चुभने से भी रोगी को पता नहीं लगता है।

चिकित्सा—पर्य्यायक्रम से दम्मा और कुष्ठ रोग का वृद्धि अथवा प्रकाश होना—सलफर। चर्म विवर्ण—केलि-आर्स। कुष्ठ युक्त स्थान सून्य हो जाना—लैकेसिस। पीड़ायुक्त स्थान में खुजलाहट—कुप्रम एसेट। दद्रु रोग की तरह हो कर कुष्ठ रोग प्रकाशित होता है, और उस पर अभ्रक के चूर्ण की तरह चोइयां होता है, पीड़ायुक्त स्थान चकती की तरह होता है—आर्स। कुष्ठ युक्त स्थान सिन्दूर की तरह लाल चमकीला और चिकना वो उस में पीव होने की

आदत—कार्बो-एनि। चिकना चमड़े के ऊपर भूरा रङ्ग के कुष्ट, सफेद कुष्ट का चारो ओर विवर्ण—फस। कुष्ट रोग की जखम अवस्था में फस, हाइड्रासटिस। टिउवर्कलयुक्त कुष्ठ में हाइड्रो-कोटाइल उपकारी है।

कुनख।

(ONYCHIA.)

हाथ पैर के अंगुली के नाखुन के अन्तभाग वर्द्धित होकर मांस में घुसने से वो उस-से जखम होने से उस को कुनख कहा जाता है।

चिकित्सा

आर्सेनिक ३०-२००—ज्वाला, जखम कालापन, उससे वद्बू निकलता है।

साइलिशिया ३०-२००—दर्द, पैर के तलवा मे वदबूदार पसीना।

सलफर ३०-२००—अंगुली मोटा, चमकीला, फूला, पक जाता है, मांस को वृद्धि होता है, उस में दर्द वो टीस मारना।

अलावे इन दवाइयों के मारक्युरियस, एन्टिम-क्रुड, ग्रेफाइटिस भी उपकारी है।

सहकारी उपाय—अंगुली में अत्यन्त दर्द रहे तो गर्म पानी से सेकने से दर्द कम हो जाता है। फेरीक्लोराइड का लोशन वा चुर्ण बाहर प्रयोग करने से इस पीड़ा के जल्दी उपशम होता है।

मस्से ।

WARTS, FIGWARTS, CONDYLOMATA.

रोग-परिचय—मस्से छोटे बड़े बहुत किस्म के होते हैं। छोटे २ मस्से को अंग्रेजी में वार्टस् (Warts), बड़े मस्से को फिगवार्टस् (Figwarts) और बड़े २ मस्से, जिसके शकल फुलकोबी की तरह होता है उसको कन्डाइलोमेटा (Condylomata) कहते हैं।

चिकित्सा—थुजा का वाहरी प्रयोग फायदेमन्द है। रस-टक्स वाहरी प्रयोग से भी कभी २ उपकार होता है। भीतरी प्रयोग के लिये, थुजा, कैल्केरिया व नेट्रम-कार्ब उम्दा है।

बहुत दिन का मस्से—कैल्केरिया, एसिड-नाइट्रिक, सल्फ।

रक्तस्रावी मस्से—सिनाबारिस, नेट्रम, एसिडनाइट्रिक, थुजा।

जख्म वाले मस्से—आर्स, कैलकेरिया, काष्टिक, हिपर, नेट्रम, थुजा ।

खुजलाहट के साथ मस्से—केलि, एसिड-नाइट, थुजा ।

दर्द के साथ मस्से-कैल्केरिया, कष्टिक, हिपर, नेट्रम, एसिड-नाइट, सल्फर ।

कड़ा मस्से—एन्टिम-क्रुड, कैल्के, सल्फर ।

बड़े मस्से—कष्टिक, डल्कामारा, एसिड-नाइट, सिपिया ।

छोटे मस्से—कैल्केरिया, डलकामारा, एसिड-नाइट, थुजा ।

मुखमंडल का मस्सा—कष्टिक, डल्का, एसिड नाइट, थुजा ।

भौंह के उपर का मस्सा—कष्टिक ।

पपुटे पर मस्सा एसिड-नाइट ।

आंख के नीचे मस्सा—सल्फर ।

नाक में—थुजा, कष्टिक ।

ठुड्डी में—लाइका ।

जीभ में—औरम।

गर्दन—एसिड नाइट।

हथेली में-एनाकार्ड, एसिड-नाइट।

लिंग-मड़ पर—एसिड नाइट, एसिड-फस, थुजा।

पुरुषांग का आवरक चर्म्म में-सिनाबारिस।

कैल्केरिया ३०-२००—चेहरा, गर्दन व बाहु में मस्से, कण्ठमाला धातु, रसवात धातु।

कष्टिकम ३०-२००—नाक, मुख, अंगुलीके अग्रभाग वा भौंह में पुराना मस्से।

डलकामेरा ६-३०—मुख, हाथ, वगैरह चिकना मस्से, एक एक जगह में बहुत से मस्से।

लाइकोपोडिअम ३०-२००—दो भाग वा बहुत भाग होने वाला मस्सा, उसके चारों ओर में दीनाय की तरह होना उससे चोंइआ निकलना।

नेट्रम-म्युर ३०-२००—पुराना मस्से में दर्द, हाथ व अंगुली मे बहुत से मस्से, कम खूनवाली स्त्रियों के रोग, कब्ज।

नेट्रम-सल्फ ३०-२००—मलद्वार, तल पेट व दोनों जांघ के मध्यवर्त्ती स्थान में मस्से। सर्वाङ्ग में लाल मस्से की तरह वर्रे।

एसिड-नाइट्रिक ३०-२००—खुजली की तरह मस्से, कड़ा व रुखड़ा मस्से, मस्से से दुर्गन्धी रस गिरना, उसको स्पर्श करने से रक्त निकलना।

रसटक्स ६-३०-२००—हाथ व अंगुली में मस्से, मस्से नोकदार, रुखड़ा व गिलटी की तरह, धुआं रंग का चोंइटा-दार मस्से।

सिपिया ३०-२००—मध्यस्थान में नोकदार मांसवृद्धि होनेवाला मस्से, हाथ व मुख में चिप्टा, छोटा, कड़ा व खुजलाहट के साथ मस्से।

थुजा ३०-२००—साइकोटिक धातु, मोटा जड़वाला नोकदार मस्सा फट जाता है। गर्मीरोग का दोष।

—o—

क्षत, जखम वा अलसार।

रोग परिचय—चर्म्म, मांस प्रभृति शरीर का कोमल अंश किसी कारण से फट कर उस मे पीव होने से उसको क्षत वा जखम कहते हैं। इस किस्म के जखम के साथ प्रायः कोई किस्म का शारीरिक रोग रहता है।

कारणादि—साधारणतः कट जाना, चोट लगना, जल जाना, प्रदाह, कण्ठमाला दोष, गर्मी रोग, पारा दोष

अमिताचार, यकृत वा चर्म्म दोष, अनुपयुक्त आहार इत्यादि मे क्षतरोग होता है।

प्रकार भेद व लक्षणादि—क्षत का लक्षण, गति व भावि फलादि के अनुसार इस को कई प्रकार मे भाग किया जाता है,—

(१) मामुली जखम (Siuple Ulcer) चोट लगना, मोच आना, जल जाना वा फोड़ादि से इस प्रकार के जखम होता है। स्वस्थ्य शरीर होने मे यह आसानी से आराम हो जाता है।

(२) उत्तेजनाशील क्षत (Irriteble ulcer)—इस मे क्षतस्थान में गर्मी, टीस व चबाने की तरह दर्द होती है। इस के प्रान्त असम, अथवा गहराई वाला और इस के चारो ओर लाल रङ्ग वा प्रदाहयुक्त होता है। जखम के नीचे गहराई रहती है और उस मे सब्जापन वा लालपन, पतला व ज्वाला पैदा करने वाला पीव होता है, यह पीव जहां लगता है वहीं जखम पैदा होता है।

आलस वा दूरारोग्य जखम (Indolent ulcer) इस प्रकार के क्षत सहज से आराम नहीं होता है। इस के ऊपरी भाग चिप्टा, चमकीला सफेदरंग वा कालापन चोईटा-दार होता है जखम के किनारे ऊंचा, मोटा व सफेद होता है और उस मे स्पर्शज्ञान नहीं रहता है। जखम से सामान्य पीव स्राव होता है और वह बहुत दिन रहता है।

सैन वा फिष्टुलस अलसार (Fistulous ulcer or Sinus)—इस से जखम मे संकीर्ण नली पैदा होता है।

गैंग्रीनस अलसार वा सड़ने गलने वाला जखम (Gangrenous ulcer)—इस प्रकार के क्षत रोग मे निकट के टिसु विनष्ट हो कर जखम बहुत फैल जाता है।

बेडसोर वा शय्याक्षत (Bedsore)—यक्ष्मादि रोग मे रोगी बहुत दिन तक शय्याशायी रहने से व रोगी अस्थि चर्म्मसार हो जाने से शरीर का जो अंश बिछावन के साथ लगा रहता है उस स्थान मे बिछावन के रगड़ से जखम हो जाता है।

आनुसंगिक उपाय—क्षतस्थान को रोज एकवार वा दो वार कैलेन्डुला लोशन से धोकर सूखो कपड़ा से पोछ देना चाहिए; धोने व पोछने के समय जखम में चोट न लगे तत्प्रति ध्यान रखना चाहिए। उस के बाद कैलेन्डुला आयल जखम मे लगा कर बान्ध देना चाहिए। २ तोला सुगुम पानी में १० बुन्द कैलेन्डुला मूल अर्क मिलाने से कैलेन्डुला लोशन बनता है और २ तोला वलो आयल वा गरी के तेल मे १० वा १५ बुन्द कैलेन्डुला मूल अर्क मिलाने मे कैलेन्डुला आयल बनता है। कैलेन्डुला अएन्दमेन्ट भी जरूरत के मोताविक इस्तमाल किया जाता है। एक आउन्स

भेसलीन में १५ बुन्द कैलेन्डुला मूल अर्क व १० ग्रेन बोरिक-एसिड मिलाकर यह मलहम बनाया जाता है।

चिकित्सा :—

हार्पेटिक अलसार से—लेकेसिस, सल्फर, फस-एसिड आर्सेनिक, ग्राफाइटिस, कार्बो।

गठिया रोग के साथ जख्म—सल्फर, कैलकेरिया लाइको, ब्रायो, रस।

मसूढ़े में जख्म—कार्बो-भेज, सल्फर, आर्स, मार्क, लैकेसिस, साइलिशिया।

पारा की खराबी से जख्म—हिपर, औरम, लैके-सिस, साइलिसिया, केलिहाइड्रो, नाट्रिक-एसिड।

खराब जख्म—सल्फर, नाइट्रिक-एसिड, कष्टिकम, कार्बो-भेज, आरसेनिक, लाइकोपोडियम, साइलिशिया।

सैन की तरह जखम—पहले साइलिशिया, उसके बाद कल्केरिया, लाइकोपोडियम, फसफोरस फस-एसिड, सल्फर, कार्बो-भेज, कष्टिकम।

मस्से के चारो ओर में जखम—आर्स, एन्टिमक्रुड, कष्टिकम।

ज्यादा प्रदाहयुक्त जखम—सल्फर, साइलिशिया, लकेसिस, लाइकोपोडियम।

फूला हुआ जखम—सल्फर, साइलिशिया, रसटक्स, लाइको, सिपिया ।

चिपटा व हल्का जखम—सल्फर, आर्स, लाइको-पोडियम, कार्बो-भेज, फस-एसिड, नाट्रिक-एसिड ।

गम्भीर जखम—साइलि, सल्फ, आर्स, कैल्क, रस, लकेसिस ।

ऊंचा किनारेदार जखम—सल्फर, कैल्क, साइलि, लैक, रसटक्स लाइको, आर्स ।

जखम के किनारे में शून्यता—सल्फर, कैल्के, साइलि, आर्स, लाइको ।

जखम के चारो ओर नीलापन—सल्फर, लैके-सिस साइलि, कार्बो-भेज ।

जखम का तला गंदा—सल्फर, कैल्के, लाइको, साइलि, आर्स ।

जखम का तला काला रंग—आर्स, लैकेसिस, साइलि, लाइको ।

बदबूदार जखम—कार्बो-भेज, लैकेसिस, आर्स, सल्फ, लाइको, साइलि ।

सहज से रक्तस्राव होनेवाला जखम—फस्फोरस, लैके. सल्फ, आर्स, कार्बो-भेज, लाइको, साइलि, हिपर ।

जखम में मांसवृद्धि—साइलि, पेट्रोलियम, सल्फ, ग्राफाइ, आर्सेनिक ।

पतला पीव निकलनेवाला जखम—साइलि, सल्फ, आर्स, कार्बो-मेज, लैके, लाइको ।

गाढ़ा व पीला रंग के पीव निकलना—सल्फ, कल्के, साइलि, हिपर ।

जखम में ज्वाला के साथ दर्द—आर्स, कार्बो, सल्फ, साइलि, रसटक्स ।

जखम के चारो ओर में खुजली—सल्फ, आर्स, हिपर लाइको, ग्राफाइ, कार्बो, लेकेसिस, रसटक्स ।

जखम में दबदबाहट—सल्फ, साइलि, कैल्के, लाइको ।

पैर में व तलवे में जखम—सल्फ, आर्स, कैल्के, लैके, ग्राफाइ, लाइको, साइलि, कार्बो ।

हाथ व अंगुलियों में जखम—सिपिया, कष्टिकम, साइलि, सल्फ ।

एसिड-नाइट्रिक ३०-२००—जखम में बदबू व छूना बरदास्त न होना, जखम के किनारे में ज्वाला के साथ दर्द व गर्मी । टीस मारना । फैला हुआ लेकिन हल्का जखम, स्पर्श करने से वा ठंढा पानी से धोने से तकलीफ का बढ़ना,

गहरा जखम से सहज से रक्तश्राव, सेन की तरह जखम जल्दी आराम नहीं होता है, ज्यादा व दाहक पीव निकलना, आक्रान्त स्थान जल्द खराव होता जाता है ।

आर्निका ३०-२००—नीला रंग का जखम और उस मे सहज से रक्तश्राव, उस के साथ चोट लगने की तरह दर्द ।

आर्सेनिक ३०-२००—जखम में ज्वाला, सड़नेवाला जखम, जखम के किनारे ऊंचा और उस के चारो ओर का चमड़ा चमकीला लाल, जखम का जमीन नीलारंग, जखम के ऊपर चोइटा पड़ना, साफ करने के समय खून निकलता है, चिटा, सड़नेवाला व प्रदाहिक जखम, वदवूदार, दाहक, पनला रस निकलना, गर्म प्रयोग से आफियत ।

आर्सेनिक-आयोड ३०-२००—उत्तेजना के कारण जखम पतला व वदवूदार श्राव. उस के साथ टिसु का जल्दी नाश होना, श्राव किसी जगह से लगने से छाले पड़जाता है ।

कैल्केरिया कार्व ३०-२००—अस्वथ्य व सहज से जखम होनेवाला चर्म्म, सामान्य जखम ही में पीव होता है, कण्ठमाला धातु, सैनकी तरह जखम, और उस के चारो ओर का चमड़ा लाल, कठिन और फूला, हड्डी को क्षय करने वाला जखम, प्रदाहिक जखम, ऊंचा जीर्ण मांसांकुर (Granulations), सफेद वा पीला रग के जखम में टीस मारना, थोड़ा एलवुमेनवाला पीव ।

कैलकेरिया-फस ३०-२००-६x—रोगी सहज से उत्तेजित होता है व गर्म गृह में रह नहीं सकता है, हड्डी में जखम और जखम में ज्वाला व खुजलाहट।

कैलेन्डुला ३०-२००—प्रदाहजनित जखम, चोट की तरह दर्द, ज्यादा पीब, जखम के चारों ओर लाल, उस में दर्द, खराब व दूरारोग्य जखम, हड्डी को क्षय करनेवाला रक्तश्रावी जखम, रात में वृद्धि।

कार्बो-भेज ३०-२००- हड्डी के क्षय व दांत की खराबी वाला जखम, रक्तश्रावी व बदबूदार जखम, श्राव कम, दाहक व बदबूदार, चमड़े के तह में जखम होता है, ज्वाला के साथ दर्द। खराब किस्म का कठिनाई से आराम होने-वाला जखम।

चायना ६-३०-२००—श्राव निकलने वाला बदबूदार जखम, चिप्टा जखम, ज्यादा पीब निकलना, हड्डी को क्षय करनेवाला जखम, ज्यादा पसीना, जखम काला, सड़ने की तरह होना, जखम में छुना बरदास्त न होना, बदबूदार व खून मिला हुआ पीब।

ग्राफाइटिस ३०-२००—पुराना जखम, उस के साथ बदबूदार पीबश्राव, खुजलाहट, व डंक की तरह दर्द, जल्द आराम नहीं होता है। कोमल जखम,—उस के साथ नम-कीन श्राव, जखम के ऊपर चाइटा पड़ना, रसयुक्त, पानी की तरह और दाहक पीबश्राव।

लैकेसिस ३०-२००—पैर में हड्डीक्षय करनेवाला जखम खुजलाहट के साथ जखम और उस के चारो ओर में आवला होना, जखम के किनारे कड़ा, छुना बरदास्त न होना जखम के जमीन कालारंग, पीव थोड़ा निकलता है लेकिन सहज से खून निकलता है, पैर और पैर के अगुलियों में सड़ा जखम, नींद के बाद सब तकलीफ की ज्यादती।

हिपर ६-३०-२००—जखम से बासी छेना की तरह बूदार पीव निकलना, क्षत में छुना न सहना व डंक की तरह दर्द, पारा के दोष, जखम के चारो ओर में फफोला होना, बदबूदार दाहक श्राव।

लाइकोपोडियम ३०-२००—पैर में पुराना जखम, उस में रात को फाड़ने की तरह दर्द, फूला २ जखम, उस से रस निकलना, सैन, जखम के कोर कड़ा, चमकीला लाल और उलटाया हुआ। धोने के समय ज्वाला व रक्तश्राव।

मार्कुरियस ६-३०-२००—चिप्टा, हलका व सहज से रक्तश्रावी क्षत, गर्मी से, बिछावन की गर्मी से और ठंढ प्रयोग से दर्द की ज्यादती, फैलनेवाला जखम, जखम में ज्यादा दर्द, छुआ नहीं जाता है, चबाने की तरह दर्द, नीला-पन रंग का जखम, कम या बेशी पीव निकलना।

सोरिनम २००—पैर के निम्नभाग में दर्द, उस के साथ तमाम बदन में खुजली, पैर के आवला से रस निकलना,

इससे दर्द, खुजलाहट, चोंट्टा पड़ना। सारा घातु वालों का जखम में निहायत उपकारी।

रसटक्स ६-३०-२००—छोटे २ रस भरा हुआ फुन्सी, सड़ा जखम में नमक देने की तरह तकलीफ, जखम के किनारे में फून्सियां।

सार्सापेरिला ३०-२००—हार्पेटिक अलसार्स, चका के आकार से फैलता है, उस पर चोंट्टा नहीं पड़ता है, पारा की खराबी से जखम, ज्वाला, कण्ठमाला घातु।

साइलिशिया ३०-२००—गम्भीर जखम, जखम में शूल, जखम के किनारा व जमीन कालारंग, उससे रक्तश्राव, सैन वा सड़नेवाला जखम, पुराना जखम, बदबूदार पतला पीवश्राव।

केलि-बाइक्रम ३०-२००—जखम खूब गहरा वो बिल-कुल वृत्ताकार गोल।

एन्थासिन ३०-२००—जखम सड़ा हुआ वो अत्यन्त ज्वालायुक्त। आर्सेनिक से फायदा न हो तो देना चाहिये।

सल्फर ३०-२००—जखम का किनारा ऊंचा व फूला, सहज से रक्तश्राव, जखम के चारो ओर मे फून्सियां, उसमें फोड़ना या डंक की तरह दर्द, बदबुदार पीवश्राव, सैन, शोथ, चमड़ा भूरारङ्ग, गाढ़ा पीलारङ्ग अथवा पतला बदबुदार श्राव।

थुजा ३०-२००—चिप्टा जखम, जखम के जमीन नीलापन सफेदरंग, किनारे कड़ा, उसके चारो ओर मे पीबदार आवला, गम्भीर, ज्वाला के साथ व सैन की तरह जखम, रगड़ने से या खुजलाने से आफियत।

क्युटिक्युरीन सब्ब प्रकार जखम के लिये अचूक मलहम है।

आभिघातिक चिकित्सा।

—:०:—

दाह वा जला हुआ जखम।

(BURNS AND SCALDS)

चिकित्सा—जला हुआ स्थान मे जिस से वाहर का हवा न लगे तत्पति विशेष दृष्टि रखना चाहिये। कोई स्थान जल जाना मात्र ही उस स्थान को औपधादिके वाहर प्रयोग द्वारा आवृत कर देना चाहिये। यह नाना प्रकार से किया जा सकता है, यथा।

(१) मैदा वो तेल—कोई स्थान जलजाना मात्र ही उसके ऊपर नारियल व मिठा तेल डालकर उस पर मैदा छिड़क कर बिलकुल ढाक दिया जाता है।

(२) एलकोहल—जलजाने मे जबतक फफोला न हो तब तक यह वाहर प्रयोग करने से विशेष उपकार होता है।

(३) कैन्थारिस—इसका मदर टिंचर २० या ३० बून्द ४ आउन्स नारियल का तेल वा ग्लिसारिन मे मिलाकर उस से कपड़ा भीगा २ कर जला हुआ स्थान पर लगा देनेसे अतिशय उपकार होता है। इस दवा को अन्डे के साथ मिला कर भी इस प्रकार से लगाया जाता है।

कैन्थारिस ६-३०-२००—के भीतरी प्रयोग से ज्वाला अति शीघ्र आराम हो जाता है।

(४) मुह गला, प्रभृति जल जाने से ग्लिसारिन वो पानी समभाग मे मिला कर वो उसमे कैन्थारिस मिला कर कुल्ला करना चाहिये। इस प्रकार दाह के लिये आर्टिका के भीतर प्रयोग अति फलदायक होता है। इसके १ शक्ति एक घन्टा अन्तर २ दिया जाता है।

(५) आर्टिका-युरेन्स—सब्ब प्रकार दाह के लिये उत्तम दवा है। इस का व्यवहार भी कैंथारिस की तरह है।

(६) भूना हुआ बालू को अच्छी तरह से साफ करके पानी में फूला कर, यह बालू दाह-स्थान में लगा देने से भी विशेष उपकार है।

जल जाने से कभी २ ज्वर इत्यादि देखा जाता है। इसके लिये औषधि सेवन करना चाहिये। लक्षणानुसार निम्न लिखित औषधियां सेवनीय हैं।

एकोनाइट ३-६—प्रबल ज्वर, बदन सूखा हुआ, अत्यन्त प्यास, बेचैनी, घबराहट, मृत्युभय।

आर्सेनिक ३०-काला, पतला, दुर्गन्धमय दस्त, अत्यन्त दुर्व्वलता वो निस्तेजता। वहुत प्यास, वारबार वहुत थोड़ा २ पानी पीता है। वेचैनी, घबराहट मृत्यु भय।

कैमोमिला ६-१२—रोगी दर्द से पागल की तरह हो जाता है, वहुत चिरचिराहा वो वदमिजाज। चेहरा वो सिर में गरम पसीना।

चायना ६-३०—अत्यन्त पीव निकलना वो दुर्वलता, कष्टहीन उदरामय, विशेषत. रात में, मल पतला वो काला।

साइलिशिया ३०—जब घाव सूखने लगे किन्तु धीरे २ सुखता है अथवा जगह २ पर मांस की वृद्धि होती है।

सल्फर ३०—जब घाव सूखना नही चाहता है अथवा जगह २ पर मांस की वृद्धि देखा जाता है घाव के चारो तरफ में खुजलाहट, प्रदाह और ज्वाला होता है।

फफोला बड़ा होने से सूई द्वारा अति सावधानता के साथ इसमें से पानी निकाल देना चाहिये लेकिन ख्याल रखना चाहिये कि फफोला के ऊपर का चमड़ा अलग न हो जाय। दाहस्थान में हवा जितना कम लगे उतना ही अच्छा है। जखम साफ करने के समय भी ऐसा प्रबन्ध करना चाहिये जिससे हवा कम लगे।

(७) चूना का पानी (Lime water) और मिठा तेल अथवा चूना का पानी और तिसी का तेल समभाग में मिला

कर उस से एक टुकड़ा कपड़ा को भिगा कर वह कपड़ा दाहस्थान से लगा देना चाहिये और वार २ उस कपड़ा को उस से भिंगा देना चाहिये।

मस्तिष्क में आघात।

CCNCUSSION OF THE BRAIN.

पतन वा आघात लग कर मस्तिष्क की क्रिया का किसी प्रकार के व्याघात उत्पन्न होने से उस को मस्तिष्काघात कहते हैं। अगर चोट वहुत ज्यादा न हो तो कुछ काल के लिये, स्मरण शक्ति के लोप, बेहोशी, सिर-चकराना, कान में आवाज होना इत्यादि देखा जाता है। चोट ज्यादा होने से रोगी तुरन्त बिलकुल वेहोश हो जाता है, कै होना, नाड़ी अत्यन्त दुर्व्वल वो अनियमित होता है। हाथ पांव ठंढा हो जाता है, अचानक मृत्यु भी हो सकता है।

चिकित्सा :—

घर से दूर मे ऐसा बिपद होने से रोगी को घर में ले आने के समय मे जिस से सावधानता के साथ और स्थिर भाव से लायो जावे वैसा प्रवन्ध करना चाहिये। रोगी को वेश आरामदायक स्थान में उस के सिर को नीचा कर के लेटा कर रखना चाहिये और कम्बल इत्यादि गरम कपड़ा से वदन आवृत करके देह का गर्मी बचाना चाहिये। रोगी का

पूरी तरह से विश्राम करने देना चाहिये, किसी प्रकार के प्रश्न, शब्द, रोशनी इत्यादि द्वारा उस को दीक नहीं करना चाहिये। जब रोगी कुछ अच्छा होने लगे तब उस का सिर थोड़ा ऊंचा कर देना चाहिये। मस्तक मे शीतल जल प्रयोग करना चाहिये. शीतल जल में कुछ आर्निका मिला लेना और भी अच्छा है ठंढा निर्जन गृह नितान्त आवश्यक है। दो तीन सप्ताह तक विशेष सावधान रहना चाहिये। ख्याल रखना चाहिये कि किसी प्रकार से रोगी को मानसिक उत्तेजना न हो।

आघात लगना मात्र ही आर्निका सेवन कराना चाहिये। यदि ज्वर हो तो आर्निका के साथ एकोनाइट पर्य्यायक्रम से दिया जा सकता है।

यदि विकार के लक्षण देखा जावे, चेहरा लाल वो सिरदर्द रहे तो बेलाडोना देना चाहिये।

यदि चेहरा लाल और फूला हो, स्वांस घड़घड़ाहट से चले तो ओपियम, प्रलाप बढ़ता रहे तो हाइओसायमस। औषध आवश्यकतानुसार १, २ या ३ घन्टा अन्तर २ दिया जाना है।

कट जाना।

WOUND.

कोई स्थान कट जावे तो निम्नलिखित नियमों के प्रति दृष्टि रखना चाहिये :—

(१) पहले रक्तस्राव बन्द करना चाहिये । यह बहुत प्रकार से किया जा सकता है, यथा—क्षत स्थान को खूब दबा रख कर उस पर शीतल जल वा बरफ प्रयोग करना इत्यादि । कोई नाड़ी टूट जावे तो उस को खूब कसकर बांध देना चाहिये । क्षत स्थान में कैलेन्डुला लोशन प्रयोग करने से रक्तस्राव बन्द होता है और उस में पीब नहीं होता है । एक आउन्स पानी में दश बारह बुन्द क्रियोजोट मिलाकर वह प्रयोग करने से भी रक्त बन्द हो जाता है ।

(२) क्षत स्थान को सावधानता के साथ साफ करना चाहिये । क्षत स्थान को बांधने के पहले देखना चाहिये कि उस में मैल, बाल, कांच का टुकड़ा, कांटा या और कोई चीज न रहे ।

(३) क्षत स्थान के दो किनारे को इकट्ठा करके बांध देना चाहिये ।

(४) क्षत स्थान को स्थिर रखना चाहिये ख्याल रखना चाहिये कि उस में फिर चोट न लगे ।

(५) क्षत स्थान को साफ रखना चाहिये ।

चिकित्सा—

दश भाग पानी में एक भाग कैलेन्डुला मदर टिंचर मिला कर उस से जखम को साफ करके उसपर कैलेन्डुला आयल (दश भाग) सेलाड आयल में एक भाग (कैलेन्डुला) द्वारा साफ कपड़ा भिंगा कर जखम पर लगाने से जखम जल्दी

सूख जाता है। एक आउन्स भेसेलिन में ३०-४० वुन्द कैलेन्डुला और आधा ड्राम वारिक एसिड मिलाकर मल्हम वनाके जखम पर लगाने से अति उत्तम फल होता है। एक आउन्स पानी में १५-२० वुन्द क्रियोजोट मिलाकर उस मे कपड़ा भिंगा कर जखम पर लगाने से रक्तस्राव वन्द होता है।

औषध के वाहर प्रयोग के अतिरिक्त औषध के सेवन भी आवश्यक हो सकता है।

एकोनाइट ३-६—ज्वर, भय, अस्थिरता, घवराहट रहने मे दिया जाता है।

वेलाडोना ६-३०—ज्वर, चेहरा लाल, सिर दर्द, जखम मे अत्यन्त दर्द।

आर्निका -६-३३०—आघात जनित सव प्रकार कष्ट में उपकारी है।

कैमोमिला ६-१२—वहुत पीव होना, अत्यन्त दर्द रोगी वदमिजाज, अस्थिर। घाव सूखना नही चाहता है।

चायना ६-३०—अधिक रक्तस्राव के हेतु अत्यन्त दुर्वलता, चेहरा रक्तहीन, कान मे भनभनाहट।

हिपर ६-३०—घाव मे पीव होना।

हाइपारिकम ६-३०—सूई, कांटी वा और कोई तीक्ष्ण नोकदार चीज घुस जावे तो अति फलदायक है।

घाव से सहज से ही खुन निकले तो—एकोनाइट, आर्निका, चायना, फसफोरस, क्रियोजोट ।

घाव में पीब ज्यादा होने से—चायना, मारक्युरियस, हिपर-सल्फ सल्फ, साइलिसिया ।

घाव सड़ जाने से—आर्स, चायना, लैकेसिस, साइलिशिया, कार्बो-भेज ।

कोई गिल्टी में चोट लग कर चत होने से कोनियम, आयोडियम, हिपर, मार्क ।
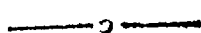
थुराजाना (कुचलजाना) ।

(BRUISES.)

चिकित्सा :—

एक बोतल पानी में दो ड्राम आर्निका मिला कर उस लोशन में कपड़ा का मोटा पट्टी भिगाकर लगा देना चाहिये और हमेशा पट्टी को उस लोशन द्वारा भिगा कर रखना चाहिये। और आर्निका ६-३०—दो या तीन घन्टा अन्तर २ सेवन करना चाहिये ।

हड्डी में चोट लगने से रूटा, स्तन, अण्डकोष वा और

कोई ग्रन्थी मे चोट लगने से कोनियम दो। पकने का डर हो तो हिपर-सल्फ। प्रदाह होने से एकोनाइट।

:—०—:

मोच आना।

(SPRAIN)

शुरू में पीड़ा स्थान में ठन्डा पानी या बरफ लगातार प्रयोग करना चाहिये और आर्निका ३ या ६ सेवन करना चाहिये। अवस्थानुसार आर्निका, रसटक्स, रूटा व हाइपेरिकम खाने को दिया जाता है और जो दवा भीतर दिया जाता है उसी दवाइको लोशन द्वारा कपड़ा भिगा कर पट्टी दिया जाता है।

आर्निका ६-३०—पीड़ा स्थान नीला होना।

रसटक्स ६-३०—मोच आने के सर्व्व प्रधान दवा है। विश्राम से दर्द के वृद्धि, ठन्ढा में कम होना। कोई भारी चीज उठाने से पीठ में मोच आने से भी रसटक्स अति फलदायक होता है।

सिमफाइटम १-२—यदि पीलापन नीला दाग भरम हो।

हाइपैरिकम ३-६—यदि चोट स्नायु में पहुंचे तो उपकारी है।

यदि कोई भारी बोझ उठाने से या किसी प्रकार से बहुत जोर लगाने से कोई तकलीफ हो तो रस-टक्स दो। जब इस से कमर में बहुत ज्यादा दर्द हो तो ब्राइयोनिया दो।

यदि बहुत कुथने से, दौड़ने भागने से पेट में दर्द हो अथवा मालूम हो कि पेट का सब चीज नीचे गिर रहा है तो भेरेट्रम दो। जिसको बार २ ऐसा होने के आदत हो उसको सिपिया दो।

अचानक असावधानता से पांव अस्थान में पड़ने से तकलीफ हो तो रसटक्स वा ब्राइग्रोनिया से उपकार होगा। इस से मेदा में तकलीफ पहुंचे तो ब्राइओनिया या पलसेटिला और यदि अक्सर ऐसा हो और कमजोरीसे हो तो फसफोरस देना चाहिये।

:—:o:—:

अस्थि के स्थानभ्रंश।
(DISLOCATION.)

किसी हड्डी के सिर उसकी अपनी जगह से हट जाय तो उसको कौशल से अपनी जगह पर बैठा कर लकड़ी द्वारा बांध देना चाहिये। आरनिका ६-३० प्रति दो घन्टा अन्तर २

सेवन करना चाहिये। उस अंग को धीरे २ सावधानता से वार वार हिलाना चाहिये न तो वह जोर कड़ा हो जावेगा।

—:०:—

अस्थि-भंग।

(FRACTURES)

हड्डी टूट जाने से वह अंग टेढ़ा या छोटा हो जाता है और उसके ऊपर का हिस्सा को एक हाथ से पकड़ कर निचला हिस्सा को दूसरा हाथ से हिलाने से टूटा हुआ स्थान में टुटा हुआ दोनों टुकडे का रगड़ से एक प्रकार शब्द होता है। यह शब्द में अच्छी तरह से मालूम होता है कि हड्डी टुट गई है। अलावे इस के वह जगह दर्दवाला और शक्तिहीन हो जाता है।

चिकित्सा—

हड्डी टुट जाने से उस समय उस स्थान को दोनों हाथ से जोर से दबा कर टुटा हुआ दोनों ओरको इकट्ठा सटा देना चाहिये। उसके बाद टुटा हुआ स्थान के दोनों तरफ पतला लकड़ी लगाकर उसपर रूई देकर बाध देना चाहिये। इस तरीका से बांधना चाहिये कि वह स्थान न हिलसके और नहीं इतना कस न जावे कि उससे रक्त संचालन में बाधा हो। जबतक टुटा हुआ स्थान बिलकुल जुट न जावे तबतक उसे

स्थान को हिलाना डुलाना नहीं चाहिये और बैन्डेज खुलना नहीं चाहिये ।

सेवन के औषधियों में सिमफाइटम सर्व्वोत्कृष्ट है। इस का १ या २ शक्ति दिन में ३४ बार देना चाहिये । अस्थि में दर्द रहने से मेजिरिया वा गसिट-फस । हड्डी के जोड़ लगने में देर हो तो कैलकेरिया-फस वा साइलिशिया उत्कृष्ट औषधि है ।

कीट-दंशन वो डंक मारना ।

(STINGS AND BITES)

मकड़ा, बिच्छू इत्यादि कोई कीड़ा काटने से पीड़ा स्थान को आग के खूब निकट रख कर सेंकना चाहिये। ठंढा पानी और एमोनिया मिला कर धोने से बहुत फायदा होता है । कोई कीड़ा डंक मारे तो पहले डंक को निकाल देना चाहिये । उसके बाद क्षत स्थान में चुना का पानी, कैम्फर का अर्क वा प्याज का रस देने से जलन दूर होता है। आर्निका वा लिडम को लोशन प्रयोग करना चाहिये। एपिस वा लिडम सेवन करना चाहिये ।

कान यो आंख में गैर चीज का गिरना।

आंख में घुला या कोई न गलनेवाला चीज गिरे तो ठंडा पानी से आंख को धोना उपकारी है किन्तु कोई गलनेवाला चीज गिरे तो धोने से और नुकसान पहुंचेगा। आंख को रगड़ना नहीं चाहिये। आंख को खोल कर पानी में थोड़ा देरतक डुबाकर रखने से घुसी हुई चीज निकल जा सकता है।

किसी प्रकार का एसिड या कस्टिक आंख में लगने से मीठा तेल से तकलीफ दूर होता है। किन्तु कोई कीड़ा गिरने मे तेल नुकसान करता है। जब कोई धातु के बोरादा के सदृश कठिन तीक्ष्ण कोई चीज या रंग आंख में गिरे तो अन्डे के सफेदी बहुत फायदा करता है। छाइ (राख) आंख मे गिरे तो मखन या मट्ठा से उपकार होता है। चूना गिरने से सिर्का और पानी मिला कर उस से आंख धोना चाहिये या मीठा तेल देना चाहिये।

यदि उपरोक्त प्रकार से आंख मे गिरी हुई चीज बाहर न किया जावे तो ऊपर वाला पपुटे को उलट दो। निचला पपुटे में कोई चीज हो तो एक टुकड़ा ब्लाटिङ्ग कागज या साफ कपड़ा द्वारा सुरमा डालनेवाला सलाई के ऐसा बना कर इस मे निकाल दो। उस के बाद कैलेन्डुला लोशन द्वारा एक टुकड़ा कपड़ा को भिंगा कर पपुटे के ऊपर लगा देना चाहिये

और एकोनाइट प्रति आध २ घन्टा अन्तर सेवन करना चाहिये।

कान में कीड़ा प्रवेश करने से तेल गरम करके कान में डाल देने से कीड़ा मर जायगा। वह तेल कान में डालने के पहले देख लेना कि वह कान में सहेगा या नहीं। और कोई चीज जैसे बीज, कौड़ी इत्यादि कान में घुसने से पतला चिमटा इत्यादि द्वारा निकाल देनी चाहिये।

विष-भक्षण।
(POISONING.)

चिकित्सा—

चिकित्सक के प्रधान उद्देश्य यह होना चाहिये कि जितना जल्दी हो विष को निकाल दे और ऐसा प्रबन्ध करें जिस से विष की क्रिया बढ़ने न पावे बलके घटता रहे।

जब मालुम हो कि विष पेट में गया उसी समय रोगी को के कराने की चेष्टा करना मुख्य उद्देश्य होना चाहिये विशेषतः जब रोगी को के करने की इच्छा होता है या के होता रहे। जबतक मालुम नहो कि वह कौन विष है तबतक निम्नलिखित प्रकार से चिकित्सा करना चाहिये।

कै होना या कै के इच्छा होना एक प्रधान लक्षण है। कै को और बढ़ाना उचित है। इस के लिये बार २ और जितना अधिक सम्भव हो सुसुम पानी पीलाना चाहिये। साथ २ एक लम्बा पर लेकर उसको गला में घुसाकर सुरसुरी देता रहे। इसके लिये मोर का पूछ सब से अच्छा हैं, उसको गले में घुसाने के पहले उस में तेल लगा लेना चाहिये। अगर इस से उपकार न हो तो एक बड़ा चम्मच भर सरसों को पीस कर एक चाह के चम्मचभर नमक के साथ एक ग्लास पानी में घोल कर पिला दो।

यदि रोगी कुछ भी निगल न सके तो उसके मलद्वार से कोई नल के द्वारा तम्बाकु का धुआं अन्दर भर दो।

अलावे इसके अन्डे के सफेदी भी एक प्रधान औषधि है। कईएक अन्डे के सफेदी को फेट कर ठंढा पानी में मिला कर पिला दो। यह बार बार पिलाना चाहिये।

साबुन का फेन और एक उत्कृष्ट औषध है विशेषतः यदि अन्डे के सफेदी से उपकार न हो तो। इस के लिये उत्तम सफेद साबुन (White Castile Soap) इस्तेमाल करना चाहिये। यदि खाये हुए विष कोई ऐलकेलि (Alkali) वा क्षार गुण-विशेष चीज, जैसा पोटाश Potash, सोडा (Soda) नौसादर (Ammonia) कष्टिक पोटाश (Caustic Potash) इत्यादि हो तो साबुन के फेन (Soap suds)

नुकसान करता है। सावुन के फेन आसनिक, सीसा, सर्व्व प्रकार एसिड (Acid) वो प्रायः सब धातु जनित (Metalic poison) विषके एन्टिडोट (Antidote) वा प्रतिषेधक है।

बहुत रोगी मे मेगनेशिया (Magnesia) साबुन का फेन से भी बहुत फल लाभ होता है। बहुतसा मेगनेशिया पानी मे घुल कर वार २, जितना दफे वह फेक देवे उतना ही दफे पिलावे। यह विशेषत. एसिड और कई धातु यथा— पारा, एन्टिमनि (Antimoney), जस्ता (Zinc), विसमथ (Bismuth) टीन इत्यादि जनित विषके उत्तम औषध है।

एसिड जनित विष के पहचान यह है कि रोगी का मुंह, ओष्ठ इत्यादि स्थान में जखम या ज्वाला होता है।

कौफि (Coffee) बहुत विष-रोग में एक जरूरी औषध है। गाढ़ा कौफी बना कर वार २ पिलाना चाहिये। जब खाए हुए विष क्या है यह पता न लगे तो कौफि ही सर्व्वोत्कृष्ट दवा है।

सर्व्वप्रकार उद्भिद जनित विषके प्रतिषेधक Antidote कपूर (Camphor) है विशेषतः तेज जखम और जलन पैदा करनेवाला विष—जो प्रदाह उत्पन्न करता है। सब विष जनित रोग में जिस मे रोगी को कै और दस्त हो और रोगी बरफ के ऐसा ठंढा और बेहोश हो जाय, कैम्फर दिया जा सकता है। जब खाए हुए विष क्या है पता न लगे तब और सब दवाइयों से कैम्फर ही अच्छा है।

सिर्का (Vinegar) सर्व्व प्रकार ऐलकैलि (Alkali), जैसा कास्टिक, सोडा, एमोनिया (नौसादर), टारटर (Tartar), पटाश इत्यादि विष का प्रतिषेधक है। यह बार बार पिलाना और मलद्वार के द्वारा इन्जेक्शन (Injection) करना चाहिये। विषैला मछली या चर्बी खाने से तकलीफ हो तो सिनिगार अवश्य दो।

जब खाए हुए विष को जानो तब उस का प्रतिषेधक औषध व्यवहार करो।

—:o:—

नाना प्रकार विष के प्रतिषेधक औषधावली।

गैस (GASES.)

विष।	प्रतिषेधक।
पैखाना, कूंआं, मोरी इत्यादि का गैस।	क्लोराइड और लाइम (Chloride of Lime), सिनगार (Vinegar.)
कोयला का गैस।	सिनिगार।

अम्ल एसिड (ACID)

विष ।	प्रतिषेधक ।
सलफिउरिक-एसिड, मिउरि-एटिक-एसिड, फसफोरिक एसिड, एसेटिक-एसिड, भिनिगार ।	खुसुम सावुन के फेन, मैग्नेशिया
नाइट्रिक-एसिड ।	कार्बोनेट आफ लाइम (Carbonate of Lime.)

—o—

ऐलकेलि वा चार (ALKALI.)

विष ।	प्रतिषेधक ।
धातु वा सोनो के राख (Ashes), कास्टिक-पोटाश, एमोनिया (नौसादर)	भिनिगार, नीबूका रस, या और कोई खट्टा उद्भिद के रस, मट्ठा, एरन्ड का तैल (Caster Oil)

—:o:—

धातु (METAL)

विष ।	प्रतिषेधक ।
आरसेनिक ।	अन्डे का सफेदी, बराबर वजन मे साबुन के पानी और चूना के पानी और तेल, चिनी के शरवत, दूध ।

—.o:—

उद्भिद् विष ।

(VEGETABLE POISONS.)

विष ।	प्रतिषेधक ।
अफीम, धुतुरा (Stram-monium.	कौफी, सिर्का ।

विष भक्षण के हेतु तुरंत जीवन की आशंका मालूम होने से देर न करके ष्टौमक पम्प (Stomach Pump) द्वारा मेदा से विष निकाल देना चाहिये ।

अफीम खाने से रोगी को किसी प्रकार से सोने नहीं देना चाहिये अगर रोगी निद्रा जावे तो वही निद्रा उस को महा-निद्रा होगी यह जानो ।